प्रकाशक—
श्रीविश्वदेव मुखोपाध्याय एम, ए
६६।१ एफ, कार्नवालिस स्ट्रीट, श्यामबाजार,
कलकत्ता—४

मुद्रक—
श्रीअनङ्गकुमार मुखोपाध्याय
चलन्तिका प्रेस
२, रानी देवेन्द्रवाला रोड, पाइकपाड़
कलकत्ता—२

भूमिका

इस कोशमें विशेष रूपसे ठेठ बंगलाके शब्दोंकी ही व्याख्या दी गयी है। आधुनिक बंगला साहित्यमें कथित भाषाके जो संक्षिप्त रूप प्रचलित हो रहे हैं, वे भी साथ-साथ दिखा दिये गये हैं। बंगलामें प्रचलित हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओंके अनेक शब्द तथा कुछ संस्कृत, तत्सम, तद्भव, अपभ्रष्ट शब्द और विज्ञान, पुराण, दर्शन, आयुर्वेद ज्योतिष, छन्दशास्त्र, अलंकार, इतिहास, भूगोल आदिके भी अनेक शब्द इसमें सम्मिलित कर दिये गये हैं। हिन्दी और बंगला दोनों भाषाओंमें प्रचलित एक ही अर्थवाले संस्कृत शब्द प्रायः छोड़ दिये गये हैं।

वर्णानुक्रम

निम्नलिखित वर्ण-क्रमसे मूल बंगला शब्द सजाये गये हैं :—

অ আ ই ঈ উ ঊ ঋ এ ঐ ও ঔ ং ঃ অ্যা ক খ গ ঘ ঙ চ ছ জ ঝ ঞ ট ঠ ড ঢ ণ ত থ দ ধ ন প ফ ব ভ ম য র ল শ ষ স হ।

स्वरवर्ण समाप्त होनेके बाद (ং) अनुस्वार और (ঃ) विसर्ग युक्त शब्द दिये गये हैं; जैसे—নিউমোনিয়া के बाद নিংড়ান, নিঃ ; কাওয়ালী के बाद কাংস।

অ্যা एक स्वतन्त्र स्वर है। অ समाप्त होनेके बाद इसे स्थान दिया गया है; जैसे—অহোরাত্র के बाद অ্যাঁ। अन्य अक्षरोंमें स्वरवर्ण समाप्त होनेके बाद इसका स्थान है; जैसे—মৌসুম के बाद ম্যাও, ভোঁস ভোঁস के बाद ভ্যা, কৌশেয় के बाद ক্যাঁক।

चंद्रविन्दु-रहित अक्षरके बाद उसी अक्षरका चंद्रविन्दु-युक्त शब्द दिया गया है; जैसे—কাটা, কাঁটা ; কাটারি, কাঁটাল ; পো, পোঁ।

वर्गीय और अन्तस्थ दोनों ব के शब्द एक ही साथ वर्गीय ब के स्थानमें मिलित अकारादि-क्रमसे दिये गये हैं। ব यदि दूसरे व्यंजनके आगे युक्त होकर वर्गीय ब की तरह उच्चारित होता हो तो उसका स्थान প ফ के बाद ही रखा गया है, जैसे—কম্ফর্টার के बाद কম্বল, সম্প্রীতি के बाद সম্বন্ধ; परन्तु यदि वह उस व्यंजनका केवल दुगुना उच्चारण मात्र कराता हो तो उस ব का स्थान ল के बाद ही रखा गया है, जैसे—অশ্লেষা के बाद অশ্ব, পল্লী के बाद পল্লব।

वर्ण-विन्यास

ক খ গ ঘ के पूर्व (ং) अनुस्वार हो तो उसके स्थानमें विकल्पसे ঙ্ होता है; जैसे—অহংকার অহঙ্কার, সংখ্যা সঙ্খ্যা, সংগীত সঙ্গীত, সংঘ সঙ্ঘ; अनुस्वारके आगे চ ছ জ ঝ रहनेसे उसके स्थानमें ঞ্, ট ঠ ড ঢ रहनेसे ণ্, ত থ দ ধ ন रहनेसे न् और প ফ ব ভ ম रहनेसे म् होता है (अनुस्वार नहीं रहता); जैसे—পঞ্চ, পাঞ্জাব, ঘণ্টা, খণ্ড, সন্ত, নন্দ, সন্নিবিষ্ট; কম্প, আরম্ভ, সম্মিলন। য র ল (अन्तस्थ) ব শ ষ স হ के पूर्व अनुस्वार ही रहता है; जैसे—সংযম, সংবাদ, অংশ, মাংস, বৃংহণ।

গাড়ি, ঘটি, ঘড়ি, মুড়ি आदिकी तरह আবকারি, জমিদারি, ঝকমারি, দোকানদারি, পায়চারি, পাগলামি आदि संज्ञा-शब्दों को इस कोशमें ह्रस्व इ-कारान्त तथा অন্তর্মুখী, বহুভাষী, ভাগ্যশালী, রেশমী आदिकी तरह আবকারী, জমিদারী, দরকারী, দোকানদারী आदि विशेषण शब्दोंको दीर्घ ई-कारान्त रखा गया है। परन्तु अनेक लेखक इस नियमको नहीं मानते। कुछ पुस्तकोंमें इसकी उलटी रीति भी दिखाई पड़ेगी। वहाँ वह शब्द संज्ञा हो तो इस कोशसे संज्ञाका अर्थ और विशेषण हो तो विशेषणका अर्थ ही ले लेना चाहिये।

চাষী, তাঁতী, তেলী, দরজী, পূজারী, মালী आदि पेशा-सूचक संज्ञा-शब्दोंमें दीर्घ ई-कार ही अधिक प्रचलित है।

অধিকারী (-রিন্), গৃহী (-হিন্), ব্যবসায়ী (-য়িন্), হস্তী (-স্তিন্) आदि इन् भागान्त संस्कृत संज्ञा-शब्दोंके कर्ताके रूप दीर्घ ई-कारान्त हैं, परन्तु आगे कोई स्त्रीलिंगका प्रत्यय या संस्कृत विभक्ति, शब्द अथवा अक्षर युक्त हो तो इन् के अन्तिम न् का लोप हो जाता है; इस कारण अन्तमें ह्रस्व इ-कार ही रह जाता है; जैसे—অধিকারিণী, গৃহিণী, হস্তিনী; ব্যবসায়িবর্গ, হস্তিচিকিৎসা, হস্তিপ।

ठेठ बंगला शब्दोंमें इ-कार, उ-कार का प्राय ख्याल नहीं किया जाता; जैसे—একটি (-টী), জমি (-মী), বাড়ি (-ড়ী), দাঁড়ি (-ড়ী); ধুতি (ধূ-), তুলা (তূ-), মকুফ (-কূ-), উঠ (ওঠ), উপর (ওপোর), পিছন (পেছোন), পিতল (পেতোল), ভিতর (ভেতোর)।

কশ, কষা, কসা; কলপ, কলম, কলশি, কলসী; কাঙাল, কাঙ্গাল, কাঙালী, কাঙ্গালী, কাঙলা, ক্যাংলা; কখন, কখনো, কখনও, কাহার, কাহারো, কারও, কারো—इस प्रकार एक ही शब्दके प्रचलित विभिन्न वर्ण-विन्यास एक ही स्थानमें दिखा दिये गये हैं। लोग শিস को শিষ, শিষ को শিস, তখনো को তখনও आदि भी लिखते हैं।

अधिकांश रेफाक्रान्त वर्ण दुगुना लिखा जाता था, जैसे—আর্দ্র, কর্ম্ম, ধর্ম্ম, কার্য্য। परन्तु आधुनिक रीति एक वर्ण लिखनेकी है; जैसे—পূর্ত, মর্ম, মূর্খ, নির্মম। इस कोशमें दोनों प्रकारके रूप हैं।

अकार और आकार युक्त कुछ शब्दोंको कुछ अति आधुनिक लोग प्रायः ओकार युक्त करके बोलते और लिखते हैं, जैसे—নতুন (নোতুন), কলিকাতা (কোলকাতা), ঘড়া (ঘোড়া), রবিবার (রোববার), ছুতা (ছুতো), সূতা (সুতো), কুয়া (কুয়ো) आदि।

কোটো (কৌটা), চাট্টি (চারটি, অল্প কিছু), রাক্কুসী (রাক্ষসী), বদ্যি (বৈদ্য), লতুন (নতুন), ডিডি (দিদি), ট্যামাক (দেমাক), ব্যাভার (ব্যবহার), রোদ্দুর (রৌদ্র), কদ্দূর (কত দূর), নিত্যি (রোজ), ঢ্যাঁড়স (ঢেঁড়স), সাব (সাহেব), ধুত্তোর (ধুৎ তোর, घत तेरी), গেরাম (গ্রাম), পিদ্দিম (প্রদীপ), কুচ্ছো (কুৎসা), কেত্তোন (কীর্তন), ছেদ্দা (শ্রদ্ধা), পুষ্যিপুত্তুর (পোষ্যপুত্র), পিত্তি (পিত্ত), চিন (চিহ্ন), জিজ্ঞেস (জিজ্ঞাসা), ত্যাল (তেল), চক্কোত্তি (চক্রবর্তী), ঢ্যাং (ঢ্যাঙা), খোদ (খুদ), বুইলেন (বুঝিলেন), গেসল (গিয়াছিল) आदि बहुतसे शब्द कुछ प्रचलित होने पर भी अभी कोशमें स्थान पाने योग्य नहीं हैं।

रीति

बंगलाके हर एक मूल शब्दके आगे सं (संज्ञा), वि (विशेषण) आदि व्याकरणका पद-परिचय है। जिस शब्दके उच्चारणमें विशेषता है उसका उच्चारण नागरी लिपिमें कोष्ठकके भीतर मूल शब्दके बाद ही है। पद-परिचयके आगे (—) डैश देकर व्याख्या दी गयी है। व्याख्यामें कहीं कहीं कोष्ठकके भीतर विशेष विशेष प्रयोग तथा समास-युक्त पद भी हैं। ऐसे स्थलोंमें मूल शब्द बार बार न लिखकर उसके स्थानमें (—) डैश दिया गया है; जैसे—गन्ध शब्दमें (—পাওয়া, —ছাড়া, —শোঁকা), (নাম—) यहाँ गन्ध পাওয়া, गन्ध ছাড়া, গন্ধ শোঁকা; नामगन्ध ऐसा समझना चाहिये। यदि व्याख्या समाप्त होने पर (।) पाईके बाद (—) डैश देकर नया शब्द लिखा हो तो वहाँ भी उस डैशके स्थानमें मूल शब्द ही पढ़ना चाहिये, जैसे—उसी गन्ध शब्दमें—গোকুল, —বহ, —বণিক, —বিরজা, —রাজ। इस प्रकारके समास-युक्त पदके आगे यदि कोष्ठकके भीतर डैश मिले तो वहाँ वह समास-युक्त पद ही पढ़ना चाहिये, (केवल मूल शब्द नहीं); जैसे—বড় शब्दमें —কথা (ছোট মুখে—) यहाँ ছোটমুখে বড় কথা समझना होगा।

एक शब्दके भीतर यदि समासयुक्त सारे शब्द न मिले तो नीचे नया शब्द देखना चाहिये, जैसे—দো शब्दके भीतर দোমনা, দোশাল্লা आदि हैं; परन्तु দোচালা, দোহার आदि पृथक दिखाये गये हैं।

मूल शब्दके आगे कहीं कहीं उसके दूसरे रूप कोष्ठकमें (-) इस प्रकार समासचिह्न (हाइफेन) और कहीं कहीं (—) डैशके साथ संक्षेपमें दिये गये हैं; जैसे—বাটলুই, (-নুই, -লে); নড়নড়, (—বড়)। यहाँ (বাটনুই, বাটলে), (নড়বড়) पढ़ना होगा। कहीं कहीं कोष्ठक न देकर भी दूसरा रूप लिखा गया है; जैसे—পূজা, পূজো; গুণধাম, গুণনিধি।

एकार्थक होनेपर मूल शब्दके आगे = इस प्रकार समान-चिह्न देकर दूसरा शब्द लिखा गया है; जैसे, অকর্মক = চকমক, শটকে = শতকিয়া।

एक शब्दके क्रिया, संज्ञा, विशेषण आदि एकाधिक पद-परिचय हों तो प्रायः एककी व्याख्याके बाद (।) पाई देकर दूसरेकी व्याख्या दी गयी है; जैसे— ধরা क्रि, वि, सं; गुरु सं, वि आदि; कहीं कहीं ऐसे शब्दोंकी एकाधिक बार नये शब्द रूपसे भी व्याख्या की गयी है; जैसे—চট, মত, বেলা, দাগা आदि।

किसी किसी शब्दका अगला आधा अंश कोष्ठकमें दिया गया है, जैसे—অধি (করণ), অন (ঘ), অহ্ (কম্পা) आदि। उसका आशय यह है कि, उन शब्दोंकी व्याख्याके भीतर जो (—) डैश देकर दूसरे शब्द लिखे गये हैं वहाँ उस (—) डैशके स्थानमें कोष्ठकके बाहर वाला प्रथमांश ही पढ़ना होगा, जैसे অধিকরণ, অধিষ্ঠাত্রী; অনঘ, অনশ্বর, অনুকরণীয়, অনুষ্ঠান।

एक मूल शब्दसे अनेक शब्द उत्पन्न होते हैं। उनकी व्याख्या प्रायः उस मूल शब्दके

भीतर ही दी गयी है, जैसे—পূজা शब्दके भीतर পূজক, পূজন, পূজার্হ, পূজারী; বর্ধন शब्दके भीतर বর্ধক, বর্ধমান, বর্ধিত, বর্ধিষ্ণু आदि।

क्रियाके केवल मूल कृदन्त रूप (जो क्रियार्थक संज्ञा और विशेषण भी हैं) इस कोशमें हैं। परन्तु बंगलाकी पुस्तकोंमें एक एक क्रियाके अनेक रूप मिलेंगे। उनका मूल रूप खोज निकाल लेना आवश्यक है। जैसे—করেন, করছে, করিতেছিল, করচে आदिका मूल रूप করা; হচ্ছে, হউন, হ'বে, হোলে आदिका मूल रूप হওয়া; দাও, দিও, দেবে, দিচ্ছিল आदिका मूल रूप দেওয়া है। कोशमें इस मूल रूपके सामने कोष्ठकके भीतर (क्रि परि ..) में जो संख्या नागरी लिपिमें लिखी है, परि (शिष्ट) में उस संख्या पर जिस क्रियाके रूप मिले उससे काल आदि मिलाकर उसी परिशिष्टकी पहली क्रिया করা के काल आदिसे मिलान करने पर उस क्रियापदका अर्थ या उच्चारण जाना जा सकता है।

किसी शब्दकी व्याख्याके बाद [ऐसे चिह्नके आगे जो शब्द मिले, समझना चाहिये कि वह निम्न शब्दकी व्याख्याका बाकी अंश है; जैसे—খঞ্জন में [मेंढक। অগড়ম में [असम्बद्ध, अंडबंड।

कहीं कहीं व्याख्यामें केवल बंगाल बंगला भाषा या बंगाली जाति ही समझनी चाहिये; जैसे—কাল বৈশাখী—चैत-बैशाखकी सन्ध्याकी आँधीपानी—यहाँ 'बंगालमें'; इस भूमिकाके प्रथम पृष्ठमें—অ্যা एक स्वतन्त्र स्वर है—यहाँ 'बंगला भाषामें'; মুখোপাধ্যায় —ब्राह्मणोंकी एक उपाधि—यहाँ 'बंगाली ब्राह्मणोंकी'—ऐसा समझना चाहिये।

उच्चारण

हिन्दीकी तरह ধন মান গাছ বাঁশ আদিকা अन्तिम अक्षर हलन्त उच्चारित होता है। इन शब्दोंके साथ दूसरा शब्द मिलनेसे भी प्रायः अन्तिम अक्षर हलन्त ही उच्चारित होता है; जैसे— গাছগুলি, বাঁশঝাড়, মাথামারা (কন)। परन्तु आगे संयुक्ताक्षर या संस्कृत शब्द आनेपर पिछले अक्षरका अकार उच्चारित होता है; जैसे ধনদৌলত, মোক্ষস্থান, ফলপ্রদ, মনস্কাম; ধনধাম, জনসাধারণ, পরলোক, মনস্তাপ। परन्तु आगे ठेठ बंगला शब्द आनेपर पिछले अ-कारका हलन्त ही उच्चारण होता है। जैसे—পরগাছা, মনগড়া, নরছর, দরদস্তুর, মারমুখো। अनुस्वार और विसर्गके आगेके अक्षरका अकार उच्चारित होता है; जैसे—স্বরস, দুঃখ।

जिस शब्दके अन्तिम अक्षरक अ-कार उच्चारित होता है उसके आगे कोष्ठकके भीतर (-अ) ऐसा लिख दिया गया है। कुछ लोग ऐसे अ-कारका लघु ओ-कार-सा उच्चारण करते हैं, जैसे—কৃত (-अ) कृतो, কৃশ (-अ) कृशो, পড়পড় (पड़-अपड़-अ) पड़ोपड़ो; কষ্ট (-अ) कष्टो, অন্ত (-अ) अन्तो, শক্ত (-अ) शक्तो। संयुक्ताक्षरका अ-कार सर्वत्र उच्चारित होता है।

संगीतमें आवश्यकतानुसार अन्तिम अक्षरका अ-कार उच्चारित होता है; कहीं कहीं तो उस अ-कारका ओ-कार-सा भी उच्चारण होता है; जैसे—কিবা ঢল ঢল (ढलो ढलो) কাঁচা অঙ্গের (-अ) লাবণি অবনি বহিয়া যায়।

जिस बंगला मूल शब्दके उच्चारणमें विशेषता है उसका पूर्ण या आंशिक उच्चारण उस शब्दके सामने कोष्ठकके भीतर नागरी लिपिमें लिख दिया गया है, जैसे—নিযুক্ত (निजुक्त-अ), প্রশ্ন (प्रस्न अ), বাধান (-नो), মনসা (-नशा)। इस अन्तिम शब्दमें न के अ-कारका स्पष्ट उच्चारण होता है—यही दिखाया गया है।

तीन अक्षरवाले शब्दके अन्तिम अक्षर हलन्त उच्चारित हो तो प्राय: मध्यम अक्षरके अ-कारका उच्चारण होता है, जैसे—কারণ, চলন, বলদ, ভাবন, মারণ आदि। परन्तु अन्तिम अक्षरमें आ-कारादि कोई मात्रा रहे तो अ-कारयुक्त मध्यम अक्षर प्राय हलन्त उच्चारित होता है, जैसे—করনা, চলতি, ফরসা, ভাবনা, মরদা, গরত, শুকনা, হলদে आदि। परन्तु জননী, বিপণি, জগতী, মানদা, সপত্নী आदि कुछ शब्दोंमें अन्तिम अक्षर मात्रायुक्त रहने पर भी मध्यमाक्षरका अ-कार स्पष्ट उच्चारित होता है, यह यथास्थान दिखा दिया गया है; जैसे—মনস্বী (-नश्शी), তপস্বী (-पशी)।

चार अक्षरवाले शब्दका द्वितीय अक्षर अ-कारयुक्त हो तो वह प्राय: हलन्त उच्चारित होता है; जैसे—কামরাঙা, খয়রাত, ছারপোকা, কুলকুচা, ছিটকিনি, ছটকান, কপচান, শয়তান आदि। परन्तु संस्कृत शब्दोंमें प्राय: ऐसे शब्दोंके द्वितीय अक्षरका अकार उच्चारित होता है; जैसे—উপহার, ভগবান, নিমন্ত্রণ, হলধর, ব্যবহার, শশধর आदि। चार अक्षरवाले शब्दोंका तृतीय अक्षर अ-कारयुक्त हो तो उसका भी स्पष्ट उच्चारण होता है; जैसे—আলোচনা, প্রতারক, বিজ্ঞাপন, মেরামত, সিংহাসন, হরীতকী आदि।

अन्तमें ত্ব या তা प्रत्यय रहनेसे उसके पिछले अक्षरका अ-कार उच्चारित होता है। जैसे—অমরত্ব, নরত্ব, মূকত্ব, কৃপণতা, সরলতা, আবশ্যকতা, প্রিয়তা, কৃশতা आदि।

बंगलाके कुछ शब्दोंमें ए-कारका उच्चारण हिन्दीके ऐ-की तरह होता है, जैसे—কেমন, যেমন, তেমন, বেড, বেটা, দেখা, খেঁকান आदि। परन्तु हिन्दीके उस ऐ के उच्चारणके अन्तमें जो य की ध्वनि निकलती है उसे छोड़कर उसके प्रथमांशका ही उच्चारण होता है।

ফড়িং, বরং, শিং, সংখ্যা आदि शब्दोंके (ং) अनुस्वारका उच्चारण अलंकार, अंग आदिके अनुस्वारके समान है।

बंगलामें दीर्घ स्वरोंका प्राय: ह्रस्वकी तरह उच्चारण किया जाता है। परन्तु गाने या पुकारनेमें सभी स्वरोंका आवश्यकतानुसार दीर्घ उच्चारण होता है। मूर्धन्य ণ का उच्चारण दन्त्य न की तरह तथा मूर्धन्य ষ और दन्त्य স का उच्चारण तालव्य श-की तरह है। परन्तु শ या স के साथ ঋ, র या ন लगनेसे और স के साथ ত या থ लगनेसे उस শ और স का उच्चारण स-की तरह होता है; जैसे—শৃগাল, পরিশ্রম, শ্রী, মসৃণ প্রস্রবণ, প্রশ্ন, স্নান, স্তব, স্থান। য का उच्चारण ज-की तरह है। परन्तु য यदि शब्दके बीच या अन्तमें रहे तो उसका रूप য় ऐसा हो जाता है और उसका उच्चारण य की तरह ही होता है; जैसे—শয়ন, নয়, সময়। অ, বি, সং आदि उपसर्गके आगे য हो तो उसके नीचे बिन्दी नहीं दी जाती और उसका उच्चारण ज-की तरह ही होता है, जैसे—অযুগ্ম, বিযুক্ত, সংযোগ। दोनों ব का रूप एकसा है और दोनोंका उच्चारण ब-की तरह है। किसी व्यंजनके आगे য, ম, या ব आवे तो उस व्यंजनका केवल दुगुना उच्चारण होता है, जैसे—অশ্ব, পদ্ম, বিশ্ব।

परन्तु উদ্বাস্তু, যক্ষা, কদর্য, জন্ম, উন্মাদ, উদ্যাপন, উদ্যোগ आदि कुछ विशेष विशेष शब्दो में उन अक्षरो का स्पष्ट व, म और ज की तरह उच्चारण होता है। इस कोशमें उनका यथास्थान उच्चारण दिखा दिया गया है।

कुछ शब्दो के उच्चारण-भेदसे अर्थ में भेद होता है, जैसे —কাল (काल्=समय ; कल), কাল (कालो=काला) ; জাত (जात्=जाति), জাত (जातो=उत्पन्न) ; দেওয়ান (दैवान्=दिलाते हैं), দেওয়ান (दैवानो=दिलाना), নাম (नाम्=नाम, उतर), নাম (नामो=उतरो) ; ভাল (भाल्=कपाल), ভাল (भालो=अच्छा) ; মত (मत्=राय), মত (मतो=तरह, तुल्य) आदि।

जिस अक्षरमें उच्चारणकी विशेषता है उस श्रेणीके प्रथम शब्दमें ही प्रायः उच्चारण दिखाया गया है। उसके अनुसार उसके नीचेके शब्दो में भी वैसा ही उच्चारण जानना चाहिये। जैसे—দক্ষ, বিকৃত, অসংকীর্ণ, অদ্ব।

मेरा शरीर वहुत वृद्ध है, प्राय अस्वस्थ रहता है। यह कोश कलकत्ते में छपा है। कुछ अंशका प्रूफ मैं नही देख सका, इस कारण कुछ अशुद्धियाँ रह गयी हैं। अन्तमें शुद्धिपत्र देकर अशुद्धियोंके शुद्ध रूप दिखा दिये गये है। इसके अतिरिक्त हिन्दीकी कुछ मात्राएँ छपते समय टूट गयी हैं। पाठक उन्हें अपनी प्रतिमें शुद्ध कर लेनेकी कृपा करें।

वंगला, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृतके कई कोशो से शब्द शब्दार्थ-प्रयोग-संग्रहमें मुझे सहायता मिली है, उनके लेखको का मैं आभारी हूँ। लगभग ४० वर्षों तक निरन्तर हिन्दीकी सेवा करनेसे मुझे हिन्दीका जो थोड़ा-वहुत ज्ञान प्राप्त हुआ है उसीपर भरोसा करके मैंने वड़े ही संकोचके साथ इस कोशके प्रणयनमें हाथ डाला था। कहाँ तक सफल हुआ हूँ, उसके विचारका भार मैं सुविज्ञ पाठको पर ही छोड़ता हूँ। उन्हे जो भूल-त्रुटियाँ दिखाई पड़ें निम्न पते पर मुझे सूचित करनेसे मैं आगामी संस्करणमें उन्हें शुद्ध कर दूंगा तथा सूचना देनेवाले विद्वानो का कृतज्ञ रहूंगा।

वाराणसी
३० जून, १९५७ ई०

गोपालचन्द्र चक्रवर्ती वेदान्तशास्त्री
४७।१२८ रामापुरा, वाराणसी

संक्षिप्ताक्षर

अ, अव्य=अव्यय
उप=उपसर्ग
क्रि=क्रिया
क्रि वि=क्रिया विशेषण
क्रि परि=क्रिया परिशिष्ट
पुं=पुंलिंग
पूर्व=पूर्वकालिक क्रिया
प्र=प्रत्यय
प्रे=प्रेरणार्थक क्रिया,
वहु=वहुवचन
वि=विशेषण
विभ=विभक्ति
सं, सं=संज्ञा
सर्व=सर्वनाम
स्त्री=स्त्रीलिंग

बंगला-हिन्दी-शब्दकोश

(বাংলা-হিন্দী-শব্দকোষ)

অ

অ—वर्णमाला का पहला अक्षर; अभाव भिन्नता कमी आदि सूचक उपसर्ग; जैसे— অধর্ম, অন্যায়, অপ্রিয়, অনিয়ম आदि।

অই, ওই, ঐ सर्व—वह; वहाँ।

অঋণী वि—उऋण, ऋण से मुक्त, ऋण-रहित।

অংক, অংকুর, অংগ=অঙ্ক, অঙ্কুর, অঙ্গ।

অংশ (-अ) सं—अंश, भाग, हिस्सा, टुकड़ा; भाग्य, भिन्न। সমাংশে क्रि वि—बराबर हिस्से में। সর্বাংশে क्रि वि—सभी अंशों या विषयों में। জাত্যংশে क्रि वि—जाति के हिसाब से।

অংশতঃ क्रि वि—हिस्से के अनुसार; कुछ अंशोंमें।

অংশনীয় (-अ) वि—भाग करने योग्य, विभाज्य।

অংশভাক্, অংশভাগী वि–हिस्सेदार, साझेदार; अंश पाने योग्य।

অংশিত (-अ) वि—विभक्त, भाग किया हुआ।

অংশী, অংশীদার वि—हिस्सेदार, अंशी।

অংশু सं—কিরণ, প্রভা सूर्य की किरण, अंशु; আঁশ, তন্তু रेशा, सूत, वस्त्र।

অংশুক सं—वस्त्र; महीन कपड़ा।

অংশুজাল, অংশুমালা स—सूर्य की किरणें।

অংশুধর, অংশুমালী स—সূর্য্য सूर्य, दिवाकर।

অংশুমান্ वि—उज्ज्वल, चमकदार। स—सूर्य।

অংশ্যমান वि—विभक्त किया जानेवाला।

অংস (-अ) स—কাঁধ, स्कन्ध कंधा। —ফলক, —ফলকাস্থি सं—कंधे की चौड़ी हड्डी।

অংসল वि—बलवान, हट्टाकट्टा, पुष्ट।

অকণ্টক वि—कांटा-रहित; निर्विघ्न, बाधा-रहित।

অকথনীয় (-अ) वि—বলিবার অযোগ্য न कहने योग्य, अवर्णनीय; अश्लील।

অকথা सं—কুকথা बुरी बात, अनुचित या अश्लील बात; गाली।

অকথিত (-अ) वि—न कहा हुआ।

অকথ্য (-अ) वि—न कहने योग्य; अश्लील; प्रकट न करने योग्य।

অকপট वि—निष्कपट, भोला, सरल, सीधा।

অকম্পিত (-अ) वि—स्थिर, अचल, स्पन्दन-रहित।

অকরণীয় (-अ) वि—অকর্তব্য न करने योग्य, विवाह सम्बन्ध न करने योग्य।

অকরুণ वि—নির্দয় निर्दयी, निष्ठुर, बेरहम।

অকর্তব্য (-अ) वि—करने के अयोग्य, अनुचित, खराब।

অকর্তা वि—न करने वाला, निष्क्रिय, हुकुमत न करनेवाला; उदासीन।

অকর্তৃত্ব (-अ) सं—कर्तृत्व या उसके अभिमान का अभाव।

অকর্ম (-अ) सं—অকার্য कर्मका अभाव; অপকর্ম बुरा काम, अपराध, कसूर, आलस्य, सुस्ती।

অকর্মক वि—निष्क्रिय; कर्म-रहित; बेकार।

অকর্মণ্য (-अ) वि—কর্মে অক্ষম अनाड़ी, निकम्मा, अयोग्य, सुस्त, आलसी।

অকর্মা वि—নিষ্কর্মা बेकार; निकम्मा, आलसी। सं—अनाड़ी या आलसी आदमी।

অকলঙ্ক (-अ) वि—নিষ্কলঙ্ক कलंक-रहित; बेदाग, निर्मल; पवित्र।

অকল্পিত (-अ) वि—অকৃত্রিম सच्चा, असली।

অকল্যাণ सं—अमंगल, अशुभ।

অকস্মাৎ (अकस्मात्) क्रि वि—एकाएक, अचानक।

অকাজ स—बुरा काम; अनुचित कार्य, वृथा कार्य।

অকাটমূর্খ (-अ) वि—भोंदू, बेवकूफ; जाहिल।

অকাট্য (-अ) वि—যুক্তিদ্বারা অখণ্ডনীয় युक्तिसे खंडन करने के अयोग्य, न काटने योग्य।

অকাতর वि—অব্যাকুল न घबराया हुआ, सहनशील।

অকাতরে क्रि वि—आसानी से, अनायास, विना क्लेश।

অকাম वि—নিষ্কাম कामना-रहित, अनिच्छुक।

অকাব=অকাজ।

অকায় वि—অশরীরী शरीर-रहित। स—राहु; परमात्मा।

অকারণ क्रि वि—অনর্থক विना कारण; कारण-रहित।

অকার্য (-र्ज-अ) सं=অকর্ম।

অকাল स - अयोग्य काल, अशुभ मुहूर्त; दुर्भिक्ष। —কুষ্মাণ্ড (-कुष्माण्ड-अ) वि—অকর্মণ্য नालायक, निकम्मा। सं—कुलनाशक पुत्र। —পক্ক (-पक्व-अ) वि—समयसे पहले पका; ইঁচড়ে পাকা बचपनमें बूढ़ा-सा बर्ताव करने वाला। —বোধন सं—असमय में जगाना।

অকালে क्रि वि—অসময়ে असमय में, समय से पहले।

অকিঞ্চন वि—নিঃস্ব गरीब; दुःखी; साधारण।

অকিঞ্চিৎকর वि—নগণ্য, তুচ্ছ तुच्छ, ओछा।

অকীর্তি स—অখ্যাতি, দুর্নাম बदनामी। —কর वि—निन्दायोग्य।

অকু—घटना; दगा। —স্থল, —স্থান स—जहाँ खून चोरी आदि घटना हुई हो।

অকুটিল वि—अकपट, भोला, सरल।

অকুণ্ঠ, অকুণ্ঠিত (-अ) वि=অকাতর।

অকুতোভয় वि—निर्भीक निडर, भय-रहित।

অকুপিত (-अ) वि—अक्रोधित, अनुत्तेजित।

অকুল स—অঘর जिस कुल के साथ विवाह-सम्बन्ध नहीं किया जा सकता, नीच कुल।

অকুলন, অকুলান स—অনটন अभाव, कमी।

অকুশল स—অমঙ্গল अनभल, अहित। वि—अनिपुण।

অকূল वि—তীরহীন तट-रहित, असीम। स—संकट, विपत्ति, अथाह समुद्र। —পাথার स—अथाह समुद्र; महान विपत्ति।

অকৃত (-अ) वि—न किया हुआ, असमाप्त। —কার্য (-अ) वि—नाकामयाब, असफल। —কার্যতা स—नाकामयाबी, असफलता। —জ্ঞ (-अ) वि—उपकार स्वीकार न करने वाला, कृतघ्न। —দার वि—अविवाहित, क्वारा।

অকৃতাপরাধ वि—जिसने अपराध नही किया है, निरपराध।

অকৃতার্থ (-अ) वि—অসফল असफल, नाकामयाब।

অকৃতিত্ব (-अ) सं—अयोग्यता, असामर्थ्य।

অকৃতী वि—অক্ষম, অপটু अनाड़ी, अनिपुण।

অকৃত্য (-अ) वि—अकर्तव्य, करने के अयोग्य; अनुचित। सं—निन्दित कार्य, बुरा काम।

অকৃত্রিম वि—প্রকৃত असली, सच्चा, मिलावट-रहित, वास्तविक; पवित्र; भोला।

অকৃষ্ট (-अ) वि—न जोता हुआ; ऊसर।

অকেজো वि—निकम्मा, अयोग्य, अनाड़ी, तुच्छ।
অকৌশল—निपुणता का अभाव, अनाड़ीपन; मनमुटाव, विरोध।
অক্কা स—मृत्यु, मौत। —পাওয়া क्रि—मर जाना।
অক্টোবর स—अक्टुबर, अंग्रेजी दसवाँ महीना।
অক্ত (-अ) वि—पोता हुआ, चुपड़ा हुआ। घृताक्त वि—घीसे चुपड़ा हुआ।
অক্রিয় (-अ) वि—क्रिया-रहित, स्थिर; आलसी।
অক্রিয়া सं—अनुचित कार्य, बुरा काम; कार्यका अभाव। —চরণ स—बुरा बर्ताव, अवध आचरण। —ন্বিত (अक्रियान्वित-अ) वि—कुकर्मरत बुरे काम में लगा हुआ।
অক্রেয় (-अ) वि—আক্রা महंगा; खरीदने के अयोग्य।
অক্রোধ स—क्रोधका अभाव। वि—क्रोधहीन।
অক্রোধী वि—क्रोध-रहित।
অক্লান্ত (-अ) वि—न थका। —ভাবে क्रि वि—न थककर।
অক্লান্তি सं—क्लान्तिका अभाव।
অক্লেশ स—क्लेश का अभाव। অক্লেশে क्रि वि—अनायास।
অক্ষ (अक्ख-अ) सं—পাশা पासा; धुरा; इन्द्रिय (প্রত্যক্ষ)। —কান্তি सं=অক্ষক্ষকান্তি। —क्रीड़ा सं—पासे का खेल। —দণ্ড (-अ) सं—धुरा। —মালা स—जपमाला, रुद्राक्षमाला। —রেখা स—भूमण्डल के केन्द्र से दोनों ओर समानान्तर कल्पित रेखा, अक्षरेखा a line of latitude —সূত্র (-अ) सं—माला का सूत; माला।
অক্ষত (अक्खत-अ) वि—घाव-रहित; समूचा, अखण्ड। सं—अक्षत, चावल। —যোনি (-जोनि) सं—कुमारी जिस स्त्री का पुरुष-ससर्ग नहीं हुआ है।
অক্ষম वि—असमर्थ, दुर्बल, अयोग्य।
অক্ষমা सं—क्षमा का अभाव।
অক্ষয় (अक्खय) वि—क्षय-रहित, नित्य, अविनाशी।
অক্ষর सं—वर्ण, अक्षर, हरफ; ब्रह्म। वि—सदा एकसा रहनेवाला, नित्य। —জীবক सं—লিপিকর, মসিজীবী लेखक, मुन्शी, क्लर्क। —পরিচয় स—वर्णज्ञान। —বৃত্ত (-अ) सं—वर्ण-सख्यानुसार छन्द। অক্ষরার্থ स—शब्द से प्राप्त अर्थ, शब्दार्थ, वाच्यार्थ।
অক্ষাংশ (-अ) सं—अक्षरेखाओं के बीच का अंश a degree of latitude.
অক্ষার वि—क्षार-रहित, नमक-हीन।
অক্ষি (अक्खि) सं—चक्षु, চোখ आँख, नेत्र। —গোলক सं—आँख का गोला। —কোটর सं—आँख का गढ़ा। —তারকা स—पुतली। —পক্ষ্ম (-पक्ख-अ) सं—बरौनी। —ভিষক् सं—आँख का चिकित्सक।
অক্ষীয় (-अ) वि—धुरेका, धुरा सम्बन्धी।
অক্ষুণ্ণ (-अ) वि—অক্ষুব্ধ क्षोभ-रहित; बिना टूटाफूटा, समूचा।
অক্ষুধা स—क्षुधा का अभाव, भूख का न लगना।
অক্ষুব্ধ (-अ) वि—क्षोभ-रहित, शान्त, स्थिर।
অক্ষেম सं—अमंगल; दुर्भाग्य; विपत्ति।
অক্ষোভ स—क्षोभ का अभाव, शान्ति, स्थिरता।
অক্ষৌহিণী स—एक बड़ी सेना जिसमें ६५६१० घोड़े, २१८७० हाथी, २१८७० रथ और १०९३५० पदल सैनिक हों; अगणित सैन्य।
অক্সিজেন स—অম্লজান आक्सिजन गैस Oxygen
অখণ্ড (-अ) वि—অভগ্ন बिना टूटा हुआ, समूचा; प्रचण्ड (—প্রতাপ)। —সংখ্যা स—पूर्ण सख्या। —নীয় (-अ) वि—অপরিবর্তনীয় परिवर्तित न होने वाला; खण्डन करने के अयोग्य। —মণ্ডলাকার वि—गोल; सर्वव्यापक।
অখণ্ডিত (-अ) वि—अविभक्त, बिना टूटा हुआ।
অখদ্যে वि—অকেজো निकम्मा, तुच्छ, ओछा।

অখনিত (-अ), অখাত (-अ) वि—न खोदा हुआ (जैसे झील नदी समुद्र आदि)।

অখাদ্য (-अ) वि—দুখাদ্য खाने के अयोग्य। स—अखाद्य वस्तु, निषिद्ध खाद्य।

অখিন্ন (-अ) वि—खेद-रहित, प्रसन्न, खुश।

অখিল वि—সমস্ত, যাবতীয় सब, सारा। सं—ससार।

অখ্যাত (-अ) वि—अप्रसिद्ध; निन्दित, बदनाम। —নামা वि—अप्रसिद्ध, जिसका नाम कोई नहीं जानता।

অখ্যাতি स—অপবাদ निन्दा, बदनामी। —কর, —জনক वि—निन्दाजनक।

অগঙ্গ (-अ) वि—गंगा-रहित। —প্রদেশ सं—गंगा से दूर का प्रदेश।

অগড়ম-বগড়ম सं—अनाप-शनाप, अंडबंड।

অগণন वि—अनगिनत, असंख्य।

অগণনীয় (-अ) वि—न गिनने योग्य, असख्य।

অগণিত (-अ) वि—न गिना हुआ; अनगिनत, असख्य।

অগণ্য (-अ) वि=অগণনীয়।

অগতি वि—गति-रहित, स्थिर; निरुपाय, असहाय; मृतक-संस्कार-रहित।

অগত্যা क्रि वि—लाचार होकर, निदान।

অগনতি वि=অগুনতি।

অগন্তব্য (-अ) वि—न जाने योग्य।

অগভীর वि—छिछला, कम गहरा।

অগম वि—न चलने वाला। सं—पेड़; पहाड़।

অগম্য (-अ) वि—অগন্তব্য न जाने योग्य; गूढ़, अबोध्य।

অগম্যা सं—जिस स्त्री के साथ सम्भोग अनुचित है। —গামী वि—व्यभिचारी।

অগষ্ট, सं—अंग्रेजी अगस्त मास।

অগস্ত্য (-अ) सं—अगस्त्य मुनि। —যাত্রা स—यगला सौर मास की पहली तिथि, इस दिन की यात्रा अशुभ मानी जाती है क्यों कि अगस्त्य मुनिने भाद्रपद की इसी पहली तिथि को विन्ध्याचल से दक्षिण की यात्रा शुरू की थी और वहाँ से वह फिर लौट न आये।

অগা वि—बेवकूफ, भोंदू मूर्ख।—রাম वि—भोंदू।

অগাধ वि—অতি গভীর बहुत गहरा। —ধন सं—बहुत अधिक धन।

অগুণ सं—अवगुण, दोष, ऐब। —কারক वि—हानिकारक।

অগুনতি, অগুন্তি वि—अनगिनत, असख्य।

অগুরু वि—हल्का। सं—एक सुगन्धित लकड़ी, अगर।

অগুহ্য (अगुज्झ-अ), অগূঢ় (-अ) वि—अगूढ़, न छिपा हुआ; खुला हुआ। [अज्ञात।

অগোচর वि—अदृश्य, इन्द्रिय. के अग्राह्य;

অগোচরে क्रि वि—अनजान में, बिना जाने, गुप्त रूप से; पीठ पीछे।

অগোপন वि—न छिपा हुआ, खुला हुआ।

অগোপনীয় (-अ) वि—न छिपाने योग्य।

অগৌণ वि—प्रधान, मुख्य।

অগৌণে क्रि वि—बिना विलम्ब, तुरत, शीघ्र, जल्दी।

অগৌরব स—बदनामी, बेइज्जती; अख्याति।

অগ্নি सं—आग, आँच; पचाने की शक्ति; अग्निदेव। —কণ सं—আগুনের কণা चिनगारी, स्फुलिंग। —কর্ম, —কার্য, —ক্রিয়া सं—অন্ত্যেষ্টি ক্রিয়া मृतकसस्कार, शवदाह। —কল্প (-अ) वि—आग के समान; बहुत गर्म; बहुत खफा, आग-बबूला। —কাণ্ড (-अ) स—গৃহদাহ घरका जलना; प्रचण्ड आग। —কোণ सं—दक्षिण-पूर्व कोना। —ক্রীড়া स—आग का खेल, आतिशबाजी। —গর্ভ (-अ) वि—भीतर आग वाला, आगभरा। सं—आतशी शीशा। —চূর্ণ (अ) सं—बारूद।

—ज (-अ),—जात(-अ)वि—आग से उत्पन्न। —द (-अ) वि—घरमें आग लगाने वाला। —दग्ध (-अ)वि—आग से जला या जलाया हुआ। —दाता सं—दाग देने वाला; आग देने वाला। —दाह (-अ) सं—शवदाह; आग से भस्म करण, भारी आग। —दाह्य (-दाह्यक-अ) वि—आग से जलने योग्य। —पक्व (-अ) वि—आग से पकाया हुआ, भुना हुआ; जलाया हुआ। —परीक्षा सं—आग से जला कर परीक्षा या सचाई की जाँच; बहुत कठिन परीक्षा। —प्रभ (-अ) वि—आगसा, अग्नितुल्य; चमकदार।—प्रस्तर सं—चकमकि पाथर चकमक पत्थर।—वर्द्धक वि—हाजमा बढ़ाने वाला। —वाण सं—आग लगाने वाला वाण; तोप बन्दूक राकेट आदि। —वृष्टि सं—आग की वर्षा, गोलों का लगातार गिरना। —मान्द्य (-अ)स—मन्दाग्नि, बदहजमी, अजीर्ण। —मूर्ति वि— आगबबूला, आग सा। —मूल्य (-अ) वि—बहुत महँगा। —शर्मा वि =अग्निमूर्ति।—शिखा सं—आग की लौ, ज्वाला। —शुद्ध वि—आग से शोधा हुआ। —संस्कार सं=अग्निकर्म। —सख (-अ) स—अग्नि का मित्र, वायु।—सह (-अ) वि—आग से न जलने वाला fire-proof. —सात् वि—आग में गिरा हुआ; जलाया हुआ, भस्म। —सेवन सं—आगुन पोशान आग का तापना। —स्फुलिङ्ग (-अ) सं=अग्निकणा।

अग्न्यवतार वि=अग्निमूर्ति।

अग्न्यस्त्र (-अ) स—आग्नेय अस्त्र; तोप बन्दूक राकेट आदि।

अग्न्युत्सव सं—होलीका उत्सव।

अग्न्युद्गम, अग्न्युद्गार सं—ज्वालामुखी से आग का निकलना।

अग्र (-अ) वि—प्रथम, प्रधान; आगे वाला, पहलेका; नामी। सं—सिरा; अग्रभाग; सामना; नोक; लक्ष्य; आरम्भ। —ग (-अ) वि—पहलेका। सं—अगुआ, नेता। —गण्य (-अ) वि—पहले नाम लेने योग्य, श्रेष्ठ, उत्तम। —गामी वि—आगे जाने वाला, अगुआ, नेता। —ज (-अ) वि—प्रथमे जात पहले जन्मा हुआ। सं-बड़ेभाई; ब्राह्मण। —जा सं—बड़ी बहिन, दीदी, जीजी। —ज्ञान सं—पूर्वज्ञान, दूर दृष्टि। —णी वि=अग्रगामी। —दानी सं—श्राद्धमें प्रथम दान लेने वाला, पतित ब्राह्मण। —दूत सं—प्रथम वार्त्तावह सबसे पहले जाकर या आकर खबर देनेवाला, अगुआ। —पश्चात् स—आगा-पाछा, कामका आरम्भ और फल। —वर्त्ती वि—सामनेका, आगेवाला। —भाग सं—आगे का अंश, सामना। —सर वि—आगे बढ़ा हुआ। —सूचना सं—पहले से सूचना, पूर्वाभास। —हायण स—अग्रान मास अगहन।

अग्राह्य (-ह्यक-अ) वि—ग्रहण करने के अयोग्य, अमान्य, तुच्छ। स—उपेक्षा।

अग्रिम वि—प्रथम, प्रधान। सं—पेशगी, अगाऊ।

अग्रे क्रि वि—पहले; आगे, सामने।

अघ (-अ) सं—पाप, दोष, अपराध। —नाशन वि—पाप नाशक।

अघटन वि—असम्भव, नामुमकिन, न होने वाला। —घटन-पटीयसी स—अघटन घटाने वाली ब्रह्मशक्ति माया।

अघटनीय (-अ) वि—असम्भव, न घटने योग्य।

अघटित (-अ) वि—न घटा हुआ, अभूत-पूर्व।

अघोर वि—गहरा (—निद्रा), अघोर, बेहोश। सं—शिव। —पन्थी सं—अभक्ष्य खानेवाला सन्यासी, अघोरी।

अघ्रात (-अ) वि—न सूँघा हुआ, घ्राण न लिया हुआ।

অঘ্রান सं=অগ্রহায়ণ।

অঙ্ক (-अ) सं—अंक, संख्या, चिह्न, दाग, छाती, गोदी, नाटक का अंश। —কষা क्रि—हिसाब लगाना। —গত (-अ) वि—गोदी में स्थित या प्राप्त, हस्तगत। —পালী सं—धाय, सेविका। —পূরণ सं—गुना, गुणन-क्रिया। —বিদ্যা सं—अंकशास्त्र, गणित, हिसाब। —ভাগ सं—भाग, विभाजन। —লক্ষ্মী (-लक्खी) सं—पत्नी, स्त्री। —ন सं—चित्रण, चित्र-निर्माण। —নীয় (-अ) वि—चित्र खींचने योग्य।

অঙ্কিত (-अ) वि—चित्रित; चिह्नित, वर्णित, मुद्रित।

অঙ্কুর सं—अंकुर, कोंपल; प्रथम अवस्था। বীজাঙ্কুরন্যায়—बीज से अंकुर और अंकुर से बीज होने का सिद्धान्त।

অঙ্কুরিত (-अ) वि—अंकुर निकला हुआ।

অঙ্কুরোদ্গম सं—अंकुर का निकलना।

অঙ্কুশ सं—हाथी हाँकने का अंकुस, रोक।

অঙ্কুশধর (-अ) सं—মাহুত महावत।

অঙ্গ (-अ) सं—अंग, शरीर का अंश, शरीर, देह (কোমলাঙ্গ), अंश, उपकरण। —গ্রহ (-अ) सं—আক্ষেপ, খেঁচুনি अकड़, मरोड़, ऐंठन। —চালন, —চালনা सं—शरीर का संचालन, व्यायाम, कसरत। —চ্ছেদ, —চ্ছেদন सं—अंग-विच्छेद, किसी अंग का काट डालना। —চ্ছেদক सं—अंग काटने वाला डाक्टर, जर्राह। —জ (-अ) वि—आत्मज। सं—पुत्र, बेटा; लालसा। —ত্রাণ सं—বর্ম कवच, बकतर, जिरह। —দ (-अ) सं—बाजू बाजूबंद, बालि का पुत्र। —ন् सं—উঠান आँगन, चौक। —না सं—महिला, नारी, स्त्री। —ন্যাস सं—पूजा के समय हृदय मस्तक आदि का स्पर्श। —প্রত্যঙ্গ (-अ) सं—शरीर के सारे अंग और उपांग। —প্রায়শ্চিত্ত (-अ) सं—मरणाशौच-काल की देहाशुद्धि दूर करने का एक संस्कार। —বিকৃতি सं—ऐंठन, मरोड़, आक्षेप, किसी अंग का विकृत हो जाना। —বিক্ষেপ सं—আক্ষেপ ऐंठन, मरोड़; हावभाव। —ভঙ্গ, —ভঙ্গিমা, —ভঙ্গী सं—चेष्टा, हावभाव; संकेत, अंग हिलाकर मन के भाव का प्रकाश। —মর্দন सं—शरीर का मलना। —রাগ सं—उबटन, शृंगार। —রুহ (-अ) सं—रोम, रोआँ, ऊन। —লেপ सं—उबटन। —সংস্কার सं—शृंगार, शरीर की सजावट। —সঞ্চালন सं=অঙ্গচালন। —সেবা सं=অঙ্গসংস্কার। —সৌষ্ঠব सं—शरीर की सुन्दरता, खूबसूरती। —হানি सं—किसी अंग की हानि, किसी कार्य के एक अंश का पूरा न होना, त्रुटि। —হীন वि—বিকলাঙ্গ हीनांग, अपूर्ण, शरीर रहित।

অঙ্গাঙ্গিভাব सं—गौण-मुख्य भाव, अच्छेद्य संबंध, घनिष्ठता।

অঙ্গাবরণ सं—ओढ़ना, चादर।

অঙ্গার सं—আঙরা अंगारा, कोयला; कालि, स्याही, कलंक। —ক सं—लकड़ी का कोयला carbon —কৃষ্ণ (-अ) वि—कोयला-सा काला।

অঙ্গারাম্ল (-अ) सं—एक तेजाब carbonic acid —বাষ্প (-अ) सं—carbonic acid gas.

অঙ্গী वि—अंग वाला, शरीरी, प्रधान, मुख्य। —করণ, —কার, सं—स्वीकार, प्रतिज्ञा, ग्रहण। —কৃত (-अ) वि—स्वीकृत, गृहीत। —ভূত (-अ) वि—अंतर्गत, शामिल, शरीरस्थ।

অঙ্গুর सं—अंगूर, दाख।

অঙ্গুরি, অঙ্গুরী सं—আংটি अंगूठी, छल्ला।

অঙ্গুরীয় (-अ), অঙ্গুরীয়ক सं—अंगूठी।

অঙ্গুল, অঙ্গুলি, অঙ্গুলী सं—আঙুল उंगली, अंगुली। —ঠারা क्रि—उंगली से इशारा करना। —গ্রন্থি सं—उंगली की गाँठ। অঙ্গুলিত্র (-अ),

—ত্রাণ सं—दरजी की उंगली में पहनने की टोपी, अंगुश्ताना। —ধ্বনি सं—उंगली चटखने का शब्द, चुटकी की आवाज। —নির্দ্দেশ सं—उंगली से प्रदर्शन। —পর্ব্ব (-अ) सं—उंगली की गांठों के भीतर का भाग। —স্ফোটন सं—उंगली का चटखना।

অঙ্গুষ্ঠ (-अ) सं—वৃদ্ধাঙ্গুলি, बूड़ো আঙুল अंगूठा।

অঙ্গুষ্ঠানা, অঙ্গুস্তানা सं=অঙ্গুলিত্রাণ।

অচকিত (-अ) वि—न चौंका हुआ, स्थिर, निडर।

অচর वि—न चलने वाला, गति-रहित, स्थिर, स्थावर।

অচর্ব্বিত (-अ) वि—न चबाया हुआ।

অচল—न चलने वाला, स्थिर, अटल, दृढ़। स—पहाड़। —টাকা सं—खोटा रुपया। —সংসার सं—गृहस्थी का निर्वाह कठिन, न चलने वाला व्यापार। —তি वि—अप्रचलित। —ন सं—अप्रचलन, अव्यवहार। —নীয় (अ) वि—न चलने योग्य।

অচলা सं—पृथিবী पृथ्वी। —ভক্তি सं—न डिगने वाली दृढ़ भक्ति।

অচিকিৎসনীয় (-अ), অচিকিৎস্য (-अ) वि—चिकित्सा के अयोग्य, असाध्य।

অচিন, অচিনা वि=অচেনা।

অচিন্তনীয় (-अ) वि—चिन्तन के अयोग्य, अज्ञेय, दुर्बोध।

অচিন্তিত (-अ), অচিন্তিতপূর্ব্ব (-अ) वि—पहले से न विचारा हुआ।

অচিন্ত্য (-अ) वि—चिन्तन के अयोग्य, अकल्पनीय।

অচির (-अ) वि—अस्थायी, शीघ्र, जल्दी। —কাল सं—अल्प समय। —কালমধ্যে क्रि वि—थोड़े समय में। —ক্রিয় (-अ) वि—देर न लगाने वाला, फुर्ती से काम करने वाला, शीघ्रकारी। —দ্যুতি स—बिजली, विद्युत्। —স্থায়ী वि—अस्थायी, बहुत दिनों तक न ठहरने वाला।

অচিরাৎ क्रि वि—थोड़े समयमें, एकाएक, सहसा।

অচিরে क्रि वि—शीघ्र, तुरंत, क्षणभरमें।

অচিহ্নিত (-अ) वि—चिह्न न किया हुआ।

অচেতন वि—जड़, चेतना-रहित।

অচেনা वि—অপরিচিত अनजान, अज्ञात।

অচেষ্ট (-अ) वि—चेष्टा-रहित।

অচেষ্টিত (-अ) वि—जिसके लिए कोई चेष्टा न की गयी हो।

অচৈতন্য (-अ) वि—चेतना रहित, मूर्छित, बेहोश।

অচ্ছ (-अ) वि—স্বচ্ছ पारदर्शक, साफ, पवित्र।

অচ্ছদ वि—छत-रहित, आवरण रहित, उघारा, पत्र रहित।

অচ্ছিদ্র (-अ) वि—छेद-रहित, ठोस, दोष रहित।

অচ্ছিন্ন (-अ) वि—न कटा हुआ। —ত্বক্ वि—लिंग की अग्रत्वचा न कटा हुआ।

অচ্ছুৎ वि—अस्पृश्य, अछूत।

অচ্ছেদ্য (-अ) वि—न काटने योग्य, अलग होने के अयोग्य।

অচ্যুত (-अ) वि—न हटने वाला, अविनाशी। सं—विষ্ণু विष्णु, कृष्ण।

অছি सं—वली, नाबालिग की सम्पत्ति का प्रबन्धकर्ता। [मिस।

অছিলা सं—छুতো, অজুহাত बहाना, हीला,

অজ सं—ছাগল बकरा। वि—बिलकुल। —পাড়াগাঁ। सं—बिलकुल दिहात। —পাড়াগেঁয়ে सं, वि—बिलकुल दिहाती, उजड्ड, गँवार। —বুক वि—बेवकूफ, भोंदू। —মূর্খ वि—बिलकुल मूर्ख। —গর सं—अजदहा, अजगर।

অজ (-अ) वि—जन्म-रहित, अनादि। सं—ईश्वर, ब्रह्म, परमात्मा।

অজস্র वि—बहुत, प्रचुर, यथेष्ट।

অজন্মা सं—फसल का न होना, अकाल।

অজপা सं—শ্বাস, साँस, श्वास के साथ मंत्र का जप।

অজয় सं—পরাভব हार, पराजय, सन्ताल परगने की एक नदी।

অজর वि—जरा-रहित, अविनाशी। অজরামর वि—जरा-मृत्यु-रहित, नित्य। [अधिक।

অজস্র (-অ) क्रि वि—लगातार, निरंतर। वि—बहुत

অজা स—ছাগলী बकरी।

অজাত (-অ) वि—न जन्मा हुआ। —শত্রু वि—शत्रु रहित। सं—युधिष्ठिर। —শ্মশ্রু (शम्रु) वि—जिसकी दाढ़ी निकली न हो। सं—बालक, किशोर।

অজানত (-অ) क्रि वि—अनजान में।

অজানা, অজানিত (-অ) वि—अनजान।

অজানিতভাবে, অজান্তে क्रि वि—अनजान में।

অজিত (অ) वि—न जीता हुआ।

অজিতেন্দ্রিয় (-অ) वि—इन्द्रिय-परवश, कामुक, विषयी।

অজিন स—মৃগচর্ম मृगछाला। [मेंढक।

অজিহ্ব (-ह्म अ) वि—जीभ-रहित। स—

অজীর্ণ (-অ) वि—न पचा हुआ। स—बदहजमी।

অজু सं—नमाज के पहले हाथ-पैरों का धोना।

অজুহাত स—उज्र, बहाना, हीला।

অজেয় (-অ) वि—जीतने के अयोग्य अजेय।

অজৈব (অ)—जो जीव से उत्पन्न न हुआ हो inorganic

অজ্ঞ (अग्ग-अँ) वि—मूर्ख बेवकूफ, नासमझ।

অজ্ঞতা स—मूर्खता, नासमझी। —মূলক वि—मूर्खताजनित।

অজ্ঞাত (অ) वि—অজানা न जाना हुआ, अविदित, गुप्त। —কুলশীল वि—जिसका कुल-शील अज्ञात है। —নামা वि—जिसका नाम ज्ञात नहीं है। —বাস स—गुप्त रूप से निवास। —রাশি स—अज्ञात संख्या (बीजगणित में)।

—সারে, অজ্ঞাতে क्रि वि—अनजान में, गुप्त रूप से।

অজ্ঞান वि—বেহোঁশ मूर्छित; मूर्ख, नासमझ। स—अज्ञता, मूर्खता, माया (दर्शन में)। —কৃত (-अ) वि—अनजान में किया हुआ। —জনিত (-अ) वि—अज्ञान से उत्पन्न। —তঃ क्रि वि—अज्ञान से, अनजान में। —তা (-নতা) सं—अज्ञान, मूर्खता। —বাদ सं—संसार का मूल तत्त्व अज्ञेय है—ऐसा मत agnosticism.

অজ্ঞানী वि—मूर्ख, नासमझ।

অজ্ঞানে क्रि वि—अनजान में।

অজ্ঞেয় (-অ) वि—न जानने योग्य, ज्ञानातीत, अबोध्य। —বাদ स=অজ্ঞানবাদ।

অঝোরে क्रि वि—लगातार (—কান্না, —বৃষ্টি)।

অঞ্চল स—साड़ी या चादर का सिरा, पल्ला; प्रदेश, प्रान्त। —প্রভাব सं—पत्नी का प्रभुत्व।

অঞ্জন स—सुरमा, काजल, स्याही, विविध धातुघटित आयुर्वेदीय औषध (রসাঞ্জন, নীলাঞ্জন)।

অঞ্জনী स—बिल्ली।

অঞ্জলি सं—যুক্তপাণি अंजलि, अंजलिपूर्ण फूल-तुलसी आदि। —পুটে क्रि वि—हाथ जोड़ कर। —বদ্ধ (-अ) वि—कृतांजलि, हाथ जोड़ा हुआ।

অঞ্জুমান सं—সমিতি सभा, समिति, मजलिस।

অটবি, অটবী—सं वन, अरण्य, जंगल।

অটল वि—अचल, स्थिर, दृढ़।

অটুট वि—আস্ত समूचा, न टूटा हुआ।

অট্ট (-অ) वि—ऊँचा। सं—महल, इमारत। —নাদ सं—बड़ी जोर आवाज। —হাস, —হাসি, —হাস্য (-অ) स—ठहाका, ऊँची हँसी।

অট্টালিকা सं—প্রাসাদ महल, इमारत।

অঢেল वि—प्रचुर, यथेष्ट, उत्तर देने के अयोग्य।

অড়র, অড়হর सं—अरहर की दाल।

অঢেল वि—प्रचुर, यथेष्ट। क्रि वि—बहुतायतसे।
অণিমা सं—सूक्ष्मता, योग की एक विभूति जिससे कहा जाता है कि शरीर अणु के समान बनाया जा सकता है और लोगों को दिखाई नहीं पड़ता।
অণু सं—कण, अणु, जर्रा। —চ্ছেদ सं—अध्याय का एक अंश paragraph. —দর্পণ सं—सूक्ष्म-दर्शक यन्त्र Microscope —বটিকা सं—बहुत छोटी गोली। —বাদ सं—परमाणुओं से संसार की सृष्टि—ऐसा सिद्धान्त। —বীক্ষণ सं=অণুদর্পণ। —মাত্র (-अ) वि—कणा मात्र, बहुत थोड़ा। क्रि वि—कुछ भी, बिलकुल।
অণ্ড (-अ) सं—डिम अंडा, अंडकोष, फोता। —কোষ सं—फोता।—জ वि—अंडे से पैदा होने वाला। —জ প্রাণী सं—मछली मेंढक आदि। —প্রদ वि—अंडा देनेवाला, अंडा पैदा करने वाला।—বৃদ্ধি सं—फोते में पानी उतरने का रोग Hydrocele.
অণ্ডাকার, অণ্ডাকৃতি वि—अंडे के आकार का।
অণ্ডাশয় सं—गर्भाशय, अंडाशय Ovary.
অত (-अ), অতটা वि—ঐ পরিমাণ उतना। —গুলো वि—उतने। —এব क्रि वि—সুতরাং अतः, इसलिए। —থ্য (-अ) वि—অসত্য मिथ्या, झूठा। सं—झूठ। —থ্যবাদী, —থ্যভাষী वि—मिथ्यावादी झूठा। —নু वि—शरीर-रहित। सं—कामदेव। —ন্দ্র (-अ), —ন্দ্রিত (-अ) वि—तन्द्राहीन, सजग, सावधान। —র্ক (-अ) सं—कुतर्क, वृथा बहस। —র্কণীয় (-अ) वि—तर्क करने के अयोग्य, निश्चित। —র্কিত (-अ) वि—पहले से विचार न किया हुआ। —র্কিতে, —র্কিত অবস্থায়, —র্কিত ভাবে क्रि वि—असावधान अवस्थामें, अचानक, एकाएक। —ল वि—তলশূন্য बहुत गहरा, अगाध। —লস্পর্শ (-अ) वि—जिसका तला छुआ न जा सके, अगाध। —শত (-अ) वि—वह सब (—জানি না)। —সী सं—তিসি तीसी, एक पीला फूल।
অতঃপর (अतप्पर) क्रि वि—তাহার পর उसके बाद, अनन्तर, तत्पश्चात्।
অতলান্তিক सं—अतलांतक Atlantic Ocean
অতি वि—অতিশয়, অত্যন্ত अति, बहुत, अधिक। —কায় वि—विशाल शरीर वाला। —ক্রম सं—लंघन, अतिक्रमण। —ক্রমণীয় (-अ) वि—लघन या अतिक्रमण करने योग्य। —ক্রান্ত (-अ) वि—लघन या अतिक्रमण किया हुआ, गत, बीता हुआ। —জীবন सं—किसी की मृत्यु के बाद का जीवन survival. —দিষ্ট (-अ) वि—दूसरे स्थान से प्राप्त, आरोपित धर्मयुक्त, प्रबलतर आदेश द्वारा पूर्व आदेशसे मुक्त। —দেশ सं—एक के गुणका दूसरे पर आरोप। —পাত सं—यापन (কালাতিপাত), उल्लंघन, हानि। —পাতক सं—महापाप। —পাতকী वि—महापापी। —প্রসঙ্গ (-अ) सं—लक्षण का लक्ष्य से बाहर गमन, अत्युक्ति, बहुत अधिक चर्चा, अतिशयोक्ति। —প্রাকৃত (-अ) वि—अनैसर्गिक, अलौकिक। —বর্তন सं—अतिक्रमण, लंघन। —বর্তনীয় (-अ) वि—लाँघने के योग्य। —বর্তিত (-अ) वि—लाँघा हुआ, अतिक्रांत। —বল वि—बहुत बलवान। —বাড় सं—बहुत अधिक घमंड; बहुत वृद्धि। —বাহন सं—यापन (কালাতিবাহন)। —বাহিত (-अ) वि—बिताया हुआ। —বৃদ্ধ-প্রপিতামহ (-अ) सं—दादा का परदादा। —বৃদ্ধপ্রপিতামহী स्त्री—दादा की परदादी। —বৃদ্ধ-প্রমাতামহ (-अ) सं—नाना का परदादा। —বৃদ্ধপ্রমাতামহী स्त्री—नानाकी परदादी। —ব্যাপ্তি सं—लक्षण का लक्ष्य से बाहर गमन।

—ভক্তি सं—बनावटी भक्ति। —ভারাক্রান্ত (-अ) वि—बहुत अधिक बोझ लादा हुआ। —মাত্র (-अ) वि—अत्यन्त बहुत अधिक ; मात्रा से अधिक। —মান सं—बहुत अधिक घमण्ड, शेखी। —মানব, —মানুষ वि—मनुष्य-लोक से अतीत, अलौकिक superhuman —রঞ্জন सं—बहुत अधिक मिथ्या का रंग चढ़ाया हुआ वर्णन, अत्युक्ति। —রঞ্জিত (-अ) वि—मिथ्या का रंग चढ़ा कर वर्णित। —রথ सं—एक बड़ा सेनापति जो अगणित शत्रुओं से एक ही समय लड़ सकता हो। —রিক্ত (-अ) वि—अत्यन्त अधिक, ज्यादा (—গরম)। —রেক सं—आधिक्य अधिकता, बहुतायत। —শয় वि—अत्यन्त अधिक, ज्यादा। —শয়োক্তি सं—बढ़ाकर वर्णन, एक अलंकार। —ষ্ঠ (-अ) वि—अधीर, चचल, घबराया हुआ। —সার सं—उदरामय, पतला दस्त।

অতিথি सं—मेहमान, पाहुना। —শালা सं—अतिथियों के ठहरने का मकान, धर्मशाला। —সৎকার सं—मेहमानदारी, आतिथ्य।

অতীক্ষ্ণ (ক্ষ্ন-अ) वि—भोथरा, कुन्द।

অতীত (-अ) वि—विगत बीता हुआ। सं—भूतकाल। [योग्य।

অতীন্দ্রিয় (-अ) वि—इन्द्रिय से न जानने

অতীব (-अ) वि—अत्यन्त बहुत अधिक।

অতুল, অতুলনীয় (-अ) वि—तुलनारहित, अनुपम।

অতৃপ্ত (-अ) वि—तृप्तिरहित, असन्तुष्ट।

অতৃপ্তি सं—असन्तोष, तृप्ति का अभाव।

অত্যধিক, অত্যন্ত (-अ) वि—बहुत अधिक।

অত্যয় सं—नाश, मृत्यु ; अभाव ; अतिक्रमण।

অত্যল্প (-अ) वि—बहुत थोड़ा। [दुराचार।

অত্যাচার सं—पीड़न ज्यादती, जुल्म ;

অত্যাচারী वि—अत्याचार करने वाला ; दुराचारी।

অত্যাজ্য (-अ) वि—न त्यागने योग्य।

অত্যাবশ্যক वि—अधिक आवश्यक, बहुत जरूरी।

অত্যাশ্চর্য (-अ) वि—बहुत विलक्षण, बहुत आचम्भे का।

অত্যাসক্ত (-अ) वि—बहुत आसक्त।

অত্যাসক্তি सं—बहुत आसक्ति। [आसन्न।

অত্যাসন্ন (-अ) वि—बहुत निकट का, अति

অত্যাহার सं—अतिभोजन। অত্যাহারী वि—अतिभोजी। [अतिशयोक्ति।

অত্যুক্তি सं—बढ़ाचढ़ाकर कही हुई बात ;

অত্যুগ্র (-अ) वि—बहुत क्रोधी ; बहुत तीखा।

অত্যুজ্জ্বল वि—बहुत चमकीला, अति उज्ज्वल।

অত্যুৎকৃষ্ট (-अ), অত্যুত্তম वि—अति उत्तम, बहुत उमदा।

অত্যুষ্ণ (-अ) वि—बहुत गरम।

অত্র (-अ) क्रि वि—এখানে यहाँ, इस जगह। —ত্য (-अ) वि—এখানকার यहाँ का। —স্থ (-अ)=অত্রত্য।

অথ (-अ) क्रि वि—अनन्तर, बाद, पश्चात्। —ই वि—अगाध, बहुत गहरा। —চ (-अ) अव्य—তবুও तथापि, तोभी ; परन्तु। —বা अव्य—या, किंवा, अथवा। —র্ব (-अ) वि—जराग्रस्त। सं—अथर्व वेद।

অথৈ वि=অথই। [के अयोग्य।

অদণ্ডনীয় (-अ), অদণ্ড্য (-अ) वि—सजा

অদন सं—भोजन, भक्षण, खाने की क्रिया।

অদন্ত (-अ), অদন্তক वि—दन्तहीन, दाँतरहित।

অদমনীয় (-अ), অদম্য (-अ) वि—दमन के अयोग्य, अजेय ; बहुत प्रबल।

অদলবদল सं—परिवर्तन, हेरफेर।

অদহনীয় (-अ), অদাহ্য (-জ্ঝ-अ) वि—जलाने के अयोग्य।

অদিতি सं—पृथ्वी ; एक दक्ष-कन्या, देवमाता। —নন্দন सं—देवता।

অদিন सं—बुरा दिन, सकट का समय।

অদূর सं—थोड़ी दूर, निकट। —দর্শিতা सं—भविष्य दृष्टि का अभाव, नासमझी। —দর্শী वि—भविष्य न देख सकने वाला; नासमझ। —বর্তী वि—निकट का। —স্থ (-अ) वि=অদূরবর্তী। অদূরে क्रि वि—निकट, थोड़ी दूर पर।

অদূষিত(-अ)वि—दोषरहित, शुद्ध, पवित्र। [गायब।

অদৃশ্য (-अ) वि—न दिखाई पड़ने वाला;

অদৃষ্ট (-अ) वि—न देखा हुआ। स—भाग्य, नसीब, तकदीर।—ক্রমে क्रि वि—भाग्य से; अचानक। —চর, —পূর্ব (-अ) वि—पहले से न देखा हुआ। —পরীক্ষা (-क्षा) सं—भाग्य की परीक्षा। —বশতঃ क्रि वि—भाग्यानुसार, नसीब से। —বাদ सं—भाग्य से ही सब कुछ होता है ऐसा सिद्धांत। —বাদী वि, सं—भाग्यपर सम्पूर्ण भरोसा रखने वाला, भाग्यपरायण। —বান् वि—भाग्यवान्, किस्मतवर। [हुआ, अदृष्ट।

অদেখা (अदेखा) वि—अनदेखा, विना देखा

অদেয় (-अ) वि—देनेके अयोग्य।

অদ্ভুত वि—বিস্ময়কর विलक्षण, आश्चर्यजनक, अनोखा; बेढगा। —কর্মা वि—असाधारण कार्य करने वाला।

অদ্য (-अ) क्रि वि—आज; अब। —কার वि—আজিকার आजका। —তন वि—आज होने वाला, आज का, अभी का। —প্রভৃতি क्रि वि—आज से।

অদ্যাপি क्रि वि—আজও आज भी, अभी तक।

অদ্যাবধি क्रि वि—आज तक; आज से।

অদ্রি सं—पहाड़, शैल, पर्वत। [शान्ति।

অদ্রোহ (-अ) स—बैर का अभाव, अहिसा,

অদ্রোহী वि—अहिंसक, डाह न करने वाला।

অদ্বয় (अद्वय) वि—অদ্বিতীয়, अद्वितीय। सं—ब्रह्म। —বাদ सं—अद्वैतवाद, ब्रह्मवाद, एक ही ब्रह्म की कल्पना से ससार की सृष्टि ऐसा सिद्धान्त। —বাদী वि, सं—अद्वैतवादी।

অদ্বিতীয় (-अ) वि—वेजोड़, तुलना-रहित, एक ही; दूसरी-सत्ता-रहित। सं—ब्रह्म। একমেবাদ্বিতীয়ম্ वि—केवल एक ही, सर्वेसर्वा। सं—ससार का एकमात्र कारण ब्रह्म।

অদ্বৈত (-अ) वि—द्वितीय-रहित, अद्वितीय। सं—ब्रह्म। —বাদ सं=অদ্বয়বাদ। —বাদী वि, सं=অদ্বয়বাদী।

অধঃ क्रि वि—नीचे, तले, भीतर। —কাণ্ড(-अ) सं—पेड़ का जमीन के भीतर वाला तना। —কায় सं—शरीर का निचला भाग। —কৃত (-अ) वि—नीचे फेंका या उतारा हुआ; पराजित। —ক্রম सं—नीचे की ओर का सिलसिला, निम्नक्रम। —ক্ষিপ্ত (-क्षिप्त-अ) वि—नीचे फेंका हुआ; पेंदी में तलछट के रूप में जमा हुआ। —ক্ষেপ (-क्षेप) सं—তলানি तलछट। —ক্ষেপণ (-क्षेपन) सं—नीचे निक्षेप। —পতন सं—नीचे पतन, अवनति; दुर्दशा, नीचता, चरित्रहीनता। —পতিত वि—नीचे गिरा हुआ, अवनत, नीचता प्राप्त। —পাত सं=অধঃপতন। —পাতে যাওয়া क्रि—चरित्रहीन होना; आवारा हो जाना; भरसाईं में जाना; नष्ट होना। —পাতিত वि—नीचे गिराया हुआ। —পেতে वि—निर्लज्ज, वेहया, आवारा। —স্থ (-अ), —স্থিত (-अ) वि—नीचे का, निम्नस्थ।

অধম वि—नीच, बुरा, दुराचारी। [देनदार, ऋणी।

অধমর্ণ (-अ) सं—দেনাদার, খাতক कर्जदार,

অধমাঙ্গ (-अ) सं—नीचे का अंग, पैर।

অধমাধম वि—अधम से भी अधम।

অধর सं—नीचेका होंठ; ओठ। —পল্লব सं—

नया पल्लव-सा होंठ। —मधु,—रस,—सुधा,
अधरामृत (-अ) सं—थूक।
अधरोष्ठ (-अ) सं—नीचे का होंठ।
अधर्म (-अ) सं—अन्याय, पाप, कुकर्म।
—परायण वि—अन्यायी, पापी।
अधर्माचरण सं—दुराचार, पाप।
अधर्माचारी वि=अधर्मपरायण।
अधर्मी वि—अधार्मिक, पापी।
अधर्म्य (-अ) वि—धर्मविरुद्ध, पापजनक।
अधश्चर सं—चोर, सेंध लगाने वाला।
अधस्तन वि—निम्नस्थ, नीचे का (—कर्मचारी)।
—पुरुष सं—वंशज, नीचे की पीढ़ी।
अधार्मिक=अधर्मी।
अधिक वि—अधिक, बहुत, ज्यादा। —तम वि—सबसे अधिक। —तर वि—दो वस्तुओं में अधिक।
अधि (कृ) क्रि वि—आरও और भी, उसके ऊपर। —करण सं—आधार, पात्र, स्थान; दखल; अधिकरण कारक; विचारालय, न्यायालय (धर्माधिकरण)। —करणिक सं—विचारपति, न्यायाधीश। —कर्ता सं—निरीक्षक, अध्यक्ष, सचालक। —कांश सं—বেশীর ভাগ अधिक अंश, ज्यादा हिस्सा। —कार सं—स्वत्व, स्वामित्व, हक; दावा, दखल, कब्जा; प्रभुत्व; जानकारी, ज्ञान; शक्ति; इलाका। —कारगत (-अ) वि—अधिकार में प्राप्त। —कारच्युत (-अ), —कारभ्रष्ट (-अ) वि—अधिकारसे भ्रष्ट। —कारिणी स्त्री—मालकिन, स्वामिनी। —कारी सं—मालिक, स्वामी; दखील। वि—योग्य, अभिज्ञ। —कृत (-अ) वि—अधिकार में आया हुआ; प्राप्त। —कृति सं—अधिकार। —गत (-अ) वि—प्राप्त, ज्ञात। —गम सं—उपार्जन, आय; प्राप्ति, बोध। —गम्य (-अ), —गमनीय (-अ), —गन्तव्य (-अ) वि—प्राप्य, ज्ञेय, जानने योग्य, बोध्य। —जानु वि—घुटनों पर का। —त्यका—पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। —देव,—देवता,—दैवत सं—इष्टदेव, कुलदेवता। —नायक सं—सरदार, नायक, चालक, मुखिया, सेनापति। —प (-अ), —पति सं—राजा, प्रभु। —वक्ता सं—वकील Advocate —वचन सं—नाम, पदवी, उपाधि। —विधि सं—समाप्ति, अन्त। —वर्ष सं—अंग्रेजी ३६६ दिन का वर्ष Leap year —वास सं—निवास, स्थिति,; मकान, डेरा; किसी पूजा या उत्सव के पूर्व दिनका कृत्य। —वासन सं—सुगन्धित करण। —वासित (-अ) वि—ठहराया हुआ, डेरा दिया हुआ; सुगन्धित किया हुआ। —वासी सं—निवासी, रहनेवाला। —विद्य (-अ) वि—विद्वान, पण्डित। —विद्या सं—अध्यात्म विद्या। —वेत्ता सं—एक पत्नी के रहते हुए दूसरी स्त्री से विवाह करने वाला पुरुष। —वेदन सं—एक स्त्री के रहते दूसरी से विवाह। —वेशन सं—सभा की बैठक। —मास सं—মলমাস अधिक मास। —रथ सं—सारथि; सेनापति। —राज सं—महाराजा, सम्राट। —राष्ट्रीय (-अ) वि—সার্বরাষ্ট্রিক अन्तर्राष्ट्रीय। —रूढ़ (-अ) वि—आरुढ़, चढ़ा हुआ। —रोपण सं—चढ़ाना, ऊपर बैठाना। —रोपित (-अ) वि—चढ़ाया हुआ। —रोहण सं—आरोहण। —रोहणी सं—सिंड़ि सोपान, सीढ़ी। —रोहिणी सं—आरोहिणी, सवार स्त्री। —रोही स—आरोही, सवार। —शयित (-अ) वि—लेटा हुआ। —शायित (-अ) वि—लिटाया हुआ। —ष्ठाता सं—सभापति, अध्यक्ष; बैठा हुआ आदमी। —ष्ठात्री सं—सभानेत्री, अध्यक्षा; बैठी हुई स्त्री; इष्टदेवी। —ष्ठान सं—अवस्थिति,

रहने का स्थान ; नगर ; उपवेशन । —ষ্ঠায়কবর্গ (-अ) सं—अधिकारी लोग । —ষ্ঠিত (-अ) वि—अवस्थित, बैठा हुआ, स्थापित, नियुक्त ।

অধী (ত) (-अ) वि—पठित, पढ़ा हुआ । —ন वि —मातहत, अधीन, आश्रित । —নতা सं—अधीनता, मातहती । —না स्त्री—अधीन स्त्री । —য়ান वि—पढ़नेवाला, छात्र, विद्यार्थी ; विद्वान । —র वि—अस्थिर चंचल, आतुर, व्याकुल । —রতা सं—अस्थिरता चचलता, व्याकुलता, घबराहट । —শ, —শ্বর सं—अधिपति, महाराजा, प्रभु, मालिक ।

অধুনা क्रि वि—আজকাল, সম্প্রতি आजकल, इन-दिनों, अभी । —তন वि—आजकल का, आधुनिक ।

অধৃষ্য (-अ) वि—अजेय, न जीतने योग्य ।

অধৈর্য্য (-अ) सं—अधीरता, चचलता, बेचैनी । वि—अधीर, बेचैन, व्याकुल ।

অধো (গত) (-अ) वि—नीचे गिरा हुआ, उतरा हुआ । —গতি स—अवनति, पतन, दुर्दशा । —গমন सं=অধোগতি । —গামী वि—नीचे जानेवाला, उतरने वाला । —দৃষ্টি सं—नीचे की ओर नजर, निम्न दृष्टि । —দৃষ्टিতে क्रि वि—नीचे की ओर देखते हुए । —বদন,—মুখ वि—नीचे की ओर मुंह किया हुआ, सिर झुकाया हुआ ; औंधा , उदास । —মুখে क्रि वि=অধোদৃষ্টিতে । —লোক सं—पाताल ।

অধ্য (ক্ষ) (-क्ख-अ) सं—अध्यक्ष, कर्ता, सचालक, नायक ; कर्मचारी (কোষাধ্যক্ষ) । —ক্ষতা सं—अध्यक्ष का पद , सचालन, प्रबन्ध, इन्तजाम । —বসায় सं—অবিরাম চেষ্টা लगातार प्रयत्न, उद्योग । —বসায়ী वि—लगातार प्रयत्न करने वाला, उद्योगी । —য়ন सं—পাঠ पाठ, पठन, पढ़ाई । —স্ত (-अ) वि—एक में दूसरे का आरोप किया हुआ, जैसे, रस्सी में साँप ।

অধ্যা (ত্ম) (-त्त-अ) वि—आत्मा सम्बन्धी, पारमार्थिक । —পক सं—शिक्षक, उपाध्याय, आचार्य । —পন, —পনা सं—शिक्षादान, शिक्षण । —পিকা स्त्री—शिक्षयित्री । —পিত (-अ) वि—पढ़ाया हुआ । —য় सं—গ্রন্থের পরিচ্ছেদ अध्याय, प्रकरण । —রূঢ (-अ) वि—चढ़ा हुआ, सवार । —রোপ, —স सं—एक में दूसरे का आरोप, जैसे रस्सी में साँप का भान । —সন सं—उपवेशन, आरोपण । —সিত (-अ) वि=অধ্যস্ত । —সীন वि—अधिष्ठित, उपविष्ट, बैठा हुआ । —হার,—হরণ सं—दूसरे के लेख या वाक्य का उल्लेख, उद्धरण । —হার্য্য (-र्ज-अ) वि—उद्धरण-योग्य । —হৃত (-अ) वि—उद्धृत । [किया हुआ inhabited.

অধ্যুষিত (-अ) वि—अवस्थित, अधिष्ठित, वास

অধ্যেতব্য (-अ) वि—पठनीय, पाठ के योग्य ।

অধ্যেতা सं—पाठक, छात्र, विद्यार्थी ।

অধ্রুব (-अ) वि—अनित्य, अनिश्चित, अस्थायी । स—अनित्य वस्तु ।

অধ্বর (अद्धर) सं—यज्ञ ।

অধ্বর্যু सं—ऋत्विक, यज्ञ करने वाला ।

অন্—स्वर के पहले बैठने वाला निषेध अभाव आदि सूचक उपसर्ग ; जैसे—অনন্ত, অনাবশ্যক, অনুচিত, অনেক, অনৈতিক आदि ।

অন (ক্ষর) (-क्खर) वि—নিরক্ষর अपढ़, अशिक्षित । —ঘ (-अ) वि—पाप-रहित, निष्पाप , निर्म्मल, पवित्र । —ঙ্গ (-अ) सं—कामदेव, कन्दर्प । —চ্ছ (-अ) वि—अनिर्मल, मैला । —টন सं—अभाव, कमी । —ড় वि—अचल, स्थिर । —পত্য (-अ) वि —निस्सन्तान, सन्तानहीन, बेऔलाद । —পেক্ষ (-क्ख अ) वि—अपेक्षा-रहित,

নিরপেক্ষ। —বকাশ सं—अवकाश का अभाव। —বদ্য (-अ) वि—दोष-रहित, निर्मल, साफ, पवित्र। —বধান वि—असावधान, लापरवाह। —বধানতা सं—असावधानता, लापरवाही। —বরত (-अ) क्रि वि—लगातार, निरन्तर। —বসর सं=অনবকাশ। —বহিত (-अ) वि=অনবধান। —ভিজ্ঞ (-अ) वि—अनुभव-रहित, अनाड़ी। —ভিজ্ঞতা सं—अनाड़ीपन, अनुभवहीनता। —ভিপ্রেত (-अ) वि—अवांछित। —ভিমত (-अ) वि=অনভিপ্রেত। —ভিলষিত (-अ) वि=অনভিপ্রেত। —ভিলাষ सं— इच्छा का अभाव। —ভিলাষী वि—अनिच्छुक। —ভ্যস্ত (-अ, वि—अभ्यासरहित। —ভ্যাস सं—अभ्यास का अभाव। —র্গল वि—बाधारहित, अनर्गल, बेरोकटोक। —র্থ (-अ) सं—अमगल, अनिष्ट, गलत अर्थ। वि—अर्थहीन; तुच्छ। —র্থক क्रि वि—শুধুশুধু वृथा, निरर्थक। —র্থপাত सं—विपत्ति, आफत का गिरना। —লস वि—आलस्यरहित, फुर्तीला। —ল্প (-अ) वि—बहुत, अधिक, ज्यादा। —শন सं—उपवास, लंघन, फाका। —শ্বর (-শ্বার) वि—नष्ट न होनेवाला, नित्य।

অনতি (-কাল) सं—अल्प काल, थोड़ा समय। —ক্রমণীয় (-अ), —ক্রম্য (-अ) वि—लाँघने के अयोग्य। —ক্রান্ত (-अ) वि—न लाँघा हुआ। —দীর্ঘ (-अ) वि—बहुत लम्बा नहीं, छोटा। —দূর सं—बहुत दूर नहीं, अल्प दूर। —দূরবর্তী वि—बहुत दूर का नहीं, निकट का। —দূরে क्रि वि—थोड़ीदूरपर। —পূর্বে क्रि वि—बहुत पहलेनहीं, अल्प समय पहले। —বিলম্ব (-अ) सं—बहुत विलम्ब नहीं। —বিলম্বে (-अ) क्रि वि—बहुत देर से नहीं, अति शीघ्र। —বিস্তৃত (-अ) वि—बहुत फैला हुआ नहीं।

অনধিক (-ক) वि—अल्प, थोड़ा; अन्दर (দশ টাকার—)। —কার सं—अधिकार का अभाव, अधिकार का न होना। —কার-চর্চা सं—बिना अधिकार चर्चा। —কার-প্রবেশ सं—बिना अधिकार प्रवेश। —কারী वि—अधिकारहीन; अयोग्य। —কৃত (-अ) वि—अधिकार न किया हुआ; न जीता हुआ। —গত (-अ) वि—न पढ़ा हुआ; न पहुँचा हुआ। —গম্য (-अ) वि—न जानने योग्य, अज्ञेय; न जाने योग्य।

অনধীত (-अ) वि—न पढ़ा हुआ।

অনধীন वि—स्वाधीन, स्वतन्त्र, आजाद।

অনধ্যায় सं—शास्त्र न पढ़ने-पढ़ाने का दिन।

অননু (করণীয়) (-अ) वि—नकल करन के अयोग्य। —মত (-अ) वि—आदेश न दिया हुआ। —মেয় (-अ) वि—अनुमान से निर्णय करने के अयोग्य। —ষ্ঠিত (-अ) वि—न किया हुआ, अकृत।

অনন্ত (-अ) वि—अन्तहीन, असीम, बेहद; नित्य। सं—बाँह का एक गहना; विष्णु, बलदेव, शेषनाग, ब्रह्म। —চতুর্দশী, —ব্রত (-अ) सं—अनन्तचौदस। —মূল सं—एक जड़ी, गौरीसर। —র क्रि वि—তাহার পর उसके बाद।

অনন্য (-अ) वि—अन्य से सम्बन्ध न रखनेवाला, एकनिष्ठ, अभिन्न। —চিত্ত (-अ) वि—एक ही ओर चित्त लगा हुआ, एकाग्र। —মনা वि—दूसरी ओर मन न लगा हुआ, एकाग्र-चित्त। —সাধারণ वि—असाधारण; खास; अनोखा। অনন্যোপায় वि—अन्य उपाय रहित; असहाय।

অনল सं—अग्नि, आग।

অনা (গত) (-अ) वि—न आया हुआ, अनुपस्थित; भावी। —চার सं—दुराचार; बुरा बरताव। —চারী वि—दुराचारी। —ছিষ্টি वि—बेढब,

अनोखा (बुरे अर्थ में)। —टन सं=अनटन। —ड़म्बर वि—आडम्बर-रहित। —त्मीय (-त्तीय-अ) वि—सम्बन्धहीन, नाता-रहित। —थ वि—अनाथ, यतीम। —था, थिनी वि,स्त्री—नाथहीना, विधवा। —दर सं—स्नेहका अभाव, उपेक्षा, असम्मान, बेइज्जती। —दाय सं—बेवसूली। वि—बाकी। —दायी वि—बाकी। —दि वि—जन्मरहित, आदिहीन। —दृत (-अ) वि—उपेक्षित, बेइज्जत। —वश्यक वि—प्रयोजन-रहित, गैरजरूरी। —विल वि—निर्मल, साफ, निर्दोष। —विष्कृत (-अ) वि—आविष्कार न किया हुआ। —विष्ट (-अ) वि=अमनोयोगी। —वृत (-अ) वि—न ढँका हुआ, खुला। —वृत्ति सं—आवृत्ति का अभाव, अनभ्यास। —वृष्टि सं—वृष्टि का अभाव, सूखा। —मय सं—रोग का अभाव, निरामय। —मा वि—नामरहित, गुमनाम। —मिका सं—छोटी उंगली के बगल वाली उंगली, अनामिका। —मुख (-अ), —मुखो वि—मनहूस चेहरा वाला। —यत्त (-अ) वि—कब्जे में न आया हुआ, अप्राप्त। —याम सं—प्रयास का अभाव, अल्प परिश्रम। —यासे क्रि वि—अनायास। —रोग्य वि—आराम होने के अयोग्य, असाध्य। —र्य (-र्ज-अ) वि—आर्य जाति से भिन्न। सं—अनार्य, नीच जाति। —लोचित (-अ) वि—आलोचना न किया हुआ, अपठित। —लोचनीय (-अ), —लोच्य (-अ) वि—आलोचना के अयोग्य। —श्रमी वि—गार्हस्थ्य आदि चारों आश्रमों से रहित। —सक्त (-अ) वि—निर्लिप्त, अनुराग-रहित। —शृष्टि वि=अनाछिष्टि। —स्था सं—अविश्वास, उपेक्षा। —स्वादित (-श्शादित-अ) वि—स्वाद न लिया हुआ। —स्वादितपूर्व (-अ) वि—पहले स्वाद न लिया हुआ। —हत (-अ) वि—आघात अप्राप्त। सं—बिना आघात सुनाई पड़ने वाला शब्द। —हत चक्र सं—योग-शास्त्र के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक। —हार सं—उपवास, फाका। —हारी वि—उपवासी। —हारे क्रि वि—उपवास में, बिना भोजन। —हूत (-अ) वि—न बुलाया हुआ, अनिमन्त्रित।

अनिच्छा सं—अनिच्छा, अरुचि, असम्मति, आपत्ति। —कृत (-अ) वि—अनिच्छा से किया हुआ। —सत्त्वेও क्रि वि—इच्छा न रहते हुए भी।

अनिच्छुक वि—इच्छाहीन, पराङ्मुख।

अनित्य (-अ) वि—अस्थायी, नश्वर, नाशवान।

अनिद्र (-अ) वि—निद्राहीन; चौकस।

अनिद्रा सं—निद्रा का अभाव, निद्राहीनता।

अनिन्दनीय (-अ) वि—निन्दा के अयोग्य; उत्तम, सुन्दर।

अनिन्दित (-अ) वि—निन्दा न किया हुआ।

अनिन्द्य (-अ) वि=अनिन्दनीय। —सुन्दर वि—अत्यन्त सुन्दर।

अनिपुण वि—अदक्ष, अनाड़ी।

अनिवार क्रि वि—बार बार, लगातार, निरन्तर।

अनिवार्य (-र्ज-अ) वि—रोकने के अयोग्य, अवश्य लेने रखने या मानने योग्य।

अनिमन्त्रित (-अ) वि=अनाहूत।

अनिमेष वि=अपलक।

अनियत (-अ) वि—अनिश्चित, अस्थिर।

अनियन्त्रित (-अ) वि—प्रतिबन्ध-रहित, बिना रोक-टोक का, मनमाना।

अनियम सं—नियम का अभाव, अव्यवस्था।

अनियमित (-अ) वि—नियम-रहित, बेकायदा।

अनिर्दिष्ट (-अ) वि—अनिश्चित, अनिर्धारित।

अनिर्वचनीय (-अ), **अनिर्वाच्य** (-अ) वि—वर्णनातीत, बोलने के अयोग्य, अकथनीय।

अनिर्म्मल वि—मैला, गन्दा, मलिन।

অনিল सं—वायु, पवन, हवा। —সখ (-অ) सं—वायु का सहचर, अग्नि, आग।

অনিশ্চয় सं—निश्चय का अभाव, सन्देह। —তা, —ত্ব (অ) सं—निश्चय का अभाव, सन्दिग्धता।

অনিশ্চিত (-অ) वि—सन्देहयुक्त, अनिर्दिष्ट, सन्दिग्ध।

অনিষ্ট (-অ) सं—हानि, क्षति, अपकार, अहित, अमंगल। वि—अनचाहा, अनभिलषित। —কর, —জনক वि—हानिकारक, अमंगलजनक। —কারক वि—हानिकारक, नुक़सान पहुँचाने वाला। —পাত सं—दुर्दैव, आपत्ति, आफ़त का गिरना। [पहुँचाना।

অনিষ্টাচরণ सं—हानि करना, नुक़सान

অনিষ্টাশঙ্কা सं—हानि की शंका।

অনীক सं—सेना, फ़ौज; सैनिक।

অনীকিনী सं—सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०९३५ पैदल सिपाही हों। [अन्धेर; चरित्रहीनता।

অনীতি सं—नीति का अभाव, अन्याय,

অনীশ্বর वि—नास्तिक, ईश्वर को न मानने वाला। —বাদ सं—नास्तिकता, ईश्वर पर अविश्वास। —বাদী वि—नास्तिक।

অনু (কম্পা) सं—दया, कृपा, मेहरबानी, हमदर्दी। —করণ सं—नकल, देखा देखी कार्य; अनुसरण। —করণীয় (-অ) वि—नकल करने योग्य। —কল্প (-অ) सं—गौण कल्प, मुख्य नियम का व्यतिक्रम, विकल्प। —কার सं=অনুকরণ। —কার-শব্দ सं—ध्वनि के अनुरूप शब्द; जैसे—ফটফট, শনশন (सनसन) आदि। —কারী वि—अनुकरण करने वाला; सदृश। —কার্য (-র্জ-অ) वि—अनुकरण करने योग्य। —কীর্তন सं—घोषणा, बाद में वर्णन। —কূল वि—अनुरूप, सहायक; सदय। —কূলতা सं—सहायता, दया। —কৃত (-অ) वि—नकल किया हुआ, अनुसृत। —কৃতি सं=অনুকরণ। —ক্ত (-অ) वि—न कहा हुआ, अकथित। —ক্রম सं—क्रम, सिलसिला। (বর্ণানুক্রমে—अक्षर क्रमसे)। —ক্রমণ सं—अनुसरण। —ক্রমণিকা सं—भूमिका, अवतरणिका, विषय-सूची। —ক্ষণ (-ক্খন) क्रि वि—सदा, हर समय, निरन्तर। —গ (-অ) वि, सं—अनुगामी, अनुयायी, सेवक, चेला, पीछे चलने वाला। —গত (-অ) वि—आश्रित, वशीभूत; बाध्य, आज्ञाकारी। —গমন सं—সহমরণ मृत पति के साथ विधवा पत्नी का जल मरना; अनुसरण, पीछे गमन। —গামী वि—पीछे चलने वाला, अनुयायी, अनुसरण करने वाला, सहयात्री। —গৃহীত (-অ) वि—उपकृत, कृपाप्राप्त, कृतज्ञ। —গ্রহ (-অ) सं—कृपा, दया; रिआयत; सहायता। —গ্রহকারী वि—कृपालु, अनुग्राहक। —গ্রহপূর্বক क्रि वि—कृपया, कृपापूर्वक। —গ্রাহক वि अनुग्रह करनेवाला। —চর वि—साथ चलनेवाला। सं—सेवक, नौकर, चेला। —চরী स्त्री—दासी, नौकरानी, सेविका। —চিকীর্ষা सं—नकल करने की इच्छा। —চিকীর্ষু वि—नकल करने के इच्छुक। —চিত वि—अन्याय, नामुनासिब; बुरा। —চিন্তন, —চিন্তা सं—पीछे चिन्ता, बादका विचार, सदा चिन्तन। —চ্চ (-অ) वि—अल्प उच्च, थोड़ा ऊँचा। —চ্চারিত (-অ) वि—उच्चारण न किया हुआ। —চ্চারণীয় (-অ), —চ্চার্য (-র্জ-অ) वि—उच्चारण के अयोग्य। —চ্ছেদ सं—छोटा परिच्छेद, अध्याय का एक अंश। —জ सं—छोटा भाई। —জা स्त्री—छोटी

বহিন। —অৌরী বি—আশ্রিত। সং—পোষ্য ব্যক্তি, নৌকর। —জ্ঞা সং—আজ্ঞা, আদেশ, হুকম, স্বীকৃতি। —জ্ঞাত (-অ) বি—আদিষ্ট, আদেশ-প্রাপ্ত। —তপ্ত (-অ) বি—পছতাযা হুআ; পরিতপ্ত। —তাপ সং—পশ্চাত্তাপ, পছতাবা, অফসোস। —তম বি—বহুত উত্তম; নিকৃষ্ট, বুরা, খরাব। —ত্তর বি—নিরুত্তর, লাজবাব, চুপ। —ৎসাহ (-অ) সং—উৎসাহকা অভাব, উৎসাহ-রাহিত্য। —দার বি—সংকীর্ণমনা সংকীর্ণচিত্ত, কংজূস, কৃপণ। —দিন ক্রি বি—প্রতিদিন, রোজ-রোজ। —দিষ্ট (-অ) বি—খোজ ন মিলা হুআ, লাপতা। —দ্ভিন্ন (-অ) বি—ন উগা যা ন খিলা হুআ, পূর্ণতা অপ্রাপ্ত। —ধাবন সং—মনোনিবেশ, গৌর, ধ্যান, খোজ, অনুসরণ। —নয় সং—বিনতী, অনুরোধ, প্রার্থনা। —নাসিক বি—নাকসে উচ্চারিত হোনে বালা। —নাসিক বর্ণ সং—ঙ ঞ ণ ন ম ং ँ। —ন্নত (-অ) বি—অল্প উন্নত, থোড়া ঊঁচা; নীচ, অছূত। —প বি=অনুপম। —পকার সং—অপকার, হানি, নুকসান। —পকারক, —পকারী বি—হানি-কারক, নুকসানদেহ, অপকারী। —পনীত (-অ) বি—ন পহুঁচা হুআ, উপনযন-সংস্কার-রহিত। —পম বি—উপমা-রহিত, অতুলনীয, বেজোড়, অতি উত্তম। —পমেয় (-অ) বি—উপমাকে অযোগ্য, বহুত অচ্ছা। —পযুক্ত (-অ) বি—অযোগ্য; নিকম্মা। —পল সং—সমযকা এক সূক্ষ্ম বিভাগ জো ১ বিপলকা ৬০বাঁ যা ১ সেকণ্ডকা ১৫০বাঁ হিস্সা হোতা হৈ। —পস্থিত বি—গরহাজির, গৈরহাজির, অবিদ্যমান। —পস্থিতি সং—গৈরহাজিরী, অবিদ্যমানতা। —পাত সং—তুলনাত্মক

স্থিতি, গণিতকী ত্রৈরাশিক ক্রিযা। —পান সং—ঔষধকে সাথ খাযী জানে বালী দূসরী চীজ। —পায় বি—নিরুপায, উপায-রহিত। —প্রবিষ্ট (-অ) বি—ভীতর ঘুসা হুআ। —প্রবেশ সং—চুপকেসে ভীতর প্রবেশ। —প্রাণনা সং—শক্তি-সংচার, প্রেরণা। —প্রাণিত (-অ) বি—উৎসাহিত; প্রাণ যা জোশ ডালা হুআ। —প্রাস সং—এক হী অক্ষরকে বার-বার আনেকা এক অলংকার জৈসে কাশী-কাঞ্চী, কলা-কৌশল, দিন-দুপুরে আদি। —বন্ধ (-অ) সং—অবতারণা, উপক্রম, প্রসংগ, সম্বন্ধ। —বর্তন সং—অনুবৃত্তি; অনুসরণ; নকল। —বর্তী বি—অনুগামী, অনুযাযী, বশীভূত, বাধ্য, আজ্ঞাকারী। —বাদ সং—উলথা, তর্জুমা, ভাষান্তর। —বাদক সং—তর্জুমা করনে বালা। —বাদিত (-অ) বি—উলথা কিযা হুআ, ভাষান্তরিত। —বৃত্তি সং—অনুবর্তন, পুন কথন; পেন্শন pension —ভব সং—বোধ, জ্ঞান, অনুভূতি, উপলব্ধি, অভিজ্ঞতা। —ভূত (-অ) বি—জ্ঞাত, উপলব্ধ, বিদিত, পরীক্ষিত, তজরবা কিযা হুআ। —ভূতি সং=অনুভব। —ভূমিক বি—ক্ষিতিজকে সমানান্তর। —মত (-অ) বি—অনুমোদিত, আজ্ঞা-প্রাপ্ত, স্বীকৃত। —মতি সং—আজ্ঞা, আদেশ, হুকম, সম্মতি। —মতি করা, —মতি দেওয়া ক্রি—আজ্ঞা দেনা, অনুমোদন করনা, স্বীকার করনা। —মন্তা বি—আদেশদাতা, হুকম দেনেবালা। —মরণ সং=সহমরণ। —মান সং—অনুমান, অটকল, অংদাজা, প্রত্যক্ষ দৃষ্টান্তসে অপ্রত্যক্ষ বিষয কা নির্ধারণ। —মান হওয়া ক্রি—মালুম হোনা। —মিত (-অ) বি—অনুমান কিযা হুআ, অংদাজা লগাযা হুআ, অনুমিত। —মৃতা স্ত্রী=সহমৃতা। —মেয়

(-अ) वि—अनुमानके योग्य। —মোদন सं—सम्मतिदान, समर्थन। —মোদিত (-अ) वि—समर्थित; स्वीकृत। —বাদিত सं= অনুবাদ। —বাদী वि—अनुगामी, अनुचर, सेवक; सदृश। —যোগ सं—अभियोग, उलाहना; निन्दा; धमकी। —যোগী वि—उलाहना देने वाला; नालिश करने वाला, निन्दक। —রক্ত (-अ) वि—आसक्त, भक्त। —রক্তি सं—आसक्ति, भक्ति, प्रेम प्यार, ध्यान। —রঞ্জক वि, सं—दिल बहलाने वाला, मनोरंजनकारी, आनन्ददायक, रंगसाज। —রঞ্জন सं—दिल-बहलाव, मनोरंजन, आनन्द-प्रदान, रंगसाजी। —রঞ্জিত (-अ) वि—रंजित, रंगया हुआ; आनन्दित, प्रफुल्लित। —রণন सं—प्रतिध्वनि, गूँज। —রাগ सं—प्रेम, प्रीति, भक्ति; झुकाव, ध्यान। —রাগী वि—प्रेमी, आसक्त, भक्त। —রুদ্ধ (-अ) वि—अनुरोध किया हुआ, प्रार्थित; रोका हुआ। —রূপ वि—सदृश, तुल्य, योग्य। —রোধ सं—प्रार्थना, सिफारिश, विनती; खातिर। —র্ধ্ব (-अ) क्रि वि—খাড়াইয়ের দিকে চড়াই की ओर। वि—खड़े बल का। —লেপন सं—उबटन लेपन। —লোম सं—निम्न क्रम, उतार। —ল্লিখিত (-अ) वि—उल्लेख न किया हुआ। —শাসন सं—आदेश, उपदेश, विधान, नियम, कानून; नियन्त्रण; आज्ञापत्र (অশাসেহ)। —শিষ্য (-अ) स—शिष्यका शिष्य। —শীলন सं—चर्चा, अभ्यास, चिन्तन, मनन। —শীলনী सं—अभ्यासार्थ प्रश्नावली। —শীলনীয় (-अ) वि—अभ्यास-योग्य। —শোচনা सं—अनुताप, पश्चात्ताप, पछतावा, खेद। —শোচনীয় (-अ) वि—पछताने योग्य, खेदजनक। —ষঙ্গ (-अ) सं—सम्बन्ध-युक्त विषय, प्रसंग; दया; सम्बन्ध। —ষ্ঠাতা वि, सं—करने वाला, सम्पादक। —ষ্ঠান सं—आरम्भ, क्रिया, सम्पादन, अभ्यास। —ষ্ঠিত (-अ) वि—आचरित, कृत, सम्पादित। —ষ্ঠেয় (-अ) वि—अनुष्ठान-योग्य, सम्पादन-योग्य। —ষ্ণ (अनुष्ण -अ) वि—शीतल, ठण्ढा; सुस्त। —সন্ধান सं—अन्वेषण, खोज, ढूँढ़, जाँच, गवेषणा। —সন্ধিৎসা सं—अनुसन्धान करनेकी इच्छा। —সন্ধিৎসু वि—अनुसन्धान करनेके इच्छुक। —সন্ধেয় (-अ) वि—अनुसन्धानके योग्य। —সরণ सं=অনুগমন। —সারে क्रि वि—अनुसार। —স্বার सं—अनुस्वार, ं यह चिह्न।

অনূঢ় (-अ) वि—अविवाहित, क्वारा।

অনূঢ়া स्त्री—अविवाहिता, क्वारी।

অনূদিত वि=অনুবাদিত।

অনৃজু वि—বক্র टेढ़ा; कपटी।

অনৃত (-अ) वि—मिथ्या, झूठा।

অনেক वि—अनेक, बहुत, अधिक। —ত্ব (-अ) स—बहुत्व। —ধা क्रि वि—अनेक प्रकारसे, तरह तरह से। —বিধ (-अ) वि—नाना प्रकार का। —অনেকে सर्व—अनेक मनुष्य, बहुत आदमी।

অনৈক্য (अनइक्य -अ) स—विरोध, अनमिल, वैर, मत-भेद, फूट।

অনৈসর্গিক वि—अस्वाभाविक।

অনৌচিত্য (अनउचित्य -अ) सं—अयुक्तता, अनुचित होनेका भाव।

অন্তঃ (অন্তর্) सं—दिल, मन, बुद्धि, चित्त। —পাতী वि—मध्यवर्ती, भीतरमें स्थित, अंतर्गत। —পুর सं—অন্দরমহল जनानखाना, रनवास, हरम। —পুরিকা सं स्त्री—जनानखानेमें रहने वाली महिला। —শত্রু सं—गृहशत्रु, राज्यके भीतरका दुश्मन; मनके काम

क्रोध आदि रिपु। —सत्त्वा वि स्त्री—गर्भवती। —सार सं—भीतरका सार, तत्त्व। —स्थ (-अ) वि—भीतरी, बीचका; अन्तिम। अन्त (-अ) सं—शेष, समाप्ति; सीमा, सिरा; मृत्यु। —क सं—यम यमराज, मृत्यु, विनाशक। —काल सं—मृत्युका समय, अन्तिम घड़ी। —तः क्रि वि—कमसे कम। —र सं—मध्य; अन्तर, फासला; भेद; मन; दूर; बाद। —रङ्ग (-अ) वि—मित्र, दोस्त, आत्मीय। —रङ्गता सं—घनिष्ठता। —र-टिपूनि सं—पीछेसे चोट, गुप्तरूपसे मर्म-स्थान पर दबाव जिससे आदमी बेकाम हो जाय; ताना। —रस्थ (-अ) वि—भीतरी; बीचका; मनोगत, दिल का। —रा सं—गीतका दूसरा चरण। —रात्मा (-त्मा) सं—जीवात्मा। —रापत्या वि स्त्री—गर्भवती। —राय सं—विघ्न, बाधा, अड़चन। —राल सं—आड़ओट, ओट, आड़, फासला; अदृश्य स्थान। —रित (-अ) वि—छिपा हुआ, ढंका हुआ; वियुक्त, अलग किया हुआ; मृत; अर्पित; सरकारी आज्ञासे किसी निर्दिष्ट स्थानमें कैद interned. —रिन्द्रिय (-अ) सं—मन, अन्तःकरण। —रीक्ष (-क्ष-अ) सं—आकाश, स्वर्ग। —रीण वि=अन्तरित। —रीप सं—रास, नुकीला स्थलभाग जो समुद्रके भीतर बहुत दूर तक चला गया है। उत्तमाशा अन्तरीप सं—अफ्रीकाके दक्षिण का रास। —रीय (-अ) सं—नीचे का कपड़ा, धोती साड़ी आदि। —रे क्रि वि—दिलमें, मनमें; दूर; भीतर। —र्गत (-अ) वि—मध्यवर्ती, बीचका। —र्गृह (-अ) सं—घरके भीतरका कमरा। —र्जलि सं—नाभिगङ्गा पारलौकिक मंगलके लिए मुमुर्षु व्यक्ति का निम्नांग गंगा आदिमें डुबाये रखनेकी विधि। —र्दर्शन सं—अपने मनकी चिन्ता या भावकी जाँच। —र्दर्शी वि—मनके भीतर तक देख सकने वाला। —र्दाह (-अ) सं—सन्ताप, मनकी जलन, पश्चात्ताप। —र्दृष्टि सं—भीतर तक देखनेकी शक्ति। —र्देश सं—बीचका स्थान, भीतरका अंश; उपत्यका, देशका भीतरी भाग। —र्धान सं—तिरोधान, अदर्शन, छिपाव। वि—गायब। —र्निहित (-अ) वि—भीतर स्थित; मनमें गुप्त। —र्वत्नी वि=अन्तःसत्त्वा। —र्वर्ती वि=अन्तःपाती। —र्वाणिज्य (-अ) सं—देशके भीतरका व्यापार। —र्वास सं—भीतरी पहनावा। —र्विप्लव सं—गृहयुद्ध, भीतरी विद्रोह। —र्विवाह (-अ) सं—स्वकुलमें या स्वगोत्रमें विवाह। —र्वेग सं—मनका आवेग, जोश। —र्वेदना सं—मानसिक दुःख, गुप्त शोक। —र्भूत (-अ) वि=अन्तर्गत। —र्मुख,—र्मुखी वि—आत्म-विचारशील। —र्यामी (र्जामी) सं—भीतर रह कर मनकी बात जाननेवाला, ईश्वर। —र्हित (-अ) वि—गायब, गुप्त, अदृश्य। —शय्या सं—मृत्यु-शय्या। —स्तल सं—भीतरी भाग; नीचेका स्तर; पदी; मन। —स्थ (-अ) वि=अन्तःस्थ।

अन्तिक वि—निकटका। सं—निकटता।

अन्तिम वि—आखिरी, मृत्यु-समयका।

अन्तेवासी सं—शिष्य, चेला, छात्र।

अन्त्य (-अ) वि—अन्तिम, आखिरी; नीच।

अन्त्यज सं—नीच जाति, हरिजन।

अन्त्येष्टि सं—मृतक-संस्कार, क्रिया-कर्म।

अन्त्र (-अ) सं—आंत, अँतड़ी। —वृद्धि सं—आँत उतरनेका रोग Hernia

अन्दर क्रि वि—भितर भीतर, में। सं—

জেনানা-খানা; হরম। —গৃহ सं—অন্তঃপুর।

অন্ধ (-অ) वि—अन्धा, नेत्रहीन। —বিশ্বাস सं—बिना विचारे विश्वास। —কার सं—अँधेरा, तिमिर; अज्ञान। —কূপ सं—এঁদো কুয়ো অঁধেরা কুআঁ; गुप्त गढ़ा black hole —তা,—ত্ব (-অ) सं—अन्धापन, मूर्खता। —প্রায় वि—क्षीणदृष्टि, करीब-करीब अन्धा। —বৎ क्रि वि—अन्धेकी तरह, बिना विचारे।

অন্ধিসন্ধি सं—गुप्त स्थान, सूराख, छिद्र; भेद।

অন্ধীকৃত (-অ) वि—अन्धा बनाया हुआ।

অন্ন (-অ) सं—ভাত भात, उबाला हुआ चावल। —কষ্ট (-অ) सं—अन्नका कष्ट, अन्नाभाव, दुर्भिक्ष, अकाल। —কূট सं—ভাতের স্তূপ भातका ढेर। —গতপ্রাণ वि—अन्नके ऊपर ही निर्भर। —চিন্তা सं—जीविकाके लिए चिन्ता। —জল सं—दाना-पानी। —দা वि—अन्न देनेवाली। सं—दुर्गा, भगवती। —দাতা वि—अन्न देने वाला, पालनहार, प्रतिपालक। —দাস वि—पेटके लिए दूसरेके अधीन रहने वाला। —নালী सं—नरेटी, गलेसे पेट तक अन्न जानेकी नली। —পূর্ণা स्त्री—भगवती, दुर्गा। —প্রাশন सं—चटावन, शिशुके मुखमें प्रथम अन्न देनेका संस्कार। —ময়কোষ सं—स्थूल शरीर। —সংস্থান सं—जीविकाका प्रबन्ध, भोजनका संग्रह। —সত্র (-অ) सं—सदावर्त, लंगरखाना। —সমস্যা सं—जीविकाकी समस्या। —হীন वि—गरीब, भूखा।

অন্নাচ্ছাদন सं—भोजन-वस्त्र, खाना-कपड़ा।

অন্নাভাব सं—अन्नका अभाव, गरीबी।

অন্নার্থী वि—भोजन माँगने वाला, भूखा।

অন্নাহারী वि—भात खाने वाला।

অন্য (অ) वि—और, दूसरा, अपर, भिन्न। —গামী वि—व्यभिचारी। स्त्री, —গামিনী। —তম वि—अनेकोंमें एक। —তর वि—दोमेंसे एक। —ত্র (-অ) क्रि वि—दूसरे स्थान या विषयमें। —থা क्रि वि—नहीं तो अन्य प्रकारसे। वि—अन्य प्रकारका, भिन्न। सं—परिवर्तन। —থাকরণ सं—परिवर्तन साधन, उलटनेकी क्रिया, आज्ञाकी अवहेलना। —থাচরণ सं—विपरीत बर्ताव, आज्ञाभंग। —দীয় (-অ) वि—दूसरेका। —পূর্বা सं—दूसरेकी वाग्दत्ता कन्या। —বিধ (-অ) वि—दूसरे प्रकारका। —ভাবে क्रि वि—दूसरी प्रकारसे। —মনস্ক (-অ) वि—अनमना, दूसरी तरफ ध्यान लगा हुआ, बेखबर।

অন্যান্য (-অ) वि—दूसरे दूसरे, और और।

অন্যায় सं—अन्याय, अन्धेर, अत्याचार, पाप। वि—न्याय-विरुद्ध, गैरकानूनी, अनुचित।

অন্যায্য (-জ্জ-অ) वि—अनुचित, अवैध; बुरा।

অন্যাসক্ত (-অ) वि—दूसरेके प्रति आसक्त।

অন্যূন वि—कम नहीं कमसे कम।

অন্যোন্য (-অ) वि—परस्पर, आपसका।

অন্বয় (अन्नय) सं—पदोंका परस्पर सम्बन्ध, पद्यका गद्यके रूपमें विन्यास; क्रम; वंश। —ব্যতিরেক सं—एकके भाव या अभावमें दूसरेका भाव या अभाव, युक्ति-विशेष।

অন্বয়ী वि— सम्बन्ध-युक्त।

অন্বর্থ (-অ) वि—अर्थानुरूप, यथार्थ, सत्य।

অন্বিত (-অ) वि—युक्त, सम्पन्न; अन्वय किया हुआ।

অন্বেষক—वि—खोजने वाला।

অন্বেষণ स—खोज, जाँच, अनुसन्धान।

অন্বেষণীয় (-अ), অন্বেষ্টব্য (-अ) वि—खोज के योग्य।

অপ् स—জল जल, पानी।

অপ—(-अ) उप—निन्दा विरोध हानि आदि सूचक उपसर्ग। —কর্ম (-अ) सं—कुकर्म, बुरा काम। —কর্ষ (-अ) सं—अवनति, हीनता। —কার सं—हानि, क्षति, नुकसान। —কারক, —কারী वि—हानि करने वाला। —কীর্তি सं—बदनामी, अपयश। —কৃষ্ট (-अ) वि—निकृष्ट, बुरा, नीच। —ক্ক (-क्क-अ) वि—कच्चा; न सीझा हुआ। —ক্ষপাত सं—निरपेक्षता, बेतरफदारी, पक्षपात-राहित्य। —ক্ষপাতী वि—निरपेक्ष, बेतरफदार। —গত (-अ) वि—गत, बीता हुआ, मृत, रहित। —গম, —গমন सं—प्रस्थान, रवानगी; मृत्यु, पलायन, विच्छेद। —গা सं—निम्नगामिनी नदी। —গ্রহ (-अ) सं—प्रतिकूल ग्रह। —ঘাত सं—दुर्घटनासे मृत्यु, अस्वाभाविक मृत्यु, दुर्घटना। —ঘাতক, —ঘাতী वि—हत्यारा। —চয় सं—नाश, हानि, क्षय, व्यय। —চার सं—अपच, बदहजमी, अजीर्ण, निन्दित आचरण। —চিকীর্ষা सं—अपकार करनेकी इच्छा। —চিকীর্ষু वि—अपकार करनेके इच्छुक। —টু वि—अनिपुण, अनाड़ी, रुग्न। —ঠিত (-अ) वि—न पढ़ा हुआ। —ণ্ডিত वि—अशिक्षित, मूर्ख। —ত্নীক वि—पत्नी-रहित, रँडुआ। —ত্য (-अ) सं—सन्तान, पुत्र या कन्या, औलाद। —ত্য-নির্বিশেষে क्रि वि—अपनी सन्तानके साथ भेद न करके, सन्तानकी तरह। —থ सं—बुरा मार्ग; बुरा आचरण। —থ্য (-अ) सं—कुपथ्य, बद-परहेजी। —দস্থ (-अ) वि—अपमानित, बेइज्जत; पदच्युत। —দার্থ (-अ) वि—निकम्मा, अयोग्य। —দেবতা सं—भूत, प्रेत। —নয়ন सं—अपसारण, हटाव; खण्डन। —নীত (-अ) वि—हटाया हुआ, अपसृत; खण्डित। —নোদন सं—অপনয়ন। —প্রয়োগ सं—अशुद्ध अर्थमें शब्दका प्रयोग, दुरुपयोग। —বর্গ (-अ) सं—मोक्ष, मुक्ति। —বাদ सं—निन्दा, बदनामी, आक्षेप, इलजाम। —বাদক वि—इलजाम लगानेवाला, निन्दक। —পবিত্র (-अ) वि—अशुद्ध; गन्दा। —বিত্রতা सं—अशुद्धता, गन्दगी। —ব্যবহার सं—दुरुपयोग। —ব্যয় सं—वृथा व्याय, फजूल खर्च। —ব্যয়ী वि—वृथा व्याय करनेवाला, फजूलखर्च। —ভাষা सं—नीच भाषा, गाली। —ভ্রংশ (-अ)—सं मूल शब्दका विकृत रूप, जैसे—पानीयसे पानी, स्वर्णसे सोना आदि। —মান सं—अनादर, बेइज्जती। —মানিত (-अ) वि—अनादृत, बेइज्जत। —মৃত্যু सं—अपघात मृत्यु, अस्वाभाविक मृत्यु। —যশ स—निन्दा, बदनामी। —রূপ वि—अद्भुत, अनोखा, अपूर्व; बेडौल, बदशकल, कुरूप। —রোক্ষ (-क्ख-अ) स—स्वानुभव, आत्माका स्वाभाविक ज्ञान। वि—प्रत्यक्ष, इन्द्रिय-गोचर। —র্ণা सं—पार्वती, दुर्गा। —র্য্যাপ্ত (—र्जास-अ) वि—प्रचुर, यथेष्ट, आवश्यकतासे अधिक, असीम; अप्रचुर, अल्प, थोड़ा। —লক वि—अनिमेष, एकटक। —লাপ सं—अस्वीकार, मिथ्या भाषण, नाश। —লকা वि—ভঙ্গপ্রবণ, পল্কা, भंगुर, भुरभुरा। —শব্দ सं—नीच शब्द, गाली, अशुद्ध शब्द। —সরণ सं

পলায়ন, हटना, भागना। —সারণ सं—দূরীকরণ हटाना, भगाना; रहित-करण। —সারিত (-अ) वि—हटाया हुआ, भगाया हुआ। —সৃত (-अ) वि—हटा हुआ; भागा हुआ—স্মার (अपस्मारण) सं—मृगी मिरगी, मूर्छा रोग। —হত (-अ) वि—नष्ट, निहत, मारा हुआ। —হন্তা सं—हत्यारा, घातक। —হরণ सं—চুরি चोरी; गबन। —হর্তা, —হারক वि—हरनेवाला। स—चोर, लुटेरा; डाकू। —হৃত (-अ) वि—चुराया हुआ, लुटा हुआ—হ্নব स—अस्वीकार, इनकार; चोरी; छिपाव।

অপয়া वि—अभागा, बदनसीब।

অপর वि—दूसरा, गैर, अन्य; विपरीत। —ন্তু (-अ), —ন্ত क्रि वि—और भी, इसके सिवाय। —ত্র (-अ) क्रि वि—दूसरे स्थान पर; परलोक में। —পক্ষ (-अ) स—कृष्ण पक्ष; दूसरा पक्ष, विरुद्ध पक्ष।

অপরাজিতা सं—एक लताका नीला फूल; [दुर्गा।

অপরাজেয় (-अ) वि—हरानेके अयोग्य।

অপরাধ सं—दोष, कसूर, पाप।

অপরাধী वि—दोषी, जुर्मवार; पापी। स्त्री—अपराधिनी অপরাধিনী।

অপরাধীন वि—स्वाधीन, स्वतन्त्र, आजाद।

অপরাপর वि—दूसरे दूसरे, अन्यान्य।

অপরার্দ্ধ (-अ) स—दूसरा आधा।

অপরাহ্ণ (-अ) सं—दिनका तीसरा पहर।

অপরি (গ্রহ) (-अ) सं—दानका अग्रहण, अस्वीकार; त्याग। —চালক वि—चलने न देने वाला nonconductor. —চিত (-अ) वि—অচেনা अनजान, अज्ञात। —চ্ছন্ন (-अ) वि—मैला, मलिन, गन्दा। —চ্ছন্নতা सं—मैलापन, मलिनता, गन्दगी। —চ্ছিন্ন (-अ) वि—असीम, बेहद। —জ্ঞাত (-अ) वि—अज्ञात, अनजान। —পক্ক (-अ) वि—अपूर्ण, अधुरा; कच्चा। —ণয় स—विवाहका न करना। —ণামদর্শিতা सं—भविष्य या परिणाम देखनेकी अशक्ति। —ণামদর্শী वि—भविष्य या परिणाम न देखने वाला, अदूरदर्शी। —ণীত (-अ) वि—अविवाहित, कारा। —পক্ব (-क-अ) वि—कच्चा; अनाड़ी, अनिपुण। —পাক सं—बदहजमी, अजीर्ण। —বর্ত্তিত (-अ) वि—अविकृत, ज्योंका त्यों। —মিত (-अ) वि—बहुत ज्यादा; असीम, बेहद। —মেয় (-अ) वि—अकूत, परिमाणके अयोग्य, बेअंदाज। —শোধনীয় (-अ) वि—शोधन न होने योग्य; न लौटाने योग्य। —শোধিত (-अ) वि—न लौटाया हुआ। —স্কার वि—নোংরা मलिन, मैला, गन्दा, अपवित्र; अस्पष्ट,। सं—गन्दगी, अपवित्रता। —স্কৃত (-अ) वि—मैला; अपवित्र; अशोधित। —সর वि—कम चौड़ा, सँकरा; निकटका। —সীম वि—असीम, बेहद; बहुत ज्यादा। —স্ফুট (-अ) वि—अस्पष्ट; अनखिला। —হার্য্য (-जं-अ) वि—त्यागनेके अयोग्य, न छोड़ने योग्य; अति आवश्यक।

অপাংক্তেয় (-अ), অপাঙ্‌ক্তেয় (-अ) वि—पंक्तिभोजनके अयोग्य, जातिबाहर।

অপাক सं—अजीर्ण, बदहजमी। वि—न पचा [हुआ।

অপাকরণ सं=অপসারণ।

অপাঙ্গ (-अ) सं—कनखी, कटाक्ष। वि— [अगहीन।

অপাচ্য (-अ) वि—न पचने योग्य।

অপাঠ্য (-अ) वि—पढ़नेके अयोग्य; अश्लील।

অপাত্র (-अ) सं—अयोग्य पात्र, कुपात्र।

অপাদান सं- अपादान कारक।

অপান सं—अधोवायु, पाद।

অপাপবিদ্ধ (-अ) वि—निष्पाप।
अपावरण सं—आवरण-मोचन।
अपावृत (-अ) वि—खुला, उन्मुक्त।
अपाय सं—हानि, क्षति; नाश; क्लेश; बाधा, विघ्न। [बेहद।
अपार वि—कूल-रहित, विशाल; असीम,
अपारक (-ग) वि—असमर्थ; अयोग्य।
अपार्थिव (-अ) वि—पृथ्वीसे सम्बन्ध न रखनेवाला, अलौकिक।
अपार्यामाने क्रि वि—असमर्थ होने पर।
अपिच अव्य—आरও—और भी, सिवाय।
अपितु अव्य—किन्तु, परन्तु, दूसरी ओर; यद्यपि।
अपुत्रक वि—पुत्रहीन, बे-औलाद। [कच्चा।
अपुष्ट (-अ) वि—अपूर्ण, दुबला-पतला,
अपुष्पक वि—फूल-रहित।
अपूर्ण (-अ) वि—अधूरा, असमाप्त।
अपूर्व (-अ) वि—अभिनव अनोखा, अद्भुत; विचित्र; उत्तम। [प्रार्थनीय।
अपेक्षणीय (-अ) वि—इच्छा करने योग्य,
अपेक्षा (-क्खा) सं—आशा, इच्छा, चाह, प्रयोजन; परवाह; प्रतीक्षा, विलम्ब; तुलना। क्रि वि—तुलनामें। —करा क्रि प्रतीक्षा करना, इन्तजार करना। —कृत (अ) क्रि वि—तुलनामें, मुकाबलेमें।
अपेक्षित (-अ) वि—प्रत्याशित इच्छित, चाहा हुआ। [आदि।
अपेय (-अ) वि—पीनेके अयोग्य (मदिरा
अपोगण्ड (-अ) वि—शिशु; नाबालिग।
अपौरुष सं—पुरुषके अयोग्य आचरण, साहसका अभाव। —अपौरुषेय (-अ) वि—मनुष्यके द्वारा अकृत; ईश्वरकृत; स्वाभाविक, प्राकृतिक; असाधारण। [छिपा हुआ।
अप्रकट वि—अप्रकाशित, अव्यक्त, गुप्त,

अप्रकाश सं—গোপন छिपाव गुप्तता। वि—अप्रकाशित, गुप्त, छिपा हुआ। —अप्रकाश्य (-अ) वि—प्रकट करनेके अयोग्य, निजी, खास, गुप्त।
अप्रकृत (-अ) वि—कृत्रिम, बनावटी, मिथ्या।
सं—अप्रेम, स्नेहका अभाव; बैर।
अप्रतिबन्ध (-अ) वि—प्रतिबन्ध-रहित, बेरोकटोक।
अप्रतिभ (-अ) वि—अप्रস্তুত लज्जित, हक्काबक्का, घबड़ाया हुआ; उत्तर देनेमें असमर्थ।
अप्रतिम वि—अनुपम, तुलना-रहित।
अप्रतिष्ठा सं—निन्दा, अख्याति, बदनामी।
अप्रतिहत (-अ) वि—অবাধ बाधा-रहित।
अप्रतीति सं—सन्देह, शक, अविश्वास।
अप्रतुल सं—अभाव, कमी।
अप्रत्यक्ष (-क्ख अ) वि—परोक्ष, आँखोंसे ओझल, इन्द्रियके अगोचर, अदृश्य।
अप्रत्यय सं—संशय, सन्देह, शक, अविश्वास।
अप्रत्याशित (-अ) वि—न चाहा हुआ; अचानक होनेवाला।
अप्रथित (-अ) वि—अविख्यात, अप्रसिद्ध।
अप्रधान वि—गौण; अधीन; निकृष्ट।
अप्रवीण वि—अनुभव-रहित, अदक्ष, अनाड़ी।
अप्रमत्त (-अ) वि—सचेत, चौकस, सावधान।
अप्रमाण सं—प्रमाणका अभाव, मिथ्या प्रमाण।
अप्रमाणित (-अ) वि—प्रमाण-रहित; झूठा, मिथ्या।
अप्रमाद सं—भ्रमका अभाव, अभ्रान्ति, सचेतपन, सावधानी। अप्रमादी वि=अप्रमत्त। [अयोग्य, अज्ञेय; विशाल।
अप्रमेय (-अ) वि—प्रमाणसे निर्णय करनेके
अप्रयोजनीय (-अ) वि—अनावश्यक; तुच्छ।
अप्रशस्त (-अ) वि—সংকীর্ণ सँकरा, कम चौड़ा; निकृष्ट, निन्दित, खराब।

অপ্রসন্ন (-अ) वि—असन्तुष्ट, नाराज, नाखुश।
অপ্রসিদ্ধ (-अ) वि=অপ্রথিত। অপ্রসিদ্ধি स —अयश, अख्याति।
অপ্রস্তুত वि—न बनाया हुआ ; हक्काबक्का।
অপ্রাকৃত (-अ) वि—अस्वाभाविक, अलौकिक।
অপ্রাপ্ত (-अ) वि—न पाया, हुआ ; न पहुंचा हुआ। —বয়স্ক (-अ) वि—नाबालक नाबालिग। स्त्री,—বয়স্কা। —যৌবন वि—यौवन तक न पहुँचा हुआ, तरुण, बालक। स्त्री,—যৌবনা।
অপ্রাপ্তি सं—अप्राप्ति, न पाना ; अभाव।
অপ্রাপ্য (-अ) वि—पानेके अयोग्य ; दुर्लभ।
অপ্রামাণিক वि—प्रमाण-रहित, माननेके अयोग्य, ऊटपटाँग। [मानने योग्य।
অপ্রামাণ্য (-अ) वि—प्रमाणके अयोग्य, न
অপ্রাসঙ্গিক वि—অবান্তর प्रसगके विरुद्ध असम्बद्ध। [असन्तोपजनक।
অপ্রিয় (-अ) वि—अरुचिकर, अप्रीतिकर
অপ্রীতি स —মনোমালিন্য मनमुटाव, अनबन, असन्तोप, वैर, विरोध।
অপ্সরা स —परी, स्वर्ग की नर्तकी।
অপ্সরোনিন্দিত (-अ) वि—परीसे भी सुन्दर।
অফল वि—फलहीन ; ऊसर।
অফলপ্রদ (-अ) वि—फल पैदा न होनेवाला।
অফলা वि=অফল। —কাঙ্ক্ষী वि—फल न चाहने वाला, निष्काम।
অফিস सं—দপ্তর। दफ्तर, आफिस, कार्यालय।
অফুটন্ত (-अ) वि—अनखिला , न खौलता हुआ।
অফুরন্ত (-अ) वि—असीम, अनन्त ; समाप्त न होनेवाला।
অবকাশ (अवकाश) स —छुट्टी ; मौका ; खाली स्थान , खाली समय, विराम। (ইত্যবকাশে क्रि वि—ইতিমধ্যে इतनेमें। গ্রীষ্মাবকাশ सं—गर्मी की छुट्टी)।
অবক্তব্য (-अ) वि—न कहने योग्य, अश्लील।
অবক্ষিপ্ত (-अ) वि—फेंका हुआ।
অবক্ষেপ सं—नीचे क्षेपण ; तलेछट।
অবগত (-अ) वि—ज्ञात, विदित, मालूम। —করা क्रि—जताना, मालूम कराना। —হওয়া क्रि—जानना, मालूम करना।
অবগতি सं—ज्ञान खबर, सूचना।
অবগাহন सं—জলে নামিয়া স্নান जलमें उतर कर स्नान ; खोज, छानबीन ; ध्यान, विचार।
অবগুণ্ঠন स—ঘোমটা। घूंघट। অবগুণ্ঠিত (-अ) वि—ঘোমটা-ঢাকা घूंघट काढ़ी हुई। অবগুণ্ঠিতা स्त्री—घूंघटवाली।
অবচ্ছিন্ন (-अ) वि—विच्छिन्न, अलग किया हुआ ; सीमाबद्ध (দেশাবচ্ছিন্ন চেতন)।
অবচ্ছেদ सं—सीमा, छेद ; विराम ; परिच्छेद।
অবচ্ছেদক वि—सीमाबद्ध करनेवाला।
অবজ্ঞা (अवज्ञा) स —अनादर, उपेक्षा। घृणा। অবজ্ঞাত (-अ) वि—अनादृत, बेइज्जत, उपेक्षित। অবজ্ঞেয় (-अ) वि—अवज्ञाके योग्य , न मानने योग्य।
অবতংস (-श-अ) स —भूषण , अलकार ; शिरोभूषण। বংশাবতংস सं—कुलका भूषण।
অবতরণ सं—অবরোহণ नीचे उतरना ; पार होना , जन्म लेना। [सीढ़ी।
অবতরণিকা स —भूमिका, प्रस्तावना ; सोपान,
অবতল वि—কটাহগর্ভ कड़ाहीके गढ़ेके समान नतोदर concave
অবতার सं—देवता का मूर्तिमें ग्रहण तथा संसार आगमन ; अवतीर्ण देवता ; मूर्त रूप, प्रतीक (ন্যায়—)। ধর্মাবতার सं—धर्मकी मूर्ति , विचारपतिके लिए सम्बोधन ,
অবতারণ सं—नीचे उतारना , प्रस्ताव।
অবতারণা सं—भूमिका, प्रस्तावना।

অবতীর্ণ (-অ) वि—उतरा हुआ , अवतार धारण किया हुआ।

অবদাত (-অ) वि—शुद्ध , पवित्र, निर्मल।

অবদান सं—उपहार ; कीर्ति ; महान कार्य।

অবদ্ধ (-अ) वि—खुला, मुक्त, असम्बद्ध।

অবদ্য (-अ) वि—निन्दायोग्य ; अकथनीय।

অবধান सं—मनोयोग ; सावधानी, चौकसी , आदर।

অবধান (-अ) क्रि—(श्रेष्ठ जनके प्रति सुननेके लिए प्रार्थना) कृपया सुनिये (—নরপতি)।

অবধারণ सं—निर्द्धारण, निरूपण ; निश्चय।

অবধারণীয় (-अ) वि—निरूपण करने योग्य।

অবধারিত (-अ) वि—निर्द्धारित, निश्चित , स्थिर। অবধার্য্য (-ज्ज-अ) वि—अवधारण-योग्य ; निश्चित।

অবধি अव्य—হইতে से (সেদিন—আজ পর্য্যন্ত), পর্য্যন্ত तक (সেদিন হইতে আজ—)। सं—सीमा ; अधिकता (সুখের—নাই) ; मियाद, समय।

অবধূত सं—एक शैव सम्प्रदाय , योगी।

অবধেয় (-अ) वि—ध्यान देने योग्य।

অবধৌতিক वि—अवधूत-सम्बन्धी।

অবধ্য (-अ) वि—वध या हत्याके अयोग्य।

অবনত (-अ) वि—झुका हुआ, विनत , पतित (—জাতি)। —মস্তকে क्रि वि—सिर नीचा किये , विनयसे। অবনতি सं—पतन, अधोगति, हीन दशा ; विनय।

অবনমন सं—নোয়ানো झुकाना, नीचे लाना, पातन। অবনমিত (-अ) वि—झुकाया हुआ , नीचे लाया हुआ।

অবনি, অবনী सं—पृथ्वी, धरती ; देश। —পতি सं—রাজা राजा, सम्राट, बादशाह। —রুহ (-अ) सं—वृक्ष, पौधा।

অবনিবনা, অবনিবনাও, অবনাবনি सं—মনোমালিন্য मनमुटाव, अनमेल, पटरीका न बैठना ; वैर।

অবন্তি सं=অবনিবনা।

অবন্তি, অবন্তী सं—मालव-देश।

অবন্তী सं—उज्जयिनी, उज्जैन, मालव देशकी राजधानी। [योग्य। स्त्री—অবন্ধ্যা।

অবন্ধ্য (-अ) वि—उपजाऊ, फल पदा होने

অববাহিকা सं—नदीके आसपासकी भूमि जहाँसे जल आकर नदीमें गिरता है basin

অববুদ্ধ (-अ) वि—प्रबुद्ध, जागा हुआ ; सावधान ; ज्ञात।

অববোধ सं—ज्ञान, होश ; सावधानी।

অবভাস सं—অধ্যাস एकमें दूसरेका आरोप ; ज्ञान, प्रतीति।

অবমন্তা वि—अनादर करनेवाला।

অবমান, অবমাননা सं=অপমান।

অবমানিত (-अ) वि=অপমানিত।

অবয়ব सं—अंग, हाथ पर आदि , अंश ; शरीर, मूर्ति।

অবয়বী वि—अंगयुक्त ; साकार।

অবর वि—निकृष्ट, अधम, नीच , छोटा।

অবরুদ্ধ (-अ) वि—रुँधा या रुका हुआ ; बन्द किया हुआ, कैद , घेरा हुआ।

অবরোধ सं—प्रतिबन्ध, रुकावट , कैद ; अन्त पुर, हरम ; घेराव , परदा (—প্রথা)।

অবরোধক वि—रोकनेवाला ; घेरनेवाला।

অবরোহ (-अ) सं—अवतरण, नीचे उतरना ; उतार, गिराव, अवनति ; कारणसे कार्यका अनुमान। অবরোহণ सं—अवतरण।

অবর্জ্জনীয় (-अ) वि—न त्यागने योग्य, अति आवश्यक।

অবর্ত্তমান वि—अविद्यमान, अनुपस्थित।

অবর্ত্তমানে क्रि-वि—मरनेके बाद ; न रहने पर।

অবলম্ব (-अ) वि—लटकने वाला। सं—

আশ্রয়, सहारा। অবলম্বন सं—आश्रय, सहारा, आधार; उपाय; आश्रय-ग्रहण। অবলম্বিত (-अ) वि—आश्रित, लटकता हुआ; गृहीत। অবলম্বী वि—निर्भरशील, सहारा लेनेवाला; अनुयायी (ধর্মাবলম্বী, মতাবলম্বী)।

অবলা वि—निबला। सं—स्त्री, औरत।

অবলিপ্ত (-अ) वि—उबटन लगाया हुआ, घमण्डी।

অবলীলাক্রমে क्रि वि—अनायास, सहजमें।

অবলুণ্ঠন सं—ভূলুণ্ঠন, গড়াগড়ি जमीनमें लोटना। অবলুণ্ঠিত (-अ) वि—जमीनमें लोटा हुआ (ধূল্যবলুণ্ঠিত, धूलमें लोटा हुआ)।

অবলেপ सं—प्रलेप, उबटन, दोषारोप। घमण्ड। অবলেপন सं—उबटन लगाना; उबटन, घमण्ड प्रकाश।

অবলেহ (-अ) सं—चाटकर खाने योग्य खाद्य या औषध। অবলেহন सं—চাটা चाटनेका भाव, या क्रिया, लेहन।

অবলোকন सं—दर्शन, जाँच-पड़ताल करनेके लिए दर्शन। অবলোকনীয় (-अ) वि—दर्शन-योग्य। অবলোকিত (-अ) वि—दृष्ट, देखा हुआ।

অবশ वि—विवश, लाचार, अवाध्य; विकल, सुन्न। অবশাঙ্গ (-अ) सं—सुन्न अंग, लकवा मारा हुआ अंग।

অবশিষ্ট (-अ) वि—বাকী बाकी, शेष बचा हुआ (ভুক্তাবশিষ্ট, जूठन; उच्छिष्ट खाद्य)। অবশিষ্টাংশ (-अ) स—बाकी बचा अंश।

অবশীভূত (-अ) वि—अवाध्य, स्वेच्छाचारी।

অবশেষ सं—शेष, अन्त, समाप्ति। অবশেষে क्रिवि—अन्तमें।

অবশ্য (-अ) क्रिवि—निश्चय, जरूर, निस्सन्देह; अवाध्य। —কর্তব্য (-अ), —করণীয় (-अ) वि—अवश्य करने योग्य, अनिवार्य। —পালনীয় (-अ) वि—अवश्य पालने योग्य। —ভাবী वि—अवश्य होनेवाला, अटल, निश्चित।

অবসন্ন (-अ) वि—क्लान्त, थका हुआ; उदास, दुःखी। —তা सं—क्लान्ति, थकावट; उदासी; कमजोरी।

অবসর सं—अवकाश, छुट्टी; मौका। —গ্রহণ सं—अपने पदसे बराबरके लिए अवकाश ग्रहण retirement. —প্রাপ্ত (-अ) वि—अपने पदसे बराबरके लिए छुट्टी पाया हुआ retired.

অবসাদ सं—क्लान्ति, थकावट, विषाद, खेद, उत्साहका अभाव, कमजोरी।

অবসান सं—अन्त, समाप्ति, मृत्यु, सीमा।

অবস্তু सं—सत्ता-रहित वस्तु, असार वस्तु।

অবস্থা सं—दशा, हाल, स्थिति। —ন্তর सं—दूसरी दशा। —পন্ন (-अ) वि—सम्पन्न, धनवान। —ন सं—स्थिति, वास, ठहराव, स्थान। —ন করা क्रि—रहना, टिकना। অবস্থিত (-अ) वि—स्थित, ठहरा हुआ; एकाग्र (—চিত্ত)। অবস্থিতি स—अवस्थान, स्थिति; सत्ता, रहना।

অবহিত (-अ) वि—एकाग्र, ध्यान लगाया हुआ, सावधान। —চিত্তে क्रि वि—ध्यान लगाकर, सावधानीसे।

অবহেলন सं—अवज्ञा, अनादर, बेपरवाही।

অবহেলা सं—उपेक्षा, अवज्ञा, अनादर, अमनोयोग। অবহেলে क्रि-वि—अनायास, सहजमें।

অবাক্ वि—विस्मयके कारण चुप, भौचक्का, हक्कावक्का; गूंगा। —কাণ্ড (-अ), —কারখানা सं—आश्चर्य घटना।

অবাঙ্মনসগোচর वि—वाक्य और मनके अगोचर

या अविषय, मन-वाणीसे परे (आत्मा, ब्रह्म)।
অবাঙ্মুখ वि=অধোবদন।
অবাচী सं—दक्षिण दिशा।
অবাচ্য (-अ) वि=অকথ্য।
অবাধ वि—बाधा-रहित, प्रतिबन्ध-हीन (—বাণিজ্য)। অবাধিত (-अ) वि—न रोका हुआ; स्वच्छन्द, स्वतन्त्र। অবাধে क्रि वि—बिना बाधाके, स्वच्छन्दतासे; अनायास, सहजमें।
অবাধ্য (-अ) वि—अवशीभूत, अबाध्य; हठी।
অবান্তর वि—प्रसंगसे बाहरका; अप्रधान, गौण; अन्तगत।
অবান্ধব वि—बन्धु-रहित, सहायक-हीन।
অবাপ্ত (-अ) वि—प्राप्त, पाया हुआ।
অবারণীয় (-अ) वि—रोकनेके अयोग्य; अनिवार्य; अत्याज्य।
অবারিত (-अ) वि—अबाध, खुला, मुक्त। —দ্বার वि—दरवाजा खुला हुआ, सहजमें प्रवेश करने योग्य।
অবার্য্য (-र्ज-अ) वि=অবারণীয়।
অবাস্তব, অবাস্তবিক वि—सत्ता-हीन, मिथ्या।
অবিকল वि—যথাযথ ज्योंका त्यों, ठीक ठीक।
অবিকশিত (-अ) वि=অস্ফুট।
অবিকার, অবিকারী वि—विकार-रहित, परिवर्तित न होनेवाला। অবিকার্য (-र्ज-अ) वि—विकृत होनेके अयोग्य। অবিকৃত (-अ) वि—न बिगड़ा हुआ; सच्चा, असली, शुद्ध।
অবিকৃতি सं—अविकृत अवस्था।
অবিক্রীত (-अ) वि—न बिका हुआ।
অবিক্রেয় (-अ) वि—बिकनेके अयोग्य।
অবিখ্যাত (-अ) वि=অপ্রসিদ্ধ।
অবিচক্ষণ वि—बुद्धिहीन, मूर्ख, अज्ञ।
অবিচল, -লিত (-अ) वि—अचंचल, स्थिर।
অবিচার सं—अन्याय; अत्याचार।
অবিচ্ছিন্ন (-अ) वि—অবিরাম लगातार, विराम-हीन।
অবিজ্ঞাত (-अ) वि—न जाना हुआ, अज्ञात।
অবিজ্ঞেয় (-अ) वि—न जानने योग्य, अज्ञेय।
অবিদিত (-अ) वि=অবিজ্ঞাত।
অবিদ্যমান वि—अनुपस्थित, गैरहाजिर; सत्ता-हीन। —তা सं—अनुपस्थिति; सत्ताहीनता।
অবিদ্যা सं—माया, प्रकृति; अज्ञान, रखेली।
অবিধি सं—अनियम, शास्त्र-विरुद्ध विधि।
অবিধেয় (-अ) वि—न करने योग्य, अनुचित।
অবিনয় सं—ঔদ্ধত্য धृष्टता, ढिठाई; उजड्डपन।
অবিনয়ী वि—উদ্ধত धृष्ट, ढीठ; उद्धत, उद्दंड अशिष्ट।
অবিনশ্বর (-नश्शर), অবিনাশী वि—अमर, नाश-रहित, अक्षय।
অবিনীত (-अ) वि=অবিনয়ী।
অবিবাহিত (-अ) वि—कुँआरा, क्वारा।
অবিবেক सं—अविचार; भलाई-बुराईका अज्ञान।
অবিবেকী वि—अविचारी, भलाई-बुराई न समझनेवाला।
অবিবেচক वि—विचार-रहित, मूर्ख।
অবিবেচনা सं—विचारका अभाव।
অবিভাজ্য (-अ) वि—विभक्त होनेके अयोग्य।
অবিমিশ্র (-स्र-अ) वि—बेमेल, असली, शुद्ध।
অবিমৃষ্য (-अ) वि=অবিবেচক। —কারিতা सं=অবিবেচনা। —কারী वि—बिना सोचे काम करनेवाला।
অবিরত (-अ) क्रि-वि=অনবরত। অবিরতি सं—विरामका अभाव, निरन्तर स्थिति।
অবিরল वि—घना, सघन; लगातार।
অবিরাম वि—विराम-रहित; लगातार।
অবিরুদ্ধ (-अ) वि—अनुकूल।
অবিরোধ स—ঐকমত্য एकमत, विरोधका अभाव, मेल। অবিরোধী वि—অনুকূল

বিরোধ न करनेवाला। অবিরোধে क्रि वि—बिना विरोध, एक-मतसे।

অবিলম্ব (-अ) सं—त्वरा, शीघ्रता। वि—शीघ्र, जल्दी। অবিলম্বে क्रि वि—शीघ्र, जल्दी, तुरंत।

অবিশুদ্ধ (-अ) वि—अपवित्र, अशुद्ध, गन्दा।

অবিশেষ सं—अभेद; साधारण, एकसा।

অবিশ্রান্ত (-श्रान्त-अ), অবিশ্রাম क्रि वि—अविश्राम निरन्तर, लगातार।

অবিশ্রুত (-श्रुत-अ) वि—अप्रसिद्ध, अख्यात।

অবিশ্বাস सं—विश्वासका अभाव; सन्देह। অবিশ্বাসী वि—न माननेवाला, विश्वासके अयोग्य; बेईमान। অবিশ্বাস্য (-अ) वि—विश्वासके अयोग्य; बेईमान।

অবিষয় वि—अगोचर, अदृश्य, अज्ञेय।

অবিসংবাদ सं—अविरोध।

অবিসংবাদিত (-अ) वि—मतभेद-रहित।

অবিসংবাদী वि=অবিরোধী।

অবিস্তীর্ণ (-अ) वि—न फैला हुआ, संक्षिप्त।

অবিস্মৃত (स्मृत-अ) वि—न भूला हुआ।

অবিহিত (-अ) वि—निषिद्ध, शास्त्रविरुद्ध, गैरकानूनी, अकृत।

অবীরা सं—सन्तान-रहित विधवा। वि—पति-पुत्र-हीना, अनाथा।

অবুঝ वि—नासमझ, अज्ञ, मूर्ख।

অবেক্ষক वि—निरीक्षक, देखनेवाला।

অবেক্ষণ सं—दर्शन, देखरेख, जांच-पड़ताल। অবেক্ষণীয় (-अ) वि—दर्शनीय, देखने योग्य। অবেক্ষমাণ वि—जो देख रहा है। [दृष्ट; पठित। অবেক্ষা सं=অবেক্ষণ। অবেক্ষিত (-अ) वि—

অবেক্ষণীয় (-अ), অবেক্ষ্য (-अ) वि=দ্রষ্টব্য।

অবেলা (अबैला) सं—असमय; दिनशेष।

অবৈতনিক वि—वेतन-रहित; बिना वेतन काम करनेवाला।

অবৈধ (-अ) वि—नियम-विरुद्ध, शास्त्र-विरुद्ध; गैरकानूनी; अनुचित; निषिद्ध। —তা सं—नियम-विरुद्धता, निषिद्धता।

অবোধ वि—नासमझ, नादान, भोला।

অবোধ্য (-अ) वि—समझमें न आनेवाला।

অবোল, অবোলা वि—गूंगा, बोलनेकी शक्ति-रहित (-পশু)।

অব্জ (-अ) सं—पद्म, कमल।

অব্দ (-अ) सं—साल, वर्ष। অব্দশত—शतवर्ष। অব্দার্দ্ধ (-अ) सं—आधा साल, छ मास का समय।

অব্ধি सं—समुद्र, सागर।

অব্যক্ত (-अ) वि—अप्रकाशित; अगोचर, अज्ञेय। स—प्रकृति, माया, ब्रह्म।

অব্যবসায় सं—अभ्यास या अनुभवका अभाव, अनधिकार; चेष्टाका अभाव; लापरवाही।

অব্যবসায়ী वि—व्यवसाय-बुद्धि-रहित, अनाड़ी; अनधिकारी।

অব্যবস্থ (-अ), অব্যবস্থিত (-अ) वि—विश्रृंखल, अस्त-व्यस्त, गड़बड़। অব্যবস্থা सं—विश्रृंखला, बद-इन्तजामी, गड़बड़ी।

অব্যবস্থিত (-अ) वि=অব্যবস্থ। —চিত্ত (-अ) वि—अस्थिर चित्तवाला, ख्याली, मौजी, लहरी।

অব্যবহার सं—व्यवहारका अभाव।

অব্যবহার্য (-ज-अ) वि—व्यवहारके अयोग्य, निकम्मा, तुच्छ; पतित।

অব্যবহিত (-अ) वि—व्यवधान-रहित, मिला हुआ, संलग्न। [लाया हुआ; अप्रचलित।

অব্যবহৃত (-अ) वि—व्यवहार या प्रयोगमें न

অব্যভিচার सं—व्यभिचारका अभाव; अच्युति; एकनिष्ठा। অব্যভিচারী वि—अपरिवर्तनीय; व्यभिचार न करनेवाला; एकनिष्ठ (-ভক্তি)।

অব্যয় वि—अक्षय, अविनाशी। सं—ब्रह्म; (व्याकरणमें) परिवर्तित न होनेवाला शब्द।

अव्यार्थ (-अ) वि—अमोघ, सफल ; सार्थक ।

अव्याप्ति सं—व्याप्तिका अभाव ; (न्यायमें) समूचे लक्ष्यपर लक्षणका न घटना, जैसे—'फूल लाल हैं'—यह लक्षण पीले नीले सफेद आदि अन्य रंगके फूलोंपर नहीं घटता अत यह लक्षण अव्याप्ति-दोष-युक्त है ।

अव्याहत (-अ) वि—बे-रोक, बाधा-रहित ।

अव्याहति सं—रेहाई रिहाई, छुटकारा ।

अव्युत्पन्न (-अ) वि—अशिक्षित, अनपढ़ ।

अव्यूढ़ (-अ) वि—अविवाहित, क्वारा ।

अव्युढान्न (-अ) सं=आइबुड़ोभात ।

अभक्ष्य (-क्ष्य-अ) वि=अखाद्य ।

अभग्न (-अ) वि—न टूटा हुआ ।

अभद्र (-अ) वि—असभ्य, अशिष्ट ।

अभव्य (-अ) वि—न होनेवाला ; असभ्य ।

अभय सं—निडरपन, साहस। वि—निडर, निर्भय । —पद सं—मुक्ति ।

अभागा वि—हतभाग्य भाग्यहीन, बदकिस्मत । स्त्री—अभागी, अभागिनी ।

अभाग्य (-अ) सं—दुरदृष्ट बदकिस्मती ।

अभाजन सं—अयोग्य व्यक्ति, नालायक आदमी । वि—गरीब ; अयोग्य ।

अभाव सं—न होना, अविद्यमानता ; कमी, धनाभाव । —ग्रस्त (-अ) वि—गरीब, दरिद्र । —नीय—(-अ) वि—चिन्तनके अयोग्य, आकस्मिक । अभावित (-अ) वि—चिन्तन न किया हुआ, अचिन्तित, आकस्मिक ।

अभिकर्ष (-अ) सं—माध्याकर्षण केन्द्रकी ओर आकर्षण gravity.

अभिकेन्द्र (-अ) वि—केन्द्रकी ओर जानेवाला [centripetal

अभिक्रिया सं—परीक्षा, जाँच ।

अभिक्षिप्त (-अ) वि—उभड़ा हुआ projected

अभिक्षेप सं—उभाड़ projection

अभिगमन सं—सामने गमन ; प्राप्ति ।

अभिगामी वि—सामने जानेवाला । [हुआ ।

अभिग्रस्त (-अ) वि—कवलित ग्रसित, पकड़ा

अभिग्रह (-अ) सं—आक्रमण, हमला ।

अभिग्रहण सं—लूंठन लूट ।

अभिघात सं—आघात, चोट ; अत्याचार ; हत्या ।

अभिचार सं—मंत्र-यन्त्र द्वारा मारण उच्चाटन आदि हिंसाकर्म ।

अभिजन सं—उच्च कुलका मनुष्य, कुलीन, खानदानी आदमी ।

अभिजात (-अ) वि—उच्च वंशका, कुलीन, खानदानी । —तन्त्र (-अ) सं—उच्च वंशीयों द्वारा राज्यशासन Aristocracy

अभिज्ञ (-अ) वि—अनुभवी, विशेषज्ञ, दक्ष, निपुण । —ता स—अनुभव, विशेष ज्ञान ।

अभिज्ञा सं—प्रथम ज्ञान । अभिज्ञात (-अ) वि—ज्ञात, चिह्नद्वारा परिचित । अभिज्ञान स—निदर्शन परिचय-चिह्न, स्मारक निशान ।

अभिधा सं—नाम, संज्ञा, उपाधि, शब्दका अर्थबोधक शक्ति । अभिधान सं—शब्दकोश, लुगत । अभिधेय (-अ) वि—वाच्य, कहने योग्य, बोधक । सं—नाम, संज्ञा ।

अभिनन्दन सं—प्रशंसा द्वारा सम्मान, स्वागत ; पूजा । —पत्र (-अ) सं—सम्मान और प्रशंसा जतानेके लिए उपहार-रूपसे प्रदत्त पत्र । अभिनन्दित (-अ) वि—प्रशंसा द्वारा सम्मानित ; स्वागत किया हुआ ।

अभिनव वि—नया, अपूर्व, अनोखा ।

अभिनय सं—नाटकका खेल, स्वाँग ।

अभिनिविष्ट (-अ) वि—लवलीन ; एकाग्र ।

अभिनिवेश सं—एकाग्रता, मनोयोग, तल्लीनता ; मरणत्रास । [हुआ, अभिनय किया हुआ ।

अभिनीत (-अ) वि—(नाटक आदि) खेला

अभिनेता सं—अभिनय करनेवाला, नाटक खेलनेवाला, नट । स्त्री—अभिनेत्री । अभिनेय (-अ) वि—अभिनय-योग्य ।

অভিন্ন (-अ) वि—भेदरहित, समान, मिला हुआ। —হৃদয় वि—हम-दिल, एकचित्त।

অভিপ্রায় सं—इच्छा, आशय, मतलब, उद्देश्य, इरादा। অভিপ্রেত (-अ) वि—इच्छित, लक्ष्य।

অভিবাদক वि—प्रणाम करनेवाला।

অভিবাদন सं—प्रणाम, नमस्कार वन्दना।

অভিবাদ্য (-अ) वि—प्रणम्य, नमस्कारके योग्य।

অভিব্যক্ত (-अ) वि—प्रकट, व्यक्त, स्पष्ट।

অভিব্যক্তি सं—प्रकाश, विकास।

অভিভব सं—পরাভব हार, पराजय।

অভিভাবক स—देख-रेख करनेवाला, रक्षक guardian स्त्री—অভিভাবিকা।

অভিভাষণ सं—व्याख्यान, भाषण।

অভিভূত (-अ) वि—हराया हुआ, पराजित; किसी भावके आवेशमें आया हुआ, जैसे—শোকাভিভূত।

অভিমত (-अ) वि—अनुमोदित, सम्मत, मनोनीत, स्वीकृत। অভিমত (-त्) स—मत, राय, सम्मति, विचार।

অভিমান सं—অহংকার, गर्व घमण्ड, शेखी; प्रियजनकी त्रुटिके कारण क्षोभ, रूठ।

অভিমানী वि—घमण्डी, अहंकारी, थोड़ेमें ही रूठनेवाला। स्त्री—অভিমানিনী।

অভিমুখ, (-খী) वि—सामनेका; किसीकी ओर जानेवाला (গৃহাভিমুখ)।

অভিমুখীন वि—सामनेका।

অভিযান स—युद्धयात्रा, हमला, यात्रा।

অভিযুক্ত (-अ) वि—अभियोग लगाया हुआ। स—मुलजिम। অভিযোক্তা वि—अभियोग करनेवाला। सं—वादी, मुद्दई।

অভিযোগ सं—दोषारोप, फरियाद, नालिश।

অভিরাম वि—सुन्दर. रमणीक, मनोहर।

অভিরুচি सं—रुचि; इच्छा; पसन्द।

অভিলষণীয় (-अ) वि—अभिलाषके योग्य।

অভিলষিত (-अ) वि—इच्छित, चाहा हुआ।

অভিলাষ सं—ইচ্ছা इच्छा, चाह, आकांक्षा।

অভিলাষী वि—इच्छुक, आकांक्षी।

অভিশপ্ত (-अ) वि—शापित, सराप दिया हुआ; बदनसीब (-जीवन)।

অভিশাপ सं—शाप, बद दुआ, सराप।

অভিষিক্ত (-अ) वि—राज-पद पर नियुक्त; अभिषेक किया हुआ।

অভিষেক सं—राज-पद पर बिठानेके निमित्त स्नानादिका अनुष्ठान; स्नान; छिड़काव।

অভিসন্ধি सं—बुरा मतलब, गुप्त अभिप्राय; षड्यन्त्र।

অভিসম্পাত सं—शाप, बद-दुआ, सराप।

অভিসার सं—प्रियसे मिलनेके लिए संकेत-स्थल पर गमन। অভিসারক सं—अभिसारमें जानेवाला पुरुष या नायक। অভিসারিকা, অভিসারিণী स्त्री - अभिसारमें जानेवाली स्त्री या नायिका। অভিসারী सं=অভিসারক।

অভিহত (-अ) वि—घायल; पराजित।

অভিহিত (-अ) वि—उक्त, कथित।

অভী वि—निडर, साहसी, भयहीन।

অভীপ্সিত (-अ) वि—इच्छित, चाहा हुआ।

অভীপ্সু वि—इच्छुक, आकांक्षी।

অভীষ্ট (-अ) वि—वांछित, चाहा हुआ; प्रिय।

অভুক্ত (-अ) वि—न खाया हुआ; अनाहारी।

অভূত (-अ) वि—अघटित; अजन्मा; अविद्यमान। —পূর্ব (-अ) वि—पहले अघटित; अपूर्व, अनोखा, विलक्षण।

অভেদ स—अभिन्नता, समानता। वि—अभिन्न, समान।

অভেদ্য (-अ) वि—भेदके अयोग्य, आविभाजनीय।

অভোজ্য (-अ) वि=অখাদ্য।

অভৌতিক वि—निराकार, सूक्ष्म, निरवयव।

অভ্যঙ্গ (-अ) सं—तेल उबटन आदि द्वारा शरीर-मर्दन।

অভ্যঞ্জন सं—शरीरमें लगानेका तेल आदि; तेल-मर्दन।

অভ্যন্তর सं—भीतरका भाग, मध्य।

অভ্যন্তরীণ वि—भीतरी, अंदरूनी।

অভ্যর্থনা सं—अगवानी, स्वागत।

অভ্যর্থিত (-अ) वि—स्वागत किया हुआ।

অভ্যর্হিত (-अ) वि—पूजित, सम्मानित, पूज्य, माननीय; मूल्यवान।

অভ্যসন सं=অভ্যাস।

অভ্যস্ত (-अ) वि—आदी; कंठ किया हुआ।

অভ্যাগত (-अ) सं—अतिथि, मेहमान, पाहुना।

অভ্যাস सं—आवृत्ति; आदत; स्वभाव।

অভ্যাসী वि—अभ्यास करने वाला, साधक।

অভ্যুক্ষণ सं—छिड़काव।

অভ্যুত্থান (अभ्युत्थान) सं—उदय, उठान, वृद्धि, उन्नति, विद्रोह। অভ্যুত্থিত (-अ) वि—उदित, उठा हुआ; वर्धित।

অভ্যুদয় सं—उन्नति, वृद्धि, बढ़ती, उदय।

অভ্যুদিত (-अ) वि—उदित, उन्नत।

অভ্যুপগত (अ) वि—स्वीकृत, माना हुआ।

অভ্যুপগম सं—स्वीकार; अनुमान।

অভ্যুপায়ন सं—भेंट, उपहार।

অভ্যুপেত (-अ) वि—स्वीकृत; प्राप्त।

অভ্র (-अ) सं—अभ्रक, अबरक, बादल, मेघ, आकाश। —ভেদী वि—मेघका भेदन करने वाला, बहुत ऊँचा।

অভ্রাতৃক वि—भाई-रहित।

অভ্রান্ত (-अ) वि—भ्रम-रहित, अचूक, ठीक।

অমঙ্গল सं—अकल्याण, अहित। वि—अशुभ। —জনক वि—अशुभकारी।

অমত सं—असम्मति।

অমন वि—ঐ प्रकार, ঐরূপ वैसा, उस प्रकारका। क्रि वि—वैसे, उस प्रकारसे।

অমনি क्रि वि—वैसे, उस प्रकारसे; मुफ्तमें; बिना कारण; खाली; बिना प्रयास; उसी समय।

অমনোযোগ सं—लापरवाही, उदासीनता।

অমনোযোগী वि—लापरवाह, उदासीन।

অমর वि—सदा जीवित रहने वाला, चिरजीवी। सं—देवता।

অমরাবতী सं—स्वर्ग, अमरलोक।

অমর্ত্ত্য (-अ) वि—न मरने वाला।

অমর্য্যাদা सं—अनादर, बेइज्जती।

অমর্ষ (-अ) सं—क्रोध, गुस्सा; असन्तोष।

অমল वि—निर्म्मल, स्वच्छ, पवित्र।

অমলক सं—আমলকী आँवला।

অমা सं—অমাবস্যা अमावस।

অমাতৃক वि—मातृहीन, माता-रहित।

অমাত্য (-अ) सं—सचिव, मन्त्री, वजीर।

অমানৎ सं—अमानत, धरोहर।

অমাননা सं—अपालन, न मानना।

অমানব वि=অমানুষ।

অমানিশি सं—अमावस्याकी रात्रि।

অমানী वि—घमंड-रहित, निरहकार।

অমানুষ वि—मनुष्यत्व-रहित, पशु-सा, दुराचारी, मनुष्यसे ऊपरका, अलौकिक। অমানুষিক वि—मनुष्यत्वके विरुद्ध, पशु-तुल्य।

অমান্য (-अ) वि—न मानने योग्य, अश्रद्धेय। सं—लंघन।

অমাবস্যা सं—कृष्णपक्षकी अन्तिम तिथि।

অমায়িক वि—सरल, भोला, निष्कपट।

অমার্জ্জিত (-अ) वि—न माँजा हुआ, संस्कार न किया हुआ; क्षमा न किया हुआ।

অমিত (-अ) वि—अपरिमित, असीम, बेहद। —ব্যয় सं—বেহিসাবী খরচ बेहिसाब खर्च,

फजूलखर्ची। —व्ययी वि—अपव्ययी फजूलखर्च।

अमिताचार सं—असंयम, अन्याय आचरण।

अमिताचारी वि—असंयमी, अन्याय आचरण करनेवाला।

अमिताभ (-अ) सं—बुद्धदेव, गौतम बुद्ध।

अमित्राक्षर वि—तुक-रहित। —छन्द सं—तुक-रहित छन्द blank verse

अमिय (-अ) सं—सुधा, अमृत।

अमिल सं—अनमेल; मनमुटाव।

अमिश्र (-अ), अमिश्रित (-अ) वि—न मिला हुआ, विना मिलावटका, शुद्ध, खरा।

अमीमांसित (-अ) वि—फसला न किया हुआ।

अमुक वि—अज्ञातनाम, फलाना।

अमुत्र (-अ) क्रि वि—परलोकमें, स्वर्गमें।

अमूर्त (-अ) वि—मूर्ति-रहित, निराकार।

अमूल, अमूलक वि—मूल-रहित, मिथ्या।

अमूल्य (-अ) वि—अनमोल, वहुमूल्य।

अमृत (-अ) सं—सुधा, पीयूष, दूध; वहुत मीठी चीज; मुक्ति; देवता। वि—न मरा हुआ। —फल सं—आम। —भाषी वि—मीठा बोलने वाला।

अमृति, अमृती सं—अमिरती, इमरती, एक प्रकारकी बड़ी जलेबी जो दाल से वनती है।

अमृतोपम वि—सुधा-सा, वहुत स्वादिष्ट।

अमेध्य (-अ) वि—अपवित्र। सं—विष्ठा, मल।

अमोघ (-अ) वि—अव्यर्थ, अचूक।

अम्बर सं—आकाश आसमान; वस्त्र (दिगम्बर); बादल, ह्वेल मछलीकी आँतसे निकाला हुआ एक गन्धद्रव्य।

अम्बरी वि—अंबरसे सुवासित (-तमाकू)।

अम्ल सं—खटाई; अम्ल रोग। वि—खट्टा।

अम्बष्ठ (-अ) सं—ब्राह्मण पिता और वैश्या —— —— —— ——।

अम्बा सं—माता, माँ; दुर्गा।

अम्बु सं—जल, पानी। —ज (-अ) वि—जलसे उत्पन्न। सं—पद्म, कमल। —जा स्त्री—लक्ष्मी। —द (-अ) सं—बादल, मेघ। —धि, —निधि सं—समुद्र, सागर। —वाचि, (-ची) सं—सौर आषाढ़के ता० ७से ९ तक तीन दिन (प्रवाद है—इस समय पृथ्वी रजस्वला होती है) इस समय ब्राह्मण तथा उच्च वर्ण की विधवायें व्रत रहती हैं।

अम्बुरी वि—अम्बरी।

अम्भः सं—जल, पानी।

अम्भोज (-अ) सं—कमल; शंख; चन्द्रमा।

अम्भोद (-अ) सं—मेघ, बादल।

अम्भोधि, अम्भोनिधि सं—समुद्र, सागर।

अम्र (-अ) सं—आम्र आम।

अम्ल (-अ) वि—टेढ़ खट्टा। सं—खटाई; अम्लरोग।

अम्लजान सं—आक्सिजन, एक गैस।

अम्लान वि—न मुरझाया हुआ, प्रफुल्ल, खुश, स्वच्छ। —वदने क्रि वि—निःसकोच, विना हिचकिचाये।

अम्लोद्गार सं—खट्टी डकार।

अवज्ञ (अजल-अ) सं—अवहेलना, उपेक्षा।

अयथा वि—असत्य, झूठा, अनुचित। क्रि वि—झूठमूठ, व्यर्थ, अनुचित रीतिसे।

अयथार्थ (-अ) वि—मिथ्या, झूठा, नकली।

अयन (अयन) सं—पथ, मार्ग, गृह, निवास-स्थान; गति, चाल (दक्षिणायन, उत्तरायण)।

अयश (अजश) सं—अपयश, निन्दा, बदनामी।

अयशस्कर वि—निन्दाजनक। अयशस्वी (अजशस्वी) वि—निन्दित, बदनाम।

अयस् सं—लोहा। अयस्कान्त (-अ) सं—चुम्बक।

अयाचक वि—न माँगनेवाला। अयाचनीय (-अ), अयाच्य (-अ) वि—न माँगने योग्य।

अयाचित (-अ) वि—न मांगा हुआ, अप्रार्थित।
—भावे क्रि वि—बिना मांगे।
अयाजनीय (-अ), अयाज्य (-अ) वि—याजनके अयोग्य। [वाला।
अयाज्ययाजी वि—पतित जातिका याजन करने-
अयात्रा सं—अशुभ यात्रा, यात्राके लिए अशुभ लक्षण।
अयि अव्य—स्त्री-वाचक स्नेह-सूचक सम्बोधन।
अयुक्त (-अ) वि—न मिला हुआ, असयुक्त, पृथक, अलग, अनुचित, अडबड। अयुक्ति सं—असम्बद्धता, पृथक्ता; युक्तिका अभाव गड़बड़ी।
अयुग्म (अजुग्म-अ) वि—बेजोड़; पृथक।
अयुत सं—दस हजार, १००००।
अयेन-क्लथ सं—पानी न सोखनेवाला कपड़ा, मोमजामा। [योग, कुसमय।
अयोग सं—सम्बन्धका अभाव; वियोग, बुरा
अयोग्य (-अ) वि—अयोग्य, नालायक, निकम्मा। —ता सं—अनुपयुक्तता, निकम्मापन।
अयोनि वि—जन्मरहित, नित्य। —ज (-अ), —सम्भव वि—स्त्रीके गर्भसे न उत्पन्न होनेवाला। स्त्री —जा, —सम्भवा।
अयौक्तिक वि—युक्तिविरुद्ध, वाहियात।
अर सं—पहियेका आरा।
अरक्षणीय (-अ) वि—न रखने योग्य। अरक्षणीया कन्या स्त्री—रजस्वला हो जानेके भयसे जो कन्या विवाह बिना किये रखी नहीं जा सकती। [किया हुआ।
अरक्षित (-अ) वि—न रखा हुआ, रक्षा न
अरघट्ट (-अ) सं—अरहट, रहँट, कूआँ। [काष्ठ।
अरणि, (-णी) सं—यज्ञके लिए अग्निमन्थन-
अरण्य (-अ) सं—वन, जंगल। —षष्ठी सं—ज्येष्ठ शुक्ला षष्ठी, इस दिन बंगाली स्त्रियाँ दामादकी पूजा करती हैं।
अरण्यानी सं—महावन, भारी जगल।
अरन्धन सं—भाद्र सक्रान्ति, इस दिन बंगालमें प्राय लोग रसोई नहीं पकाते वासी अन्न खाते हैं।
अरविन्द (-अ) सं—पद्म, कमल।
अरसिक वि—अरसिक, काव्यके रसका न समझनेवाला।
अराजक वि—राजशक्ति-रहित, राजा-हीन, बिना राजाका, राज्यमें अव्यवस्था उत्पन्न करनेवाला। —ता सं—राजशक्तिका अभाव, हलचल; विप्लव, गदर। [(-अ) सं—शत्रु-नाश।
अराति सं—अरि, वैरी, शत्रु, दुश्मन। —भङ्ग
अरि सं—अराति शत्रु। —कुल सं—शत्रुदल; वैरी-वश। —दम सं—शत्रुदमनकारी, वैरी-नाशक; विजेता। —मित्र (-अ) सं—शत्रुका मित्र, दुश्मनका दोस्त। —राष्ट्र (-अ) सं—शत्रु-राज्य, विपक्षी राष्ट्र। [आयुर्वेदीय औषध।
अरिष्ट (-अ) सं—गुड़ मिली हुई एक
अरीति सं—अनरीति, कुरीति।
अरीय वेग सं—पहियेका वेग, चक्रगति।
अरुचि सं—अनिच्छा, घृणा; क्षुधाका अभाव।
अरुण सं—नवोदित सूर्य, बालार्क; ऊषाकी लाल किरण। वि—लाल (-नयन)। अरुणिमा सं—लाल रंग, लाली। अरुणोदय सं—सूर्योदय, ऊषाकाल, तड़का।
अरुन्तुद वि—मर्मभेदी हृदयवेधी, बहुत दु खदायी।
अरुन्धती सं—सप्तर्षि-मण्डलका एक तारा।
अरूप वि—रूप-रहित, निराकार, वेडौल।
अरे अव्य—ओरे अबे।
अरोरा सं—ध्रुव-ज्योति aurora
अर्क (-अ) सं—सूर्य; मदार, आक; अरक।
—वार सं—रविवार, इतवार। [बाधा, अड़चन।
अर्गल सं—खिल, दरवाजा हुड़का अर्गला, रोक,
अर्घ (-अ) सं—दाम, मूल्य; पूजाका एक उपकरण। अर्घ्य (-अ) वि—पूज्य, बहुमूल्य।

सं—पूजामें देने योग्य जल फूल आदि।
অর্চ্চক सं—पूजक, पुजारी। অর্চ্চন, অর্চ্চনা, অর্চ্চা सं—पूजा, उपासना।
অর্চ্চিত (-अ) वि—पूजित, उपासित। অর্চ্চ্য (-अ), অর্চ্চনীয় (-अ) वि—पूजनीय, उपास्य।
অর্জ্জক, অর্জ্জয়িতা स, वि—कमानेवाला। —অর্জ্জন सं—उपार्जन, कमाना। অর্জ্জিত (-अ) वि—कमाया हुआ, प्राप्त किया हुआ।
অর্জ্জুন सं—धनञ्जय, मझले पाण्डवका नाम, एक वृक्ष। [स—जहाज।
অর্ণব स—समुद्र, सागर। —তরি, —পোত, —যান
অর্থ (-अ) स—आशय, मतलब, माने; धन, वित्त, निमित्त, प्रयोजन; इच्छा, अभिलाषा। —দ वि—धनदायक (-ব্যবসায়, অর্থকরী বিদ্যা)। —কষ্ট (-अ), —কৃচ্ছ্র (-अ) सं—धनका अभाव, दारिद्र्य। —গৃধ্নু वि—धनलुब्ध, लालची; कृपण, कंजूस। —দণ্ড (-अ) सं—जुर्माना। —পিশাচ वि—धनके लिए स्नेह दया आदिका त्याग करनेवाला। —প্রদ (-अ) वि=অর্থদ। —বাদ स—प्रशंसा-वाक्य, मूल विषयकी प्रशंसाके लिए कहानीका वर्णन, फलश्रुति। —বান্ वि—धनवान, दौलतमद। —বিৎ वि—शब्दार्थका जाननेवाला, ज्ञानी, विद्वान। —বিনিয়োগ स—धनका लगाना, महाजनी। —ব্যবহার सं—धनका व्यवहार या प्रयोग। —ব্যয় स—खर्च, लागत। —ভেদ स—आशयका भेद। —মন্ত্রী स—अर्थसचिव, वित्तसचिव Finance Minister —লালসা, —লিপ্সা, —লোভ सं—धनकी लालसा, लालच। —লিপ্সু, —লুব্ধ (-अ), —লোভী वि—धनका लालची। —শালী वि—धनवान, दौलतमद। —শাস্ত্র (-अ) स—धन शिल्पकला राजनीति आदि सम्बन्धी ग्रन्थ (কৌটিল্যের—), economics —সঞ্চয় सं—धनका सचय। —সঙ্গতি स—आशयका मेल, धन या वित्तका संचय। —সচিব सं=অর্থমন্ত্রী। —সাপেক্ষ (সাপেক্খ-अ) वि—धनपर निर्भर। —সাহায্য (-জ্জ-अ) स—धनकी मदद। —সিদ্ধি सं—उद्देश्य की सिद्धि।
অর্থাগম सं—आय, आमदनी।
অর্থাৎ अव्य—अर्थ यह है कि, यानी।
অর্থান্তর सं—दूसरा अर्थ, अन्य आशय।
অর্থাপত্তি स—एक प्रकारका अनुमान जिसमे एक बातसे दूसरी बातकी सिद्धि हो जाती है।
অর্থার্থী वि—धन चाहनेवाला। [मुद्दई, वादी।
অর্থী वि—इच्छा रखनेवाला, याचक; धनी;
অর্থে अव्य—लिए, उद्देश्यसे।
অর্থোপার্জ্জন स—धनका उपार्जन, आय।
অর্দ্ধ (-अ) स—आधा। —ঘটিকা स—आधा घटा। —চন্দ্র (-अ) स—आधा चाँद, अष्टमी का चन्द्रमा, गरदनियाँ। —পথ स—मध्यपथ मार्ग का मध्य स्थान। —বয়স্ক (-अ) वि—आधी उमरका, अधेड़, प्रौढ़। —বৃত্ত (-अ) स—आधा गोला, वृत्तका आधा अंश। —রাত্র (-अ), —রাত্রি स—आधी रात, गहरी रात। —শত (-अ) सं—आधा सौ, पचास। —শয়ান वि—आधा लेटा हुआ recumbent
অর্দ্ধাংশ (-अ) स—आधा अंश। অর্দ্ধাঙ্গ (-अ) स—आधा अंग, आधा शरीर, आधे शरीरका लकवा। অর্দ্ধাঙ্গিনী स—पत्नी, भार्या।
অর্দ্ধার্দ্ধ (-अ) सं—आधेका आधा, चौथाई।
অর্দ্ধেক—वि, स—आधा।
অর্দ্ধেন্দু स—आधा चन्द्रमा, चन्द्रखण्ड।
অর্দ্ধোচ্চারিত (-अ) वि—आधा कहा या उच्चारण किया हुआ।
অর্দ্ধোদয় स—ज्योतिषका एक योग।
অর্পণ स—अर्पण, दान, भेंट। অর্পণীয় (-अ) वि—देने योग्य। অর্পয়িতা स, वि—देने

वाला, दाता। অর্পিত (-अ) वि—अर्पित, दिया हुआ, प्रदत्त।
অর্ব্বাচীন वि—आधुनिक, हाल का, मूर्ख।
অর্ব্বুদ सं—दस करोड़; शरीरमें गिलटी।
অর্শ (-अ) सं—बवासीर रोग piles
অর্সান (-नो), অর্সানো (क्रिया परि १, १६)—वर्त्तानो प्राप्य होना (পিতার সম্পত্তি পুত্রকে অর্সে), लगना (দোষ অর্সায়)।
অর্হ (-अ) वि—योग्य, उपयुक्त (পূজার্হ, দণ্ডার্হ)।
অর্হৎ सं—जैन या बौद्ध साधु, बुद्ध।
অলক सं—চূর্ণকুন্তল मस्तकके इधर-उधर लटकते हुए बाल। —দাম सं—কেশগুচ্ছ लटकते हुए बालोंका लच्छा। —নন্দা सं—স্বর্গঙ্গা बदरीकाश्रमके पासवाली नदी जो देवप्रयागमें आकर गंगामें मिली है; मन्दाकिनी।
অলকা सं—कुबेर-पुरी। —তিলকা सं—चन्दनादिके द्वारा मुख-चित्र।
অলক্ত (-अ), অলক্তক सं—আলতা अलता।
অলক্ষণ (अलक्खन) सं—अशुभ लक्षण, बुरा शकुन। वि—कुलक्षण-युक्त। स्त्री—অলক্ষণা।
অলক্ষিত (-अ) वि—अदृष्ट; अज्ञात, अचानक आ पड़नेवाला। —ভাবে, অলক্ষিতে क्रि वि—अनजानमें, अदृश्यमें रहकर।
অলক্ষুণে वि—बदशकुनवाला, अभागा, मनहूस।
অলক্ষ্মী (अलख्खी) सं—दुर्भाग्यकी देवी; दुर्भाग्य; एक गाली।
অলক্ষ্য (अलक्ख्य-अ) वि—अदृश्य, अनिणय, लक्षणके बाहरका। सं—लक्षणके बाहरका पदार्थ (অলক্ষ্যে লক্ষণ-গমনকে অতিব্যাপ্তি বলে)।
অলক্ষ্যে क्रि वि—आड़ामें ओटमें, अदृश्यमें रह कर।
অলঙ্করণ सं—अलकृत करनेका कार्य, सजावट।
অলঙ্কর্ত্তা सं—सजानेवाला। অলঙ্কার सं—अलंकार, आभूषण, गहना, काव्यकी रोचक वर्णन-शैली; इस विषयका शास्त्र।
অলঙ্কৃত (-अ) वि—अलंकार-युक्त, विभूषित, सँवारा हुआ, साहित्यिक अलंकारोंसे युक्त।
অলঙ্ঘন सं—पालन, अनुपवास। অলঙ্ঘনীয় (-अ), অলঙ্ঘ্য (-अ) वि—न लाँघने योग्य, अवश्य पालनीय।
অলজ্জ (-अ) वि—लज्जाहीन, वेहया। অলজ্জা सं—लज्जाहीनता, वेहयाई।
অলপ্পেয়ে वि—अभागा, बदनसीब।
অলবড্যে, অলবড্ডে (अलबड्डे) वि—असावधान, लापरवाह; अनाड़ी।
অলবাল (अल्बाल्) सं—पेड़ोंके नीचका थाँवला, थाला।
অলব্ধ (-अ) वि—अप्राप्त, न पाया हुआ।
অলভ্য (-अ) वि—अप्राप्य; दुर्लभ, अमूल्य।
অলস वि—कुँড়े आलसी, सुस्त।
অলসতা सं—आलस, आलस्य, सुस्ती।
অলাত सं—জ্বলন্ত অঙ্গার जलता हुआ कोयला, अंगारा। —চক্র (-अ) सं—जलती हुई लकड़ीको जोरसे घुमानेसे बना हुआ अग्निमण्डल।
অলাবু सं—লাউ लौकी, कद्दू।
অলাভ सं—अप्राप्ति; हानि, नुकसान।
অলি सं—भ्रमर, भौंरा; मदिरा; वली। —অছি सं—वली, नाबालिगका अभिरक्षक custodian. —কুল सं—भौंरोंका झुंड। —গলি सं—গলি-ঘুঁজি तंग गली, गली-कूचा; किसी विषयका सूक्ष्म विवरण। —জিহ্বা सं—আলজিব। —ঞ্জর सं—জালা मिट्टीका जलाधार, कुंडा, मटका, घड़ा। —ন্দ (-अ) सं—বারাণ্ডা बरामदा; চাতাল चबूतरा।
অলী सं—अलि भौंरा, मधुमक्खी; बिच्छू।

অলীক वि—অমূলক झूठा, कल्पित; तुच्छ। —তা सं—অমূলকত্ব झूठापन, मिथ्यात्व।

অলুব্ধ (-अ) वि—निर्लोभी, लालच-रहित।

অলোক (দৃষ্টি) सं—अलौकिक दृष्टि clairvoyance —সাধারণ, —সামান্য (-अ) वि—अलौकिक असाधारण। —সুন্দর सं—अत्यन्त सुन्दर, दिव्य।

অলোভ सं—लोभका अभाव, निर्लोभता।

অলোভী वि—निर्लोभ, लालच-रहित।

অলোল वि—अशिथिल, कसा हुआ।

অলোহিত वि—अरक्तिम, लाली-रहित।

অলৌকিক वि—लोकातीत, असाधारण।

অল্প (-अ) वि—थोड़ा, जरासा, कुछ; तुच्छ, छोटा। অল্পে অল্পে, অল্প অল্প করিয়া क्रि वि—थोड़ा थोड़ा करके, बहुत अधिक न बढ़ कर। —কাল, —ক্ষণ (-क्खन्) सं—थोड़ा समय, क्षणभर। —চেতা वि—छोटा चित्तवाला; अनुदार, कृपण, कजूस। —জীবী वि—अल्पायु, थोड़ी उमरवाला। —জ্ঞ (अल्पग्ग-अ) वि—छोटी बुद्धिका; अनुभव-रहित, नासमझ। —দর্শিতা सं—अदूरदर्शिता, अनुभव-राहित्य; नासमझी। —দর্শী वि—अदूरदर्शी, अनुभव-रहित, नासमझ। —প্রাণ वि—अल्पजीवी, अल्पायु; छोटा चित्तवाला; अनुदार, कृपण, कजूस। —বয়সী, —বয়স্ক (—बयस्क-अ) वि—कम उम्रवाला, तरुण। —বয়স্কতা सं—बचपन, यौवन। —বল वि—दुर्बल, कमजोर, थोड़ी शक्तिवाला। —বিৎ (-बित्) वि—अल्पज्ञ, थोड़ा ज्ञानवाला। —বিদ্য (-बिद्द -अ) वि—थोड़ा पढ़ा-लिखा; अल्पशिक्षित। —ভাষিতা सं—अल्पभाषण taciturnity. —ভাষী वि—कम बोलनेवाला। —বুদ্ধি, —মতি वि—थोड़ी बुद्धिवाला, अदूरदर्शी, नासमझ, मूर्ख। —মাত্র (-अ) वि—थोड़ा सा, जरा सा। —মাত্রায় क्रि वि—थोड़ी मात्रा में। —মূল্যে क्रि वि—थोड़े मूल्यमें। —শক্তি वि =অল্পবল। —সংখ্যক (-शं-) वि—गिनतीमें थोड़ा, अल्पसंख्यक। —স্বল্প (-शल्प-अ) वि—একটু-আধটু थोड़ा-बहुत, अल्प।

অল্পাধিক वि—কমবেশী कम-ओ-बेश।

অল্পায়ত वि—সংকীর্ণ तंग, सँकरा।

অল্পায়ু वि—कम उम्रवाला, अल्पजीवी।

অল্পাশয় वि—अल्प में सतुष्ट; तुच्छ वस्तु चाहने वाला, नीचमना।

অল্পাহার सं—भोजन में सयम।

অল্পাহারী वि—अल्प-भोजी, कम खानेवाला।

অল্পীকৃত (-अ) वि—अल्प किया हुआ, घटाया हुआ।

অল্পেয়ে वि—अल्पायु (गाली)।

অশক্ত वि—असमर्थ, कमजोर।

অশক্তি सं—असमर्थता, कमजोरी।

অশক্য (-अ) वि—असाध्य, करनेके अयोग्य।

অশঙ্ক (-अ) वि—निडर, भय-रहित; निःस देह। —নীয় (-अ) वि—भयके अयोग्य। অশঙ্কিত (-अ) वि—न डरा हुआ, न घबराया हुआ।

অশত্থ (-अ) सं—पीपलका वृक्ष।

অশন सं—भोजन, खाद्य, खाना (-বসন)।

অশনি सं—वज्र, गिरी हुई बिजली (-পাত)।

অশব্দ (-अ) वि—शब्द-रहित, मौन, शान्त।

অশরণ वि—गृह-रहित, निराश्रय।

অশরীরী वि—शरीर-रहित, निराकार।

অশস্ত্র (-अ) वि—शस्त्र-रहित, बेहथियार।

অশাখ वि—शाखा-रहित।

অশান্ত (-अ) वि—अस्थिर, बेचैन; उद्दंड।

অশান্তি सं—बेचैनी, घबराहट।

অশাম্য (-अ) वि—शान्त करनेके अयोग्य।

অশাশ্বত (-अ) वि—अनित्य, नाशवान।

অশাসন सं—शासन या प्रबंध का अभाव,

अराजकता। অশাসনীয় (-अ) वि—वश में रखने के अयोग्य, उद्दंड।

অশাস্ত্র (-अ) सं—खराब शास्त्र, न मानने योग्य शास्त्र। वि—शास्त्र-विरुद्ध, अविधिक, अनुचित अवैध। অশাস্ত্রীয় (-अ) वि—शास्त्र-विरुद्ध, अविधिक।

অশিক্ষিত (अशिक्खित-अ) वि—अपढ़।

অশিব (-अ) सं—अमंगल। वि—अशुभ, बुरा।

অশিষ্ট (-अ) वि—असभ्य, अभद्र; उद्दंड।

অশিষ্টাচরণ, অশিষ্টাচার सं—अभद्र व्यवहार; उद्दंडता।

অশীতি सं—আশি अस्सी, ८०। —তম (-अ) वि—अस्सीवाँ, ८० वाँ। —পর वि—अस्सी वर्षका (वृद्ध)।

অশ্লীল वि—असभ्य, अभद्र; दुराचारी।

অশুচি वि—अपवित्र, नापाक; गंदा।

অশুদ্ধ वि—अपवित्र; गलत।

অশুদ্ধি सं—अपवित्रता; गलती।

অশুভ सं—अमंगल, अहित; दुर्भाग्य, पाप वि—बुरा, अमंगल-जनक। —কারী वि—अमंगल-जनक, अहितकारी। —ক্ষণে (-क्खने) क्रि वि—अशुभ समय में; बुरी साइत में।

অশেষ वि—असीम, निःशेष; पूर्ण। —প্রকারে क्रि वि—सब प्रकार से। —বিধ (-अ) वि—अनेक प्रकारके।

অশোক वि—शोक-रहित, सुखी। स—अशोक वृक्ष, एक मौर्य सम्राट, चन्द्रगुप्तका पौत्र। —ষষ্ঠী सं—चैत्र शुक्ला षष्ठी।

অশোচনীয় (-अ), অশোচ্য (-अ) वि—शोक करनेके अयोग्य।

অশোধন सं—शोधनका अभाव, अपवित्रता, गलती, भूल; ऋणका न चुकाया जाना।

অশোধনীয় (-अ) वि—शोधनेके अयोग्य।

অশোধিত (-अ) वि—न शोधा हुआ।

অশোধ্য (-अ) वि=অশোধনীয়।

অশোভন वि—বেমানান भद्दा, कुरूप।

অশোভিত (-अ) वि—न सजाया हुआ, सादा।

অশোষণীয় (-अ), অশোষ্য (-अ) वि—सोखने या सूखनेके अयोग्य।

অশৌচ (अशउच) सं—अशुद्धि, अपवित्रता, अशौच (জাতাশৌচ, মরণাশৌচ)। অশৌচান্ত (-अ) सं—अशौच कालका अन्त।

অশ্ম (अश्श-अ) सं—প্রস্তর पत्थर।

অশ্মর (अश्शर) वि—প্রস্তরময় पथरीला।

অশ্মরী स—পাথুরি রোগ पथरी रोग।

অশ্মীভূত (-अ) वि—प्रस्तरीभूत fossilized.

অশ্র (अस्र-अ) सं—कोण angle (চতুরস্র)।

অশ্রদ্ধান, অশ্রদ্ধ (-अ) वि—श्रद्धाहीन।

অশ্রদ্ধা सं—अभक्ति, अविश्वास, अवज्ञा।

অশ্রদ্ধেয় (-अ) वि—श्रद्धाके अयोग्य, घृणार्ह।

অশ্রান্ত (-अ) वि—न थका हुआ, लगातार।

অশ্রান্তি सं—क्लान्तिका अभाव, अविच्छिन्नता।

অশ্রাব্য (-अ) वि—सुननेके अयोग्य, अश्लील।

অশ্রু (अस्रु) सं—নেত্রবারি, চোখের জল आँसू (আনন্দাশ্রু)। —গদ্‌গদ্‌কণ্ঠে क्रि वि—आँसुओं से गला रुंधते हुए। —পাত सं—आँसू का गिरना। —পূর্ণ (-अ) वि—आँसुओं से भरा। —পূর্ণ নয়নে, —পূর্ণ নেত্রে क्रि वि—आँसुओंसे भरे नेत्रोंसे, आँखें डबडबाते हुए। —বারি सं—आँसू। —ভরা वि=অশ্রুপূর্ণ। —মোচন सं—आँसुओंका गिराना। —সিক্ত वि—आँसुओंसे तर।

অশ্রুত (अस्रुत अ) वि—न सुना हुआ। —পূর্ব वि—पहले न सुना हुआ।

অশ্রেয় (-अ) सं—अशुभ, अमंगल, हानि।

অশ্রেয়স্কর वि—अमंगलजनक।

অশ্রোতব্য (-अ) वि—न सुनने योग्य।

অশ্লাঘনীয় (-अ), অশ্লাঘ্য (-अ) वि—प्रशंसा के अयोग्य।

অশ্লীল वि—फूहड़, भद्दा, लज्जाजनक।

অশ্লেষা स—अश्लेषा नक्षत्र।

অশ্ব (अश्व-अ) सं—घोड़ा, तुरंग, अश्व। —গতি वि—घोड़े की तरह दौड़नेवाला। सं—घोड़े की गति। —চালনা स—घुड़सवारी, अश्वपरिचालन। —ডিম্ব सं—ঘোড়ার ডিম কুছ भी नहीं, कल्पित विषय, आकाश-कुसुम-सी असम्भव बात। —তর सं—খচ্চর खच्चर। —পাল,—পালক, —রক্ষক (-रक्खक) सं—সহিস साईस। —পৃষ্ঠে क्रि वि—घोड़े की पीठपर। —শালা स—ঘোড়ার অস্তবল अस्तबल। —সাদী सं—घुड़सवार, अश्वारोही सैनिक। —স্বন (-श्वान सं—घोड़े की हिनहिनाहट, हेषा।

অশ্বত্থ (अश्वत्थ-अ) स—अश्वत्थ, पीपल।

অশ্বারূঢ় (अ) वि—घुड़चढ़ा, घुड़सवार।

অশ্বারোহী वि—घुड़सवार।

অশ্বিনী सं—अश्विनी नक्षत्र; घोड़ी। —কুমার स—त्वष्टा की कन्या प्रभा नामकी स्त्री से उत्पन्न सूर्यके दो यमज पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं।

অশ্বীয় (-अ) वि—अश्व-सम्बन्धी, घोड़ेका।

অষ্ট (-अ) स वि—আট आठ, ८। —ক सं—आठका समूह; आठ। —ধা क्रि वि—आठ प्रकारसे; आठों ओर; आठ बार। वि—आठगुना। —চত্বারিংশ (-अ) वि—अड़तालीसवाँ, ४८वाँ। —চত্বারিংশৎ वि—अड़तालीस, ४८। —চত্বারিংশত্তম वि=অষ্টচত্বারিংশ। —ধাতু सं—सोना चाँदी ताँबा राँगा जस्ता सीसा लोहा और पारा ये आठ धातु। —নবতি सं, वि—अंठानवे, ९८। —নবতিতম वि—अंठानवेवाँ, ९८वाँ।—পঞ্চাশৎ(—पचाशत्) वि—अंठावन, ५८। —পঞ্চাশত্তম वि—अंठावनवाँ, ५८वाँ। —প্রহর सं—दिनरात, दिनरात का उत्सव या नाम-कीर्तन। क्रि वि—आठों पहर, सदा, निरन्तर। —বিধ (-अ) वि—आठ प्रकार का; आठगुना। —ভুজা सं—दुर्गाकी आठ हाथोंवाली मूर्त्ति; विन्ध्याचलकी देवी। —ম वि—आठवाँ, ८वाँ। —মঙ্গল सं—आठ मंगल-चिह्न जैसे—सिंह वृष हस्ती जलपूर्ण घट पंखा झंडा शंख और दीया। —মাংশ (-अ) सं—आठवाँ अंश, ८वाँ भाग। —মী सं—अष्टमी तिथि। वि—आठवीं। —রম্ভা सं—शून्य, कुछ भी नहीं, पूर्ण असफलता। —ষষ্টি सं, वि—अड़सठ, ६८। —ষষ্টিতম वि—अड़सठवाँ, ६८ वाँ। —সপ্ততি सं, वि—अठहत्तर, ७८। —সপ্ততিতম वि—अठहत्तरवाँ, ७८ वाँ। —সিদ্ধি स—योग की आठ सिद्धियाँ जैसे—अणिमा लघिमा व्याप्ति प्राकाम्य महिमा ईशित्व वशित्व और कामावशायिता।

অষ্টাংশিত (-अ) वि—आठ भागों में बँटा हुआ, आठपेजी octavo

অষ্টাঙ্গ (अष्टांग-अ) सं—आठ अंग जैसे—दो हाथ, छाती, कपाल, दो आँखें, गला और पीठका मध्यभाग—इन पर तिलक-चिह्न धारण करने की विधि है; योगके आठ साधन जैसे—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। —প্রণাম, সাষ্টাঙ্গ-প্রণাম स— भूमिपर गिरकर दंडवत प्रणाम।

অষ্টাচত্বারিংশ (-अ) वि—अड़तालीसवाँ, ४८ वाँ। —ৎ वि स—अड़तालीस, ४८। —ত্তম (-अ) वि=অষ্টাচত্বারিংশ।

অষ্টাদশ सं, वि—अठारह, १८। वि—अठारहवाँ, १८वाँ।

অষ্টাবিংশ (-अ) वि—अट्ठाइसवाँ, २८वाँ।

—তি सं, वि—अट्ठाइस, २८। —তিতম (-अ) वि=অষ্টাবিংশ।

অষ্টাশী, অষ্টাশীতি सं, वि—अठासी, ८८।

অষ্টাশীতিতম वि—अठासीवाँ, ८८वाँ।

অষ্টাশ্র (अष्टास्र-अ) वि—आठकोणोंवाला। सं—अष्टकोण।

অষ্টে পৃষ্ঠে क्रि वि—सब ओरसे, सब अंगो में।

অষ্টোত্তর শত (-अ) स, वि—एक सौ आठ, १०८। [विस्तृत; उदार।

অসংকীর্ণ (अशंकोर्न-अ) वि—सँकरा नही,

অসংকুচিত (-अ) वि—अकुंचित, न सिकुड़ा हुआ; दुविधा-रहित; उदार।

অসংকোচ सं—संकोच का अभाव। অসংকোচে क्रि वि—नि संकोच।

অসংখ্য (अशंख्य-अ), অসংখ্যাত (-अ), অসংখ্যেয় (-अ) वि—अगणित, बेशुमार, संख्यातीत।

অসংগত (-अ) सं—नामुनासिब, अनुचित।

অসংগতি सं—बेसिलसिलापन।

অসংবৃত (-अ) वि—अनाच्छादित, उघाड़ा, खुला, शिथिल वस्त्रवाला।

অসংযত (-अ) वि—संयम-रहित, उच्छृंखल, अनियमित, ढीला, शिथिल, बन्धन-रहित।

অসংযম सं—संयम का अभाव, यथेच्छाचार, उच्छृंखलता। [असंबद्ध, अ डबड।

অসংলগ্ন (-अ) वि—पृथक, अलग, संयोग रहित,

অসংশয়িত (-अ) वि—संशय-रहित, निश्चित।

অসংশয়ে क्रि वि—नि संदेह, निश्चित रूपसे।

অসংশ্লিষ্ট (-अ) वि—सम्बन्ध-रहित।

অসংস্কৃত (-अ) वि—न शोधा हुआ, अपवित्र, संस्कार न किया हुआ, न सजाया हुआ। स—संस्कृत से भिन्न भाषा।

অসকৃৎ (अशकृत्) क्रि वि—एकाधिक बार, अनेक बार, बार बार।

অসক্ত (अशक्त-अ) वि—आसक्ति रहित।

অসগোত্র (अशगोत्र-अ) वि—भिन्न गोत्र का।

অসঙ্কীর্ণ वि=অসংকীর্ণ। অসঙ্কুচিত वि=অসংকুচিত। অসঙ্কোচ सं=অসংকোচ। অসঙ্গত वि=অসংগত। অসঙ্গতি सं=অসংগতি।

অসচ্চরিত্র (-अ) वि—चरित्रहीन, लम्पट, दुराचारी। स—दुराचार।

অসচ্ছল (अशाच्छल) वि—दरिद्र, गरीब। —তা सं—दरिद्रता, गरीबी।

অসজ্জন सं—दुष्ट या खराब आदमी।

অসৎ (अशत्) वि—बुरा, खराब; अपवित्र, दुष्ट, बेईमान, सत्ता-रहित, मिथ्या, कल्पित, —কর্মা सं—बुरा काम करनेवाला, दुराचारी; जुमवार। —পথাবলম্বী वि—कुमार्गगामी, बुरे मार्ग पर चलनेवाला।

অসতর্ক (अशतर्क-अ) वि—असावधान, बेखबर, लापरवाह।

অসতী सं—व्यभिचारिणी, छिनाल।

অসত্তা सं—सत्ता-राहित्य, अविद्यमानता।

অসত্য (अशत्य-अ) वि—मिथ्या, झूठा, कल्पित।

অসদাচরণ, অসদাচার स—बुरा बर्ताव, दुराचार; अनुचित व्यवहार। অসদাচারী वि—दुराचारी, अनुचित व्यवहार करनेवाला।

অসদৃশ (-अ) वि—असमान, भिन्न।

অসদ্গ্রাহী वि—अवैध दान लेनेवाला; लोभी; रिश्वतखोर।

অসদ্ব্যবহার सं=অসদাচরণ।

অসদ্ভাব सं—अभाव, असत्ता, धनाभाव, अनुपस्थिति; मनमुटाव, वैर।

অসন্দিগ্ধ (-ग्ध-अ) वि—संशय-रहित।

অসপত্ন (-अ) वि—शत्रुहीन।

অসপিণ্ড (-अ) वि—एक ही पितरों को पिंड न देनेवाला, सात पीढ़ी से बाहरका।

অসবর্ণ (-अ) वि—पृथक् वर्णका ।

অসভ্য (असभ्य-अ) वि—गँवार, अशिष्ट ।

অসম (-अ) वि—असदृश, विषम; ऊबड़खाबड़। —কক্ষ (-कक्ख-अ) वि—असमान, नाबराबर; अप्रतिद्वन्द्वी ।

অসমক্ষ (-अ) वि—परोक्ष, अगोचर। অসমক্ষে [क्रि वि—परोक्षमें, पीछे ।

অসমঞ্জস वि—असगत; अयोग्य; असदृश, युक्तिविरुद्ध। सं—असामजस्य ।

অসময় (असमय) सं—बुरा समय, दु:खका समय; अकाल ।

অসমর্থ (-अ) वि—अक्षम; अयोग्य; दुर्बल ।

অসমসাহস (असम्शाहश) स—अनुचित साहस, दु:साहस। অসমসাহসিক वि—दु साहसी, असाधारण साहस रखने वाला ।

অসমান वि—असमान, भिन्न प्रकारका; असमतल, ऊबड़खाबड़ ।

অসমাপিকা ক্রিয়া—पूर्वकालिक क्रिया (जैसे—করিয়া करके, খাইয়া खाकर, পান করিয়া पीकर)।

অসমাপ্ত (-अ) वि—असम्पूर्ण, अपूर्ण ।

অসমীক্ষ্যকারী (असमीक्खकारी) वि—অবিমৃষ্যকারী फलाफल और पूर्वापर विचार न करके काम करने वाला ।

অসম্পর্ক (-अ) स—सम्बन्धका अभाव। वि—सम्पर्क-रहित। অসম্পর্কিত (-अ), অসম্পর্কীয় (-अ) वि—सम्पर्क-रहित; नाता-रहित ।

অসম্বদ্ধ (असम्बद्ध-अ) वि—सम्बन्ध-रहित, बेमिलसिलेका, अर्थहीन ।

অসম্ভব वि—असम्भव, नामुमकिन ।

অসম্ভাবনীয় (-अ) वि—अनहोना, न होने वाला, जिसके होनेकी सभावना भी न हो। অসম্ভাবিত (-अ) वि—अप्रत्याशित, अचानक आ पड़ने वाला। অসম্ভাব্য (-अ) वि=অসম্ভাবনীয় ।

অসম্ভ্রম स—অমর্যাদা अपमान, अनादर ।

অসম্মত (-अ) वि—असहमत, गैर-राजी, अस्वीकृत, अनिच्छुक। অসম্মতি स—অমত असम्मति, अनिच्छा, अस्वीकृति ।

অসম্মান स—अनादर, अपमान ।

অসহ (असह-अ) वि—असहिष्णु; असहनीय । —ন स—असहिष्णुता, असहनीयता। वि—असहिष्णु।—নীয় (-अ) वि—न सहने योग्य । —মান वि—असहिष्णु, क्षमा न करने वाला । —যোগ (असहजोग, स—असहयोग, साथ मिलकर काम न करने का भाव ।

অসহায় वि—नि सहाय, सहायक-रहित, अकेला ।

অসহ্য (असह्य-अ) वि=অসহনীয় ।

অসাক্ষাতে (असाक्खाते) क्रि वि—परोक्ष में, पीछे; अनुपस्थिति में ।

অসাজন্ত (-अ) वि—अशोभन; न सजाया हुआ ।

অসাড় वि—सुन्न, चेतना-शून्य, जड़-सा ।

অসাড়ে—অজ্ঞাতসারে अनजान में ।

অসাদৃশ্য (-अ) स—असमानता, भिन्नता ।

অসাধ सं—अनिच्छा ।

অসাধনীয় (-अ) वि—साधन करने के अयोग्य ।

অসাধারণ वि—असामान्य, विशेष, खास ।

অসাধু वि—बुरा, खराब, बेईमान, दुष्ट; व्याकरणके नियम-विरुद्ध; अशुद्ध, अश्लील। —তা, —ত্ব (-त्त अ) स—बेईमानी, दुष्टता ।

অসাধ্য (-अ) वि—न करने योग्य, दुष्कर, कठिन; आरोग्य होनेके अयोग्य। —সাধন, —সাধনা स—असम्भव कार्यका सम्पादन ।

অসাবধান (अशावधान) वि=অসতর্ক ।

অসামঞ্জস্য (-अ) स-सामजस्यका अभाव ।

অসাময়িক वि—असमय का, समयसे पहलेका ।

অসামরিক वि—समर-विभाग से भिन्न, नागरिक civil

অসামর্থ্য (-अ) सं—सामर्थ्य या शक्तिका अभाव ; दुर्बलता, कमजोरी ; अयोग्यता ।

অসামান্য (-अ) वि=অসাধারণ ।

অসামাল वि—असावधान ; मलका वेग धारण करनेमें असमर्थ ।

অসাম্প্রদায়িক वि—किसी सम्प्रदायके पक्षपात-रहित, दल-निरपेक्ष ; सार्वजनीन, उदार ।

অসাম্য (-अ) स—असमानता ; भेद ।

অসার वि—অকিঞ্চিৎকর, বাজে तुच्छ ; निकम्मा ; सारहीन ।

অসি (असि) सं—তরবারি तलवार, खड्ग । —চর্ম (-अ) स—तलवार और ढाल ।

অসিত (-अ) वि—कृष्ण काला । सं—काला रंग ।

অসিদ্ধ (-अ) वि—न सीझा हुआ, बेपका, कच्चा ; असम्पूर्ण ; अप्रमाणित ; सिद्धि अप्राप्त । অসিদ্ধি स—असफलता, नाकामयाबी ; असम्पूर्णता ; अप्रमाणित अवस्था ।

অসীম वि—बेहद, सीमा-रहित, अनन्त ।

অসু सं—प्राण (গতাসু —गतप्राण, मृत) ।

অসুখ स—सुखका अभाव, दुःख, कष्ट ; रोग, बीमारी (অসুখ করা वा হওয়া क्रि—बीमार होना या पड़ना) । অসুখ-বিসুখ सं—रोग ।

অসুখী वि—दुःखी, सुख-रहित ।

অসুবিধা (असुविधा) स—दिक्कत, कठिनाई ; अड़चन, बाधा ।

অসুমার वि—अगणित, बेशुमार, बहुत अधिक ।

অসুর स—असुर, दैत्य ; दुष्ट आदमी ।

অসুস্থ (असुस्थ-अ) वि—पीड़ित बीमार, रुग्ण ; अस्वस्थ । —তা सं—पीड़ा, बीमारी, अस्वस्थता ।

অসূর্যম্পশ্যা (असूर्यम्पश्या) वि—परदेमें रहने वाली जिसे सूर्य भी न देख सके ।

অসূয়া सं—পরশ্রীকাতরতা ईर्ष्या, डाह ; द्वेष ; क्रोध, गुस्सा ; निन्दा । —পর, —পরবশ, —পরতন্ত্র (-अ) वि—असूयायुक्त, डाही ।

অসৃক (असृक) सं—रक्त, खून, रुधिर । —ধারা सं—रक्तकी धारा ।

অসৈনিক वि=অসামরিক ।

অসৌহার্দ, অসৌহার্দ্য, অসৌহৃদ্য (असौहृद्-अ) सं—मित्रताका अभाव, शत्रुता, वैर ।

অস্খলিত (-अ) वि—स्खलित या पतित न होने वाला ; अटल, निरन्तर स्थित ।

অস্ত (अस्त-अ) वि—डूबा हुआ, तिरोहित, अदृश्य ; नष्ट, ध्वस्त । सं—लोप, अदर्शन ; अवसान । —গত (-अ) वि—अस्तगत, डूबा हुआ । —গমনোন্মুখ वि—अस्त जानेमें उद्यत । —গমন सं—अस्तगमन ; ध्वंस । —মিত (-अ) वि—अस्तगत ।

অস্তর सं—अस्त्र, हथियार ; चीरफाड़ ; रंगका प्रथम लेप ; अस्तर ।

অস্তাচল सं—अस्तगिरि । —গামী, —চূড়াবলম্বী [বি=অস্তগমনোন্মুখ ।

অস্তি क्रि—आछे है, मौजूद है । —ত্ব (अस्तित्व-अ) स—सत्ता, विद्यमानता, मौजूदगी ।

অস্তু (अस्तु) अन्य—ऐसा ही हो, अस्तु ।

অস্তেয় (-अ) सं—अचौर्य, चोरीका न करना ।

অস্তোদয় सं—सूर्यास्तसे सूर्योदय तक समय, सारी रात ।

অস্তোন্মুখ (-न्मुख) वि=অস্তগমনোন্মুখ ।

অস্ত্র (अस्त्र-अ) स—अस्त्र, शस्त्र, हथियार (অস্ত্র করা, चीरफाड़ करना) । —চিকিৎসক स—शस्त्रचिकित्सक, चीरफाड़ करने वाला डाक्टर । —বিদ্যা (-विद्या) स—अस्त्रशस्त्र चलानेकी विद्या, युद्धविद्या ; चीरफाड़ करनेकी विद्या । —বৈদ্য (-वैद्य-अ) स=অস্ত্রচিকিৎসক । —শালা, অস্ত্রাগার स—अस्त्रशाला arsenal.

অস্ত্রাহত (-अ) वि—अस्त्रसे घायल ।

অস্ত্রী वि—अस्त्रधारी ; शस्त्र-सज्जित ।

অস্ত্রীক বি—विपत्नीक; पत्नी-रहित।

অস্ত্রোপচার स—शस्त्रोपचार, चीरफाड़।

অস্থান (अस्थान) सं—बुरा स्थान, अयोग्य स्थान; स्थानाभाव।

অস্থাবর वि—चल, मनकूला।

অস্থায়ী वि—स्थायी न रहने वाला।

অস্থি सं—हाड़ हड्डी। —চর্মসার, —চর্মবিশিষ্ট (-अ) वि—क्षीण, ठठरीमात्र, दुबला-पतला। —প্রবাহ, —বিসর্জ্জন सं—किसी मृतकके अग्निसंस्कारके बाद उसकी बची हुई अस्थिका गंगा आदि पवित्र नदीमें प्रवाह। —সার वि=অস্থিচর্মসার।

অস্থিতি सं—स्थिति या जीविका का अभाव।

অস্থির वि—चंचल, डाँवाँडोल; बेचैन; अस्थायी। —তা, —ত্ব (-त्त-अ), অস্থৈর্য (अस्थइर्ज-अ) सं—चचलता अस्थायीपन; अधीरता, धैर्यका अभाव।

অস্নাত (अस्नात-अ) वि—न नहाया हुआ।

অস্পন্দ (-अ) वि—निस्पन्द, स्तब्ध; स्थिर।

অস্পষ্ট (-अ) वि—वापसा धुँधला; अस्पष्ट, सहजमें न दिखाई या सुनाई पड़ने वाला।

অস্পৃশ্য (-अ), অস্পর্শ্য (-अ), অস্পর্শনীয় (-अ) वि—छूनेके अयोग्य; अपवित्र, अछूत।

অস্পৃষ্ট (-अ) वि—न छूआ हुआ, पवित्र।

অস্পৃহ (-अ) वि—स्पृहा या इच्छा रहित, निस्पृह; उदासीन। —নীয় (-अ) वि—इच्छा के अयोग्य। [अव्यक्त, अस्पष्ट।

অস্ফুট (-अ) वि—অবিকশিত न खिला हुआ;

অস্মদীয় (अस्मदीय-अ) वि—हमारा, अपने सम्बन्धका, अपना।

অস্মদ্দেশীয় (-अ) वि—अपने देश का।

অস্বচ্ছ (अस्वच्छ-अ) वि—घोला गदला; अपारदर्शक; मलिन।

অস্বতন্ত্র (-अ) वि—पराधीन।

অস্বস্তি सं—बेचैनी, घबराहट।

অস্বাতন্ত্র্য (-अ) सं—पराधीनता।

অস্বাভাবিক (अस्शाभाबिक) वि—अप्राकृतिक; असाधारण, स्वभावविरुद्ध।

অস্বামিক वि—मालिक-रहित, लावारिस।

অস্বাস্থ্যকর, অস্বাস্থ্যজনক वि—स्वास्थ्य-हानिकारक।

অস্বীকার सं—इनकार, नामजूरी, अपासन, असम्मति प्रकाश। অস্বীকার্য (अस्शीकार्ज-अ) वि—स्वीकारके अयोग्य। অস্বীকৃত (-अ)—इनकार किया हुआ, नामजूर। অস্বীকৃতি स= অস্বীকার।

অহঙ্কার, অহংকার सं—घमण्ड, शेखी।

অহংসর্বস্ব (-शर्बश्श-अ) वि—स्वार्थी।

অহঃ सं—दिन, दिवस।

অহমিকা सं—अहंकार, गर्व, घमड।

অহরহ (-अ) क्रि वि—प्रतिदिन; सदा।

অহর্নিশ क्रि वि—दिनरात; सदा।

অহহ (-अ) अव्य—हाय हाय!

অহি सं—सर्प साँप।

অহিংস (अहिंश-अ) वि—हिंसा-रहित; बल-प्रयोगमें अनिच्छुक। অহিংসক वि—हिंसा न करने वाला; हानि न करने वाला। অহিংসা सं—अहिंसा; वैरका अभाव। অহিংস্য (-अ) वि—हिंसाके अयोग्य। [करने वाला।

অহিংস্র (अहिंस्र-अ), অহিংস্রক वि—हिंसा न

অহিত स—अमंगल, हानि, नुकसान। —কর वि—हानिकारक, नुकसानदेह। —কারী वि—हानि करने वाला। অহিতাচরণ सं—विरुद्ध आचरण, ऐसा बर्ताव जिससे किसीको हानि पहुँचे।

অহিতুণ্ডিক सं—সাপুড়ে सँपेरा, मदारी।

অহিতেচ্ছা सं—हानि पहुँचानेकी इच्छा।

অহিতেচ্ছু वि—हानि चाहने वाला।

অহিনকুল सं—साँप और नेवलेके समान जन्मसे वैरी। [वि—अफीमची।

অহিফেন सं—আফিং, আফিম अफीम। —সেবী

অহিভূষণ सं—शिव, महादेव।

অহে अव्य—ওহে अजी, हे।

অহেতুক, অহৈতুক क्रि वि—बिना कारण।

অহো अव्य—ওহো ओह।

অহোরাত্র (-अ) क्रि वि—दिनरात ; सदा।

অ্যাঁ अव्य—बुलानेके जवाबका शब्द, जी।

অ্যাটলাস (ऐटलास) सं—नकशोंकी पुस्तक।

অ্যাদ্দিন (ऐद्दिन) क्रि वि—इतने दिन।

অ্যালুমিনিয়ম सं—ऐलुमिनियम, एक सुफेद हल्की धातु Allumınium.

অ্যাসিড (ऐसिड) सं—तेजाब ; अम्ल वस्तु Acid.

আ

আ उप—अल्प सम्यक व्याप्ति सीमा विरुद्ध आदि भाव सूचक उपसग जैसे,—আপক্ব, थोड़ा पका ; আভূমি, भूमि तक ; আসমুদ্র, जल स्थल सवत्र ; আকাটা, न कटा हुआ। अव्य—विस्मय खेद आनन्द आदि भाव सूचक अव्यय, जैसे—আ রে अरे ! আ কপাল, हा भाग्य ! আ কি আরাম, आः कैसा आराम !

আই, আই মা, আয়ী, আয়ী स्त्री—दिदि मा मातामही, नानी।

আইও, এও स्त्री—सधवा, सौभाग्यवती।

আইঢাই सं—छटफट छटपटी, बेचैनी।

আইন सं—কায়ন कानून, विधान। —জ্ঞ (-নগ্গ-अ) वि—कानूनदाँ, विधिज्ञ। —তঃ क्रि वि—कानूनसे, न्यायसे legally. —মতে क्रि वि—कानूनके अनुसार। —সঙ্গত (-अ), —সম্মত (-अ) वि—कानूनी, विधि-सम्मत।

আইনানুযায়ী (-जायी), আইনানুসারে (-शारे) क्रि वि=আইনমতে।

আইনু क्रि—আসিলাম (मैं) आया या आयी।

আইবড় (-अ), —বুড়ো वि—अविवाहित, क्वारा। —ভাত सं—विवाहके पहले दुलहे या दुलहिनका अपने पिताके घर विशेष अन्न ग्रहण रूप संस्कार।

আইমা स्त्री=আই।

আইল, আলি सं—मेंड़। [आयी।

আইল (-अ) क्रि—আসিল (वह) आया या

আইসা (-शा) क्रि—আসা आना ; (আইস আমরা যাই—आओ हम जायं)। सं—आगमन, आना।

আঁইশ, আঁইষ सं=আঁশ।

আউন্স (आउन्स्) सं—औंस ounce.

আউমাউ, আঁউমাউ सं—बहुत डर जाने पर मुँहसे निकलने वाला अर्थहीन शब्द।

আউশ, আশু वि—शीघ्र पक जानेवाला (धान)।

আওটান (-नो), আওটানো (क्रि परि १६)—आँच पर उबालकर गाढ़ा करना, खौलाना (दूध)। [घोखना, रटना, बार बार पढ़ना।

আওড়ান (-नो), আওড়ানো (क्रि परि १६)—

আওতা सं—आवरण, छाया।

আওরৎ स्त्री—औरत, स्त्री, नारी।

আওরান (-नो), আওরানো (क्रि परि १६)—टाटान फोड़ा आदि फूल कर दद करना, टीसना (ফোড়া—)।

আওলাত सं—वृक्षादि सम्पत्ति।

আওলাদ सं—औलाद, सन्तति।

আওলিয়া सं—मित्र, साथी ; मुसलमान सन्त, औलिया।

আওয়াজ सं—शब्द, आवाज।

আওয়ারা वि—ভবঘুরে आवारा।

আংটা, আঙটা सं—কড়া, বলয়াকার হাতল अंगूठीके आकारका दस्ता, कड़ाही कंडाल आदि पकड़नेकी अंगूठी; अंगेठी।

আংটি, আঙ্টি, আঙটি, আঁটি सं—অঙ্গুরীয় अंगूठी। [कोयला।

আংরা, আঙরা सं—আগুনের अंगारा; जलता

আংরাখা, আঙরাখা सं—अंगरखा, चपकन।

আংশিক वि—अंश-सम्बन्धी; कुछ, अंशतः।

আঃ अव्य—विस्मय खेद क्रोध या हर्ष सूचक अव्यय।

আখ, আক सं—ইক্ষু ऊख, गन्ना।

আঁক सं—অঙ্ক अंक, हिसाब (—কষা, हिसाब लगाना); दाग, रेखा (—কাটা, रेखा खींचना)। [हमेशा।

আকছার (आकछार) क्रि वि—হামেশা अकसर,

আঁকড়া सं—कड़ा अंकुड़ा hook.

আঁকড়ান (-नो), আঁকড়ানো (क्रि परि १६)—हाथोंसे लपेटकर पकड़ना।

আঁকড়ি सं—अक्षर पर अंकुड़ेकी तरह चिह्न (जैसे, ক, ফ के सामने और থ के पीछे है)।

আকণ্ঠ (-अ) क्रि वि—गले तक (—ভোজন)।

আকনি, আখনি (आखनि) सं—मसाले या मांसका स्वाद।

আকন্দ (-अ) स—अकवन, मदार।

আকম্পন सं—अल्प कम्पन, थरथराहट।

আকম্পিত (-अ) वि—अल्प कम्पित।

আকর सं—খনি खान; उत्पत्ति-स्थान, आधार (রত্নাকর—समुद्र, সুধাকর—चन्द्रमा)। —জ (-अ) वि—खनिज, खानसे उत्पन्न।

আকরিক, আকরীয় (-अ) वि—खनिज, खान-सम्बन्धी।

আকর্ণ (-अ) क्रि वि—कान पर्यन्त कान तक।

আকর্ণন क्रि—श्रवण, सुनना।

আকর্ষক वि—खींचनेवाला। सं—चुम्बक।

আকর্ষণ सं—টান खिंचाव (মাধ্যাকর্ষণ)।

আকর্ষী वि—आकर्षण-सम्बन्धी। सं—खींचने की वस्तु।

আকর্ষিত (-अ) वि—खींचा हुआ, आकृष्ट।

আঁকশি (आँक्शि) सं—লগি, লগা लग्गा, पेड़ोंसे फल तोड़नेका बाँस, अंकुश।

আকসার क्रि वि—अकसर, हमेशा।

আকস্মিক (आकस्शिक्) वि—एकाएक आ पड़नेवाला।

আঁকা (क्रि परि २)—चित्र खींचना; लकीर खींचना। वि—खींचा हुआ, अंकित, चित्रित। —জোকা वि—चित्रित, अनेक रंगोंसे रंजित, लकीरोंवाला।

আকাঙ্ক্ষা (आकांखा) सं—इच्छा, वासना, अभिलाषा, चाह। আকাঙ্ক্ষিত (-अ) वि—इच्छित, चाहा हुआ। আকাঙ্ক্ষী वि—अभिलाषी, चाहनेवाला।

আকাট वि—নিরেট बिलकुल, निरा (—মূর্খ)।

আকাটা वि—बिना कटा, न कटा हुआ, साबूत।

আঁকাড়া वि—আছাঁটা चावल परकी पतली लाल परत न निकाला हुआ (—চাল)।

আঁকান (-नो), আঁকানো (क्रि परि १०)—अंकित कराना, चित्र खिंचवाना।

আঁকাবাঁকা वि—টেরা-বাঁকা टेढ़ा-मेढ़ा, वक्र।

আকার सं—आकृति, मूर्ति, चेहरा, गठन; আ अक्षर, आकारका (া) चिह्न। —প্রকার सं—आचरण, बर्ताव demeanour.

আকারিত (-अ) वि—रूपान्तरित।

আকাল सं—अकाल, दुर्भिक्ष; बुरा समय।

আকালিক वि—असमयमें उत्पन्न; न टिकाऊ।

আকাশ सं—आसमान; वातावरण; शून्य; स्वर्ग। —কুসুম सं—आकाशमें फूल खिलने की-सी असम्भव बात; कल्पित वस्तु। —গঙ্গা स,—छायापथ आकाशमें चमकते हुए

तारोंकी पंक्ति The milky way. —तार सं—रेडियोका धारा-प्रवाहक तार जो प्रायः छतके ऊपर लगाया जाता है aerial. —पाताल सं—जमीन-आसमान; अनन्त प्रकार, सब विषय। —प्रदीप सं—अकास-दीया। —वाणी सं—दैवी वाणी। —वृत्ति (वृत्ति) सं—अनिश्चित जीविका। —यान (-जान्) सं—हवाई जहाज, विमान; गुब्बारा। —स्थ (-स्थ -अ) वि—आकाशका; स्वर्गीय।

आकिञ्चन (आकिंचन) सं—आशा, वासना, आग्रह। [(कण्टकाकीर्ण)।

आकीर्ण (-अ) वि—छड़ानो बिखरा हुआ

आकुञ्चन (आकुंचन) सं—संकोचन, सिकुड़न।

आकुञ्चित (-अ) वि—सिकुड़ा हुआ।

आँकुपाँकु, आँकुबाँकु वि—व्यग्र व्याकुल, बेचैन। सं—बेचैनी।

आकुल वि—कातर व्याकुल, बेचैन, कातर (शोकाकुल); भय-भीत। आकुलित (-अ) वि—घबराया हुआ। आकुलि-विकुलि सं—अति आग्रह, बहुत उत्सुकता, बेचैनी।

आकूति सं—इच्छा, अभिलाषा; उत्सुकता, आशय।

आकृति सं—आकार, शकल, बनावट; चेहरा।

आकृष्ट (-अ) वि—खींचा हुआ, आकर्षित, प्रलोभित; जोता हुआ। आकृष्टि सं—आकर्षण, खिंचाव।

आकृष्यमाण वि—आकर्षित होनेवाला।

आक्केल सं—अकल, बुद्धि, ज्ञान। —गुड़ुम सं—हतबुद्धिता हवासका गुम होना, घबराहट। —दाँत सं—अकिल-दाढ़ wisdom-tooth —सेलामि सं—मूर्खताका दंड; अनुभव-हीनताके कारण हानिका दंड।

आक्रम (आक्रम्) सं—विक्रम पराक्रम; आक्रमण; अधिकार; उदय। —ण सं—आक्रमण, चढ़ाई; बलप्रयोग। —णीय (-अ) वि—आक्रमण करनेके योग्य। [महगी)।

आक्रा वि—महँगा, महार्घ (—गण्डार दिन,

आक्रान्त (-अ) वि—जिस पर आक्रमण हुआ हो (रोगाक्रान्त); क्लिष्ट; अभिभूत; आवृत।

आक्रामक वि—आक्रमण करनेवाला।

आक्रोश सं—द्वेष, क्रोध grudge.

आक्लान्त (-अ) वि—बहुत थका हुआ।

आक्षरिक (आक्खरिक) वि—अक्षर-सम्बन्धी, अक्षरके अनुसार literal (—अनुवाद)।

आक्षिप्त (आक्खिप्त-अ) वि—फेंका हुआ, आक्षेप-युक्त।

आक्षेप (आक्खेप) सं—खेद, पश्चात्ताप, पछतावा; खिंचाव, ऐंठन; निन्दा, आक्षेप।

आख सं—वाक ऊख, गन्ना। [आश्रम।

आखड़ा (आखड़ा) सं—अखाड़ा, अड्डा,

आखड़ाइ (आखड़ाइ) सं—महला अभिनय आदिका अभ्यास या पूर्व प्रयोग rehearsal.

आखण्डल सं—ईश इन्द्र।

आखर सं—कीर्तनमें जो पद मूल संगीतके साथ इच्छानुसार जोड़ दिये जाते हैं।

आखरोट सं—अखरोट।

आखा सं—उनान, चूल्हा चुल्हा।

आँखि सं—आँख, चक्षु, नेत्र।

आखु सं—ईश्वर चूहा, मूस; चोर।

आखुटी सं—वायना, आबदार प्यारे बच्चे या प्यारी पत्नीका किसी विषयके लिए जिदके साथ निरन्तर प्रार्थना।

आखेर सं—आखिर; परिणाम, अन्त।

आखेरी वि—आखिरी, अन्तिम।

आख्या सं—नाम, संज्ञा; उपाधि; कथन। —त (-अ) वि—कथित; व्याख्यात; विख्यात। —न सं—काहिनी कहानी, गल्प, इतिहास। —न-

ভাগ सं—गल्पांश। —পত্র (-अ) सं—पुस्तकका वह प्रथम पत्र जिसपर उसका नाम दाम आदि रहता है। —কর वि—कथक कहने वाला। —য়িকা सं—कहिनी कहानी, किस्सा।

আখ্যেয় (-अ) वि—कथनीय कहने योग्य; नाम देने योग्य।

আগ सं—आगा, अगला भाग, सामनेका भाग। वि—सबसे ऊँचा (গাছের—ডাল)। —তোলা क्रि—पूजाकी वस्तुओंमेंसे थोड़ासा उठा रखना।

আগড় सं—बाँस टट्टर, टट्टरका दरवाजा। —বাগড় सं—तरह तरहकी निकम्मी चीजें; अगड़म-बगड़म, दकबाद।

আগড়া सं—भूसी, चोकर।

আগত (-अ) वि—आया हुआ, उपस्थित, हाजिर; प्राप्त, अधिगत। —কল্য (-अ) सं—आनेवाला कल। —প্রায় वि—अभी आनेवाला, आसन्न।

আগন্তুক (आगन्तुक) सं—नवागत व्यक्ति, मेहमान।

আগম सं—तन्त्र, वेद; आगमन; प्रवेश; शास्त्र-प्रमाण। —न सं—आगमन, उपस्थिति। —নী सं—उमाके पित्रालयमें आनेके सम्बन्धका गाना।

আগল सं—बेड़ा टट्टी; রক্ষা बचाव।

আগলা (आग्‌ला) वि—खुला, उघारा।

আগলান (आग्‌लानो), আগলানো (क्रि परि १६) —चौकसी करना, रखवाली करना, अगोरना।

আগা सं—ডগা अगला भाग, सिरा; सामनेका अंश। —গোড়া क्रि वि—शुरूसे आखिर तक। —পাছতলা, (-পাছলা) क्रि वि—सिरसे पैर तक। सं—नख-शिख, सारा शरीर।

আগাছা सं—বাজে গাছ घासपात, नोया।

আগাড়ি, আগাড়ী क्रि वि—सामने; पहले, अगाड़ी। —পিছাড়ি क्रि वि—आगे पीछे।

আগান (-नो), আগানো (क्रि परि १०)—এগনো आगे बढ़ना या बढ़ाना; पहुँचाना।

আগাম वि=অগ্রিম।

আগামী वि—भावी आनेवाला (-কল্য, आने वाला कल)।

আগার सं—घर, मकान; कमरा; आधार।

আগু सं—अग्र, आगा। क्रि वि—आगे, पहले। —তে क्रि वि—पहले; सामने। —পাছু क्रि वि—आगे पीछे, पहले या बादको।

আগুন सं—आग, अग्नि (কপালে—,अभागा, बदनसीब; মুখে—, मुँहमें आग लगे, गाली)। वि—आग-सा (রেগে—হওয়া, क्रोधमें आग-बबूला होना)। —ধরা क्रि—आग लगना। —ধরানো क्रि—आग लगाना। —খাকী वि—मुँहजली (गाली)।

আগুয়ান, আগুসর वि—अग्रसर; आगे बढ़ा हुआ।

আগুলফ (-अ) क्रि वि—एड़ी तक (लटका हुआ)।

আগুরী सं=উগ্রক্ষত্রিয়।

আগে क्रि वि—सामने, पहले। —কার वि—पहलेका, पिछला। —পাছে क्रि वि—आगे पीछे। —ভাগে क्रि वि—सबसे पहले, पहले पहल।

আগোছালো वि—अस्तव्यस्त, विशृंखल।

আগোড় सं=আগড়।

আগ্নেয় (-अ) वि—अग्नि-सम्बन्धी, आगका; आग-सा उज्ज्वल। —গিরি सं—ज्वालामुखी Volcano. আগ্নেয়াস্ত্র (-अ) सं—बन्दूक तोप आदि अग्नि उत्पादक अस्त्र।

আগ্রহ (-अ) सं—ঝোঁক आग्रह, जिद, हठ; उत्सुकता; आसक्ति; यत्न। আগ্রহাতিশয্য सं—अति आग्रह, बहुत जिद। আগ্রহান্বিত (-न्वित-अ) वि—आग्रही, जिद्दी, उत्सुक।

আঘাট, আঘাটা सं—व्यवहारके अयोग्य घाट।

আঘাত सं—চোট, কোপ, घा चोट, मार।

আঘাতন सं—आघात प्रदान।

আঘ্রাণ सं—गन्ध ग्रहण (—করা,—নেওয়া)। আঘ্রাত (-अ) वि—सूँघा हुआ ; तृप्त। আঘ্রায়ক वि—सूँघनेवाला।

আঙটা, আঙরা, আঙরাখা सं— আং देखो।

আঙার सं—अंगारा, कोयला।

আঙিনা सं=আঙ্গিনা।

আঙুর, আঙুল सं=আঙ্গুর, আঙ্গুল।

আঙ্গটি, (-টী) (आङ्टि)=আংটি

আঙ্গরাখা (आङ्राखा) सं=আংরাখা।

আঙ্গিক (आंगिक) वि—अंग-सम्बन्धी ; विषय-सम्बन्धी ; अंगभंगी द्वारा प्रकट (-অভিনয়)।

আঙ্গিনা सं—উঠান, আঙিনা आंगन, सहन।

আঙ্গুর सं—আঙুর, দ্রাক্ষা अंगूर, दाख।

আঙ্গুল सं—আঙুল उंगली। কড়ে—, सं—छोटी उंगली। বুড়ো—, अंगूठा। অনামিকা सं—छोटीके पासवाली उंगली। তর্জ্জনী सं—अंगूठेके पासवाली उंगली। মধ্যমা सं—बीचकी उंगली। —মটকানো क्रि—उंगली खींच या मोड़कर शब्द करना। বুড়ো—দেখানো क्रि—अंगूठा दिखाना। —হাড়া सं—उगलीका सिरा पकनेका रोग whitlow.

আঁচ सं—ताप, आँच (নরম আঁচে রান্না) ; अनुमान, अटकल ; आभास, झलक, संकेत (কথার—)।

আচকান (आच्कान्) सं—अचकन।

আঁচড় सं—दाग ; कुछ गहरी रेखा (কাঁটার—) ; नखाघात नाखूनकी खरोंच (নখের—)।

আঁচড়ান (आँच्ड़ानो), আঁচড়ানো (क्रि परि १६)—আঁচড় দেওয়া रेखा खींचना ; नाखूनसे खरोंचना , कंघीसे केश संवारना (চুল—)।

আচমকা (आचमूका) क्रि वि—আচম্বিতে, হঠাৎ एकाएक, सहसा ; चौंककर।

আচমন (आच्मन्) सं—खानेके बाद हाथ-मुंह प्रक्षालन , आचमन। আচমনীয় (-अ) सं—हाथ-मुँह धोनेका जल ; जिसके खानेसे मुँह धोना पड़ता है।

আচম্বিতে क्रि वि=আচমকা।

আচরণ सं—बर्ताव, व्यवहार, चालचलन ; अनुष्ठान (ব্রত—)। আচরণীয় (-अ) वि—अनुष्ठान करने योग्य ; व्यवहार-योग्य (জলাচরণীয়)। আচরিত (-अ) वि—अनुष्ठित , व्यवहृत ; अभ्यस्त। [पल्ला।

আঁচল, আঁচলা (आँच्ला) सं—अंचल, আচষা वि—न जोता हुआ (खेत)।

আঁচা क्रि—আন্দাজ করা अनुमान करना, अन्दाजा लगाना, अटकल लगाना (এঁচে নিয়েছি)।

আঁচান (-नो), আঁচানো (क्रि परि १०)—আচমন করা खानेके बाद हाथ-मुँह धोना या कुल्ला करना।

আচার सं—आचार, आचरण, रीति (দেশাচার) ; संस्कार (স্ত্রী—) ; सदाचार ; अचार (আমের—)। —নিষ্ঠ (-अ) वि—सदाचारी।

আচার্য্য (आचार्ज-अ) सं—अध्यापक, आचार्य, गुरु , ज्योतिषी। আচার্য্যা स्त्री—शिक्षयित्री। আচার্য্যাণী स्त्री—आचार्यकी पत्नी।

আচালা वि—जो चाला न गया हो (—আটা)।

আঁচিল सं—তিল, উপমাংস मसा mole

আচোট वि—न जोता हुआ (खेत) ; अक्षत ; अव्यवहृत।

আচ্ছন্ন (-अ) वि—ঢাকা ढँका, आवृत ; व्याप्त ; अभिभूत।

আচ্ছা वि—अच्छा ; उत्तम। क्रि वि—उत्तम रूपसे (-করে পড়)। अव्य—বেশ अच्छा ! हाँ ; शाबाश !

আচ্ছাদক वि—ढाँकनेवाला, आवरक। আচ্ছাদন सं—आवरण ; वस्त्र (গ্রাসাচ্ছাদন—भोजन-वस्त्र) ; ढक्कन। আচ্ছাদনীয় (-अ), আচ্ছাদ্য (-अ) वि—आवरण करनेके योग्य,

ঢাঁকনে যোগ্য। আচ্ছাদিত (-অ) বি—আবৃত, ঢঁকা হুআ; ছায়া হুআ।
আচ্ছিন্ন (-অ) বি—ছিন্ন, কটা হুআ।
আছ (-অ) ক্রি—(তুম) হো, (তুমলোগ) হো।
আছড়ান (আছ্‌ড়ানো), আছড়ানো (ক্রি পরি ১৬)—পটকনা।
আছাড় সং—পটকন (—মারা; —খাওয়া)।
আছি ক্রি—(মৈঁ) হূঁ; (হম) হৈঁ।
আছিল ক্রি—ছিল (বহ) থা, (বে) থে।
আছিস (আছিস্‌) ক্রি—(তূ) হৈ, (নিরাদর অর্থমেঁ) (তুমলোগ) হো।
আছে ক্রি—(বহ) হৈ, (বে) হৈঁ।
আছেন ক্রি—(আদরার্থমেঁ) বহ যা বে হৈঁ।
আছোলা বি—ন ছিলা হুআ।
আজ স—আজ, বর্তমান দিন (—ভাল দিন)। ক্রি বি—অব, ইন দিনোঁ (তিনি—বড়লোক বিস্ত পূর্বে কি ছিলেন?); আজ, বর্তমান দিনমেঁ (—রাইব)। —কার বি—আজকা। —কাল, —কালি ক্রি বি—আজকল, ইন দিনোঁ। সং—বর্তমান সময়। —কাল করা ক্রি—টাল-মটোল করনা। —কে ক্রি বি—আজ, বর্তমান দিনমেঁ। —কের বি—আজকা। —কের মত (-অ) ক্রি বি—কেবল আজকে লিএ।
আজগবী, আজগুবী (আজ্‌গুবী) বি—অজীব, অনোখা, অদ্‌ভুত; রহস্যময়।
আজড়ান (আজ্‌ড়ানো), আজড়ানো—(ক্রি পরি ১৬)—খালী করনা (বর্তন)।
আজনবী বি—অজনবী; বিদেশী; নয়া।
আজন্ম (আজন্ম -অ) ক্রি বি—জন্মসে, জীবনভর।
আজব বি—অজব, অনোখা, অদ্‌ভুত। —ঘর—অজায়ব ঘর museum. [অংজলি।
আঁজল, আঁজলা (আঁজলা) স—দেখে
আজা সং—নানা, মাতামহ।
আজাড় বি—খালী, শূন্য, নিঃশেষ (গ্রাম—করা)।
আজান সং—অজান, নমাজকী পুকার।
আজানা বি—ন জানা হুআ, অপরিচিত, অনজান।
আজানু ক্রি বি—ঘুটনোঁ তক (লটকা হুআ)।
আজি সং=আজ। —কার বি=আজকার।
আজিমা, আজী, আজীমা স্ত্রী—নানী, মাতামহী।
আজীব সং—জীবিকা, পেশা (ব্যবহারাজীব, কানূন-পেশা, বকীল। পণ্যাজীব সং—বনিয়া, সৌদাগর)। বি—অজীব।
আজীবন ক্রি বি—যাবজ্জীবন জীবনভর।
আজীব্য (-অ) সং—জীবিকাকা আশ্রয়।
আজেবাজে বি—তুচ্ছ, বৃথা, ব্যর্থকা।
আজ্জান (-নো), আজ্জানো (ক্রি পরি ১৬)—বোনা, রোপনা।
আজ্ঞপ্ত (আগ্‌গপ্ত -অ) বি—আজ্ঞা-প্রাপ্ত; হুকুম দিয়া হুআ। আজ্ঞপ্তি সং—আজ্ঞা, হুকুম।
আজ্ঞা সং—আজ্ঞা, আদেশ, হুকুম, অনুমতি। —মানা ক্রি—হুকুম মাননা। —লঙ্ঘন করা ক্রি—হুকুম তোড়না। যে আজ্ঞে ক্রি বি—জো হুকুম, অচ্ছা জী। —কারী বি—আজ্ঞাদাতা, হুকুম দেনে বালা; আজ্ঞাকারী, হুকুম মাননে বালা। —ক্রমে ক্রি বি—আজ্ঞানুসার। —চক্র (-অ) সং—যোগশাস্ত্রকে অনুসার শরীরকে ভীতরকে (কল্পিত) ছঃ চক্রোং মেং সে এক। —ধীন বি—আজ্ঞাকে অধীন, বশীভূত। —নুক্রমে ক্রি বি—আজ্ঞানুসার। —নুবর্তন সং—আজ্ঞা-পালন। —নুবর্তিতা সং—আজ্ঞাধীনতা, আজ্ঞা-পালন। —নুবর্তী বি—আজ্ঞাধীন, বশীভূত। —নুযায়ী (-জায়ী) বি—আজ্ঞাধীন। ক্রি বি—আজ্ঞানুসার। —নুরূপ বি—আজ্ঞাকে তুল্য; আজ্ঞাধীন।

—নুসারে (-शारे) क्रि वि—आज्ञानुसार। —পক सं—आज्ञादाता, प्रभु, स्वामी। —পত্র (-अ) सं—आज्ञायुक्त पत्र, हुकुमनामा। —পিত (-अ) वि—आदिष्ट, आज्ञा-प्राप्त। —বহ (—वह-अ) वि—आज्ञाकारी, वशीभूत (—ভৃত্য)। —মত (-अ) क्रि वि—आज्ञानुसार।

আজ্য (आज्य-अ) सं—घी, हवि।

আঝাল, আঝালা वि—झाल-रहित, मिर्च आदिका तीतापन-रहित।

আঝোড়া वि—न छाँटा हुआ।

আঞ্জনি, আঞ্জুনি सं—आँखमेंकी बिलनी।

আঞ্জনেয় (-अ) सं—हनुमान, अंजनी-नन्दन।

আঞ্জাম सं—সরবরাহ जुहाव, अंजाम, अंत।

আঞ্জিনেয় (-अ) सं—টিকটিকি छिपकली; बिलनी। [तरहका एक फल।

আঞ্জির, আঞ্জীর सं—ডুমুর अंजीर, गूलरकी

আঞ্জুমন सं—सभा, समिति, अंजुमन।

আট वि, सं—आठ, ৮। —ই सं—सौर मासकी आठवीं तारीख। আটে কাঠে উঠ্তে নেই, आठवे महीने गर्भिणीको लकड़ीकी गाड़ी नाव आदिमें सवार नहीं होना चाहिये।

আঁট सं—বাঁধুনি बन्धन, दृढ़ता, कसाव; युक्ति (কথার—নাই)। वि—कसा हुआ (বাঁধন —করা)।

আটক सं—बाधा, कैद, अवरोध। वि—अवरुद्ध। —পড়া, —হওয়া क्रि—रहनेमें बाध्य होना, कैद हो जाना। [बदनसीब।

আটকপালে (आट्कपाले) वि—अभागा,

আটকা (आट्का) वि—बाधा-प्राप्त; रहनेमें बाध्य; कैद।

আটকান (आट्कानो), আটকানো (क्रि परि १६)—रोकना, कैद करना; रुक जाना, फँस जाना (দাঁতে কি আটকালো? दाँतोंमें क्या फँस गया?)। দম—, दम घुटना।

আঁটকুড়া, (-ড়ো) वि—नि:सन्तान, बेऔलाद। स्त्री—আঁটকুড়ী।

আটকে (आट्के) स—पुरी-क्षेत्रमें जगन्नाथ-जीके भोगका निर्धारण (-বাঁধা)।

আটকৌড়ে (आट्कउड़े) सं—सन्तानके जन्मसे आठवें दिनका एक उत्सव जिसमें अड़ोस-पड़ोसके बच्चे आकर नव जात शिशुकी बलायें दूर करनेके लिए दौरी सूप आदि पीटते हैं और उन्हें आठ तरहके चबेने बतासे पैसे आदि दिये जाते हैं। [(আহ্লাদে—)।

আটখানা (आट्-) वि—अति - उत्फुल्ल

আটঘাট (आट्घाट्) स—आठों ओर, बाधा विपत्तिके सब ओर (—বাঁধা) [४८।

আটচল্লিশ (आट्चल्लिश) सं, वि—अड़तालीस,

আটচালা (आट-) सं—आठ छप्पर जोड़ कर बनाया हुआ घर।

আটত্রিশ (आट्-) सं, वि—अड़तीस, ३८।

আটপলে (आट्पले) वि—आठकोनिया, आठपहला। [कर सकने वाला।

আটপিটে (आट्-) वि—सहनशील, कष्ट सहन

আটপৌরে (आट्पउरे) वि—आठों पहर पहनने योग्य (वस्त्र); हर समय इस्तेमाल करने लायक (—কাপড়)। [जंगली।

আটবিক (आटबिक) वि—वन-सम्बन्धी,

আটভাজা (आट्भाजा) सं—आठ तरहके चबेने।

আটষট্টি (आट्षट्टि) सं, वि—अड़सट, ६८।

আটা सं—आटा, पिसान, चून, गेहूँका चूर्ण; गोंद, आठ बूटियोंका ताश।

আঁটা (क्रि परि २)—কষা कसना, कसकर बाँधना, जोडना, चिपकाना; समाना, जगह होना (ঘরে এত জিনিষ আঁটে না),

दमन करना (তাকে এঁটে ওঠা দায়)। वि—चिपका हुआ, बन्द (ডিবেটা একেবারে—)।
আঁটাআঁটি सं—कसाव, कसा हुआ बन्धन ; दृढ़ नियम (এত—ভাল নয়)।
আটাইশ, আটাশ सं, वि—अट्ठाइस, २८।
আটাইশে, আটাশে सं—अट्ठाइसवीं तारीख (को)।
আটাত্তর (आटात्तर) सं, वि—अठहत्तर, ७८।
আটানব্বই सं, वि—अट्ठानवे, ९८।
আটান্ন (-अ) सं, वि—अट्ठावन, ५८।
আটাল (-अ) वि=আঠাল। [कसा हुआ।
আঁটাল (-अ), আঁটালো वि—शक्त मजबूत ;
আটাশ सं, वि=আটাইশ।
আটাশি सं, वि—অষ্টাশি अठासी, ८८।
আটাশে स—अट्ठाइसवीं तारीख (को)। वि—गर्भके आठवें महीने पैदा होने वाला (लड़का) ; दुर्बल, कमजोर। [का गुच्छा।
আটি, আঁটি स—तृणादिर গুচ্ছ घास आदि
আটুনি सं—बन्धनकी दृढ़ता (বজ্র—ফস্কা গেরো, खूब कसा पर गाँठ ढीली)।
আটেপিঠে क्रि वि=আষ্টেপৃষ্ঠে।
আঠা सं—गोंद, लेई ; लसदार चीज, आग्रह।
আঠার (-अ) सं, वि—अट्ठारह, १८। —ই सं—सौर मासकी अट्ठारहवीं तारीख (को)।
আঠাল (-अ), আঠালো वि—চটচটে लसलसा, चिपचिपा, गोंददार (—মাটি)।
আঁঠি सं—বড় বীজ बड़ा बिया, गुठली।
আড় सं—আড়াল ओट, परदा ; पार्श्व ; जड़ता, छद्म भाव (কথার—, —ভাঙা) ; चौड़ाई, पनहा (আড়ে বহরে ঠিক আছে) ; कपड़े आदि रखनेके लिए वेड़े लटकाया हुआ बाँस। वि—বাঁকা टेढ़ा (—চোখে, तिरछी नजरसे)। क्रि वि—আড়াআড়ি तिरछे, बेड़ बल।

আড়ং, আড়ঙ্গ (आड़ंग) सं—গোলা, গঞ্জ, হাট मंडी, हाट। [नावसे उतरनेका घाट।
আড়ংঘাট, আড়ঙ্ঘাট। स—नाव पर चढ़ने या
আড়কাট (आड़्) स—शहतीर, धरन।
আড়কাটি, आड़काठि स—कुली संग्रहका दलाल ; नापनेका छड़, जहाज चलाने वाला pilot.
আড়কাঠ सं=আড়কাট। [ताल।
আড়খেমটা (आड़खेमटा) सं—संगीतका एक
আড়গড়া (आड़गड़ा) स—अश्वशाला ; घोड़ा वेचनेवालेका अस्तबल ; कटघरा।
আড়ৎ, আড়ত स—গোলা आढ़त। —দার स—अढ़तिया। —দারি स—अढ़तियेका काम ; अढ़तियेकी दलाली। —দারী वि—अढ़तियेका।
আড়পার स—परला पार, दूसरा तट। क्रि वि—आरपार। [जड़ता हटाना।
আড় ভাঙা क्रि—सीधा करना ; बात या देहकी
আড়ভাবে क्रि वि—वेड़े बल, तिरछे।
আড়মোড়া, আড়ামোড়া स—देहकी जड़ता हटानेके लिए हाथ-पैरोंका विस्तार, अंगड़ाई (—ভাঙা)।
আড়ম্বর स—घटा, জাঁকজমক आडम्बर ; अधिकता, बादलकी गरज।
আড়ষ্ট (-अ) वि—छन्न ; सिकुड़ा हुआ, ठिठुरा हुआ।
আড়া स=আড়কাট।
আড়াআড়ি क्रि वि—আড়ভাবে बेड़े बल, तिरछे। सं—शत्रुता, दुश्मनी ; होड़, प्रतियोगिता।
আড়াই वि—ढाई, २ $\frac{1}{2}$।
আড়াঠেকা स—संगीतका एक ताल।
আড়াল स—অন্তরাল ओट ; परदा ; आवरण।

আড়ালে क्रि वि—ओटमें ; किसीके पीछे (—निन्দা) ; छिपकर ।

আড়ি सं—মনান্তর, চটাচটি मनमुटाव ; झगड़ा ; डाह ; होड़ ; छिप कर श्रवण । —পাতা क्रि—छिपकर सुनना ; सुननेके लिए गुप्त स्थानमें बैठना ।

আড়ে क्रि वि—चौड़ाईकी ओर, बेड़े बल । —হাতে क्रि वि—সজোরে जोरसे, जी-जानसे, आड़े हाथों । —দীঘে क्रि वि—चौड़ाई और लम्बाईमें ।

আড্ডা सं—अड्डा, मिलनेका स्थान, अखाड़ा (কুস্তির—, বদমাইশের—, খেলার—, জুয়ার—)। —ধারী सं—अड्डेका प्रधान आदमी ; अड्डेमें नियमित जाने वाला । [तौल ।

আঢ়ক, আঢ়ি सं—लगभग दो मन अनाजकी

আঢাকা वि—খোলা खुला, उघाड़ा ।

আঢ্য (-अ) वि—सम्पन्न, धनी (ধনাঢ্য) ।

আণব, আণবিক वि—अणु सम्बन्धी (—আকর্ষণ ; —বিপ্রকর্ষণ, molecular repulsion) । আণবিক বোমা सं—अणुबम (गोला) Atom bomb.

আণুবীক্ষণিক (-वीक्खनिक) वि—सूक्ष्म-दर्शन सम्बन्धी miscroscopic.

আণ্ডা सं—ডিম अंडा । —বাচ্চা सं—ছেলেপুলে बालबच्चे ; ছানাপোনা पशुपक्षियोंके बच्चे ।

আণ্ডিল, আণ্ডীল, আণ্ডেল वि—बहुत धनी (টাকার—) ।

আঁত सं—आँत, अन्त्र ; पेट ; हृदय, दिल । আঁতে ঘা দেওয়া क्रि—दिलमें चोट पहुँचाना ।

আঁতকান (आँत्‌कानो), আঁতকানো (क्रि परि १६)—ভয়ে চমকানো डरसे चौंक उठना ।

আতঙ্ক (-अ) सं—भय, डर; शंका ।

আতঙ্কিত (-अ) वि—डरा हुआ, भयभीत ।

আতত (-अ) वि—विस्तृत, फैला हुआ ।

আততায়ী सं—शत्रु, दुश्मन ; गृहदाहक, विषदाता, भूमि दारा और धनका अपहारक, शस्त्रपाणि—ये छः आततायी हैं ।

আতপ सं—রৌদ্র धूप, सूर्य-किरण । —তণ্ডুল सं=আলোচাল । —ত্র (-अ) सं—छत्र, छाता । —রোধী, —সহ (-अ) वि—सूर्यकी किरण न प्रवेश करने वाला sun-proof.

আতর सं—इत्र, पुष्पसार । —দান, —দানি सं—इत्रदान ।

আতশ, আতস सं—अग्नि, आग, उत्ताप, आँच । —বাজি सं—आतशबाजी ।

আতশী वि—আগ্নেয় अग्नि सम्बन्धी, जलता हुआ, आगसा । —কাচ सं—आतशी शीशा जिस पर सूर्य किरणें पड़कर एक केन्द्रमें एकत्र होती हैं और वहाँ उत्ताप या अग्नि उत्पन्न करती हैं burning glass.

আতা सं—शरीफा, सीताफल ।

আতান্তর सं=আথান্তর । [पाटल ।

আতাম্র (-अ) वि—कुछ ताँबेका रंग वाला,

আতালি-পাতালি क्रि वि—ऊपर-नीचे, सर्वत्र ।

আতিক্ত (-अ) वि—कुछ तीता या कडुआ ।

আতিথেয় (-अ) वि—अतिथिका सत्कार करने वाला, मेहमानदार । —তা सं—अतिथिका सत्कार, मेहमानदारी ।

আতিথ্য (-अ) सं—अतिथिका सत्कार, मेहमानदारी, अतिथिको दिया जाने वाला खाद्य । [अलौकिक ।

আতিমানুষিক वि—मनुष्यलोकसे अतीत,

আতিশয্য (-ज्य-अ) सं—आधिक्य, बहुतायत ।

আতু सं—कुत्तेको बुलानेका शब्द ।

আঁতুড় सं—সূতিকাগার सौरी, जच्चाखाना ।

আতুর वि—रोगी, बीमार ; आर्त, कातर । —নিবাস, আতুরাবাস, আতুরালয় सं—হাসপাতাল अस्पताल ।

আতেলা वि—तेल न लगाया हुआ, तैलरहित।

আত্তি सं—ममता, हमदर्दी (सं-আত্তি)।—করণ सं—আহরণ ग्रहण, अपनेमें सम्मिलित करण।

আত্ম (आत्त -अ) वि—आत्मा-सम्बन्धी; अपना, निजका। —কলহ (-अ) सं—गृहविवाद, पारिवारिक झगड़ा; जातिमें वैर। —কৃত (-अ) वि—स्वकृत, अपना किया हुआ। —গত (-अ) वि—स्वगत, आप ही आप; आत्मनिष्ठ। —গরিমা स—घमण्ड, शेखी, गर्व। —গোপন सं—अपनेको या अपने मनके विचारको गुप्त भावसे रक्षण।—গ্লানি सं—অনুতাপ पछतावा।—ঘাত सं—आत्महत्या, खुदकुशी।—ঘাতী वि—आत्महत्याकारी, खुदकुशी करने वाला। स्त्री,—ঘাতিনী। —চিন্তা स—आत्माके विषयमें विचार। —জ सं—पुत्र, बेटा, लड़का, औलाद। स्त्री, —জা। —জ্ঞ (-ज्ञँ-अ) वि—आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञ; अपने गुण दोष स्वभाव आदिका जानने वाला।—জ্ঞান सं—आत्माका ज्ञान, ब्रह्मज्ञान। —তত্ত্ব (-तत्त -अ) सं—आत्माका स्वरूप, आत्मज्ञान। —তুল্য (-अ) वि—अपना-सा, निजके समान।—তুষ্ট (-अ) वि—अपने आत्मानन्दमें मग्न या तृप्त। —তুষ্টি सं—अपने आत्मानन्दमें तृप्ति या सन्तोष। —ত্যাগ स—स्वार्थ-त्याग, अपना बलिदान। —দমন सं—अपनी इन्द्रियोंका संयम। —দর্শন सं—आत्माके स्वरूपका बोध; अपने गुणदोषकी परीक्षा; अन्तर्दर्शन। —দর্শী वि—आत्माका स्वरूप देखने वाला। —দোষ सं—अपना दोष (—দোষ ক্ষালন)।—দ্রোহ (-अ) सं—अपने आदमियोंमें झगड़ा; अपना पीड़न। —নির্ভর वि—अपने ऊपर भरोसा रखने वाला।—নিষ্ঠ (-अ) वि—मैं आत्मा या ब्रह्म ही हूँ ऐसा दृढ़ निश्चय वाला, ब्रह्मनिष्ठ।—পর सं—आप स्वयं और दूसरा; स्वपक्ष और विपक्ष। —পরায়ণ वि—स्वार्थी। —পরিচয় सं—अपना परिचय। —পীড়ন सं—अपने शरीरका पीड़न। —প্রসাদ सं—अपने मनकी तृप्ति। —বৎ वि—अपना-सा। —বন্ধু सं—सगा-सम्बन्धी, इष्टमित्र। —বলি सं—अपना बलिदान। —বশ वि—स्वतन्त्र, स्ववश। सं—आत्मसंयम। —বিক্রয় सं—दूसरेके इच्छाधीन होकर अपनी स्वतन्त्रताका त्याग।—বিচ্ছেদ सं—स्वजनोंसे सम्पर्क-लोप; गृहविवाद।—বিদ্যা सं—आत्मज्ञान, अध्यात्म विद्या, ब्रह्मविद्या। —বিলোপ सं—अपना नाश; आत्महत्या, अपने नाम यश कर्तृत्व आदिका त्याग। —বিস্মরণ (-बिश्शरन्), —বিস্মৃতি (—बिस्स्मृति) सं—अपने अस्तित्व स्वातन्त्र्य गुण योग्यता आदिके स्मरण का अभाव; तन्मयता। —বুদ্ধি सं—आत्मज्ञान; अपनी बुद्धि।—মর্যাদা (-मर्जादा) सं—आत्मसम्मान। —ম্ভরি वि—घमण्डी, स्वार्थी। —শুদ্ধি सं—अपने चित्तकी शुद्धि, अपने दोषोंका परिहार।—শ্লাঘা स—बड़ाई घमण्ड, गर्व, शेखी।—সমর্পণ सं—अधिकारी या शत्रुके हाथ अपने आपका समर्पण।—সম্ভ্রম सं=আত্মমর্যাদা।—সাৎ वि—अपनेमें मिलाया हुआ, गबन किया हुआ।—হত্যা स—खुदकुशी, आत्मघात। —হন্তা सं—आत्मघात करने वाला।—হারা वि—अपना स्वरूप भूल जाने वाला, घबराया हुआ, बदहवास।

আত্মা (आत्ता) सं—आत्मा, जीवात्मा; परमात्मा, ब्रह्म; मन, चित्त; स्वयं, खुद।—ধীন वि—अपने अधीन, स्वतन्त्र।—পরাধ

सं—अपना अपराध, अपना दोष। —পুরুষ सं—आत्मा ; प्राण ; मन। —রাম वि—आत्मानन्दमें तृप्त। सं—प्राण ; मन ; सुग्गा मैना आदि का सम्बोधन।

আত্মীয় (आत्तीय-अ) सं—कुटुम्बी, रिश्तेदार, स्वजन, जातिभाई। स्त्री—আত্মীয়া। —তা सं—रिश्तेदारी, रिश्ता ; स्वजन-सा बर्ताव।

আত্মোৎসর্গ (-अ) सं—स्वार्थ-त्याग ; अपना बलिदान।

আত্মোন্নতি सं—अपनी या अपने मन [की उन्नति।

আত্মোপম वि—अपना-सा, अपने तुल्य।

আত্যন্তিক वि—अत्यन्त अधिक, अशेष।

আত্যয়িক वि—प्राणान्तकारी ; खतरनाक।

আথান্তর सं—सकट, विपत्ति। [पद्यमें)।

আথিবিথি क्रि—ব্যস্ত হইয়া घबराकर (सिर्फ

আদ वि—आधा ; आदि। सं—मूल।

আদত, আদৎ सं—आदत, अभ्यास ; रीति। वि—असली, सत्य, सच्चा ; साबुत।

আদত্ত (-अ) वि—गृहीत, लिया हुआ।

আদব सं—शिष्टाचार, अदब (—কায়দা)।

আদবে, আদপে क्रि वि—एकदम, बिलकुल, मूलमें।

আদম सं—आदम, आदि मानव। —শুমারি सं—मर्दुमशुमारी।

আদর सं—खातिर, कद्र, इज्जत ; श्रद्धा, भक्ति, स्नेह-प्रदर्शन। —ণীয় (-अ) वि—आदर या ग्रहणके योग्य।

আদরা सं—আদল थोड़ा सादृश्य ; चित्रादि बनानेके पूर्वकी अंकित रेखा sketch

আদরিণী सं—आदरकी पात्री, प्रिया।

আদর্শ (-अ) सं—दर्पण ; नमूना ; आदर्श। —স্থানীয় (-अ) वि—आदर्श-रूप। —স্বভাব वि—आदर्श-स्वभाव वाला।

আদল सं—सादृश्य, चेहरेका मेल।

আদা सं—आदी, अदरक। আদায় কাঁচকলায়—आग-फूसका वैर।

আদাড় सं—कूड़ाखाना, कतवारखाना। আদাড়ে वि—कूड़ाखानेका, जंगली (—কচু)।

আদান सं—ग्रहण। —প্রদান सं—दान-प्रतिग्रह, लेन-देन ; विवाह-सम्बन्ध-स्थापन, सामाजिक व्यवहार।

আদাব सं—সেলাম सलाम।

আদায় सं—वसूल, सग्रह (খাজনা—করা)।

আদালত सं—विचारालय, अदालत, कचहरी।

আদালতী वि—न्यायालय-सम्बन्धी,अदालतका।

আদি सं—आदि ; आरम्भ, उत्पत्ति-स्थान। वि—प्राचीन, पुराना (—নিবাস)। —কবি सं—वाल्मीकि। —পুরুষ सं—वंशप्रवर्तक पुरुष। —রস सं—शृंगार रस।

আদিখ্যেতা सं—बनावटी स्नेहका प्रदर्शन।

আদিতেয় (-अ) सं—देवता, अदितिका पुत्र।

আদিত্য (-अ) सं—सूर्य, तपन ; देवता। —মণ্ডল सं—सूर्यका मण्डलाकार गति-पथ या घेरा। [(—জাতি)।

আদিম वि—प्रथम, पहलेका, पुराना, प्राचीन

আদিষ্ট (-अ) वि—आज्ञा-प्राप्त, नियुक्त।

আদুড়, আদুল वि—उघाड़ा, नगा (—গায়ে)।

আদুরে वि—अधिक आदर प्राप्त, मुँह-लगा, सिर-चढ़ा।

আদুল वि=আদুড়।

আদেখা (आदेखा) वि—अदृष्ट, न देखा हुआ।

আদেখলে (आदेखले) वि—হ্যাংলা किसी चीज को देखते ही उसे पानेके लिए अत्यन्त उत्सुक मानो पहले कभी देखा नहीं है ; अति लोभी।

আদেয় (-अ) वि—ग्रहण-योग्य।

আদেশ सं—आज्ञा, हुकुम, अनुमति ; अक्षर-परिवर्तन। —ক, আদেষ্টা वि—हुकुम देनेवाला। —ক্রমে क्रि वि—आदेशानुसार।

আদোৎ वि—समूचा, पूरा।
আদোবে क्रि वि—बिलकुल, एकदम।
আদোল सं—चेहरेका मेल। [बिलकुल।
আদ্যে (आद्दउ) क्रि वि—शुरूमें, पहले , एकदम,
আদ্য (-अ) वि—आदिका, मौलिक ; प्रधान ; उत्कृष्ट ; खाने-योग्य। —কৃত্য, —শ্রাদ্ধ सं—अशौचान्तमें मृतकका प्रथम श्राद्ध। —ন্ত (-अ) क्रि वि—शुरूसे आखिर तक। सं—आदि और अन्त।
আদ্যা स्त्री—दुर्गा, माया, प्रकृति। —শক্তি —मूल प्रकृति, ब्रह्मशक्ति, माया, काली।
আদ্যোপান্ত (-अ) क्रि वि=আদ্যন্ত।
আদ্রক सं—আদা अदरक, आदी।
আধ वि—आधा, अर्द्ध (—পয়সা)। —কপালি, —কপালিয়া, —কপালী, —কপালে (आधक्पाले) सं—अधकपारी, आधासीसी। —খান, —খানা, —খানি स—अर्धांश। वि—अर्ध, आधा। —খেঁচড়া (आधखेँचड़ा) वि—आधा किया हुआ, अधूरा छोड़ा हुआ ; ढीला ; बुरा। —পাগলা वि—পাগলাটে सिड़ी, सनकी। —পেটা वि—आधा-पेट (भोजन) ; अल्प, थोड़ा (खाना)। —পোড়া वि—आधा भूना या जला हुआ। —বুড়, —বুড়ো वि—अधेड़, प्रौढ़। —মরা वि —अर्धमृत, मुमुर्षु।
আধআধ (आध-अ-आध-अ) वि— अस्पष्ट, अपूर्ण (শিশুর —কথা ; —স্বরে)।
আধলা (आध्ला) सं—अधेला।
আধলি, আধুলি सं—अठन्नी।
আধা वि—आधा, अर्ध। —আধি क्रि वि—बराबर दो भागोंमें, आधो आध। —খেঁচড়া वि=আধখেঁচড়া।
আধান सं—ग्रहण , धरोहर, रेहन ; रक्षण।
আধার सं—आधार ; पात्र, बरतन ; चिड़ियोंके द्वारा अपने बच्चोंके मुँहमें दिया जाने वाला खाद्य।
আঁধার सं—अँधेरा, अस्पष्टता, धुँधलापन। वि—अंधकारमय (—রাত।)
আঁধারে सं—चोर पकड़नेके लिए पुलिसके सिपाहीकी अँधेरी लालटेन।
আধি सं—आफत, दुःख ; घबराहट, व्याकुलता।
আঁধি सं—ঝড়, ঝটিকা आँधी।
আধিকারিক सं—अफसर, अधिकारी व्यक्ति।
আধিক্য (-अ) सं—अधिकता , श्रेष्ठता ; वृद्धि।
আধিক্যতা, (-খ্যেতা) सं—বাড়াবাড়ি स्नेह-प्रकाशकी अधिकता, मुँह लगाना।
আধিদৈবিক वि—देवता-सम्बन्धी ; अतिवृष्टि अनावृष्टि भूकम्प आदि सम्बन्धी ; आकस्मिक।
আধিপত্য (-अ) सं—प्रभुत्व, अधिपति होने का भाव या अवस्था, शासन।
আধিভোগ सं—धरोहर रखी हुई चीज या सम्पत्तिका भोग।
আধিভৌতিক वि—पचभूत या जीव जन्तु सम्बन्धी। —দুঃখ सं—बाघ भालू साँप चोर आदिसे दुःख। [केन्द्रीय focal
আধিশ্রয়ণিক वि—केन्द्र-सम्बन्धी, ज्योतिः-
আধুলি सं—अठन्नी।
আধৃত (-अ) वि—धृत, गृहीत।
আধেক वि—অর্দ্ধেক आधा, अर्ध।
আধেয় (-अ) सं—भीतर या ऊपरकी वस्तु। वि—धारण-योग्य, रेहन रखने योग्य।
আধোওয়া, আধোয়া वि—बिना धोया।
আধ্মাত (आद्धात-अ) वि—वायुसे फूला हुआ (पेट), अफरा ; ध्वनित ; दग्ध। सं—शब्द ; स्फीति, अफराव।
আধ্মান (आद्धान्) सं—सूजन, स्फीति, अफराव ; वृद्धि (উদরাধ্মান, वायुसे उदर-स्फीति)।

আধ্যাত্মিক (आध्यात्तिक) वि—आत्मा या ब्रह्म सम्बन्धी ; मानसिक ; शारीरिक । —দুঃখ सं—शारीरिक रोगादि जनित दुःख ।

আন वि—अन्य, दूसरा। क्रि वि—अन्यथा, दूसरी ओर। सं—साँस।

আন (आनो) क्रि—लाओ।

আনকোরা (आन्-) वि—एकदम कोरा, नया, बिना धोया (—কাপড়)।

আনচান (आन्-) वि—অস্থির बेचैन ; उत्सुक।

আনত (-अ) वि—थोड़ा झुका हुआ, नत ; विनीत ; वशीभूत ; नीचा। —তল सं—नतोदर सतह concave surface.

আনতি सं—प्रणाम, सलाम।

আনদ্ধ (-अ) वि—बद्ध, बँधा हुआ, बन्द।

আনন सं—मुख, मुँह ; चेहरा ; आनयन, लाना। [व्यवधान-राहित्य, समीपता।

আনন্তর্য (-र्य -अ) सं—अव्यवधान,

আনন্ত্য (-अ) सं—सीमा-शून्यता, अनन्तता।

আনন্দোচ্ছ্বাস (-च्छ्वास) सं—आनन्दका उल्लास, खुशीका उमग।

আনমনা (आन्-) वि=অন্যমনস্ক।

আনমিত (-अ) वि—झुका हुआ, नत, प्रणत।

আনম্র (-अ) वि—नम्र, विनयी ; प्रणत।

আনয়ন सं—आनयन, लाना।

আনা (क्रि परि २) —लाना, ले आना। सं—आना, चार पैसे ; षोडशांश, सोलहवाँ भाग (এক —জমিদারীর মালিক)। [जाना।

আনাগোনা सं—गमनागमन, बार बार आना-

আনাচ-কানাচ सं—घरके आसपासके गुप्त स्थान। [अनाज।

আনাজ सं—শাকসবজি सबजी, तरकारी ;

আনাড়ি, (-ड़ी) वि—अनाड़ी, मूर्ख।

আনান (-नो), আনানো (क्रि परि १०) —मंगवाना, दूसरेके द्वारा लाना।

আনামৎ क्रि वि—ज्योंका त्यों, अविकल।

আনার सं—ডালিম अनार, दाड़िम।

আনারস सं —अनन्नास, एक फल pine-apple.

আনি, আনী सं—একানি एकन्नी।

আনীত (-अ) वि—लाया हुआ।

আনীল वि—कुछ नीला, काला-सा।

আনু (कूल्य) (-अ) सं—मदद, सहायता, दया, अनुग्रह, उपकार। —গত্য (-अ) सं—बाध्यता, वश्यता ; अधीनता। —পাতিক वि—अनुपातके विचारसे ठीक proportional —পূর্ব্বিক क्रि वि—यथाक्रम, शुरूसे, सिलसिलेवार। —মানিক वि—अन्दाजसे निश्चित, सम्भाव्य। —ষঙ্গিক वि—प्रासगिक, साथ वाला, मूल विषयके साथ सम्बद्ध।

আনেতা वि—लाने वाला, मंगानेवाला।

আন্তর वि—भीतरी, अन्दरूनी।

আন্তরিক वि—सरल, भोला, निष्कपट, दिली, हार्दिक, भीतरी। —তা सं—सरलता, सहृदयता।

আন্তর্জাতিক वि—संसारकी सारी जातियोंके साथ सम्बन्धित international

আন্ত্রিক वि—आँत-सम्बन्धी ; हार्दिक।

আন্দাজ सं—अन्दाज, अनुमान। আন্দাজী वि—आनुमानिक, अन्दाजसे निश्चित। क्रि वि—अन्दाजसे। আন্দাজে क्रि वि—अन्दाजसे।

আন্দেশা सं—विचार, ध्यान, सन्देह, अन्देशा।

আন্দোলন सं—हलचल, उथल-पुथल करने वाला प्रयत्न। আন্দোলিত (-अ) वि—कम्पित, हिलाया-झुलाया, उथल-पुथल मचाया हुआ।

আন্মনা (आन्मना) वि=অন্যমনস্ক।

আপ सर्व—आप। सं—जल, पानी।

আপক্ক (आपक्क -अ) वि—आधा पका, आधा पकाया या सिझाया हुआ।

আপগা सं—सोता, नदी।
আপঢ় वि—अशिक्षित, अनपढ़; अपठित।
আপণ सं—विपणि, দোকান दूकान, बाजार।
আপণিক सं—दूकानदार, बनिया; दूकान परका शुल्क। वि—दूकान-सम्बन्धी।
আপতন सं—पतन; आगमन, दुर्घटना, सलाम, प्रणाम। আপতিত (-अ) वि—पतित, आगत, सघटित।
আপত্তি सं—इतराज, असम्मति; विपत्ति; दुःख। —কর वि—आपत्ति-जनक, इतराजके लायक। [स्वीकृत कुछ अधर्म-कार्य।
আপদ্ধর্ম (-अ) सं—विपत्ति-कालमें धर्मरूपसे
আপন वि—निजका, अपना, खास, व्यक्तिगत। —কার, আপনার वि – आपका, भवदीय।
আপনা (आप्ना) सं—स्वयं, खुद (—হইতে)। —আপনি क्रि वि—নিজে নিজেই अपने आप, स्वतः, स्वयं; खुद। सं—मित्र, कुटुम्बी (—আপনির মধ্যে)। —কে सर्व—आपको; निजको। —র सर्व—आपका, निजका (—কাজ ভুলিও না)। —হইতে सर्व—अपने आपसे, स्वत.।
আপনি सर्व—आप। सं—स्वयं, खुद। क्रि वि—अपने आप (দোর—খুলিবে)। [दुःखी।
আপন্ন (-अ) वि—प्राप्त; ग्रस्त (দুঃখাপন্ন);
আপরাহ্ণিক वि—तीसरे पहरका।
আপশোস सं—अफसोस, पछतावा, खेद, दु.ख।
আপস (आपश) सं—आपस, निपटारा मीमांसा।
আপাং, আপাঙ্গ सं—अपामार्ग, चिरचिरा।
আপাকা वि—अपक्क, थोड़ा पका; कच्चा।
আপাত (-अ) क्रि वि—तत्काल, उसी समय। सं—वर्तमान समय; पतन। वि—ऊपरसे देखनेमें (—মনোহর)। —দৃষ্টিতে क्रि वि—ऊपरसे देखनेमें।
আপাতত, (-तः) क्रि वि—এখন अब, इस समयके लिए, फिलहाल (—যাইতে পার)।
আপাদ क्रि वि—পা পর্য্যন্ত पैर तक; पैरसे (—মস্তক, पैरसे सिर तक)।
আপামর क्रि वि—पामर तक, छोटेसे बड़े तक, ऊचसे नीच तक (—জনসাধারণ)।
আপিঙ্গল वि—कुछ पीला, भूरा, खैरा।
আপিল, আপীল सं—अपील appeal.
আপিস, আফিস सं—आफिस, दफ्तर office
আপীড়ন सं—निपीড়ন मर्दन, मसलना, निचोड़ना, क्लेशदान, पीड़न।. আপীড়িত (-अ) वि—निचोड़ा हुआ; आलिंगित; पीड़ित। [पिया हुआ।
আপীত (-अ) वि—कुछ पीला, पीला-सा;
আপেক্ষিক (आपेक्खिक) वि—अपेक्षाकृत, सापेक्ष, तुलनाकृत। —গুরুত্ব सं—विशिष्ट गुरुत्व specific gravity —ঘনত্ব सं—विशिष्ट ठोसपन relative density. —তা सं—सापेक्षता, तुलनात्मकता relativity.
আপেল सं—सेव, एक फल apple
আপোস सं—आपस; निपटारा। আপোসে क्रि वि—आपसमें, मित्रभावसे मिलकर।
আপ্ত (-अ) वि—प्राप्त; अभ्रान्त, जिसे कभी भ्रम न हो (—বাক্য, ऋषिवाक्य)। सं—कुटुम्बी (—জন)। वि—अपना (—গরজী, खुदगर्ज)।
আপ্তি सं—प्राप्ति, योग्यता, मेल।
আপ্য (-अ) वि—प्राप्य, पाने योग्य।
আপ্যায়ন सं—सन्तोष; स्वागत, अभ्यर्थना। আপ্যায়িত (-अ) सं—सन्तोषित, अभ्यर्थित; स्वागत किया हुआ।
আপ্রাণ क्रि वि—प्राण न्योछावर कर, जी-जान से (—চেষ্টা)।
আপ্লাবন, আপ্লব सं—प्लावन, बाढ़।

আপ্লুত (-अ) वि—प्लावित, सिक्त, तराबोर; नहाया हुआ।

আফগান सं—अफगान, काबुली।

আফসোস सं=আপশোষ।

অফিং, আফিম सं—অহিফেন अफीम।

আব (आव्) सं—অর্ব্বুদ गिलटी, बतौरी tumour. —ওয়াব (-वाब) सं—आववाब, मालगुजारीसे अधिक शुल्क जो जमींदार रिआयेसे वसूल करते थे। —কার सं—शराब आदि नशीली चीज बनाने वाला, आबकार। —কারি सं—आबकारी महकमा; आबकारी शुल्क। —কারী वि—आबकारी महकमा या शुल्क सम्बन्धी।

আবছা (आवृछा), আবছায়া सं—अँधेरेमें अस्पष्ट छाया, भूत।

আবডাল (आब्डाल) सं=আড়াল।

আবড়া-খাবড়া (आब्ड़ा-खाब्ड़ा) वि—এবড়ো-খেবড়ো, বন্ধুর ऊँचानीचा, खुरदरा, असमान।

আবদার (आव्दार) स—बाग्रना किसी चीजके पानेके लिए, बच्चों या स्त्रियोंका अत्यन्त अनुरोध या जिद। আবদারে, আবদেরে वि—अन्याय अनुरोध या जिद करने वाला (बच्चा या स्त्री), जिद्दी।

আবদ্ধ (-अ) वि—अटका बँधा रोका या फँसा हुआ; रेहन रखा हुआ।

আবলুস स—एक प्रकारका पेड़ जिसके भीतर की लकड़ी बहुत काली होती है, आवनूस।

আবরক वि—ढांकने वाला। सं—ढक्कन।

আবরণ स—आच्छादन, पट, परदा; ढक्कन, ढाल; घेरा; दीवार। —শক্তি सं—अज्ञान की वह शक्ति जिससे वस्तुका यथार्थ स्वरूप नहीं दिखाई पड़ता, जैसा कि, रस्सी में सांप, सीपमें चाँदी या मरुस्थलमें जल का भान होते समय होता है। আবরণীয় (-अ) वि—ढाँकने योग्य। আবরিত (-अ) वि—ढका, आवृत; गुप्त।

আবরু (आबरु) सं—आबरू, सम्मान, इज्जत; सुशीलता; सतीत्व; गुप्तता; परदा।

আবর্জ্জনা सं—জঞ্জাল कूड़ा कतवार; बुहारन; तुच्छ वस्तुएँ।

আবর্ত্ত (-अ) सं—चक्कर; भँवर; कुण्डली (জলাবর্ত্ত, भँवर)। —ক वि—घुमाने वाला। —ঘর্ষণ सं—घूमनेसे घर्षण या रगड़। —ন घुमाव, चक्कर, चक्राकार भ्रमण; प्रत्यावर्तन; हिलाव। —নীয় (-अ) वि—घुमाने दुहराने लौटाने या हिलाने के योग्य। —মান वि—घूमने वाला; घमता हुआ। আবর্ত্তিত (-अ) वि—घूमा या घुमाया हुआ। আবর্ত্তী वि—घूमकर आया हुआ, लौटा हुआ; दुहराया हुआ।

আবল-তাবল सं, वि=আবোল-তাবোল।

আবলি, আবলী स—श्रेणी, पंक्ति, पाँति; समूह (নিয়মাবলী, প্রশ্নাবলী, বংশাবলী, বাক্যাবলী)।

আবলুস सं=আবলুস। [ऊँचाई।

আবল্য (-अ) सं—दुर्बलता, कमजोरी,

আবশ্যক वि—आवश्यक, जरूरी। सं—प्रयोजन, जरूरत। আবশ্যকীয় (-अ) वि—দরকারী प्रयोजनीय, जरूरी।

আবস্থা (आवस्था) सं—असुविधा; मुसीबत।

আবহ (-अ) सं—आवहवा। वि—लाने वाला, ढोने वाला; पैदा करने वाला (ভয়াবহ, डरावना; দুঃখাবহ, दुखदायी)। —চিত্র सं—आवहवाका नकशा weather chart.

আবহমান वि—सनातन, सदासे चलने वाला।

আবহাওয়া सं—आवहवा; वायुमण्डल।

আবাগী वि—হতভাগিনী भाग्यहीना, बदनसीब (औरत) (गाली)।

আবাদ सं—চাষ খেতী, কৃষি; जोती हुई जमीन; बस्ती। वि—बसा हुआ। আবাদী वि—जोतने योग्य; जोती हुई (जमीन)।

আবার क्रि वि—পুনর্বার पुन, फिर, दुबारा, और भी (যদ—পেটের অসুখ); सन्देहमें (সে—গান গাইবে! यानी गाना गाने को योग्यता उसमें क्या है?)

আবালবৃদ্ধ (-अ) वि—बालक वृद्ध सभी।—বনিতা सं—बालक वृद्ध स्त्री सभी।

আবাল্য (-अ) क्रि वि—বাল্যাবধি बचपनसे।

আবাস सं—বাসস্থান, वास रहनेका मकान, घर; स्थिति। আবাসিক वि, स—वाशिन्दा, रहनेवाला।

আবাহন सं—आह्वान, बुलाहट, निमन्त्रण।

আবাহনী स—स्वागत-संगीत, एक मुद्रा या अंगुलि-विन्यास। वि—आवाहन-सम्बन्धी।

আবির্ভাব (आविर्भाव) सं—आविर्भाव, उदय, प्रकाश, प्राकट्य, अवतरण। वि—আবির্ভূত।

আবিল वि—ঘোলা गन्दला, मैला, दूषित।

আবিষ্ট (-अ) वि—एकाग्र, तन्मय, निविष्ट; व्याप्त (বিস্ময়াবিষ্ট, ভয়াবিষ্ট)।

আবীর, আবির सं—লাল रंगीन बुकनी, अबीर।

আবু सं—पिता, बाप। [गुप्त।

আবৃত (आवृत -अ) वि—ढंका, आच्छादित;

আবৃত্ত (-अ) वि—प्रत्यावृत्त, लौटा हुआ; पठित; अभ्यस्त; आगत। আবৃত্তি सं—बार बार पठन, आवृत्ति; पुस्तकका पुनः मुद्रित संस्करण (পুনরাবৃত্তি)।

আবেগ (आवेग) सं—বড় शीघ्रता; प्रबल मनोवेग, विकलता, घबराहट (শোকাবেগ)।

আবেদক स, वि—प्रार्थी, दरखास्त देनेवाला; अभियोक्ता। আবেদন सं—प्रार्थना, निवेदन; दरखास्त; अभियोग।

আবেদিত (-अ) वि—प्रार्थित, निवेदित, याचित।

আবেশ सं—आवेश, अभिनिवेश, मनोयोग, एकाग्रता, प्रवेश; आसक्ति; संचार (নিদ্রাবেশ); मृगी रोग, भूत-प्रेतकी बाधा। —ন सं—प्रवेश; भूतावेश; कोप; शिल्पशाला, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल।

আবেষ্টক सं—घेरा, दीवार, चहारदीवारी।

আবেষ্টন स—वेष्टन, घेरने या ढंकनेका कार्य या पदार्थ, पारिपार्श्विक अवस्था।

আবোল-তাবোল वि, सं—अंड-बंड, अनाप-शनाप, ऊटपटांग। [जीविका।

আভরণ सं—गहना, भूषण, अलंकार, सजावट;

আভা स—शोभा, कान्ति, ज्योति; चमक-दमक; झलक; छाया; किरण; तुल्यता।

আভাণক सं—प्रवाद, कहावत।

আভাষ सं—भाषण, बातचीत; भूमिका। —ণ सं—भाषण, अभिभाषण; कहावत।

আভাস सं—प्रतिबिम्ब, परछाईं, छाया (মুখাভাস, চিত্তাভাস); इशारा, अस्पष्ट प्रकाश, आशय, अर्थ, इच्छा।

আভিজাত্য (-अ) स—कुलीनता, उच्च वंश की मर्यादा, ऊँचे खानदानका घमंड, पाण्डित्य, विद्वत्ता।

আভিধানিক वि—शब्दकोशका, शब्दकोश-सम्बन्धी। [मदद।

আভিমুখ্য (-अ) स—अभिमुख होनेका भाव;

আভীর सं—গোপ, গয়লা ग्वाला, अहीर।

আভুগ্ন (-अ) वि—ঈষৎ বক্র कुछ टेढ़ा; सिकुड़ा हुआ। [चेष्टा।

আভোগ सं—पूर्ण भोग, आनन्दका उपभोग;

আভ্যন্তর, আভ্যন্তরিক, আভ্যন্তরীণ वि—भीतरी, भीतरका, मध्यवर्त्ती। [प्रथानुयायी।

আভ্যাসিক वि—अभ्यासशील; व्यवहारिक;

আভ্যুদয়িক वि—अभ्युदय-जनक, उन्नति-साधक। सं—विवाहके पूर्व वर-वधूके मंगलार्थ अनुष्ठित शास्त्रीय कृत्य।

আম वि—অপক্ব, কাঁচা कच्चा; साधारण; आम। सं—आम फल, आँव, श्लेष्मा; आमातिसार।

আম আদা सं—अद्रक-सी एक जड़ जिससे कच्चे आमकी सुगन्ध आती है, यह खटाई पकानेके काममें आती है।

আমড়া सं—अमड़ा, एक खट्टा फल Hog-plum

আমড়াগাছি सं—খোসামোদ खुशामद।

আমতা-আমতা (-आमृता) করা क्रि—हाँ या नहीं साफ साफ न कहना, अस्पष्ट स्वीकार करना, कहनेमें दुबिधा करना; आनाकानी करना।

আমদানী सं—आमदनी।

আমন वि—হৈমন্তিক हेमन्त ऋतुका।—ধান सं—हेमन्त ऋतुमें पकने वाला धान।

আমন্ত্রণ सं—निमन्त्रण, न्योता। আমন্ত্রিত (-अ) वि—निमन्त्रित। [दुलपित्ती।

আমবাত सं—खुजली-सा एक चर्मरोग,

আমমাংস सं—कच्चा मांस।

আমমোক্তার सं—आममुख्तार।

আময় सं—रोग, व्याधि, बीमारी (নিরাময়, উদরাময়)। আময়িক वि—रोग-सम्बन्धी।

আময়দা (आमयदा) वि—দেদার, অপর্য্যাপ্ত बहुतायत, बहुत, अधिक।

আমরক্ত (-अ) सं—रक्तातिसार। [तक।

আমরণ, আমরণান্ত, আমৃত্যু क्रि वि—मृत्यु

আমরা (आम्‌रा) सर्व—हम, हमलोग।

আমরি, আহা মরি अव्य—हर्ष या विस्मय सूचक शब्द, बहुत अच्छा! शाबाश!

আমরুল सं—एक खट्टा शाक sorrel.

আমর্শ (-अ) सं—स्पर्श; उपदेश।

আমর্ষ (-अ) सं—क्रोध, गुस्सा। আমর্ষণ सं—क्रोध; घर्षण, रगड़, मर्दन।

আমল सं—राज्याधिकारका समय (नवाबी—, মাক্কাতার—); अधिकार, दखल, अमल (আমলে আনা—कार्यमें परिणत करना, उपयोगमें लाना)। —দস্তক सं—दखलका हुकुमनामा। —দার सं—शासक; शुल्क उगाहने वाला कर्मचारी। —দারী सं—शासन; शुल्कका उगाहना। —নামা सं—अधिकार-पत्र, दखलका हुकुमनामा।

আমলকি (आमलकि) सं—आँवला।

আমলা सं—अमला, कर्मचारी; आँवला।—তন্ত্র (-अ) सं—नौकरशाही।

আমশূল सं—शूल-दर्द।

আমসত্ত (-अ) सं—अमावट।

আমসি (आम्‌सि) सं—अमचूर, कच्चे आमके सुखाये हुए कतरे।

আমা सर्व—मुझ (—দ্বারা, —কে, —হইতে)। वि—आधा जला; न जलाया हुआ।

আমাকে, আমায় सर्व—मुझे, मुझको।

আমাতিসার सं—अतिसार, पेचिश।

আমাদিগকে सर्व—हमे, हमलोगोंको।

আমাদিগের, আমাদের सर्व—हमारा, हमलोगोंका।

আমানত सं—अमानत, धरोहर।

আমানি सं—भिगोये हुए बासी भातका जल।

আমান্ন (-अ) सं—कच्चा अन्न, चावल।

আমায় सं—मुझे, मुझको।

আমার सर्व—मेरा।

আমাশয়, আমাশা सं—आमाशय; पेटसे आँव गिरनेका रोग।

আমি सर्व—मैं। [कर्मचारी।

আমিন, আমীন सं—अमीन, भूमि नापने वाला

আমির, আমীর सं—अमीर, शरीफ

আদমী (-জাদ)। আমিরী वि—अमीराना (—চাল)।

আমিষ सं—माँस माँस मछली आदि खाद्य वस्तु (—ভোজন, —ভোজী)। আমিষাশী वि—माँस मछली आदि खाने वाला।

আমীন सं=আমিন।

আমীর सं—আমির।

আমুক্তি क्रि वि—मुक्ति तक। सं—मुक्ति, मोक्ष।

আমুদে वि—आमोदप्रिय, खुशदिल, रसिक।

আমুষ্মিক (आमुष्मिक) वि—पारलौकिक।

আমূল क्रि वि—मूल तक, समूल; शुरूसे; पूर्णतया।

আমৃত্যু क्रि वि—আমরণ मृत्यु तक।

আমেজ सं—मिश्रण; छाया, आभास; हल्का असर (নেশার—)।

আমোদ सं—आनन्द, कौतुक, उत्सव, मजा, सुगन्ध। (—আহ্লাদ, —জনক, —প্রমোদ, —প্রিয়)। আমোদিত (-अ) वि—आनन्दित; सुगन्धित। আমোদী वि—আমুদে रसिक, आमोदप्रिय; सुगन्धित।

আম্পিয়ার सं—बिजली-धाराकी एकाई ampere

আম্বুরী তামাক सं—सुगन्धित तम्बाखू।

আম্মা स्त्री—अम्मा, माँ, माता।

আম্র (-अ) सं—आम फल, रसाल।

আয় सं—आय, आमदनी; लाभ। —কর सं—आमदनी पर शुल्क Income-tax

আয়ত (-अ) वि—विस्तृत, फैला हुआ; लम्बा-चौड़ा। —न सं—मकान, घर, गृह, वासस्थान, ठहरनेकी जगह; मन्दिर (দেবায়তন); समाई, जगह; परिमाण; विस्तार (—মাপক—Volumenometer)। —লোচন, আয়তাক্ষী (—অক্ষী) स्त्री—विस्तृत नेत्रोंवाली।

আয়তি सं—এয়োতি सौभाग्यवती या सधवा की अवस्था; सधवाका लक्षण या चिह्न।

আয়তী सं—এয়ো सधवा, सौभाग्यवती।

আয়ত্ত (-अ) वि—अधीन, वशमें; अधिकृत; शिक्षासे प्राप्त (সাধ্যায়ত্ত, साध्य, किया जाने योग्य। আয়ত্তের বাহিরে क्रि वि—अधिकार या शक्तिसे बाहर)। [प्यार; सीमा।

আয়ত্তি सं—अधीनता, वश, शक्ति;

আয়ন-বায়ু सं—मौसमी हवा Trade-winds

আয়না सं—दर्पण, शीशा, आईना।

আয়ন্দা, আয়েন্দা क्रि वि—आइंदा, भविष्यमें।

আয়স वि—लोहेका। सं—लोहा।

আয়া स्त्री—आया, मेमकी नौकरानी।

আয়ান सं—आगमन। [(প্রাণায়াম)।

আয়াম सं—समय, काल,; विस्तार

আয়াস सं—चेष्टा, प्रयत्न (—সাধ্য); कष्ट (—স্বীকার করা)।

আয়ী स्त्री=আই। [जीवन-काल।

আয়ুঃ, আয়ু सं—आयु, उमर, वयस,

আয়ুধ सं—अस्त्र, शस्त्र, हथियार (আয়ুধাগার)।

আয়ুর্ব্যান্ন (-अ) सं=আইবড়ভাত। [साधक।

আয়ুষ্কর वि—उमर बढ़ाने वाला, दीर्घायु-

আয়ুষ্কাল सं—जीवन-काल।

আয়ুষ্মান (आयुष्मान) वि—दीर्घजीवी।

আয়ুষ্য (-ष्य-अ) वि =আয়ুষ্কর।

আয়েন্দা क्रि वि—आइंदा।

আয়েশ सं—आराम, सुख, ऐश, विलास।

আয়েশী वि—ऐशी, आरामतलब।

আয়োজক वि, सं—आयोजन करने वाला, प्रबन्धक। আয়োজন सं—प्रबन्ध, तैयारी, उद्योग (খাবার—)। আয়োজিত (-अ) वि—आयोजन किया हुआ, सगृहीत।

আয়োডিন सं—आयोडिन Iodine

আর अव्य—और (তুমি—আমি, —কিছু,

—খাব না); फिर, पुनः (—আসিও না); या, अथवा (তুমি যাও— না যাও); कभी (টাকা কি—অমনি আসে ?)। वि—दूसरा (—একটা দাও); गत (—মাসে)। আর, আর वि—अन्यान्य, दूसरे दूसरे। আরও, আরো क्रि वि—और भी।

আরক सं—अर्क, सिर्का tincture.

আরক্ত (-अ) वि—लाल ; आसक्त।

আরক্তিম वि—कुछ लाल, लाल।

আরজ सं—अर्ज, विनती, प्रार्थना।

আরজি, আরজী, আর্জী सं—अर्जी, दरखास्त।

আরণ্য (-अ) वि—जंगली, वन्य।

আরতি सं—आरती, दीप-प्रदर्शन।

আরদালী सं—अरदली orderly

আরবী वि—अरबी, अरब-सम्बन्धी। सं—अरबी भाषा। আরব্য (-अ) वि—अरब का (আরব্যোপন্যাস)।

আরব্ধ (-अ, वि—शुरु या आरम्भ किया हुआ।

আরভমাণ वि—जिसका आरम्भ हो गया है।

আরমানী वि—अर्मानी Armenian

আরম্ভ (-अ) सं—आरम्भ, शुरू, प्रथम प्रयत्न ; सूचना, भूमिका ; क्रिया, कार्य ; त्वरा।

আরশি, আর্শি सं=আয়না।

আরশুল, (—শুলা, —শোলা, —সোলা) सं—তেলাপোকা तिलचट्टा cockroach

আরাধক सं, वि—उपासक, सेवक। আরাধন, আরাধনা सं—उपासना, पूजा ; प्रार्थना। আরাধনীয় (-अ) वि- उपास्य, उपासनाके योग्य। আরাধিত (-अ) वि—उपासित, पूजित। আরাধ্য (-अ) वि=আরাধনীয়। আরাধ্যমান वि—जिसकी आराधना की जा रही है।

আরাম सं—আয়েশ ऐश, विलास ; सुख, आरोग्य (রোগ—হইয়াছে) ; बाग। —কেদারা, —চৌকী सं—आरामकुर्सी।

আরূঢ় (-अ) वि—चढ़ा हुआ, सवार।

আরে अव्य—अरे! विस्मय घृणा क्रोध आदि भावसूचक अव्यय (—এ কি ? —গেল বা, —গাধা)।

আরো क्रि वि=আরও। [तदुरुस्ती।

আরোগ্য (-अ) सं—आरोग्य, स्वस्थता,

আরোপ सं—स्थापन, अभियोग ; दोषारोप ; एकके गुण या दोषकी दूसरे पर कल्पना। —ণ सं—রোপণ पौधा आदिका लगाना जमाना या बैठाना ; स्थापन ; आरोप। আরোপিত (-अ) वि—स्थापित ; लगाया या रोपा हुआ।

আরোহ (-अ) सं—चढ़ाव, चढ़ाई, सवारी ; विकास ; सीढ़ी, निसेनी। —ণ सं—चढ़ना, सवार होना, चढ़ाव। —ণী सं—সিঁড়ি, মই सीढ़ी, निसेनी। আরোহী सं, वि—सवार ; यात्री ; चढ़ने वाला। [चुटिया।

আর্ক ফলা सं—रेफका चिह्न ; (दिल्लगीमें)

আর্জ্জব सं—सरलता, निष्कपटता, भोलापन।

আর্ট सं—शिल्प-कला (—স্কুল) ; साहित्य (—কলেজ) ; साहित्यमें रस-सृष्टि, रसात्मक रचना। আর্টিষ্ট सं—शिल्पी ; साहित्यकार।

আর্ত্ত (-अ) वि—विपन्न दुःखी, क्लेशित (क्षुधार्त्त, —নাদ) ; रुग्ण, बीमार। —স্বরে क्रि वि—दुःखपूर्ण स्वरसे।

আর্ত্তব वि—ऋतु-सम्बन्धी, मासिक धर्मका। सं—मासिक धर्म ; ऋतुस्राव।

আর্ত্তি सं—बीमारी ; दुःख, क्लेश ; मानसिक कष्ट।

আর্থিক वि—धन-सम्बन्धी, माली।

আর্দালী, আর্দ্দালী सं=আরদালী।

আর্দ্র (-अ) वि—भींगा, तर, गीला ; कोमल (দয়ার্দ্র)। —তা सं—भींगापन, गीलापन, नमी, तरी।

আর্য্য (आर्य्य -अ) वि—आय, कुलीन, सभ्य।

सं—प्रभु; पति। —পুত্র (-अ) सं—पति, स्वामी, शौहर; गुरुपुत्र।

আর্শি, আর্সি सं=আয়না। [প্রয়োগ]।

আর্ষ (-अ) वि—ऋषिका ऋषि-प्रोक्त (—

আর্হত (-अ) सं—বৌদ্ধ बौद्ध; জৈন जैन; তীর্থঙ্কর तीर्थकर।

আল सं—আলি मेंड़; হুল डंक; काँटा।

আলো (आलो), আলো सं—प्रकाश, आलोक रोशनी, ওলো सखी-सम्बोधन (—সই)।

আলওয়ান सं=আলোয়ান।

আলকাতরা (आल्कात्रा) सं—अलकतरा।

আলখাল্লা, (-ল্লা) (आल्—) सं—अंगरखा, चपकान।

আলগা (आल्गा) वि—ढीला (—বাঁধা, —বাঁধ); खुला, उघाड़ा (মুখ—রাখিও না); पृथक्, अलग (আমার খাবার—রাখিও)। —দেওয়া क्रि—शिथिल करना; बचा रहना। —মুখ वि—बदजबान, अश्लील-भाषी।

আলগোছ (आल्गोछ) वि—अलग, पृथक; न छूकर (আলগোছে তুলিয়া আন)। আলগোছে খাওয়া क्रि—होंठ न छू जाय ऐसे पीना या खाना।

আলচাল (-লো-) सं=আলোচাল।

আলজিভ, (-ভ) सं—गलेका कौआ uvula

আলতা (आल्ता) सं—অলক্তক अलत्ता (—পরা)। [रखनेका लकड़ीका ढांचा।

আলনা (आल्ना) सं—वस्त्रादि लटकाये

আলপনা (आल्पना) सं—जमीन फर्श या पीढ़े पर मांगलिक चित्रकारी। [alpaca

আলপাকা (आल्-) सं—एक पशमी वस्त्र

আলপিন (आल्-) सं—पिन pin

আলবত (आल्वत्) क्रि वि—अवश्य, जरूर।

আলবলা (आल्वला) सं—लम्बा नल वाली फरसी।

আলবাল (आल्वाल) सं—पानी देनेके लिए पेड़के चारों ओरका मेंड़, आलवाल।

আলমারি (आल-) सं—अलमारी।

আলম্ব (-अ), আলম্বন सं—अवलम्बन, आश्रय, सहारा। আলম্বিত (-अ) वि—अवलम्बित, आश्रित, रक्षित। আলম্বী वि—आश्रय या सहारा लेने वाला।

আলম্ভ (-अ) वि—वध, देवताके सामने पशुबलि, हत्या, कत्ल; आलिंगन; युद्ध।

আলয় सं—घर, मकान, वासस्थान (দেবালয়, বিদ্যালয়, যমালয়, লোকালয়)।

আলসে (आल्से) वि—কুঁড়ে आलसी। —মি सं—কুঁড়েমি आलसीपन, सुस्ती, आलस्य-परायणता।

আলস্য सं—কুঁড়েমি आलस, आलस्य, सुस्ती। —ত্যাগ सं—গা-ভাঙা अंगड़ाई, হাই जम्हाई। —বশত क्रि वि—आलस्यके कारण, सुस्तीसे।

আলা वि—वाला (জজ—, सब-जज, विचारपति, जिलाधीश। বাড়ী—, मकानदार, गृहस्वामी, मालिक। তরকারী—, तरकारी-फरोश।

আলাই सं—बला, मुसीबत, आफत। —বালাই सं—हर तरहकी आफतें, बलाएँ।

আলাত सं—लकड़ीका जलता कोयला।

আলাদা वि—अलाहिदा, पृथक, भिन्न।

আলান सं—हाथी बाँधनेका खूँटा या रस्सा।

আলান (-নো), আলানো (क्रि परि १०)—ক্লান্ত করানো थकाना; নষ্ট করানো नष्ट कराना।

আলাপ सं—बातचीत, आलाप; परिचय (তার সঙ্গে আমার—আছে)। —পরিচয় सं—मेल-मुलाकात, जान-पहचान। —ন सं—आलाप-करण, बातचीत। আলাপী वि—परिचित, मुलाकाती; मिलनसार। [ফলান)।

আলাল वि—दौलतमन्द, धनी (আলালের ঘরের

আলাহিদা, আলাহিদা वि=আলাদা।

আলি, আলী सं—आल मेंड़; सखी, सहेली, श्रेणी, पाँति; भौंरा।

আলিংগন, আলিঙ্গন सं—आलिंगन। আলিংগিত, আলিঙ্গিত (-अ) वि—आलिंगन किया हुआ, छातीसे लगाया हुआ।

আলিঞ্জর सं—जाला मिट्टीका कुंडा, बड़ा मटका।

আলিন্দ (-अ) सं—मकानके सामने वाला बाहरी बरामदा या चबूतरा।

আলিপনা, আলিম্পন सं=আলপনা।

আলিসা, আলসে (आल्शे) सं—छत परकी किनारे वाली दीवार; दीवारसे बाहर निकला हुआ छतके पास वाला किनारा, कारनीस cornice.

আলী सं=আলি।

আলু सं—आलू (গোল—, গোলালু, শাকালু)। —থালু वि—बिखरा हुआ, खुला, न संवारा हुआ (—কেশ, —বেশ)। —নী वि—विना नमक का, लवण-रहित, फीका (खाद्य पदार्थ)। —বোখারা सं—आलूबुखारा। —লায়িত (-अ) वि—এলানো मुक्त, खुला (-কেশ)।

আলেখ্য (-अ) सं—चित्र, प्रतिरूप, चित्रित मूर्त्ति, तसवीर। वि—लिखनेके योग्य।

আলেম वि—विद्वान, পণ্ডিত।

আলেয়া सं—दलदलमें उत्पन्न होने वाला जगमाता प्रकाश will-o-the-wisp, marsh gas.

আলো स—प्रकाश, ज्योति, रोशनी, दीया, लालटेन। আলোয় আলোয় क्रि वि—दिन का प्रकाश रहते रहते। —আঁধারি सं—आधी छाया आधा प्रकाश, धूप छाँह।

আলো अव्य—ওলো सखी-सम्बोधन (—সই)।

আলোক सं—प्रकाश, रोशनी, ज्ञान। উদীচ্যালোক सं—उत्तर-ध्रुवकी प्रकाश-धारा, उत्तरी मेरु-ज्योति Aurora Borealis. সূর্য্যালোক सं—सूर्यका प्रकाश। —গৃহ (-अ) सं—रोशनी-घर, समुद्रमें प्रकाश-स्तम्भ Light-house. —চিত্র (-अ) सं—अक्सी तसवीर Photograph —চিত্রণ सं—अक्सी तसवीर खींचनेकी कला Photography. —বিজ্ঞান, —বিদ্যা सं—प्रकाश-विज्ञान optics —স্তম্ভ (-अ) सं—रोशनी-घर, Light-house.

আলোকিত (-अ) वि—प्रकाशित, रोशन।

আলোচক वि—आलोचना करने वाला।

আলোচনা सं—आलोचना, चर्चा; जाँच।

আলোচনীয় (-अ), আলোচ্য (-अ) वि—आलोचनाके योग्य। আলোচিত (-अ) वि—समालोचित; परीक्षित, पठित।

আলোচাল सं—आतप তণ্ডুল अरवा चावल।

আলোড়ক वि—मथने वाला, हिलाने वाला।

আলোড়ন सं—मन्थन, हिलाव, आन्दोलन, मिश्रण (মস্তিষ্ক—করা, दिमाग लड़ाना)।

আলোনা वि—बिना नमकका, बिस्वाद, फीका।

আলোয়ান सं—अलवान, पशमी चादर।

আলোহিত (-अ) वि—कुछ लाल।

আল্লা सं—अल्लाह, खुदा, ईश्वर।

আশ सं—आशा, वासना, इच्छा; भोजन।

আঁশ सं=আঁইশ।

আশংসা सं—आशा, प्रतीक्षा, इच्छा; सम्भावना। আশংসিত (-अ) वि—इच्छित; सम्भावित।

আশক वि—आशिक, प्रेमी।

আশকারা (आश्-) सं—प्रश्रय बच्चों या स्त्रियों की अनुचित जिद का पूरा करना, मुँह लगाना, सिर चढ़ाना over-indulgence

আশঙ্কনীয় (-अ) वि—शंकाके योग्य; भयानक।

আশঙ্কা स—शका, भय, डर; सन्देह। —ঙ্কিত (-अ) वि—शंका-युक्त, डरा हुआ, भयभीत।

আশনাই সং—পরিচয় परिचय, जानपहचान, आशनाई, प्रेम, इश्क।
আশপাশ क्रि वि—आसपास, इर्दगिर्द।
আশপাশে, আশে পাশে क्रि वि—आसपास।
আশরফি, আশর্ফি सं—মোহর मुहर, अशर्फी।
আশা सं—आशा, आकांक्षा; भरोसा (—করা, —দেওয়া, —রাখা), गदा, आसा, चोपदारका डंडा। —তিরিক্ত (-अ), —তীত (-अ) वि—आशासे अधिक। —নুরূপ वि—आशाके अनुरूप। —ন্বিত (-अ) वि—आशायुक्त, आशापूर्ण। —পথ सं—आशाकी राह (—চাহিয়া থাকা)। —ভঙ্গ (-अ) सं—आशाका टूटना, हताशा, नैराश्य। —ভরসা सं—आशा-भरोसा। —সোঁটা सं—आसा, गदा, चोपदारका डंडा।
আশি, আশী सं, वि—अस्सी, ८०।
আশীবিষ सं—सर्प साँप।
আশীর্বচন, আশীর্বাদ सं—आशिष, दुआ।
আশীর্বাদক वि, स—आशिष देनेवाला।
আশু वि—शीघ्र, तुरन्त (—তোষ, महादेव)। —গ (-अ) स—वाण, तीर; वायु। वि—तेज दौड़ने वाला। —ধান্য (-अ) सं—আউশ ধান भाद्र-आश्विनमें पकने वाला धान।
আশৈশব क्रि वि—बचपनसे।
আশ্চর্য (आश्चर्य -अ) स—आश्चर्य, अचम्भा, विस्मय, ताज्जुब (সে—হইয়াছে, वह आश्चर्यान्वित हुआ है)। वि—आश्चर्यजनक।
আশ্ব (आश्व -अ) सं—अश्व-शक्ति Horse-power. [उत्साहित।
আশ্বস্ত (आश्वास्त -अ) वि—ढाढ़स-प्राप्त,
আশ্বাসন (आश्वाशन) सं—तसल्ली, ढाढ़स, सान्त्वना।
আশ্বিন (आश्शिन) सं—आश्विन, कुआर।
আশ্রম (आस्सम) सं—आश्रम; तपोवन। —পীড়া सं—आश्रम या तपोवनमें अशान्ति।
আশ্রয় (आस्सय) सं—आश्रय, आधार, सहारा; शरण, पनाह, घर, निवासस्थान। —ণীয় (-अ) वि—आश्रय ग्रहण करनेके योग्य, ग्रहणीय। —পুষ্ট (-अ) वि—किसीके आश्रयसे पुष्ट।
আশ্রিত (आस्तित -अ) वि—आश्रित, किसीके आश्रयमें रहनेवाला। —বৎসল वि—आश्रितों पर कृपालु। —বাৎসল্য (-अ) सं—आश्रितों पर कृपा।
আশ্লিষ্ট (-अ) वि—आलिंगित, गले लगाया हुआ। আশ্লেষ स—आलिंगन; संयोग।
আষ সं=আমিষ।
আষাঢ় सं—असाढ़।
আষাঢ়ে वि—वर्षा-ऋतुका; लम्बा, खतम न होने वाला। —গল্প स—वृथा गपशप; कल्पित कहानी।
আষ্টে-পৃষ্ঠে क्रि वि—আটে-পিঠে आठों अंगोंमें, सारे शरीरमें; सब ओरसे।
আসওয়ার (आसवार) स—सवार, अश्वारोही।
আসক্ত (-अ) वि—अनुरक्त, मोहित। আসক্তি सं—आसक्ति, अनुरक्ति, लगन, चाह, प्रेम।
আসঙ্গ (आशग -अ) स—मिलन, संयोग; भोग (-লিপ্সা)। [(—মাসে)।
আসছে (आश्छे) वि—आगामी, आने वाला
আসত্তি स—समीपता; मिलन; लाभ।
আসন स—आसन, चौकी, चटाई; स्थिति। —পিঁড়ি सं—पैरके ऊपर पैर रख कर बैठनेका एक ढंग, पलथी।
আসন্ন (-अ) वि—समीपस्थ, निकटका। —কাল सं—मृत्युका समय। —প্রসবা वि स्त्री—जिस स्त्री या स्त्री-पशुका अभी प्रसव होने वाला हो।

আসব (आशव) सं—शराब, मदिरा, ताड़ी। आসবিক वि—मदिरा-सम्बन्धी।

আসমুদ্র (-अ) क्रि वि—समुद्र तक, समुद्र-सहित।

আসর सं—सभास्थान, मजलिस; नाट्यालय, रंगमच। —গরম করা क्रि—सभामें जोशीला भाषण देना। —জমা क्रि—सभा भर जाना, सभा पर प्रभाव पड़ना। আসরে নামা क्रि—रंगमच पर उतरना।

আসল वि—मूल, असल, यथार्थ, खरा, सत्य। सं—मूलधन, पूँजी। —কথা सं—असली बात, सत्य घटना, सार तत्त्व। আসলে क्रि वि—एकदम, बिलकुल; असलमें, यथार्थतः।

আসা (आशा) (क्रि परि २) —आना, उपस्थित होना; हाजिर होना (বাহিরে—, স্কুলে—), अभ्यास रहना (নাকানো আসে না), उपयोगी होना (নেকড়াও সময়ে কাজে আসে)। सं—आना, आगमन (যাওয়া আসাই সার, जाना-आना निरर्थक है)।

আসান सं—आराम, शान्ति, सुगमता, विश्राम; रिहाई, समाप्ति (মুস্কিল—)। वि—सहज, आसान।

আসামী सं—अपराधी, मुजरिम; कर्जदार आदमी; आसाम देशकी भाषा; आसाम देशका निवासी। [प्रवाह (নয়ন—)।

আসার सं—वृष्टिপাত बारिश; जलधारा जलका

আসীন वि—बैठा हुआ, उपविष्ट (সুখাসীন)।

আসুর, আসুরিক वि—असुरका, असुर-सम्बन्धी, जंगली; निर्दयी।

আসোয়ার सं—सवार, अश्वारोही।

আস্কারা (आस्कारा) सं=आশকারা।

আস্কে (आस्के) सं—পিষ্টকবিশেষ एक तरहका पिष्टक जो पानीमें घोले हुए चावल-चूर्णको सेंक कर पकाया जाता है।

আস্ত (आस्त -अ) वि—অখণ্ড, গোটা साबूत, अखण्ड (—মাউ); निरा (—বোকা)।

আস্তর (आस्तर) सं—अस्तर; पलस्तर; बिछौनेकी चादर।

আস্তরণ (आस्तरन) सं—बिछावन, बिछौने की चादर; कालीन गालीचा आदि।

আস্তানা (आस्ताना) सं—अस्ताना, आश्रम।

আস্তাবল (आस्ताबल) सं—अस्तबल, तबेला।

আস্তিন (आस्तिन) सं—आस्तीन; बाँह; बाँहका कपड़ा (—গুটাইয়া মারিতে উদ্যত)।

আস্তীর্ণ (आस्तीर्न -अ), আস্তৃত (-अ) वि—विस्तृत, फैला हुआ, बिखेरा हुआ।

আস্তে (आस्ते) क्रि वि—ধীরে धीरे, आहिस्ता। —ব্যস্তে क्रि वि—हड़बड़ीके साथ। —সুস্থে क्रि वि—धीरे धीरे, आरामसे, फुरसतमें।

আস্থা (आस्था) सं—विश्वास, श्रद्धा, भरोसा, निष्ठा। [प्राप्त।

আস্থিত (आस्थित-अ) वि—विस्तृत, स्थापित;

আস্পদ (आश्पद) स—पात्र (স্নেহাস্পদ, প্রেমাস্পদ), स्थान, जगह, आधार।

আস্পর্দ্ধা (आश्पर्धा) सं—स्पर्धा, गर्व, घमण्ड, ढिठाई, ललकार, प्रतिद्वन्द्विता।

আস্ফালন (आश्फालन) स—दम्भ, घमण्ड; ललकार।

আস্ফোট (आश्फोट) सं—एक हाथसे दूसरी बाँह पर चपेट जिससे जोरका शब्द निकले; आघातका शब्द।

আস্বাদ (आस्शाद) सं—स्वाद, मजा। —ন सं—स्वाद ग्रहण, सुखानुभव। —নীয় (-अ) वि—स्वाद ग्रहण योग्य। আস্বাদিত (-अ) वि—स्वाद गृहीत, चाखा हुआ। আস্বাদু वि—स्वादिष्ट, मीठा।

আস্য (आश्य-अ) सं—मुह, मुख, चेहरा (পূর্বাস্যে, पूरबकी ओर मुख रख कर)।

আহত (-अ) वि—घायल, आहत, ध्वनित, गुणीकृत (বজ্রাহত वि—बिजलीसे घायल। বাতাহত वि—हवाका मारा। মর্মাহত वि—हृदयमें चोट लगा हुआ)।

আহব सं—युद्ध, लड़ाई; होम, हवन। —নীয় (-अ) वि—हवन करनेके योग्य। सं—होमाग्नि।

আহরণ सं—संग्रह, ग्रहण। আহরণীয় (-अ) वि—संग्रह करने योग्य। আহর্তা वि, सं—संग्रह करने वाला।

আহা अव्य—हाय, अहा, आहा (—করা, दुःख या शोक प्रकट करना)। —মরি अव्य—क्या खूब! कैसा सुन्दर!

আহাম্মক वि—अहमक, बेवकूफ (বেহদ্দ—)।

আহাম্মকি सं—बेवकूफी, मूर्खता। [আহাম্মকভাবে)।

আহার सं—खाद्य, भोजन, खाना (—বিহার,

আহার্য (आहार्य्य-अ) सं—खाद्य वस्तु खानेकी चीज। वि—खाने योग्य, संग्रहणीय।

আহিত (-अ) वि—स्थापित, संलग्न, आसक्त, अनुरक्त।

আহিতুণ্ডিক सं—সাপুড়ে सँपेरा, मदारी।

আহীর सं—अहीर, ग्वाला।

আহুত (-अ) वि—हवनमें प्रदत्त, उत्सर्गीकृत।

আহুতি सं—आहुति, होम, हवन (ঘৃতাহুতি)।

আহূত (-अ) वि—निमन्त्रित (অনাহূত, अनिमन्त्रित। রবাহূত, शब्द सुनकर आगत)।

আহৃত (आहृत-अ) वि—संगृहीत, एकत्रित, घृत।

আহ্নিক (आह्निक) वि—दैनिक, रोजाना। —কৃত্য सं—नित्यकर्म, सन्ध्या-वन्दन पूजा-पाठ आदि।

আহ্বান (आह्वान) सं—बुलाहट, निमन्त्रण; पुकार। আহ্বায়ক वि—बुलाने वाला; ललकारने वाला।

আহ্লাদ (आह्लाद) सं—आनन्द, हर्ष (আহ্লাদে আটখানা, अत्यन्त आनन्दके कारण आपेसे बाहर); लाड़ दुलार (ছেলেকে বেশী—দিও না, सिर न चढ़ाओ)। আহ্লাদিত (-अ) वि—आनन्दित, उत्फुल्ल, खुश। আহ্লাদী वि—आनन्दित। सं—आराम-तलब विलासी मोटी औरत; दुलारी स्त्री। আহ্লাদে वि—अधिक आदर प्राप्त, दुलारा, सिर-चढ़ा (—কানাই, —গোপাল)।

ই

ই अव्य—ही, सिर्फ, केवल (তোমাকেই, तुमको ही); निश्चय (আমি যাইবই যাইব); शायद (নইলেই বা)।

ইউনানী वि—यूनानी।

ইউরেশিয়ান सं—यूरेशियन, फिरंगी Eurasian.

ইংরাজ, ইংরেজ सं—अंग्रेज। ইংরাজী, ইংরেজি, ইংরেজী सं—अंग्रेजी भाषा। वि—अंग्रेजी, अंग्रेज-सम्बन्धी।

ইঃ अव्य—विस्मय दुःख अधीरता आदि भाव-[सूचक शब्द।

ইক্ষু (इक्षु) सं—আখ ऊख, गन्ना।

ইঙ্গবঙ্গ (-अ) सं—अंग्रेजोंकी चाल-ढालकी नकल करने वाले बंगाली।

ইঙ্গিত सं—ইশারা इशारा, संकेत। ইঙ্গিতে क्रि वि—इशारेसे।

ইঁচড় सं—এঁচড় कच्चा कटहल। ইঁচড়ে পাকা वि—छोटी अवस्थामें पका, अकालपक्व; बचपनमें बूढ़ों सा बर्ताव या बात करने वाला।

ইচ্ছা, ইচ্ছে सं—इच्छा, अभिलाषा, आकांक्षा, चाह; पसन्द; रुचि, प्रवृत्ति, आग्रह। যা—তাই, যাচ্ছেতাই, स्वेच्छासे जो कुछ किया या कहा जाय, तुच्छ या निकम्मी चीज या बात, जो मनमें आवे वह। —কৃত (-अ)

वि—स्वेच्छासे कृत। —क्रमে क्रि वि—स्वेच्छासे, इच्छानुसार। —নুযায়ী क्रि वि=ইচ্ছানুসারে। —নুরূপ वि—इच्छाके अनुरूप, जैसा चाहिये वैसा। —নুসারে क्रि वि—इच्छानुसार। —পত্র (-अ) सं—वसीयतनामा। —মরণ, —মৃত্যু सं—आत्मघात; स्वेच्छासे मृत्यु। —য়ুক্ত (-अ) वि—इच्छाधीन।

ইচ্ছু, ইচ্ছুক वि—इच्छुक, चाहने वाला, प्रार्थी।

ইজার, ইজের सं—पायजामा, जांघिया।

ইজারা सं—इजारा, पट्टा।

ইজ্য (-अ) वि—पूज्य, माननीय।

ইঞ্চি सं—इंच inch.

ইঞ্জিন सं—अंजन Engine

ইঞ্জিনিয়ার सं—इंजीनीयर Engineer

ইট सं—ईंट, ईंटा। —খোলা सं—ईंटा बनाने का स्थान। —পাটকেল सं—ईंटके टुकडे।

ইতর वि—निम्न श्रेणीका (—লোক), नीच (—প্রকৃতি); दूसरा, अन्य (বামেতর, दक्षिण, दाहिनी दिशा)। —তা, —পনা सं—नीचता, इतरपन, कमीनापन। —বিশেষ सं—तारतम्य, भेद, पार्थक्य।

ইতরেতর वि—परस्पर।

ইতঃপূর্ব্বে क्रि वि—ইতিপূর্ব্বে इससे पहले।

ইতস্তত (-अ), ইতস্ততঃ क्रि वि—इधर उधर, चारों ओर। सं—दुविधा, संशय।

ইতি क्रि वि—ऐसे, इस तरह, इसके लिए। सं—इति, समाप्ति (—করা क्रि—समाप्त करना)। —কথা सं—कहानी, कथा, इतिहास। —কর্ত্তব্য (-अ) सं—करने योग्य काम, कर्तव्य। —পূর্ব্বে क्रि वि—ইতঃপূর্ব্বে इससे पहले। —বৃত্ত (-अ) सं—इतिहास, वृत्तान्त। —মধ্যে, ইতোমধ্যে क्रि वि—इस समयके भीतर, इतनेमें। —হাস सं—इतिहास, कहानी।

ইত্যবসরে क्रि वि=ইতিমধ্যে।

ইত্যাকার वि—इस प्रकारका, ऐसा। [और भी।

ইত্যাদি क्रि वि—प्रभृति आदि, इस प्रकार

ইথে क्रि वि—ইহাতে इसमें।

ইদানীং क्रि वि—आजकल, इन दिनों, अब।

ইদানীন্তন वि—आजकलका, आधुनिक।

ইঁদারা, ইন্দারা सं—इन्दारा, कुआँ।

ইঁদুর सं—चूहा, मूस (নেংটে—सं—चुहिया)।

ইনি सर्व—(सम्मानित) यह व्यक्ति, आप (—জমিদার, आप जमींदार हैं)।

ইন্দারা सं=ইঁদারা।

ইন্দিবর सं—नील कमल।

ইন্দু सं—चन्द्रमा, कपूर। —নিভানন सं—चन्द्रवदन।

ইন্দুর सं=ইঁদুর।

ইন্দ্রজাল सं—इन्द्रजाल, माया, जादू।

ইন্দ্রিয় (-अ) सं—इन्द्रिय—श्रोत्र त्वक् चक्षु जिह्वा घ्राण ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं; वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ ये पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं, मन बुद्धि चित्त अहंकार ये चार अन्तरिन्द्रियाँ यानी अन्त करणकी वृत्तियाँ हैं। [आदि; उसकाहट।

ইন্ধন सं—ईन्धन, जलानेकी लकड़ी कोयला

ইয়ত্তা सं—सीमा, परिमाण, संख्या।

ইয়াদ सं—याद, स्मरण।

ইয়ার सं—यार, दोस्त, रसिक। —कि (-यार्कि), ইয়ার্কি सं—रसिकता, हँसी-दिल्लगी, यारोंके साथ गन्दी बातोंकी चर्चा (—দেওয়া)।

ইয়ারিং सं—माकडि, कानकी बाली ear-ring.

ইয়ে अव्य—विस्मृत शब्दके बदले इस शब्दका प्रयोग करते हैं (তুমি এরূপ অশ্লীল গালি

দাও তোমার জিভের কি একটুও—নেই, यहाँ ইয়ে माने संयम या लगाम)।

ইরম্মদ सं—বিদ্যুৎ बिजली, वज्र।

ইরান सं—ईरान, फारस Persia ইরানী सं—ईरानी। वि—फारसका।

ইলিশ सं—हिल्सा मछली।

ইলেক सं—रुपया पैसा मन सेर आदि लिखनेका चिह्न जैसे ৫, ⅃। एक पैसा या ५ गण्डे ; ১৲, ১৲, एक रुपया ; २/, ২৲, दो मन आदि। [सूचक शब्द।

ইশ, ইস अव्य—विस्मय दुःख या क्लेश

ইশাদি, ইশাদী सं—साक्षी गवाह।

ইষু सं—बाण, तीर, शर। [पूज्य, प्रिय।

ইষ্ট (-अ) वि—इष्ट, इच्छित, आकांक्षित ; ইষ্টক सं=ইট। [अपने पक्षके अनुकूल युक्ति।

ইষ্টাপত্তি सं—इष्ट वस्तुकी प्राप्ति ; लाभ ;

ইস अव्य=ইশ।

ইসবগুল सं—इसबगोल।

ইসলাম (इस्लाम) सं—इस्लाम ; मुसलमान। ইসলামী वि—इस्लामका, मुसलमानी।

ইসাদি सं=ইশাদি। [(—১লা নাগাইদ ২০শে)।

ইস্তক (इस्तक) क्रि वि—तक, पर्यन्त ; से

ইস্তাহার सं—इश्तिहार, विज्ञापन।

ইস্তিরি, ইস্ত্রি सं—इस्तरी।

ইস্পাত (इस्पात) सं—फौलाद।

ইস্পার (इस्पार) क्रि वि—इस पार (—কি ওস্পার, इस पार या उस पार ; कुछ भी क्यों न हो)।

ইহ (-अ) क्रि वि—এই यह ; यहाँ ; इस संसारमें। —কাল सं—यह जन्म। —লোক सं—यह लोक, यह ससार।

ইহা सर्व—यह। ইহাকে सर्व—इसे, इसको। ইহাতে सर्व—इसमें, इस पर। ইহাদিগকে, ইহাদিগের सर्व—इन लोगोंको। ইহার सर्व—इसका। ইহারা सर्व—ये लोग। ইঁহারা सर्व—ये (सम्मानित) लोग।

ইহুদী सं—यहूदी।

ঈ

ঈক্ষণ (इक्षन) सं—দৃষ্টি दर्शन। ঈক্ষিত (-अ) वि—দৃষ্ট दृष्ट, देखा हुआ। ঈক্ষিতা सं—দ্রষ্টা द्रष्टा।

ঈগল सं—उकाब।

ঈড্য (-अ) वि—प्रशंसा-योग्य ; पूज्य। [स्थान।

ঈদগা सं—ईदगाह, सम्मिलित नमाज पढ़नेका

ঈপ্সা (ईप्सा) सं—इच्छा, लालच, लोभ। ঈপ্সিত (-अ) वि—प्रार्थित, वांछित, आकांक्षित। ঈপ্সু वि—पानेके इच्छुक (জনেপ্সু)।

ঈরিত (-अ) वि—कथित, प्रेरित ; निक्षिप्त।

ঈর্ষা, ঈর্ষ্যা सं—डाह, शत्रुता। —নল सं—डाहकी जलन। —ন্বিত (-अ) वि—डाही, ईर्षालु। —বশ, —পরতন্ত্র, —পর, —পরবশ वि—ईर्षालु, डाही। —বশতঃ क्रि वि—ईर्षावश। [প্রাণেশ)।

ঈশ सं—ईश्वर, शिव ; प्रभु, राजा (দুর্গেশ,

ঈশা सं—যিশুখ্রীষ্ট ईसा-मसीह।

ঈশ্বর (ईश्वर) सं—खुदा, सृष्टिकर्ता, सृजनहार ; राजा, प्रभु (রাজ্যেশ্বর) ; ৺ ऐसा चिह्न जो मृत व्यक्ति या देवताके नामके पहले लिखा और 'ईश्वर' ऐसा पढ़ा जाता है (৺চন্দ্রনাথ বসু, শ্রীশ্রী৺কালীমাতা ভরসা)। —ভীরু वि—ईश्वरसे डरने वाला, धार्मिक। ঈশ্বরেচ্ছায় क्रि वि—ईश्वरकी इच्छासे।

ঈষৎ वि—थोड़ा, कुछ, जरा सा।

ঈষদুষ্ণ (-अ) वि—गुनगुना, थोड़ा गरम।

ঈষদূন वि—थोड़ा कम, थोड़ा अपूर्ण।

ঈষদ্ধাস্য (-अ) सं—मुसकान, हल्की हँसी।

ঈষন্মাত্র (ईशन्मात्र-अ) वि—बहुत थोड़ा, थोड़ा सा ।
ঈষিকা सं—तूलि बालोंकी कलम ।
ঈহা सं—इच्छा, अभिलाषा ; चेष्टा, प्रयत्न ।

উ

উই सं—दीमक । —ঢিবি सं—दीमकोंका बनाया हुआ टीला या ढूह जिसके भीतर वे घर बना कर रहते हैं, वल्मीक, बाँबी ।
উইল सं—इच्छा-पत्र, वसीयतनामा ।
উঃ अव्य—विस्मय क्रोध दुःख या अधीरता सूचक शब्द ।
উঁকি सं—झाँक, ताक-झाँक, छिप कर देखने की क्रिया । —মারা क्रि—झाँकना । —ঝুঁকি सं—ताक-झाँक ।
উকিল सं—वकील ; पक्ष करने वाला ।
উকুন सं—जूँ जो केशोंमें पैदा होता है, चीलर ।
উক্ত (-अ) वि—उक्त, कथित (উপরোক্ত) ।
উক্তি सं—कथन, कथित वाक्य, उक्ति ।
উক্ষা (उक्खा) सं—बैल, वृष, साँड़ ।
উখড়ান (उखड़ानो), উখড়ানো (क्रि परि १८) —उखाड़ना ।
উখল, উখলি सं—उदूखल ओखली ।
উখা सं—রেতি रेती ।
উগরান (उगरानो), উগরানো (क्रि परि १८) —বমি করা के करना । উগরাইয়া চিবানো क्रि—पागुर करना, जुगाली करना ।
উগ্র (-अ) वि—उग्र, तेज, उत्कट, तीव्र, प्रचंड । —কর্মা वि—खतरनाक काम करने वाला, भयंकर ; निर्दयी । —প্রকৃতি वि—क्रोधी । —বীর্য্য (-अ) वि—तीव्र शक्ति युक्त, तेज । —ক্ষত্রিয় (-अ) सं=আগুরী ।
উচা, উঁচা, উঁচু वि—ऊँचा ।
উচাটন सं—उत्कंठा, बेचैनी, व्याकुलता, घबराहट । वि—व्याकुल ।
উচান (-नो), উচানো (क्रि परि १२ —मारनेके लिए उठाना (লাঠি—) । [ठीक ।
উচিত वि—उचित, वाजिब, मुनासिब, योग्य,
উচু वि—উঁচা ऊँचा, उच्च ।
উচোট सं—হোঁচট ठोकर ।
উচ্চ (-अ) वि—উঁচা ऊँचा, उन्नत ; तेज, बुलन्द (—মূল্য, —কণ্ঠ) । —বাচ্য (-अ) सं—ऊँचा शब्द, प्रतिवाद, आवाज । —রোল सं—चिल्लाहट, हल्ला ।
উচ্চাবচ वि—ऊँचूनिचू खुरदरा ।
উচ্চারণ सं—उच्चारण, वाक्य कथन । উচ্চারণীয় (-अ), উচ্চার্য্য (-र्ज-अ) वि—उच्चारण करने योग्य ।
উচ্চাশয় वि—उदारचेता, महाशय ।
উচ্চিংড়া, উচ্চিংড়ে सं—झींगुर-सा एक फतिंगा ।
উচ্চৈঃস্বরে (उच्चइस्शरे) क्रि वि—ऊँची आवाजसे ।
উচ্ছন্ন (-अ) वि—উৎসন্ন बरबाद (ছেলেটা—গেছে, आवारा हो गया है) । [हुआ ; फूला हुआ ।
উচ্ছলিত (-अ) वि—उछाला हुआ ; छलकता
উচ্ছিন্ন (-अ) वि—उजाड़, नष्ट, बरबाद ।
উচ্ছিষ্ট (-अ) सं—এঁটো जूठा (सभी कच्ची रसोई उच्छिष्ट मानी जाती है, इस अर्थमें कि उसके छूनेसे हाथ धोना पड़ता है) ।
উচ্ছৃঙ্খল वि—এলোমেলো विशृंखल, आवारा, स्वेच्छाचारी ।
উচ্ছে सं—छोटा करेला । [বাড়ী—করিয়াছে) ।
উচ্ছেদ सं—समूल ध्वंस, नाश, बरबादी (घर-
উচ্ছ্বসিত (उच्छ्वशित-अ) वि—उत्फुल्ल, उमंगसे उछलता हुआ ।
উচ্ছ্বাস (उच्छाश) स—विकास, उल्लास, भावावेग ।
উছলিত (-अ) वि=উচ্ছলিত ।

উজবুক, -বুগ (उज़बुग) वि—उजबक, मूर्ख, बेवकूफ।

উজ্জল वि—উজ্জ্বল उज्ज्वल।

উজান सं—नदीमें प्रवाहकी विरुद्ध दिशा। —ভাটি सं—জোয়ার-ভাটা ज्वार-भाटा; प्रवाहके अनुकूल और प्रतिकूल दिशा।

উজাড় वि—उजाड़, ध्वस्त, उच्छिन्न। सं—उजाड़ स्थान।

উজির सं—वजीर, मन्त्री। [आपत्ति, बहाना।

উজুহাত, (-হত) सं—उज्रदारी, लिखित

উজ্জীবিত (-অ) वि—सजीवित, जिलाया हुआ।

উঞ্ছ (-অ) सं—अन्नके छोड़े हुए दाने चुन लेनेका काम, हीन नीच या तुच्छ आजीविका (—বৃত্তি)।

উট सं—उष्ट्र ऊट।

উটকান (उट्कानो), উটকানো, ওটকান (-नो), ওটকানো (क्रि परि १८) —चीजों को उलट-पलट कर खोजना।

উটকো (उट्को) वि—अनजान, अपरिचित, अज्ञात; अनोखा; आवारा।

উটজ सं—झोंपड़ी, कुटी, घास-फूसका घर। —শিল্প सं—कुटीर-शिल्प।

উটপাখী सं—शुतुरमुर्ग।

উঠতি (उठ्ति) सं—वृद्धि, उन्नति। वि—बढ़ने वाला (—বয়স, जवानी)।

উঠন सं—উঠান आंगन, सहन।

উঠন্ত (-অ) वि—उगने वाला उठने वाला।

উঠ-বস করা क्रि—उठ-बैठ व्यायाम करना, उठना और बैठना।

উঠা, ওঠা (क्रि परि ३) —उठना, जागना; चढ़ना, उगना (ধানের চারা উঠিয়াছে; পোঁক ওঠে নাই); गिरना, झड़ना (চুল উঠিয়া গিয়াছে); छोड़ना (এ বাড়ী হইতে উঠিয়া যাইব)।

উঠাউঠি क्रि वि—बारबार; क्रमशः; लगातार।

উঠান (-नो), উঠানো, ওঠান (-नो), ওঠানো (क्रि परि १२) —उठाना, जगाना; चढ़ाना; गायब करना, निकाल देना; खड़ा करना, उल्लेख करना (ওকথা এখন উঠিও না)।

উঠান, উঠন सं—दालान आंगन, सहन।

উঠানামা सं—चढ़ना-उतरना।

উঠাপড়া सं—उठना-गिरना। উঠেপড়ে লাগা क्रि—कमर कसकर लगना, जी-जानसे कोशिश करना। [वाला।

উড়তি (उड़्ति), উড়ন্ত (-অ) वि—उड़ने

উড়ন सं—उड्डयन, उड़नेकी क्रिया।

উড়নচড়ে (उड़न्चड़े), উড়নচণ্ডে वि—रुपवाही फिजुलखर्च। स्त्री—উড়নচণ্ডী।

উড়নী (उड़्नी) सं—ओढ़नी, चादर।

উড়ন্ত (-অ) वि—उड़ने वाला।

উড়া, ওড়া (क्रि परि ६)—उड़ना; जल्दी जल्दी जाना; गायब होना (গরু উড়িয়া গিয়াছে)।

উড়া, উড়ো वि—उड़ती (—খবর, अफवाह); उड़ने वाला (উড়ো জাহাজ)।

উড়ান (-नो); উড়ানো, ওড়ান (-नो), ওড়ানো (क्रि परि १२)—उड़ाना; गायब करना; अंधाधुंध खर्च करना (বাপের টাকা এভাবে উড়াইলে ক' দিন থাকিবে?)

উড়ানি, উড়নি, (-नी) स—ओढ़नी, चादर।

উড়িয়া, উড়ে स—उड़िया, उड़िसा-निवासी; उड़िया भाषा।

উড়িষ্যা सं—उड़िसा देश। [(মন—করে)।

উড়ু উড়ু वि—उड़ने या भागनेके लिए तैयार

উড্ডীন वि—उड़ सकने वाला।

উড়নী सं=উড়ানি।

উডুম্বর, উদুম্বর सं—डुमुर गूलर।

উড়ে सं=উড়িয়া।

উড়োজাহাজ सं—हवाई जहाज।

উড্ডয়ন सं—वायुमें विचरण, उड़नेकी क्रिया।

উড্ডীন, উড্ডীয়মান वि=উড়ন্ত।

উতরান (उत्‌रानो), উতরানো, ওতরান (ओत्‌रानो), ওতরানো (क्रि परि १८)—उतरना ; सफल होना (পরীক্ষায় কোন মতে উতরে গেছে)। [हल्ला।

উতরোল (उत्‌रोल) सं—কোলাহল शोरगुल,

উতলা वि—उद्विग्न, व्याकुल।

উতলান (उत्‌लानो), উতলানো क्रि=উথলান।

উৎকট वि—उग्र ; तीव्र, विकट।

উৎকণ্ঠা सं—उद्वेग, शंका, भय, घबराहट। উৎকণ্ঠিত (-अ) वि—व्याकुल, घबराया हुआ, भीत। [व्यग्र।

উৎকর্ণ (-अ) वि—कान खड़ा, सुननेके लिए

উৎকর্ষ (-अ) सं—उन्नति, श्रेष्ठता, बड़ाई।

উৎকল सं—उड़िसा।

উৎকীর্ণ (-अ) वि—खोदा हुआ।

উৎকুন सं=উকুন।

উৎকৃষ্ট (-अ) वि—उत्तम, उमदा, श्रेष्ठ।

উৎকোচ स—घूस, रिश्वत। —গ্রাহী वि—रिश्वत लेने वाला, घूसखोर। [उठा हुआ।

উৎক্রান্ত (-अ) वि—अतिक्रान्त, बढ़ा हुआ,

উৎক্ষিপ্ত (उत्‌क्षिप्त-अ) वि—उछाला हुआ ; उखाड़ा हुआ। [निक्षेप या फेंकाव।

উৎক্ষেপ (उत्खेप) सं—उछाल, ऊपरकी ओर

উৎক্ষেপণ (उत्खेपन) सं—ऊपरको निक्षेप।

উৎখাত (उत्खात-अ) वि—उखाड़ा हुआ (ভিটামাটী—করিও না)।

উত্তপ্ত (-अ) वि—बहुत गर्म, क्रोधित।

উত্তম-মধ্যম सं—खूब मार या प्रहार।

উত্তমর্ণ (-अ) स—महाजन, कर्ज देनेवाला।

উত্তমাঙ্গ (-अ) सं—मस्तक, सिर।

উত্তমোত্তম वि—अच्छे अच्छे, उत्तमसे उत्तम।

উত্তর सं—उत्तर, जवाब ; उत्तर दिशा। वि—परवर्ती, अगला (-কাল), अन्तिम (-কাণ্ড)। —কোশল सं—प्राचीन अयोध्या प्रदेश। —ক্রিয়া सं—अन्तिम क्रिया, शवदाह आदि। —পক্ষ सं—तर्कमें सिद्धान्त-पक्ष। —বঙ্গ सं—पद्मा (गंगा) नदीके उत्तर पारका बंगाल। —মীমাংসা सं—वेदान्त-दर्शन, शारीरक मीमांसा, वेदके अन्तिम भाग उपनिषदोंकी मीमांसा, महर्षि वेदव्यास-कृत ब्रह्मसूत्र। —সাধক सं—तान्त्रिक साधना में प्रधान साधकका सहायक। উত্তরাধিকারী सं—वारिस। উত্তরাস্য (उत्तरास्य-अ), —মুখ (-अ) वि—उत्तरकी ओर मुँह या सिर रख कर (—বসিয়া খাইও না, উত্তরাস্যে বসিও না বা শুইও না)। উত্তরোত্তর क्रि वि—क्रमशः।

উত্তরণ सं—पार गमन, दूसरे पार उतरना ; गन्तव्य स्थानमें पहुँचना।

উত্তরীয় (-अ) स=উড়ানি।

উত্তরে क्रि वि—उत्तर दिशामें, जवाबमें। वि—उत्तर दिशासे आनेवाला (—হাওয়া, —মেঘ)।

উত্তল वि—उन्नतोदर convex. [केवल।

উত্তান वि—চিত चित ; नतोदर concave ; पीठ

উত্তাপ सं—ताप, गर्मी।

উত্তাল वि—ऊँचा (—তরঙ্গ)।

উত্তীর্ণ (-अ), वि—दूसरे पार गया या पहुँचा हुआ, कृतकार्य, कामयाब (পরীক্ষায়—হইয়াছি)।

উত্তুঙ্গ (-अ) वि—बहुत ऊँचा।

উত্তোলন स—ऊपर उठाना, उठानेकी क्रिया।

উত্ত্যক্ত (-अ) वि—विरक्त दिक, सताया हुआ।

উত্থান स—उन्नति, उठना (গাত্রোত্থান) ; विद्रोह, बगावत।

উত্থাপক वि—प्रस्ताव करने वाला।

উত্থিত (-अ) वि—खड़ा, निकला हुआ, उन्नत, विद्रोहके लिए तैयार।

উৎপত্তি सं—उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश ; कारण , मूल ।

উৎপথ सं—कुपथ, बुरा मार्ग, भ्रष्टाचार । —গামী वि—कुमार्गगामी ; भ्रष्ट, आवारा ।

উৎপতমান वि—उठने वाला ; पैदा होने वाला ।

উৎপন্ন (-अ) वि—उत्पन्न, उद्भूत, पैदा ।

উৎপল सं—पद्म, कमल ।

উৎপাটন सं—उखाड़ना । [दंगा, अत्याचार ।

উৎপাত सं—उपद्रव, आफत, ऊधम, शरारत ;

উৎপাদ্য (-अ) वि—पैदा करने योग्य ।

উৎপীড়ন सं—निग्रह, अत्याचार, सताना, कष्ट पहुंचाना ।

উৎফুল্ল (-अ) वि—प्रफुल्ल, खुश । [स्थान ।

উৎস (-अ) सं—झरना, फुहारा, उत्पत्ति-

উৎসঙ্গ (-अ) स—गोदी, पहाड़की तराई ।

উৎসন্ন (उत्सन्न-अ) वि=উচ্ছন্ন ।

উৎসাদক वि—उच्छेद करने वाला ।

উৎসারণ (उत्सारन, सं—अपसारण, हटाना ।

উৎসাহ (-अ) सं—उत्साह, उमंग, जोश, हौसला, हिम्मत ।

উৎসৃষ্ট (-अ) वि—उत्सर्ग किया हुआ, कृष्णार्पित ; त्याग किया हुआ ।

উথলান (उथलानो), উথলানো, ওথলান (ओथलानो), ওথলানো (क्रि परि १८) —उबल पड़ना (আগুনের তাপে কড়াইয়ের দুধ উথলাইয়া পড়িতেছে) ।

উদক सं—पानी, जल ; उत्तर दिशा ।

উদকুম্ভ (-अ) स—पानीका घड़ा ।

উদগ্র (-अ) वि—ऊंचा, ऊपरको नोकवाला, धृष्ट, ढीठ ; हठी ।

উদজান स—हाइड्रोजन गैस ।

উদধি स—समुद्र, सागर ।

উদয়াস্ত (-अ) सं—उदयसे अस्त तक समय ; दिन । वि—दिन भर ।

উদয়োন্মুখ (उदयोन्मुख) वि—उगने वाला, उदित होने वाला ।

উদর सं—पेट । —পরায়ণ वि—पेटू । উদরসাৎ (-शात्) वि—हजम, गबन ।

উদরম্ভরি वि—पेटू ।

উদরস্থ (-अ) वि—खाया हुआ, भक्षित ।

উদরাধ্মান (उदराध्मान) सं—उदर स्फीति, पेटका फूल जाना, अफरा ।

উদরান্ন (-अ) सं—खाद्य, भोजन, जीविका ।

উদরাময় सं—पेटकी बीमारी, अतिसार ।

উদরী स—पेटमें पानी भर जानेका रोग, जलोदर रोग ।

উদলা (उदला), (-লা) वि—উলঙ্গ नंगा, उघाड़ा ; आवरण-रहित (পাগলটি—পড়ে আছে কেন?) । [महान ।

উদাত্ত स—ऊंचा स्वर वि—उच्च ; उदार ;

উদাহরণ स—दृष्टान्त, मिसाल । উদাহৃত (-अ) वि—कथित, उक्त, उदाहरण रूपसे प्रदत्त ।

উদিত (-अ) वि—उगा हुआ, चढ़ा हुआ ।

উদীচী सं—उत्तर दिशा ।

উদীয়মান वि—उठने वाला, उन्नत होने वाला ।

উডুম্বর सं—डूमर गूलर ।

উদূখল सं—ओखली ।

উদো वि—मूर्ख, बेवकूफ ।

উদ্গত (-अ) वि—उद्भूत, निकला हुआ, उठा हुआ । উদ্গম स—उद्भव, उदय ।

উদ্গমন सं—ऊपरकी ओर गमन ।

উদ্গাতা वि, स—सामवेद गान करने वाला, ऊंचे स्वरसे गाने वाला ।

উদ্গার सं—ঢেকুর डकार ; कै । উদ্গিরণ (-গীরণ) स—वमन, कै ।

উদ্গ্রীব वि—आग्रही, सुननेके इच्छुक, व्यग्र ।

উদ্ঘাটক वि—खोलने वाला । উদ্ঘাটন स—

खोलनेकी क्रिया (দ্বার—)। উদ্‌ঘাটিত (-अ) वि—खुला ; प्रकट।

উদ্‌ঘোষ सं—ऊँची ध्वनि ; ऊँचे स्वरसे घोषणा।

উদ্দাম वि—अति प्रबल ; उद्दण्ड। [अभिप्रेत।

উদ্দিষ্ট (-अ) वि—लक्षित ; कथित, उक्त,

উদ্দীপক वि—प्रकाशक, जलानेवाला , उत्तेजक (শত্রোদ্দীপক)। উদ্দীপন, (-না) सं—प्रकाशन, उत्तेजना ; प्रोत्साहन। উদ্দীপনাময় वि—अत्यन्त आग्रह युक्त, उत्तेजना-पूर्ण, उत्साह-पूर्ण। উদ্দীপিত (-अ), উদ্দীপ্ত (-अ) वि—प्रज्वलित, प्रोत्साहित, उत्तेजित।

উদ্দেশ सं—उद्देश्य, लक्ष्य ; पता ; जाँच, तहकीकात।

উদ্দেশ্য सं—लक्ष्य , अभिप्राय, आशय।

উদ্ধত (-अ) वि—ढीठ, गँवार ; घमंडी।

উদ্ধরণ सं—उल्लेख , उद्धार, मुक्ति।

উদ্ধার सं—मुक्ति, परित्राण , उन्नति ; प्रतिष्ठा , उद्धृत वाक्य। উদ্ধার চিহ্ন—" " यह चिह्न।

উদ্বন্ধন (उद्‌बन्धन) सं—फाँसी।

উদ্বমন (उद्‌बमन) सं—वमन, कै।

উদ্বর্ত্ত (-उद्‌वर्त्त-अ) सं—बाकी अंश बचा हुआ हिस्सा। [volatile

উদ্বায়ী (उद्‌वायी) वि—उड़ जाने वाला

উদ্বাসিত (उद्‌बासित-अ) वि—निर्वासित , देशसे बाहर निकाला हुआ।

উদ্বাস্তু (उद्‌धास्तु) वि—বাস্তু ভিটা হইতে দূরীভূত पैतृक मकानसे निकाला हुआ (জমিদার প্রজাকে—করিলেন) ; अपने निवास-स्थानसे निकाला हुआ, दूसरे देशके शरणार्थी Refugee

উদ্বাহ (उद्‌बाह-अ) सं—विवाह, शादी।

উদ্বাহিত (उद्‌बाहित-अ) वि—विवाहित , ढोया हुआ।

উদ্বিগ্ন (उद्‌बिग्न -अ) वि—घबराया हुआ, आकुल, बेचैन ; दुखी। —চিত্তে कि वि—घबराते हुए, आकुल हो कर ; आग्रहसे।

উদ্‌বিড়াল सं—उदबिलाव।

উদ্বুদ্ধ (उद्‌बुद्ध -अ) वि—प्रबुद्ध, जागरित , स्मरणमें आया हुआ।

উদ্বৃত্ত (उद्‌वृत्त -अ) वि—बचा हुआ, अवशिष्ट।

উদ্বেগ (उद्‌बेग) सं—उत्कण्ठा, चिन्ता, फिक्र, घबराहट। [क्लेशित, उद्विग्न।

উদ্বেজিত (उद्‌वेजित -अ) वि—दुखी,

উদ্বেল, উদ্বেলিত (उद्‌वेल्लित -अ) वि—बह निकला हुआ प्लावित।

উদ্বোধ (उद्‌बोध) सं स्मरण याद। —ক वि—स्मारक याद दिलाने वाला। —ন सं—जागरण ; होशमें लाना।

উদ্ভট वि—अनोखा, अनूठा, विलक्षण।

উদ্ভব सं—उत्पत्ति, जन्म , वृद्धि , मूल।

উদ্ভাবক सं—आविष्कारक, ईजाद करने वाला।

উদ্ভাসিত (उद्‌भाशित-अ) वि—प्रकाशित।

উদ্ভিজ্জ (-अ) सं—उद्‌भिद, जमीन फोड़ कर निकलने वाला, वृक्ष लता आदि।

উদ্ভুট্টি वि—अनोखा, अद्‌भुत।

উদ্ভ্রান্ত (-अ) वि—पागल, उन्माद ; व्याकुल , पागलकी तरह घूमनेवाला।

উদ্যত (उद्दत-अ) वि—तैयार, तत्पर प्रस्तुत, मुस्तैद , उठाया हुआ (—খড়্গ)।

উদ্যান (उद्दान्) सं—बाग, बगीचा।

উদ্‌যাপন (उद्‌जापन) सं—सम्पादन, निर्वाह, समाप्ति। উদ্‌যাপিত (उद्‌जापित-अ) वि—अनुष्ठित , पूर्ण, समाप्त।

উদ্যোগ (उद्‌जोग) सं—उद्योग, आयोजन, चेष्टा। উদ্যোক্তা (उद्‌जोक्ता) स , वि—उद्योग या आयोजन करनेवाला। উদ্যোগী (उद्‌जोगी) वि—आयोजक ; उद्यमी, उत्साही।

উদ্রিক্ত (-अ) वि—उत्तेजित , वर्द्धित ; स्पष्ट।

উদ্রেক सं—सचार, उदय (क्षुधार—इইয়াছে)। উধাও वि—अदृश्य, गायव।
উন (-अ), উনা, উনো वि—कम कम (উন-আশি ७९; উনচল্লিশ ३९; উনত্রিশ २९; উননব্বই ८९; উনপঞ্চাশ ४९; উনবিংশ १९; উনষাট ५९; উনসত্তর ६९ (উনো ভাতে দুনো বল)।
উন सं—ऊन। [चुल्हा सुलगाना)।
উনান, উনন, উনুন स—चुल्हा (—ধরান,
উনি सव—सम्मानित वह व्यक्ति, आप।
উনিশ स, वि—उनीस, १९।
উনিশে स—सौर मासकी उनीस तारीख (को)।
উন্নত (-अ) वि—उन्नत, ऊँचा, श्रेष्ठ, ऊपर उठा हुआ, समृद्ध। —চরিত্র (-अ) वि—उन्नत चरित्रवाला। —চেত (-अ) वि—उन्नत चित्तवाला, उदार।
উন্নয়ন स—ऊपर उठाना, उन्नत करना।
উন্নিদ্র (-अ) वि—निद्राहीन, सजग, चौकन्ना।
উন্নীত (-अ) वि—ऊपर उठाया हुआ promoted
উন্মজ্জন (उन्मज्जन) स—डूबी हुई अवस्थासे ऊपर उठना, उतराना।
উন্মত্ত (उन्मत्त -अ) वि—पागल बावला, सनकी; बेसुध, मदान्ध; मतवाला।
উন্মনা (उन्मना) वि—অন্যমনস্ক जिसका ध्यान दूसरी ओर लगा हुआ है; घबराया हुआ, उद्विग्न। [वि—पागल।
উন্মাদ (उन्माद) स—पागलपन, चित्त-विभ्रम।
উন্মার্গ (उन्मार्ग-अ) स—कुमार्ग बुरा मार्ग, भ्रष्टाचार। —গামী वि—भ्रष्टाचारी, बदचलन।
উন্মীলন (उन्मीलन) स—आँखें खोलना; प्रकाश। উন্মীলিত (-अ) वि—खुला, विकास-प्राप्त। [रिहा।
উন্মুক্ত (उन्मुक्त-अ) वि—खुला, उघारा; मुक्त,
উন্মুদ্র (उन्मुद्र-अ) वि—मुहर न किया हुआ unsealed
উন্মূলন (उन्मूलन) सं—उच्छेद मूल उत्पाटन; नाश बरबादी। উন্মূলিত (-अ) वि—उखाड़ा हुआ। [खुलना, थोड़ा प्रकाश।
উন্মেষ (उन्मेष) सं—विकास, आँखोंका
উপকণ্ঠ (-अ) स—निकट, प्रान्त (নগরের—)।
উপকথা सं—कहानी, गल्प, किस्सा।
উপকরণ सं—सामान, सामग्री, साधन; औजार; अन्नके अतिरिक्त दाल तरकारी आदि। পূজোপকরণ स—पूजाके सामान फूल चन्दन आदि। [किनारा।
উপকূল स—तीर, तट; समुद्र नदी आदिका
উপক্রম स—आरम्भ, शुरु, तैयारी, आयोजन।
উপগত (-अ) वि—स्वीकृत; पहुँचा हुआ; प्राप्त; सलग्न।
উপগ্রহ (-अ) सं—ग्रहकी परिक्रमा करनेवाला छोटा ग्रह; कैदी, कैद, गिरफ्तारी, पीछे चलनेवाला।
উপচান (उपचानो), উপচানো, ওপচান (ओप्‌चानो), ওপচানো (क्रि परि १८)= উথলান।
উপচার स—पूजाकी सामग्री (পঞ্চোপচারে, ষোড়শোপচারে পূজা), सेवाका सामान; इलाज (অস্ত্রোপচার)।
উপচিকীর্ষা सं—उपकार करनेकी इच्छा।
উপচিকীর্ষু वि—उपकार करनेके इच्छुक।
উপজাতি स—जातिका छोटा विभाग।
উপজিল (-अ) क्रि—जन्मा, उत्पन्न हुआ (তাহে—প্রেম)।
উপজীবিকা सं—जीविका, वृत्ति, पेशा।
উপজীবী वि—पेशेवर (কৃষি—), উপজীব্য (-अ) स—जीविका, वृत्ति।
উপড়ান (उपड़ानो), উপড়ানো, ওপড়ান

(ओपड़ानो ', ওপড়ানো (क्रि परि १८)। —उखाड़ना।

উপঢৌকন सं—उपहार, भेंट। [भूमि।

উপত্যকা सं—तराई ; दो पर्वतोंके बीचकी नीची

উপদংশ सं—दंशन, डसना, कुतरना ; गरमी की बीमारी, आतशक।

উপদেবতা सं—भूत प्रेत आदि।

উপদ্রুত (-अ) वि—जहाँ उपद्रव हुआ है, उपद्रव-ग्रस्त (—অঞ্চল)।

উপদ্বীপ स—प्रायद्वीप Peninsula

উপনয়ন सं—यज्ञोपवीत-संस्कार। উপনীত (-अ) वि—पहुँचा हुआ ; उपनयन-संस्कार से संस्कृत।

উপনেত্র (-अ) सं—चशमा, ऐनक।

উপন্যস্ত (-अ) वि—प्रदत्त ; रखा या जमा किया हुआ, कथित, उक्त, प्रयुक्त।

উপপতি सं—जार, अवैध प्रणयी।

উপপত্তি सं—मीमांसा, सिद्धान्त।

উপপত্নী सं—रखेली।

উপপন্ন (-अ) वि—सिद्ध ; सम्पन्न।

উপপাতক सं—लघु पाप, छोटा अपराध।

উপপাদন स—सम्पादन, मीमांसा।

উপপাদ্য (-अ) वि, सं—सम्पाद्य, सम्पादन करने योग्य (विषय)।

উপবাস (-बाश) सं—फाका, उपवास।

উপবিষ্ট (-बिष्ट-अ) वि—बैठा हुआ।

উপবীত (-बीत) सं—यज्ञोपवीत, जनेऊ।

উপবীতী वि—यज्ञसूत्र धारण किया हुआ।

উপভুক্ত (-अ) वि—भक्षित, खाया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ, भोग किया हुआ।

উপভোক্তা सं, वि—खानेवाला, भोग करने वाला consumer.

উপম वि—तुल्य, समान (দেবোপম)।

উপমা सं—तुलना, सादृश्य। উপমান सं—जिससे तुलना की जाती है (চন্দ্রবদন, चन्द्र सा वदन), (दर्शनमें) एक प्रमाण (গবয় গরুর মতো এক জন্তু)।

উপমাতা सं—धाय, दूध पिलानेवाली दाई।

উপমিতি स—तुलना, उपमा, सादृश्यसे होनेवाला ज्ञान। উপমেয় (-अ) वि—उपमा देने योग्य। सं—उपमाकी वस्तु।

উপযাচক (उपजाचक्) वि—प्रार्थी, माँगनेवाला।

উপযুক্ত (उपजुक्त-अ) वि—योग्य, उचित ; समर्थ। [लाभकारिता।

উপযোগিতা (उपजोगिता) सं—योग्यता,

উপযোগী (उपजोगी) वि—आवश्यक, प्रयोजनीय, लाभदायक, फायदेमंद ; अनुकूल, मुआफिक, योग्य।

উপর, ওপর सं—ऊपर। क्रि वि—अतिरिक्त (পেটের অসুখ তার—লুচি !)। উপরে क्रि वि—ऊपर, ऊपरकी मंजिलमें ('পরে—'উপরে' का संक्षिप्त रूप है)। [अफसर, ईश्वर।

উপর আলা, (- ওয়ালা) वि, स—ऊपरवाला,

উপরত (-अ) वि—कामसे विरत या निवृत्त ; गत ; मृत, विरक्त।

উপরতলা सं—ऊपरकी मंजिल।

উপরতি सं—विरति, निवृत्ति, त्याग, संयम, वैराग्य, उदासीनता, मृत्यु।

উপরন্তু क्रि वि—उसके बाद, उसके अतिरिक्त।

উপর পড়া वि—बल पूर्वक दखल देनेवाला ; स्वेच्छासे दूसरेके काममें हाथ डालनेवाला।

উপরপিঠ सं—ऊपरी सतह। [मृत्यु।

উপরম, উপরাগ स—विराम, विरति, वैराग्य ;

উপরি क्रि वि—ऊपर। वि—अतिरिक्त (—পাওনা, —লাভ), वेतनसे अतिरिक्त (भेंट, घूस)। —উপরি क्रि वि—উপর্যুপরি एकके ऊपर दूसरा, लगातार। —তন वि—ऊपरका, उच्च पदस्थ, अफसर। —পাওনা सं—अधिक लाभ

या आमदनी। —ভাগ सं—ऊपरका हिस्सा ; पीठ।

উপরোধ सं—अनुरोध, प्रार्थना, सिफारिश।

উপরুদ্ধ (-अ) वि—अनुरोध किया हुआ, प्रार्थित।

উপর্য্যুপরি (उपर्जु परि) क्रि वि=উপরি উপরি।

উপল सं—पत्थर, ओला, रत्न।

উপলক্ষ (उपलक्ख-अ) सं—प्रयोजन, आसरा ; बहाना। উপলক্ষিত (-अ) वि—प्रदर्शित, लक्षित।

উপলক্ষে (उपलक्खे) क्रि वि—अवसर पर। তদুপলক্ষে क्रि वि—उस अवसर पर।

উপলক্ষ্য (उपलक्ख्य-अ) स—उद्देश्य लक्ष्य।

উপলব্ধ (-अ) वि—प्राप्त ; ज्ञात।

উপলব্ধি सं—ज्ञान, अनुभव, बोध।

উপশম सं—शान्ति, कमी, ह्रास।

উপসর্গ (-अ) स—अपशकुन, उत्पात ; रोग-लक्षण ; शब्दके शुरुमें लगनेवाला अव्यय (প্র, পরা, অপ, নি)।

উপসাগর सं—समुद्रकी खाड़ी, छोटा समुद्र।

উপস্থ (-अ) स—पुरुषांग, लिंग।

উপস্থাপক, উপস্থাপয়িতা स—प्रस्तावक, प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला ; निवेदक।

উপস্থিত वि—हाजिर, आया हुआ, निकटका सामनेवाला। —বক্তা स—तैयार न हो कर भी जो व्याख्यान दे सकता है, हाजिर-जवाब। —বুদ্ধি स—প্রত্যুৎপন্ন মতি विपत्तिके समय तुरत विचार पूर्वक कर्तव्य करनेकी बुद्धि। —বুদ্ধি वि—প্রত্যুৎপন্নমতি विपत्तिके समय कर्तव्यका निश्चय कर सकनेवाला।

উপস্থিতি सं—हाजिरी।

উপস্বত্ব (उपश्शत्त-अ) स—सम्पत्तिकी आय।

উপহসিত (उपहशित-अ) वि—जिसकी दिल्लगी उड़ायी गयी है। উপহাস स—ठट्ठा, दिल्लगी। উপহাস্য (-श्य-अ) वि—उपहासके योग्य, हंसीका।

উপহিত (-अ) वि—सन्निहित, निकटका ; रक्षित संयुक्त, मिश्रित। [दिया हुआ।

উপহৃত (-अ) वि—उपहार रुपसे प्रदत्त, भेंटमें

উপাঙ্গ (-अ) सं—अंगका भाग, अवयव ; छोटा अंश या विभाग।

উপাত্ত (-अ) वि—गृहीत, प्राप्त स्वीकृत।

উপাদান स—मूल तत्त्व, मूल कारण (ঘটের—মাটি) ; ग्रहण, स्वीकार। [स्वादिष्ट।

উপাদেয় (-अ) वि—ग्रहण-योग्य ; मनोहर ;

উপাধান स—तकिया।

উপানৎ सं—জুতা जूता, पादुका।

উপান্ত (-अ) सं—উপকণ্ঠ निकट, समीप ; किनारा, प्रान्त।

উপায় सं—उपाय, तरकीब, युक्ति, साधन, प्रतिकार, उपार्जन, आमदनी, आय (কত টাকা—কর ?)। —ক্ষম वि—जीविका कमानेमें समर्थ।

উপায়ন स—भेंट, उपहार।

উপায়ান্তর स—दूसरा उपाय।

উপার্জক वि, सं—कमानेवाला।

উপার্জনক্ষম वि=উপায়ক্ষম।

উপিয়া যাওয়া क्रि—भाप हो कर उड़ जाना।

উপুড়, উবুড় वि—औंधा, पट, उलटा। —হস্ত (-अ) वि—दाता, उदार, सखी।

উপু হইয়া বসা क्रि—घुटने उठा कर केवल पैरों पर बैठना।

উপেক্ষা (उपेक्खा) सं—उपेक्षा, अनादर, अवहेलना ; अस्वीकार। উপেক্ষিত (-अ) वि—उपेक्षित, अस्वीकृत।

উপোস (उपोश) स—उपवास। উপোসী वि—उपवासी, भूखा।

উপ্ত (-अ) वि—जो बोया गया है।

উবরান (उबरानो), উবরানো (क्रि परि १८) —शेष बचना।

উবা, ওবা (क्रि परि ६)—हवाकी तरह उड जाना (কর্পূর উবিয়া গিয়াছে)।

উবু, উপু वि —घुटने उठाकर केवल पैरोंके ऊपर बैठा हुआ (—হ'য়ে বসা)।

উবুড়, উপুড় वि—औंधा, उलटा।

উভ (-अ), উভয় सर्व—दोनों। উভচর वि — जल और स्थल दोनोंमें चल सकनेवाला (मेंढक कछुआ आदि)। উভয়ত্র (-अ) क्रि वि—दोनों स्थानोंमें ; दोनों विषयोंमें। উভয়থা क्रि वि—दोनों प्रकारसे। উভয় সংকট सं—दोनों तरफ विपत्ति।

উভরায় क्रि वि—ऊंचे स्वरसे (কাঁদে—)।

উমরা सं =ওমরা।

উমেদার वि, सं—उम्मदेवार ; कार्यप्रार्थी। উমেদারি, (-री) सं—उम्मेदवारी, खुशामद।

উরগ सं—साँप।

উরসিজ (-अ) सं—स्तन, छाती।

উরস্ত্রাণ सं—कवच, सीनाबंद Breast-plate

উরুত, উরত सं—ऊरु, जाँघ।

উর্ণনাভ सं—গাকড়সা मकडी। [जाला।

উর্ণা, উর্ণা सं—पशम, लोम, ऊन ; मकड़ीका

উর্দি सं—वर्दी।

উর্দু सं—उर्दू।

উর্বর वि—उपजाऊ। —মস্তিষ্ক (-अ) वि— उपजाऊ दिमागवाला, कल्पना-प्रवण। — মস্তিষ্ক स—उपजाऊ दिमाग। स्त्री—উর্বরা।

উর্বী सं—पृथ्वी, धरती, भूमि।

উল सं—ऊन, पशम। [स्त्री—উলঙ্গিনী।

উলঙ্গ (-अ) वि—ন্যাংটা, नंगा, खुला, उघाड़ा।

উলট-পালট, ওলট-পালট वि, सं—एक बार उलटा एक बार सीधा, उलट-पुलट।

উল্টা, উল্‌টা (उलटो) वि—उलटा, औंधा, विपरीत (—পথ, —দিক)। —পালটা वि— উলট-পালট उलट-पुलट ; গোলমেলে उलझनदार (তোমার কথাগুলি সবই—)।

উলটান (उल्टानो), উল্টানো, ওল্টান (ओल्टानो) ওল্টানো (क्रि परि १८)—औंधा करना या होना (বাসনটা উলটাইল কে? উলটাইয়া পড়িয়াছে) ; उलटना (ভাজামাছ—, বইয়ের পাতা—)।

উলু सं—हुलू शुभ कार्यमें स्त्रियोंके जिह्वा हिलानेका शब्द ; घर छाने लायक एक घास।

উলুক सं—পেঁচা उल्लू। [घास।

উলুখড় सं—छप्पर छाने योग्य एक लम्बी

উল্কা सं—मशाल ; चिनगारी, उल्का, गिरता हुआ सितारा।

উল্কামুখী स—शृगाल लोमड़ी, ककशा नारी।

উল্কি सं—शरीरमें सूई गड़ाकर रंगसे बनाया हुआ चित्र, गुदना।

উল্টা, উল্টান क्रि=উলটা, উলটান।

উল্লম্ফন सं—कूद, फाँद, कूद कर लांघना।

উল্লসিত (उल्लशित अ) वि—प्रफुल्ल, प्रसन्न, खुश। [किया हुआ।

উল্লিখিত (-अ) वि—ऊपर कथित, उल्लेख

উল্লুক सं—दुम रहित एक बन्दर, बेवकूफ, भोंदू गाली)। [रूक्ष, रूखा।

উস্ক-খুস্ক (-अ) वि—न सँवारा हुआ (वाल),

উষ্ট্র (-अ) स—ऊँट ऊंट।

উষ্ণ (उष्ण-अ) वि—गरम, गुनगुना, चरपरा, तीखा (मिर्चा), क्रोधी, चिड़चिड़ा।

উষ্মা (उश्शा) स — गर्मी ; क्रोध।

উসকান (उश्कानो), উসকানো, ওসকান (ओश्कानो), ওসকানো (क्रि परि १८)— उसकाना, बत्ती बढ़ा कर दीयेकी रोशनी तेज करना।

উসখুস (उसखुस्), উস্‌খুস্‌ सं—अधीरताका भाव (—করা)।　　[—দেওয়া)।

উসুল (उसुल) वि, सं—वसूल ; जमा (খাতার

উস্কখুস্ক (उस्कखुस्क-अ) वि—अस्तव्यस्त (केश)।

উহা सर्व—वह (वस्तु या छोटा जीव)। —কে सर्व- उसे। —দিগকে सर्व—उनलोगोंको। —দিগের, —দের सर्व- उन लोगोंका।

উহার सर्व—তাহার उसका।

উহারা सर्व—তাহারা वे (लोग)।

উঁহাকে सर्व—(सम्मानित) उनको (एक वचनमें)।

উঁহাদিগকে सर्व—(सम्मानित) उनलोगोंको।

উঁহাদিগের, উঁহাদের सर्व—उनलोगोंका।

উঁহারা सर्व—(सम्मानित) वे।

উঃ अव्य—कष्ट-सूचक शब्द।

উঁহু अव्य—ना नहीं, अस्वीकार-सूचक शब्द।

উহ্য (उह्य-अ) वि—अनुक्त, जिसका उल्लेख नहीं किया गया है understood

ঊ

ঊন (-अ) वि—न्यून, एक कम।

ঊনচত্বারিংশ (-अ) वि—उनतालीसवाँ।

ঊনচত্বারিংশৎ सं, वि—ঊনচল্লিশ उनतालीस, ३९।

ঊনত্রিংশ (-अ) वि—उनतीसवाँ।

ঊনত্রিংশৎ स, वि—ঊনত্রিশ उनतीस, २९।

ঊননবতি सं, वि—ঊননব্বই नवासी, ८९। —তম वि—नवासीवाँ।

ঊনপঞ্চাশৎ सं, वि—उनचास, ४९।

ঊনপঞ্চাশত্তম वि—उनचासवाँ।

ঊনবিংশতি सं, वि—ঊনিশ उनीस, १९। —তম वि—उनीसवाँ।　　[वि—उनसठवाँ।

ঊনষষ্টি सं, वि—ঊনষাট उनसठ, ५९। —তম

ঊনসপ্ততি सं, वि—ঊনসত্তর उनहत्तर, ६९। —তম वि—उनहत्तरवाँ।　　[फोड़ा।

ঊরু सं—जांघ। —স্তম্ভ (-अ) सं—जांघमें

ঊর্ণনাভ=ঊর্ণনাভ। ঊর্ণা=ঊর্ণা।

ঊর্দ্ধ, ঊর্ধ্ব क्रि वि—ऊपर (—গামী, —মুখ, শ্বাস—)। —তন वि—উপরিতন ऊपरका, उच्च पदका ; पहलेका (—পুরুষ)। —শ্বাস स—जल्दी जाने या अधिक परिश्रम करने से लम्बी सांस (—শ্বাসে দৌড়াইতে লা)।

ঊর্বর वि=উর্বর। ঊষর वि- ऊसर।

ঊর্মি सं—ঢেউ लहर, तरंग ; गति, दुख।

ঊহ্য (उल्ह्य-अ) वि=উহ্য।

ঋ

ঋক্থ (-अ) स—धन, सम्पत्ति ; स्वर्ण।

ঋক্ষ (ऋक्ख-अ) स—भालू। —মণ্ডল सं—सप्तर्षि मण्डल (नक्षत्र)।

ঋগ্বেদ (ऋग्वेद) सं—ऋग्वेद। ঋগ্বেদী वि—ऋग्वेदज्ञ। सं—ऋग्वेदीय ब्राह्मण।

ঋজু वि—सीधा ; निष्कपट ; सहज।

ঋণ स—ऋण, कर्ज ; उधार ; देना। ঋণী वि—ऋणी, देनदार, कर्जदार ; एहसानमंद, कृतज्ञ।

ঋত (-अ) सं—सत्य। वि—नित्य।

ঋষভ सं—सांड़। वि—श्रेष्ठ।

এ

এ सर्व—यह आदमी (এ কে হে?) ; यह (चीज, काम या जीव) (এ কি?)। এও—यह भी। स्त्री—सधवा।

এই सर्व—यह, सामनेवाला (—কাজ, —ব্যক্তি, —ঘর) ; निकृष्ट व्यक्तिको बुलानेका शब्द

(এই, শুনে যা), अभी (—দিচ্ছি), भय या आश्चर्य सूचक शब्द (এই রে ! গলুম, এই যে এসে পড়েছেন !)।

এক (ऐक्) वि, सं—एक, १ ; कोई (—দিন যাব), पूरा, भरा (—পেট, —ছালা গম)।

একক वि—अकेला, सिर्फ। सं—इकाई।

এককালীন वि—एक बारका ; एकसाथ, एकमुश्त।

একখানা, (-খানি) वि—एक (खण्ड) (केवल वस्तुके लिए ही इन शब्दोंका प्रयोग होता है जैसे—একখানি বই, একখানা থালা ; খানি सुन्दरता या प्रियता प्रकट करता है)।

একগাল वि—मुँह-भर। स—ग्रास, कवर (—খাও, —হাসি, ऊँची हँसी, ठहाका)।

একগুঁয়ে वि—जिद्दी, हठी।

একঘরে वि—अपनी समाजसे बहिष्कृत, जातिच्युत। [monotonous

একঘেয়ে वि—लगातार एकरस होनेसे अरुचिकर

একচল্লিশ वि, सं—एकतालीस, ४१।

একচালা स—एक ही छप्परका घर।

একচেটিয়া, (-চেটে) वि-सिर्फ एक ही आदमीके अधीन (—ব্যবসা, monopoly)

একচোখো वि—पक्षपाती, तरफदार ; एक आँखवाला।

একচোট वि—खूब (—মার, —গালাগালি)।

একছুটে क्रि वि—एक दौड़में ; सिर्फ एक कपड़ा पहन कर।

একজন सं—कोई एक व्यक्ति (—লোক দেখা করিতে চায়, তিনি—বিদ্বান লোক)।

একতাই क्रि वि—बार बार।

একজোট वि—एकमत, एकराय, एकसाथ।

একজ্বরী वि—अविराम ज्वर ; लगातार ज्वर भोग करने वाला।

একটা (ऐकूटा) वि—(तुच्छार्थ में) एक (—ছোঁড়া, एक लौंडा, —ঘটি, एक लोटा, —টাকা) ; कोई (—কাজ আছে, যা হয় —কিছু কর)। [निरन्तर, लगातार।

একটানা वि—सीधा। क्रि वि—अविराम,

একটি (-টী) वि—(प्रियार्थमें) एक (—সুন্দর বাটি ; —কবিতা)। [एवजमें काम।

একটিন वि—एवजी acting. একটিনি सं—

একটু वि—थोड़ा, जरासा (—চিনি ; —খাও ; —অপেক্ষা কর)।

একটুক, একটুকু वि—जरा सा।

একতম वि—अनेकोंमें एक।

একতর वि—दोमें एक।

একতর (ऐकतरो) वि—एक तरहका, एक निराले ढंग का (ঐ—লোক)।

একতরফা (ऐकूतरफा) वि—एकतरफा।

একতা (एकता) सं—एका, ऐक्य, मेल।

একতান (एकतान) वि—एक-स्वर, एक-सुर, एकाग्र। [एकतुम्बी।

একতারা (ऐकूतारा) स—एक तार वाला बाजा,

একতালা (ऐकूताला) वि—एक-मंजिला (—বাড়ী) ; संगीतका एक ताल जिसमें बारह मात्रायें होती हैं। [मिलित।

একত্র (एकत्र-अ) वि—एक स्थानमें समवेत,

একত্রিংশ (एकत्रिंश-अ) सं, वि—एकतीस, ३१। वि—एकतीसवाँ।

একত্রিশ (एकत्रिश) सं, वि—एकतीस, ३१।

একত্রিশে स—सौर मासकी एकतीसवीं तारीख (को)।

একত্ব (एकत्त-अ) सं—अभिन्नता, एकत्व।

একদম (ऐकूदम्) क्रि वि—एकदम, बिलकुल (—বোকা, —পারে না)। [जमानेमें।

একদা (एकदा) क्रि वि—किसी समय, किसी

একদৃষ্টি (ऐकूद्दृष्टि) वि—एक तरफ दृष्टि वाला।

একদৃষ্টে (ऐकूद्दृष्टे) क्रि वि—इकटक।

একদেশ (एकदेश) स—एक अंश, एक स्थान। —দর্শী वि—सिर्फ एक ही तरफ देखने वाला, पक्षपाती, तरफदार।

একনাগাড়ে (एकनागाड़े) क्रि वि—लगातार।

একপঞ্চাশ (एकपञ्चाश) स, वि—एकावन, ५१।

একপত্নী (एकपत्नी) वि—दूसरा विवाह न करने वाला। —ব্রত (-अ) सं—दूसरा विवाह न करनेका व्रत धारण करने वाला।

একপাটা (एकपाटा) स—ओढ़नेकी चादर।

একপাটি (एकपाटी) वि—जोड़ेमें का एक (—জুতা)। [हटा हुआ; झुका हुआ।

একপেশে (एकपेशे) वि—एक बगल हटाया या

একবস্ত্রে (एकवस्त्रे) क्रि वि—एक वस्त्रमें।

একবাক্যে (एकवाक्ये) क्रि वि—एक वाक्यमें एक स्वरसे, सर्वसम्मतिसे।

একবারে (एकवारे) क्रि वि—एक वारमें।

একমত (एकमत) वि—एकमत एकराय।

একমনে (एकमने) क्रि वि—एकाग्र हो कर, एक चित्तसे।

একমাত্র (एकमात्र-अ) क्रि वि—सिर्फ एक।

একমেটে (एकमेटे) वि—एक वार मिट्टीका लेप दिया हुआ (मूर्ति आदि), अधुरा, असम्पूर्ण।

একজোট (एकजोट) वि—एकत्रित, मिलित।

একরতি (एकरति) सं—एक रत्तीका परिमाण। वि—थोड़ा, जरा सा। [छोटी (—মেয়ে)।

একরত্তি (एकरत्ति) वि—बहुत छोटा, नन्हा,

একরার (एकरार) स इकरार, स्वीकार।

একরোখা (एकरोखा) वि—हठी, जिद्दी, क्रोधी; एकरुख।

একলা (एकला) वि—अकेला।

একশা (एकशा) वि—मिलित, मिश्रित, मिलाजुला; एक-सा, समान।

একশিরা (एकशिरा) सं—एकशिरा रोग, एक कोष बढ़ जानेको बीमारी।

একশেষ (एकशेष) वि—अत्यन्त (অপমানের—)।

একষট্টি (एकषट्टि) सं, वि—एकसठ, ६१।

একহাঁটু (एकहाँटु) वि—घुटने तक (—জল, —কাদা)। [(দূর—পিটিয়ে দিলে)।

একহাত (एकहात) वि—एकहाथ आड़हाथ

একহারা (एकहारा) वि—इकहरा; दुबला-पतला (—চেহারা)।

একা (एका) वि—একক अकेला, सिर्फ।

একাকার (एकाकार) वि—समान, एकमें मिश्रित, मिलाजुला (এঁটো পিঠে সব—হয়)।

একাকী (एकाकी) वि—अकेला। क्रि वि—एकान्तमें (—বসিয়া কি ভাবিতেছ?)। स्त्री—একাকিনী।

একাত্তর (ऐकात्तर) सं, वि—एकहत्तर, ७१।

একাদিক্রমে (एकादिक्रमे) क्रि वि—पहलेसे, शुरूसे; लगातार (—তিন মাস ভুগিয়াছি)।

একাধারে (एकाधारे) क्रि वि- एक आधारमें; एक वस्तु या व्यक्तिमें।

একানব্বই (एकानब्बइ) स वि—एकानवे, ९१।

একান্তই (एकान्तइ) क्रि वि—यथार्थमें, सचमुच ही (তুমি—যাবে?)।

একান্ন (ऐकान्न-अ) वि, सं—इक्कावन, ५१, एक ही साथ बहुतोंकी रसोई। —বর্তী পরিবার सं—जिस परिवारमें बहुतसे कुटुम्बियोंकी रसोई एकसाथ होती है।

একারণ (एकारन) क्रि वि—इस कारण, इस लिए, अत।

একাশি (ऐकाशी) स, वि—इक्कासी, ८१।

একি अव्य—यह क्या है? यह क्या?

একুনে (एकुने) क्रि वि—একত্রে, মোট कुल।

একুশ (एकुश) सं, वि—इक्कीस, २१।

একুশে (एकुशे) स—सौर मासकी इक्कीस तारीख (को)। [এ কে, यह कौन है?

একে (एके) सर्व—इसे, इसको (—চেনা যায়);

একে (ऐके) क्रि वि—एक तो (—জ্বর তায় গিলে !), एकको (—চায় আর পায়)।
একে একে (ऐके ऐके) क्रि वि—एक एक करके।
একেবারে (ऐकेबारे) क्रि वि—एकदम, बिलकुल (—অকর্ম্মণ্য ; —নিবিয়া গেল), पूर्ण रूपसे (—দান করিলাম)।
একো (एको) वि—अकेला (—গুড)।
এক্কা (एक्का) सं—इक्का (—গাড়ী)।
এক্কেবারে (ऐक्केवारे) क्रि वि—একেবারে एकदम, बिलकुल। [वि—अब, इस समय।
এক্ষণ (एक्खन) सं—यह क्षण। এক্ষণে क्रि
এক্ষুনি (एक्खुनि) क्रि वि—এখনই अभी, इसी समय। [अधिकार।
এখতিয়ার (एख्तियार) सं—इखतियार,
এখন (ऐखन) क्रि वि—अब, इस समय। এখনই, এখনি, এখুনি क्रि वि—अभी, इसी समय। এখনও, এখনো (ऐखनो) क्रि वि—अब भी, इस समय भी, अब तक भी (—তারে চোখে দেখি নি ; —আমলে দেখা হ'ত), इस हालतमें भी (এখনো জাগিয়া ওঠরে সবে এখনো সৌভাগ্য উদয় হবে)। —কার वि—इस समय का (—ছেলেরা প্রায় নাস্তিক)। —কার মত (-अ) क्रि वि—इस समयके लिए (—যাও) ; इस समयके योग्य या उपयोगी (—এই জামা দিয়াই চালাও)।
এখান (एखान) सं—यहाँ, यह स्थान, यह दुनिया। —কার वि—यहाँका, इस स्थान का, इस दुनियाका। এখানে क्रि वि—यहाँ, इस स्थानमें। এখানের वि=এখানকার।
এগজামিন (एग्जामिन) स—परीक्षा, इम्तहान।
এগজিকিউটার (एग्जिक्युटार) स—नाबालिग की सम्पत्तिका प्रबन्धकर्त्ता।
এগন (-नो), এগনো, এগোনো, এগুনো (क्रि परि १०)—अग्रसर होना, आगे बढ़ना (এক পা —দুই পা পিছনো)। এগিয়ে দেওয়া (एगिये देवा) क्रि—आगे बढ़ा देना, उन्नतिमें सहायता देना ; कुछ दूर साथ जाना ; साथ साथ जा कर पहुँचा देना।
এগার (-अ) सं, वि—इग्यारह, ११। —ই सं—सौर मासकी इग्यारहवीं तारीख (को)।
এগুতে (एगुते) क्रि वि—पहले, आगे बढ़नेमें।
এগুলা सर्व—ये सब (तुच्छार्थ में)।
এঁচড় सं=इँचड।
এঁচে নেওয়া क्रि=আঁচা। [कारण।
এজন্য (एजन्य-अ) क्रि वि—इस लिए, इस
এজমালি (एज्मालि) वि—इज्माली, अनेकों के भोग-योग्य (—সম্পত্তি)।
এজাহার सं—इजहार ; गवाही।
এজেন্ট सं—एजंट, प्रतिनिधि agent
এজেন্সী (एजेन्सी) सं—एजंटका काम या दफ्तर।
এঞ্জিন (एञ्जिन) सं—अंजन Engine
এটা, এটি सर्व—यह विषय वस्तु या व्यक्ति (तुच्छार्थमें এটা और प्रियार्थमें এটি)।
এটেল, এঁটেল (-अ) वि=আঠাল।
এঁটো सं=উচ্ছিষ্ট।
এড়ান (-नो), এড়ানো (क्रि परि १०)—बचा जाना, दूर रहना।
এড়িতোলা জুতা स—स्त्रियोंका एड़ी ऊँचा किया हुआ जूता।
এঁড়ে वि—मर्दाना (—বাছুর) ; साँड़की आवाज-सा (—গলা) ; बच्चोंका अजीर्ण रोग।
এড়ো वि—एक ओर झुका हुआ ; चौड़ाईकी ओर।
এত (ऐत-अ) वि—इतना (—কাপড়, —জল, —লোক, —চাই না)। এতটা वि—इतना (परिमाण) (—দুধ, —চিনি)। এতটুকু वि—इतना-सा (अल्पार्थमें) (—তেল)

এতদর্থে ক্রি বি—इस लिए, इसके उद्देश्यसे।
এতাদৃশ (-অ) वि—इस प्रकारका ऐसा।
এতাবৎ वि—इतना, यह सब।
এতে सर्व—ইহাতে इसमें।
এতেক सर्व—इतना, यह शब्द या वाक्य।
এত্তেলা सं—इत्तला, सूचना, खबर।
এদিক सं—यह दिशा; यह पक्ष। এদিকে क्रि वि—इधर, इस ओर।
এদের सर्व—ইহাদের इनलोगोंका या को।
এদ্দিন (ऐद्दिन) सं—इतने दिन।
এন্তার वि—অপার बहुत अधिक। [वस्त्र।
এপ্রন सं—পোষাকের বহিরাবরণ सामनेका
এপ্রিল सं—अप्रेल April [किया हुआ।
এফোঁড়-ওফোঁড় वि—इधरसे उधर तक छिद्र
এবং अव्य—ও और (साधारणतया दो शब्दोंके बीचमें ও और दो वाक्यों या वाक्यांशोंके बीचमें এবং इस्तेमाल होता है)।
এবড়ো খেবড়ো (एबड़ो खेबड़ो) वि—खुरदरा, ऊँचानीचा।
এবার (एबार) क्रि वि—अबकी बार; अब।
এবারৎ सं—लेख, इबारत, मुहावरा।
এবে (एबे) (पद्यमें) क्रि वि—अब, इस समय।
এমত वि—এমন ऐसा।
এমন (ऐमन) वि—ऐसा, इस प्रकारका। এমনই, এমনি (एमूनि) क्रि वि—ठीक इसी प्रकार। এমনিতর (-अ) वि—ऐसा, इसी प्रकारका।
এযাবৎ (एजावत्) क्रि वि—अब तक।
এয়ো सं—सधवा, सौभाग्यवती। এয়োতি सं—सधवाका लक्षण या चिह्न। এয়োতী सं—सधवा।
এরণ্ড (-अ) सं—ভেরেণ্ডা रेंड़ी।
এরা सर्व—ইহারা ये लोग।
এরারুট सं—পালো अरारूट।
এর सर्व—इसीका, इतने ही (में) (—মধ্যে)।
এরূপ वि—এইরূপ ऐसा। এরূপে क्रि वि—ऐसे।
এরে सव—ইহারে, ইহাকে इसको।
এরোপ্লেন सं—हवाई जहाज।
এলাকা सं—इलाका, दखल, अधिकार; सीमा, सम्बन्ध, लाग।
এলাচি, এলাইচ, এলাচ सं—इलाइची (ছোট—, বড়—)। —দানা सं—चीनीका इलाइची दाना।
এলান (-नो), এলানো (क्रि परि १०)—আলুলায়িত করা स्त्रियोंका केश खोल कर बिखेर देना; लेटना या अधिक क्लान्तिसे शरीर ढीला पड़ जाना (এলিয়ে পড়েছে)। वि—আলুলায়িত, এলো (केश) खुला, बिखेरा हुआ, फैला हुआ।
এলাহি, এলাহী (एलाही) वि—इलाही, महान, विशाल (—কাণ্ডকারখানা, बड़ी सभा या बड़े ज्योनार आदिका प्रबन्ध देख कर ऐसा कहा जाता है)।
এলুমিনিয়ম सं=অ্যালুমিনিয়ম।
এলেম सं—इल्म, विद्या ज्ञान। क्रि—আসিলাম (मैं) आया (या आयी) या (हम) आये (या आयी)।
এলো वि—এলানো, আলুলায়িত (केश) खुला, मुक्त (—চুল, —খোঁপা); असम्बद्ध (—কথা); अनियत, विशृंखल (—হাওয়া)। क्रि—আসিল (वह) आया (या आयी) या (वे) आये (या आयीं)। —পাতাড়ি क्रि वि—जहाँ तहाँ (—লাঠির বাড়ি)। —মেলো वि—असम्बद्ध, विशृंखल; खुला।
এস (एशो) क्रि—আইস आओ।
এসপার ওসপার (एस्पार ओस्पार) क्रि वि—इस पार या उस पार, मरूँगा या मारूँगा। स—सफलता या विफलता; अन्तिम निर्णय।

এসিটিলিন सं=অ্যাসিটিলিন।

এসিড सं=অ্যাসিড।

এস্তেহার सं—इश्तहार, विज्ञापन।

এহেতু क्रि वि—इस हेतु, इस कारण।

এহেন (-अ) वि—হেন, এরূপ ऐसा।

ঐ

ঐ (अइ) सर्व—वह, सामनेवाला (—দেখ)। वि—पहले कथित, ऊपरोक्त, पूर्व-लिखित।

ঐকতান (अइकतान्) सं—एकतानमें बजनेवाले बाजोंकी ध्वनि।

ঐকবাক্য (आइकवाक्य-अ) सं—एकवाक्यता, ऐकमत्य, एकराय।

ঐকমত্য (अइकमत्य-अ) सं—मतकी एकता।

ঐকাগ্র্য (अइकाग्र-अ) सं—एकाग्रता।

ঐকান্তিক (अइकान्तिक) वि—अत्यन्त, दृढ़।

ঐকাহিক (अइ-) वि—प्रतिदिनका, रोजाना।

ঐক্য (अइक्य-अ) सं—एका, एकता, मेल।

ঐচ্ছিক (अइ-) वि—स्वेच्छासे गृहीत, वैकल्पिक optional

ঐছন (अइछन्) वि—वैसा, उस प्रकारका।

ঐতিহ্য (अइतिज्झ-अ) सं—কিংবদন্তী प्रवाद, कहावत।　[जादूगर सम्बन्धी।

ঐন্দ্রজালিক (अइ-) सं—जादूगर। वि—

ঐরাবত (अइरावत्) स—इन्द्रका हाथी।

ঐশ (अइश -अ) वि—ईश्वरीय, ईश्वरका। स्त्री—ঐশী।

ঐশ্বরিক (अइश्शरिक) वि—ईश्वर-सम्बन्धी।

ঐশ্বর্য্য (अइश्शर्ज्य-अ) स—विभव, सम्पत्ति, दौलत, योग-साधनासे प्राप्त (कल्पित आठ अलौकिक शक्तियाँ—अणिमा, लघिमा, व्याप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व, कामावसायिता)। —বান, —শালী, —সম্পন্ন (-अ), ঐশ্বর্য্যান্বিত (-अ) वि—दौलतमन्द।

ঐহিক (अइहिक) वि—इस लोकका, इस दुनियाका।

ও

ও सर्व—वह (आदमी)। अव्य—এবং और (রাম ও শ্যাম); भी (রামও যাইবে, इस अर्थमें शब्दके साथ मिला कर ও लिखा जाता है); स्मरण या विस्मय सूचक अव्यय (ও। এবার মনে পড়েছে; ও কি আশ্চর্য্য!)।

ওআড়, ওয়াড় स—गिलाफ, तकियेकी खोली।

ওই सर्व—वह, सामनेवाला। अव्य—खेद या भय सूचक शब्द (—বা! —রে!)।

ওঃ अव्य—ओह, उफ।　[स—ओं-ध्वनि।

ওঁ सं—ओंकार, प्रणव। ওঁকার, ওংকার, ওঙ্কার

ওকালতনামা सं—वकालतनामा।

ওকালতি सं—वकालत। ওকালতী वि—वकालत-सम्बन्धी।

ওকে सव—उसे, उसको।

ওঁকে सर्व—उनको (आदरार्थक एकवचन)।

ওক্ত (ओक्त्) स—वक्त, समय (পাঁচ—নমাজ)।

ওখড়ান, ওখড়ানো क्रि=উখড়ান।

ওখান स—वह स्थान। —কার वि—वहाँका, उस स्थानका (—সব মঙ্গল ত?)। ওখানে क्रि वि—ঐখানে उस जगह, वहाँ (সে দিন তার—গিয়াছিলাম)।

ওগরা (ओगरा) स—एकसाथ सिझाया हुआ चावल और दाल (रोगीका पथ्य)।

ওগরান, ওগরানো क्रि=উগরান।

ওগো अव्य—प्रिय जन या नीचे दर्जेके व्यक्तिके लिए सम्बोधन।

ওচান, ওচানো क्रि=উচান।

ওছা, ওঁছা वि—तुच्छ; गन्दा, घृणा-योग्य।

ওজঃ स —তেজ शक्ति, वल , प्रकाश ।
ওজন स —तौल, वजन , गुरुत्व ; परिमाण ।
ওজর सं —उज्र, बहाना, आपत्ति ।
ওজুহাত स =ওজুহাত ।
ওটকান, টেকানো क्रि=উটকান ।
ওঠা क्रि=উঠা । ওঠান क्रि=উঠান ।
ওড়না (ओड़ना) सं —ओढ़ना ।
ওড়া क्रि=উড়া । ওড়ান, ওড়ানো क्रि=উড়ান ।
ওড়িয়া सं =উড়িয়া ।
ওত, ওৎ सं —घात (—পাতা, घातमें बैठना) ।
ওতপ্রোত (-अ) वि—व्याप्त ।
ওতরান, ওতরানো क्रि=উতরান ।
ওথলান, ওথলানো क्रि=উথলান ।
ওদন सं —भात, अन्न ।
ওদিক सं —वह दिशा, उधरका पक्ष (—টাও দেখ) । ওদিকে क्रि वि—उधर ।
ওদের, ওঁদের=উহাদের, উঁহাদিগের ।
ওপড়ান, ওপড়ানো क्रि=উপড়ান ।
ওপর स =উপর । —ওলা वि—ऊपरवाला , ईश्वर । ওপরে क्रि वि =উপরে ।
ওম্ सं =ওঁ । [अमीर ।
ওমরা, ওমরাহ (ओमराह) सं —उमराह,
ওমা अव्य मताका सम्बोधन ; आश्चर्य सूचक शब्द (—দিডামটা মরে গেল !) [उबकाई ।
ওয়াক (वाक) सं—कै करनेका शब्द ; ओकाई,
ওয়াকিফ वि—वाकिफ, अभिज्ञ, जानकार ।
ওয়াজিব वि - वाजिब, उचित मुनासिब ।
ওয়াড় सं —বালিশের ओहार, गिलाफ (বালিশের—) ।
ওয়াদা सं —वादा, मियाद (কর্জ শোধের—) ।
ওয়ারিশ (वारिश) सं —वारिस । —গান सं —वारिस लोग ।
ওয়ারেন্ট स —वारंट, पकड़नेका हुकुमनामा ।
-ওয়ালা, -ওলা सं —वाला (বাড়ীওয়ালা, পানওয়ালা । स्त्री—ওলী—বাড়ীওলী) ।
ওয়াশিল (वाशिल्) सं —वसूल, अदा, जमा (ওতে আজ ১০০৲—শিলাম) । [রাখি না) ।
ওয়াস্তা सं - वास्ता, अपेक्षा (কাহারো—
ওয়াস্তে क्रि वि—वास्ते, लिए, निमित्त ।
ওর सर्व – उसका ।
ওঁর सर्व—उनका (आदरार्थक एकवचन) ।
ওরফে अव्य—उर्फ बनाम ।
ওরে अव्य—(तुच्छार्थमें सम्बोधन) अरे, अरे ।
ওল सं —सूरन ।
ওলকপি सं —गाँठगोभी, शलगम turnip
ওলট পালট सं =উলট পালট ।
ওলটান, ওলটানো क्रि=উলটান ।
ওলন্দাজ सं —हालंडका निवासी ।
ওলা सं —चीनीका लड्डू । वि—वाला । क्रि –उतरना । —উঠা स —কলের হৈজা ; उतरना-चढ़ना । —বিবি सं —हैजेकी देवी ।
ওলো अव्य—स्त्रीका सम्बोधन (—বউ) ।
ওষধি, (-धी) स —धान केला आदि उद्भिद जो एक बार फल होने पर मर जाते हैं ।
ওষুধ सं —औषधि, दवा ।
ওষ্ঠ (-अ) सं —ঠোঁট होंठ । ওষ্ঠাগত (-अ) वि—होंठ तक आया हुआ (—প্রাণ) ।
ওসকান, ওসকানো सं =উসকান । [चौड़ाई ।
ওসার (ओशार) सं —প্রস্থ, গৃহিণীর अर्ज,-
ওসীয়ৎ स —वसीयत, अन्तिम इच्छा । —নামা सं —इच्छापत्र । [दर्जी ।
ওস্তাগর सं —उस्ताद, प्रधान कारीगर, प्रधान
ওস্তাদ सं —उस्ताद, शिक्षक । वि—निपुण, दक्ष ।
ওস্তাদি, (-दी) स —उस्तादी, करामात ।
ওস্পার क्रि वि—उस पार । [अजी, अबे ।
ওহে अव्य—(समान या नीचे दर्जेका सम्बोधन)
ওহো अव्य—अहो, हाय !

ঔ

ঔচিত্য (अउचित्य -अ) सं—उपयुक्तता ।

ঔজ্জ্বল্য (अउज्ज्वल्य-अ) सं -उज्ज्वलता, चमक ।

ঔৎসুক্য (अउत्सुक्य-अ) सं - उत्सुकता, आग्रह, कौतूहल ।

ঔদরিক (अउदरिक वि—पेट ; पेट-सम्बन्धी ।

ঔদার্য্য (अउदार्य्य-अ) सं—उदारता ।

ঔদাসিন্য (अउदासिन्य अ) सं—उदासीनता, उपेक्षा, लापरवाही ।

ঔদ্ধত্য (अउद्धत्य-अ) सं—धृष्टता, ढिठाई ।

ঔপনিবেশিক (अउपनिवेशिक) वि—उपनिवेश-सम्बन्धी । सं—उपनिवेश-वासी ।

ঔপন্যাসিক (अउपन्याशिक) सं—उपन्यास-कार । वि—उपन्यास-सम्बन्धी ।

ঔপাধিক (अउपाधिक) वि—उपाधि सम्बन्धी ; केवल नाम मात्रका ; कल्पित ; अनावश्यक ।

ঔরস (अउरश) वि—वीर्य्यजात अपने वीर्यसे उत्पन्न (—পুত্র) ।

ঔর্দ্ধদেহিক, (-র্ধ্ব-) (अउर्धदइहिक) वि—मृत्युके बाद अनुष्ठित (—ক্রিয়া, शवदाह श्राद्ध आदि) ।

ঔষধ (अउषध) सं—औषधि, दवा । ঔষধালয় स—दवाखाना । ঔষধি, (-धी) सं—जड़ी-बूटी, दवा । ঔষধীয় (-अ) वि—औषधि-सम्बन्धी ।

ক

ক वि—कय, कत कितना, कितने (ক দিন ? ক টাকা ?) ।

-ক, -কো प्र—निषेधार्थक शब्दमें जोर देनेके लिए प्रत्यय (নাহিক, যেও নাকো) ।

কই क्रि वि—कहाँ (—তিনি ? সে দিন তুমি এলে— ?) । —মাছ सं—एक काँटेदार काली मछली ।

কইয়ে वि—কহিয়ে ।

কইলা, কইলে सं—कपिला दुधिया , क्रि—(तुमने) कहा (কেন কথা— ?) ।

কইসর सं—कैसर सम्राट ।

কএক, কয়েক वि—कुछ, कई एक । [কহান ।

কওয়া क्रि—কহা । কওয়ান, কওয়ানো क्रि—

কংকর सं=कङ्कर । কংকাল सं—কঙ্কাল ।

কংগ্রেস सं—कांग्रेस, जातीय महासभा ।

কংস स—काँसा, कसकूट ; मथुराका राजा कंस । —কার सं—ठठेरा । —বণিক स—कसकूटका बर्तन बेचने वाला, कसेरा ।

ককান (-नो), ককানো (क्रि परि १०)—बच्चों का रोना ; कराहना (কেঁদে ককিয়ে অস্থির করে তুল্লো) ।

কক্ষ (कक्ख-अ) स—कमरा, कोठरी , काँख, बगल , ग्रह-नक्षत्रका भ्रमणमार्ग , कछौटा, लाँग ; सूखी घास ; कमर । —পুট स—बगल ।

কক্ষনো (कक्खनो) क्रि वि—কখনই कभी ।

কক্ষা (कक्खा) स—ग्रह-नक्षत्रका भ्रमण-मार्ग ; पेटी, घेरा , परिधि ; दीवार ; स्पर्धा, प्रतियोगिता । —ন্তর सं—दूसरा कमरा, खास कमरा ।

ক খ स—বর্ণমালা वर्णमाला , प्राथमिक ज्ञान (তুমি চিত্রবিদ্যার কখও জান না) ।

কখন क्रि वि—कब, किस समय ; बहुत पहले (সেই—তোমায় বলেছি) । কখনই क्रि वि—कदापि, कभी । কখন (कखनो), কখনও, কখনো क्रि वि—कभी, किसी हालतमें । কখনও কখনও, কখনো কখনো क्रि वि- कभी कभी ।

কঙ্কর सं—काँकड़ ककड़ ।

কঙ্কাল सं—ठठरी, ढाँचा, शरीरकी हड्डियाँ। —সার वि—बहुत दुबला-पतला, ठठरी मात्र।

কচকচ सं—काटनेका शब्द (—করিয়া কাটা); चबानेका शब्द, बड़बड़ाहट।

কচকচি सं—झगड़ा, वाद-विवाद; चचराहट।

কচমচ सं =কচকচ।

কচলান (কচলানো, কচলাল (क्रि परि १६) —मल मल कर धोना, जलमें रगड़ना।

কচি वि—एकदम कच्चा, नया (—পাতা); छोटा (—শিশু)।

কচু सं—अरुई, अरवी। কচু, —পোড়া स—कुछ भी नहीं (अवज्ञार्थमें) (তুমি করবে— या —পোড়া)।

কচুরি, কচুড়ী सं—कचौड़ी। —পানা सं—जलके ऊपर तैरनेवाला एक नीले फूलका पौधा, जलकुम्भी।

কচ্ছপ सं—काछिम कछुआ।

কচ্ছু सं—পাঁচড়া खुजली; चर्मरोग-जनक विष।

কজ্জল स—अंजन, काजल; स्याही।

কঞ্চি (कञ्चि) स—बाँसकी टहनी।

কঞ্চুক (कञ्चुक) सं—साँपका छोड़ा हुआ सूखा चमड़ा, केंचुली; कवच, चोली।

কট सं—कड़ी चीजके काटनेका शब्द (—করে কাটা या কামড়ানো); (छोटा होने पर কুট, बड़ा होने पर কটোর और बार बार होने पर কুটকুট या কটকট)।

কটক स—सेना, राजधानी; पहिया; शिविर।

কটকট सं—दर्द, टीस (দাঁত—করে)।

কটকটানি सं—तेज दर्द, दुपदपाहट (দাঁতের—)।

কটমট सं—कठोरता या क्रोधका लक्षण प्रकट करने वाला भाव (—করে চাওয়া या তাকানো)।

কটা वि—भूरा; गोरा (अवज्ञार्थमें)।

কটাক্ষ (কটাক্ষ-অ) स—तिरछी चितवन; व्यंगपूर्ण आक्षेप।

কটাহ सं—কড়াই कड़ाही।

কটি, (-টী) स—কোমর कमर।

কটু वि—कड़ुआ; कठोर, कड़ा।

কটূক্তি सं—कटु वचन, गाली, अप्रिय बात।

কড়কড়, কড়মড় स—बादलकी गरज, हड्डी चबानेका शब्द। কড়কড়ে, কড়মড়ে वि—सूखा; चबानेसे कड़कड़ आवाज करने वाला (—মুড়ি)।

কড়চা (कड़्चा) स =[illegible]।

কড়া वि—कड़ा, दृढ़ (—ইস্পাত, —বাঁধন); तीव्र, तीखा (—রোদ, —তামাক, —গন্ধ); प्रबल, उग्र (—শাসন, —মেজাজ)। सं—लगातार रगड़से उत्पन्न हाथ या पैरके चमड़े में कड़ाई; घट्टा; कड़ाही; कौड़ी; जरा-सा (এক—কানাও নেই); लोहे या पीतलकी बड़ी अंगूठी जो केवाड़ या दरवाजेमें लगायी जाती है (দরজার—খটখট করা)।

কড়াই सं—कड़ाही, उर्दकी दाल।

কড়াইশুঁটি स—मटर-सीमी।

কড়াকড়ি सं—कठोर नियम; शासन।

কড়াকিয়া सं—कौड़ी गण्डा आदि गिननेकी फिहरिस्त। [कौड़ी।

কড়াক্রান্তি सं—बहुत छोटा अंश; दमड़ी।

কড়াৎ स—कड़क।

কড়ায় গণ্ডায় ক্রি वि—अन्तिम कौड़ी तक (আমার পাওনা আমি—বুঝে নেব)।

কড়ার स—करार, स्वीकार।

কড়ি स—कौड़ी; धन (টাকা—); छतकी धरन (—কাঠ)।

কড়ে वि—छोटा (—আঙুল); बचपनका (—রাঁড়ী, बचपनकी विधवा)।

কণা, কণ सं—রেণু कण।

কণিকা सं—कण, किनका, रवा, बहुत छोटा टुकड़ा।

কণীনিকা सं—आँखकी पुतलीके चारों ओरका रंजित घेरा Iris [रोमांचयुक्त, पुलकित।

কণ্টকিত (-अ) वि—काँटेदार, कँटीला,

কণ্টিকারী सं—एक कँटीली झाड़ी, भटकटैया।

কণ্ঠ (-अ) सं—गला (—স্বর, —শব), स्वर (স্ব—)। —শ্বাস सं—मृत्युके पूर्व गले तक आयी हुई साँस। —গত, কণ্ঠাগত (-अ) वि—गले तक आया हुआ (—প্রাণ)। —স্থ (अ) वि—कण्ठस्थ, याद (সব কবিতা—)। [हड्डियाँ।

কণ্ঠা सं—कण्ठास्थि, गलेके दोनों ओरकी दो

কণ্ঠি स—कंठी, गलेकी छोटी माला, तुलसी की माला। —বদল सं—वैष्णवोंका कंठी बदल कर विवाह।

কণ্ডু, কণ্ডূ स—चूलकानि, খোস-পাঁচড়া खुजली।

কণ্ডূয়ন सं—खुजलाना; खुजलाहट।

কৎবেল सं—कैथ।

কত (-अ) वि—कितना (—টাকা, —দিন); बहुत (—করে সাধিলাম); किस दामका (আম—করে শ'?)। —কি वि—अनेक प्रकार (—বলেছি মনে নাই)। —ক্ষণ क्रि वि—कितने समयसे या तक (—বসে আছ या ছিলে?)। —না वि—कितना ही, खूब (সে—চেঁচাচ্ছে!)।

কতক वि—थोडा, कुछ अंश (জ্বর—কমেছে); कई एक (ছেলেদের মধ্যে—ভাল আর—মন্দ)। —টা वि—थानिकटा कुछ, थोड़ा।

কতটা (कतोटा) वि—कितना (परिमाण), कितनी (दूर)।

কতটি (कतोटि) वि—कितने (संख्यामें)।

কতটুকু (कतोटुकु) वि=কতটা।

কতল सं—कत्ल, हत्या।

কতিপয় वि—कुछ, कई एक।

কথকতা स—प्राचीन कथाका सगीत आदिके साथ व्याख्यान; कथक या पौराणिकका काम।

কথঞ্চিৎ वि—कुछ, थोड़ा, अंशतः, किसी तरह।

কথনীয় (-अ) वि—कहने योग्य, कहा जाने वाला।

কথা स—बात; गल्प, कहानी; कथा; विवरण, ब्योरा (তার চরিত্রের—আর বলিও না); वचन (—দেওয়া); प्रवाद, लोकोक्ति (কথায় বলে)। —কাটাকাটি सं—वाद-प्रतिवाद, तर्क, झगड़ा। —চালাচালি सं—बात फैलाना। —পাড়া क्रि—बात उठाना। —শোনা क्रि—बात सुनना, कहा मानना। কথায় কথায় क्रि वि—बात-बातमें, बातकी बातमें। কথায় থাকা क्रि—बातमें रहना, आलोचनामें शामिल होना। কথার— सं—मामूली बात। —ন্তর, सं—कथा-काटाकाटि झगड़ा; मनमुटाव; दूसरा प्रसग। —বার্তা सं—बातचीत।

কথোপকথন स—बातचीत।

কথ্য वि—मौखिक, जबानी (—ভাষা, बोल-चालकी भाषा), कहने योग्य।

কদন্ন (-अ) स—खराब अन्न।

কদভ্যাস स—बुरी आदत, लत।

কদম सं—কদম্ব ফুল कदम फूल, पैर, घोडेकी कदुरा चाल। [लड्डू।

কদমা (कद्मा) सं—चीनीका बना पोला

কদম্ব (-अ) सं—कदम फूल।

কদর্থ (-अ) सं—विकृत अर्थ, खराब माने।

কদর্য্য (कदर्य्य-अ) वि—गन्दा, नीच, भद्दा।

কদলী सं—কলা केला।

কদাকার सं—विश्री बदसूरत। [हालतमें भी।

কদাচ क्रि वि—কখনই कब भी, किसी

কদাচার स —दुराचरण, बुरा आचरण। কদাচারী वि दुराचारी, बुरा आचरण करने वाला।

কদাচিৎ क्रि वि —किसी समय, कभी।

কদাপি क्रि वि = কদাচ।

কদু सं —লাউ कद्दू।

কদুষ্ণ (कदुष्ण-अ) वि —गुनगुना।

কদ্দিন क्रि वि —কত দিন कितने दिन।

কদ্দূর क्रि वि —কত দূর कितनी दूर।

কনক सं —सोना; चम्पक, चम्पा। —ক্ষার सं —সোহাগা सुहागा Borax.

কনকচুর सं —एक प्रकारका धान।

কনকন (कन्कन्) स —दर्द, टीस (দাঁত— করে)। वि —बहुत ठण्ढा (ঠাণ্ডা জল— করে)। কনকনানি स —दर्द, टीस; बहुत ठण्ढ। কনকনে वि —बहुत ठण्ढा।

কনাৎ, কনাত स —खेमेका परदा, कनात।

কনীনিকা सं = कनीनिका।

কনুই सं —বাহুর মধ্য-গ্রন্থি कोहनी।

কনে स्त्री —বিবাহের পাত্রী विवाहके लिए मनोनीत कन्या (বর—)। —বউ स्त्री —नयी बहू, छोटी बहू।

কন্থা स —কাঁথা कथरी।

কন্দর स —कन्दरा, गुफा।

কন্দুক सं —গেঁদ, बाल Ball

কন্ধকাটা वि = কবন্ধ।

কন্না सं = কন্না। ঘর— सं —गृहस्थीका काम।

কন্যা स —মেয়ে लड़की। —কর্তা सं — विवाहमें कन्या पक्षके प्रधान व्यक्ति। —দায় सं —कन्याका विवाह रूप खर्चीले कामका बोझ। —যাত্রি, (-ত্রী) सं —विवाहमें कन्या पक्षके निमन्त्रित लोग, घराती।

কপ सं —मुँहमें डालनेका शब्द (—করে খেয়ে ফেলে)। (बड़ा होने पर কপাৎ, छोटा होने पर টুপ और बार बार होने पर কপ্‌কপ্‌ या কপাকপ)।

কপচান (कपचानो), কপচানো (क्रि परि ९६) —सिखायी हुई बात बोलते रहना; चिड़िया की बोली बोलना।

কপট वि —कपटी, फरेबी। —তা सं —कपट, फरेब, छल। কপটাচারী वि —कपटी, फरेबी।

কপনি (कप्नि) सं —ল্যাঙট लगोट, कौपीन।

কপর্দক स —कौड़ी (—হীন, गरीब)।

কপাট, কবাট स —किवाड़, आवरण (মনের —)। কপাট দেওয়া क्रि —किवाड़ बन्द करना। [কবাড্ডি।

কপাটি, কবাটি, কবাডি स —হাডুডু খেলা

কপাটি सं —খিল दृढ़ सयोग (দাঁত—লাগা)।

কপাল सं —ললাট ललाट, माथा; भाग्य (—মন্দ)। কপালে— भाग्य वाला (পোড়া —)। —ক্রমে क्रि वि —भाग्यसे।

কপি सं —বানর बन्दर; कापी, नकल; गोभी। ফুল— स —फूल गोभी। বাঁধা— स —करमकल्ला, बन्द गोभी।

কপিকল स —भारी बोझ उठानेका यन्त्र, चरखी, घेरनी Pulley

কপিত্থ (-अ) सं —কৎবেল कैथ।

কপিল वि —भूरा, खैरा।

কপোত स —পায়রা कबूतर। [मनगढ़न्त बातें।

কপোল सं —গাল गाल। —কল্পনা सं —

কফ स —कफ, बलगम; कमीज आदिका हाथ, कफ।

কফি स —गोभी; एक बीज (यह चायकी तरह इस्तेमाल होता है), काफी।

কবজা (कब्जा) स —कब्जा।

কবজি (कब्जि) सं —মণিবন্ধ कलाई।

কবন্ধ (-अ) सं —কন্ধকাটা सिर-कटा, भूत आदि; बे-सिरका शरीर।

কবর सं—গোর कब्र, समाधि।

কবরী सं—খোঁপা जूड़ा।

কবল सं—গ্রাস ग्रास, कौर; कुल्ला; क़ब्ज़ा, दखल। কবলিত (-অ) वि—গ্রস্ত धृत, प्राप्त (কাল—, मृत)।

কবলান (कब्लानो), কবলানো (क्रि परि १६) —स्वीकार करना, कबूल करना; वादा करना।

কবাট सं=কপাট। কবাটি सं=কপাটি।

ক'বার क्रि वि—কয় বার कितनी बार, कई बार।

কবালা सं—বিক্রয়ের দলিল कबाला, बयनामा।

কবি (कबि) सं—कवि, शायर (—গুরু, रवीन्द्रनाथ ठाकुर); गाने वाला (কবির গান, কবির লড়াই, इसमें अशिक्षित लोग तुरंत कविता रच-रच कर एक दूसरेका उत्तर देते हैं)। —ওয়ালা सं—इस प्रकार कवि-गान गाने वाला।

কবিরাজ (कबिराज) सं—कवियोंमें श्रेष्ठ, वैद्य, आयुर्वेदीय चिकित्सक। কবিরাজি सं—वैद्यक, वैद्यका पेशा, चिकित्सा, इलाज।

কবিরাজী वि—वैद्यक चिकित्सा सम्बन्धी।

ক়বুল सं—कबूल, स्वीकार (দোষ—করা)। वि—स्पष्ट (—জবাব); स्वीकृत। কবুলতি, কবুলিয়ৎ सं—स्वीकार-पत्र, क़बूलियत।

কবে (कबे) क्रि वि—किस दिन?

কবোষ্ণ (कबोष्ण-अ) वि—गुनगुना।

কব্জা=কবজা। কবজা, কব্জি, কব্জী=কবজী।

কভু क्रि वि—কখনও कभी।

কম वि—अल्प, कम, थोड़ा, अप्रचुर। —জুরী सं—कमजोरी। —পোক্ত (-অ) वि—कममजबूत। —বক্ত वि—भाग्यहीन, कमबक्त। —বেশ वि—कमो बेश, थोड़ा बहुत; करीब करीब। —মজবুত वि—कममजबूत।

কমতি (कमति) सं—अल्पता, कमी; त्रुटि।

কমলা स्त्री—लक्ष्मी। —পতি सं—विष्णु।

কমলা (कमला), —লেবু, (-नेबू) सं—नारंगी, सतरा।

কমা सं—(,) लघु विराम चिह्न।

কমা (क्रि परि १)—कम होना, घटना।

কমান (कमानो), কমানো (क्रि परि १०) —कम करना, घटाना।

কমিটি, (—टी) सं—कमेटी, समिति।

কমিশন सं—कमिशन, दस्तूरी, दलाली, जाँच-कमेटी। কমিশনার सं—कमिशनर।

কম্প (-অ) सं—কাঁপুনি थरथराहट, कम्पन (—দিয়ে জ্বর এল)। কম্প (कम्प्) सं—कप, खेमा, डेरा।

কম্পানি सं=কোম্পানি।

কম্পোজ सं—कंपोज, छापनेके लिए अक्षर सजानेका काम। কম্পোজিটার सं—कपोजिटर, छापेका अक्षर सजाने वाला।

কম্পোজিটারি सं—कपोजिटरका काम या पेशा।

কম্ফর্টার सं—गुलूबन्द।

কয় वि—ক, কত कितना (—জন, —টি, —দিন); कुछ (এ —দিন থাক)।

কয়লা सं—कोयला (পাথুরে—, কাঠ—)।

কয়াল सं—आढ़तमें तौलने वाला। কয়ালি सं—तौलने वालेका काम या मजूरी।

কয়েক वि—कई एक।

কয়েতবেল सं—কৎবেল कैथ।

কয়েদ सं—কারা, জেল কৈद। কয়েদী सं—[कैदी।

করকচ (करकच्) सं—समुद्रका जल सुखा कर बनाया हुआ नमक।

করকবলিত (-অ) वि—हाथसे पकड़ा हुआ, धृत; दखलमें किया हुआ।

করকর (कर्कर्) सं—जलन (চোখ—করে)।

করকরে वि—बालू सा; दानादार, किरकिरा।

করকা सं—शिला वारिशके साथ गिरने वाला पत्थर।

कर ग्रहण सं—कर मालगुजारी या शुल्क ग्रहण ; पाणि-ग्रहण, विवाह, हस्त धारण।

করচা सं—कड़चा (वैष्णव साहित्यमें) पद्यमें लिखित इतिहास, मालगुजारीका हिसाब।

করজোড়ে क्रि वि—हाथ जोड़ कर, विनयसे।

করঞ্জ, করঞ্জক सं—करौंदा, एक खट्टा छोटा फल।

করণ सं—करनेकी क्रिया ; सम्पादन, समाप्ति ; गठन, साधन, उपाय ; कारण।

করণীয় (-अ) वि—करने योग्य। —घर सं —विवाह सम्बन्ध करने योग्य कुल।

করত (-अ) क्रि—करिया करके (চিন্তা—)।

করতল सं—হাতের তেলো हथेली।

করতাল सं—झाँझ, करताल। [का शब्द।

করতালি, (—লী) सं—ताली, दोनों हथेलियों

করদ वि—कर या मालगुजारी देने वाला (—রাজ্য, पहलेकी देशी रियासत)।

করনা (कर्ना) सं—করা कार्य, कृत्य (घर—)।

করপীড়ন सं—करमर्दन ; पाणि-ग्रहण।

করবী, (-বীর) सं—कनेर, करवीर।

করমচা (करमचा) सं—करौंदा, एक खट्टा छोटा फल।

করলা, করেলা सं—करेला।

করা (क्रि परि १)—करना (কাজ—, বাজার—, বাতাস—) ; लगाना (জোর— বুদ্ধি—) ; लेना (কাঁধে—, মনে—, হাতে—, গায়ে—)। वि—किया हुआ (ওজন—জিনিষ, —কাজ)।

করাত सं—आरा। করাতী सं—आराकश।

করান (-নো), করানো (क्रि परि १०)—कराना।

করায়ত্ত (-अ) वि—हाथमें आया हुआ ; प्राप्त।

করারে क्रि वि—वादेसे, वशर्ते कि।

করাল वि—भीषण, विकट, डरावना।

করিতকর্মা (करित्-) वि—কার্যক্ষম कार्यदक्ष, निपुण, अनुभवी।

করিয়া, ক'রে क्रि—करके ; से, द्वारा (হাতে—, নৌকা—) ; उपायसे (দি—) ; क्रमशः (একটি ছটি—) ; हेतु (তাতে ক'রে, उस कारण)।

করী सं—हाथी, गज, मातंग। स्त्री—করিণী

করুণচিত্ত (-अ) वि—दयालु, मिहरबान।

করুণার্দ্র (-अ) वि—दयासे पिघला हुआ, कृपालु।

কর্ক, কাক सं—ছিপি काग, डाट।

কর্কট सं—काँकड़ा केकड़ा।

কর্জ্জ (अ) सं—ऋण, कर्ज, उधार।

কর্ণান্তর सं—दूसरेका कान (একথা যেন কর্ণান্তরে না যায়) ; कानका भीतरी भाग।

কর্ণিক सं—करनी, जिस औजारसे दीवारों गारा आदि लगाते हैं।

কর্ত্তন सं—ছেদন छेदन, काटना।

কর্ত্তনী सं—काँचि कैंची, कतरनी।

কর্ত্তরী, কর্ত্তরিকা सं—কাটারি हँसुआ।

কর্ত্তাতি করা क्रि—दूसरेके काममें अपनेको कर्ता जाहिर करना, दस्तदाजी करना।

কর্ত্তাভজা सं—गौरांग महाप्रभुके अनुयायी एक वैष्णव पन्थ।

কর্ত্তিত (-अ) वि—कटा।

কর্তৃক विभ—द्वारा (আমা—প্রদত্ত)।

কর্তৃপক্ষ (-पक्ख-अ) सं अधिकारीवर्ग अफसर लोग।

কর্ত্রী स्त्री—मालकिन, गृहिणी, अध्यक्षा रचयित्री (গ্রন্থ—)।

কর্দম सं—কাদা कीचड़। কর্দমাক্ত (-अ) वि—কাদামাখা कीचड़ लगा हुआ।

কার্পাস सं—कपास।

কর্পূর सं—कपूर, काफूर।

কর্ম্ম (-अ) सं—कार्य, काम ; पाप या पुण्य कर्म (-फल, कर्म्मेर भोग), नौकरी ; पेशा (क्रि—करा हय ?)। —कार सं—कामार लुहार। —कारी वि—कार्य करने वाला। —ज (-अ) वि—कर्मसे उत्पन्न। —फल सं—सुख-दुःख। —ठ (-अ) वि—काममें चतुर, काम कर सकने वाला, समर्थ। —ण्य (-अ) वि—करने योग्य, काम-लायक ; उपयोगी, चतुर, निपुण। —नाशा वि—काममें बाधा डालने वाला, काम विगाड़ने वाला। —विपाक सं—कर्म्मफल कर्मफल, अपनी करनीका फल सुख या दुःख।

कर्म्मार्ह (-अ) वि—कामके योग्य।

कर्म्मिष्ठ (-अ) वि=कर्म्मठ। [खेतिहर।

कर्षक सं—जोतनेवाला, कृषक, किसान,

कर्षण सं—चाष कृषि, खेती।

कर्षणीय (-अ) वि—जोतने योग्य, खेती करने लायक ; आकर्षण करने या खींचने योग्य।

कर्षित (-अ) वि—जोता हुआ ; आकृष्ट।

कल सं—मीठी आवाज (-कंठ, -ध्वनि, -रव) ; यन्त्र (जलेर—) ; चतुराई (कले-कौशले)। —टेपा क्रि—गुप्त रूपसे सिखाना या उसकाना।

कलकल, कलध्वनि (कलध्वनि) सं—जल-प्रवाह का शब्द ; कोलाहल, शोर।

कलका (कल्का) सं—लता-पत्तीका चित्र, बेलबूटे (-पाड़, धोती या साड़ीका बूटेदार किनारा)।

कलके (कल्के) सं—छिलिम चिलम ; कलि, कुँड़ि कोंपल (फुलेर—)। —पाओया क्रि—समाज या सभामें सम्मानित होना।

कलङ्क (-अ) सं—दाग, धब्बा, कालिख, लांछन, बदनामी ; ऐब, दोष, मुरचा, जंग ; जो नीली काई पीतल आदिके बरतनमें जमती है। कलङ्की वि—दोषी बदनाम, कलंकी। स्त्री—कलङ्किनी।

कलत्र (-अ) सं—पत्नी, स्त्री, दारा।

कलप सं—कलफ, माँड़ी ; कलप, खिजाब।

कलभ सं—हस्तिशावक हाथीका बच्चा।

कलस (कलश), कलश, कलसि (-सी, -सि, -सी) सं—गगरा, घड़ा।

कला स—केला (पाका—, काँचा—) ; कला ; कुछ भी नहीं (तुमि पाबे—)। —देखानो क्रि—अंगूठा दिखाना या बताना, धोखा देना, छकाना। —झाड़ सं—केलेकी झाड़ी। —तला सं—विवाहमें वरको खड़ा करनेके लिए चार केलेके पेड़ोंके बीचका स्थान।

कलाइ सं—कड़ाइ उर्दकी दाल ; कलई।

कलाइशुँटि सं—कड़ाइशुँटि मटरसीमी।

कलाबत् सं—कालाबात।

कलाय सं—डाल दाल ; उर्दकी दाल।

कलि, कली सं—कलिका, कुँड़ि मुकुल, कली, बिना खिला फूल ; तिलक, गानेका पद ; चूना, मकानकी सफेदी। —चून सं—सीप घोंघा आदि जलाकर बनाया हुआ चूना।

कलिका सं—कलि, कुँड़ि कली, मुकुल ; छिलिम, कलके चिलम।

कलिङ्ग (-अ) सं—उड़िसा देश।

कलिजा, कलेजा सं—हृदय, दिल ; कलेजा।

कलु सं—तैलकार कोल्हूमें तेल पेड़ने वाला। स्त्री—कलुनी।

कलुष सं—पाप, मल, दोष। कलुषित (-अ) वि—दूषित, कलंकित, पापी।

कलेक्टर सं—कालेक्टर ; वसूल करने वाला (बिल—)।

कलेज सं—कालेज, उच्च शिक्षालय।

कलेवर सं—शरीर, देह, तन, वदन।

কলেৱা सं—हैजा, कालरा।
কল্কা सं=कल्का।
কল্প (-अ) सं—सकल्प, प्रतिज्ञा (দৃঢ়—); सदृश (গৃহ-); युग; नियम-पालन, व्रत (-বাস)। —তরু सं—स्वर्गीय वृक्ष, प्रार्थना करते ही जिससे अभीष्ट वस्तु मिलती है; अत्यन्त दाता।
কল্মষ (कल्मष) सं—कलुष पाप।
কল্য (-अ) सं—आगामी काल आने वाला कल; গতকাল पिछला दिन, बीता कल। —কার वि—अगले या पिछले दिनका।
কল্যাণ सं—कल्याण, कुशल, मगल। কল্যাণীয় (-अ) वि—कल्याणयुक्त (स्नेहपात्र)। स्त्री—কল্যাণীয়া। (चिट्ठी-पत्रीमें कनिष्ठ पुरुषको কল্যাণবরেষু या কল্যাণীয়েষু और स्त्रीको কল্যাণবরাসু या কল্যাণীয়াসু लिखा जाता है)।
কল্লোল सं—शब्द करने वाली जल-तरंग; कलरव, शोरगुल; आनन्द, उल्लास, किलोल।
কল্লোলিনী स्त्री—नदी।
কশ सं—होंठके दोनों बगलका स्थान।
কশা, কষা, কসা (-कशा) सं—कोड़ा, चाबुक। কশাঘাত सं—चाबुककी मार।
কশা (क्रि परि १), কশান (-नो), কশানো (क्रि परि १०)—चाबुक मारना, कोड़ा जमाना।　[कजूसी।
কশাকশি सं—টানাটানি खींचातानी; दृढ़ता,
কশি सं—रेखा, लकीर (—টানা, लकीर खींचना)।
কশেরু, কশেরুকা सं—মেরুদণ্ড रीढ़, पृष्ठवंश।
কষ सं—কষায় রস कसैला रस।
কষা वि—কষায়-রস-বিশিষ্ট कसैला।
কষা (क्रि परि १)—আঁটা कसना, कस कर बाँधना, जकड़ना (পেঁচ-), कसौटीमें जाँचना (সোনা-); अल्प आँचमें भूनना (মাংস-), हिसाब लगाना (অঙ্ক-); भाव ठहराना, मोल-भाव करना (দর-)। वि—कसा हुआ, मजबूतीसे बँधा हुआ; कंजूस (লোকটা ভারি—), सूखा, नीरस (-ধাত, जिसका पखाना-पेशाब कष्टसे और कम होता है)।
কষাকষি सं—भाव घटानेके लिए जिद (দর-), विरोध (মন-)।
কষাটে वि—कसैला।
কষায় सं—कसैला रस या स्वाद; गुलाबी रंग।
কষায়িত (-अ) वि—আরক্ত, লাল लाल (রোষ— নেত্র); রঞ্জিত रँगा हुआ।
কষি सं—रेखा, लकीर (—টানা, लकीर खींचना); धोतीका जो हिस्सा कमरमें कसा रहता है, कच्चे आमकी गुठली।
কষিত (-अ) वि—कसौटीमें कसा हुआ (—কাঞ্চন)।
কষিয়া, ক'ষে क्रि—कमर कस कर (ক'ষে দৌড় দাও); अच्छी तरह, खूब (ক'ষে বেত লাগাও)।
কষ্ট (-अ) स—क्लेश, दुःख, दर्द, कठिनाई। —কর, —দায়ক वि—कष्ट देने वाला; कठिन। —সাধ্য (-अ) वि—कठिनतासे किया जा सकने वाला। কষ্টে-সৃষ্টে क्रि वि—बहुत कष्टसे।
কষ্টি सं—कसौटी (-পাথর)।
কস सं—मुँहका कोना; रस। কসের দাঁত सं—चबाने वाले दाँत।
কসা क्रि वि=কষা।
কসি सं=কশি।　[—আছে)।
কসুর (कसुर) सं—दोष, त्रुटि; कमी (একটু
কস্তাপাড় सं—साड़ीका चौड़ा लाल किनारा। কস্তাপেড়ে वि—चौड़ा लाल किनारा वाली (-শাড়ি)।　[समय भी।
কস্মিনকালেও (कस्मिन्—) क्रि वि—किसी
কহতব্য (-अ) वि—कहनेके योग्य (—নয়)।

কহা (क्रि परि २)—কওয়া, বলা कहना, बोलना। वि—কথিত कहा हुआ।

কহান (-नो), কহানো (क्रि परि १८)—কওয়ানো, বলানো कहलाना।

কহিয়ে, কইয়ে वि—जो अच्छी तरह बातें कर सकता है, बात करनेमें निपुण, सुवक्ता।

কাই सं—लेई, गोंद, मांड़।

কাঁইবিচি सं—इमलीका बिया।

কাউকে सर्व—किसीको। কাউকেই सर्व—किसीको भी।

কাউর सं—एक चर्मरोग, एकजिमा।

কাওয়াজ सं—कवायद ; चाँदमारी।

কাওয়ালী सं—कौवाली।

কাংস্য, কাংস (कांस्य, कांश अ) सं—কাঁসা कसकुट, कांसा। কাংস্যকার सं—কাঁসারী कसेरा।

কাক, কাগ सं—कौआ ; কর্ক काग, डाट।

কাঁকড়া (काँक्ड़ा) सं—केंकड़ा। —বিছা सं—बिच्छू।

কাঁকর स—ककड़, पत्थरका टुकड़ा।

কাঁকরোল (काँक्-) सं—खेकसा, एक तरकारी जिस पर बहुतसे नरम काँटे रहते हैं।

কাঁকলাস (काँक्लाश्) सं—কৃকলাস गिरगिट, छिपकली।

কাকলি सं—मीठी या सुरीली आवाज।

কাকা सं—খুড়া चचा, पिताका छोटा भाई। কাকী स्त्री—খুড়ী, খুড়ীমা, কাকীমা चाची, पिता के छोटे भाईकी स्त्री।

কা কা सं—काँव काँव, कौएकी आवाज।

কাকাতুয়া सं—काकातुआ।

কাঁকাল सं—কোমর कमर।

কাঁকুই, কাঁকই सं—চিরুণী कघी।

কাঁকুড় सं—खकसा।

কাকুতি सं—बीनती, प्राथना।

কাকে सर्व—किसे, किसको। কাঁকে सर्व—किन्हें, किनको आदरार्थक एकवचन)।

কাকোদর सं—সাপ साँप, सर्प।

কাঁখ सं—काँख, बगल ; कमर।

কাগ सं—काक कौआ।

কাগজ सं—कागज। খবরের— सं—अखबार, समाचार-पत्र। —চাপা सं—कागज दबानेके लिए पत्थर शीशे आदिका टुकड़ा। —পত্র सं— कागजात। কাগজী वि—कागज बनानेवाला, पतला। কাগজী লেবু सं—छोटा नींबू जिसका छिलका कागजकी तरह पतला है। কাগজী মুদ্রা सं—रुपयेका नोट।

কাঙ্গারু सं—कंगारू, आस्ट्रेलियाका एक जानवर Kangaroo.

কাঙ্গাল, কাঙ্গালী, কাঙাল, কাঙালী, কাঙলা, কাংলা ক্যাংলা सं, वि—ভিখারী भीखमंगा, कंगाल ; लालची, लोभी (যশের কাঙাল)।

কাচ, কাঁচ सं—कांच, शीशा। কাঁচপোকা सं—तिलचट्टा।

কাঁচকলা (काँच् कला) सं—तरकारी रूपसे इस्तेमाल होनेवाला कच्चा केला ; कुछ भी नहीं (তুমি খাবে—)। আদায় কাঁচকলায়, आग-फूसका वैर।

কাচা स—नये वस्त्रका टुकड़ा जो माता या पिता की मृत्युके बाद अशौच-कालमें जनेऊकी तरह गलेमें पहना जाता है।

কাচা (क्रि परि २)—धोना, कचारना (কাপড়—)।

কাঁচা वि—कच्चा ; बिना पकाया (-মাংস, -মাছ) ; मिट्टीका (-ঘর, -গাঁথনি) ; जो सूखा न हो (-কাঠ, -বাঁশ, -পাতা) ; अनाड़ी (-লোক, -হাত, লেখাপড়ায়—) ; पहलेका, बादको बदल जानेवाला (-খাতা, -কথা) ; जल्दी उड़ जानेवाला (—রং) ; जो नींद और

भी देर तक हो सकती थी (—ঘুম ভাঙানো)। —ওজন सं—प्रामाणिक तौलसे कम तौल। —চুল सं—काला केश। —পয়সা सं—जो धन थोड़ी मिहनतसे रोज आता है। —মিঠা वि—कच्ची हालतमें भी मीठा (—আম)। —রাস্তা सं—कच्ची सड़क, पगडंडी। —সের सं—८० तोलेसे कम तौलका सेर।

কাচান (-नो), কাচানো (क्रि परि १०)—धोयानो धुलवाना।

কাঁচান (-नो), কাঁচানো (क्रि परि १०)—किसी समारोहका आयोजन विगाड़ कर पहली हालतमें करना।

কাঁচি सं—कैंची, कतरनी।

কাঁচি সের सं=কাঁচা সের। [तोलेका सेर)।

কাঁচা वि—कम वजनका। —সের, सं—६० कাঁচুমাচু वि—लज्जित, शर्मिन्दा, संकुचित (লজ্জায় বা ভয়ে—)।

কাঁচুলি, কাঁচলি सं—अंगिया, चोली।

কাচ্চা सं—छटाँककी चौथाई, सवा तोले।

কাচ্চা-বাচ্চা सं—ছেলেপুলে वालबच्चे।

কাছ सं—निकट, पास (তার—থেকে)।

কাছা सं—कच्छ, काँछ।

কাছাকাছি क्रि वि—पास-पास (—बाड़ी); प्रायः, लगभग (সন্ধ্যার—, হাজারের—)।

কাছান (-नो), কাছানো (क्रि परि १०)—पास आना, नजदीक पहुंचना।

কাছারি, (-রী) सं—कचहरी।

কাছি सं—रस्सा।

কাছিম सं—कछुआ।

কাছে क्रि वि—पास, निकट, नजदीक (—এস, —বসিও না); सहित, साथ (আমার—চালাকি চলবে না), विचारसे (তাঁর—শত্রু-মিত্র সব সমান); तुलनामें (এর—ও কিছুই নয়)। —কাছে क्रि वि—साथ-साथ (—থেকো)। —পিঠে क्रि वि—निकट, आसपास (—সব স্থান খুঁজিয়াছি, —কোথাও নাই)।

কাজ सं—काम; कारीगरी (গয়নার সূক্ষ্ম—)। —কর্ম्म सं—काम-काज, जीविका, नौकरी। কাজে আসা या লাগা क्रि—व्यवहारमें लगना, प्रयोगमें आना। কাজে কাজেই क्रि वि—अतः, इस कारणसे।

কাজল सं—কজ্জল अंजन। —লতা सं—काजल बनानेका लोहे आदिका पात्र।

কাঁজি सं=আমানি।

কাট सं—बनावट, गठन (মুখের—ভাল)।

কাটকুট सं—काट-छाँट, छील-छाल।

কাটখোট্টা वि—গেঁয়ার जिद्दी, हठी; रस-ज्ञान रहित, रूखा।

কাঠগড়া सं—कटघरा।

কাটঠোকরা सं=কাঠঠোকরা।

কাটতি (काट्ति) सं—खपत, विक्री।

কাটরা सं=কাঠরা। [टुकड़ा।

কাটলেট सं—कटलेट, भूना हुआ मांसका

কাটা (क्रि परि २)—काटना; खण्डन करना (কথা—, মত—); व्यतीत होना (সময়—); खोदना (পুকুর—, কুয়া—), खींचना (দাগ—, রুল—, খাঁচড়—); हट जाना (মেঘ—, নেশা—, বিপদ—); विक जाना (মাল—, বই কেমন কাটছে?); रचना, लगाना (তিলক—, নকশা—); कातना (সূতা—, চরকা—); कट जाना (তাল—, সুর—)। —কাটি सं—খুনখুনি मारकाट; आपसमें खण्डन या झगड़ा (কথা—); —কুটি, কাটকুট (काट् कुट्) सं—लेखमें थोड़ा बहुत संशोधनार्थ काट-छाँट।

কাঁটা सं—কণ্টক काँटा, कटिया, छोटी कील; घड़ीका काँटा; मछलीका काँटा; लटकती हुई घड़ी तराजू; जड़ा बाँधनेका काँटा;

अंग्रेजोंके खानेका काँटा ; रोंआ खड़ा होना (গায়ে—দেওয়া)।

কাটান (नो), কাটানো (क्रि परि १०)—कटवाना ; व्यतीत करना (সময়—, কাল—) ; बेचना (মাল—)।

কাটারি, (-री) सं—दा हँसुआ।

কাঁটাল सं=কাঁঠাল।

কাঁটি सं—कटिया, छोटी कील।

কাটি सं=কাঠি।

কাঠ सं—काष्ठ लकड़ी, काठ, ईंधन। —খোলা सं—दाना भूननेके लिए बिना बालूकी कड़ाही। —গড়া सं—कटघरा। —ঠোকরা सं—एक लम्बी चोंच वाली चिड़िया जो पेड़ के तनेमें गड्ढा खोद कर घोंसला बनाती है, कठफोड़वा। —পিঁপড়া, (—ড়ে) सं—बड़ी चींटी। —বিড়াল, (—বেড়ালি) सं—गिलहरी, चिखुर।

কাঠরা (काठ रा) सं—लकड़ीका घर ; बाजार में दूकानोंकी कतार ; कटघरा।

কাঠা सं—बंगालके बीघेका २०वाँ हिस्सा (३२० वर्ग हाथ) ; धान आदि नापनेका एक पात्र।

কাঠাম, (-মো) सं—ठाट ढाँचा।

কাঁঠাল सं—कटहल।

কাঠি, কাটি सं—बाँस लकड़ी आदिका महीन छोटा टुकड़ा, सलाई (দেশলাই—, ঝাঁটার—, চাবি—)।

কাঠিন্য (-अ) सं—कड़ाई, कड़ापन, बेरहमी।

কাঠুরিয়া, কাঠুরে स—लकड़हारा।

কাড়া (क्रि परि २)—छीनना, झटकना।

কাড়াকাড়ি सं—आपसमें छीनना-झटकना।

কাড়ান (-नो), কাড়ানো (क्रि परि १०)—छिनवाना।

কাঁড়া (क्रि परि २)—छाँटा, ভানা चावल से कूड़ा और भीतरी पतला चोकर निकालना। वि—इस प्रकार साफ किया हुआ (ভিক্ষের চাল—আর আকাঁড়া)।

কাঁড়ান (-नो), কাঁড়ানো (क्रि परि १०)—चावलसे कूड़ा और भीतरी पतला चोकर निकलवाना।

কাণ सं—कर्ण, कान। কাণে খাটো वि—ऊँचा सुननेवाला।

কাণা वि—काना, एकाक्ष।

কাণ্ড (-अ) सं—घटना, भारी बारदात (কি—করে এসেছ?), पेड़का तना ; अध्याय। —কারখানা सं—भारी कांड ; हल्लागुल्ला। —জ্ঞান सं—मामूली ज्ञान, साधारण बुद्धि (তোমার কোন—নাই)।

কাণ্ডারী सं—कर्णधार मल्लाह, पतवरिया। (ভবের—, ईश्वर)।

কাত वि—टेढ़ा (ঘটিটা—হয়ে পড়েছে) ; जमीन में पतित (এক চড়ে)। सं—पास, करवट (ডান কাতে শোও)।

কাতর वि—कातर, भयभीत, बीमार।

কাতরান (कातरानो), কাতরানো (क्रि परि १६)—कराहना।

কাতরানি सं—कराहनेका शब्द, आह, आहकी आवाज।

কাতলা (कात्ला) सं—रेहू जातिकी एक बड़ी मछली (इसका सिर बहुत मोटा होता है)।

কাতা स—नारियलके छिलकेकी रस्सी।

কাতার सं—श्रेणी, कतार (কাতারে কাতারে সৈন্য চলিয়াছে)।

কাতারি, কাতুরি सं—धातुका पत्तर काटने की कैंची।

কাতুকুতু, কুতুকুতু सं—गुदगुदी।

কাঁথা सं—कथड़ी।

কাঁদ কাঁদ (-दो), কাঁদো কাঁদো क्रि वि—रोनी सूरत में, आँखें डबडबाते हुए (—হইয়া বলিল)।

কাদম্বিনী स्त्री—मेघ-श्रेणी, बादल।

কাদা, কর্দম सं—पांक कीचड़। —খোঁচা सं—एक चिड़िया, चाहा।

কাঁদা (क्रि परि ३)—रोना। কাঁদন, কাঁদুনি सं—रुलाई। —কাটি सं—रुलाई और दुःख-प्रकाश। কাঁদুনে वि—खूब रोनेवाला (—ছেলে —মেয়ে); रुलानेवाला (—গান)।

কাঁদান (-নো), কাঁদানো (क्रि परि १०)—रुलाना।

কাঁদি सं—फलोंका गुच्छा (কলার—, [নারিকেলের—)।

কাঁধ सं—घाड़, कंधा।

কান सं—कान; तम्बूरा आदिमें तार कसनेका मुट्ठा। —পাতলা (कान् पातला) वि—जो विना विचारे दूसरोंकी शिकायत पर विश्वास करता है। কানে কানে क्रि वि—कानोंमें, गुपचुप (—বলা)।

কানকো सं—मछलीका कान।

কানা वि—अंधा; एक आँखका अंधा; फटा (—কড়ি, फूटी कौड़ी)।

কানা सं—किनारा (কলসীর—, পুকুরের—)। কানায় কানায় क्रि वि—लबालब, किनारे तक (भरा)।

কানাই सं—कन्हैया, कृष्ण। [कानाफूसी।

কানাকানি, কানাঘুষা (-ষো) सं—गुप्त चर्चा,

কানাচ सं—ओलती।

কানাত सं—खेमेका पर्दा, कनात।

কানামাছি सं—आँख-मिचौनी।

কানি सं—লকড়, चिथड़ा।

কানু सं=কানাই।

কানুন सं—আইন कानून, राजनियम। —গো सं—कानूनगो।

কানেস্তারা सं—कनस्तर, टीनका चौकोर बड़ा बरतन।

কান্তার सं—जंगल, दुर्गम पथ।

কান্তি सं—सुन्दरता, शोभा; रोशनी; इच्छा।

কান্তিব सं—फौलाद, शुद्ध लोहा। [কাঁদাকাটি।

কান্না सं—क्रन्दन, রোদন रुलाई। —কাটি सं=

কান্যকুব্জ (-অ) सं—कनौज। वि—कनौजिया।

কাপ सं—प्याला, कटोरी, बहाना, स्वांग, कपट।

কাপট্য (-অ) सं—कपट, धोखा।

কাপড় सं—कपड़ा, धोती, साड़ी, वस्त्र (—পরা)। —চোপড় सं—वस्त्र, पोशाक।

কাঁপন, কাঁপুনি सं—थरथराहट, कँपकपी।

কাঁপা (क्रि परि२)—काँपना।

কাঁপান (-নো), কাঁপানো (क्रि परि १०)—कँपाना, हिलाना।

কাপালিক सं—अघोरी; मनुष्यकी खोपड़ीमें खानेवाला तान्त्रिक साधु।

কাপাস (कापाश) सं—कपास, रुई।

কাপুড়ে वि—बजाज, कपड़ा बेचनेवाला। —বাবু सं—छैला, बाँका।

কাপুরুষ वि—डरपोक।

কাপ্তেন सं—कप्तान, जहाजका अध्यक्ष; सेनापति; खेलका नेता, जिसके धनसे यार लोग मौज उड़ाते हैं।

কাফরী (काफ़्री), কাফ্রী सं—हबसी।

কাফের सं—काफिर। [निवासी।

কাবলিওয়ালা (काब्लिवाला) सं—काबुलका

কাবাব सं—कबाब, भुना हुआ मांस।

কাবাবচিনি सं—कबाबचीनी।

কাবার सं—समाप्ति, खातमा (মাস—, তাসের বিন্তি বা পঞ্চাশ—)।

কাবু वि—জব্দ, বশীভূত काबू, वशमें (—করা, —হওয়া); दुबला (জ্বরে—)।

কাবুলী वि—काबुलका (—মটর, —ঘোড়া, —বেদানা)। सं—काबुलका निवासी; काबुली भाषा। —ওয়ালা सं=কাবলিওয়ালা।

কাব্য (-अ) सं—कविता ; साहित्य ; कविता का ग्रन्थ।

কামড় सं—দংশন दशन, कुत्ते आदिका काटना, डसना (শেয়ালের—, ইঁদুরের—, সাপের—, মশার—) ; दर्द (পেটের—)। কামড়া-কামড়ি (कामड़ा-कामड़ि) स—आपसमें काटना (কুকুরগুলো—কচ্ছে)। কামড়ানি सं—दर्द (পেট—)।

কামড়ান (कामड़ानो), কামড়ানো (क्रि परि १६)—काटना, दशन करना, डसना, दर्द करना (পেট—)।

কামরা (कामरा) सं—घर, कुठरि कमरा, कोठरी।

কামরাঙ্গা, (-রাঙা) (कमरांगा,—राङा) सं—कमरख।

কামলা सं—कँवल रोग Jaundice

কামাই सं—गैरहाजिरी, काम पर न आना (অফিস—, স্কুল—), विराम (কথার—নেই), रोजगार (—ক'রে খাই)।

কামান सं—तोप।

কামান (-नो), কামানো (क्रि परि १०)—ক্ষৌর করা हजामत करना (নাপিতের—, নিজের দাড়ি—), कमाना।

কামার सं—কর্মকার लुहार।

কামিজ सं—জামা कमीज।

কাম্য (-अ) वि—कामनाके योग्य, प्रार्थनीय ; सुहावना।—কর্ম (-अ) स—किसी कामना से अनुष्ठित धार्मिक कार्य। —মরণ स—इच्छामृत्यु।

কায় सं—शरीर, देह। —ক্লেশে क्रि वि—शरीर को कष्ट दे कर, बहुत कष्ट से। —মনোবাক্যে क्रि वि—शरीर-मन-वाणी से, सब प्रकारके प्रयत्नों से।

কায়দা सं—কৌশল कौशल, चतुराई (লাঠি খেলার—), कायदा (আদব—); কায়দায় (কায়দায় পাওয়া)।

কায়া सं—शरीर, देह।

কায়িক वि—शरीरका, देह-सम्बन्धी।

কায়েত, কায়স্থ (-अ) सं—कायस्थ।

কায়েম, কায়েমী वि—कायम, स्थिर, मजबूत। কায়েমী পাট্টা स—স্থায়ী পাট্টা कायमी पट्टा।

-কার प्रत्य—बनानेवाला (স্বর্ণকার, কুম্ভকার); क्रिया (নমস্কার, বহিষ্কার), ध्वनि (জয় জয় কার, ধিক্কার); अक्षर या उसका चिह्न (আ-কার= া)। [नकाशी, कारचोबी।

কারচুবি (कारचुबि) सं—कौशल, चतुराई,

কারণ सं—कारण, हेतु (ইহার—কি?); उद्देश्य, मतलब (কি কারণে তুমি গিয়াছিলে?), क्यों कि (সে যাইবে না—সে অসুস্থ); (घटका) उपादान कारण (मिट्टी) निमित्त कारण (कुम्हार) और साधारण कारण (आकाश, प्रकाश, सूत, दंड आदि), तान्त्रिक साधनमें मदिरा। —শরীর सं—वेदान्तमें सूक्ष्म शरीरसे भी सूक्ष्म अज्ञान, इसे आनन्दमय कोष भी कहते हैं। কারণী-ভূত वि—कारण-रूप। [चतुराई।

কারদানি (कारदानि) सं—कामका कौशल,

কারপরদাজ, কারপরদার सं—कमचारी, कारिन्दा ; नौकर।

কারবাইড (कारबाइड) सं—एक रासायनिक मसाला जिसमें पानी डालनेसे ऐसिटिलिन गैस पैदा होती है।

কারবার (कारबार) सं—कारोबार, व्यापार, पेशा ; लेनदेन। কারবারী स—व्यापारी, व्यवसायी।

কারবালা स—समाधि-क्षेत्र, कब्रिस्तान।

কারবেরে वि—व्यापारी, सौदागर।

কারয়িতা वि—करानेवाला।

কারসাজ वि—धोखेबाज, चालबाज।
কারসাজি (कार् साजि) सं—चालाकी, धोखा।
কারা सं—कैदखाना, जेलखाना (—গৃহ, —বাস, —গার)।
কারিকর, কারিগর सं—कारीगर, शिल्पी, मिस्त्री। কারিগরি सं—कारीगरी।
কারিকুরি सं—निपुणता, शिल्पचातुर्य। [कृत।
কারিত (-अ) वि—सम्पादित, दूसरेके द्वारा
কারু सं—शिल्पी, कारीगर; शिल्प। —কর্ম (-अ), —কার্য (-अ) सं—शिल्पकर्म, उमदा दस्तकारी।
কারুণিক वि—दयालु, मिहरबान।
কারুণ্য (-अ) सं—दया, मिहरबानी।
কার্ড सं—कार्ड, मोटे कागजका टुकड़ा, (রেশন —), पोस्टकार्ड।
কার্তুস, (-अ) सं—कारतूस।
কার্নিস (कार्निश) सं—कार्निश, छज्जा, दिवालसे बाहर निकला हुआ छतका अंश।
কার্পণ্য (-अ) सं—कृपणता, कंजूसी।
কার্পাস (-श) सं—কাপাস।
কার্পেট सं—गालीचा। [धनुषधारी।
কার্মুক सं—धनुष, चाप। কার্মুকী वि—
কার্য (कार्ज्य-अ) सं काज, काम, फल, उत्पन्न वस्तु (কারণ মাটি, কার্য ঘট)। —কর वि—कार्यका साधक (वस्तु या उपकरण), फलजनक। —কলাপ सं—काम-काज। —নির্বাহক वि—काम चलानेवाला (—সমিতি)। কার্যান্তর सं—दूसरा काम। কার্যোদ্ধার सं—कार्य-सिद्धि, सफलता, कामयाबी। [पतलापन।
কার্শ্য (-अ) सं—कृशता, क्षीणता, दुबला-
কাল सं—काल, समय; यमराज, मृत्यु (তার—হয়েছে); नाशका हेतु (ঐ বাবসাই তার—হয়েছে); (आनेवाला या बीता हुआ) कल। —ক্রমে क्रि वि—थोड़े समयके बाद। —ক্ষেপ, ক্ষেপণ (कालक्खेपन) सं—समय-यापन। —গ্রাস सं—मृत्यु; —বৈশাখী (कालबइशाखी) सं—चैत-बैशाखकी सध्या की आँधी-पानी। —যাপন सं= কালক্ষেপ।
কাল (-अ), কালো वि—काला, स्याहा।
কালকূট सं—तीव्र विष, तेज जहर।
কালকে (काल्के) क्रि वि=কল্য। কালকের वि=কল্যকার।
কালচিটা (काल्चिटा), (—চিটে), কালচে (काल्चे) सं—काला दाग।
কালশিরা (काल्शिरा), কালশিটে (काल्शिटे) सं—चोटसे शरीरके किसी स्थानमें खून जमनेसे काला दाग। [मछली।
কালবোস (काल्बोश) सं—रेहू जातिकी एक
কালা वि—बहरा; কলঙ্কিত कलंकित (—মুখ); काला (—পাড, সাদার-কালায়), कृष्ण (—চাঁদ)। চিকন—सं—कृष्णका एक नाम।
কালাজ্বর सं—कालाजार, एकरोग।
কালাতিপাত सं—समय-यापन।
কালান্তক सं—यमराज।
কালান্তরে क्रि वि—दूसरे समय।
কালাপানি सं—कालापानी, द्वीपान्तर।
কালামুখ (-अ), (—মুখো) वि—कलंकी, मुखमें कलंकका टीका लगा हुआ, कलमुहाँ। स्त्री—কালামুখী।
কালাশৌচ सं—माता पिता आदि गुरुजनोंकी मृत्युसे एक साल तकका अशौच।
কালি सं—কল্য कल, स्याही, मलिनता (মনের—), कलंक (কুলে—দিল); खेत या घन वस्तुकी नाप, वर्गफल, घनफल (—কষা)।
কালিমা सं—मलिनता, कलंक। [मांस।
কালিয়া सं—कलिया, पकाया हुआ रसेदार

কালিয়ে যাওয়া क्रि—ठंढा हो जाना, ठिठुर जाना।
কালী सं—स्याही (কাল—, লাল—), शिवपत्नी, काली देवी।
কালে ভদ্রে क्रि वि—कदाचित्, कभी कभी।
কালো वि—काला (—রূপে জগৎ আলো)।
কালোয়াত सं, वि—কলাবৎ गाने-बजानेमें उस्ताद, ध्रुपद गानेमें दक्ष। কালোয়াতি सं—ध्रुपद गानेमें दक्षता। কালোয়াতী वि—ध्रुपद-सम्बन्धी।
কাশ, কাস (काश) सं—खाँसी।
কাশা, কাসা (काशा) (क्रि परि २)—खाँसना।
কাশি, কাসি सं—खाँसी।
কাশী, কাশীধাম सं—बनारस, वाराणसी।
কাশ্মীরী (काश्मीरी) वि—काश्मीरका।
কাষায় वि—গৈরিক गेरुआ। [बनावटी हँसी।
কাষ্ঠ (-अ) सं—लकड़ी। —হাসি सं—
কাস सं =কাশ। [घड़ियाल।
কাঁসর (काँशर) सं—काँसेका एक बाजा,
কাঁসা (काँशा) सं =কাংস্য।
কাসা (काशा) क्रि =কাশা।
কাসার सं—बड़ा तालाब।
কাঁসি सं—काँसेकी छोटी थाली जिसका किनारा मामूली थालीसे कुछ ऊँचा है।
কাসি, কাসী सं =কাশি।
কাসুন্দি सं—कच्चे आमके साथ सरसों पीस कर बनाया हुआ अचार।
কাস্তে सं—फसल काटनेका हँसुआ।
কাহন सं—১৬ পণ १२८० कौड़ियोंकी गिनती।
কাহাকে सर्व—किसको। কাঁহাকে सर्व—किनको (आदरार्थक एकवचन)। কাহাদের सर्व—किस किसका, किन लोगोंका। কাঁহাদের सर्व—(आदरार्थक) किन लोगोंका। কাহার सर्व—किसका।

কাহার सं—कहार। स्त्री—কাহারণী। [का भी।
কাহারও, কাহারো, কারও, কারো सर्व—किसी
কাহিনী सं—कहानी, गल्प, आख्यायिका।
কাহিল वि—दुबला, क्षीण, बीमार।
কি अव्य—क्या (কি আনিয়াছ? সে আসিবে কি?), या (তুমি আসিবে, কি আমি যাইব?)। जोर देनेके लिए की (কী করি?)।
কিংকর सं =কিঙ্কর।
কিংকর্তব্যবিমূঢ় (-अ) वि—ইতস্তত पशोपेशमें पड़ा हुआ, क्या करूँ क्या न करूं कुछ निश्चय न कर सकनेकी अवस्था, दुविधा।
কিংবদন্তী, (-न्ति) सं—जनश्रुति, जनप्रवाद, अफवाह।
কিংবা अव्य—किम्वा अथवा, या।
কিংশুক सं गंध-रहित एक लाल फूलका वृक्ष।
কিঙ্কর सं—नौकर। स्त्री—কিঙ্করী।
কিচকিচ, কিচমিচ (किच्‌मिच्, কিচির-মিচির सं—मूस चिड़िया बन्दर आदिकी किचकिचाहट।
কিছু वि—कुछ, थोड़ा (—চিনি, —আম); कोई वस्तु या विषय (আমি কিছুতে নাই), सशय-निवृत्ति (সে—পালাচ্ছে না)। কিছুতে क्रि वि किसी प्रकारसे (তাকে—রাজী করা গেল না)।
কিজন্য (-अ) अव्य—किस लिए, क्यों।
কিঞ্চিৎ वि—कुछ थोड़ा। কিঞ্চিদধিক—थोड़ा ज्यादा, कुछ अधिक। কিঞ্চিদূন (-अ)—कुछ कम। কিঞ্চিন্মাত্র (किंचिन्मात्र-अ)—थोड़ा-सा।
কিট্ট (-अ) सं—तलछट, झाग, मुरचा।
কিড়মিড় सं—दाँत रगड़नेका शब्द।
কিতা सं—टुकड़ा, खंड, अदद, किता (এক—নোট। কিতা-দুরস্ত (-अ) वि—सजाया हुआ, सँवारा हुआ।

কিনা, কেনা (क्रि परि ५)—खरीदना। वि—खरीदा हुआ।

কিনা, কি না अव्य-सन्देहमें, या नहीं (সত্য—); प्रश्नमें (তুমি আসবে—?); हेतुमें (অন্যায় করেছ—তাই লজ্জা হচ্ছে)।

কি নিমিত্ত (-अ) अव्य=কিজন্য।

কিন্তু अव्य—किन्तु परन्तु, लेकिन, जो हो; और भी। —করা क्रि—हिचकिचाना, आगा-पीछा करना।

কিপটা, কিপটে (क्रिप्टे) वि—কৃপণ कजूस।

কিবা अव्य—कैसा (दिल्लगी या प्रशसामें) (—চেহারা, নদীর কি—অপরূপ রূপ।)। কি বা, কী বা—कुछ भी नहीं (তুমি—জান!)।

কিমতে क्रि वि - कैसे। [बेढगा, बेडौल, अद्भुत।

কিমাকার वि—किस प्रकारका, किस ढगका,

কিম্বদন্তী सं=কিংবদন্তী।

কিম্বা अव्य=কিংবা।

কিম্ভূতকিমাকার वि—बेढब, बदसूरत।

কিম্মৎ सं—कीमत, दाम, मूल्य।

কিয়ৎ वि—कुछ, थोड़ा (—পরিমাণ)। কিয়দংশ (-अ) स—कुछ अंश, थोड़ा हिस्सा। কিয়দ্দিন सं—कुछ दिन। কিয়দ্দূর स—कुछ दूर. थोड़ी दूर।

কিয়ামৎ स - मृत्युके बाद अन्तिम विचार का दिन, कयामत।

কিরকির स=কচকচ।

কিরা, কিরে सं—দিব্য, শপথ किरिया, सौगंध।

কিরীচ सं—किर्च, छुरा; तलवार।

কিরীট स—मुकुट, ताज; शिरोभूषण।

কিরূপ वि—कैसा, किस प्रकारका। কিরূপে, কি প্রকারে क्रि वि—किस तरह, कैसे।

কিল सं—मुक्का।

কিলকিল (किल्किल) स—बहुतसे जीवों का एक स्थान में चलना फिरना।

কিলবিল (कल्बिल) स—साँप केचुए आदि की तरह शरीर-सञ्चालन।

কিলান (-नो), কিলানো, কিলন (-नो), কিলনো (क्रि परि ११)—কিল মেরে मुक्केसे मारना।

কিল্লা स=কেল্লা।

কিশমিশ, কিস্‌মিস্ स—किशमिश

কিসম, কিসিম (किसिम) स—किस्म, प्रकार।

কিসমৎ (किस्मत) स—किस्मत भाग्य।

কিসমিস सं=কিশমিশ।

কিসে सर्व—किससे (—কি হয় বলা যায় না); किस विषयमें (সে—বলে?); किसमें (এ লোকটা—আছে?)। কিসের सर्व—किसका।

কিস্তি स—किश्ती, नाव।

কিস্তিবন্দি, (-न्दी) स—किस्तबन्दी।

কী सर्व=কি।

কীট सं—পোকা कीड़ा, कीट। কীটস্য—, কীটাণু— सं—अति नीच, अति तुच्छ अवज्ञा या घृणाका शब्द;। —দষ্ট (-अ) कीड़ा खाया हुआ। —পতঙ্গ (-अ) स—कीड़ा-मकोड़ा। কীটাণু स - अति सूक्ष्म कीट, जीवाणु।

কীদৃশ (-अ) वि—कैसा, किस प्रकारका।

কীর্তনীয় (-अ) वि—कहने योग्य; गाने योग्य।

কীর্তনীয়া, কীর্তনে स—कीर्तन गाने वाला।

কীর্তিত (-अ) वि—प्रशंसित, स्तुत; कथित।

কীল स—কিল बद्धमुष्टि, मुक्का।

কীলক स—कील, मेख, अर्गल।

কীলাকীলি सं—मुक्केबाजी।

কু वि—बुरा, अशुभ (তোমার মনে কেবল—আসে কেন?—অভ্যাস, —কার্য)।

কুইনাইন, কুইনীন सं—क्विनाइन।

কুঁকড়া, কুঁকড়ো (कुंकड़ो) सं—मुर्गा, मुर्गी।

কুঁকড়ি সুঁকড়ি (कुँक्ड़ि शुँ क्ड़ि) वि—জড়সড় संकुचित, कुण्डली-सा। [स —पिल्ला।
কুকুর सं—कुत्ता। स्त्री—কুকুরী। —ছানা।
কুক্কুট सं—मुर्गा, मुर्गी।
কুক্কুর सं—कुत्ता, कुतिया। [अ श।
কুক্ষি (कुक्खि) सं—उदर, पेट, गर्भ, भीतरी
কুঙ্কুম स—जाफरान। [होता है)।
কুঁচ सं—गुंजा (१ रति वजनके लिए इस्तेमाल
কুচ सं—स्तन, छाती, यात्रा —কাওয়াজ)।
কুচকান, কুচকানো क्रि=কোঁচকান।
কুঁচকি (कूच् कि) सं—कमर और जांघकी संधि, ऊरुसन्धि, काछ।
কুচকুচ (कुच्कुच) सं काला रंग और चिकनाहट (কালো—, —করা, কুচকুচে কালো)।
কুচক্র (-अ) सं- गुट साजिश षडयंत्र। কুচক্রী सं, वि—साजिश करने वाला।
কুচনী (कुच्नी) स—रंडी, वेश्या।
কুচা, কুচো, কুচি सं- बारीक टुकड़ा (কাঠের কুচা বা কুচো, কাটিয়া কুচি কুচি করা)।
কুচান (-नो), কুচানো (क्रि परि १२)—बारीक टुकड़ा टुकड़ा करके काटना।
কুঁচি स—बालोंका झाड़ू, बुरुश।
কুচিলা, কুচলে (বৃ-) स—एक विषैला बीज, कुचला Nux Vomica
কুচুটে वि—नटखट, दुष्ट, ईर्षालु।
কুঁচে सं— साँपकी तरहकी एक मछली।
কুচ্ছা, কুচ্ছো स = কুৎসা।
কুজ सं—मगल ग्रह।
কুঁজ सं—कूबड़। কুব্জ (-जो), কুব্জা, কুঁজো वि—कुबड़ा। स्त्री—কুঁজী।
কুঝড়া (-ड़ा) वि—नीच, अधम; कुटिल। কুঝড়ামি स—नीचता, कुटिलता।
কুজা, কুঁজা, কুঁজো स—सुराही।
কুজ্ঝটিকা सं—কুয়াশা कुहासा, कुहरा।

কুঞ্চন सं—सिकुड़न। কুঞ্চিত (-अ) वि-सिकुड़ा हुआ।
কুঞ্চিকা सं—चाभी, ताली, सूची।
কুট स =কট।
কুটকুট (कुट्कुट्) सं—खुजलाहटका अनुभव (ওল খেয়ে গলা—করে, কম্বলে গা—করে)। কুটকুটানি, কুটকুটুনি सं—खुजलाहट। কুটকুটে (कुट्कुटे) वि—खुजलाहट पैदा करने वाला।
কুটনা, কুটনো (कुट्नो) सं—काटने लायक तरकारी, कटी हुई तरकारी (आलू परवल आदि)।
কুটনী (कुट्नी) सं—व्यभिचारकी दूती।
কুটা, কুটো, কুটি सं =কুচি (খড়কুটো)।
কুটা (क्रि परि ६) चूर करना, बुकनी बनाना, काटना, खोदना।
কুটিকুটি सं—टुकडा टुकडा, टुक्का (কাটিয়া —করা), लोटपोट (হাসিয়া—হওয়া)।
কুটির सं=কুটীর।
কুটিল वि—कपटी, कुटिल, धोखेबाज।
কুটীর स – कुटी, झोंपड़ी।
কুটুম্ব (-अ), কুটুম सं—विवाह सम्बन्धसे सम्बन्धित कुटुम्बी (सगोत्र नहीं)। কুটুম্বী स—गृहस्थ। स्त्री—কুটুম্বিনী। কুটুম্বিতা सं—रिश्ता, विवाह सम्बन्ध या उसकी लेनदेन।
কুঠ स—कुष्ठ कोढ़। কুঠে—कोढ़ी।
কুঠার, (-রী) (कुठरी) सं—कोठरी, ताखा।
কুঠি सं—कोठी, महल, बड़े व्यापारीका कार्यालय। কুঠিয়াল सं— कोठीवाला।
কুড়কুড়, কুড়মুড় सं =কড়কড়। কুড়কুড়ে वि=কড়মড়ে।
কুড়া, কুড়ো सं—धानके भीतरी चोकरकी कणिका।
কুঁড়াজালি, (কুঁড়ো-) स—मछली पकड़ने

का छोटा जाल, वैष्णवोंकी जपमालाका थैला।

কুড়ান (नो), কুড়ানো (क्रि परि १२)—बटोरना। वि—बटोरा हुआ।

কুড়ানী, কুড়ুনী सं—गरीब औरत जो पड़ी हुई लकड़ी सूखी पत्ती आदि बटोरती है (ঘুটেকুড়ুনি)।

কুড়াল, কুড়ালি, কুড়ুল सं—कुलहाड़ी।

কুড়ি सं, वि—बीस, २०।

কুঁড়ি सं—कलिका कली, मुकुल।

কুণো वि—लजीला, शरमीला, डरपोक, घर छोड़ कर न जाने वाला।

কুণ্ঠ (-अ) वि—कृपण, कजूस (ব্যয়—)।

কুণ্ঠা स—सकोच, लज्जा, दुविधा। কুণ্ঠিত (-अ) वि—लज्जित।

কুণ্ডলী स—गिडुली (—পাকানো)।

কুত सं—नावके माल पर महसूल।

কুতুকুতু, কাতুকুতু सं—गुदगुदी।

কুত্রাপি क्रि वि—কোথাও कही भी।

কুৎসা (कुतशा) सं—निन्दा, शिकायत।

কুৎসিত (कुतशित) वि—भद्दा, बदसूरत, अश्लील।

কুঁদ स—खराद।

কুদরৎ स—सामर्थ्य, बहादुरी, सृष्टि।

কুঁদা, কুদা, কোঁদা, কোদা (क्रि परि ६)—कूदना (নাচাকোঁদা, নেচেকুঁদে)।

কুঁদা, কোঁদা (क्रि परि ६)—खरादना, खोदना। वि—खोदा हुआ। [(বন্দুকের—)।

কুঁদা, কুঁদো स—लकड़ीका कुन्दा; लट्ठा

কুদাল स—কোদাল फावड़ा।

কুঁদুলী सं—झगड़ालू औरत।

কুঁদুলে स—झगड़ालू आदमी।

কুনি स—नाखूनका कोना भीतर बैठ जानेसे जलन, भीतर बैठा हुआ नाखूनका कोना।

কুনিকা, কুনকে (कुनके) सं—धान आदि अनाज नापनके लिए बेत आदिका बना पात्र।

কুনো वि—कोनेमें रहने वाला, जो घरसे निकलना नहीं चाहता।

কুন্তল स—केश, सिरके बाल।

কুন্থন सं—कूंथनेकी चेष्टा या वेग।

কুপা, কুপো स—कुप्पा।

কুপি सं—ढेबरी, तेलका छोटा बरतन।

কুপিত (-अ) वि—क्रोधित, आग-बबूला।

কুপোকাত वि—ভূমিসাৎ भूमि पर पटकाया हुआ, पराजित।

কুবলয় सं—पद्म कमल।

কুব্জ (-अ) वि—কুঁজো कुबड़ा।

কুমড়া, কুমড়ো (कुमड़ो) स—कोंहड़ा।

কুমার, কুমোর सं—कुम्हार।

কুমির, কুমীর स—मगर, घड़ियाल।

কুমুদ सं—जलमें पैदा होने वाला कमल जाति का एक फूल।

কুমেরু स—दक्षिणी ध्रुव। —জ্যোতি, —প্রভা सं—दक्षिणी ध्रुवका प्रकाश Aurora Australis

কুম্ভ (-अ) सं—কলস गगरा। —কার सं=কুমার। —মেলা सं—हरिद्वार प्रयाग उज्जैन और नासिकमें हर बारहवें वर्ष होने वाला साधुओंका मेला।

কুম্ভীর सं=কুমির।

কুয়া, কূয়া, কুয়ো स—कुआँ।

কুয়াশা, (-সা) स—कुहरा, कुहासा।

কুরঙ্গ (-अ) स—হরিণ हरिण, मृग।

কুরণি, কুরুনি स—गरी खुरचनेके लिए दाँतवाला हँसुआ, खुरचनी।

কুরণ্ড (-अ) स—कोप-वृद्धि-रोग।

কুর্ত্তি सं—बहुत छोटा कुर्ता।

কুর্দ্দন स—লম্ফন कूद, फाँद।

কুর্নিশ सं—कोर्निश, सलाम। [कुरबानी।
কুর্বান सं—बलिदान, कुरबान। কুর্বানি सं—
কুর্সি सं—कुर्सी, चेयर chair
কুল सं—कुल, वंश (—ত্যাগ, ক্ষত্র—); समूह, दल (শত্রু—)। —কন্যা, —নারী, —বতী, —বধূ, —বালা स्त्री—उच्च कुलकी स्त्री। —করা क्रि -कुलीनके घरमें कन्याका विवाह करना। —কর্ম्म स -कुलके योग्य विवाहादि कार्य। —জি, —পঞ্জী सं—वंशावली, पीढ़ी। —শীল सं—वंश और चरित्र।
কুল सं—বদরী बेर।
কুলকুচা, (-চো) सं—कुल्ला।
কুলকুল सं=कलकल।
কুলঙ্গি, কুলুঙ্গি सं—ताखा।
কুলটা सं—कुल त्यागने वाली स्त्री।
কুলপি (कुल्पि) सं—मलाई बरफ, कुलफी।
কুলা, কুলো सं—सूप।
কুলাঙ্গার सं—कुलमें कलंक लगाने वाला।
কুলান (-नो), কুলানো, কুলন (-नो), কুলনো (क्रि परि १२)—यथेष्ट होना, अभावकी पूर्त्ति होना (টাকায়—), स्थान होना (এ ঘরে ২৫ জন কুলাইবে)।
কুলায় स —नीड़ घोंसला।
কুলাল सं =কুমার।
কুলিশ, কুলীশ सं—वज्र।
কুলীন वि—राजा बल्लाल सेन द्वारा गौरव प्रदत्त कुलमे उत्पन्न, आचारादि नौ-गुण-युक्त, श्रेष्ठ (—ব্রাহ্মণ)।
কুলুপ सं—ताला।
কুল্লে क्रि वि —মোটে কুল, केवल, मात्र।
কুশি, কুষি स —अर्घसे जल उठानेकी छोटी चम्मच।
কুষ্মাণ্ড (कुश्शाण्ड) सं—पेठा।
কুসম কুসম (कुशम्-) वि—थोड़ा गर्म, गुनगुना।
কুসীদ (कुशीद), কুষীদ सं—सूद, व्याज। —জীবি वि, सं—সুদখোর अधिक सूद लेने वाला, महाजन।
কুসুম কুসুম वि =কুসম কুসম। [सं- पहलवान।
কুস্তি सं—মল্লযুদ্ধ कुश्ती, दगल। কুস্তিগীর
কুহক सं—ভেল্কি जादूगरी, माया। কুহকী सं—जादूगर। स्त्री --কুহকিনী।
কুহর सं—গর্ত্ত गढ़ा, छेद (কর্ণকুহর)।
কুহরণ सं—कोयलका शब्द; स्वर। (पद्य में —কুহরিল)। কুহরিত (-अ) सं—ध्वनित।
কুহু सं—कोयलका शब्द।
কুহেলিকা सं =কুয়াসা।
কূজন सं—चिड़ियोंका शब्द।
কূট सं—पर्वत-चूडा, पहाड़की चोटी, ढेर, राशि (অন্নকূট), पहेली, समस्या (ব্যাসকূট)। —কচালে वि—समस्या-पूर्ण, अस्पष्ट, गूढ़। —তর্ক (-अ) सं- समस्या-पूर्ण वाद-विवाद। —নীতি सं—कुटिल राजनीति।
কূপ सं—কুয়া कुआँ, छेद, सुराख (রোমকূপ)। —মণ্ডূক स —कुएँ का मेंढक, जिसे बाहरका ज्ञान नहीं है।
কূপী सं—ढिबडी।
কূপোকাৎ वि = কুপোকাত।
কূপোদক सं—कुए का जल।
কূর্দ্দন सं—कुदान, छलांग, नाच।
কূর্ম্ম (-अ) सं—কাছিম कछुआ।
কূল सं—तीर, तट, किनारा। —কিনারা स—किनारा, सीमांसा। কূলেকূলে क्रि वि—लबालब। —প্লাবী वि—लबालब—तीरके ऊपरसे बहता हुआ।
কৃকলাস (कृकलाश्) स =কাঁকলাস।

কৃচ্ছ্র—(-अ) सं—दुःख, कष्ट, तपस्या। वि—कष्टसाध्य, कठिन, मुश्किल।

কৃত (-अ) वि—किया हुआ, प्राप्त (—বিদ্য, কৃতার্থ)। —কর্মা वि—काम करनेमें समर्थ, दक्ष, निपुण, अनुभवी। —কার্য (-अ) वि—कामयाब, सफल। —কৃতা (-अ) वि—कृतार्थ। —দার वि—विवाहित। —নিশ্চয় वि—सफलताके विषयमें संशय रहित; जिसने कर्तव्य-निश्चय कर लिया है। —বিদ্য (-अ) वि—विद्वान सुशिक्षित।

কৃতাঞ্জলি वि—मिले हुए दो हाथ। কৃতাঞ্জলিপুটে क्रि वि—हाथ-जोडे।

কৃতান্ত (-अ) सं—यमराज।

কৃতার্থ वि—सफल, कृतार्थ।

কৃতিত্ব (-अ) सं—योग्यता, काबलियत।

কৃতী वि=कृतकर्मा।

কৃন্তন सं—कर्तन, काटनेकी क्रिया, कतरनी।

কৃপাকটাক্ষ (-क्ख -अ) सं—कृपादृष्टि।

কৃমি सं—कीट केंचुए जातिका कीड़ा, कृमि।

কৃশ (-अ) वि—রোগা क्षीण, शीर्ण, दुबला-पतला।

কৃশানু सं—अग्नि, आग।

কৃশিত (-अ) वि—दुबला-पतला, क्षीण।

কৃশ্চান सं—ईसाई।

কৃষাণ सं—किसान, खेतिहर।

কৃষ্টি सं—संस्कृति culture

কৃষ্ণ (कृष्ण -अ) वि—कृष्ण, काला, श्यामल। सं—श्रीकृष्ण; काला रंग, काक, लोहा। —কায় वि—काला शरीर वाला, काला। —কলি सं—एक सुफेद फूल। —চূড়া सं—एक लाल फूल, पनसियाना। —চূর্ণ (-अ) सं—लोहेका मुरचा, जंग। —জীরা सं—मगरैला, काला जीरा। —প্রাপ্তি सं—मृत्यु। —সর্প (-अ) सं—काला नाग। —সার सं—काला मृग। কৃষ্ণাজিন सं—काला मृग-छाला। কৃষ্ণাভ (-अ) वि—काला-सा, कुछ काला। কেষ্টর জীব सं—ईश्वरका सृष्ट प्राणी; बेचारा।

কে सर्व—कौन (आदमी)। सं—कर्मकी विभक्ति (রামকে, रामको)।

কেঁউ सं—कुत्तेके रोनेकी आवाज।

কেউ सर्व—কেহ कोई (आदमी)।

কেউটিয়া, কেউটে सं—एक काला जहरीला साँप।

কেওড়া (केवड़ा) सं—केवड़ा, केवड़ेके फूलसे सुगन्धित जल।

কেকা सं—ময়ূরের ডাক मोरकी बोली।

কেঁচে क्रि वि—फिरसे, शुरूसे। —গণ্ডূষ सं—फिरसे प्रारंभ।

কেঁচো सं—केंचुआ।

কেচ্ছা सं—किस्सा, कहानी, निन्दा, कुत्सा।

কেজো वि—কাজের कामके योग्य; कुशल, निपुण।

কেঁট কেঁট (कँट कँट) सं—खरी-खोटी (—করে বলা)।

কেটলি, কেতলি सं—पानी गरम करनेका नल वाला पात्र, केटली।

কেঠো, (-ঠো) वि—लकड़ीका बना। सं—एक कछुआ।

কেঁড়ে सं—भाँड़ मिट्टीका बरतन, बाँसका नल जिसमें तेल आदि रखा जाता है।

কেতকী, কেতক सं=কেয়া।

কেতন सं—পতাকা, निशान झंडा।

কেতা सं—किता, कायदा, शृंखला; गुच्छा।

কেতাব सं—বহি, বই, পুস্তক किताब।

কেতু सं—পতাকা, निशान झंडा, एक ग्रह।

কেদার सं=আলবাল।

কেদারা सं—চেয়ার कुर्सी।

কেঁদো, কোঁদা वि—মোটা मोटा, स्थूल।

কেন (कैनो) ক্রি বি—কি হেতু, কি জন্য, কি কারণে क्यों, किस लिए, पुकारने पर यह प्रश्न है। কেন না—क्यों कि।
কেনা ক্রি—किना।
কেনেস্তারা सं—कनस्तर, टीनको बरतन।
কেন্দ্রীভূত (-अ) वि—केन्द्रमें एकत्रित।
কেন্দ্রীয় (-अ) वि—केन्द्रका central
কেন্নো, কেন্নুই सं—अनेक पैरों वाला एक कीड़ा।
কেঁবট, কেবট सं—कैवर्त्त धीवर, केवट।
কেবল वि—শুধু केवल, सिर्फ, शुद्ध। क्रि वि—सदा, निरंतर (—কাঁদছে)।
কেবা सव—के कौन ?
কেমন (कैमन) वि—কি প্রকার किस प्रकार का, कैसा। सं—घबडाहट (মন—করে)। —কেমন, —যেন (-जैनो) क्रि वि—सदेह-जनक, अच्छा नहीं (—ঠেকছে)। —তর (-अ) वि—अनोखा। [(—সোনা)।
কেমিক্যাল वि—रासायनिक, बनावटी, नकली
কেয়া सं—কেতকী केवड़ा। —বাত अव्य —বাহবা! क्या बात! शाबाश। —র सं—इज्जत, खातिर; परवा care (কাকেও—করি না); यत्न, भय, मार्फत, पता (অমুকের কেয়ারে পত্র লিখিও)। —রি सं—क्यारी (ফুলগাছের—)।
কেঁয়ে सं—मारवाड़ी, काइयाँ।
কেরানী (करानी) सं—कर्मचारी, मुहर्रिर क्लर्क, मुन्शी। —গিরি सं—मुहर्रिरका काम, नौकरी, क्लर्की। [करामात।
কেরামৎ, (-মতি) सं—বাহাদুরি बहादुरी,
কেরায়া सं—भाड़ा, किराया। [किरासन।
কেরোসিন, (কেরা-) सं—मिट्टीका तेल,
কেরামতি सं—निपुणता, दक्षता, योग्यता।
কেলাস सं—ক্লাস।

কেলি, কেলী सं—रति, प्रमोद, विहार।
কেলে वि—কালো काला। —সোনা सं—कृष्ण।
কেলেঙ্কার, (-ঙ্কারি) सं—कलंक, लज्जाजनक कार्य। [जय करना, दखल करना।
কেল্লা सं—দুর্গ किला। —মেরে দেওয়া क्रि-
কেশ स —चूल केश, बाल। —কীট सं—उकुन चीलर, जुआँ। —বিন্যাস, —রচনা, —সংস্কার सं—चूल বাঁধা, চুল আচড়ানো केश संवारना।
কেশব (केशव) सं—कृष्ण, विष्णु।
কেশর सं—केसर, पराग, पुष्परज, जाफरान।
কেশরী सं—সিংহ सिंह। [खींचाखींची।
কেশাকেশি सं—চুলোচুলি परस्पर बालोंकी
কেশুর सं—कशेरू। [—मर जाना।
কেষ্ট (-अ) सं—कृष्ण, कन्हैया। —পাওয়া क्रि
কেস सं—মামলা, মকদ্দমা मुकद्दमा; विषय।
কেহ सव—কেউ कोई।
কৈ क्रि वि, सं=कई।
কৈকেয়ী सं—भरतकी माता। [जुआ।
কৈতব सं—কপটতা, छल कपट, धोखा,
কৈন্দ্রিক वि—केन्द्र-सम्बन्धी।
কৈফিয়ৎ सं—জবাবদিহি कैफियत, जवाबदेही, जमा खर्चका बाकी, रोकड़-बाकी।
কৈবর্ত্ত (-अ) सं—एक जाति, धीवर, केवट।
কৈশিক वि—केश-सम्बन्धी, केशका।
কোং सं—कम्पनीका सक्षिप्त रूप, क०।
কোঁ, কোঁকো, কোঁক্ सं—कोंक ऐसा शब्द।
কোঁক্, কোঁথ सं—कोख, गर्भाशय।
কোঁকড়া वि—कुञ्चित घुंघराले (बाल)।
কোঁকড়ান (-নো), কোঁকড়ানো (क्रि परि २१) —কুঞ্চিত করা বা হওয়া घुँघराले बनाना या होना, सिकुड़ना, सिकोड़ना। वि—सिकुड़ा हुआ, घुघराले।
কোক स—थोड़ा जला हुआ कोयला coke.
কোকনদ सं—লাল পদ্ম।

কোঁকান (-नो), কোঁকানো (क्रि परि २१) —कराहना। কোঁকানি सं—कराह, आह।

কোকিল सं—कोयल। स्त्री—কোকিলা।

কোকেন सं—कोकीन।

কোচ, কোঁচ सं—कोचविहार राज्यका आदि निवासी; मछली मारनेका भाला-सा एक अस्त्र जिसके मुंहमें बहुतसे सिकचे रहते हैं।

কোঁচকা वि—কুঞ্চিত सिकुड़ा हुआ।

কোঁচকান (-नो), কোঁচকানো (क्रि परि २१)—কোঁকড়ানো सिकोड़ना; सिकुड़ना।

কোঁচড় स—पहने हुए कपड़ेमें कुछ लेनेके लिए बनाया हुआ आधार या भोला, पसारा हुआ पल्ला; गोदी।

কোচমান, কোচোয়ান सं—कोचवान।

কোঁচা सं—पहनी हुई धोतीका सामनेवाला बटोरा और लटकाया हुआ अंश।

কোঁচান (-नो), কোঁচানো (क्रि परि २१)—शिकन डालना, चुनन डालना। वि—चुनन डाला हुआ। [जिसमें लक्ष्मी-पूजा होती है।

কোজাগর सं—आश्विन शुक्ला पूर्णिमाकी रात्रि

কোট सं—अधिकार; जिद, प्रतिज्ञा, किला; कोट (पहनावा)। [दूत। स्त्री—दूटनी।

কোটনা (कोटना) सं—कुटना, व्यभिचारका

কোটর सं—খোড়ল पेड़के तनेमें गढ़ा; आँख का गढ़ा; छोटा कमरा।

কোটা (क्रि परि ६) —कूटा काटना (তরকারি —, মাছ—); ছেঁচা कूटना (হলুদ—)। वि—कटा हुआ (—তরকারি, —মাছ)।

কোটান (-नो), কোটানো (क्रि परि १२)—चूर्ण घनवाना, कटवाना, खुदवाना (শিল—)।

কোটাল सं—कोतवाल; पूर्णिमा और अमावस्याके ज्वारकी रात।

কোটি, (-टी) सं—सौ लाख, करोड़; धनुष का प्रान्त। —পতি सं—करोड़पति।

কোঠা सं—पक्का घर पक्का मकान; अट्टालिका महल, इमारत; कूठि कोठी; श्रेणी; मकान (মাঠ—, मिट्टीका मकान)।

কোঁড় सं—बाँस बेंत आदिका अंकुर।

কোণ सं—कोना; मकानका भीतरी अंश।

কোণা सं—कोना, कोण। —কুনি क्रि वि—इस कोनेसे उस कोने तक, तिरछे।

কোঁত, কোঁথ सं—कूहन कूथनेकी चेष्टा।

কোঁতান (-नो), কোঁতানো, কোঁথান (-नो), কোঁথানো (क्रि परि १४)—কোঁত দেওয়া कूँथना; কাতরান कराहना।

কোঁতানি, কোঁথানি सं—कुन्थन, आह। [काम।

কোতোয়াল सं—কোটাল कोतवाल।

কোতোয়ালি स—कोतवाली; कोतवालका

কোঁৎকা (कोत्का) सं—मोटा डंडा।

কোথা, কোথায় क्रि वि—কোন স্থানে कहाँ। কোথাকার वि—कहाँका। কোথেকে (कोत्थेके) क्रि वि—कहाँसे।

কোদণ্ড (कोदण्ड) सं—ধনুক धनुष।

কোঁদল सं—কোন্দল। কোঁদলিয়া, কোঁদলে वि—झगड़ालू।

কোদলান (कोदलानो), কোদলানো (क्रि परि १६)—फावड़ेसे मिट्टी खोदना।

কোদাল स—फावड़ा।

কোন্, কোন (कोन्) सर्व—কে कौन; কি क्या। वि—কোনও कोई, किसी (—দিন দেখবে সে চলে গেছে)। क्रि वि- कहाँ (তুমি —আমায় বললে)। কোনও, কোন (कोनो) वि—कोई, कोई भी, एक भी, किसी भी।

কোনা स—कोना। —কুনি, (—কোনি) क्रि वि—एक कोनेसे दूसरे कोने तक, तिरछे।

কোনাচ सं—कोना। क्रि वि—कोनेकी ओर।

কোন্দল स—झगड़ा, रार, कलह।

কোপ स—রাগ, রোষ गुस्सा। কোপন

वि—রাগী क्रोधित, गुस्सावर, खफा। स्त्री—কোপনা। [কোপে কাটা)।
কোপ सं—तीखे भारी शस्त्रकी चोट (এক
কোপান (-नो), কোপানো (क्रि परि १४)— चोट दे कर काटना (গাছ—, কোদাল দিয়ে মাটী—)।
কোপিত (-अ), কোপান্বিত (-अ), কোপাবিষ্ট (-अ) वि—क्रोधित, खफा, गुस्सावर, उत्तेजित।
কোপ্তা सं—कोफ्ता, भूना हुआ मांस।
কোমর सं—মাজা, কটি कमर। —পাটা सं—करधनी। —বন্ধ सं—कमरबंद, पेटी।
কোমল वि—নরম मृदु, कोमल, मुलायम ; रहमदिल (—হৃদয়); ललित, सुकुमार, मधुर। —তা, —ত্ব सं—मुलायमियत, नर्मी।
কোম্পানী सं—कम्पनी। —র কাগজ सं—अंग्रेजी अमलके सरकारी ऋणका स्वीकारपत्र। [রেশমের—)।
কোয়া सं—কোষ कोया (কাঁঠালের—,
কোরক स—मुकुल, कूंड़ि कली, कोंपल।
কোরতা, কোর্তা सं—कुर्ता।
কোরবানি, (-नी) सं—कुरबानी।
কোরা वि—आनकोरा नया (—कापड़)।
কোরা (क्रि परि ६)—কুরুনি দিয়া চাঁচা खुरचनी से करोना। वि—खुरच कर बनायी हुई वस्तु, खुरचन (নারকেল—)।
কোরান सं—कुरान।
কোর্তা सं—কোরতা।
কোর্মা स—कोरमा।
কোল सं—ক্রোড়, অঙ্ক गोदी (কোলে করা বা নেওয়া); कोल, एक जगली जाति। —দেওয়া क्रि—छातीसे लगाना, आलिंगन करना।
কোলন सं—कोलन, : ऐसा चिह्न।
কোলাকুলি सं—आलिंगन, कोली।
কোলা ব্যাং सं—बड़ा मैंढक।
কোলাহল सं—शोरगुल, गुलगपाड़ा।
কোশ सं—কোষ कोष ; कोस, दो मील।
কোশল, (-ল-) सं—प्राचीन अयोध्या राज्य।
কোষ सं—ভাণ্ডার खजाना (রাজ—); संचित धन ; आवरण (बीज—, অণ্ড—) ; খাপ म्यान, অভিধান कोष, लुगत (শব্দ—), কোয়া कोया (কাঁঠালের—); रेशमका कोया। —কার सं—शब्दकोष बनानेवाला, रेशम-कीट —বৃদ্ধি सं—फोता बढ़नेका रोग।
কোষা, কোশা सं—अर्घा।
কোষাধ্যক্ষ (-क्ख -अ) सं—খাজাঞ্চী खजांची।
কোষী, কোশী सं=কুশি।
কোষ্টা सं—পাট पटुआ।
কোষ্ঠ (-अ) सं—ঘর कमरा ; মলাশয় उदर। —বদ্ধতা सं—कब्जियत। —শুদ্ধি सं—दस्त का साफ होना।
কোষ্ঠী सं—जन्मपत्री।
কোহিনুর सं—कोहनूर हीरा।
কৌচ (कउच) सं—कोच, गद्देदार बेंच या कुर्सी।
কৌটা, কৌটো (कउटो) सं—डिबिया।
কৌতুক (क़उतुक) सं—আমোদ, মজা, ठट्ठा, दिल्लगी, कौतूहल। কৌতুকাবহ वि—कौतूहल-जनक आश्चर्यकारक, मजेका। কৌতুকী वि—आमुदे कौतुकिया।
কৌতূহল सं—ঔৎসুক্য कुतूहल, जाननेका आग्रह (—পরবশ, কৌতুহলোদ্দীপক)।
কৌন্সিলী, কৌঁসিলী सं—ব্যারিষ্টার बैरिस्टर, बड़े वकील।
কৌপীন सं—কপনি, ন্যাঙোট लगोटी।
কৌমার स—बचपन, क्वारपन।
কৌমুদী (कउमुदी) सं—জ্যোৎস্না चाँदनी।
কৌল (कउल) सं—तान्त्रिक ; कुलीन।

কৌলিক वि—कुलका (আচার)।
কৌলিন্য (-अ) स—कुलीनता, कुलकी मर्यादा।
কৌশল स—कुशलता, निपुणता, कन्दि छल (কৌশলে টাকা আদায়)।
কৌশেয় (-अ), (-ব), কৌষিক वि—रेशमी।
ক্যাক सं— क्लेशसूचक शब्द।
ক্যাঁচ सं—पहियेके चलनेका शब्द, कच्चा फलादि काटनेका शब्द। ক্যাঁচর ক্যাঁচর सं—कचकच शब्द, कच्चा फलादि चबानेका शब्द।
ক্যাঁট ক্যাঁট स—कचकच, भकभक, खरी-खोटी बातें (ক্যাঁট কেঁটে কথা)।
ক্যাঁত सं—लात मारनेका शब्द।
ক্যামবিস, ক্যাম্বিস स—किरमिच, तिरपाल, विलायती टाट।
ক্রন্দন सं—কান্না রোদন रोना, रुदन।
ক্রম सं—क्रम, सिलसिला, परम्परा (একাদিক্রমে); अनुसार (উপদেশক্রমে); अतिक्रमण (কালক্রমে), धीरे-धीरे (ক্রমোন্নতি)। —া स—गमन, अतिक्रमण। —নিম্ন वि—ढालू, গড়ানে ढालवाँ। —বিকাশ सं—অভিব্যক্তি क्रमशः विकास। ক্রমাগত क्रि वि—অবিশ্রান্ত लगातार। ক্রমান্বয় सं—सिलसिला।
ক্রমান্বয়ে क्रि वि—सिलसिलेवार, क्रमशः।
ক্রমে ক্রমে क्रि वि—क्रमशः, धीरे धीरे।
ক্রমোচ্চ (-अ) वि—क्रमशः उच्च।
ক্রয় स—খরিদ खरीद। ক্রয়ী वि, सं—खरीदार।
ক্রান্তি स—अतिक्रमण, अतिचरण, (गिनती में) कौड़ीका तीसरा भाग, सक्रान्ति।
ক্রিকেট सं—क्रिकेट, गेंद-बल्लेका खेल।
ক্রিমি स =কৃমি।
ক্রিয়া स—কর্ম, কার্য্য कार्य, क्रिया; असर, प्रभाव (ঔষধের—)। —কর্ম्म स—शास्त्रीय या सामाजिक अनुष्ठान, पूजा श्राद्ध विवाह आदि। —সক্ত (-अ) वि—कार्य करनेमें आसक्त या तल्लीन। [दिखानेवाला।
ক্রীড়ক वि, सं—खेलने वाला, खिलाडी, खेल
ক্রীড়ন सं—क्रीड़ा, খেলা खेल। ক্রীড়নক सं—খেলনা खिलौना। ক্রীড়নীয় (-अ) वि—खेलने-योग्य।
ক্রীড়া सं—খেলা खेल, तमाशा। —কৌতুক सं—खेल-तमाशा। —চ্ছলে क्रि वि—खेलके तौरपर, खेलते-खेलते।
ক্রীত (-अ) वि—खरीदा हुआ। —দাস सं—কেনা গোলাম खरीदा हुआ गुलाम।
ক্রীশ্চান सं—খ্রীষ্টান ईसाई।
ক্রুদ্ধ (क्रुद्ध -अ) वि—क्रोधित, खफा, उत्तेजित।
ক্রূর वि—निर्दयी, हिंसक कठोर; भयंकर, खतरनाक, अशुभ। —কর্ম্মা वि—निष्ठुरताका काम करने वाला, हत्यारा।
ক্রেতব্য (-अ) वि—खरीदने योग्य।
ক্রেতা सं—খরিদদার खरीदार। [है।
ক্রেয় (-अ) वि—खरीदने योग्य, जिसे खरीदना
ক্রোক सं—कुर्क।
ক্রোড় सं—কোল, অঙ্ক गोदी। —পত্র सं—क्रोड़पत्र, जो कागज अलग छाप कर पुस्तक पत्रिका आदिके भीतर दिया जाता है।
ক্রোধ सं—কোপ, রাগ गुस्सा। ক্রোধন वि—गुस्सैल। ক্রোধাগার सं—গোসাঘর क्रोधित स्त्रीके लिए एकान्त कोठरी। ক্রোধান্বিত (-अ) वि—क्रोधित, गुस्सावर, खफा। ক্রোধী वि—রাগী गुस्सैल, चिड़चिड़ा।
ক্রোর, ক্রোড় सं—কোটি करोड़। —পতি सं—কোটীপতি करोड़पति।
ক্রোশ सं—কোশ कोस, दो मील।
ক্লান্ত (-अ) वि—थका हुआ, क्लान्त। ক্লান্তি सं—थकावट।
ক্লাব सं—क्लब, समिति club

ক্লাস (क्लाश) सं—क्लास, दर्जा, श्रेणी class
ক্লিন্ন (अ) वि—गदा, मैला ; भींगा।
ক্লিষ্ট (-अ) वि—क्लेशित, दु खी।
ক্লীব वि—नपुंसक, कायर। —লিঙ্গ (-अ) सं—नपु सक लिंग। [गीलापन।
ক্লেদ सं—তরল ময়লা गीली मैल, तलछट,
কচিৎ (कचित्) क्रि वि—কোথাও, কুত্রাপি कहीं ; কখনও कभी, कदाचित।
ক্বাথ (काथ) सं—क्वाथ, उबाल कर निकाला हुआ काढ़ा या निर्यास।
ক্ষওয়া (खवा) क्रि=ক্ষওয়া।
ক্ষণ (खन) सं—क्षण, ४ मिनट समय (কিছু —, বহু—), मुहूर्त (শুভ—) ; थोड़ा समय (—কাল, —স্থায়ী)। —জন্মা वि—जो शुभ मुहूर्तमें जन्मा है, भाग्यवान। —প্রভা सं—বিদ্যুৎ बिजली। —ভঙ্গুর वि—थोड़े समयके बाद नष्ट होने वाला, अनित्य।
ক্ষণেক (खनेक) सं—एक क्षण थोड़ा समय।
ক্ষত (खत -अ) सं—घा घाव। वि—घाव लगा हुआ, घायल। —বিক্ষত (-अ) वि—आघातोंसे शरीरके अनेक स्थानोंमें घाव लगा हुआ।
ক্ষতি (खति) सं—হানি, অনিষ্ট हानि, नुकसान। —কর वि—हानिजनक। —গ্রস্ত (-अ) वि—नुकसान उठाया हुआ। —পূরণ सं—क्षतिपूर्ति। —বৃদ্ধি स—हानि-लाभ, नफा-नुकसान।
ক্ষন্তব্য (खन्तव्य) वि—क्षमाके योग्य, क्षम्य।
ক্ষপণক सं—बौद्ध भिक्षु, जैन साधु।
ক্ষপনী सं=ক্ষেপণি।
ক্ষপা (खपा) सं—रात्रि, रात।
ক্ষম (खम) वि—समर्थ (কার্য—, পঠন—)।
ক্ষমণীয় (खमनीय् -अ) वि—क्षमा-योग्य।
ক্ষমতা (खमता) सं—शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता, प्रभाव (—পন্ন, —বান্, —শালী)।
ক্ষমা (खमा) सं—क्षमा, माफी। (पद्यमें ক্ষমিল, क्षमा की)।—পণ सं—क्षमा-प्रार्थना।
ক্ষমী (खमि) वि—सहनशील, समर्थ।
ক্ষম্য (खम्य -अ) वि=ক্ষমণীয়।
ক্ষয় (खय) स—क्षय, हानि, घाटा, नाश ; तपेदिक, क्षयी।
ক্ষয়িষ্ণু (खयिष्णु) वि—नाशवान।
ক্ষর (खर) वि—क्षर, नाशवान।
ক্ষরণ (खरन) सं—रस रस कर चूना, क्षरण, स्रवण।
ক্ষরা (खरा) (क्रि परि १२)—क्षरित होना, चूना।
ক্ষাত্র, ক্ষাত্র (खात्र -अ) वि—क्षत्रिय-सम्बन्धी।
ক্ষান্ত (खान्त -अ) वि—निवृत्त, विरत। —হওয়া क्रि—रुक जाना, निवृत्त होना।
ক্ষান্তি (खान्ति) स—क्षमा, सहनशीलता।
ক্ষালন (खालन) सं—प्रक्षालन, धोना ; मोचन, रहित करना (দোষ—)।
ক্ষিদে (खिदे) सं=ক্ষুধা। [हुआ ; पागल।
ক্ষিপ্ত (खिप्त-अ) वि—फेंका हुआ, छितराया
ক্ষিপ্র (खिप्र -अ) वि—দ্রুত शीघ्र, जल्दी। —কারী वि—চটপটে फुर्तीला। —কারিতা स—फुर्ती, तेजी।
ক্ষীণ (खीन) वि—কৃশ, শীর্ণ, রোগা दुबला-पतला, महीन (—কটি, —মধ্যা), क्षयप्राप्त। —জীবি वि—অল্পায়ু थोड़े दिन जीने वाला।
ক্ষীয়মাণ (खीयमान) वि—क्षयशील।
ক্ষীর (खीर) सं—দুধ दूध, गाढ़ा दूध, खोआ। —মোহন सं—भीतर खोआ दिया हुआ चिपटा बड़ा रसगुल्ला।
ক্ষুব্ধ (खुब्ध -अ) वि—क्षोभित, आशा-भग होने या किसीके बुरे बर्तावसे दु खित (মন—, —মনা)।
ক্ষুৎ (खुत) सं—ক্ষুধা भूख (—পিপাসা)।
ক্ষুদ্র (खुद्र-अ) वि—ছোট छोटा, नाटा ; नीच,

কমীনা, छोटे दिल्का (—চেতা, —মনা)।
ক্ষুদ্রাশয় वि—हीन चित्तवाला।
ক্ষুধা (खुधा) सं—भूख; इच्छा, लालसा।
—মান্দ্য (-अ) स—भूखकी अल्पता।
ক্ষুধার্ত্ত (-अ), ক্ষুধিত (-अ) वि—क्षुधातुर, भूखा।
ক্ষুন্নিবৃত্তি (खुन्निब्रत्ति) सं—भूखकी पूर्ति।
ক্ষুর (खुर) सं—छुरा, खुर। —ধার वि—छुरा सा तीखा। [की भूमि।
ক্ষেত (खेत) सं—খেত, ক্ষেত্র खेत, जोतने-बोने
ক্ষেত্র (खेत्र-अ) सं—খেত खेत; भूमि; स्थान (কুরু—, তীর্থ—, যুদ্ধ—); हालत (এ ক্ষেত্রে); रेखाओंसे घिरा हुआ स्थान (চতুষ্কোণ—; সমভূম—)। [छत्री।
ক্ষেত্রী (खेत्री) स—क्षेत्रपति, खेतिहर, क्षत्रिय,
ক্ষেপ (खेप) सं—निक्षेप, त्याग (বাণ—), फेकना (পদ—); वार, दफा, खेप (এক—); यापन, व्यतीत करना (কাল—)।
ক্ষেপণি, (-ণী) (खेपनी) सं—নৌকার দাঁড় डाँड़, नाव खेनेका बल्ला। ক্ষেপণিক सं—मल्लाह। [खफा।
ক্ষেপা (खैपा) वि—पागल, सनकी; क्रोधित,
ক্ষেপান (खेपानो) क्रि=খেপান।
ক্ষেপ্তা (खेप्ता) वि, स—फेकनेवाला।
ক্ষোদন (खोदन) सं—नकाशी करनेका काम।
ক্ষোদিত (-अ) वि—नकाशी किया हुआ।
ক্ষোদা (खोदा) (क्रि परि ६)=খুদা।
ক্ষোভ (खोभ) सं—মনস্তাপ खेद, रज; আলোড়ন हलचल, आन्दोलन।
ক্ষৌম (खउम) सं—एक रेशमी वस्त्र।
ক্ষৌর (खउर) सं—हजामत।
ক্ষৌরি (खउरी) सं—हजामत।

খ

খ सं—आकाश (—গোল, —পোত; —চর)।
খই सं—খৈ लावा।
খইল सं—খোল खली, तेलहनकी सीठी।
খওয়া, ক্ষওয়া (खवा) (क्रि परि ७)—क्षयित होना, घिसना।
খক, খকখক सं—खाँसनेका शब्द।
খগ सं—पक्षी, चिड़िया। —পতি, —রাজ, খগেন্দ্র सं—गरुड़।
খগোল सं—आकाश-मण्डल।
খচ सं—चुभने या कट जानेका शब्द। খচখচ, খচাখচ स—बार बार 'खच' ऐसा शब्द। খচাৎ सं—जोरसे 'खच' शब्द। খুচ सं—हलका 'खच' शब्द। [शोरगुल।
খচমচ सं—খচখচ लगातार कड़ी आवाज;
খচর वि, सं—খেচর। [(রত্ন—), जड़ाऊ।
খচিত (-अ) वि—खोद कर जड़ा हुआ
খচ্চর सं—खच्चर; धूर्त (गाली)।
খঞ্চা सं—বারকোশ खोनचा।
খঞ্জ (-अ) वि—খোঁড়া लगड़ा।
খঞ্জনি, (নী) सं—खंजरी, डफलीकी तरहका एक छोटा बाजा।
খট सं—खट शब्द। খটাৎ, খটাস सं—भारी 'खट' शब्द। খুট सं—हलका 'खट' शब्द। খটখট, খটর-খটর, খুটখাট, খুট-খুট सं—बार बार खट-खट शब्द। খটখটানি सं—खटखट शब्द।
খটকা स—সন্দেহ सदेह, खटका।
খটখট सं—खुश्कीका लक्षण प्रकाश (রোদ্দুরে —করা)। খটখটে वि—खुश्क (—মেঝে)।
খটমট सं—खटखट शब्द (জুতো পরে—করে চলা)। খটমট (खट-अ मट-अ), খটমটে वि—दुर्बोध, कठिन।

খটাশ, খটাশ सं—सेंधवार, बिल्लीकी तरहका एक जंगली जानवर जिसके शरीरसे तेज बदबू निकलती है।

খট্টা (खट्टा) सं—खटिया, पलंग। [भूमि।

খড, খদ सं—खड्ड, पहाड़की गहरी नीची

খড় सं—सूखी घास, फूस, पुआल। খড়ো वि—फूससे छाया हुआ, फूसका बना (—ঘর)।

খড়খড়, খড়বড় सं—सूखी पत्तियोंका शब्द।

খড়খড়ি सं—झिलमिली।

খড়ম सं—खड़ाऊँ।

খড়ি सं—खड़िया।—মাটি सं—खड़िया मिट्टी।

খড়িকা, খড়কে सं—दाँत खोदनी, खरका।

খড়্গ सं—खाँड़ा खड्ग, तलवार। —হস্ত वि—मारनेके लिए उतारू। [तोड़ने लायक।

খণ্ডনীয় (-अ) वि—खण्डन करने योग्य;

খণ্ডান (-नो), খণ্ডানো (क्रि परि १६)—खंडन करना; व्यतीत करना (বিপদ—)।

খণ্ডিত (-अ) वि—खंड किया हुआ, कटा।

খত, খৎ सं—চিঠি खत, चिट्ठी; स्वीकारपत्र (দাস—); दस्तावेज। (নাকে— स—जमीन में नाक रगड़ कर दोष स्वीकार और आगे वैसा अपराध न करनेकी प्रतिज्ञा)।

খতান (-नो), খতানো (क्रि परि १०)—हिसाब करना; खतियाना।

খতিয়ান, খতেন सं—खाता, खतियौनी।

খদ सं—खड्ड।

খদির सं—খয়ের कत्था।

খদ্দর सं—খাদি खद्दर।

খদ্দের सं—खरीदार, गाहक, क्रेता।

খদ্যোত सं—जुगनू।

খনক वि—खोदनेवाला।

খনখন सं—धातु-खंडोंके टकरानेका शब्द। খনখনে वि—कड़ा, कर्कश (—গলা,—আওয়াজ)।

খনন सं—खोदाई, खोदनेका काम। খনিত (-अ) वि—खोदा हुआ। খননীয় (-अ) वि—खोदने योग्य।

খনা सं—एक ज्योतिषी स्त्री (খনার বচন, घाघ और भड्डरीका वाक्य)।

খনি सं—আকর खान, खानि। খনিজ वि—खानमें उत्पन्न होने वाला।

খনিত (-अ) वि—খাত खोदा हुआ।

খনিত্র (-अ), খন্তা, খোন্তা सं—मिट्टी खोदने का एक औजार, सावर।

খন্তি सं—खुन्ति रसोईके समय तरकारी उलटने की सीधी कलछी, खन्ती।

খন্দ (-अ) सं—খানা, গর্ত खंदक, फसल।

খপ वि शीघ्र, जल्दी। क्रि वि—হঠাৎ एकाएक, अचानक (—করে)।

খপ্পর सं—धोखा, धूर्तका जाल; খাপরা खपड़ा, খোলার চাল खपरैल।

খবর सं—সংবাদ खबर, समाचार, সন্ধান खोज, पता, তত্ত্বাবধান देखरेख (—দেওয়া, —নেওয়া, —রাখা, —পাওয়া)। —দার वि—होशियार। —দারি स—सावधानी, खबरदारी, देखरेख।

খবরাখবর सं—समाचार आदान-प्रदान।

খবরের কাগজ सं—समाचार-पत्र, अखबार।

খমির सं—খামি, গাঁজ खमीर।

খয়রা वि—खैरा। स—एक मछली।

খয়রাত सं—दान-खैरात। খয়রাতী वि—खैराती, दान-सम्बन्धी।

খয়ের सं—খদির खैर, कत्था; कुशल, खैर। —খাঁ वि—खुशामदी।

খর वि—প্রখর, তীক্ষ্ণ, উগ্র तेज, तीखा, तीव्र, कड़ा। सं—गदहा, खच्चर।

খরখর क्रि वि—তাড়াতাড়ি जल्दी जल्दी, खट खट आवाज करते हुए (—ক'রে চলা)।

খরখরে वि—चतुर, फुर्तीला, तेज।

খরগোশ सं—शशक खरहा।

খরচ, খরচা सं—व्यय खर्च (—পড়া, खर्च लगना, लागत लगना)। —পত্র (-अ) सं—तरह तरहके खर्च। খরচান্ত (-अ) सं—अत्यन्त अधिक खर्च। খরচে, খরচী वि—अधिक खर्च करने वाला, फिजुलखर्च।

খরধার वि—तीक्ष्णधार तीखा (अस्त्र)।

খরমুজ, (—বুজ, —জা) सं—खरबूजा।

খরশাণ वि=খরধার। [सं—तीव्र स्रोत।

খরস্রোত (खरस्रोत) वि—तेज बहाव वाला।

খরা सं—खरहा, तेज धूप, वर्षाका अभाव। वि—ज्यादा भूना हुआ।

খরান (-नो), খরানো (क्रि परि १०)—ज्यादा भूनना, भून कर जला डालना।

খরিদ सं—क्रय खरीद। —দার, খদ্দের वि, सं—खरीदार, खरीदनेवाला। খরিদা वि—क्रीत खरीदा हुआ।

খর্জুর सं=খেজুর।

খর্পর सं—খাপরা, খোলা खपड़ा, मिट्टीके बर्तन का टूटा टुकड़ा; भिक्षापात्र; खोपड़ी।

খর্ব (-अ) वि—ह्रस्व, বেঁটে नाटा, छोटा। सं—सहस्र करोड़की सख्या। —কায় वि—नाटा)। [(—খুড়ি)।

খল वि—खल, दुष्ट, धूर्त, कपटी। सं—खरल

খলখল सं—हँसीका शब्द, ठहाका।

খলি सं=খইল।

খলিফা, খলীফা सं—मुसलमानोंके धर्मगुरु राजा, खलीफा, उस्ताद, दर्जी।

খলিশা सं—एक छोटी मछली।

খস (खश) सं—खसकनेका शब्द। —খস सं—कपड़ा पुआल आदि रगड़नेका शब्द, खस। —খসানি सं—खसखस शब्दका होना। —খসে वि—रूखा, ऊँचानीचा, खुरदरा।

খসড়া (खस्ड़ा) सं—मसौदा, मसविदा।

খসম (खसम) सं—पति, खसम।

খসা (खसा) (क्रि परि १)—বিচ্যুত হওয়া अलग होना, टूटना, धसना (নক্ষত্র—, চুন—); निकलना (মুখ হইতে কথা—), ढीला होना (দোনরের দাপড়—)।

খসান (-नो), খসানো (क्रि परि १०)—বিচ্যুত করা अलग करना।

খাঁ सं—খান खान, एक उपाधि।

খাই सं=খেই। क्रि—(मैं) खाता हूँ, (हम) खाते हैं।

খাঁই सं—लालच, लोभ, लालसा।

খাই খরচ सं—খোরাকি भोजन-खर्च।

খাই-খাই सं—खानेकी लालसा प्रकाश (—করা)।

খাইয়ে वि—बहुत अधिक खा सकने वाला।

খাওয়া (खावा) (क्रि परि ८)—खाना; पीना, (জল—, দুধ—, তামাক—); सेवन करना (হাওয়া—, হিম—,); भोग करना (আদর—, মার—, ধমক—)। सं—भोजन, खाना (—হয়ে গেছে)। वि—खाया हुआ (পোকার—, ঘুণে—)।

খাওয়ান (-नो), খাওয়ানো (क्रि परि १६)—खिलाना, भोजन कराना। [झाड़ू।

খাংরা, খেংরা (खँरा), খ্যাংরা सं—খাঁটা

খাঁকতি सं—अभाव, चाह; लोभ।

খাঁকার, খাঁকারি सं—गला साफ करनेका शब्द (গলা-খাঁকারি)।

-খাকী, -খাগী (स्त्री) वि—खानेवाली (गाली) (চোখ—)।

খাঁ-খাঁ सं—शून्यता, खालीपन, सन्नाटा।

খাগড়া, খাগ सं—एक लम्बा तृण, इसके डंठलकी कलम बनायी जाती है, सरपत।

খাঁচা सं—পিঞ্জর पिंजड़ा; अस्थिपजर, शरीर (—ছাড়া, प्राणोंका शरीर-त्याग)।

খাঁজ सं—খাঁজ फाँक दरार ; तह, शिकन।
খাজনা सं=খাজানা।
খাজা सं—বহু-স্তর-যুক্ত ময়দার মিষ্টান্ন বিশেষ खाजा ; কচকচে चबाने पर जिसमें कचर-कचर आवाज होती है (—কাঁঠাল), मूर्ख (—গেঁয়ার)।
খাজাঞ্চী सं—खजानची।
খাজানা स—রাজস্ব, কর मालगुजारी। —খানা सं—ধনাগার खजाना।
খাঞ্জা খাঁ सं—नवाबी चाल दिखाने वाला।
খাট सं—পর্য্যঙ্ক तख्ता ; तख्तोंसे बनी बड़ी चौकी ; খাটিয়া चारपाई।
খাট (खाटो) वि—नाटा, छोटा (কানে—, ऊंचा सुनने वाला)।
খাটা (क्रि परि २)—পরিশ্রম করা खटना, मिहनत करना, काममें लगना, योग्य होना (এ কথা খাটবে না); व्यापारमें लगना (টাকা খাটছে)। वि—जिसके लिए मेहतरको खटना पड़ता है (—পায়খানা, उठौआ पैखाना)।
খাটান (-नो), খাটানো (क्रि परि १०)—काममें लगाना (জন—, মিস্ত্রী—), जबरदस्ती काम कराना ; व्यापारमें लगाना (টাকা—), টাঙান लटकाना (মশারি—, পর্দা—)।
খাটিয়া सं—चारपाई।
খাটিয়ে वि—मिहनती, परिश्रमी।
খাঁটী, খাঁটি वि—বিশুদ্ধ, আসল खालिस ; शुद्ध, असली (—সোনা, —তেল); सारवान (—কথা)।
খাটুনি सं—মেহনৎ मिहनत, परिश्रम।
খাটুলি सं—खटोली, डोली।
খাটো, খাট (-टो) वि—ছোট छोटा ; বেঁটে नाटा ; नीचा (—গলা); हीन।
খাট্টা वि—টক खट्टा।
খাঁড় सं—जमाया हुआ गुड़, खाँड़।

খাড়া वि—দণ্ডায়মান खड़ा ; डंठलके आकारका फल (সজিনা—)।
খাড়াই सं—ऊंचाई, चढ़ाई।
খাঁড়া सं—খড়্গ बलिका बकरा आदि काटने की एक चौड़ी और भारी तलवार।
খাড়ু सं—चाँदीका कंगन।
খাত (-अ) वि—খনিত खोदा हुआ। খাত (खात्) सं—खड्ड, गढ़ा, खोदा हुआ स्थान, पोखरा, खाई।
খাতক स—ঋণী देनदार, कर्जदार।
খাতা सं—हिसाब लिखनेकी किताब।
খাতির सं—সম্মান मान, आदर, खातिर (চাকরির খাতিরে)। —জমা सं—निश्चयता। वि—निश्चित, बेफिक्र। —নাদারৎ वि—बेपरवाह, जो किसीकी खातिर नहीं करता।
খাতুন सं—মুসলমান মহিলার নামান্ত मुसलमान स्त्रियोंकी एक उपाधि।
খাদ सं—খান सोने-चाँदीमें मिलावट, संगीत में नीचा स्वर, गढ़ा।
খাঁদা, খেঁদা (खँदा), খ্যাঁদা वि—जिसकी नाक बैठी हुई हो, नकबैठा। स्त्री —খাঁদী, খেঁদী (खेंदी)।
খাদ্য (-अ) वि—खाने-योग्य। सं—खाद्य वस्तु ; भोजन, खाना। —খাদক সম্বন্ধ स—स्वाभाविक शत्रुता। —প্রাণ स—खाद्य वस्तुओंकी पुष्टई चीज vitamin
খান सं—सख्या (দুই—থালা); स्थान (কোন খানে, এখানে, ওখানে, সেখানে)।
খানা सं—ডোবা पोखरा ; गढ़ा, बावर्चीका पकाया हुआ खाना ; स्थान (বালা—, ডাক্তার—), सख्या (পাঁচ—মশারি), निर्देश करने वाला प्रत्यय (হাত—মল্লা)। -प्यारके अर्थमें খানি (মুখখানি সুন্দর)।
খানিক, খানেক सं—कुछ क्षण। वि—थोड़ा

(—তন); ल्यामग (মাইল খানেক, দু'খানেক)।

খাপ सं—কোষ म्यान, खाना (তলোয়ারের—, চশমার—). मेल (কথা—খায় না)। —খাওয়া क्रि—मेल होना, पटरी बैठना। —ছাড়া वि—अप्रासंगिक, ऊटपटांग।

খাপ্পা वि—ক্রুদ্ধ खफा, क्रोधित।

খাপরা सं—खपड़ा, मिट्टीके बर्तनका टूटा टुकड़ा, ठीकरी। খাপরেল सं—खपरैल, खपड़ा। [(—খাপড়া)।

খাপী वि—ঠাসবোনা गाढ़ी बुनावटका

খাবল सं—हथेली भर; पंजा (—দেওয়া, —মারা); कुत्ते आदिका काटना। খাবলা सं—खानेका अधिक परिमाण, बड़ा कौर (—খাওয়া)।

খাবলান (खाबलानो), খাবলানো (क्रि परि १६) —খাবল দেওয়া (कुत्ते आदिका) काटना या पंजा मारना।

খাবার स—खाद्य, खाना, भोजन; जलपान की मिठाई आदि। वि—खानेका, पीनेका (—জল)। [(জলে—খাওয়া)।

খাবি स—अंतिम साँस, साँस लेनेकी चेष्टा

খাম सं—लिफाफा, खाम; खम्मा।

খামকা, খামখা क्रि वि—হঠাৎ एकाएक; অকারণে बिना कारण।

খামখেয়াল सं—मौज, मनकी उमंग। খামখেয়ালী वि—मनमौजी।

খামচান (खामचानो), খামচানো (क्रि परि १६) —पंजा मारना, नाखूनसे छीलना।

খামচি स—पंजेकी मार, नाखूनोंकी पकड़। (लघु अर्थमें খিমচি)। [खत्ता।

খামার सं—अनाज झाड़ने या रखनेका स्थान,

খামিরা सं—सड़ा गुड़ या मसाला मिला हुआ तम्बाखू, खमीरा।

খাম্বা स—স্তম্ভ, থাম खम्भा।

খাম্বাজ स—खम्बाज राग।

খারাপ वि—মন্দ, বদ खराब, बुरा (—কথা, —লোক); অসুস্থ अस्वस्थ (শরীর—); বিষণ্ণ मनहूस (—মন)।

খারাবি सं—हानि, बुरा बर्ताव।

খারিজ सं—বাতিল खारिज; परिवर्तन (নাম —করা)।

খাল सं—পয়ঃপ্রণালী नाला; खोदी हुई नहर या नदी; खाल, चमड़ा।

খালাস सं—রেহাই रिहाई, छुटकारा; प्रसव। —করা क्रि—प्रसव कराना; मुक्त करना, छुड़ाना। —হওয়া क्रि—प्रसव होना, मुक्त होना।—পাওয়া क्रि—जेलसे छुटकारा पाना।

খালাসী सं—खलासी, जहाजका नौकर।

খালি वि—खाली; শুধু सिर्फ (—একটু জল খাবে?)। क्रि वि—हर समय (—কাঁদা)।

খালুই सं—मछली रखनेका पिंजड़ा।

খাস वि—खास, मुख्य; अपना (—দখল)। —দখল स—जो जमीन मालिकके दखल में है।

খাসা वि—अच्छा, उमदा, खासा।

খাসি, (—সী) स—बधिया, खस्सी, बकरा।

খাস্ত, খাস্তা वि—विकृत, बिगड़ा हुआ, भ्रष्ट (তিন নকলে আসল—)।

খিঁচ सं—মনান্তর मनमुटाव।

খিঁচা, খেঁচা (क्रि परि ५)—টানা खींचना। सं—अंगकी अकड़ (হাত পা—)।

খিচনি, খিঁচুনি सं—খেঁচানি विकृत मुख-भंगी, अंगकी अकड़।

খিচান (—नो), খিচানো, খিঁচনো (क्रि परि ११)—मुँह बिगाड़ना (মুখ—, দাঁত—); अंग अकड़ना।

খিচুড়ি स—खिचड़ी, पचमेल वस्तुएँ।

খিটখিট सं—अप्रसन्नता, चिढ़। খিটখিটে वि—चिड़चिड़ा।

খিটমিট सं—हर समय डाँट या फटकार। খিটমিটে वि—जो हर समय झगड़ता या फटकारता है। খিটিমিটি सं—झगड़ा और फटकार।

খিড়কি सं—पिछला दरवाजा ; जंगला।

খিদা, খিদে सं—क्षुधा, भूख।

খিদ্যমান वि—दुखित, खेदयुक्त, आर्त।

খিমচান, খিমচানো क्रि=খামচান।

খিমচি सं—चिमटि चुटकी।

খিয়ানৎ सं—खयानत, हानि।

খিল सं—अर्गल, হুড়কা अगला, सिटकिनी (দরজায়—দেওয়া বা লাগানো), अंगकी अकड़ (—ধরা, —লাগা)।

খিলখিল सं—हसीका शब्द, ठहाका।

খিলাত स—खिलअत, राजाकी दी हुई इज्जत की पोशाक।

খিলান सं—मेहराब।

খিলি सं—खीली, पानका बीड़ा।

খিস্তি सं—अश्लील शब्द, गदी गाली (মুখ—করো না)।

খুকখুক सं—खाँसीका हलका शब्द।

খুকী सं—छोटी लड़की (प्यारमें খুকু)।

খুচরা, খুচরো वि—फुटकर, खुदरा, तरह-तरह का (—খরচ, —বিক্রী, —কাজ)। सं—रेजगारी।

খুঁজা, খোঁজা (क्रि परि ६)—खोजना, ढूँढ़ना, [तलाश करना।

খুঞ্চি सं—खोनचा। —পোশ सं—खोनचा ढाँकनेका रूमाल।

খুট सं—खट शब्द।

খুঁট सं—कपड़ेका कोना, धागेका सिरा।

খুঁটা, খোঁটা (क्रि परि ६)—नोचना, खरिकासे कोंचना (দাঁত—)। सं—मेख, खूँटी।

খুঁটিনাটি सं—किसी विषयका बारीक विवरण, तुच्छ विषय।

খুঁটিয়া, খুঁটিয়ে क्रि वि—छानबीन कर।

খুড়তুত (-তো), খুড়তুতো वि—चचेरा, पिताके छोटे भाई सम्बन्धी (—ভাই, —বোন); ससुरके छोटे भाई सम्बन्धी। (—দেওর, —শালী)। [খুড়শাশুড়ী।

খুড়শ্বশুর सं—ससुरका छोटा भाई। स्त्री—

খুড়া, খুড়ো सं—खुल्लतात, काका पिताका छोटा भाई। स्त्री—খুড়ী।

খুঁড়া, খোঁড়া (क्रि परि ६)—খনন করা खोदना ; जमीन पर ठोंकना, प्रशंसासे तंदुरुस्त या भाग्यवान् व्यक्तिको हानि पहुँचाना।

খুঁড়ান (-নো), খুঁড়ানো क्रि=খোঁড়ান।

খুঁড়ী वि, सं—लगड़ी।

খুঁত सं—त्रुटि, ऐब, दोष, खोट (—ধরা)।

খুঁতখুঁত सं—किसी विषयकी मामूली त्रुटिके लिए असन्तोष प्रकाश। খুঁতখুঁতে वि—जो हर समय ऐब निकालता या नाराजगी जाहिर करता है।

খুদ सं—खुद्दी, चावलके कण।

খুদা, খোদা (क्रि परि ६)—खोदना ; नक्काशी करना, काट कर गढ़ना।

খুদে वि—बहुत छोटा, नन्हा।

খুন सं—রক্ত खून, हत्या, कत्ल।—খারাপি सं—एक लाल रंग, खून-खराबा। —চড়া क्रि—गुस्सेसे खून गरम होना, खून सवार होना।

খুনী আসামী स—खून करने वाला अपराधी।

খুনী, খুনে वि—हत्यारा। খুনাখুনি, খুনোখুনি सं—मारकाट, खून-खराबा।

খুনসুড়ি सं—झगड़ा, तकरार।

খুস্তি सं=খন্তি।

খুপরি सं—छोटा कमरा, छोटा खाना।

খুব क्रि वि—खूब (—বড়, —ভাল); जरूर

(—পারবি) ; ज्यादा , अच्छी तरह (—করে খাও) ।
খুবসুরৎ वि—खूबसूरत ।
খুর, ক্ষুর सं—खुर ; छुरा, उस्तरा ।
খুরখুর स =খরখর ।
খুরা, খুরো सं—পায়া पाया (খাটের—) ।
খুরি सं—कटोरी, छोटा कसोरा ।
খুলা, খোলা (क्रि परि ६)—खोलना, उघाड़ना । वि—खुला । খুলিয়া যাওয়া क्रि—खुल जाना । খুলিয়া দেওয়া क्रि—खोल देना ।
খুলি स—खोपडी, सिरकी ऊपर वाली हड्डी (মাথার—) ।
খুল্লতাত (-अ) सं=খুড়া ।
খুশকি स—মরামাস सूखी खाल, रूसी ।
খুশি सं—इच्छा, मर्जी (যা—তাই) ; सन्तोष । খুশী वि—सन्तुष्ट, खुश ।
খৃষ্ট (-अ) सं—ईसा मसीह ।—পূর্ব্বাব্দ (-अ) सं—ईसा मसीहके जन्मके पहलेका साल । খৃষ্টান वि, सं—ईसाई । খৃষ্টাব্দ (-अ) सं—ईस्वी सन ।
খেই, খাই सं—धागेका सिरा, डोरा ; बातका प्रसंग (গল্পের—হারানো) ।
খেউরি सं—हजामत ।
খেংরা (खेंग्रा) स—খাংরা झाड़ू ।
খেঁকশিয়াল, (-শেয়াল) सं—लोमड़ी, सियार । स्त्री—খেঁকশিয়ালী ।
খেঁকান (खेँकानो), খেঁকানো (क्रि परि १०) —मुह बिगाड़ कर चिल्लाना या क्रोध प्रकट करना । খেঁকানি सं—मुह बिगाड़ कर क्रोध प्रकाश । [मिजाज (—কুকুর) ।
খেঁকি वि—भौंकनेवाला, चिडचिड़ा, तुनुक-
খেকো प्रत्य—खानेवाला (गाली) (চোখ—, গতর—) ; खाया हुआ (পোকা—) ।
খেঙরা, খেংরা (खेंगरा) स—झाड़ ।
খেচর, খচর वि—आकाशमें उड़ने वाला । सं—चिड़िया ।
খেচরান্ন (-अ) सं—खिचड़ी । [डाँटफटकार ।
খেঁচা, খেঁচুনি सं =খিঁচা । খেঁচাখেঁচি सं—বকাবকি
খেঁচামেচি (खेँचामेचि) स—চেঁচামেচি, গোলমাল चिल्ल-पों, शोरगुल ।
খেজুর सं—खजूर । —রস स—खजूरके पेड़का तना छीलने पर निकलने वाला रस । খেজুরে वि—खजूरके रससे बना (—গুড়) ।
খেত सं—खेत, जमीन । —খোলা सं—खेती की जमीन ।
খেতাব सं—खिताब, उपाधि ।
খেতি सं—क्षति, हानि ।
খেত্রী सं—छत्री, क्षत्रिय ।
খেদমৎ सं—खिदमत, सेवा ।
খেদা (खेदा), খ্যাদা स—जगली हाथी पकड़ने का घेरा ; वैसे घेरेमें हाथीका पकड़ना ।
খেঁদা (खेँदा) वि =খাঁদা ।
খেদান (खेदानो), খেদানো, খ্যাদানো (क्रि परि १०)—তাড়াইয়া দেওয়া भगा देना ।
খেদোক্তি स—विलाप, अपना दुःख प्रकट करने वाली बात ।
খেপ स—বার दफा, वार ।
খেপলা (खेप्ला) स—मछली पकड़नेका गोल जाल जो जलमें फेका जाता है ।
খেপা (खेपा), খ্যাপা वि, स—पागल ; (प्यार में) पगला ; नासमझ । स्त्री—খেপী ।
খেপামি स—পাগলামি पागलपन, सनक ।
খেপা (खेपा), খ্যাপা (क्रि परि १)—क्रोधित होना ; उत्तजित होना ।
খেপান (खेपानो), খেপানো (क्रि परि १०)— क्रोधित करना ; नाराज करना ; चिढ़ाना ।
খেমটা (खेम्टा), খ্যামটা स—संगीतका एक ताल , एक प्रकारका नाच (—ওয়ালী) ;

খেয়া सं—पार करने की नाव, खेवा ।
খেয়ানৎ सं—खयानत, हानि ।
খেয়াল सं—कल्पना, ख्याल ; सपना ; शौक ; होश ; स्मरण (—রাখিও) ; प्रवृत्ति, रुचि (বদ—) ; एक प्रकारका सगीत ।
খেয়ালী वि—खयाली, मनमौजी । [कपड़ा ।
খেরুয়া, খেরো सं—एक प्रकारका लाल मोटा
খেল सं—खेल , जादू ; कौशल ।
খেলন सं—खेल, क्रीड़ा , खेलना ।
খেলাড়ি वि, सं—खिलाड़ी ।
খেলনা (खेल्ना), খ্যালনা सं—खिलौना ।
খেলা (खैला), খ্যালা सं—क्रीड़ा खेल । ছেলে —सं—लड़कोंका खेल ; मामूली काम । ভবের—सं—जीवनका खेल । আগুনের সহিত —सं—आगके साथ खेल, खतरनाक काममें हस्तक्षेप । —ধূলা सं—आमोद-प्रमोद, खेलकूद ; बच्चोंका खेल ।
খেলা (खैला), খ্যালা (क्रि परि १)—खेलना ।
খেলাত स =খিলাত ।
খেলান (खैलानो), খেলানো (क्रि परि १०)—खेलाना, खेलमें लमाना ; जादू या खल दिखाना । [(কথার—) ।
খেলাপ सं—অন্যথাচরণ खिलाप, वचन-भंग
খেলুড়িয়া, খেলুড়ে वि, स —खेलने वाला ; खेल का साथी ।
খেলো वि—तुच्छ, मामूली (—জিনিষ) ; অপদস্থ- बेइज्जत (—করা) ।
খেলোয়াড় सं—निपुण खेलाड़ी, अच्छा खेलने वाला ; धोखेबाज, धूर्त ।
খেসারৎ (खेशारत्) सं—क्षतिपूर्ति । খেসারতি सं—क्षतिपूर्तिमें दिया हुआ धन आदि ।
খেসারি (खैशारि) सं—केसारीकी दाल ।
খৈ सं—খই लावा ।
খৈল सं—খইল ।

খোকা सं—छोटा लड़का, लल्ला । प्यारमें —খোকন । स्त्री—खुकी ।
খোক্কস सं—लड़कोंको डरानेके लिए एक कल्पित राक्षसका नाम, हौआ ।
খোঁচ सं—नोक, कांटा , आघात, चोट, काँटे, का घाव ।
খোঁচা सं—नुकीली वस्तुकी चोट ।
খোঁচান (-नो), খোঁচানো (क्रि परि १४)—कोंचना ; उसकाना ; तग करना ।
খোঁজ सं—खोज, जाँच, खबर ।
খোঁজা क्रि—খুঁজা खोजना, ढूंढ़ना ।
খোজা स—हिंजड़ा रनिवासका नपुंसक नौकर, ख्वाजा , एक मुसलमानी उपाधि
খোঁটা स —গঞ্জনা उलाहना ; খুঁটা मेख, खूंटी ।
খোট্টা स —खोटा आदमी ; हिन्दुस्थानी उजड्ड आदमी ।
খোঁড়ল, খোঁদল सं—কোটর गड्ढा (গাছের—) ।
খোঁড়া वि—लगड़ा, अंगहीन ।
খোঁড়া क्रि=খুঁড়া । [लगड़ाना ; खुदवाना ।
খোঁড়ান (-नो), খোঁড়ানো (क्रि परि १४)—
খোদ सं—खुद, स्वयं ।
খোদকারি सं—খোদাইয়ের কাজ नक्काशी ।
খোদা स —खुदा, ईश्वर । —বন্দ सं—खुदावन्द, मालिक ।
খোদা क्रि=খুদা ।
খোদাই सं—खोदाई । [खुदवाना ।
খোদান (-नो), খোদানো (क्रि परि १४)—
খোনা वि—जो नाकसे बोलता है ।
খোন্তা सं=খনিত্র ।
খোপ, খোপর सं=খুপরি ।
খোঁপা, খোপা सं—কবরী जूड़ा ।
খোবানি सं—खूबानी, एक पहाड़ी फल ।
খোয়া वि—नष्ट , चुराया हुआ , खोया हुआ । सं—खोया ; ईंटका टुकड़ा ।

খোঁয়াড় सं—सूअर भेड़ आदि रखनेका बाड़ा, पिंजरापोल।

খোয়ান (-नो), খোয়ানো (क्रि परि १४)—खोना, हिराना, स्वय नष्ट करना (টাকা—, চরিত্র—)।

[शिकायत।

খোয়ার स—লাঞ্ছনা लांछन, দুর্গতি दुर्दशा,

খোর प्रत्य—खानेवाला (গাঁজা—, নেশা—)।

খোরপোশ सं—खुराक-पोशाक, अन्न-वस्त्र।

খোরা स—कटोरा कसोरा। [খাইখরচ खुराकी।

খোরাক सं—खुराक, भोजन। খোরাকি सं—

খোল सं—খোড় गिलाफ (বালিশের—); মৃদঙ্গ ढोल सा मिट्टीका एक बाजा; খইল खली।

[शोभायमान।

খোলতা (खोल्ता) वि—खिला हुआ, খোলতাই स—चमक, प्रभा; खुलापन।

খোলস सं—साँपकी छोड़ी हुई त्वचा केंचुली; आवरण।

খোলসা वि—साफ, मुक्त, स्पष्ट (—করে বলো); खाली (ঘর—করা)।

খোলা स—খাপরা खपड़ा; খোসা छिलका (নেবুর—, বাদামের—); आवरण (কাছিমের—); भूंजनेका बर्तन (তপ্ত—, কাঠ—); ক্ষেত্র खत (ইট—, ধানের—)। वि—खुला (—দরজা); निष्कपट (—মন)। —খুলি क्रि वि—स्पष्ट रूपसे, खोल कर।

খোলা क्रि=খুলা।

খোলামকুচি स—मिट्टीके बर्तनका टूटा टुकड़ा।

খোশ वि—खुश, सुखकर।—খবর खुशखबर।—গল্প सं—दिल बहलानेका गल्प। —নবিশ वि—खुशखत। —মেজাজ वि—खुशदिल, प्रसन्न-चित्त।

খোশামোদ स—তোষামোদ, চাটুবাক্য खुशामद, चापलूसी। খোশামোদি, (-মুদি) सं—चापलूसीकी बात, लल्लोचप्पो, चिकनी-चुपड़ी बात। খোশামুদে वि—চাটুকার खुशामदी।

খোস सं—পাঁচড়া खुजली।

খোসা सं-छाल, খোলা छिलका।

খোসামোদ (खोशा-) सं=খোশামোদ।

খ্যাঁক (खँक) सं—सियार कुत्ते आदिका शब्द।

খ্যাঁট (खँट) सं—खाना, भोज, ज्योनार।

খ্যাত (-अ) वि—प्रसिद्ध, नामवर, कथित।

খ্যাপন सं—प्रचार, घोषणा।

খ্রীষ্ট (-अ) सं—খৃষ্ট ईसा। খ্রীষ্টান सं—क्रीश्चान, খ্রীষ্টধর্মাবলম্বী ईसाई। খ্রীষ্টানি, (-নী) सं—ईसाइयत; ईसाई। খ্রীষ্টাব্দ सं—ईस्वी सन। খ্রীষ্টপূর্ব্বাব্দ सं—ईसाके जन्मसे पहलेका सन। খ্রীষ্টীয় (-अ) वि—ईसा सम्बन्धी, ईसाका, ईस्वी।

গ

-গ (समासके अंतमें) प्रत्य—जानेवाला (নিম্নগ। स्त्री—নিম্নগা)।

গগন सं—आकाश। —চর, —চারী वि—आकाशमें उड़नेवाला। —স্পর্শী वि—आकाश को छूनेवाला।—তল सं—आकाशकी पीठ, आकाशका तला।

গঙ্গা स—गंगा, जाह्नवी। —জলি सं—मृत्युके समय मुखमें गंगाजल दान। —পার स—गंगाका दूसरा पार; गंगातीर। —প্রাপ্তি, —লাভ स—गंगाजलमें या गंगातीरमें मृत्यु। —ফড়িং सं—एक प्रकारका टिड्डा। —মৃত্তিকা स—गंगाकी मिट्टी। —যাত্রা सं—मृत्युके पहले गंगातीरके लिए यात्रा।

গঙ্গোত্তরী, গঙ্গোত্রী सं—गंगाका उत्पत्ति-स्थान, गंगोतरी।

[उपाधि।

গঙ্গোপাধ্যায় स—গাঙ্গুলী ब्राह्मणोंकी एक

গচ্চা सं—क्षतिपूर्ति, लापरवाहीके लिए हानि या दंड।

গচ্ছিত (-अ) वि—रक्षित, धरोहर रखा हुआ।

গছান (-नो), গছানো (क्रि परि १०)—गछानो ग्रहण कराना, किसीके ऊपर लादना या सिर मढ़ना।

গজগজ सं—असंतोष प्रकट करनेका शब्द, स्थानकी कमीके कारण धक्कम-धक्का।

গজা सं—खाजा, एक मिठाई।

গজান (-नो), গজানো (क्रि परि १०)—अंकुरित होना, उगना, बढ़ना।

গজাল सं—বড় পেরেক बड़ी कील, कीला।

গজেন্দ্র स—गजराज। —গামিনী स्त्री—हाथी की तरह धीर चालसे चलने वाली स्त्री।

গঞ্জ (-अ) सं—হাট व्यापारकी मंडी।

গঞ্জনা सं—লাঞ্ছনা, খোঁটা उलाहना, तिरस्कार।

গঞ্জিকা सं—গাঁজা गाँजा। -সেবী स—गजेड़ी।

গট, গ্যাঁট वि—খাড়া खड़ा, নিশ্চল स्थिर [(—হয়ে বসে আছে)।

গট্‌গট্ सं—जूतेकी आहट; द्रुत चलनेका शब्द।

গঠিত (-अ) वि—गठित, गढ़ा हुआ, बनाया [हुआ।

গড সं—পরিখা खाई, দুর্গ किला, गढ़। —খাই सं—खाई।

গড় सं—दंडवत प्रणाम; औसत (গড়ে দশ জন)। —গড়তা स—औसतन हिसाब।

গড়গড় सं—गड़गड़ाहट (পেট—করা), बादल की गरज।

গড়গড়া सं—फरशी।

গড়ন सं—गठन, बनावट, निर्माण। —পিটন सं—बनावट और बनानेका ढग। —দার स—बनाने वाला।

গড়া (क्रि परि १)—गढ़ना, बनाना, सिखाना। सं—गठन (ভাঙ—)। वि—गठित, गढ़ा हुआ, कल्पित, बनावटी। —গড়ি सं—जमीन पर लोटना, लोटपोट (ধূলায়—দেওয়া)। —পেটা वि—ठोंक-पीट कर गढ़ा या बनाया हुआ; सिखाया हुआ (गवाह)।

গড়ান (-नो), গড়ানো (क्रि परि १०)—लुढ़कना, घूमते हुए चलना; ढाल पर खसकना, बर्तनसे जल उंडेलना; बहना (গায়ে তেল গড়াচ্ছে), लेट कर विश्राम लेना (একটু গড়িয়ে নি); लोटना, अग्रसर होना (निन्दार्थ में—ব্যাপার অনেক দূর গড়িয়েছে)। (গয়না— क्रि—जेवर बनाना या बनवाना)।

গড়ানে वि—ঢালু, ক্রমনিম্ন ढालू।

গড়িমসি स—হচ্ছে-হবে ভাব, দীর্ঘসূত্রতা टालमटोल, हिला-हवाला।

গড্ডল, গড্ডর स—ভেড়া भेड़। গড্ডলিকা सं—ভেড়ার পাল भेड़ोंका झुंड। গড্ডলিকা-প্রবাহ स—भेड़िया-धसान, अंधेकी तरह अनुकरण।

গণক वि, स—गिननेवाला, ज्योतिषकी गणनासे फल बताने वाला।

গণৎকার स—ज्योतिषी।

গণতন্ত্র (-अ) सं—प्रजातन्त्र-शासन-प्रणाली।

গণনীয় (-अ) वि—गण्य, गिनने योग्य।

গণশক্তি स—प्रजाओंकी सम्मिलित शक्ति।

গণা (क्रि परि १)—গনা।

গণাগাঁথা वि—गिना हुआ, कथित।

গণান (-नो) क्रि=গনান।

গণিকা स्त्री—বেশ্যা रंडी (-লয়, -গৃহ)।

গণিত (-अ) वि—गिना हुआ। গণিত (गनित्)—गणित-शास्त्र।

গণিতব্য (-अ) वि—गिनने योग्य।

গণ্ড (गण्ड-अ) सं—गाल, कपोल। —গোল वि—उलझनदार, जटिल, झगड़ालू। —গোল सं—গোলমাল, গোলযোগ शोरगुल;

গড়গড়ী। —গ্রাম स—बड़ा गाँव। —দেশ स—गाल, कपोल। —মালা स—गला फूलने का रोग, घेवा। —মূর্খ (-अ) वि—निरेट बोका निरा बेवकूफ। —স্থল सं=গণ্ডদেশ।

গণ্ডা सं—चारका समूह, गंडा (পাওনা—, प्राप्य रुपया)। —কিয়া स—गंडेका पहाड़ा। —গণ্ডা वि—अनेक, बहुत।

গণ্ডার सं—गेंडा।

গণ্ডি सं—घेर-लकीर, घेरा, सीमा।

গণ্ডু सं—गाँठ, गिरह; तकिया।

গণ্ডূষ स—चुल्लू; चुल्लूभर जल। [कचरकूट।

গণ্ডেপিণ্ডে क्रि वि—गले तक (भोजन);

গণ্য (-अ) वि—गिनने योग्य, प्रतिष्ठित।

গৎ सं—सगीतका सुर, गति।

গত (-अ) वि—बीता हुआ, अतीत, भूत (—কন্যা, —পরশু, —যৌবন); समाप्त, मृत (তিনি—হয়েছেন); प्राप्त (করতল—); मध्यस्थ (বশ—, শরীর—)। —ক্লম वि—जिसकी थकावट मिट गयी है। —চেতন वि—बेहोश। —জীব, —জীবন, —প্রাণ वि—मृत। —নিদ্র (-अ) वि—निद्राहीन, जिसकी नींद टूट गयी है। —ব্যথ (-अ) वि—जिसका दर्द या दु:ख मिट गया है। —যৌবন वि—जिसकी जवानी बीत गयी है। —স্পৃহ (-अ) वि—निष्काम, कामना-रहित।

গতর सं—शरीर, गात्र (—খাটানো)। —খেকো वि—शरीरकी शक्ति रहते हुए भी जो काम करना नहीं चाहता। स्त्री—খাকী (गाली)।

গতাগত सं—যাতায়াত आनाजाना। গতাগতি सं—बार-बार जन्ममृत्यु, आवागमन। [গছানো।

গতান (-নো), গতানো (क्रि परि १०)=

গতানুগতিক वि—प्रचलित प्रथाके अनुसार चलने वाला, लकीरका फकीर।

গতানুশোচনা सं—पछतावा, पश्चात्ताप।

গতায়াত, গতায়তি सं—आवागमन।

গতায়ু वि—मुमुर्षु, मरणासन्न; मृत।

গতাসু वि—मृत, मरा हुआ।

গতি स—गति, चाल; उपाय (—করা), आश्रय, शरण (অগতির—); সৎকার शवदाह। —ক स—हालत, दशा, लक्षण (—ভাল নয়); উপায় (কোনও গতিক বেগতিক); प्रयोजन (কার্য্য-গতিকে)। —বিজ্ঞান (—विग्यान) सं—यान्त्रिक गति विद्या Dynamics —বিধি स—चालचलन, गमन।

গর্ত (-अ) स—गर्त गढ़ा, गड्ढा।

গত্যন্তর स—दूसरा उपाय। [भारीपन।

গদ स—विष, अधिक भोजनके कारण पेटका

গঁদ स—আঠা गोंद।

গদাই-লস্করী वि—ढिमे धीमा, सुस्त (—চাল)।

গদি सं—মোটা তোশক गद्दा; नरम आसन; व्यवसायी आदिके बैठनेका स्थान, गद्दी।

গদিয়ান स—গদির মালিক गद्दीका मालिक। वि—गद्दी पर बैठा हुआ।

গদ্য (-अ) सं—गद्य, साहित्य।

গনগন सं—आगके तेजीसे जलनेका भाव।

গনগনে वि—खूब धनक जलता हुआ।

গনৎকার स—দৈবজ্ঞ ज्योतिषी।

গনতি, গুনতি सं—गणना, गिनती।

গনা (क्रि परि १)—गिनना, अनुमान करना। वि—गिना हुआ। —গাঁথা, (গোনা—) वि—जो गिन कर रखे हुए हैं, गिना हुआ।

গনান (-নো), গনানো (क्रि परि १०)—गिनाना; ज्योतिषीके द्वारा शुभाशुभ निर्धारण कराना।

গন্তব্য (-अ) वि—जानेके योग्य।

গন্ধ (गन्ध-अ) स—गन्ध, महक, बू

(—পাওয়া, —ছাড়া, —শোঁকা), चन्दन ; सम्बन्ध (नाम—)। —গোকুল सं—खट्टाश, খাটাশ सेंधवार। —বহ (-अ, सं—वायु, हवा। वि—गन्ध ले जाने वाला, सुगन्धित। —বণিক स—गंधी, सुगन्धित तेल इत्र आदि बेचने वाला, एक जाति। —বিরজা सं—गधाबिरोजा, चीड़ नामक वृक्ष का गोंद। —রাজ सं—एक सुफेद और सुगन्धित फूल।

গন্ধর্ব (गन्धर्ब-अ) स—गन्धर्व, संगीत-प्रिय एक कल्पित देवता ; गाने-बजाने वाली एक जाति। —বিদ্যা सं—संगीत, गाने-बजाने की विद्या। —বিবাহ (-अ) सं—माता-पिता की सम्मति न लेकर या प्रेम में फस कर माला बदल कर विवाह।

গন্ধী सं—छारপোকা खटमल। वि—गधयुक्त। —পোকা सं—गंधिया कीडा, एक बदबूदार उडने वाला कीडा।

গন্ধেন্দ্রিয় (-अ) सं—घ्राणेन्द्रिय, नाक।

গপ্‌গপ্‌, গব্‌গব্‌ स—ग्रास निगलने का शब्द।

গপ্প (गप्प-अ) सं—गल्प, किस्सा, कहानी, गपशप। গপ্পে वि—गपशप करने वाला, बकवादी, गपोडिया।

গবচন্দ্র, গবুচন্দ্র वि—मूर्ख, बेवकूफ।

গবয় सं—गवय, नील गाय।

গবা वि—मूर्ख, भोंदू, बेवकूफ। —কান্ত (-अ), —চন্দ্র (-अ), —রাম, হবা— वि—भोंदू, मूर्ख।

গবাক্ষ (गवाक्ख-अ) सं—छोटा जगला, झरोखा।

গবী सं—गाভী गाय, गौ।

গবেষণা सं—खोज, किसी वस्तु या विषय का अच्छी तरह अनुशीलन करके उसके सम्बन्ध में नयी बातों या तथ्योंका पता लगाना।

গব্য (-अ) वि—गाय से उत्पन्न (दूध घी आदि)।

গভর্ণমেণ্ট सं—गवर्नमेंट, सरकार।

গভর্ণর सं—गवर्नर, राज्यपाल। [जटिल, गूढ़।

গভীর वि—गभीर, गहरा, घना, गाढ़ा,

গম सं—গোধূম गेहू।

গমক सं—स्वर का कम्पन।

গম্‌গম্‌ स—गभीर शब्द।

গমন सं—गमन, गति, चाल। গমনা— स—যাতায়াত आवागमन, आनाजाना। গমনীয় (-अ), গম্য (-अ, वि—जाने योग्य, गंतव्य।

গম্বুজ सं=গম্বুজ।

গম্ভীর वि—गंभीर, धीर, स्थिर, गूढ।

গম্য (-अ) वि—प्राप्य, ज्ञेय, जानने योग्य।

গয়না स—जेवर। —গাঁটি स—जेवरात।

গয়ংগচ্ছ सं=গড্ডিমসি।

গয়বী वि—छिपा हुआ, गुप्त, गायब।

গয়রহ अव्य—वगैरह, इत्यादि।

গয়লা सं=গোয়ালা। स्त्री—গয়লানী।

গয়া सं—गया। গয়ালী सं—गयावाला पंडा।

গয়ার, গয়ের स—बलगम।

গর—उप—अभाव-सूचक उपसर्ग, गैर। —মিল स—অমিল अनमेल, हिसाब का न मिलना। —রাজী वि—অসম্মত गैरराजी। —হাজির वि—गैरहाजिर। —হাজরী सं—गैरहाजिरी।

গরগর सं—क्रोध प्रकाशक शब्द।

গরজ स—गरज, मतलब, जरुरत। स—प्रयत्न, ध्यान (—করা)।

গরজান (नो), গরজানো क्रि=गर्जन।

গরদ सं—एक रेशमी कपड़ा।

গরদা सं=गद 1। [গরবিনী।

গরব स=गर्व। গরবী वि—घमडी। स्त्री—

গরবা स—एक गुजराती नाच।

গরম वि—তপ্ত गर्म (—জল, —কাপড়, —মেজাজ)। सं—गर्मी का मौसिम (—কাল); गर्मी, रोग (পেট—, মাথা—); मूल्यवृद्धि

महंगी (বাজার—)। —মসলা सं—इलायची लवंग दारचीनी आदि गर्म मसाला।

গরমান (-নো), গরমানো (क्रि परि १६)—গরম হওয়া गरमाना, घमंड करना, नाराज होना। [आतशक।

গরমি सं—উত্তাপ गर्मी, गर्मी की बीमारी,

গররা सं—ऊँचा शब्द।

গররাজী, গররাজি वि—গর देखो।

গরল सं—विष, जहर, विषैला घाव।

গরাদে सं—শিক छड़ (জানালার—)।

গরাস सं=গ্রাস। [सा (—গান)।

গরিব, গরীব वि—गरीब। গরিবানা वि—गरीब-

গরিমা सं—महिमा, गुरुत्व, घमंड।

গরীয়ান वि—महान विशाल, पूजनीय, गौरव-युक्त। स्त्री—গরীয়সী।

গরু, গোরু सं—गाय, गौ, मुर्ख।

গর্জান (-नो), গর্জানো (क्रि परि १६)—গর্জন করা गरजना।

গর্ত, গর্ত্ত सं—গহ্বর गड्ढा, छिद्र, छेद।

গর্দভ सं—गदहा, मूर्ख।

গর্দা सं—গরদা गर्द, धूल।

গর্দান গরদান, सं—ঘাড় गरदन गला; सिर।
গর্দানি, গরদানি सं—गरदनियाँ।

গর্ব (-अ) सं—घमंड, शेखी। গর্বিত वि—घमंडी, गर्वीला।

গর্ভ (-अ) सं—সন্তান-সম্ভাবনা हमल (—হওয়া, গর্ভসঞ্চার); गर्भाशय; भ्रूण। —কোষ सं—जरायु, फूल का बीज-कोष। —গৃহ सं—भीतर का कमरा; सौरी। —চ্যুত (-अ) वि—गर्भ से पतित। —জ वि—गर्भसे उत्पन्न। —ধারণ सं—অন্তঃসত্ত্বা হওয়া हमल से होना। —ধারিণী स्त्री—माता, जननी। —বাস सं—गर्भ में रहना। গর্ভাগার सं=গর্ভগৃহ। গর্ভাঙ্ক (-अ) सं—नाटक के अंक का एक भाग या दृश्य। গর্ভিণী स्त्री—পোয়াতি गर्भवती। [(গাছ—)।

গর্ভিত (-अ) वि-युक्त पूर्ण, गर्भित

গর্হণ, গর্হা सं—निंदा। গর্হিত वि—गर्हित, निंदित। গর্হ্য (-अ) वि—निंदित, घृणित।

গল सं=গলা। —গণ্ড (-अ) सं—गला फूलने की बीमारी, घेघा। —গ্রহ सं—गले का भार जिसके पालने-पोसने का भार अनिच्छा से लिया जाता है।

গলগল वि— (फलादि) ज्यादा पक जानेसे नरम, पिलपिला; फटने लायक। सं—निगलने या गलगलाने का शब्द; तेज धारसे निकलना (রক্ত—করিয়া বাহির হইতেছে)।

গলগলান (गल्गलानो), গলগলানো (क्रि परि १६)—गलगला कर निकलना, गलगलाना, जल्दी जल्दी बोलना। [(গলদশ্রুলোচনে)।

গলৎ वि—जो पिघल रहा है, गलता हुआ

গলতি सं—भूल, गलती, धातु का गलना, गलन; बरतन के छेद में से तरल वस्तु का निकलना।

গলদ सं—गलती, भूल, दोष।

গলদশ্রু (गलदश्रु) वि—आँसू बहता हुआ या बहाते हुए (—লোচনে, नेत्रों से आँसू बहाते हुए)।

গলদা सं—बड़ी झींगा-मछली।

গলদাহ (-अ) सं—गले में जलन गले में घाव।

গলদ্ঘর্ম (अ) वि—पसीने से तराबोर।

গলন सं—দ্রব হওয়া पिघलना।

গললগ্নীকৃতবাস वि—গলবস্ত্র गले में कपड़ा डाला हुआ (प्राथना या विनय प्रकाशार्थ)।

গলহস্ত (-अ) सं—গলাধাক্কা गरदनियाँ।

গলা सं—गरदन, गला, कंठ। —গলি सं—एक दूसरे के गले पर बाँह डालने की स्थिति, घनिष्ठ मित्रता। —চাপা क्रि—स्वर नीचा

করনা ; গলা দবানা। —ছাড়া ক্রি—স্বর ऊंचा करना (—ছেড়ে গাও)। —ধরা, —বসা, —ভাঙা ক্রি—गला बैठना या विकृत होना। —ধাক্কা सं—गरदनियाँ। —বন্ধ सं—गुलुबंद। —বাজি सं—चिल्लाहट, अधिक व्याख्यान। গলায় গলায় क्रि वि—आकंठ मुँहामुँह, गले तक। वि—बहुत घनिष्ठ (—ভাব)। গলায় দড়ি सं—উদ্বন্ধন फाँसी ; धिक्कार का शब्द।

গলা (क्रि परि १)—गलना, पिघलना, तरल होना, नरम होना, सड़ जाना ; घुसना (জামায় মাথা গলে না) ; मोहित होना (আনন্দে—)। वि—गला हुआ, तरल, नरम।

গলাধঃকরণ (-धकरन) सं—ভক্ষণ भक्षण, পান पान, गलेके नीचे उतारना।

গলান (-नो), গলানো (क्रि परि १०)—गलाना ; घुसाना, मोहित करना।

গলি सं—गली। গলি—क्रि वि—गली-गली, हर गली में। —ঘুঁজি सं—सकरी गली या उसके मोड़ पर का संकरा स्थान।

গলিজ वि—गलीज, गंदा, सड़ा।

গলিত (-अ) वि—तरल, गला हुआ, कीचड़ सा ; गल कर निकला हुआ।

গলুই सं—नाव का नुकीला सिरा।

গল্প (-अ) सं—कहानी, कथा, बातचीत। গল্পে वि—गप्पी।

গসগস सं—क्रोध का भाव प्रकाश।

গ সা গু. सं—गरिष्ठ साधारण गुणनीयक Greatest Common Measure, G C M (जैसे ६४, ४८, ३२ और २४ में ८)।

গস্ত (-अ) सं—भ्रमण, गश्त।

গস্তানী सं—কুলটা छिनाल, रंडी।

গহন वि—दुर्गम, गभीर, गूढ। सं—दुर्गम स्थान ; गूढ विषय।

গহনা सं—গয়না जेवर (—গাঁটি, —পত্র)। গহনার নৌকা सं—व्यापारी माल या यात्री ढोने वाली नाव।

গহ্বর (गव्हर) सं—गर्त, गड्ढा, गुफा।

গা सं—গাত্র शरीर का ऊपरी हिस्सा (—গরম, —ধোয়া), किसी वस्तु की पीठ, शरीर, इच्छा (খাবার—নাই)। —কেমন করা क्रि—देह मिचलाना। —ঝাড়া দেওয়া क्रि—उठने के लिए उद्यत होना। —ঢাকা দেওয়া क्रि—छिपना। —দেওয়া, —করা क्रि—कोशिश करना, ध्यान देना। —নাড়া क्रि—शरीर चलाना। —পাতিয়া লওয়া क्रि—बिना इतराज सह लेना। —বমি বমি করা क्रि—देह मिचलाना। —ম্যাজ ম্যাজ করা क्रि—थकावट या हरारत मालूम होना। গায়ে পড়িয়া क्रि वि—दस्तंदाजी से। গায়ে ফুঁ দিয়া क्रि वि—बेपरवाहीसे, बिना जिम्मेवारी के। গায়ে মাথা क्रि—প্রাহ্য করা अपने ऊपर लेना, ग्रहण करना। —জুরি,—জোরি सं—जबरदस्ती। —সহা वि—शरीर में सहन होने वाला, अभ्यस्त। গায়ে হলুদ सं—গাত্রহরিদ্রা विवाहके दिन दुलहे या दुलहिन को हरदी से नहलाने का संस्कार।

গাঁ सं—गाँव, ग्राम (পাড়া—)।

গাই सं—গাভী गाय, गौ।

গাঁই, গাঁঞী सं—ब्राह्मणों का श्रेणी-विभाग।

গাঁইট सं—गाँठ, गिरह, ग्रन्थि, जोड़, गठरी, गट्ठर। —কাটা स—गिरहकट।

গাইয়ে स—गवैया, गायक, अच्छा गानेवाला।

গাওনা सं—संगीत, मजलिसी गाना।

গাওয়া वि—गव्य। [करना (গুণ—)।

গাওয়া (क्रि परि ४)—গান করা गाना, प्रचार

গাওয়ান (-नो), গাওয়ানো (क्रि परि १२)—दूसरे से गान कराना।

গাং स—बड़ी नदी। —চিল स—बड़ी नदी

या समुद्र की एक चिड़िया। —শালিক सं—नदी के तीर में रहने वाली एक छोटी चिड़िया।

গাগরা, গাগরি सं—কলসী गगरा।

গাঁ গাঁ, গাঁক, গাঁক গাঁক सं—बैल का शब्द।

গাঙ, গাঙ্গ सं=গাং।

গাছ सं—पेड़, लता (লাউ—)। —গাছড়া सं—पेड़-पौधे, जड़ी-बूटी। —পালা सं—पेड़-पौधे।

গাছা, গাছ सं—খণ্ড, টা टुकड़ा (এক—দড়ি)। प्यार में গাছি (এক—চুল, চার—চুড়ি)।

গাঁজ, গাঁজলা, গেঁজলা सं—ফেনা झाग, फेन; खमीर। গাঁজন सं—পচন सड़न।

গাজন सं—शिव मनसा आदि का उत्सव।

গাঁজা सं—गाँजा। —খোর वि—गजेड़ी।

গাঁজা (क्रि परि ३)—सड़ना, खमीर बनना।

গাঁজান (-নো), গাঁজানো (क्रि परि १०)—सड़ाना, खमीर पैदा करना।

গাজী सं—लड़ाका, वीर; गाजी।

গাভী सं=গাই।

গাঁট, গাঁইট सं—গ্রন্থি गाँठ, गिरह (সুতায়—বাঁধা); कस कर बंधी गठरी। —কাটা सं—गिरहकट। —ছড়া सं—गठजोड़ा, विवाह में दुल्हे और दुलहिन के कपड़ों में गाँठ जो आठवें या दसवें दिन खोली जाती है।

গাঁটরি सं—বোঁচকা गठरी। [मुक्का।

গাঁট্টা सं—बंधी मुट्ठी की उंगली की गाँठ,

গাঁড়ল, গাড়ল वि—বোকা बेवकूफ़, दूसरे की रायसे चलने वाला।

গাড়া (क्रि परि ३)—পোঁতা गाड़ना (বাঁশ—), रहना, बसना (আড্ডা—); घुटने मोड़ कर बैठना (হাঁটু—), निचोड़ना (গামছা—)।

গাড়ি (-ড়ী) सं—শকট गाड़ी। —চড়া क्रि—गाड़ी हांकना, गाड़ी में सवार होना। —বারান্দা सं—मकान के सामने गाड़ी ठहराने का बरामदा, बरसाती Portico [जलपात्र।

গাড়ু सं—তাম্র পীতল का ऊँचा बधना सा

গাড়োয়ান सं—गाड़ीवान।

গাঢ় (-ঢ়) वि—गाढ़ा, घना, गहरा।

গাণনিক सं—हिसाब-नवीस, लेखाध्यक्ष Accountant

গাণিতিক वि—गणितज्ञ।

গাণ্ডীব (गान्डिव) सं—अर्जुन का धनुष। —ধন্বা सं—गांडीवधारी अर्जुन।

গাণ্ডেপিণ্ডে क्रि वि—गलेतक (भोजन)।

গাঁতি सं—दुधारी कुल्हाडी।

গাঁতিদার सं—छोटा जमींदार।

গাত্র सं—গা অঙ্গ, शरीर, किसी वस्तु की पीठ। —দাহ सं—গাত্রজ্বালা शरीर की जलन। —মার্জনী सं—গামছা अंगौछा। —হরিদ্রা सं=গায়ে হলুদ। গাত্রোত্থান सं—গা তোলা शरीर को उठाना, खड़ा होना।

গায়ক सं, वि—गायक, गवैया। स्त्री—গায়িকা।

গাঁথন सं—गूंथना; चुनना। [चुनाई।

গাঁথনি सं—ईंटों या पत्थरोंके चुनने का काम,

গাঁথা (क्रि परि १०)—गूंथना; चुनना; नत्थी करना, दृढ़ता से बैठाना (মনে—)। वि—गूंथा हुआ; चुना हुआ।

গাদ सं—तलछट; झाग।

গাদা (क्रि परि १०)—ঠাসিয়া ভরা दबा कर भरना। सं—स्तूप, ढेर। [स्थिति।

গাদাগাদি सं—भीड़, पास पास सटी हुई

গাঁদা, গেঁদা सं—गेंदा फूल।

গাদি, গাঁদি सं—রাশি, स्तूप ढेर; भीड़।

গাধা सं—गदहा, मूर्ख। —মি सं—गदहपन, मूर्खता। —বোট सं—माल ढोने वाली भारी नाव। स्त्री—গাধী।

গাঁধাল, গাঁদাল सं—एक बदबूदार लता, इसकी पत्ती दवा के काम आती है।
গান सं—गान, सगीत (—শোনা, —গাওয়া)।
গাপ सं—আত্মসাৎ गबन, गायब।
গাফিল वि—लापरवाह, बेसुध, गाफिल।
গাফিলতি, গাফিলি स—गफलत।
গাব सं—एक कड़ुवा और गोंददार फल, धातुपात्र में खटाई के सयोग से उत्पन्न कसैलापन।
গাবা (क्रि परि १०)—धातुपात्र में खटाई के सयोग से कसैलापन उत्पन्न होना।
গাভিন वि—गर्भिणी (पशु)।
গা-ভারী सं—शरीर का भारीपन, अकड़, तनाव ; गर्भवती।
গাভী सं—गाय गौ।
গামছা (गामछा) स—अंगोछा।
গাময় क्रि वि—सारे शरीर में।
গামলা (गामला) सं—कटोरा सा एक बड़ा बरतन, गमला।
গামোড়া स—गात्रभग, अंगों का मरोड़ना।
গাম্ভীর্য (-अ) सं—गभीरता, धीरता।
গায়ন, গায়েন सं—गवैया ; पुराण-गायक।
গায়েব वि, स—গাপ गायब। গায়েবী वि—गुप्त (—खून)।
গারদ स—कয়েদ जेलखाना।
গার্হস্থ্য (-अ) वि—गृहस्थ या गृहस्थाश्रम सम्बन्धी, पारिवारिक। स—गृहस्थाश्रम।
গাল स—गाल, गाली। —গল্প सं—झूठी कहानी, गप्प। —পাট্টা सं—जो दाढी केवल गालों पर रखी जाती है। —বাদ्य स गाल बजाकर उत्पन्न बम् बम् शब्द (शिव-पूजामें)। —মন্দ (-अ)—गाली-गलौज।
গালন सं—गलाने की क्रिया, छानना।
গালা सं—लाक्षा, लाह, लाख।
গালা (क्रि परि ३)—रस निचोड़ना (ফেন—); फोड़ना (ফোড়া, —চোখ—), छानना।
গালাগালি सं—गाली गलौज।
গালান (-नो), গালানো (क्रि परि १०)—गलाना, पिघलाना, छनवाना।
গালি, (-ली) सं—कटुवाक्य गाली (—দেওয়া, —পাড়া)। গালাগাল, —গালাজ सं—गाली-गलौज।
গালিচা, গালচে (गाल्चे) सं—गलीचा।
গালী सं—गाली, कटुवचन।
গা-সহা वि—अभ्यस्त आदी।
গাহক सं—ग्राहक, खरीदार, गायक, गवैया।
গাহন, গাহ स—অবগাহন जल में डूबकर स्नान।
গিজগিজ सं=গজগজ।
গিঁঠ सं—गिरह, ग्रन्थि गाँठ।
গিনি सं—गिन्नी, अशरफी। —সোনা सं—गिन्नी की तरह ताँबा मिला हुआ सोना जिसमें सोना २२ भाग और ताँबा २ भाग है।
গিন্নী स्त्री घर की मालकिन, गृहिणी। —পনা सं—गृहिणी का काम, गृहिणी सा बर्ताव। —বান্নী सं—वृद्धा, अनुभवी गृहिणी।
গিয়ে, গে सं—কথার মাত্রা बातचीत में भूले हुए शब्द के स्थान में यह शब्द इस्तेमाल होता है (তারপর—), आज्ञा-सूचक शब्द (কর—, খাও—)।
গিরগিটি स—गिरगिट, छिपकली।
গিরা, গেরো सं—গিঁঠ गिरह ; एक गजका सोलहवाँ भाग।
গিরি सं—पहाड़। —বর্ত্ম (-वर्त-अ) सं—घाटी दर्रा। —মাটি सं—गेरू। —রাজ सं—पर्वत-राज, हिमालय। —রাণী सं—हिमालय राज की पत्नी और दुर्गा की माता मेनका। —সঙ্কট सं=গিরিবর্ত্ম।
গির্জা सं—गिरजा, ईसाई उपासना-मन्दिर।

গিলটি सं—दूसरी धातु पर सोने या चाँदी का पतला लेप, गिलट (—করা গহনা)।

গিলন सं= গলাধঃকরণ।

গিলা, গিলে सं—एक फल का चिपटा और चिकना बिया।

গিলা, গেলা (क्रि परि ५)—निगलना।

গিলান (-नो), গিলানো, গিলনো, গেলানো (क्रि परि ११)—খাওয়ানো खिलाना, निगलवाना।

গিলিত (-अ) वि—ভক্ষিত खाया हुआ, निगला हुआ। —চর্বণ सं—রোমন্থন, জাবর কাটা जुगाली, पागुर।

গিসগিস, গিশগিশ सं—जमावड़ा या भीड़ का लक्षण प्रकाश (লোক—করছে)।

গীত सं—स गीत, गाना। গীত (-अ) वि—गाया हुआ; वर्णित। —বাদ্য (-अ) स—गाना-बजाना।

গু सं—বিষ্ঠা गुह, मल।

গুয়া, গুবা स—सुपारी।

গুই सं—एक उपाधि।

গুগ্গুল, (-গুলু) सं—गुग्गुल।

গুগলি (गुग्‌लि)—শামুক घोंघा।

গুচ্ছ सं—গোছা, থোলো, স্তবক गुच्छा।

গুচ্ছের वि—কতকগুলো बहुत से (अवज्ञार्थ में) (—পচা পটল)।

গুছান (-नो), গুছানো, গোছানো (क्रि परि १२)—सजाकर रखना, इकट्ठा करना। वि—सजाया हुआ।

গুছি स—वेणी बढ़ाने के लिए बालों की गुच्छी।

গুজগুজ सं—कानाफूसी।

গুজব सं—জনরব अफवाह।

গুজরে क्रि वि—দ্বারকে मार्फत। [गुजराती।

গুজরাট सं—गुजरात। গুজরাটী वि, सं—

গুজরান स—জীবিকা-নির্বাহ गुजारा, निर्वाह।

গুজরান (-नो), গুজরানো (क्रि परि १८)—গুজরান করা निर्वाह करना।

গুজরী (गुजरी) स—एक तरह का पाजेब।

গুঁজা (क्रि परि ६)=গোঁজা।

গুঁজি स—খোঁপার কাঁটা जूड़ा बाँधने का काँटा; छोटा खूँटा।

গুঞ্জন सं—গুনগুন শব্দ भनभनाहट, झनकार; फुसफुसाहट। গুঞ্জিত (-अ) वि—भनभनया हुआ। গুঞ্জরণ सं—झनकार। গুঞ্জরিত (-अ) वि=গুঞ্জিত।

গুঞ্জা, গুঞ্জ, গুঞ্জিকা सं—कूँच गुंजा, घुघची।

গুটলি, (-ল) सं—गुटली; टेला; बहुत कड़ा गोल मल।

গুটান (-नो), গুটনো, গোটানো (क्रि परि १२) लेपटना, समेटना; बंद करना, उठा देना (কারবার—)।

গুটি, (-কা), গুটী सं—বড়ি, বটিকা गोली, छोटा कच्चा फल (আমের—); रेशम का कोआ, कीटों के कोप में रहने की अवस्था, शीतला रोगकी फुड़िया; रेशम-कीट। —পোকা सं—रेशम-कीट। [कर (—চলা)।

গুটিগুটি, গুড়িগুড়ি क्रि वि—धीरे धीरे पैर रख

গুড় स—गुड़। পাটালি— स—टिकिया या बरफी के आकार में जमाया हुआ गुड़।

গুড়গুড় सं=গড়গড়।

গুড়গুড়ি स—फरशी।

গুঁড়া, গুঁড়ো सं—चूर्ण, चूरन, बुकनी, कण।

গুড়ান (-नो), গুড়ানো, গুড়নো (क्रि परि १२)—গুঁড়া করা चूर्ण बनाना, बुकनी बनाना। वि—बुकनी किया हुआ।

গুড়ি মারা क्रि—हाथ-पैर समेटकर छीपे रहना।

গুঁড়ি सं—तना; बुकनी, चूर्ण; बूँदी-बाँदा।

গুড়ুক सं—गुड़ में साना हुआ तमाखू।

গুড়ূচী सं—গুলঞ্চ।

গুড়ুম सं—बंदूक आदि से गोली छूटने का शब्द, धमाका।

গুণ सं—गुण, हुनर ; असर, विशेषता, शक्ति, उपकार, फायदा (শিক্ষার—), (दर्शन में) प्रकृति का धर्म—सत्त्व, रज, तम ; वस्तु का धर्म—रूप, रस, परिमाण, इच्छा आदि, (अलंकार-शास्त्रमें) प्रसाद, माधुर्य, ओजः आदि। (गणित में) गुणा, जरब ; बार (দশ—বড়), धनुष की डोरी, रस्सी (নৌকার —টানা), जादू, वशीकरण (—করা); दोष (व्यंगार्थ में) (তার সব—জাহির হয়ে পড়েছে)। —গ্রাম सं—गुणावली। —গ্রাহী वि-गुण-ग्राहक, गुणियों का आदर करने वाला। —ধর सं—गुण-युक्त, (व्यगार्थ में) कुकर्मी। —ধাম, —নিধি वि—अनेक गुणों से युक्त। —পনা सं—निपुणता। —বত্তা सं—गुण-युक्तता। —বাচক, —বোধক वि—गुण-सूचक। —বাদ सं—गुणानुवाद, प्रशंसा। —বৈষম্য (-अ) स—गुणों की विषमता। —মণি सं—अनेक गुणों के होने के कारण नर-रत्न। —টানা क्रि-रस्सी से नाव खींचना। —করা क्रि-गुणा करना, जादू करना, मोहित करना। গুণে ঘাট सं—गुण में घाटा या कसर (व्यंग में)। গুণে নমস্কার स—दोष देख कर अलग होने के लिए व्यंग में ऐसा कहा जाता है। গুণিতে জানা क्रि—गिनती जानना, भविष्य कह सकना।

গুণন सं—गुणा करना, गिनना। গুণনীয় (-अ) वि—जिस सख्या का गुणा किया जाता है।

গুণনীয়ক सं—जिस सख्या के द्वारा दूसरी संख्या का भाग करने पर शेष कुछ नहीं बचता।

গুণছুচ सं—बड़ी मोटी सूई, सूजा। [गुणयुक्त।

গুণাকর, গুণাধার, वि—गुणों का आधार,

গুণাগুণ सं—गुण-दोष।

গুণাতীত (-अ) वि—सत्त्व, रज, तम प्रकृति के इन तीन गुणों से परे।

গুণান্তর सं—दूसरा गुण। [योग्य।

গুণান্বিত (ন্বিত-अ) वि—गुणयुक्त, गुणवान,

গুণাভরণ वि=গুণালংকার। [भ्रम।

গুণাভাস सं—गुण-सादृश्य, गुणके अस्तित्व में

গুণালংকার, (-স্কার), গুণালংকৃত, (-স্কৃত -अ) वि—अनेक गुणों से युक्त।

গুণিত (-अ) वि—जिसका गुणा किया गया है।

গুণিতক स—जिस सख्या का दूसरी संख्या के द्वारा भाग करने पर शेष कुछ नहीं बचता।

গুণোৎকর্ষ (-अ) सं—गुणों की श्रेष्ठता।

গুণোপেত (-अ) वि—गुणयुक्त।

গুণ্ঠন सं—ঘোমটা घूंघट ; आवरण।

গুণ্ডা सं—गुंडा, बदमाश।

গুণ্ডামি सं—गुंडापन, बदमाशी।

গুণ্য (-अ) वि=গুণনীয়। [नोक से धक्का।

গুঁতা, গুঁতো सं—सींग लाठी कोहनी आदि की

গুঁতান (-नो), গুঁতানো, গুঁতনো (क्रि परि १२) —গুঁতা দেওয়া বা মারা सींग आदि से धक्का देना।

গুদাম, গুদম सं—गोदाम। [सं—सूजा।

গুন स—চট टाट ; চটের থলিয়া, बोरा। —ছুঁচ

গুনগুন सं=গুঞ্জন।

গুনতি सं=গনতি।

গুনা सं—पाप, गुनाह। —গার, গুনোগার, গুনোগারি सं—दोष के कारण हरजाना या दंड।

গুপীযন্ত্র (-अ) सं=গোপীযন্ত্র।

গুপ্ত (-अ) वि—छिपा हुआ, गायब। सं—एक उपाधि। —কথা सं—गुप्त बात। —চর सं—खुफिया, जासूस।

গুপ্তি सं—गुप्त रखने का भाव (মন্ত্র—), কাঁপা লাঠির মধ্যে লুক্কায়িত তরবারি गुप्ती।

গুফা, গুম্ফা স — গুহা, কন্দর गुफा, कदरा।

গুবরে (गुबरे), (-বুরে) वि - गोबर का।

গুবাক, (गू—) स — সুপারি सुपारी।

গুম सं — গুম मुक्का मारने का शब्द। वि—गुम, गायब, अचल, स्तब्ध (— হয়ে থাকা)।

গুমট स — গুমোট গরম उमस। [कोठरी।

গুমটি (गुमटि) स — पहरेवाले की कुटी, छोटी

গুমর सं — গর্ব, দেমাক शेखी, घमंड।

গুমসান (गुम्शानो), গুমসানো, গুমসনো (क्रि परि १८) — उमस होना, धुएं या भाप के कारण महकना। গুমসা, গুমসো वि — धुएं या भाप से महका हुआ। গুমসানি, গুমসনি सं — उमस।

গুমুরে वि — गुमर करने वाला, घमंडी।

গুম্ফ (-अ) स — গোঁফ मूंछ; गुच्छा।

গুম্বজ स — গম্বুজ गुबज।

গুয়া सं = গুবাক।

গুরু स — শিক্ষাদাতা, গুরু गुरु, शिक्षक, अध्यापक, आचार्य; पूज्य व्यक्ति। वि — उत्तम, श्रेष्ठ, भारी, गंभीर। —গিরি सं — गुरुआई। —চণ্ডাল सं — गुरु और लघु या संस्कृत और प्राकृत शब्दों का एक में समावेश (গুরুচণ্ডালী ভাষা, যেমন, শকট চড়া, গাড়ী আরোহণ)। —জন सं — पूज्य व्यक्ति, गुरुलोग। —দশা सं — पिता या माताकी मृत्यु की अवस्था। —পাক वि — जो भोजन जल्दी नहीं पचता। —মশাই, —মহাশয় सं — प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक। —মা स्त्री — बालिका-विद्यालय की शिक्षयित्री। —মারা বিদ্যা स — जो विद्या गुरु के विरुद्ध लगायी जाती है। —স্থানীয় (-अ) वि — गुरु के समान पूज्य। —দেব, —ঠাকুর, —জিন্দা, —পত্নী, —পুত্র, —দর্শন, —ভক্তি आदि शब्द दीक्षादाता गुरु के लिए प्रयुक्त होते हैं।

গুর্খা सं — गोरखा।

গুর্জর सं — গুজরাট गुजरात, गुजरात-निवासी।

গুর্বিণী सं — गर्भवती।

গুর্বী वि - गुरुपत्नी, गर्भवती।

গুল सं — पत्थरके कोयले के चूर में मिट्टी और गोबर मिलाकर बनायी और सुखायी हुई गोली; फूल; गुलाब।

গুলজার वि — शोभायमान।

গুলঞ্চ सं — গুড়ুচী गुरुच। [जमावड़ा।

গুলতান (गुल्तान्) सं — জটলা, ঘোঁট

গুলতি (गुल्ति) सं — বাঁটুল गुलेल।

গুলবাহার वि बूटीदार।

গুলা, গুলে, গুলো प्रत्य — समूह, बहुत से (अनादर अर्थमें, जैसे, চাকর—, জিনিস—)।

গুলান (-নো), গুলানো, গুলনো (क्रि परि १२) — अस्तव्यस्त करना (হিসাব—, জিনিসপত্র—); हिलोरना, घोलना।

গুলনার स = গোলাপ।

গুলাল सं — আবীর गुलाल।

গুলি प्रत्य — समूह, बहुत से (आदरार्थ में, जैसे, শিশু—, পুস্তক—)।

গুলি, গুলিকা, গুলী सं — বড়ি गोली, हाथ या पैर की पिंडली; चंडू। —খোর सं — चंडूबाज। —খুরী वि — चंडूबाज के लायक; ख्याली। —ডাণ্ডা, ডাং— स — गोली डंडे का खेल।

গুল্ফ (गुल्फ-अ) सं — গোড়ালি एड़ी।

গুল্ম (गुल्म-अ) सं - झाड़ी; पेट में गिल्टी का रोग।

গুষ্টি स = গোষ্ঠী। [एक उपाधि।

গুহ (-अ) सं — कार्तिकेय; कायस्थों की

গুহা सं — गुफा, कन्दरा।

গুহ্য (गुह्य-अ) वि — গোপনীয় गुप्त। सं — मलद्वार।

গূঢ় (-अ) वि—गुप्त, छिपा हुआ ; अस्पष्ट, गूढ ; घना। —পুরুষ सं—भेदिया, जासूस।
গৃধিনী स्त्री—गीध।
গৃধ্নু वि—लोभी, लालची।
গৃধ্র (-अ) सं—गीध।
গৃহ (-अ) सं—घर, मकान, कमरा। —কর্তা सं—गृहपति, घर का मालिक। स्त्री—গৃহকর্ত্রী। —কর্ম (-अ) सं—घर का काम। —জন सं—घर के लोग, कुटुम्बी। —জাত (-अ) वि—घर का बना। —দাহ (-अ) सं—घर का आग से जलना। —দেবতা सं—घर में स्थापित देवता की मूर्त्ति, कुल-देवता। —ধর্ম (-अ) स—गृहस्थ का धर्म। —প্রবেশ सं—नये बने मकान में प्रथम प्रवेश। —বিচ্ছেদ स—एक परिवार के लोगों का अलग हो जाना। —বিবাদ सं—घরোয়া ঝগড়া पारिवारिक झगड़ा। —লক্ষ্মী (क्खी) स्त्री—घर की लक्ष्मी, दुलहिन। —শালী सं—गृहस्थ के काम-काज, गृहस्थी।
গৃহী सं—সংসারী विवाहित, गृहस्थ। গৃহিণী स्त्री=গিন্নী। গৃহিণীপনা स=গিন্নীপনা।
গৃহীত (-अ) वि—ग्रहण या धारण किया हुआ, प्राप्त, स्वीकृत।
গে अव्य=গিয়ে। [গোঙানো।
গেঙান (गेङानो), গেঙানো (क्रि परि १०)=
গেছো वि—जो पेड़ों पर घूमता है (—ইঁদুর, —ভূত)। [से उत्पन्न शरीर में गिल्टी।
গেঁজ, গ্যাঁজ (गेंज) स—अंकुर, कल्ला ; रोग
গেঁজলা (गेंजला) सं=গাঁজলা।
গেঁজে सं—लम्बी जालीदार थैली जिसमें रुपये-पैसे रख कर कमर में बांधते हैं, हिमयानी।
গেঁজেল वि—গাঁজাখোর गँजेड़ी।
গেঞ্জি सं—बनियाइन, गंजी।
গেট सं—ফটক फाटक, द्वार।
গেঁটা (गेंटा) वि—नाटा और मोटा।
গেঁটে वि—गठीला, गाँठदार, गाँठ का। —বাত सं—गठिया। [चोरी। वि—বেঁটে नाटा।
গেঁড়া (ग ड़ा) सं—আত্মসাৎ, গাপ গবন ;
গেঁড়ি स—घोंघी।
গেণ্ডু, গেণ্ডুক, গেণ্ডুয়া स—गेंद।
গেঁদা (गेंदा) सं=গাঁদা।
গেয় (-अ वि—गाने योग्य, जो गाया जाता है।
গেঁয়ো वि—পাড়াগেঁয়ে देहाती, गवार।
গেরি सं—गेरू मिट्टी।
গেরুয়া वि—गेरुआ। सं—गेरुआ वस्त्र। [बाधा।
গেরো सं—গিরা गिरह, गाँठ, दुष्ट ग्रह, विपत्ति,
গের্দ (-अ) सं—घेरा, कब्जा।
গেলা, গেলানো क्रि=গিলা, গিলান।
গেলাপ सं—খোল, ওয়াড় गिलाफ।
গেলাস सं—गिलास।
গেহ (अ) सं—गृह। গেহিনী स्त्री—गृहिणी।
গৈবী (गइबी) वि=গায়বী।
গৈরিক (गइरिक) स—गेरू मिट्टी। वि—गेरुआ।
গো सं—গরু गौ, गाय, बैल। —ভাগাড় स—मृत गाय-भैंसों के फेंकने का स्थान। —মূর্খ वि—गाय के समान मूर्ख। —বৈদ্য स—गायका इलाज करनेवाला वैद्, अनाड़ी वद, ठगवैद्य।
গো अव्य—प्यार का सम्बोधन (ওগো, কোথা গো)।
গোঁ सं—জিদ जिद।
গোঁ গোঁ सं—कराहने की आवाज।
গোগ্রাস सं—गौ की तरह मुंह से खाद्य ग्रहण ; बड़ा ग्रास या कौर। [अतिथि, मेहमान।
গোঘ্ন (-अ) सं—गौकुशी करने वाला ;
গোঙা वि—বোবা गूंगा।
গোঙান (-नो), গোঙানো (क्रि परि १४)—কাতরানো कराहना। গোঙানি सं—कराह।
গোচর वि—प्रत्यक्ष। सं—गोचर भूमि।

গোচারণ स —गौ चराना , चरागाह ।
গোছ सं— গুচ্ছ, গাছা गुच्छा , शृखला, सुप्रबन्ध (কাজের—); एड़ी के ऊपरवाला अंश, तरह (থাকা গোছের)। —গাছ सं —सुप्रबन्ध ।
গোছা स - गुच्छा (চাবির—, ফুলের—, খড়ের—)।
গোছান (-नो), গোছানো (क्रि परि १४)— সাজানো सजाना ; चीजों को अपने अपने स्थान में रखना ।
গোছাল (-लो), গোছালো वि—सुप्रबन्धक , किफायती , सुव्यवस्थित (—লোক)।
গোঁজ स —খোঁটা खूंटा ।
গোঁজা (क्रि परि ६)—ঢোকানো घुसाना, नीचा करना (ঘাড়—)। —মিল सं —घपला देकर हिसाव का मेल ।
গোট स —কোমরপাটা करधनी ।
গোটা वि—আস্ত सावूत, अखंड (—কয়েক)।
গোটান (– नो), গোটানো क्रि = গুটান ।
গোঠ सं—गोष्ठ, গোচারণ-ভূমি गोचर भूमि, चरागाह ।
গোড়া स —जड़, मूल , नींव ; आदि, कारण (—থেকে, যত নষ্টের—)। —গুড়ি क्रि वि —शुरु से, तले से । [कट्टरपन ।
গোঁড়া वि—कट्टर (—হিন্দু)। গোঁড়ামি सं—
গোঁড়া লেবু स —एक वहुत खट्टा नींबू ।
গোড়ালি सं—एक एड़ी ।
গোড়ে स — गजरा, मोटी माला ।
গোত্র (-अ) सं—गोत्र, जाति, श्रेणी, वंश । —জ स —वंशज ।
গোদ स —श्लीपद फीलपाँव ।
গোদা वि—মোটা मोटा, स्थूल, फीलपाँव वाला । -सं—धाड़ी दलपति, वंदरों का नायक (পালের—)।
গোদোহন सं —गाय का दुहना ।
গোধা, গোধিকা सं —গোসাপ गोह ।
গোধূম सं —गम गेहूं । [का मुहूर्त ।
গোধূলি-লগ্ন (-अ) स —विवाह के लिए सन्ध्या
গোনা (क्रि परि ६)— গণা করা, গণা गिनना ; ज्योतिष की गणना से निर्णय करना । वि— गिना हुआ । —গাঁথা वि = গণাগাঁথা ।
গোপ सं—গোয়ালা ग्वाला, अहीर । स्त्री— গোপী, গোপিকা, গোপিনী ।
গোপন सं—गोपन, छिपाव । वि—छिपा हुआ, गुप्त । গোপ্তব্য, গোপ্য, গোপনীয় (-अ) वि—छिपाने के योग्य ।
গোপাল सं —রাখাল गौ का पालन-पोषण करनेवाला, अहीर , कृष्ण, वालकों के संबोधन करने का प्यार का नाम ।
গোপিকা, গোপিনী, গোপী स्त्री—ग्वालिन ।
গোপীযন্ত্র (-अ) स —একতারা एकतारा ।
গোপুর स —मंदिर या नगर का फाटक ।
গোপ্তব্য, গোপ্য (-अ) वि—গোপন देखो ।
গোঁফ, (-प) स —গুম্ফ मूंछ ।
গোবদা (गोव्दा) वि—মোটা मोटा, भद्दा ।
গোবর स —गोवर ।
গোবরাট (गोव्‌राट) सं —डेहरी, दहलीज ।
গোবাঘা सं —भेड़िया , तेंदुआ, वड़ा शेर ।
গোবীজের টীকা सं—गौ की शीतला से लिये हुए वीज की टीका । [सीधा-सादा ।
গোবেচারা, (-री) वि —নিরীহ ভালমানুষ भोला,
গোময় सं—गोवर ।
গোমস্তা सं—गुमाश्ता, तहसीलदार, मुहर्रिर ।
গোমূর্খ (-अ) वि—निरा मूर्ख, भोंदू ।
গোযান स —बैलगाड़ी ।
গোঁয়ার वि—ढीठ, गवार, उजड्ड, गुंडा । —তুমি सं—ढिठाई , उजड्डपन ; खतरनाक काम में साहस ।
গোয়াল, গোশাল स —गोशाला ।

গোয়ালা, গয়লা सं—ग्वाला, अहीर। स्त्री—गोয়ালিনী, গয়লানী। [जासूसी।

গোয়েন্দা सं—गुप्तचर, जासूस। —গিরি सं—

গোর सं—कब्र, समाधि कब्र। —স্থান सं—कब्रिस्तान।

গোরা वि—गौर, फरसा गोरा। सं—फिरंगी, अंग्रेज सिपाही; गौरांग नामक एक प्रसिद्ध कृष्ण-भक्त जो अवतार माने जाते हैं। —চাঁদ सं—गौरांग देव, चैतन्य महाप्रभु।

গোরোচনা सं—गोरोचन।

গোল वि—गोल। सं—शोर, झंझट। —মাল सं—शोरगुल। —মেলে वि—पेंचदार, झंझटवाला।

গোলক सं—गोला, गोलक, गोल पिंड। —ধাঁধা सं—भूलभुलैयाँ, गोरख-धंधा; जटिल समस्या। [मोटाताजा (—চেহারা)।

গোলগাল वि—करीब-करीब गोल; হৃষ্টপুষ্ট

গোলদার सं—গোলার মালিক बखार का मालिक, अढ़तिया। গোলদারি सं—बखार या खलिहान का अधिकार।

গোলন্দাজ सं—गोलन्दाज।

গোলপাতা सं—एक प्रकार की लम्बी और चौड़ी घास जिससे छप्पर छाया जाता है।

গোলমরিচ सं—काली मिर्च।

গোলমাল, গোলযোগ, গণ্ডগোল सं—शोरगुल, गड़बड़ी, फिसाद, झंझट। গোলমেলে वि—झंझटी (मामला)।

গোলা सं—गोल पिंड, गोला, खलिहान, बखार (—ঘর, —বাড়ি)। —জাত वि—खलिहान में रखा हुआ।

গোলা (क्रि परि ६)—घोलना। सं—घोली हुई वस्तु (চূন—)।

গোলাপ सं—गुलाब। গোলাপী वि—गुलाबी।

গোলাম स—गुलाम। গোলামি सं—गुलामी।

গোলার্ধ (-अ) सं—पृथ्वी या किसी गोल वस्तु का आधा अंश।

গোলালো वि—करीब करीब गोल।

গোলোক (-ধাম) स—वैकुंठ, कौड़ियों का एक खेल जो बहुत से चित्रों और खानों वाले एक बड़े कागज पर खेला जाता है। —প্রাপ্তি स—वैकुंठवास, मृत्यु।

গোল্লা सं—গোলাকার মিষ্টান্ন लड्डू सा गोल छेने की एक मिठाई (রস—), रसगुल्ला, शून्य, कुछ नहीं। গোল্লায় যাওয়া क्रि—नष्ट होना, बरबाद होना; आवारा हो जाना।

গোষ্ঠ (-अ) सं—গোঠ चरागाह, मिलने का स्थान, सभा, समिति। গোষ্ঠী सं—कुटुम्ब, वंश, कुल, दल, सभा।

গোষ্পদ सं—गौ के खुर के दबाव से जमीन पर जो दाग होता है, बहुत छोटा आधार (গোষ্পদে সমুদ্র)। [खाना।

গোসল सं—স্নান गुस्ल। —খানা सं—गुस्ल-

গোসা सं—गुस्सा, क्रोध। —ঘর सं—क्रोधागार।

গোঁসাই, গোসাঁই सं—গোস্বামী गुसाई, प्रभु; वैष्णवों की एक उपाधि।

গোসাপ सं—গোধা गोह।

গোস্ত (-अ) सं—गोश्त, मांस। [ढिठाई।

গোস্তাকি सं—धृष्टता, বেয়াদবি गुस्ताखी,

গোস্বামী सं=গোঁসাই।

গোহাল सं=গোয়াল।

গৌড় (गउड) सं—बंगाल का प्राचीन नाम; उत्तरी बंगाल। গৌড়ীয় (-अ) वि—गौड देश का।

গৌণ (गउन) सं—गौण, विलंब, देर।

গৌর वि—গোরা, फरसा गोरा। सं—गौरांग देव, चैतन्य महाप्रभु, बंगाल के कृष्णोपासक गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के आदि प्रवर्तक,

यह अवतार माने जाते हैं। —চন্দ্র सं = गोराचाँद। —চন্দ্রিকা स —कीर्तन के पहले गौरांग देव की वंदना ; भूमिका।

গৌরব सं—গরিমা, মহিমা गौरव, बड़प्पन। গৌরবান্বিত (-अ), গৌরবিত (-अ) वि—गौरवयुक्त।

গৌরাঙ্গ (-अ) वि—जिसका रंग गोरा है। स —गौरांग देव। स्त्री —গৌরাঙ্গী।

গৌরী स्त्री—गोरे रंग की स्त्री ; पार्वती, आठ वर्ष की कुमारी कन्या (-দান)। —পট্ট (-अ) सं—शिवलिंग के नीचे की पीठ। —শঙ্কর स —हिमालय की सबसे ऊंची चोटी।

গ্যাঁট सं =গাঁট।

গ্যাস सं—गैस gas.

গ্রথন, গ্রন্থন सं—গাঁথা गूंथना ; चुनाई ; रचना। গ্রথিত (-अ), গ্রন্থিত (-अ) वि—गूंथा हुआ, जड़ा हुआ ; रचित।

গ্রন্থ (ग्रन्थ अ) स —पुस्तक, किताब, ग्रन्थ, शास्त्र। —কার, —কর্তা स —पुस्तक का लेखक। स्त्री—গ্রন্থকর্ত্রী। —স্বত্ব सं—किसी पुस्तक के मुद्रण का स्वतंत्र अधिकार Copyright

গ্রন্থাগার सं—पुस्तकालय। গ্রন্থাগারিক सं—पुस्तकालयाध्यक्ष। [समूह।

গ্রন্থাবলি सं—एक ही लेखक के लिखित ग्रंथोंका

গ্রন্থি सं—গাঁট, গিরা गाँठ, जोड़। গ্রন্থিল वि—गाँठदार। —ছেদন स =গাঁঠছড়া।

গ্রসন सं—भक्षण। গ্রসমান वि—निगलने वाला।

গ্রস্ত (-अ) वि—ग्रस्त, पकड़ा हुआ, आक्रांत, अभिभूत (বিপদ —)।

গ্রস্তাস্ত (-अ) सं—ग्रहण रहते हुए सूर्य या चन्द्र का अस्त गमन। [चन्द्र का उदय।

গ্রস্তোদয় स —ग्रहण-युक्त अवस्था में सूर्य या

গ্রহ (-अ) स —ग्रह ; ग्रहण (দার—) ; बोध (অর্থ—, ভ্রম—)। —দেবতা, सं—ग्रह का अधिष्ठात्री देवता। —দোষ, —বৈগুণ্য सं—ग्रह का प्रतिकूल प्रभाव। —বিপ্র (-अ) सं—दैवज्ञ ब्राह्मण, महापात्र। —যাগ सं—ग्रह-दोष की शांति के लिए यज्ञ।

গ্রহণ सं—ग्रहण, स्वीकार ; बंधन, स्वागत ; सूर्य या चन्द्र का ग्रहण। গ্রহণীয় (-अ) वि—ग्रहण करने के योग्य। গ্রহীতা सं—ग्रहण करनेवाला।

গ্রহণী, (-ণি) सं—संग्रहणी।

গ্রহাচার্য (-अ) सं—दैवज्ञ महापात्र।

গ্রাম सं—গাঁ, পল্লী, পাড়াগাঁ गाँव ; समूह (গুণ—, স্বর—)। গ্রামিক सं—गाँव का मालिक, ग्राम-रक्षक। গ্রামী वि—गाँव का। গ্রামীণ वि—देहाती, गाँव का। গ্রাম্য (-अ) वि—গেঁয়ো देहाती।

গ্রামোফোন सं—फोनोग्राफ बाजा।

গ্রাস सं—कौर ; पकड़ ; भक्षण ; ग्रहण का लगना। গ্রাসাচ্ছাদন सं—খাওয়া-পরা भोजन-वस्त्र।

গ্রাহ (-अ) सं—ग्रहण, लेना ; बोध, मगर।

গ্রাহক सं—গ্রহীতা लेनेवाला खरीदार, समाचार पत्र का ग्राहक। स्त्री—গ্রাহিকা।

গ্রাহিত (-अ) वि—जो ग्रहण कराया गया है।

গ্রাহী वि—ग्राहक (গুণ—, মর্ম—), आकर्षक (হৃদয়—)। सं—मल रोकने वाली दवा।

গ্রাহ্য (ग्राज्झय अ) वि—ग्रहण के योग्य, स्वीकार करने लायक, विचार-योग्य।

গ্রীষ্ম (ग्रीश्श-अ) स —गर्मी की ऋतु, गर्मी। গ্রীষ্মাবকাশ सं—गर्मी की छुट्टी।

গ্রেপ্তার, (গ্রেফ—) सं—गिरफ्तार। গ্রেপ্তারী वि—गिरफ्तार सम्बन्धी (—পরোয়ানা)।

গ্লানি सं—क्लान्ति, थकावट, खेद ; निन्दा।

গ্লাস स —গেলাস गिलास।

ঘ

ঘট सं—मिट्टी का घट, घड़ा ; आधार (सर्व्व-घटे), (व्यंग में) दिमाग (घटे बुद्धि नेइ)।
ঘটক सं—घटक विवाह का सम्बन्ध करने वाला। —তা, ঘটকালি (घट्कालि) सं—घटक का काम। स्त्री -ঘটকী।
ঘটঘট सं—घट घट शब्द। [घटती।
ঘটতি (घट्ति), ঘাটতি सं—कमति कमी,
ঘটন सं—सघटन, होना ; सयोग। ঘটনীয় (-अ) वि—घटने योग्य, होने लायक।
ঘটনা सं—ब्यापार वारदात। —ক্রমে क्रि वि—দৈবক্রমে दैवयोग से। —চক্র सं—घटनाओं का सिलसिला। —ধীন वि—দৈবাধীন दैव के अधीन। —বলী, (-লি) सं—घटनायें।
ঘটা सं—झंकझमक समारोह, आडम्बर, प्रवन्ध, घटा (घन—)। [होना।
ঘটা (क्रि परि १)—होना संघटित होना, पूरा
ঘটান (-नो), ঘটানো (क्रि परि १०) सघटित करना।
ঘটি सं—लोटा, लुटिया। [छोटा लोटा।
ঘটিকা स—ঘণ্টা घटा (দশ—), ঘড়ি घड़ी,
ঘটিত (-अ) वि–सघटित, सम्पादित, सम्बन्धी (প্রণয়—), बनाया हुआ, युक्त (ধাতু—)।
ঘটী सं—लोटा। —যন্ত্র स—समय जानने का एक प्राचीन यत्र ; अरघट्ट रहट।
ঘট্ট (-अ) सं—घाट घाट।
ঘট্টন सं—ঘোটন घोंटने का काम, हाथ से बार-बार हिलाना, रगड़ना, पीसना। ঘট্টিত (-अ) वि—घोंटा हुआ। [शब्द, घर्रा।
ঘড়ঘড় सं—कफ के कारण गले में घड़घड़ाहट का
ঘড়া सं—कमसी मिट्टी धातु आदि का घडा।
ঘড়ি स—घड़ी।
ঘড়িয়াল, ঘড়েল सं—मगर, ग्राह।

ঘণ্ট (-अ) सं—भूनी हुई तरकारी जिस में रसा न हो।
ঘণ্টা सं—घटा, मन्दिरनुमा धातु का एक बाजा, दिनरात का चौबीसवाँ भाग। —কর্ণ —ঘেঁটু स—चर्मरोग का देवता। ঘণ্টিকা, ঘণ্টী सं—छोटा घटा।
ঘন (-अ) वि—গাঢ় गाढा घना, गहरा, मोटा। स—मेघ ; समान तीन सख्या का गुणनफल। —ঘন क्रि वि बार बार, थोड़ी जगह में पास पास। —ঘটা सं—মেঘাড়ম্বর घटा। —ঘোর वि—घटा से आच्छन्न। —ত্ব (-अ) सं—গাঢ়তা घनापन, लबाई चौडाई और मोटाई तीनों का भाव। —ফল सं—लबाई चौड़ाई और मोटाई का गुणनफल। —মূল सं—घनमूल, गणित मे किसी घन राशि का मूल अक जैसे २७ का ३।
ঘনান (-नो), ঘনানো (क्रि परि १०)—निकट होना, पास आना, गाढ़ा करना।
ঘনান্ধকার सं—गहरा अधेरा।
ঘনিষ্ঠ (-अ) वि—निकट का, अन्तरग, दिली, हार्दिक (—বন্ধুত্ব)।
ঘনীকৃত (-अ) वि—गाढा किया हुआ।
ঘনীভূত (-अ) वि—जो गाढ़ा हुआ है।
ঘর सं—मकान गृह, कोठरी, गृहस्थी ; परिवार (পাঁচ—কায়স্থ), वश खानदान (ভাল ঘরের ছেলে) ; छेद (বোতামের—)। —করা क्रि—पत्नी हो कर रहना। —তোলা क्रि—नया घर बनाना। —বাঁধা क्रि–झोपडी बनाना। —ভাঙানো क्रि—घर फोडना, परिवार में फूट डालना। —করনা, —কন্না स = গৃহস্থালি। —জামাই स—सुसर के घर में रहने वाला दामाद। —জোড়া वि—जिससे घर पूर्ण या शोभित होता है। —দোর सं—घरदुआर। —পোড়া स—लका जलाने वाला हनुमान।

वि—जिसका घर जल गया है घरके जलनेसे झुलसा हुआ (—गाइ सिँदुरे मेघ देखले डराय)। —पोषा वि—गृहपालित पालतू। —मुखो वि—गृहाभिमुख घर की ओर मुंह किया हुआ। —सन्धाने स—घरका भेदिया। —प्रवेश सं—नये घर में प्रवेश।

घरणी स्त्री—गृहिणी पत्नी।

घराओ वि—घरोया।

घराना वि—वंश का, खानदानी।

घरामी, (-मि) स—घर छानेवाला।

घरोया वि—घरेलू, पारिवारिक।

घर्घर सं—पहिये के चलने का शब्द।

घर्म (-अ) सं—घाम पसीना। घर्माक्त (-अ) वि—पसीने से तरावोर।

घर्षण सं—घषा रगड़; माँजना। घर्षित (-अ) वि—घिसा हुआ।

घषा (क्रि परि १)—रगड़ना, घिसना। वि—घिसा हुआ (—पयसा)। स—जिस चीज से सिर के वाल आदि साफ किये जाते हैं (गा—)।

घा सं—क्षत घाव; चोट; धक्का, हानि।

घागरा (घागरा) सं—लहंगा।

घागी वि—भुक्तभोगी अनुभवी (निन्दार्थ में) (—चोर)।

घाट सं—घाट, नदी पार होने का स्थान; घाटी, दर्रा, अपराध (—हओया, —माना); सितार आदि का घाट।

घाँटा (क्रि परि ३)—आलोड़न करा, नाड़ाचाड़ा करा हाथ से वार वार हिलाना। —घाँटि सं हाथ से वार वार हिलाना; चर्चा (ऐ कथा निये—)।

घाँटा सं—कड़ा, झगड़ा घट्टा।

घाँटान (—नो), घाँटानो (क्रि परि १०) —नाड़ानो हिलाना; चिढ़ाना, तंग करना।

घाटि, घाँटि सं—चौकी चौकी, पहरे का स्थान, दर्रा —आगलानो)।

घाटियाल, घाटोयाल सं—घाटिया।

घाड सं—काँध, ग्रीवा कंधा। —नाड़ा क्रि—सिर हिलाना। घाड़े करा क्रि—सिर पर लेना, जिम्मेवारी लेना।

घात सं—चोट, मार चोट, मार, हत्या; घात, मौका। घातक, घातुक सं—हत्याकारी, हत्यार हत्यारा। घातन सं—हत्या। घाती वि—हत्यारा। स्त्री—घातिनी।

घानि सं—कोल्हू। [घात।

घापटि (घापटि), घुपटि सं—छिपकर प्रतीक्षा, घावडान (-नो), घावड़ानो (क्रि परि १६) —थतमत खाओया, हतबुद्धि हओया घबराना।

घाम स—पसीना। [निकलना।

घामा (क्रि परि ३)—घर्माक्त हओया पसीना

घामाचि स—अम्हौरी, पसीने के कारण शरीर में छोटी छोटी फुसियां।

घामान (-नो), घामानो (क्रि परि १०)—पसीना पैदा करना; खाटानो चलाना (माथा—)।

घायेल वि—जखम घायल।

घास सं—घास, तृण।

घि, घी स—घृत घी। [सटा हुआ।

घिञ्जि वि—सङ्कीर्ण तंग, घेंषाघेंषि पास-पास

घिनघिन सं—घिन, घृणाके कारण थोड़ी वेचैनी।

घिरा, घेरा (क्रि परि ५)—घेरना, छाना (मेघे आकाश—)। वि—घिरा हुआ, वेष्टित। सं —घिरा हुआ स्थान।

घिलु सं—दिमाग, मगज।

घुड़ि काशि सं—कुकुरखांसी Hooping cough.

घुगनि (घुगनि) सं—घुंघनी। [आदमी।

घुघु सं—कबूतर जाति की एक चिड़िया; धूर्त

घुङुर, घुङुर सं—घुंवरु।

ঘুচা, ঘোচা (क्रि परि ६)—नष्ट होना, गायब होना (শান্তি—, সুখ—)।

ঘুচান (—नो), ঘুচানো, ঘুচনো, ঘোচানো (क्रि परि १२)—नाश करना, खतम करना (অভাব —); गन्दगी साफ करना। [গলি— ।

ঘুঁজি सं—सँकरा स्थान, तंग जगह।

ঘুটঘুটে वि—घोर गहरा (—অন্ধকার)।

ঘুঁটি सं—গুটিকা गोटी। [बनता है।

ঘুটিং सं—कंकड़, जिसके जलाने से चूना

ঘুঁটে स—गोहरी, उपला, कंडा।

ঘুড়ি स—गुड्डी।

ঘুণ सं—घुन। वि—अनुभवी। ঘুণাক্ষর सं—इशारा (ঘুণাক্ষরে টের পাওয়া)।

ঘুন্টি सं—घंटी; छोटा बटन।

ঘুনসি (घुन्‌शि) सं—कमर का डोरा।

ঘুপটি (घुपटि) सं=ঘাপটি।

ঘুপসি (घुपशि) स—अंधेरा सकरा स्थान।

ঘুম सं—नींद, निद्रा।—পাড়ানো क्रि—सुलाना। —ন্ত (घुमन्त अ) वि—निद्रित, सोया हुआ। ঘুমের ঘোর सं—ऊंघाई।

ঘুমান (—नो), ঘুমানো, ঘুমনো (क्रि परि १२) —सोना, निद्रित होना।

ঘুর स—ঘূর্ণন, পাক चक्कर, सिर-घूमना। —ঘুর सं—बार-बार चक्कर काटने का भाव प्रकाश। —পথ सं—जिस रास्ते से बहुत घूमकर जाना होता है। —পাক सं—चक्कर (—খাওয়া)।

ঘুরণ सं—चक्कर, परिक्रमा, घूमना। [चलना।

ঘুরা, ঘোরা (क्रि परि ६)—বেড়ান घूमना,

ঘুরাঘুরি, ঘোরাঘুরি सं—হাঁটাহাঁটি, বারংবার আনাগোনা बार-बार आना-जाना।

ঘুরান (नो), ঘুরানো, ঘুরনো, ঘোরানো (क्रि परि १२)—ঘূর্ণিত করা, পাক দেওয়া घुमाना, लौटाना। [सिर-घूमना।

ঘুরানি, ঘুরনি ঘুরুনি सं—घूमने का भाव,

ঘুলঘুলি स—दिवाल में छेद झरोखा।

ঘুলান (-नो, ঘুলানো, ঘুলনো, ঘোলানো (क्रि परि १२)—हिलाकर गदला करना।

ঘুষ सं—উৎকোচ घूस, रिश्वत। —খোর सं—घूस खानेवाला। [परन्तु रोजाना (—ঘর)।

ঘুষঘুষে वि—চাপা दबा हुआ, अस्पष्ट, थोड़ा

ঘুষা, ঘুষো, ঘুষি, ঘুঁষি सं—মুষ্ট্যাঘাত घूँसा, मुक्की। ঘুষাঘুষি, (ঘুষো—) सं—घूसेबाजी।

ঘূর सं=ঘুর। [वि—चक्कर काटता हुआ।

ঘূর্ণন सं—আবর্তন, ঘোরা चक्कर। ঘূর্ণিত (-अ)

ঘূর্ণমান, ঘূর্ণায়মান वि—जो घूम रहा है।

ঘূর্ণাবর্ত (-अ) सं—घूर्णिजल भंवर।

ঘূর্ণি सं—জলভ্রমি भवद, चक्कर।

ঘৃণা सं—ঘেন্না घृणा, नफरत। —ই (-अ) वि—घृणा के योग्य। —স্পদ सं—घृणा का पात्र। ঘৃণিত (-अ) वि—घृणित। स—घृणित व्यक्ति। ঘৃণী वि—घृणा करनेवाला। ঘৃণ্য (-अ) वि—घृणा के योग्य।

ঘৃত (-अ स =ঘি। —কুমারী सं—घीकुवार। ঘৃতাক্ত (-अ) वि—ঘি-মাখা घी से चुपड़ा हुआ। [हुआ।

ঘৃষ্ট (-अ) वि—घर्षित घिसा हुआ, माँजा

ঘেউঘেউ स—कुत्ते के भौंकने का शब्द।

ঘেডা, ঘেঙ্গা (घेंडा) सं—झंझट, बला, विपत्ति, अधिक अनुरोध, जिद।

ঘেডান (घेंडानो), ঘেডানো, ঘেঙ্গান, ঘেঙ্গানো (क्रि परि १०) बहुत अधिक अनुरोध करना, जिद करना।

ঘেঁচু सं—ছোট কচু अरवी, कुछ नहीं।

ঘেঁটু सं—घण्टाकर्ण एक जगली फूल।

ঘেন্না सं—घृणा, नफरत।

ঘেয়ো वि—घाववाला, क्षतयुक्त।

ঘের सं—परिधि, घेरा, मडल।

ঘেরা क्रि वि, सं=ঘিরা।

ঘেরাও स—विराव घेरा वेष्टन।
घेराटोप स—कुर्सी आदि का आवरण।
ঘেঁস स—स्पर्श, सम्बन्ध लगाव।
ঘেঁসা (घेँषा) (क्रि परि १)—सट जाना, पास रहना, छूना। वि—पास का, सम्बन्धयुक्त। —ঘেঁসি स—खूब काछाकाछि बहुत पास पास या देह छूकर रहने का भाव।
ঘেঁস स—cinder कोयला।
ঘেসেড়ে स—घसियारा, घास बेचनेवाला।
ঘেসো वि—घासदार, घास-सा, तुच्छ। [जानवर।
ঘোগ सं—कुत्ते की जाति का एक जंगली
ঘোচা, ঘোচান क्रि=घूचा, घूचान।
ঘোঁজ सं—घूँजि कोना, मोड़। [हिलोरना।
ঘোঁট स—विरुद्ध में आन्दोलन; साजिश;
ঘোটক स—घोड़ा। स्त्री—घोटकी।
ঘোটন सं=घट्टन। [छोटा घोंटना।
ঘোটনা (घोंट्ना) सं—घोंटने का डंडा,
ঘোঁটা (क्रि परि २)—हिलोरना, घोंटना।
ঘোড় वि—घोड़े का, अश्व सम्बन्धी। —गाड़ि स—घोडे की गाड़ी। —দৌড় (डउड़) स- घुड़दौड़। —তোলা वि—ऊँची एड़ीवाला (-जूता)। —সওয়ার स—घुड़सवार।
ঘোড়া स=घोटक। ঘোড়ার ডিম स—घोड़े का अंडा, कुछ भी नहीं, मिथ्या वस्तु।
ঘোঁৎঘোঁৎ स—सुअर का शब्द।
ঘোমটা (घोम्टा) स—अवगुंठन घूंघट।
ঘোর वि—घोर, डरावना; घना; गाढ़ा। स—अँधेरा, असर (घूमের—)। —প্যাঁচ स—जटिलता, पेंच।
ঘোরা, ঘোরান क्रि=घूरा, घूरान।
ঘোরাল (-अ), ঘোরালো वि—अँधेरा, गाढ़ा; जटिल; पेंचदार।
ঘোল स—तक्र मट्ठा छाछ। —খাওয়া क्रि—दिक्कत में पड़ कर परेशान होना।
ঘোলা वि—गँदला। ঘোলাটে वि—थोड़ा गँदला।
ঘোলান (—नो), ঘোলানো क्रि=घुलाना।
ঘোষ सं—ध्वनि, घोषणा, अहीर; कायस्थों की एक उपाधि। —ক वि, सं—प्रचारक, घोषणा करनेवाला ढिंढोरा पीटनेवाला। —পত্র (-अ सं—घोषणा-पत्र, गजट।
ঘোষা (क्रि परि १) घोषणा करना।
ঘোষান (-नो), ঘোষানো (क्रि परि १४) घोषित कराना घोषित कराना।
ঘোষাল स—ब्राह्मणों की एक उपाधि।
-ঘ্ন (-अ) प्रत्य—मारनेवाला (রোগঘ্ন, শত্রুঘ্ন)।
ঘ্যানঘ্যান (घैन-) स—नाकी स्वर से कान्ना या क्रन्दन बारबार नकसुर विनती या प्रार्थना। ঘ্যানর ঘ্যানর स—एकटाना विरक्तिकर कथा लगातार ढिक करनेवाली बात। —প্যানপ্যান स—घें घें पें पें, चे चे में में।
ঘ্রাণ स—शोंका गन्ध ग्रहण, गन्ध; नाक, घ्राणेन्द्रिय। ঘ্রাত (-अ) वि—जिसका घ्राण लिया गया है। ঘ্রাতব্য (-अ), ঘ্রেয় (-अ, वि—घ्राण लेने के योग्य। ঘ্রাতা वि, स—घ्राण लेनेवाला।

চ

চই स—पिप्पली जाति की एक लता, इसकी शाखा और जड़ दवा के काम आती है।
চওড়া वि-चौड़ा, विस्तृत, फैला हुआ।
চক स—चौकोर आँगन के चारों ओर के घर (—মিলান বাড়ী); चौक बाजार; जमींदारी का एक अंश।
চকচক सं—जीभ से पानी पीने का शब्द (लघु अर्थ में—चूक चूक); चमक का भाव

প্রকাশ (রূপা রৌদ্রে—করে)। (लघु अर्थ में—চিকচিক)। চকচকে, চিকচিকে, চুকচুকে वि—चमकदार, उज्ज्वल।

চকবন্দি स—जमीन की सीमा निर्णय, जमीन का हिस्सा। চকবন্দী वि = চকমিলান।

চকমক सं—झलमल, उज्ज्वलता प्रकाश (लघु अर्थ में চিকমিক)। চকমকে वि—उज्ज्वल, चमकदार।

চকমকি स—चकमक।

চকমিলান (-अ) वि—चौकर आँगन के चारों ओर घर युक्त (—বাড়ি)।

চকলা (चक्ला) सं—जमींदारी का एक अंश, कुछ ग्रामों का समूह, परगना, छाल, चमड़ा। —দার सं—परगने का मालिक, एक उपाधि।

চকাচকী स—चकवा-चकई। [चौकन्ना।

চকিত (-अ) वि—চমকিত चकित, चौंका हुआ, চকিতে क्रि वि—क्षणभर में, एकाएक।

চকোর सं—चकोर। स्त्री—চকোরী।

চক্কর सं—চাকা पहिया, चक्कर; घुमावदार स्थान या पथ, भ्रमण (এক—বেড়ানো), साँप का फन या उसके ऊपर का चक्र-चिह्न।

চক্র स—पहिया, चक्कर, भ्रमण, साजिश, गोल अस्त्र (সুদর্শন—), बड़ा राज्य। —ধর स—विष्णु, कृष्ण। —নাভি सं—पहिये के बीच का अंश या धुरा। —পাণি स = চক্রধর। —বর্তী सं—चक्रवर्ती; सार्वभौम। —বাক स—चकवा। स्त्री—চক্রবাকী। —বাল सं—দিঙ্মণ্ডল, दिगन्त क्षितिज। —বৃদ্ধি सं—सूद दर सूद। —যান सं—पहियेदार गाड़ी। দ্বিচক্রযান सं—साइकिल।

চক্রান্ত (-अ) सं—ষড়যন্ত্র साजिश।

চক্রাবর্ত (-अ) सं—पहिये की तरह आवर्तन या घूर्णन, चक्कर।

চক্রী स—चक्र धारण करनेवाला, विष्णु। वि—साजिश करनेवाला; खल, कुटिल।

চক্ষ (चक्ख-अ) सं—चक्षु, आँख (केवल विभक्तियुक्त प्रयोग है जैसे চক্ষে)।

চক্ষু (चक्खु स—চোখ आँख, नेत्र; दृष्टि, नजर। —গোচর वि—दृष्टिगोचर। —দান स—दर्शनशक्ति प्रदान; अज्ञानी को ज्ञान दान। —লজ্জা स—दूसरे के सामने कुछ करने या बोलने में सकोच, मुरौवत। —শূল वि—जिसको देखने से क्रोध आता है। —স্থির सं—भौचक्कापन, हक्काबक्का हो जाने की हालत। চক্ষুষ্মান (चक्खुश्शान) वि—चक्षुयुक्त, आँखवाला। চক্ষুরুন্মীলন (चक्खु-रुन्मीलन) सं—आँख खोलना।

চঞ্চল वि—অস্থির चंचल, जो चल रहा है; चटपटिया, व्याकुल। চঞ্চলা स्त्री—বিদ্যুৎ बिजली; लक्ष्मी।

চঞ্চু स—পাখির ঠোঁট चिड़िया की चोंच। —পুট सं—दोनों चोंचों का मध्यभाग।

চট क्रि वि—ঝট ঝট (—করে এসো)। —পট क्रि वि—झटपट। —পটে वि— चटपटिया, चतुर। [बनाने का कारखाना।

চট सं—टाट। —কল सं—टाट बोरा आदि

চটক स—চড়াই পাখি गौरैया, ভড়ং, আড়ম্বর आडम्बर, चमकीलापन, तडक-भड़क।

চটকা (चट्का स—निद्रा का आवेश, ऊंघ; बेखबरी।

চটকান (चट्कानो), চটকানো (क्रि परि १६) —हाथ की उगलियों से नरम वस्तु मसलना, गूंधना।

চটচট सं—लसलसापन (लघु अर्थ में—চিটচিট)। চটচটে, চিটচিটে वि—लसलसा, गोंददार।

চটা (क्रि परि १)—खफा होना, नष्ट होना;

(রং—, ভঙ্গি—)। वि—खफा, क्रोधित। सं—बाँस की चिपटी तीली। —চটি सं—রাগারাগি झगड़ा कलह, मनमुटाव।

চটান (-नो) চটানো (क्रि परि १०)—रागानो खफा करना चिढ़ाना।

চটি सं—चट्टी, स्लिपर, चट्टी, पड़ाव। वि—पतला (—বই, —জুতো)।

চটু स—তোষামোদ खुशामद।

চটুল वि—चंचल, लघु; सुन्दर।

চট্টল स—चटगाँव का पुराना नाम।

চট্টোপাধ্যায় स—चाटुज्ये, চ্যাটার্জী ब्राह्मणों की एक उपाधि।

চড় स—থাপড়, থাপ্পড়, থাবড়া चपेट, थप्पड़ গালে—মারা क्रि—गाल पर थप्पड़ मारना; ঠকানা।

চড়ক सं—चैत्र सक्रान्ति का उत्सव। —গাছ सं—जमीन में गाड़ा हुआ बहुत ऊँचा बल्ला जिसके ऊपर दो लकड़ी या बाँस तिर्छे लगा कर और उनके सिरों से लटकती हुई रस्सियों में चार आदमियों को चड़क के उत्सव के समय घुमाया जाता है।

চড়চড়, চড়্চড় स—पड़पड़ शब्द (—করে কাপড় ছেঁড়া, —করে গাছ বেড়ানো, —করে কাঠ কাটা, গা শুকিয়ে—করা) (लघु अर्थ में-চিড়চিড়)।

চড়চড়ি, চচ্চড়ি सं—तेल में भूनी हुई कई प्रकार की मिली हुई तरकारी जिसमें रसा न हो।

চড়তি स—বাড়োহাত্ত चढ़ाई; मूल्य में वृद्धि। वि—चढ़नेवाला।

চড়নদার (-र्-) स—यात्री, सवारी।

চড়বড় सं—पड़पड़ शब्द (—করে বৃষ্টি পড়া, —করে এই ছোটা বা কথা বলা)।

চড়া सं—চর रेती, नदीके बीच में उभड़ा हुआ रेतीला टापू, कछार।

চড়া (क्रि परि १)—चढ़ना, बढ़ जाना (দাম—, রাগ—), चढ़ाई करना। वि—ऊँचा, ज्यादा (—দর); तेज (—রোদ, —গন্ধ, —মেজাজ)।

চড়াই स—चढ़ाई, ऊँचाई। চড়াই, চড়ুই सं—চটক गौरैया।

চড়াইভাতি, চড়ুইভাতি सं—বনভোজন वनभोजन, जंगल की रसोई picnic

চড়াও स—चढ़ाई, आक्रमण (বাড়ি—)।

চড়াৎ सं—एकाएक फटने का शब्द।

চড়ান (-नो), চড়ানো (क्रि परि १०)-उठाना, लादना. स्थापित करना (হাঁড়ি—, পিঠের বোঝার বিপদ—, গাড়িগাড়ার ওজন—); बढ़ाना, ऊँचा करना (দর—, গলার সুর—); थप्पड़ मारना। [চড়াইভাতি।

চড়ুই स—চড়াই गौरैया। চড়ুইভাতি सं—

চণক स—ছোলা, বুট चना।

চণ্ড (-अ) वि—खफा, क्रोधित, प्रचण्ड।

চণ্ডাল स—চাঁড়াল एक नीच जाति, चाँडाल, निर्दयी। स्त्री—চণ্ডালী।

চণ্ডিকা, চণ্ডী स्त्री—दुर्गा, क्रोधित स्त्री; চণ্ডী—दुर्गा सप्तशती(—পাঠ)। চণ্ডীমণ্ডপ सं—ঠাকুর দালান दुर्गा काली आदि की पूजा का दालान।

চণ্ডু सं—चण्डू, मदक। —খোর स, वि—चण्डूबाज।

চতুঃ वि, स—চার चार, ४ —শাল, শালা स—চকমিলান বাড়ী। —সীমা सं—चौहद्दी। —পঞ্চাশৎ वि, स—चौअन, ५४। —পঞ্চাশত্তম वि—चौअनवाँ ५४ वाँ। —ষষ্ঠি वि सं—चौसठ, ६४। —ষষ্ঠিতম वि—चौसठवाँ, ६४ वाँ। —সপ্ততি वि, सं—चौहत्तर ७४। —সপ্ততিতম वि—चौहत्तरवाँ, ७४ वाँ।

চতুর वि—चालाक, चतुर, धूर्त।

চতুরশীতি वि, स—চুরাশি चौरासी, ८४। —তম वि—चौरासीवाँ ८४ वाँ।

চতুরস্র (चतुरस्त्र-अ) वि, सं—চতুষ্কোণ चतुर्भुज।

চতুরংশ (-अ) सं—चार भाग। चतुरংশিত (-अ) वि—चार अंशों में बंटा हुआ, चौपेजी quarto.

চতুরালি सं—चातुरी, छल धोखा, छल।

চতুরাশ্রম सं—चार आश्रम जैसे—ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्न्यास।

চতুর্গুণ वि—चौगुना।

চতুর্থাংশ (-अ) सं—चौथाई।

চতুর্থী सं—चौथ, पिता या माता की मृत्यु के बाद चौथे दिन विवाहिता कन्या के द्वारा किया जाने वाला श्राद्ध।

চতুর্দিক सं—চারিদিক चारों दिशायें। চতুর্দিকে क्रि वि— चारों ओर।

চতুর্দোল सं—चार आदमियों के द्वारा ढोयी जाने वाली पालकी। [में।

চতুর্ধা क्रि वि—चार प्रकार से, चार भागों

চতুর্নবতি वि, सं—চুরানব্বই चौरानवे, ९४। —তম वि—चौरानवेवाँ, ९४ वाँ।

চতুর্বর্গ (-अ) सं—मनुष्य जीवन के चार लक्ष्य जैसे—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

চতুর্বর্ণ (अ) सं—हिन्दुओं के चार वर्ण जैसे—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

চতুর্বিংশ (-अ) वि—चौबीसवाँ, २४ वाँ।

চতুর্বিংশতি वि, सं—চব্বিশ चौबीस, २४। —তম वि—চতুর্বিংশ।

চতুর্বিধ (अ) वि—चार प्रकार का।

চতুর্মাস सं—वर्षा के चार मास।

চতুর্যুগ सं—संसार के चार युग जैसे—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि।

চতুশ্চত্বারিংশ (-अ),—তম वि—चौआलीसवाँ, ४४वाँ। চতুশ্চত্বারিংশৎ वि, सं—চুয়াল্লিশ चौआलीस, ४४।

চতুষ্ক (-अ) सं—चौकोर भूमि; चार खभों का मण्डप, चार का समूह।

চতুষ্টয় सं—चार चीजों का समूह।

চতুষ্পথ सं—चौराहा।

চতুষ্পদ, (-পাদ) वि, सं—चौपाया।

চতুষ্পাঠী सं—टोल संस्कृत की पाठशाला।

চতুষ্পার্শ্ব (-अ) सं—চার পাশ चार बगल।

চতুস্তল वि—চৌতালা चौमंजिला।

চতুস্ত্রিংশ (-अ), —তম वि—चौंतीसवाँ, ३४ वाँ। চতুস্ত্রিংশৎ वि, सं—চৌত্রিশ चौंतीस, ३४।

চত্বর सं—চাতাল चबूतरा।

চত্বারিংশ (-अ), —তম वि—चालीसवाँ, ४०वाँ। চত্বারিংশৎ वि, सं—চল্লিশ चालीस, ४०।

চনচন (चन्चन्) सं—तीव्रता प्रकाशक शब्द (রোদ—করছে)। চনচনে वि—तेज, तीव्र (—রোদ)।

চনমন (चन्मन्) सं—बेचैनी, उत्साह, फुर्ती। চনমনে वि—फुर्तीला।

চন্দন सं—चंदन (—ঘষা, রক্ত—, শ্বেত—)। —পাটা, —পিঁড়ি सं—जिस सिल पर चंदन घिसा जाता है। [रेखायें हैं।

চন্দনা सं—सुग्गा जिसके गले में लाल

চন্দ্র सं—विधु, শশধর, সুধাংশু चाँद, चंद्रमा, आनन्द देने वाला, श्रेष्ठ (कृष—, कुल—), एक उपाधि। —পুলি सं—नारियल चीनी और खोवा मिला कर बनायी हुई एक मिठाई। —প্রভ (-अ) वि—चंद्रमा—सा, चन्द्रमा के समान प्रभायुक्त। —বোড়া सं—एक विषैला साँप। —হার सं—कमर में पहनने का एक जेवर, पेटी।

চন্দ্রাতপ सं—চাঁদোয়া, মণ্ডপ, মেরাপ चदवा।

চন্দ্রানন सं—চাঁদমুখ चाँद की तरह सुन्दर मुख। स्त्री—চন্দ্রাননা, (-ননী)।

চন্দ্রালোক सं—জ্যোৎস্না चाँदनी।

চন্দ্রাস্ত (-अ) सं—चन्द्रमा का अस्तगमन।

চন্দ্রোদয় सं—चन्द्रमा का उदय।
চপ सं—भूने हुए माँस का टुकड़ा, एक प्रकार का समोसा।
চপচপ, চবচব सं—कीचड़ में चलने का शब्द। চপচপে वि—तराबोर (घিয়—শপুয়া)।
চপল वि—चंचल, हल्के मिजाज का, क्षणिक।
চপলা स्त्री—लक्ष्मी, बिजली।
চপেট स=চড়। চপেটাঘাত सं—थप्पड़।
চপ্পল सं—चप्पल, स्लिपर।
চবুতর, চবুতরা सं—চাতাল।
চব্বিশ वि, सं—चौबीस, २४।
চব্বিশে सं—चौबीस तारीख (को)।
চমক सं—বিস্ময় आश्चर्य, अचंभा; आतंक, होश (—ভাঙা, होश आना)।
চমকান (-नो), চমকানো (क्रि परि १६)—चौंकना, चमकना, चौंकाना।
চমকানি सं—चौंक।
চমকিত (-अ) वि—चौंका हुआ।
চমচম सं—छेने की एक मिठाई।
চমৎকার सं—বিস্ময় आश्चर्य। वि-बहुत सुन्दर। —क, (-কারী) वि—आश्चर्यजनक, विस्मित करनेवाला। स्त्री—চমৎকারিণী। চমৎকারিতা सं—विस्मयजनक शक्ति।
চমর सं—तिब्बत की एक गाय जिसकी दुम से चंवर बनता है, सुरागाय। स्त्री—চমরী।
চমস सं—চামচ चम्मच; হাতা कलछुल।
চমূ सं—बड़ी सेना।
চম্পক सं—চাঁপা चम्पा।
চম্পট स—পলায়ন, পিট্টান चम्पत (—দেওয়া, चम्पत होना, भाग जाना)।
চম্পা सं=চম্পক।
চয় सं—নিচয় समूह।
চয়ন स—संग्रह, नोच। চয়নীয় (-अ), চেয় (-अ) वि—संग्रह करने या (फूल) नोचने योग्य। চয়িত (-अ), চিত (-अ) वि—সাগ্রহ संगृहीत।
চর स—গুপ্তচর, গোয়েন্দা जासूस, दूत, रेती, रेतीला टापू। वि—चलने वाला, जंगम।
চরকা (चरका) स—चरखा।
চরকি स—एक आतशबाजी, নাটাই फंता।
চরণ सं—পদ, পা पर पाँव (—কমল, —তল, —তরি, —রেণু); श्लोक या कविता का चौथाई अंश, भ्रमण, आचरण। চরণামৃত स—পাদোদক चरणामृत।
চরম কাল सं—अन्तिम समय, मृत्यु का समय।
চরম পত্র (-अ) सं—वसीयतनामा।
চরস सं—चरस।
চরা (क्रि परि १)—বিচরণ করা घूमना, टहलना, चरना (গরু চরিতেছিল)।
চরাচর वि—सचल और अचल, सचेतन और अचेतन। सं—सारा ब्रह्माण्ड।
চরান (-नो), চরানো (क्रि परि १०)—चराना।
চরিত सं—आचरण, बर्ताव, चरित्र, जीवनी। (-अ) वि—आचरित, अनुष्ठित, सम्पादित।
চরিতাখ্যান स—जीवन-चरित, जीवनी।
চরিতার্থ (-अ) वि—कृतार्थ, सफल, सन्तुष्ट।
চরিত্র (-अ) सं—स्वभाव, आचरण चालचलन, नीति, गल्प नाटक आदि का पात्र। —দোষ स—लम्पटता। —বান वि—चरित्रवान। —হীন वि-हीन चरित्र वाला, व्यभिचारी।
চরিষ্ণু वि—चलनेवाला।
চরু सं—हवन के लिए दूध के साथ पकाया हुआ भात।
চর্চরী स=চড়চড়ি।
চর্চা सं—आलोचना, अभ्यास, शिक्षा (সংগীত—, বিদ্যা—, শাস্ত্র—); चर्चा, चिंता। চর্চিত (-अ) वि—चर्चा किया हुआ (—শাস্ত্র, —বিদ্যা), पोता हुआ (চন্দন—)।
চর্বণ स—চিবানো चबाना। চর্বিত (-अ) वि—

चबाया हुआ। চর্বিত-চর্বণ सं—জাবর কাটা, রোমন্থন, গিলিত চর্বণ पागुर, जुगाली ; पिष्ट-पेषण ; आलोचित विषय की बारबार आलोचना। চর্ব্য (-अ), চর্বণীয় (-अ) वि—चबाने के योग्य।

চর্বি सं—বসা, মেদ चरबी।

চর্ম (-अ) स—त्वक, छाल चमड़ा खाल; ढाल। —কার स—मुची मोची, चमार। —পেটিকা सं—चमड़े की पेटी। —রোগ सं—दाद खुजली आदि।

চর্য (चर्य—अ वि—आचरण करने के योग्य।

চর্যা सं—आचार, अनुष्ठान, नियम-पालन।

চল वि—चलनेवाला ; चंचल। स—गति, रिवाज। —চিত্ত (-अ) वि—चचलचित्त।

চলকান (-नो), চলকানো (क्रि परि १६)—छलकना।

চলচ্চিত্র (-अ) स—सिनेमा का चलनेवाला चित्र।

চলচ্ছক্তি, চলৎশক্তি सं—चलने की शक्ति, गति-शक्ति।

চলৎ वि—চলতি चलता हुआ ; चचल।

চলতি (चल्ति) वि—चलता हुआ (—গাড়ি), प्रचलित (—ভাষা, —কথা), जिस कुल के साथ विवाह किया जा सकता है (—ঘর)।

চলন स—गमन गति, रिवाज। —সই वि—काम-चलाऊ न बहुत अच्छा न बहुत बुरा, मामूली, साधारण।

চলন্ত (-अ) वि—चलनेवाला, गतिशील।

চলা (क्रि परि १)—चलना, रवाना होना, आगे बढ़ना, टहलना, जारी रहना (সমাজে—, বাজারে—) ; योग्य होना (এ কাপড়ে চলিবে না) ; निर्वाह होना (সংসার—, কাজ—, দিন—) ; पहुंचना (দৃষ্টি—)। वि—जिसमें चलना पड़ता है (—পথ)। —করা सं—चलना-फिरना।

চলাচল सं—যাতায়াত आनाजाना वि सचल और अचल (—সম্পত্তি)।

চলান (-नो), চলানো (क्रि परि १०,—হাঁটানো, চালানো चलाना।

চলিত (-अ) वि—प्रचलित चलता, जारी। —ভাষা सं—चलती भाषा, बोल-चाल की भाषा।

চলিষ্ণু वि—চরিষ্ণু।

চল্লিশ वि, स—चालीस, ४०।

চল্লিশা सं—চালশে।

চশমখোর वि—চক্ষুলজ্জাহীন बेशर्म, बेहया।

চশমা सं—चश्मा, ऐनक।

চষক स—शराब पीने का पात्र।

চষা (क्रि परि १)—চাষ করা हल चलाना, जोतना। वि—जोता हुआ (—ক্ষেত)।

চষান (-नो), চষানো (क्रि परि ३)—जुतवाना।

চষিত (-अ) वि—চষা जोता हुआ।

চা सं—चाय। —কর स—चाय पैदा करने वाला।

চাঁই, চাঙ্গি सं—चाँई, सरदार।

চাই কি क्रि वि—चाहे, भी, या।

চাইতে अव्य—চেয়ে।

চাউনি स—চাহনি।

চাউল, চাল सं—তণ্ডুল चावल।

চাওয়া (क्रि परि ४)—चाहना, मांगना प्रार्थना करना ; ताकना, नजर डालना (ফিরে—) ; आँख खोलना।

চাক स—चक्र, पहिया, छत्ता।

চাকচিক্য स—चाकचक्य चमचमाहट, उज्ज्वलता, चमक।

চাকতি (चाक्ति) स—चक्र-सी गोल वस्तु।

চাকর स—भृत्य, পরিচারক, কর্মচারী नौकर।

—বাকর सं—नौकर चाकर। চাকরাণী स्त्री—नौकरानी।

চাকরান सं—वेतन के बदले दी हुई जमीन।

চাকরি स—नौकरी। চাকরে वि—नौकरी करनेवाला (—বাবু)।

চাকলা (चाकला) सं—एक जमींदारी के अन्दर कई परगनों को समष्टि; गोल टुकड़ा, छिलका।

চাকা सं—पहिया; टुकड़ा (মাছের—), थक्का (—দই), गोल (—মুখ)।

চাকি सं—आटा पीसने की चक्की, रोटी पूरी बेलने का गोल पीढ़ा या सिल (—বেলন)।

চাকু सं—चाकू छुरि।

চাক্ষুষ (चाक्खुश) वि—প্রত্যক্ষ, চোখে দেখা आँखों देखा (—প্রত্যক্ষ, —প্রমাণ)।

চা-খড়ি स—खरिया मिट्टी।

চাখা, চাকা (क्रि परि ३)—স্বাদ লওয়া चखना।

চাগান (-नो), চাগানো (क्रि परि १०)—जगाना, उठाना, उत्तेजित करना।

চাঙড়, চাঙড়, (-ड़ा) सं—বড় ঢেলা, চাপ, তাল ढेला, भेली।

চাঙ্গা वि—चगा, स्वस्थ।

চাঙারি, চাঙাড়ি, (চে—) स—বাঁশের ঝুড়ি झबुआ, दौरी, डलिया। [लाह।

চাঁচ सं—দরমা एक प्रकार की मोटी चटाई;

চাঁচর वि—কুঞ্চিত सिकुड़ा हुआ। सं—होली के पूर्व रात्रि में आग लेकर खेलना।

চাচা सं—খুড়া, কাকা चचा, पिता के छोटे भाई। स्त्री—চাচী।

চাঁচা (क्रि परि ३) —छोलना छीलना (বাঁশ—)। वि—छिला हुआ (—ছোলা), माजा-हुआ (—গলা)।

চাঁচি स—उबाले हुए दूध का गाढ़ा अंश जो बरतन से खुरच कर निकाला जाता है, खरचन।

চাঞ্চল্য (-अ) स—चंचलता, हलचल, बेचैनी, फुर्ती। —কর वि हलचल मचाने वाला, उत्तेजना पैदा करने वाला।

চাট सं—चटनी, चाट, घोड़े गाय आदि की लात, दुलत्ती।

চাটনি स—चटनी।

চাটা (क्रि परि ३)—লেহন করা चाटना।—চাটি सं—পরস্পরকে চাটা आपस में एक दूसरे को चाटना, बार बार चाटना।

চাটাই, চেটাই (चैटाइ) सं—দরমা चटाई।

চাটান (-नो), চাটানো (क्रि परि १०) —चटवाना।

চাটাল (-अ), চাটালো वि—চওড়া चौड़ा।

চাটি, চাঁটি सं—চড় थप्पड़ (মাথায়—মারা)।

চাটিম কলা सं—एक प्रकार का उमदा केला।

চাটু सं—খোশামোদ खुशामद। —কার, —বাদী वि—খোশামুদে खुशामदी, चापलूस।

চাটু स—ठाওয়া तवा। [दि ?।

চাট্টি सं, वि—चार; थोड़ा सा (—ভাত

চাড়, চাড়া सं—उठाने या तोड़ने के लिए डंडा आदि लगा कर दबाव; टेक, उत्साह, चेष्टा (লেখাপড়ায়—নাই)।

চাঁড়াল सं=চণ্ডাল। [চাতকিনী।

চাতক सं—पपीहा, चातक। स्त्री —চাতকী,

চাতাল स—চত্বর, রোয়াক चबूतरा।

চাতুর্বর্ণ্য (-अ) सं—ब्राह्मण आदि चार वर्ण। या उनके गुण। वि—चार वर्ण सम्बन्धी।

চাতুর্মাস্য (-अ) सं—श्रावण से कार्तिक तक चार मास का व्रत।

চাঁদনি सं—জোৎস্না चाँदनी; চন্দ্রাতপ चंदवा; कोठा, अटारी।

চাঁদা सं—चदा; एक मछली।

চাঁদা, চাঁদি सं—सिर के ऊपर वाला अंश।

চাঁদি सं—রৌপ্য, রূপা चाँदी।

চাঁদোয়া सं—চন্দ্রাতপ, শামিয়ানা चंदवा।

চান सं—স্নান स्नान, गुस्ल।

চানকান (-नो), চানকানো (क्रि परि १६) —जडता हटाना, चगा करना, चमकाना, थोड़ा भूनना।

চানা सं—ছোলা, বুট चना। —চুর सं—চনাচুর, चबेना।

চাপ स—ভার बोझ, दबाव; চাপড়, তাল ढेला; जमी हुई वस्तु (—দই)। —দাড়ি स—कानों तक फैली हुई दाढ़ी।

চাপ सं—ধনু धनुष; वृत्त की परिधि का कोई भाग।

চাপকান सं—चपकन।

চাপটি सं—घुटने उठाकर चूतड़ पर बैठने का भाव।

চাপড় सं—চড়, थावड़ा चपेट थप्पड़।

চাপড়ান (-नो), চাপড়ানো (क्रि परि १६)—वारबार थप्पड़ मारना, थपकी देना।

চাপরাস स—चपरास। চাপরাসী स—পেয়াদা, আরদালী चपरासी।

চাপল্য (-अ) स—चपलता, चचलता।

চাপা (क्रि परि २)—চাপ দেওয়া दबाना, चापना; छिपाना, ढाँकना, सवार होना (ঘাড়ায়—, ঘাড়ে—)। वि-आवृत (ধামা—), अनुच्च; रुंधा हुआ, किसी भारी वस्तु के नीचे गिरा हुआ (মোটর—); गाड़ा हुआ (মাটি—), जो मन की बात खोल कर नही बतलाता (—লোক), दबा हुआ (পৃথিবীর মেরুদেশ কিছু—)। —চাপি सं—भारी दबाव। —চুপি स—छिपाव, गोपन।

চাঁপা सं—চম্পক।

চাপাটি सं—चपाती।

চাপান (-नो), চাপানো (क्रि परि १०)—लादना, चढ़ाना, दोष मढ़ना।

চাবকান (-नो), চাবকানো (क्रि परि १६)—चाबुक से मारना, कोडा मारना। [ताली।

চাবি स—चाभी, ताली कुंजी। —কাটি सं—

চাবুক सं—কশা चाबुक, कोड़ा।

চাম स—চর্ম चमडा।

চামচ, চামচে (चामचे) स—चम्मच।

চামচিকা (चाम्-) (—চিকে) सं—एक छोटी जाति का चमगादड़ जो मकानों में घोंसला बनाकर रहता है।

চামড়া सं—चमड़ा।

চামর स—चवर।

চামসা (चाम्शा) वि—চিমসে चमडे की तरह का।

চামাতি सं—चमडे की पट्टी, चमोटा।

চামার सं—মুচী मोची, चमार। स्त्री—চামারণী।

চামেলি स—चमेली।

চার वि, स—চারি चार, ४। —কোনা वि—चौकोना। —গুণ वि—चौगुना। —চৌকা, (চৌকো) वि—সমচতুষ্ক चौकोर। —টা, —টে वि—चार (लघु अर्थ में—চারটি)।

চার स—मछलियों को आकृष्ट करने का मसाला, मछलियों के घूमने-फिरने की जगह; जासूस।

চারক वि—चरानेवाला। (গো—)।

চারণ सं—ভাট स्तुति गान करने वाली एक जाति; पशु चराने का काम, चरागाह; चालन, पदक्षेप।

চারা स—ছোট গাছ छोटा पौधा, मछलियों का बच्चा, उपाय, प्रतिकार (—নেই)। वि—नवजात नूतन उत्पन्न —গাছ।

চারান (-नो), চারানো (क्रि परि १०)—ছড়ানো फैलाना, बाँटना।

চারি स, वि—চার चार, ४।

চারিত (-অ বি হাঁকায়া হুআ, खदेड़ा हुआ, संचालित, चुआया हुआ; वितरित।

চারিত্রিক वि—चरित्र सम्बन्धी।

-চারী वि, प्रत्य चलनेवाला, जानेवाला (মহাশূন্য —); करनेवाला, चलानेवाला (ব্রহ্ম—)।

চারু वि—सुन्दर सुहावना। —নেত্র (-অ) वि—सुन्दर नेत्रोंवाला। स्त्री—চারুনেত্রা। —শীল वि नम्र स्वभाव वाला। स्त्री — চারুশীলা। —হাস্য (-অ) सं—मनोहर मुसकान।

চার্বাঙ্গী वि—सुडौल अगों वाली।

চাল सं—চাউল चावल; छप्पर, आचरण, चलने का ढंग, चाल गति, छल, अपनी बड़ाई जताने का ढंग। —চলন सं—चालचलन रीति नीति। —চুলা, (-চুলো) स—छप्पर और चुल्हा, रहने और खाने का उपाय। —বাড়ন্ত (-অ) स—घर में चावल का अभाव।

চালতা (चालता) स =চালিতা।

চালন, চালনা स—चलाने की क्रिया, प्रयोग, चर्चा (বুদ্ধি—, গবেষণা—), प्रबन्ध (রাজ্য —)। চালিত (-অ) वि—चलाया हुआ। চালনীয় (-অ) वि—चलाने के योग्य।

চালনি, চালনী, চালুনী स—चलनी। [क्षीणता।

চালশে सं—चालीस साल उमर में दृष्टि-

চালা, চালাঘর स— फूस या खपड़ैल का घर।

চালা (क्रि परि १०)—चालना, चलनी से छानना, चलाना, हिलाना, चौसर आदि खेल में चाल देना, प्रयोग करना। वि—छांका चाला या छाना हुआ (— আটা)। — চালি सं—নাড়ানাড়ি वारवार हिलाना-डुलाना।

চালাক वि—धूत, चतुर। চালাকি स—चालाकी, धूर्तता, चतुराई।

চালান सं—चलान। চালানী वि—चलान-सम्बन्धी (-মাল)।

চালান (-নো), চালানো (क्रि परि १०)—चलाना, गति देना; प्रयाग करना; निर्वाह करना (সংসার চালানো—).

চালিত (-অ) वि—चालित, चलाया हुआ।

চালিতা, চালতা, চালতে सं—एक खट्टा फल।

চালু वि—चालू, प्रचलित।

চালুনি स—चलनी।

চাষ स—কৃষি खेती, जोतने का काम, जोताई, हल चलाना। —বাস स—खेती से निर्वाह; खेती बारी।

চাষা सं—किसान; गवार। —ড়ে वि—अशिक्षित, गंवार। —ভূষা, (—ভূষো) सं—किसान और उसी श्रेणी के लोग। চাষী सं—किसान, खेतिहर।

চাহন, চাওন सं—प्रार्थना; ताकना। চাহনি, চাউনি सं—दृष्टि नजर।

চাহা (क्रि परि ४)=চাওয়া।

চাহারম স—चौथाई चहारुम।

চাহিদা स—मांग।

চিংড়ি स—झींगा मछली (বাগদা—, গুলদা—, গলদা—)।

চিঁ, চিঁচিঁ स—कराहने का क्षीण स्वर; चिड़ियों के चिगने की चहचहाहट।

চিঁহিঁ स—हिनहिनाहट।

চিক स—चिक, गले का हार।

চিকচিক स—চকচক देखो।

চিকণ वि—চিক্কণ, চকচকে उज्ज्वल, चमकीला; चिकना, सुंदर।

চিকন स—चिकन, वेल-बूटे का काम। চিকনাই, চেকনাই सं—चमक, चिक्नाई।

চিকা सं—छुछो छछून्दर, ईंदुर मूस, चूहा।

চিৎকার सं = চীৎকার।

চিকমিক सं—চকমক देखो।

চিকিৎসা सं—इलाज। চিকিৎসনীয় (-अ), চিকিৎস্য (-अ) वि—इलाज करनेके योग्य : जिसकी चिकित्सा करना आवश्यक है। চিকিৎসাধীন वि—जिस रोग या रोगी का इलाज हो रहा है। চিকিৎসিত (-अ) वि—जिस रोग या रोगीका इलाज हुआ है।

চিকীর্ষা सं—करनेकी इच्छा। চিকীর্ষু वि—करनेके इच्छुक।

চিকুর सं—কুন্তল, কেশদাম केश।

চিক্কণ वि=চিকণ।

চিচিংফাঁক सं—भंडाफोड़।

চিচিঙ্গা, চিচিঙ্গে सं—ककड़ी।

চিচ্ছক্তি स्त्री—चिद्‌शक्ति, चेतनता।

চিজ सं—चीज, वस्तु। वि—धूर्त।

চিটচিট सं=চটচট। [राब गुड़।

চিটা, চিটে वि—চটচটা लसलसा। —গুড় स—

চিঠা सं—ফর্দ फिहरिस्त ; चिट्ठा, चिट्ठी।

চিঠি सं—चिट्ठी, खत।

চিড় सं—ফাট, বিদারণ दरार।

চিড়কুট (चिड़्कुट्) सं—पुरजा, रुक्का।

চিড়চিড় सं—চড়চড় देखो।

চিড়বিড় सं—জ্বালা जलन।

চিঁড়া, চিড়া, চিঁড়ে सं—চিপিটক चिउड़ा।

চিড়িক सं—टीस।

চিড়িতন सं—ताशमें चिड़ी।

চিৎকার सं=চীৎকার।

চিত (-अ) वि=চয়িত। सं—চিত্ত चित्त।

চিত, চিৎ वि—पीठके बल पड़ा हुआ, चित, उतान। —পটাং वि—चारों खाने चित।

চিতল सं—एक चौड़ी बड़ी मछली।

চিতা, চিতে सं—चिता, एक झाड़ी ; तेंदुआ।

চিতান (-नो), চিতানো, চিতনো (क्रि परि ११) —चित होना ; छाती फुलाना।

চিতি सं—चैतन्य, चेतनता ; ज्ञान।

চিত্ত (-अ) सं—মন অন্তঃকরণ। —দাহ सं—मनकी जलन। —প্রসাদ सं—मनकी प्रसन्नता। —বিভ্রম सं—बुद्धिका भ्रम। —বৃত্তি सं—मनकी वृत्ति। —রঞ্জন वि—मनको आनन्द देने वाला। —শুদ্ধি सं—मनकी पवित्रता। চিত্তাকর্ষক वि—मनको आकर्षित करने वाला।

চিত্র (-अ) सं—छवि, আলেখ্য तसवीर। —কর, (—কার) सं—चित्रकार। —পট सं—वस्त्रके ऊपर खींचा हुआ चित्र। —ফলক सं—तख्ता आदिके ऊपर बना हुआ चित्र। —বিচিত্র वि—रंग-बिरंगा। —লেখনী सं—तूलि बालोंकी कलम।

চিত্রণ सं—चित्र खींचनेका काम। [अचल, स्थिर।

চিত্রার্পিত (-अ) वि—चित्रमें खींचा हुआ,

চিত্রিত (अ) वि—অঙ্কিত चित्रित।

চিদাকাশ सं—हृदय प्रदेशमें आकाशवत् सूक्ष्म चैतन्य। [प्रतिबिम्ब, जीवात्मा।

চিদাভাস सं—अन्तःकरणमें ब्रह्मकी छाया या

চিদ্রূপ सं—चेतन रूप आत्मा।

চিনচিন सं—थोड़ी थोड़ी जलन, चुनचुनाहट।

চিনা सं—चीनी, चीनदेशका निवासी। वि—परिचित, जाना-पहचाना हुआ।

চিনা (क्रि परि ४)—जानना, पहचानना।

চিনান (-नो), চিনানো (क्रि परि १०)= চেনান। [साथ जमाया हुआ (दही)।

চিনি सं—चीनी। —পাতা वि—चीनीके

চিন্তক वि—चिंतन करने वाला।

চিন্তন सं—ध्यान, मनन, विचार, स्मरण।

চিন্তনীয় (-अ), চিন্ত্য (-अ) वि—चिंतनके योग्य। চিন্তা सं—चिंता, ध्यान, विचार ; शंका, फिक्र। চিন্তাকুল, চিন্তিত (-अ) वि—चिंतासे व्याकुल। চিন্তান্বিত (-अ) वि—

चिंतायुक्त, उद्विग्न, फिक्रमन्द। চিন্তামগ্ন (-অ) वि—चिंतामें लवलीन। চিন্ত্যমান वि—जिसकी चिन्ता की जा रही है।

চিন্তিয়া क्रि—विचार कर, सोच कर (ভাবিয়া —)।

চিন্ময় (चिन्मय) वि—चेतनापूर्ण, ज्ञानमय। सं—ईश्वर, परमात्मा। [१७)=চেপটান।

চিপটান (-नो), চিপটানো, চিপটেনো (क्रि परि

চিপিটক सं=চিঁড়ে।

চিবান (-नो), চিবানো, চিবনো (क्रि परि ११) —चबाना। वि—चबाया हुआ। চিবন, চিবুনি सं—चर्वण, चबानेका काम।

চিবুক सं—থুতনি ठोड़ी, ठुड्डी।

চিমটা, চিমটে सं—चिमटा।

চিমটান (-नो), চিমটানো, চিমটেনো (क्रि परि १७)—চিমটি কাটা चुटकी भरना या काटना। চিমটি सं—चुटकी।

চিমড়া, চিমড়ে वि-चिमड़ा, चमड़ेकी तरह कड़ा; कृश, दुबला-पतला।

চিমনি सं—चिमनी chimney

চিমসা, চিমসে वि=চিমড়া।

চির (-অ) वि—नित्य, अनत (—কাল, —স্থায়ী, —দিন, —যৌবন); बहुत दिनों तक रहने वाला। —কালীন वि—बहुत दिनों का, चिरकालिक। —কুমার वि, सं—जीवन-भर अविवाहित। —জীবন क्रि वि—जीवन-भर। —জীবিতা सं—अमरत्व। —তুষার, —নীহার सं—जो बर्फ कभी नहीं गलती। —তুষার-সীমা, —তুষার-রেখা सं—ऊंचे पहाड़की सीमा जहाँ बफ कभी नहीं गलती। —দুঃখী वि—जीवन भरका दुःखी। —নিদ্রা सं—मृत्यु। —ন্তন वि-चिरकालिक, बहुत प्राचीन। —বিচ্ছেদ सं—जन्म-भरके लिए विच्छेद। —বিদায় सं—बराबरके लिए विदाई, मृत्यु। —রুগ্ন (-অ) वि—চিররোগী सदाका रोगी। —স্থায়ী वि—नित्य, सदा रहने वाला। —স্থায়ী বন্দোবস্ত सं—बंगालके जमींदारोंके साथ जमीनके सम्बन्धमें अंग्रेज सरकारका स्थायी बंदोबस्त (ई० १७९३)।

চিরকুট सं—ছেঁড়া টুকরা फटा टुकड़ा, चिरकुट।

চিরতা, চিরেতা, চিরাতা सं—चिरायता।

চিরা (क्रि परि ५)=চেরা।

চিরাগত (-অ) वि—सदासे प्रचलित।

চিরাচরিত (-অ) वि—सदासे आचरित।

চিরাভ্যস্ত (-অ) वि—बहुत दिनोंका अभ्यास किया हुआ।

চিরুনি सं—কাঁকুই कंघी।

চিল सं—चील।

চিলমচি सं—चिलमची, हाथ-मुंह धोनेका [गमला।

চিলা, চিলে सं—छतके ऊपरकी कोठरी, अटारी।

চিঁহি, চিঁহিঁ सं—घोड़ेकी हिनहिनाहट।

চিহ্ন (-অ) सं—রেখা लकीर, दाग, चिह्न, छाप, लक्षण, स्मारक, संकेत, इशारा। চিহ্নিত (-অ) वि—चिह्न किया हुआ।

চীৎকার, চিৎকার सं—चिल्लाहट।

চীন सं—चीनदेश। চীনাংশুক सं—चीन देशका रेशमी वस्त्र।

চীনা, চিনে सं—चीनदेशका निवासी। वि—चीन देशका (-সিঁদুর)। —মাটি सं—एक तरहकी सफेद मिट्टी, चीनी मिट्टी। —বাদাম सं—चिनिया बादाम, मूंगफली।

চীর सं—चिथड़ा, लत्ता; कपड़ा; पेड़की छाल। —ধারী वि—चिथड़ा पहना हुआ।

চুঁই চুঁই सं—अनुकरण शब्द (ক্ষরনে ডন —করছে, খিদেয় পেট—করছে)।

চুক सं—चूक, भूल; त्रुटि।

চুকচুক सं—চকচক देखो।

চুকলি सं—লাগানি चुगली। —খোর वि, सं—चुगलखोर।

চুকা, চুকো वि—টক, অম্ল खट्टा। सं—खटाई।

চুকা, চোকা (क्रि परि ६) —खतम होना, चुक जाना।

চুকান (-নো), চুকানো, চুকনো, চোকানো (क्रि परि १२) —মিটানো चुकाना; खतम करना, तय करना।

চুক্তি सं—শর্ত, কড়ার शर्त, चुकौती।

চুঙ্গি, (-ঙ্গী) सं—चूंगी, महसूल।

চুচুক सं—ढेपुनी, स्तनकी घुंडी।

চুটকি सं—पैरकी उंगलीमें पहननेकी अंगूठी, चुटकी; शिखा, चुटैया।

চুটান (-নো), চুটানো, চুটনো (क्रि परि १२) —पूरी ताकत लगाना।

চুড়ি सं—चूड़ी। —দার वि—तंग और सिकुड़ा हुआ, शिकनदार (—আস্তিন, —পায়জামা)।

চুড়ো सं=চূড়া।

চুন सं—चूना। —কাম सं—घरमें सफेदी करने या चूना पोतनेका काम।

চুনট্ सं—चुनन, शिकन।

চুনা (क्रि परि ६)—चुनना।

চুনা, চুনো वि—ছোট छोटी (मछली)।

চুনি, (-নী) सं—लाल मणि, चुनी।

চুনরি सं—रंगीन कपड़ा, चुनरी।

চুপ वि—নীরব चुप। —চাপ क्रि वि—নিঃশব্দে चुपचाप। চুপ, চোপ-क्रि—चुप रह या रहो। চুপটি করে क्रि वि—নীরবে चुपचाप।

চুপড়ি, চুবড়ি सं— ছোট ঝুড়ি, ধামা खाँची, टोकरी, डलिया।

চুপসা, চোপসা वि—তোবড়া, বসা भीतरसे रस या हवा निकल जानेसे सिकुड़ा हुआ (—বল, —গাল, —আম)।

চুপসান (-নো), চুপসানো, চুপসনো, চোপসানো (क्रि परि १८) —भीतरसे हवा या रस निकल जानेके कारण सिकुड़ना; सोखना।

চুপি सं—चुप्पी, मौन; छिप कर श्रवण। —চুপি क्रि वि—बहुत धीरे या धीमे स्वर से, फुसफुसा कर; दूसरा कोई जान न सके इस ढंग से (—পালানো)। চুপে চুপে क्रि वि—चुपचाप।

চুবান (-নো), চুবানো, চুবনো, চোবানো (क्रि परि १२)—डुबाना, बोरना। চুবানি, চুবন (-অ), চোবানি, চুবনি सं—जबरदस्ती किसी को जलमें डुबानेका काम।

চুমকি सं—सुनहली या रुपहली छोटी छोटी टिकिया; लुटिया।

চুমকুড়ি सं—चुंबनके ऐसा शब्द।

চুমরি सं—वह कोष जिसके अंदर नारियल लगता है।

চুমা, চুমো, চুমু सं—चुंबन, चुम्मा।

চুমুক सं—पात्रमें होंठ लगा कर तरल वस्तु का पान, घूंट।

চুম্বক वि—चुम्बन करने वाला। सं—संक्षिप्त सार, सारांश, चुम्बक पत्थर या धातु जो लोहेको अपनी ओर खींचता है।

চুম্বী वि—छूनेवाला (গগন—)।

চুয়া सं—धूनेका निर्यास या सार।

চুয়াত্তর वि, सं—चौहत्तर, ৭৪।

চুয়ান (-নো), চুয়ানো, চুয়নো, চোয়ানো (क्रि परि १२) —टपकना, टपकाना, चुआना (মদ—)। वि—टपकाया हुआ, चुआया हुआ।

চুয়ান্ন (-অ) वि, सं—चौअन, ৫৪।

চুয়াল্লিশ वि, स—चौआलीस, ৪৪।

চুর, চুর सं—চূর্ণ, গুঁড়া बुकनी; चूर। वि—नशेमें बदमस्त।

চুরট सं=চুরুট।

চুরানব্বই वि, सं—चौरानवे, ९४।
চুরাশি वि, सं—चौरासी, ८४।
চুরি सं—चोरी, छिपाव। —চামারি सं—चोरी-बटमारी आदि कुकर्म।
চুরুট, চুরট सं—चूरट, सिगार।
চুল सं—केश, बाल। —খোলা क्रि—केश खोलना, जूड़ा खोलना। —রাখা क्रि—बाल रखाना या बढ़ने देना। —চেরা वि—बहुत सूक्ष्म, बारीक (—ভাগ)। চুলাচুলি, (চুলো—) सं—आपसमें बालोंकी खींचातानी। [কণ্ডূয়ন খুজলী।
চুলকনা (चुल-), (-কনি, -কুনি) सं—
চুলকান (चुल्कानो), চুলকানে', চুলকনো (क्रि परि १८)—खुजलाना।
চুলবুল (चुल्बुल्) सं—बेचैनी, चंचलता। চুলবুলে वि—चंचल, अस्थिर। চুলবুলানি, (-বুলনি, -বুলুনি) सं—चंचलता।
চুলা, চুলো सं—चूल्ही, উনান चुल्हा ; भरसाईं ; चिता। [सलाई।
চুষি सं—चूसनी। —কাঠি स—चूसनेकी
চূড়া, চূড়ো सं—पहाड़की चोटी, मंदिरका चूड़ा, ताज, शिखा ; श्रेष्ठ वस्तु। চূড়ান্ত (-अ) सं—चरम सीमा। वि—अत्यन्त।
চূত (-अ) सं—आम आम (फल)।
চূর सं, वि=চুর।
চূর্ণ (-अ) सं—গুঁড়া चूर्ण, बुकनी ; चूना। वि—नष्ट (দর্প—)। —কুন্তল सं—बालोंका गुच्छा। চূর্ণন सं—चूर्ण करना, बुकनी बनाना। চূর্ণীকৃত (-अ) वि—चूर्णित। চূর্ণীভূত (-अ) वि—चूर्ण बना हुआ।
চূষণীয় (-अ), চূষ্য (-अ) वि—चूस कर खाने योग्य। চূষিত (-अ) वि—चूसा हुआ।
চূষা (क्रि परि ६)=চোষা।
চেক सं—छक चौकोर खाना या चिन्ह (—কাগজ, —কাটা); বাংকে नाम रुपया देनेका आज्ञापत्र, चिक।
চেঙারী (चँगारी), চেঙারি सं=চাঙারি।
চেঁচান (चँचानो), চেঁচানো (क्रि परि १०,—চীৎকার করা चिल्लाना।
চেঁচানি, চেঁচামেচি, (-মিচি) सं—চীৎকার ও গণ্ডগোল चिल्लाहट और शोरगुल।
চেঁটাই (चँटाई) सं=চাটাই।
চেটি, চেড়ী स्त्री—चेटी, दासी।
চেটো सं—হাত পায়ের চেটো हथेली, तलवा।
চেতন वि—जिसमें चेतना हो। सं—चेतना (অচেতন)। চেতক वि—चेतना देनेवाला, उद्‍बोधक, चेतानेवाला।
চেতা (क्रि परि १)—चेतना, होशमें आना, सावधान होना।
চেতান (-नो), চেতানো (क्रि परि १०)—चेताना, जगाना ; सावधान करना।
চেন सं—शिकल साँकल chain
চেনা (क्रि परि ५) —पहचानना, दोष-गुण समझना, परिचय करना, जानना वि—परिचित (—লোক)।
চেনান (-नो), চেনানো (क्रि परि १०) —चिन्हाना, परिचित कराना, परिचय देना।
চেপটা (चैपटा), চ্যাপটা वि—চেপ্টা चिपटा (—नाक, —সন্দেশ)।
চেপটান (-नो), চেপটানো (क्रि परि १६) —दबाकर चिपटा बनाना।
চের (-अ) वि—ঢের देखो।
চেয়ার सं—কেদারা, কুর্সি कुर्सी।
চেয়ে, চাইতে अव्य—अपेक्षा, बनिस्बत (তার—ছোট)।
চেরা (क्रि परि ५) —फाड़ना चीरना। वि—चीरा हुआ।
চেরাগ सं—चिराग, ढिबरी।

চেরান (-नो), চেরানো (क्रि परि १०) — फাড়ানো चिराना, फड़वाना।

চেলা (चैला) स—शिष्य, সাগরেদ चेला; एक छोटी मछली, चैला।

চেলান (चैलानो), চেলানো (क्रि परि १०) —চেলা করা कुल्हाड़ीसे चैला बनाना।

চেলী सं—পট্টবস্ত্র रेशमी कपड़ा।

চেষ্টন सं—चेष्टा, कोशिश। চেষ্টক वि—चेष्टा करनेवाला। চেষ্টমান वि—সচেষ্ট चेष्टाशील।

চেষ্টা सं—चेष्टा, कोशिश, उद्योग। চেষ্টান্বিত (-अ), চেষ्टাশীল वि—चेष्टायुक्त। চেষ্টিত (-अ) वि—जिस विषयके लिए चेष्टा की गयी है। চেষ্টিতব্য (-अ) वि—चेष्टाके योग्य।

চেহারা सं—चेहरा, रूप।

চৈ (चइ) सं—अद्रककी तरहकी एक जड़।

চৈত (चइत्) सं—চৈত্র।

চৈতন (चइतन्) सं—টিকি शिखा, चुटया।

চৈতন্য (चइतन्न-अ) सं—চেতনা चैतन्य, ज्ञान, होश, स्थितिका परिज्ञान (বিপদে পড়লে —হবে); गौरांग महाप्रभु।

চৈতালী (चइताली) वि—चैत महीनेका।

চৈত্য (चइत्त-अ) सं—बौद्ध मठ, जिस मदिर में चिता-भस्म अस्थि आदि रखे जाते हैं।

চৈত্র (चइत्र अ) सं—चैतका महीना।

চৈন (-अ), চৈনিক (चइनिक) वि—चीन देश का, चीना। सं—चीनदेशका निवासी।

চোঁ सं—तीव्र गतिका भाव (—করে দৌড়ানো)। [৮০); চক্ষু आँख।

চোক सं—সিকির চিহ্ন चौथाईका चिह्न (।०, ।।०,

চোকল सं—শস্যের ভূষি चोकर।

চোকলা (चोक्ला) सं—খোসা छिलका।

চোকা क्रि—চুকা। वि—চোখা।

চোখ, চোক सं—চক্ষু चक्षु, नेत्र, आँख। — ওঠা क्रि—आँख आना। —টেপা, —ঠারা क्रि आँखसे इशारा करना। —ফোটা क्रि —आँख खुलना, स्थिति समझना। —রাঙানো क्रि—आँखे गरम करना। —খেকো, (-গা) वि आँख-फूटी (गाली)।

চোখা वि—ধারাল नुकीला, तेज, तीखा, खरा।

চোখাল (-अ), চোখালো वि—चोखा, नुकीला; चालाक। [तरफदार, पक्षपाती)।

চোখো प्रत्य—नजरवाला, दृष्टियुक्त (এক—,

চোঙ্গা, চোঙা, চোঙ सं—নল चोंगा (लघु अर्थ में চুঙ্গি, চুঙি)।

চোঁচ सं—बाँस या लकड़ीका काँटा या तीली-सा टुकड़ा (বাঁশের—পায়ে ফুটিয়াছে)।

চোট सं—ঘা, কোপ चोट, वार; जोर, ताकत, वेग, प्रवाह (হাসির—); क्रोध प्रकाश; दफा (এক—)। —পাট सं—धमकी, कठोर शब्द।

চোটান (-नो), চোটানো (क्रि परि १४) —কোপানো चोट मारना, फावड़ेसे खोदना।

চোট্টা सं—चोट्टा চোর।

চোত सं—चैतका महीना।

চোতা वि—বাজে, ওঁচা रद्दी, ओछा।

চোনা सं—গোমূত্র गौका पेशाब।

চোপ सं—কোপ भारी तीखे शस्त्रका वार (খাঁড়ার—)। वि—चुप (—রও)। চোপদার सं—चोबदार।

চোপসা, চোপসানো=চুপসা, চুপসানো।

চোপা सं—कड़ा जवाब, झगड़ा; मुँह।

চোবান (-नो), চোবানো क्रि =চুবান।

চোবে, চৌবে सं—चौबे। [टपकना।

চোয়া (क्रि परि २०) —ক্ষরিত হওয়া चूना,

চোয়া वि—थोड़ा जला (—তরকারি)। — ঢেকুর सं—बदहजमीके कारण खट्टी डकार।

চোয়াড় वि—गँवार; नीच।

চোয়ান (-नो) চোয়ানো क्रि — चुआन।

চোয়াল सं — जबड़ा।

চোর सं — चोर, चोट्टा। —কুঠরি सं — गुप्त कमरा। চোরা, চোরাই वि — चुराया हुआ (—কারবার, চোরাই মাল)।

চোরা वि — गुप्त, छिपा। —গাপ্তা वि — छिट-फुट। —বালি सं — जिस रेतीमें नाव पशु आदि गड़ जाते हैं।

চোরাই वि — चोरीका (माल); चुराया हुआ।

চোনাই सं — चुआनेका काम, चुआई।

চোষণ सं — चूसनेकी क्रिया। চোষক वि — चूसनेवाला, सोखनेवाला।

চোষা (क्रि परि ६) — चूसना।

চোষ্য (-अ) वि — चूसने योग्य। सं — चूसकर खानेकी वस्तु।

চোস্ত (-अ) वि — समान, बराबर; चिकना।

চৌ (चउ) वि — চার चार (চৌচির, চৌপায়া)। —কাঠ, (-ट) सं — चौखट, डेहरी। —খুপি वि चार खानों वाला। —গুণ, —গুণা, -গুনো वि — चौगुना। —ঘুড়ি सं — चौघोड़ी। —চালা वि — चार छप्परों वाला। —চির वि — फटा, टुकड़े टुकड़े। —তলা वि — चौमंजिला। —মাথা, —রাস্তা सं — चौमुहानी, चौराहा। —হদ্দি सं — चौहद्दी।

চৌক (चउक) सं = চক।

চৌকস, (-श) वि — चौकस, अनुभवी।

চৌকা, চৌকো वि — চারকোণা चौकोर। सं — ताशका चौका।

চৌকি (चउकि) सं — তক্তাপোশ चौकी, कुर्सी; पहारा, थाना। —দার सं — पहारे-वाला, चौकीदार। —দারি सं — चौकीदारी।

চৌঠা, (-ठा) (चउठो) सं — चौथी तारीख।

চৌতালা (चउताला) वि — चौमंजिला। सं — चौथी मंजिल।

চৌত্রিশ वि, सं — चौतीस, ३४।

চৌদ্দ (-अ) वि, सं — चौदह, १४। —প্রদীপ सं — जो चौदह दीपक दिवालीके पूर्व रात्रि को जलाये जाते हैं।

চৌদ্দই, চৌদ্দই सं — चौदहवीं तारीख।

চৌধুরী सं — चौधरी, एक उपाधि।

চৌবাচ্চা सं — हौज, चहबच्चा, टांका।

চৌম্বক वि — चुंबक सम्बन्धी। [—चोरी।

চৌর (-अ) सं — चोर। চৌর্য (चउर्ज -अ) सं

চৌরস वि — চারকোণা चौकोना, चौरस।

চৌরাশি (चउराशि) वि, सं — चौरासी, ८४।

চৌরাস্তা सं — चौमुहानी।

চৌর্য (चउर्ज-अ) सं — चोरी, डकैती।

চৌর্যাপরাধ सं — चोरीका जुर्म।

চ্যাংড়া सं — लौंडा। চ্যাংড়ামি, (-মো) सं — लौंडा-सा ओछापन।

চ্যাপটা वि — চেপটা।

চ্যুত (-अ) वि — पतित, गिरा हुआ (স্খলিত—); निकाला हुआ (পদ—, জাতি—)। [चूक।

চ্যুতি सं — पतन, गिराव; हटाव, त्रुटि, ऐब,

ছ

ছ वि, सं — ছয় ছঃ, ६ (ছ টাকা)। [छप्पर।

ছই सं — नाव, बैल-गाड़ी आदिके ऊपरका

ছউই सं — छठवीं तारीख।

ছক सं — चौकोर खानों वाला वस्त्र-खंड जिस पर शतरंज आदि खेला जाता है, बिसात। —কাটা वि — लकीरोंसे चौकोर खानोंमें विभक्त।

ছকড় सं — खराब घोड़ेकी गाड़ी। [तरकारी।

ছক্কা सं — ताशका छक्का; पकायी हुई एक

ছটকান (-नो), ছটকানো (क्रि परि १६) — छिटकना, अलग होना।

ছটফট सं—बेचैनी अथवा उतावलीका भाव, छटपटी। छटफटी सं—बेचैनी, उतावली। छटफटানি सं—बेचैनी, अस्थिरता, तडफड़ाहट। छটফটে वि—बेचैन, उतावला, अस्थिर, चंचल।

छटরা, छররা सं—छर्रा।

छটা सं—किरण, दीप्ति, छटा। [पाँच तोले।

छটাক सं—छटाँक, सेरका सोलहवाँ अंश,

छड सं—बेहला सारंगी आदि बजानेका तार वाला छड़ ; छड़।

छড়া सं—छिটা छींटा ; गुच्छा ; माला ; ग्रामीण कविता। —কাটা क्रि—बात-बातमें कविता कहना।

छड़া (क्रि परि १) —चमड़ा छिलना।

छড়ান (-नो ,, छড়ানো (क्रि परि १०) — छিটানো छिटकाना, बिखेरना।

छড়াছড়ি सं—अनेक वस्तुओंका अस्तव्यस्त फलाव ; बहुतायत ; अपव्यय, फिजूल-खर्ची।

छড়ি सं—সরু লাঠি पतली लाठी, छड़ी।

छत्र (छत्र अ) स—छाता, लेखकी पंक्ति, सतर (দু—লেখ) ; अन्नसत्र, छेत्र।

छত্রক, छত্রাক सं—বেঙের ছাত, कुकुरमुत्ता, धरतीका फूल Fungus

छত্রভঙ্গ (-अ) सं—दलका टूटना, तितर-बितर होना। वि—दलभ्रष्ट। [हुआ।

छত্রাকার वि—छातेकी तरहका ; छिटकाया

छত্রিশ (छत्रिश) वि, स—छत्तीस, ३६।

छত্রী सं—छत्रधारी, छत्री।

छদ सं—पेड़की पत्ती ; आवरण (নেত্রচ্ছদ, पलक)।

छদ্ম (छद्-अ) सं—छल, कपट ; छिपाव। —বেশী वि—छद्मी, स्वाँगी, बनावटी वेश धारण करने वाला।

छনছন सं—पेशाब निकलनेका शब्द, फुर्ती ; बेचैनी। छনছনে वि—फुर्तीला, अधीर, बेचैन।

छন্দ (-अ) सं—अभिप्राय, छंद, कविता। —পাত, (-পতন) सं—छंदोभंग। छন্দানু-গমন, (-সুসরণ) स—दूसरेके इच्छानुसार चलना।

छন্দাংশ (-अ) सं—क्षुद्र अंश, बिन्दुमात्र।

छন্ন (-अ) वि—आवृत ; गुप्त। —ছাড়া वि—आश्रयरहित। —মতি वि—মতিছন্ন जिसकी बुद्धि नष्ट हो गयी है। [शब्द।

छপ सं—पानी पर किसी चीजके गिरनेका

छবি सं—दीप्ति, शोभा (মুখচ্ছবি) ; चित्र, तसवीर। [सिहरना (ভয়ে গা—করে)।

छমছম सं—भूत आदिके भयसे शरीरका

छয় वि, स = छ।

छয়লাপ वि—প্লাবিত प्लावित, व्याप्त।

छরকট सं—বিশৃঙ্খলা बेब दोबस्त, गड़बड़ी।

छররা सं = छटরা।

छर्दि सं—सर्दी, जुकाम ; कै।

छল सं—छলনা छल, धोखा, धूर्तता ; प्रसंग (কথাচ্ছলে), बहाना, उज्र ; दोष। —গ্রাহী वि, सं—छिद्रान्वेषी हर बातमें दोष निकालने वाला। —ক্রমে क्रि वि—छलसे।

छলছল सं—लहरोंका शब्द ; आँखोंमें आंसू आनेका भाव (চোখ—করছে)। वि—अश्रुपूर्ण (—চোখ)। [छलकना।

छলকান (-नो), छলকানো (क्रि परि १०) —

छলন, छলনা सं—छल, धोखा। छলিত (-अ) वि—प्रतारित, ठगा हुआ। [—छल, धोखा।

छলা (क्रि परि १)—छলনা করা छलना। सं

छলাৎ सं—छलकनेका शब्द।

छা, छা सं—छाना शावक, बाच्चा बच्चा। —পোষা वि—जिसे अनेक सतानें पालनी पड़ती हैं।

ছাই स—राख भस्म, खाक, तुच्छ विषय (—পাশ, —ভস্ম, দূর—, —ফেলতে ভাঙা কুলো, শত্রুর মুখে—)।

ছাঁইচ सं—छाँच ओलती, ओरी। —তলা स—ओरीके नीचेकी भूमि। [छावनी।

ছাউনি स—চাঁদোয়া चंदवा, सेनानिवास,

ছাওয়া (क्रि परि ४)—छाना, व्यापना, फैलना। वि—छाया हुआ। सं—आच्छादन।

ছাওয়ান (-नो), ছাওয়ানো (क्रि परि १२)—छवाना।

ছাওয়াল, ছাবাল सं—छोटा लड़का, बच्चा।

ছাঁকনা (छाँकना), ছাকনি सं—छननेका पात्र, चलनी।

ছাঁকা (क्रि परि ३)—छनना, चालना। वि—चाला हुआ, छाना हुआ, खालिस। ছেঁকে ধরা क्रि—कई आदमी मिलकर घेरना या परेशान करना। [छागनी।

ছাগ, ছাগল स—পাঠা बकरा। स्त्री—ছাগী,

ছাঁচ स—साँचा, साँचेसे बनायी हुई चीज (ক্ষীরের—); ओलती। [सुगंधित पान।

ছাঁচি वि—खालिस, शुद्ध। —পান स—एक

ছাট स—पानीका छींटा (বৃষ্টির—)।

ছাঁট सं—कतरन, कतरनेका ढंग (চুলের—)।

ছাঁটা (क्रि परि ३)—छाँटना, कतरना; चोकर निकालना (চাল—)। वि—छाँटा हुआ (—চুল); चोकर निकाला हुआ (—চাল)। ছাঁটাই स—छाँटने या चोकर निकालनेका काम।

ছাড় स—त्याग मुक्ति, रिहाई। —পত्र सं—जानेका आज्ञापत्र।

ছাড়া (क्रि परि ३)—छोड़ना; बदलना (কাপড়—), रवाना होना, खुल जाना। अव्य—सिवाय (এ—, তুমি—)। वि—रहित (লক্ষ্মী—), स—रिहाई, मुक्ति (—পাওয়া)। ছাড়া-ছাড়ি स—विच्छेद। ছাড়ান स—रिहाई, मुक्ति, छुटकारा।

ছাড়ান (-नो), ছাড়ানো (क्रि परि १०)—খালাস করা छुड़ाना मुक्त करना, भगाना; छिलका उतारना। वि—मुक्त; छिलका उतारा हुआ।

ছাত सं—ছাদ।

ছাতনা (छातना) सं—काई।

ছাতা, ছাতি स—छद्र छाता; ব্যাঙের कुकुरमुत्ता।

ছাতার, ছাতারে सं—मटमैले रंगका एक छोटा पक्षी।

ছাতি स—दूर छाती; छाता। [खानेवाला।

ছাতু स—शक्तू सत्त। —খোর वि, स—सत्त

ছাত্র (-अ) सं—পড়ুয়া छात्र, विद्यार्थी, शिष्य। स्त्री—ছাত্রী। ছাত্রাবাস स—छात्रालय।

ছাদ स—छत।

ছাদক वि—ढाँकनेवाला। ছাদন सं—आवरण, आच्छादन। ছাদিত (-अ) वि—आवृत, ढंका हुआ।

ছাঁদ स—গঠন बनावट, आकार, ढंग।

ছাঁদন দড়ি स—दूध दुहते समय गायके पैर बाँधनेकी रस्सी।

ছাদনাতলা (छादना-), (ছাদনা-) सं—जिस चंदवेके नीचे विवाह होता है।

ছাঁদা (क्रि परि ३)—घेरना। स—निमन्त्रित व्यक्ति जो खाद्य बाँध कर ले जाता है।

ছানতা (छानता) सं—ঝাঁঝরি छेददार कलछुल।

ছানা सं—बाच्छा, शावक बच्चा (পাখীর—, ছাগল—), छेना, फटे दूधका खोवा। —কাটা क्रि—दूध फाड़ कर छेना निकालना। —পোনা सं—কাচ্চাবাচ্চা कच्चे-बच्चे। [सानना

ছানা (क्रि परि ३)—চটকাইয়া মাখা गूँधना,

ছানি, (-नो) सं—मोतियाबिंद, फूली;

इशारा (হাত—); सानी ; मुकदमेका फिर से विचार होनेके लिए दरखास्त।

ছাপ सं—মুদ্রণ छाप, चिह्न, दाग।

ছাপা (क्रि परि ३)—মুদ্রণ করা छापना। वि—मुद्रित छपा हुआ, छिपा हुआ। ছাপাই सं—छपाई। [पूणता।

ছাপাছাপি वि—लबालब। सं—छिपाव;

ছাপান (-नो), ছাপানো (क्रि परि १०)—মুদ্রিত করানো छपाना; सीमा पार करना, पात्र लबालब भरकर गिरना (পুকুর—, গেলাস—)।

ছাপ্পর सं—খোলার চাল छप्पर।

ছাবলা वि=ছেবলা।

ছাবাল सं=ছাওয়াল।

ছাব্বিশ वि, सं—छब्बीस, २६।

ছাব্বিশে सं—छब्बीसवीं तारीख।

ছায়া सं—छाया, परछाईं; सादृश्य, आभास; दीप्ति (রত্নচ্ছায়া)। —তরু सं—छायादार वृक्ष। —বাজি सं—छाया चित्र का प्रदर्शन —মণ্ডপ सं=চাঁদোয়া।

ছার वि—तुच्छ, अधम, नगण्य, खराब। सं—खटमल। —খার वि—बरबाद। सं—नाश (ছারে খারে যাওয়া)। —পোকা सं—মৎকুণ खटमल।

ছাল सं—ত্বক, খোসা, বল্কল छाल (গাছের—), चमड़ा (হরিণের—)।

ছালটি (छाल्टि) सं—सन तीसी आदि के छालके सूत से बना हुआ कपड़ा।

ছালনাতলা सं—चंदवे के नीचे का स्थान जहाँ विवाह के पूर्व दुलहे को दुलहिन से प्रथम साक्षात्कार कराने के लिए खड़ा कराया जाता है।

ছালা सं—বস্তা बोरा। [छ्या)।

ছি अव्य—छि। (अधिक घृणा में ছ্যা, ছ্যা

ছিঁচকা (छिंचका) (-কে) सं—लोहे का सिकचा जिससे हुक्के का नल साफ़ किया जाता है।

ছিঁচকাঁদুনে वि—যে একটুতেই কাঁদে जो थोड़े में ही रोता है। स्त्री—ছিঁচকাঁদুনী।

ছিঁচকেচোর सं—जो चोर छोटी-मोटी चीजें चुराता है। [सनक (—ধ্রস্ত)।

ছিট सं—ছিটা, ফোঁটা छींटा, बूँद; छींट,

ছিটকান (-नो), ছিটকানো, ছিটকনো (क्रि परि १७)—নিক্ষিপ্ত হওয়া, ঠিকরাইয়া পড়া छींटना, छितराना, बिखरना; छिड़कना (জল—)।

ছিটকিনি सं—सिटकिनी, चटकनी।

ছিটা, ছিটে सं—छींटा, छींट, बिंदु, तिलक; छर्रा। —ফোঁটা सं—দুই এক ফোঁটা बूंदी—आँदा, थोड़ा-परिमाण।

ছিটান (-नो), ছিটানো ছিটনো (क्रि० परि० ११)—ছড়ানো छिड़कना।

ছিটা বেড়া सं—टट्टर।

ছিদাম सं—एक पैसे की चौथाई।

ছিদ্র (-अ) सं—ছেঁদা, ফুটা, রন্ধ্র छेद; दोष। ছিদ্রানুসন্ধান, ছিদ্রান্বেষণ सं—दूसरे के दोष का ढूंढ़ना।

ছিনা, ছিনে वि—শীর্ণ, রোগা क्षीण, कृश। —জোঁক सं—সরু জোঁক घासमें रहने वाली एक प्रकार की जोंक; (व्यंग में) जो पीछा नहीं छोड़ता, पिछलगा।

ছিনান (—नो), ছিনানো, ছিনো (क्रि परि ११)—কাড়িয়া লওয়া छीन लेना।

ছিনাল, ছেনাল वि, सं—छिनाल। ছিনালী পনা, ছেনালীপনা सं—छिनालपन, छिनाला।

ছিনিমিনি सं—खपड़े आदिका टुकड़ा फेंक कर पानी पर चलाने का खेल।

ছিন্ন (-अ) वि—ছেঁড়া फटा, टूटा, कटा हुआ,

खंडित। —দৈধ্য (—द्वैध-अ) वि—जिसका सशय मिट गया है। —ভিন্ন (-अ) वि—तितर-बितर, नष्ट-भ्रष्ट, टूटा-फूटा, बरबाद।

ছিপ सं—पतला बाँस जिसके सिरे पर मछली फसाने के लिए सूत और वंसी लगी हो; सँकरी और लम्बी चाल की नाव। —ছিপে वि—সরু ও পাতলা दुबला और लम्बा (—গড়ন)।

[११)—छिपाना।

ছিপান (-नो), ছিপনো, ছিপানো (क्रि परि

ছিপি सं—দাব কাগ, डाट।

ছিবড়া ছিবড়ে सं—शिटी सीठी (আকের—)।

ছিম सं—शिम सेम, फली।

ছিয়াত্তর वि, सं—छिहत्तर, ७६।

ছিয়ানব্বই वि, सं—छानवे, ९६।

ছিয়াশি वि, सं—छिआसी, ८६।

ছিরি सं—श्री श्री, शोभा, रूप; चावलके चूर्ण गूँध कर और उसमें रंग मिलाकर बनाया हुआ मंदिरनुमा पदार्थ जो विवाह आदिके समय रखा जाता है।

ছিলকা, ছিলকে सं—ছাল, খোসা छिलका।

ছিলা, (-ला) सं—ধনুকের গুণ धनुष की डोरी; धोती चादर आदिके दोनों ओर के झालर के सूत।

ছিলিম सं—তামাকের কলিকা चिलम।

ছুকরী सं— छूँड़ी छोकरी।

ছুঁচ सं—সূচ, সূচী सूई।

ছুঁচা, (-চো) सं—छुछुन्दरी, গন্ধমূষিক छछूंदर।

ছুঁচাল (-अ), ছুচালো, ছুচলো वि—সূচীমুখ नुकीला। [सनक।

ছুঁচিবাই सं—শুচিবাই पाक-साफ रहने की

छुछुन्दरी सं=ছুঁচা।

ছুট सं—छाँट छूट, कतरन, पहनावा; दौड़ (—দেওয়া, —মারা)।

छूटका, (-का) वि—छिटक कर आया हुआ।

ছুটা, (ছো—) (क्रि परि २)—দৌড়ানো दौड़ना; छूटना (নশা—)।

ছুটাছুটি सं—दौड़-धूप, इधर-उधर दौड़।

ছুটান (-नो), ছুটানো, ছুটনো, ছোটানো (क्रि परि १२)—दौड़ाना, छुड़ाना।

ছুটি सं—छुट्टी, अवकाश।

ছুড়া (क्रि-परि ६)=ছোঁড়া।

ছুঁড়ী स=छुकरी।

ছুঁৎ स—अछूत अस्पृश्य के ससर्ग से खाने या पीने की वस्तु में उत्पन्न दोष या अपवित्रता। —মার্গ (-अ) स—स्पर्श दोष बचाना ही परम धर्म है ऐसा आचरण।

ছুতা, (তো) सं—অছিলা बहाना; दोष, त्रुटि (—ধরা, —রাখিয়া করা)।

ছুতার, (-তোর) स—बढ़ई।

ছুরি स—छूरी, चाकू।

ছুলা (क्रि परि ६) क्रि=ছোলা।

ছুলি स—एक प्रकारका चर्मरोग; चमड़े पर की चित्ती।

ছেঁকা (छेंका) सं—तपे लोहे आदि से किसी अंगका दाह।

ছেঁকা (छेंका) (क्रि परि १)—थोड़े घी या तेल में भूनना, सेंकना।

ছেঁচকি (छेंचकी) सं—तेल में भूनका थोड़े जल में सिझायी हुई तरकारी।

ছেঁচড় (छेंचड़) वि—छलिया, दुष्ट (চোর—)।

ছেঁচড়া सं—ছেঁচড় छलिया; मछलीके काँटे तेल साग आदि की मिली हुई सूखी तरकारी।

ছেচল্লিশ वि सं—छियालीस, ४६।

ছেঁচা (छेंचा) (क्रि परि १)—থেঁতলানো कुचलना, कूटना, पसिना; सींचना, पानी फेंकना (পুকুর—, নৌকা—)।

ছেঁড়া (क्रि परि ५)—फाड़ना; अलग करना; उखाड़ना। वि—फाड़ा हुआ, फटा (-কাপড়),

तोड़ा हुआ, फटा हुआ (—দুধ)। —ছিঁড়ি सं—बारबार फाड़ना।

ছেত্তা वि—काटनेवाला।

ছেদ सं—छेदन, कर्तन (মুণ্ডচ্ছেদ); विराम (কার্যের—নাই); टुकड़ा, विराम चिह्न। ছেদক वि—ছেত্তা। ছেদন सं—छेदन, चीरफाड़। ছেদনীয় (अ), ছেদ্য (-अ) वि—काटने योग्य। ছেদিত (-अ) वि—कटा हुआ, खंडित।

ছেঁদা (छैंदा) सं—छिद्र, फুটো छेद, सूराख।

ছেঁদো वि—सारहीन (—কথা)।

ছেনি सं—লোহা কাটিবার বাটালী छेनी रुखानी।

ছেবলা (छैब्ला) वि—ছ্যাবলা। ছেবলামি सं=ছ্যাবলামি।

ছেলে सं—लड़का, बेटा, पुत्र; आदमी (বেটা—, মেয়ে—)। —খেলা सं—बच्चों सा खेल। —ধরা सं—बच्चों का चुरानेवाला, बच्चों को डरानेका हौआ। —পিলে, —পুলে सं—कच्चेबच्चे। —বয়স सं—बचपन। —মানুষ सं—कम उमरका बच्चा, शिशु। —মানুষি, ছেলেমি, ছেলেমো स—बच्चों-सा बर्ताव; हलकापन।

ছেষট্টি वि; सं—छाछठ, ৬৬।

ছৈ (छइ) सं=ছই।

ছোঁ स—झपट्टा (চিলে—মেরে নিয়ে যাবে), मुख से आक्रमण (সাপে—মারে)।

ছোঁক ছোঁক सं—खाने के लिए उतावलापन।

ছোকরা सं—छोकरा, लौंडा, लड़का।

ছোঁকা सं=ছেঁচকি।

ছোঁচান (-नो), ছোঁচানো (क्रि परि १४)—झाड़ा फिरनेके बाद जलसे शौच करना, जल छूना।

ছোট (-अ), ছোটো वि—छोटा (प्यार में—ছোটো); নাটা; नीच, निंदित, कृपण; नीचेवाला (—আদালত,—বাবু)। —খাট (-अ), —খাটো वि—छोटा, संक्षिप्त।

ছোট, सं—सुखाये हुए केले के डंठलों की बनायी हुई रस्सी।

ছোটা, ছোটানো क्रि=ছুটা।

ছোটাছুটি सं=ছুটাছুটি। [से छोटे-भाई।

ছোড় দা, (—দাদা) सं—बड़े भाइयों में सब

ছোড় দি, (—দিদি) सं—बड़ी बहिनों में सब से छोटी बहिन।

ছোড়া, ছোঁড়া (क्रि परि ६)—নিক্ষেপ করা फेकना; দাগা दागना (বন্দুক—)।

ছোঁড়া सं—ছোকরা छोकरा, लौंडा।

ছোপ स—দাগ दाग, धब्बा।

ছোপানো, ছোবানো (क्रि परि १४)—রং করা रंगना। वि—रंगा हुआ।

ছোবড়া (छोब्ड़ा) सं—छिलकेका रेशा (নারিকেলের—); सीठी।

ছোবল सं—मुख से आक्रमण (সাপের—)।

ছোবলান (छोब्लानो), ছোবলানো (क्रि परि २१)—ছোবল মারা मुख से आक्रमण करना।

ছোঁয়া (क्रि परि २०) छूना। वि—छूआ हुआ। —ছুঁয়ি सं—बारबार स्पर्श, आपस में स्पर्श।

ছোঁয়াচ सं—अपवित्र वस्तु का स्पर्श। ছোঁয়াচে वि—सक्रामक, छुतहा।

ছোঁয়ান (—नो), ছোঁয়ানো (क्रि परि १४)—ঠেকানো छुलाना।

ছোয়ারা सं—छुहारा।

ছোরা सं—छुरा, कटार।

ছোলা स—बूट चना (ছোলার ডাল)।

ছোলা (क्रि परि ६)—চাঁচা छीलना; छिलका उतारना।

ছ্যা अव्य=ছি।

ছ্যাঁক सं—तपी हुई वस्तुके जल में डालने से

या गरम तेल आदि में तरकारी आदि डालनेसे जो शब्द होता है।

ছ্যাবলা, (ছে—, ছো—,) वि—প্রগল্ভ, লঘু-স্বভাব बकवादी, बातूनी, हल्का आदमी

ছ্যাবলামি, (—মো) स—बकवाद, बातचीत में हल्कापन।

জ

জ वि, प्रत्य—জাত उत्पन्न (জলজ, দেশজ)।

জই स—जई।

জং सं—চক লোহেকা मुरचा।

জংলা, জঙলা, (—লী) वि—বুনো जगली [वनैला।

জক स—यक्ष ; कृपण व्यक्ति।

জখম स—আঘাত जख्म। वि—আহত घायल।

জখমী स—घायल आदमी। वि—जख्म-सम्बन्धी।

জগঝগ स—ঝকমক जगमगाहट।

জগজ্জন জগজ্জন सं—ससार के मनुष्य।

জগজ্জননী स्त्री-ससार भर की माता, जगदीश्वरी।

জগজ্জয়ী वि—ससार को जीतनेवाला।

জগঝম্প (-अ) सं—डंका, नगाड़ा।

জগৎ सं—संसार (জগৎকারণ)। জগদ্দল वि—बहुतभारी, জগন্নাথ स—संसारका पिता या प्रभु, पुरी की विष्णु-मूर्त्ति। জগন্নাথ ক্ষেত্র स—श्रीक्षेत्र पुरीधाम। জগন্ময়ী (जगन्मयी) स्त्री—ससारको व्याप्त करने वाली, दुर्गा, परमेश्वरी। জগন্মাতা (जगन्माता) स्त्री—ससार को उत्पन्न करनेवाली, परमेश्वरी। জগন্মোহন (जगन्मोहन) वि—ससारको मोहनेवाला। स्त्री—জগন্মোহিনী।

জগতী स—धरती, पृथ्वी, दुनियाँ। জগতীতলে क्रि वि—पृथ्वी पर, दुनियाँ में।

জগদ্বন্ধু (जगद्‌बन्धु), জগদ্বন্ধু स—विश्वमित्र ; ईश्वर, विष्णु।

জগদ্বাসী (जगद्‌वासी) स—ससारके निवासी।

জগদ্বিখ্যাত (जगद्‌विख्यात-अ) वि—विश्व विख्यात, ससार भर में प्रसिद्ध।

জগদ্ব্যাপী (जगद्‌व्यापी) वि—ससार भरमें फैला हुआ।

জগবন্ধু सं—জগদ্বন্ধু।

জগাখিচুড়ি स—अनेक प्रकारकी तरकारियाँ मिलाकर पकायी हुई खिचड़ी, विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की मिलावट।

জঘন स—नितम्ब, चूतड़।

জঘন্য (-अ) वि—কদর্য, নোংরা खराब, गंदा, [घृणित, नीच।

জঙ্গ सं—जग, लड़ाई ; लोहे का मुरचा।

জঙ্গী वि—जगी, सेना सम्बन्धी। सं—वीर।

জঙ্গম वि—गतिशील, चलनेवाला।

জঙ্গল सं—जगल, वन, আগাছা घासपात।

জঙ্গুলে वि—वनैला।

জঙ্ঘা स—जाँघ, ऊरु, पैरका ऊपरवाला अंश।

জজ स—जज, विचारक।

জজিয়তি स—जजका काम या पद।

জঞ্জাল स—আবর্জনা कूड़ा-करकट, ঝঞ্ঝাট [झंझट।

জট सं—জটা, গাঁট फसाव, उलझन, गांठ।

জটলা स—ভিড় भीड़, आदमियों का जमाव।

জটা सं—जटा, बरगद आदि पेड़ की शाखा में से उतरी हुई जड़ ; केशर (সিংহের—)। —জুট सं—जटा का गुच्छा ; शिव की जटा। —ধর स—जटाधारी, शिव। জটে, জটাল (-अ) वि—जटावाला।

জটিল वि—जटिल, गूढ़, जटावाला।

জটিলা सं—राधा की सास।

জটী वि—जटावाला।

জড়ুল स—জড়ুল शरीर में जन्म से चिह्न, [मातृचिह्न, लहसन।

জঠর स—उदर, पेट ; पाकाशय, गर्भ, जरायु।

জড বি—অচেতন जिसमें चेतनता नहीं है, जड़; अचल (-बुद्धि), मूर्ख। सं—वस्तुका मूल उपादान। —বাদ स—जड वस्तुके सिवाय संसार में दूसरा कुछ नहीं है और चैतन्य जड़का ही धर्म है ऐसा मत। —ভরত सं—पुराणोक्त एक ऋषि। वि—निकम्मा, आलसी, सुस्त।

জড় (-अ), জড়ো वि—সমাবেশিত, গোটানো बटोरा हुआ, एकत्रित। —সড় (-अ) वि—আড়ষ্ট सकुचित, सिकुड़ा हुआ; ठिठुरा हुआ।

জড়তা सं-जड़त्व, अस्पष्टता (কথার—)।

জড়াজড়ি सं—परस्पर आलिंगन।

জড়ান (-नो), জড়ানো (क्रि परि १०)—लपेटना, फसाना, बटना; अस्पष्ट होना। वि—लपेटा हुआ, अस्पष्ट। জড়িত (-अ) वि—लपेटा हुआ, फसा हुआ; जटित, जड़ा हुआ। জড়ানো वि-लपेटा हुआ, पेचिदा; गिचपिच।

জড়িমা स—जड़त्व, अस्पष्टता।

জড়ীভূত (-अ) वि—जड़त्वप्राप्त, फसा हुआ; भयसे सुन्न।

জড়ুল सं—जटुल।

জড়োয়া वि—মণিমুক্তা খচিত जड़ाऊ।

জতু सं—গালা, লাক্ষা लाह, लाख।

জন स—आदमी की संख्या प्रकाशक शब्द (এক—চাকর), आदमी, मनुष्य, जनता; नौकर; मजदूर (—খাটানো); —পদ सं—राज्य, बस्ती, आबादी, देश। —প্রবাদ सं—জনশ্রুতি, কিংবদন্তী कहावत। —প্রাণী,—মানব सं—कोई मनुष्य या प्राणी। —রব सं—গুজব अफवाह। —শ্রুত वि—ससार मे प्रसिद्ध या प्रचारित। —শ্রুতি सं=জন প্রবাদ। —সংকুল वि=জনাকীর্ণ। —সাধারণ सं—आम जनता।

জনক सं—पिता। वि- उत्पादक (আনন্দ—), राजर्षि जनक। स्त्री—জনিকা। জনকতা सं- उत्पादकता, पितृत्व।

জনতা सं—লোকের ভিড় आदमियों का जमाव, जनता।

জনন सं—जन्मदान, उत्पादन, जन्म। জননাশৌচ स—सन्तानके जन्मके कारण अशौच; জননীয় (-अ) वि—जनने योग्य।

জনয়িতা सं—जन्मदेनेवाला, पिता। स्त्री—জনয়িত্রী।

জনম सं—জন্ম जन्म, उत्पत्ति।

জনা सं=জন। —জনা सं—हरेक आदमी।

জনাকীর্ণ वि-জনসংকুল मनुष्यों से पूर्ण।

জনান্তিক सं—दूसरे के सामने किसी व्यक्तिके साथ छिप कर बातचीत।

জনার सं—जुन्हरी।

জনি, (-नी) सं—উৎপত্তি पैदाइश, जननी।

জনিকা वि—জনয়িত্রী जननी, पैदा करनेवाली।

জনিত (-अ) सं—জাত उत्पन्न।

জনিতা सं—জনক उत्पन्न करनेवाला।

জনীন वि—जन-सम्बन्धी (विश्व-सार्व—)।

জনে জনে क्रि वि—एक एक करके, हर एक के व्यक्तिगत रूपसे;

জন্ম (जन्म -अ) स—जन्म, पैदाइश, जीवन-काल। —জাত (-अ) वि—जन्म से प्राप्त। —গ্রহণ—जन्मलाभ, —দিন स—जन्म की तिथि। —পত্র,—পত্রিকা स—কোষ্ঠী जन्मपत्री। —শোধ क्रि वि—जनमभरके लिए।

জন্মা वि—जात, उत्पन्न (ক্ষণ—)।

জন্মান (-नो), জন্মানো (क्रि परि १६)—पैदा करना या होना।

জন্মান্তর सं—दूसरा जन्म, परलोक। —বাদ सं—मृत्युके बाद पुन जन्म होता है ऐसा

মত। জন্মান্তরীণ বি—पिछले जन्म वा जन्मों का।

জন্মান্ধ वि—जन्म से अंधा।

জন্মাবচ্ছিন্ন वि—जन्मसे मृत्यु पर्यन्त। क्रि वि—निरन्तर।

জন্মাবধি क्रि वि—याजन्म जन्मसे।

জন্মিন (-अ) क्रि—पैदा हुआ।

জন্মিত (-अ) वि—जात, उत्पन्न। (जन्मित्) औरस (বাপের—)।

জন্য (-अ) वि—जनने या उत्पन्न करने योग्य; हेतु, कारण से, सबब से (এজন্য, इस लिए; যেজন্য, তজ্জন্য, उस कारण), निमित्त, लिए।

জপা (क्रि परि १)—জপ করা जपना।

জপান (-नो), জপানো (क्रि परि १०)—अपने मत में लाने के लिए बारबार मन्त्रणा देना; याद कराना। জপিত (-अ) वि—जिसका जप किया गया है।

জবজব स—गीलेपनका भाव प्रकाश (জুবজুবে वि—কবজবে)। জবজবে वि—बहुत अधिक चुपड़ा हुआ। [(-পোবাদ)।

জবড়জঙ্গ (-জং জঙ্গো) वि—बेडौल और भारी

জবর वि—জাঁকালো भड़कीला; জোরালো जबर; बड़ा; भारी। —দস্ত वि—প্রবল जबरदस्त। —দস্তি सं—जुलुम, पीड़न जुल्म, जबरदस्ती।

জবা स—जपा, एक लाल फूल।

জবাই स—जबह, पशुका वध।

জবান सं—जवान; भाषा; जीभ। —বন্দি स—गवाही, बयान तहरीरी। জবানি वि—প্রমুখাৎ जबानी, मुख से (চারবেদ—নিমন্ত্রণ)।

জবাব स—जवाब, कैफियत; इस्तफा। —দিহি सं—কৈফিয়ৎ जवाबदेही; দায়িত্ব जिम्मेवरी। জবাবী वि—जवाबी।

জবুথবু वि—জড়বৎ जड़ की तरह।

জব্দ (-अ) वि—পরাস্ত, নাকাল छका हुआ, हारा हुआ, जब्त।

জমক वि—भड़कीला; समारोह; चमक, दीप्ति,

জমকান (नो), জমকানো (क्रि परि १६)—चमकना, चमकाना।

জমকালো वि—জাঁকালো चमकीला, आडम्बरी।

জমজ वि—जुड़वाँ, एक साथ उत्पन्न युगल सन्तान।

জমজম सं—भीड़ और आडम्बर का भाव प्रकाश, मक्के का पवित्र कुआँ।

জমা सं—পুঁজি पूंजी, मूलधन; आय; जमा; सचय, संग्रह, मालगुजारी। —নবিশ सं—जमीन और मालगुजारी का हिसाब रखने-वाला। —বন্দি सं—जमीन और माल गुजारी का हिसाब;

জমা (क्रि परि १)—संचित होना, एकत्र होना; जमना। वि—सचित; गाढ़ा;

জমাট वि—ठोस; गाढ़ा; जमा हुआ।

জমান (-नो), জমানো (क्रि परि १०)—संचय या संग्रह करना, ढेर लगाना, जमाना; सभा के लोगों को प्रसन्न करना। वि—संचित, जमा हुआ, गाढ़ा।

জমানৎ स—জামিন जमानत।

জমায়েৎ स—जमात।

জমি स—जीमन, भूमि; खेत; कपड़े की बुनावट। —জমা सं—अपनी और पट्टेपर ली हुई जमीन, संपत्ति। —জেরাত सं—जोतने की जमीन, खेत। —দার सं—जमींदार। —দারি सं—जमींदार का काम, जमींदारी, सपत्ति —দারী स जमींदाराना (—চাল)।

জম্বীর, জম্বির सं—জমির एक खट्टा नींबू।

জম্বুক, জম্বূক सं—শিয়াল सियार, गीदड़।

জয় स—বিপক্ষের পরাভব जय, जीत, विजय;

जीत कर लाभ। —ঢাক सं—বড় ঢাক बहुत बड़ा ढोल। —ধ্বনি सं—जयसूचक आनन्द-ध्वनि या आशीर्वाद। —পতাকা सं—विजय का झंडा। —শ্রী सं—विजय-लक्ष्मी। —স্তম্ভ सं—विजयका स्मारक स्तम्भ। জয়ী वि—विजयी।

জয়ত্রী सं—जावित्री, जायफल की छाल।

জয়ন্তী सं—পতাকা ঝাণ্ডা; दुर्गा, श्रीकृष्णकी जन्म तिथि; एक पौधा।

জয়পাল सं—एक दस्त की दवा।

জয়া सं—ভাং, সিদ্ধি भंग; दुर्गा की एक सखी।

জয়োস্তু अव्य—জয় হউক जय हो।

জরজর वि=জর্জর।

জরদ্গব वि—बहुत वृद्ध, जराग्रस्त।

জরদ, জরদা वि—জরদা, জর্দা सं—जरदा, पान के साथ खानेका एक मसला।

জরা (क्रि परि १)—जीर्ण होना (শোকে—, দুঃখে—)।

জরি सं—जरी।

জরিপ सं—जमीन की पैमाइस।

জরিমানা सं—जुर्माना, अर्थदंड।

জরু सं—जोरू, पत्नी, औरत।

জরুর वि—जरूर; अवश्य। জরুরৎ, सं—जरूरत, आवश्यक। জরুরী वि—দরকারী जरूरी।

জর্জর, জর্জরিত (-अ) वि—জরজর बहुत क्लिष्ट (রোগে—, শোকে—);

জল सं—जल, पानी; জলখাবার जलपान, जलखावा (—খাওয়া, —যোগ), बारीश (—এলো)। वि—जलकी तरह तरल (গলে—হওয়া); ठंढा। —কর सं—नदी आदि में नाव चलने या मछली पकड़ने का कर या महसूल। —কষ্ট (-अ)—जलाशय आदिमें जल न रहनेका कष्ट। —কেলি सं जलमें खेल-कूद। —খাবার सं—जलपान, जलखावा। —চর सं, वि—जलमें चलनेवाला। —চল वि—জলাচরনীয়। —চৌকি सं—स्नान आदिके लिए छोटी चौकी। —ছত্র सं—प्याऊ, पौसला। —ছবি सं—जो चित्र जल में भींगो कर दूसरे कागज पर उतारा जाता है। —জন্তু सं—जलमें रहने वाले प्राणी। —যান सं—हाइड्रोजन गैस। —জ্যান্ত,—জীয়ন্ত, —জ্যান্ত वि—जीवित, जिंदा, स्पष्ट, प्रत्यक्ष (—মিথ্যে কথা)। —দোষ सं—कोष-वृद्धिका रोग; पेट में जल भर जानेका रोग। —নালী, —প্রণালী सं—जल निकलने की नाली, पनाला। —পড়া सं—मन्त्रशक्ति युक्त जल। —পথ सं—नाव आदि से जानेका पथ, जलमार्ग। —পান सं—মুড়ি-মুড়কি প্রভৃতি चबेना आदिका जलपान। —পানি सं—छात्रवृत्ति, जलपानके पैसे। —প্রপাত सं—पहाड़से गिरती हुई जलधारा। —বায়ু सं—আবহাওয়া आबहवा। —বিম্ব सं—বুদ্বুদ, ভুড়ভুড়ি जलका बुलबुला। —ভাঙা क्रि—जलके भीतरसे चलना; स्राव होना। —ভ্রমি सं—जलका भँवर। —মগ্ন (-अ) वि—जलमें डूबा हुआ। —মজ্জন सं অবগাহন जलमें डुब कर स्नान। —যোগ सं—जलपान। —শৌচ सं—ছোঁচানো। —সত্র सं=জলছত্র। —সেক सं—জলসেচন सं—जल से सींचाई। —সরা क्रि—पोखरे आदिमें रोज जलका व्यवहार करना; जल निकलना। —সহা सं—विवाह आदिमें पड़ोसियों के घरों से या नदी तालाब आदिसे जलका संग्रह। —স্তম্ভ (-अ) सं—समुद्र या बड़ी नदी में चक्करदार आँधी से उठाया हुआ जलका खंभा। —হওয়া क्रि—बारिश होना। —হস্তী सं—दरियाई घोड़ा। —হাওয়া सं= জলবায়ু। জলে ফেলা क्रि—

কুপাত্র को देना, जलमें फेंकना। জলে যাওয়া क्रि -वृथा नष्ट होना।

জলদ सं— মেঘ मेघ बादल।

জলদি क्रि वि—जल्दी।

জলপাই सं—जैतून, एक खट्टा फल।

জলসা स—आनन्द-सम्मिलन, जलसा।

জলসাৎ वि—जलमें निक्षेप।

জলসিক্ত वि -भींगा, गीला, ओदा।

জলা वि—जलमय। सं—बिल भील, दलदल।

জলাচরণীয় (-अ) वि—जिस जातिका जल ब्राह्मण आदि पी सकते हैं।

জলাঞ্জলি सं—शवदाहके बाद प्रेतात्माके लिए दिया हुआ हथेली भर जल, तिलांजली; त्याग, वृथा व्यय।

জলাতঙ্ক सं—जलातक रोग, जल से डरने की बीमारी, पागलपन जो पागल कुत्ते के काटने से होता है

জলাবর্ত स—घूर्णि भँवर।

জলুস (-ब) सं—জেল্লা चिकनाहट, उज्ज्वलता।

জলো (जोलो) वि -জলজল जलयुक्त (—দুধ,—রাস্তা)।

জলোচ্ছ্বাস (जलोच्छ्वास) स — জোয়ার ज्वार।

জলৌকা (जलउका) सं=জোঁক।

জল্প (-अ), জল্পন, জল্পনা सं—কথাবার্তা बातचीत, बकवाद, जल्पना।

জহর सं—जहर, विष; मणि, जवाहरात। —ব্রত (-अ)—राजपुत स्त्रियों का अग्निकुंड में या जहर खा कर प्राणत्याग का व्रत।

জহরী, জহুরী स—जौहरी।

জা सं—বাতা पती के भाई की स्त्री। ছোট—स्त्री—देवरानी। বড়—स्त्री—जेठानी।

জাইগির सं=জায়গীর।

জাউ स—মণ্ড लप्सी; खुद्दी का गीला भात।

জাং सं—জঙ্ঘা, ऊरु जाँघ।

জাঁক सं—गर्व, অহংকার घमंड, शेखी; समारोह, आडम्बर (জমক)।

জাঁদড় सं—जाकड़।

জাঁকা (क्रि परि ३)—शानदार होना।

জাঁকান (—नो), জাঁকানো (क्रि परि १०) —शानदार बनाना; चमकाना।

জাগন্ত (-अ) वि—जागता हुआ।

জাগর सं—জাগরণ जागना, जगा रहनेकी अवस्था জাগরণ सं—जगा रहना, निद्रभंग; बेहोशी या अपनी भूली हुई अवस्था से जागना (জাতির—) জাগরিত (-अ) वि—जो जगा है, निद्रा-रहित। জাগরূক वि—जागता हुआ, सजग; सावधान, होशयार।

জাগা (क्रि परि ३)—जागना, सो कर उठना, जागते रहना (রাত—), विद्यमान रहना (মনে—, স্মরণে—)।

জাগান (—नो), জাগানো (क्रि परि १०)—जगाना; होशयार करना; याद दिलाना।

জাগির सं—जागीर। —দার सं—जागीरदार।

জাগ্রৎ, জাগ্রত (-अ) वि—जागनेवाला, जागता हुआ, देवीशक्ति-युक्त (জাগ্রত-দেবতা)। জাগ্রদবস্থা सं—जाग्रत अवस्था।

জাঙ্গল, वि—जगल सम्बन्धी, बनैला।

জাঙ্গাল, জাঙাল सं—বাঁধ बाँध; पुल।

জাঙ্গিয়া सं—जांघिया।

জাজিম सं—जाजिम, बिछाने की बड़ी चादर।

জাজ্বল্যমান वि—দেদীপ্যমান अति उज्ज्वल; प्रत्यक्ष, स्पष्ट,

জাট (ঠ) सं—जाट।

জাটতুত (-अ), (-ত) वि=জেঠতুত।

জাঠর वि—जठर-सम्बन्धी, पेटका।

জাড় सं—शीत, जाड़ा।

জাড্য (-अ) स—जड़ता सुस्ती, मूर्खता।

জাত (-অ) वि—उत्पन्न (नव—, वन—)। सं—शिशु, समूह (দ্রব্য—)।
জাত (जात्) स—जाति, वर्ण, श्रेणी, प्रकार। वि—जन्मका (-বোষ্টম); रक्षित (গোলা—, গুদাম—)। জাতক सं—जो जन्मा है; जातकर्म, जन्मपत्री, गौतम बुद्ध का पूर्व-जन्म-वृत्तान्त-युक्त ग्रन्थ। —ক্রোধ वि—क्रोधित, खफा। —পত্র सं—কোষ্ঠী जन्मपत्री।
জাঁতা सं—चक्की, भाथी, धौंकनी। [है, माता।
জাতাপত্যা सं—जिस स्त्री के सतान पैदा हुई
জাতাশৌচ सं=জননাশৌচ।
জাতি सं—जाति, वर्ण, वर्ग, विभाग; जन्म; उत्पत्ति, वंश। —গত (-অ) वि—जातिका। —চ্যুত (-অ) वि—जाति से अलग किया हुआ। —স্মর (-র)শ্বর सं—जिसके पूव जन्मकी घटनाओंका स्मरण है।
জাতি, (-তী) सं—চামেলী फूल चमेली,, मालती; जावित्री।
জাঁতি स—सरौता, सुपारी काटनेका एक औजार। —কল सं—मूस फँसानेका एक दाँनेदार औजार। [सदृश (হংস—)।
জাতীয় (-অ) वि—जाति सम्बन्धी, जातिका,
জাত্যংশ (-অ) सं—जाति का अंश। জাত্যংশে क्रि वि—जातिके विषयमें (—শ্রেষ্ঠ)।
জাত্যভিমান सं—अपनि जाति का गर्व या घमड। [शानदार।
জাঁদরেল सं—সেনাপতি सेनापति। वि—
জাদা स—पुत्र, वेटा (শাহ—, হারাম—)। स्त्री—জাদী।
জাদু सं—তুক जादु, टोना, इन्द्रजाल। —কর सं—जादूगर। —ঘর सं—अजायब घर; —মণি स—शिशुको प्यारका सम्बोधन।
জানত (-অ) क्रि वि—জ্ঞানতঃ, জ্ঞাতসারে जानते हुए।
জানপদ वि—बस्तीका, देहाती; नगर-निवासी।
জানা (क्रि परि २)—जानना; मालूम होना, समझना। वि—जाना हुआ, परिचित। —জানি सं—लोगोंमें प्रचार। জানান सं—समाचार प्रदान, अपना अस्तित्व प्रकाश। —শুনা स—परिचय, जान पहचान, अनुभव।
জানান (-নো), জানানো (क्रि परि १०)—জ্ঞাত করানো जताना, अवगत कराना, खबर देना, सावधान करना निवेदन करना (প্রণাম—)।
জানানা सं—जनाना; पर्दानशीन।
জানালা, জানলা सं—বাতায়ন जँगला।
—জানু सं—হাঁটু घुटना। [पहला महीना।
জানুয়ারি, (-রী-) स—जनवरी,' अंग्रेजी
জানোয়ার सं—जानवर, पशु।
জান্তব वि—जीव-सम्बन्धी, प्राणीका।
জাপক वि—जप करनेवाला।
জাপটান (-নো), জাপটানো (क्रि परि १५)—জড়াইয়া ধরা, हाथों से लपेटना, आलिंगन करना। জাপটা-জাপটি सं—জড়াজড়ি परस्पर आलिंगन।
জাফরান सं—कुङ्कुम केसर, जाफरान।
জাফরি सं—छिद्रयुक्त বেড়া छेददार टट्टर, झँझरी, लकड़ी या धातुकी जाली।
জাব, জাবনা (जाबना) स—सानी।
জাবড়া (जाबड़ा) वि—জোবড়া।
জাবর स—রোমন্থন, চর্বিত-চর্বণ पागुर, जुगाली (—কাটা)।
জাবেদা, জাবদা (जाब्दा) स—रोजाना हिसाब की बही।
জাম स—जामुन।
জামড়া स—কড়া घट्टा। [कटोरा।
জামবাটি (जामबाटि) सं—फूलका बेड़ा
জামরুল (जामरूल) सं—एक सफेद फल।

জামা सं—पिरान कुर्ता, कमीज, कोट।

জামাই सं—दामाद। —ষষ্ঠী सं—जैष्ठ शुक्ला षष्ठी (इसदिन दामाद को खिलाया और वस्त्रादि दिया जाता है)।

জামিন सं—जामिनदार; जामिन; जमानत। —দার स—जमानतदार।

জামির सं—एक खट्टा नीबू।

জার सं—कर्ज, তালিকা फिहरिस्त। वि—जाय, वाजिब, उचित।

জায়গা स—स्थान, जगह, जमीन, क्षेत्र, अवस्था; बदल।

জায়গির (जाय गिर) स =জাগির।

জায়ফল (जाय फल) सं—जावित्री।

জায়মান वि—जो पैदा हो रहा है।

জায়া स्त्री—पत्नी, स्त्री।

জার सं—उपपति, घड़ा jar.

জারক वि—हजम करानेवाला।

জারজ वि—दोगला।

জারণ सं—परिपाक, हाजमा, पाचन।

জারা (क्रि परि ३)—जीर्ण होना।

জারি सं—प्रयोग (ডিক্রি—করা)।

জারিজুরি स—प्रताप, शेखी।

জারুল सं—एक कड़ी लकडी।

জাল स—जाल, फंदा, धोखा, समूह, जगला; जालसाजी; बनावट (নোট—, টাকা—, দলিল—)। वि—जाली, बनावटी (—নোট, —দলিল); नकली, कपटी (—সন্ন্যাসী)। —ফেলা क्रि-जाल फेंकना। —গোটানো क्रि—जाल समेटना। —পাতা क्रि—जाल विछाना।

জালনা (जाल ना, सं=জানালা।

জালা स—मटका।

জালা, জালানো क्रि=জ্বালা, জ্বালানো।

জালি स—छोटा जाल; जाल की तरह छेददार वस्तु जाली, के भी, [illegible] छोटा कच्चा फल। [नकद्दी;

জালিম सं—[illegible], [illegible] मछुआ, धोखेबाज;

জালিয়াত वि—जालिया। জালিয়াতি सं—जालसाजी। [(চোদের—)।

জাহু वि, स—[illegible] धूर्त, धोखेबाज, मुखिया

জাস্তি वि—अधिक, ज्यादा।

জাহাঁপনা सं—बादशाह का सम्बोधन, जहाँपनाह। [चालबाज।

জাহাবাজ वि—दढ़ियाद धूर्त, धोखेबाज,

জাহাজ सं—जहाज। জাহাজী वि—जहाज-सम्बन्धी, जो जहाज से आता है (—মাল)।

জাহান্নম स—नरक जहन्नुम।

জাহির वि—प्रकाशित, प्रकट जाहिर।

জি, জী अव्य—जी, महाशय।

জিওল स—एक प्रकार का पेड।

জিগির सं—जोर, दबाव। [जीतनेके इच्छुक।

জিগীষা सं—जीतने की इच्छा। জিগীষু वि—

জিঘাংসা सं—हत्या करने की इच्छा। জিঘাংসু वि—हत्या करनेकी इच्छुक।

জিজিয়া स—मुसलमान बादशाहके द्वारा अमुसलमान रिपायों से लिया हुआ कर।

জিজীবিষা स—जीवित रहनेकी इच्छा। জিজীবিষু वि—जीवित रहने के इच्छुक।

জিজ্ঞাসা स—जिज्ञासा, प्रश्न, जानने की इच्छा। —বাদ स—पूछताछ और बातचीत। জিজ্ঞাসিত (-अ) वि—जो या जिसे पूछा गया है। জিজ্ঞাসু वि—जानने के इच्छुक, खोजी। জিজ্ঞাস্য (अ-) वि—जिज्ञासा के योग्य, जिज्ञासा के विषय।

জিঞ্জির स—निकल जंजीर।

জিৎ वि—विजयी (ইন্দ্র—)।

জিত (-अ) वि—जीता हुआ, वशीभूत (—ক্রোধ)। (जीत्) सं—जय (হার—)।

জিতা, জেতা (क्रि परि ५)—जीतना।

জিদ, জেদ सं—गं। जिद। জিদ্দী, জেদী वि—एकगुंये जिद्दी, हठी।

জিন सं—जीन, काठी, जिन।

জিনা (क्रि परि ५)—जीतना।

জিনিষ, (-স) सं—जिंस, वस्तु, चीज।

জিন্দিগি सं—जिंदगी, जीवन।

জিব, জিভ स—जिह्वा जवान, जीभ। —কাটা क्रि—लज्जाके कारण दाँतों से जीभ काटना या दबाना। —দেওয়া, —ঠেকানো क्रि—जीभ से छुलाना, जूठा करना। ছোলা—क्रि जीभ साफ करना। सं—जिससे नाम किया जाता है।

জিম্মা, জেম্মা सं—হেপাজৎ हिफाजत, जिम्मा।

জিয়ান (-नो), জিয়ানো (क्रि परि ११)—जियाना, जिलाना, वचाना, वचाये रखना (মাছ—)। वि—जियाया हुआ।

জিরা জিরে स =জীরক।

জিরান, জিরেন सं—विश्राम, अवकाश।

জিরান (-नो), জিরানো, জিরনো (क्रि परि ११)—विश्राम लेना, सुस्ताना।

জিলা सं =জেলা।

জিলাপি, জিলিপি सं—जलेबी।

জিল্দ (जिल्द्) सं—जिल्द।

জিহাদ स =জেহাদ।

জিহীর্ষা सं—हरण करने या चुराने की इच्छा।

জিহ্বা सं =জিব।

জী,—জি, জীউ अव्य—सम्मान-सूचक उपाधि (গুরুজী, স্বামীজী, মদনমোহনজীউ)।

জীবৎ वि—জীবন্ত जिंदा। জীবদ্দশা सं—जीवितकाल।

জীবন सं—प्राण, जिन्दगी, जीवन-तुल्य (জানকী—, বাবা—)। —বীমা सं—जीवन बीमा। —সঙ্গিনী स्त्री—पत्नी, स्त्री। জীবনান্ত सं—मृत्यु। [धारण की शक्ति।

জীবনী सं—जीवन-चरित। —শক্তি सं—प्राण

জীবনোপায় सं =জীবিকা।

জীবন্ত, জিয়ন্ত, জীয়ন্ত, জ্যান্ত (जेन्त-अ) वि—जीवित, जिंदा।

জীবন্মুক্ত वि, सं—आत्मज्ञान-प्राप्त करने से जीवित रहते ही सांसारिक सुख-दु:खसे मुक्त। জীবন্মুক্তি सं—वैसी अवस्था।

জীবন্মৃত (जीवन्मृत -अ) वि—জ্যান্তে মরা जीवित रहने पर भी मृतके समान।

জীবাণু सं—कीटाणु।

জীবাত্মা (जीबात्ता) सं—अन्त करण में ब्रह्मका प्रतिविम्ब जो शरीर में कर्त्ताभोक्ता ज्ञाता है।

জীবান্তক वि—प्राणघातक, मारडालनेवाला।

জীবিকা सं—जीविका, रोजी, वृत्ति (-নির্ব্বাহ)।

জীবিত (-अ) वि—সজীব, জীবন্ত जीता हुआ। सं—जीवन, जिन्दगी।

জীবিতেশ सं—पति, स्वामी, पति का सम्बोधन।

জীবী वि—जीनेवाला (দীর্ঘ—); जीविका करनेवाला (মৎস্য—)। [इन्द्र।

জীমূত—মেঘ बादल; पर्वत। —বাহন सं—

জীয়ন্ত वि =জীবন্ত।

জীয়ান क्रि =জিয়ান।

জীরক জীরা सं—জিরা जीरा।

জীর্ণ (-अ) वि—बहुत दिनों का, जर्जर; दुवला-पतला, पचाया हुआ। —জ্বর सं—पुराना बुखार। জীর্ণোদ্ধার सं—संस्कार, मरम्मत।

জুঁই सं—यूथिका जूही।

জুগুপ্সা सं—निंदा, घृणा। জুগুপ্সিত (-अ) वि—निन्दित, घृणित।

জুজু सं—हौआ।

জুজুৎসু सं—जापानी कुश्ती का एक पेंच या दाव। [झगड़ना, प्रयत्न करना।
জুঝা (क्रि परि ६)—युद्ध करना, लड़ना,
জুটা, জোটা (क्रि परि ६)—जुटना, मिलना।
জুটান (-नो), জুটানো, জুটনো, জোটানো (क्रि परि १३)—जुटाना, संग्रह करना।
জুড়ান (-नो), জুড়ানো, জুড়নো (क्रि परि १३) —ठंढा होना या करना (দুধ—, পাড়া—), शान्ति मिलना, तृप्त होना (চোখ—, শড়—) वि—ठंढा किया हुआ (—ভাত)।
জুড়ি सं—दो घोड़ों की एक गाडी, जोडी; समान दूसरा व्यक्ति या वस्तु (—মেলা ভার); 'यात्रा' गान में खडे गाने वालों की जोड़ा। —দার वि—सहयोगी, मददगार।
জুত, জুৎ वि—योग्य। सं—सुविधा, मौका।
জুতা, জুতো सं—पादुका जूता। —জুতি सं—आपसमें जुतियाना। —মারা क्रि—जूता मारना।
জুতান (-नो), জুতানো, জুতনো (क्रि परि १३)—जूता मारना, जुतियाना।
জুন सं—अंग्रेजी जून महीना।
জুবড়ান (नो), জুবড়ানো জুবড়নো, জোবড়ানো (क्रि परि १८)—अधिक भिगोना, लिपना-पोतना। [जुमा मसजिद।
জুমা सं—जुमा, शुक्रवार। —মসজিদ सं—
জুয়া, জুয়ো सं—द्यूत जुआ। —চোর, জোচ্চোর वि, सं—धोखेबाज, ठग। —চুরি सं—धोखा, ठगी। জুয়াড়ী, জুয়ারী सं—जुआड़ी।
জুয়ান (-नो), জুয়ানো (क्रि परि १३)—যোগানো जुटना, मिलना।
জুরি सं—जूरी, विचारक के मददगार Jury.
জুলফি (-फि) सं—कानों के पास लटकते हुए बालोंका गुच्छा; कानो के पास से गाल के कुछ दूर तक रखी हुई दाढ़ी।
জুলাই सं—अंग्रेजी जुलाई महीना।
জুলুম सं—जुल्म, अत्याचार।
জুট सं—जूटि गुच्छा, समूह (জটা—)।
জৃম্ভণ सं—হাই जँभाई। জৃম্ভক सं—जँभाई लेनेवाला।
জেঁদো वि—शेखी बघारनेवाला।
জেঠ—, জ্যাঠ—वि—জ্যেষ্ঠ बडा (—শ্বশুর); —তুত, —তুতো वि—पिता या ससुर के बड़े भाई की सन्तान (—ভাই,—দেওর,—শালী)।
জেঠা, জ্যাঠা (जैठा) सं—জ্যেষ্ঠতাত पिताके बड़े भाई, ताऊ। वि—অকালপক্ব, দাম্ভিক, फाजिल बचपन में बूढ़ों सी बात करनेवाला, बकवादी। জেঠাই, জেঠী सं—बड़ी चाची, ताई। জেঠামি, (—মো), জ্যাঠামি (—মো) (जैठामि) सं—দাম্ভিকতা, পাকামি बकवाद, बच्चों के मुख से बूढ़ों सी बात।
জেতব্য (-अ) वि—জেয় जीतने योग्य।
জেতা वि—विजयी, जीतनेवाला। क्रि—জিতা जय करना, जीतना।
জেদ सं=जिद। জেদাজিদি सं—आपस में जिद।
জেনানা सं=জানানা।
জেনারেল सं—जनरल, सेनापति General.
জেব सं—जेब, खरीता।
জেম্মা सं=জিম্মা।
জেয় (-अ) वि—जीतने योग्य।
জেয়াদা वि—বেশী ज्यादा।
জের सं—पिछला हिस्सा (কাজের—মেটানো)। —টানা क्रि—पिछले हिसाब का अंक दूसरे पन्ने पर ले जाना।
জেরবার वि—নাস্তানবুদ নেস্তনবুद।
জেরা सं—जिरह, गवाह को प्रश्न।
জেল सं—কারাগার, ফাটক जेलखाना; कारादंड, सजा। —খাটা क्रि—जेल काटना।
জেলা, জিলা सं—जिला।

জেলে सं—मछुआ। स्त्री—জেলেনী।

জেল্লা सं=জলুস। [माननेवाला।

জেহাদ सं—जिहाद। জৈন सं—जैनी, जनमत

জৈব (जइव-अ) वि—जीव-सम्बन्धी।

জো सं—मौका, सुविधा, उपाय (কাকের জ্বালায় বড়ি শুকোবার—নেই)। —পাওয়া क्रि—मौका मिलना।

জোঁক सं—जोंक। [तौलना।

জোখা (क्रि परि ६)—ওজনকরা जोखना,

জোচ্চোর सं=জুয়াচোর। জোচ্চুরি सं=জুয়াচুরি।

জোছনা सं—चाँदनी, चन्द्र-किरण।

জোট सं—गुट, दल ; गिरह, गाँठ।

জোটা, জোটানো क्रि=জুটা, জুটান।

জোড সं—মিলন मेल ; जोड़ ; जोड़ी, धोती और चादर (টোপির—)। —হাত वि,—যুক্তকর, কৃতাঞ্জলি हाथजोडे।

জোড়া सं—যুগল जोड़ा, समान दूसरा व्यक्ति या वस्तु ; मेल, पूर्ण (ঘর—, আকাশ—, —তাড়া सं—किसी प्रकार से जोड़ना या टाँका लगाना।

জোডা (क्रि परि ६)—जोड़ना ; साँटना।

জোডান (-नो), জোড়ানো (क्रि परि १४)—जोडवाना।

জোড়াসন सं—पलथी।

জোত सं—চাষের জমি जोतने का खेत, हल या गाड़ी में बैल आदि बाँधने की रस्सी। —দার सं—রায়ত रियाया।

জোতা (क्रि परि ६)—गाड़ी में जोतना।

জোনাকি सं—খদ্যোত जुगनु। [लिपा-पुता।

জোবড়া, জাবড়া वि—अधिक भींगा हुआ ;

জোব্বা सं—चोगा।

জোয়ান सं, वि—যোয়ান अजवायन, जवान, युवक, हट्टाकट्टा, मोटा-ताजा।

জোয়ার सं—ज्वार, समुद्र-जलका नदी में से ऊपर की ओर प्रवाह। —ভাটা सं—ज्वार भाटा, वृद्धि-ह्रास, उन्नति—अवनति।

জোয়াল सं—जूआ।

জোর सं—जोर, बल, शक्ति, तेजी ; जबर्दस्ती। वि—ऊँचा (—গলা) ; तेज। —জুলুম सं—जुल्म, अत्याचार। জোরাল (-अ), জোরালো वि—जोरदार।

জোলা सं—ताँती जुलाहा।

জোলাপ सं—जुलाब दस्तावर दवा।

জোষিৎ জোষা सं—नारी, स्त्री।

জোরু (जउज) सं—पति, शौहर। জোজা स्त्री—पत्नी, स्त्री।

জৌহর सं—जौहर। জৌহরী सं—जहुरी जौहरी। [(বিশেষজ্ঞ)।

—জ্ঞ प्रत्य ज्ञाता, जाननेवाला, विज्ञ

জ্ঞাত (-अ) वि—বিদিত अवगत, जाना हुआ।

জ্ঞাতব্য (-अ) वि—जानने योग्य। —সারে क्रि वि—जानते हुए। জ্ঞাতা सं—जानने-वाला।

জ্ঞাতি सं—সগোত্র एक वंश या गोत्र का मनुष्य। জ্ঞাতিত্ব (-अ) सं—ज्ञाति का सम्बन्ध।

জ্ঞান सं—ज्ञान, जानकारी, चेतनता, होश (রোগীর—হয় নাই), समझ (তুল্য—করা), अभिज्ञता, अनुभव। —কাণ্ড (-अ) सं—वेद का ज्ञान-विषयक अन्तिम अंश, उपनिषद्। —কৃত (-अ) वि—ज्ञान से या जान कर किया हुआ (—অপরাধ)। —গম্য (-अ) वि—বোধগম্য जो जाना जा सके। —চক্ষু सं—অন্তর্দৃষ্টি ज्ञाननेत्र। জ্ঞানতঃ क्रि वि=জ্ঞাতসারে। জ্ঞানদ वि—ज्ञानदेने वाला। জ্ঞানদা वि—ज्ञान देने वाली। —পাপী सं—जो जान कर पाप करता है।

—বান वि—ज्ञानी, जानकार, अनुभवी, (स्त्री—জ্ঞানবতী)। —ময় वि, सं—ज्ञान स्वरूप, ब्रह्म। —যোগ सं—गीता में कथित ज्ञान-रूप साधन-पद्धति। জ্ঞানাঞ্জন स—तत्त्वज्ञान रूप अंजन जिससे सत्यका प्रकाश होता है। জ্ঞানান্ধ (-अ) वि, स—मूर्ख, जाहिल।

জ্ঞাপন सं—जताने या बताने का कार्य; समाचार प्रदान। জ্ঞাপক वि—जतानेवाला, प्रकाशक, सूचक। জ্ঞাপনীয় (-अ) वि—जताने के योग्य। জ্ঞাপয়িতা वि=জ্ঞাপক। জ্ঞাপিত (-अ) वि—जिसे या जो जताया गया है।

জ্ঞেয় (-अ) वि—जानने योग्य। सं—ज्ञानका विषय।

জ্যা सं—ধনুকের ছিলা धनुष की डोरी, जो रेखा वृत्तांशके दोनों प्रान्तों को जोड़ती है। —নির্ঘোষ सं—টংকার धनुष की डोरी खींच कर छोड़ देने से जो शब्द होता है।

জ্যারোপণ सं—धनुष में डोरी चढ़ाना।

জ্যাঠা स =জেঠা।

জ্যান্ত वि=জীবন্ত।

জ্যামিতি स—रेखागणित। জ্যামিতিক वि—रेखागणित-सम्बन्धी।

জ্যায়সী, জ্যায়ান্ वि—श्रेष्ठ, उत्तम, उमर में बड़ा, बहुत वृद्ध।

জ্যেষ্ঠ (-अ) वि—অগ্রজ उमर में बड़ा। स—बड़े भाई, श्रेष्ठ व्यक्ति। —তাত सं=জেঠা। জ্যেষ্ঠাধিকার स—बपौती सम्पत्ति में बड़े पुत्र का उत्तराधिकार। জ্যেষ্ঠাশ্রম सं—गृहस्थ आश्रम।

জ্যৈষ্ঠ (जइष्ठ-अ) सं—जेठ का महीना

জ্যোতিষ্ক (-अ) स—सूर्य चन्द्र ग्रहनक्षत्र धूम-केतु आदि।

জ্যোৎস্না (ज्योतस्ना) स—কৌমুদী चाँदनी।

জ্বর स—ज्वर, बुखार। জ্বরঘ্ন (-अ) वि—बुखार नाश करनेवाला। জ্বরাতিসার सं—बुखार के साथ संग्रहणी। জ্বরাঙ্কুশ वि—ज्वर नाशक। জ্বরিত (-अ) वि—ज्वरग्रस्त।

জ্বলজ্বলে वि - चमकदार, स्पष्ट।

জ্বলন स - जलन; प्रकाश; अग्नि; लपट।

জ্বলন্ত (-अ) वि—जो जल रहा है, जलता हुआ। জ্বলনীয় (-अ) वि—जलने योग्य, सहज में जलने वाला।

জ্বলা (क्रि परि १)—जलना, दग्ध होना, प्रकाशित करना, जलन मालूम होना (চোখ—)। वि—जला हुआ (—তেল)।

জ্বলান (-नो), জ্বলানো, জ্বালানো (क्रि परि १०) —आग जलाना, जलाना; परेशान करना।

জ্বলিত (-अ) वि—जला हुआ, अग्निमय।

জ্বলুনি सं—जलन।

জ্বাল स—আগুনের আঁচ आग की आँच (দুধ—দেওয়া); लपट।

জ্বালা सं—जलन, दाह; लपट, असन्तोष का विषय (কি—!)।

জ্বালা, জ্বালা (-क्रि परि २)—जलाना, आग सुलगाना (উনান—)।

জ্বালাতন वि—परेशान, दिक, हैरान।

জ্বালান (-नो), জ্বালানো क्रि=জ্বলানো।

জ্বালানি सं—जलावन, ईंधन।

জ্বালানে वि=জ্বালানে।

জ্বালিত (-अ) वि—जो जलाया गया है, जला हुआ।

ঝ

ঝংকার, ঝঙ্কার सं—ঝনৎকার झंकार, गुंजन; डपट। ঝংকৃত, ঝঙ্কৃত (-अ) वि—झंकारयुक्त।

ঝকঝক, (-मक) स=চকমক। ঝকঝকে, (-मके) वि=চকমকে।

ঝকমারি सं—अपराध; बेवकूफी; हैरानी।

ঝক্কি सं—झंझट, दायित्व, जिम्मेवारी (—নেওয়া,—পোহানো)।

ঝগড়া सं—বচসা झगडा, कलह। —ঝাঁটি सं—लड़ाई-झगडे। ঝগড়াটে वि—झगडालु।

ঝঙ্কার सं =ঝংকার।

ঝঙ্কনা सं—झनझनाहट।

ঝঞ্ঝা सं—ঝটিকা, বাত্যা आँधी तूफान। ঝঞ্ঝাবর্ত (-अ) सं—चक्करदार आँधी, बवंडर।

ঝঞ্ঝাট सं—झंझट, बखेड़ा, विपत्ति।

ঝট वि—চট, ঝাঁ झट, तुरंत। —পট क्रि वि—झटपट, जल्दी जल्दी। सं—पर हिलानेका शब्द। [से आकर्षण।

ঝটকা, ঝটকানি सं—झटका, एकाएक जोर

ঝটিকা सं =ঝড়।

ঝটিতি क्रि वि—शीघ्र, तुरत।

ঝড় सं—आँधी, तूफान। ঝড়ো (झोड़ो) वि—आँधी-सा; आँधी का मारा या गिराया हुआ (—আম)।

ঝড়তি-পড়তি स—हिलाने-डुलाने से या गोदाम में रखा रहनेसे जो अंश नष्ट होता है (মালের—বাদে)। [लकडी।

ঝনকাঠ, ঝঞ্ঝাট सं—चोखटके ऊपरवाली

ঝনঝন सं—झनकार; टीस। ঝনঝনানি स—झनझनाहट, खडखड़ाहट।

ঝনৎকার सं—झन्नाहट।

ঝনাৎ सं—एकाऐक झन्नाहट का शब्द।

ঝপ वि—झट, तुरत। सं—डाङ्खेने का शब्द।

ঝপাং सं—पानीमें कूदने या भारी चीजके गिरने का शब्द।

ঝমঝম स—बारिशका झमाझम शब्द, घुंघरूके बजनेका शब्द। ঝমাঝম स—बारिश का झमाझम शब्द।

ঝম্প (-अ) स =ঝাঁপ।

ঝরঝর स—जल आदि गिरनेका शब्द।

ঝরঝরে वि—তকতকে साफ, दाना अलग अलग (—ভাত), स्पष्ट (—লেখা); हल्का; स्वस्थ (শরীর—হওয়া), बरबाद (পরকাল—হওয়া)।

ঝরনা सं—নির্ঝর सोता, झरना।

ঝরা (क्रि परि १)—टपकना, धार में गिरना।

ঝরান (-नो), ঝরানো (क्रि परि १०)—टपकाना, गिराना। ঝরিত (-अ) वि—टपका हुआ, गिरा हुआ।

ঝর্ঝর सं—जल आदि गिरनेका शब्द, फूलका बना एक बाजा, ঝর্ঝরে वि—साफ-सुथरा, सुराखदार, जीर्ण।

ঝলক स—लपट, तेज रोशनी, उद्गार (এক—রক্ত)।

ঝলকান (झल्कानो), ঝলকানো (क्रि परि १६)—झलकना, तेज रोशनी छोड़ना (বিদ্যুত—)। ঝলকানি स—तेज रोशनी, प्रकाश। ঝলকিত (-अ) वि—प्रकाशित, रोशन।

ঝলঝল स—झूलने या डोलने का भाव। ঝলঝলে वि—ढीला और लटकनेवाला।

ঝলমল स—झलमल, उज्ज्वलता-प्रकाश; झूलने या डोलनेका भाव। ঝলমলে वि—चमकदार; ढीला और लटकनेवाला।

ঝলসান (झलसानो), ঝলসানো (क्रि परि १६)—चौंधियाना, चकाचौंध करना; झुलसाना। वि—तिलमिलाया हुआ, झुलसा हुआ। ঝলসানি सं—चकाचौंध, तिलमिलाहट।

ঝাঁ सं—ঝাঁ, চট झठ, शीघ्रता का भाव प्रकाश। —করে—तुरत। ঝাঁ ঝাঁ स—जल्दी जल्दी, कड़ी धूप का भाव (রোদ—করছে)।

ঝাউ स—झाऊ का वृक्ष।

ঝাঁক सं—चिड़ियों मछलियों या फतिंगों का झुंड (ঝাঁকে ঝাঁকে)। [झाँकी सा।

ঝাঁকড়া (झाँकड़ा) वि—झबरा (—চুল);

ঝাঁকা (क्रि परि २)—নড়া हिलना। सं—झावा, टोकरा (—মুটে)।

ঝাঁকান (-नो), ঝাঁকানো (क्रि परि १०)—নাড়ানো हिलाना। ঝাঁকানি, ঝাঁকুনি सं—हिलाव।

ঝাঁজ सं—খাঁচ आँच, तेज, गर्मी, तेजी, उग्रता (কথার—, মেজাজের—, ঔষধের—)।

ঝাঁজাল (-अ), ঝাঁঝালো वि—ঝাঁজযুক্ত तेज, उग्र, झाँसीला।

ঝাঁজর, ঝাঁঝ सं—শব্দ, झज्झर, घुँघरू।

ঝাঁঝর, ঝাঁঝরা (झाँझ्रा) वि—ফোঁপরা झाँझरीदार, अनेक छेदों वाला।

ঝাঁঝরা, (-रि) सं—झझरा, पौधों में जल देनेके लिए अनेक छेदों वाली टोटीदार बरतन।

ঝাঁট सं—झाड़ू से झाड़ना, बुहार।

ঝাঁটা सं—ঝাড়ু, খেংরা, সম্মার্জনী झाड़ू, बुहारी।

ঝাঁটান (-नो), ঝাঁটানো (क्रि परि १०)—साफ करना, बुहारना, झाड़ू मारना।

ঝাড় सं—ঝোপ झाड़ी, झाड़, छतसे लटकता हुआ अनेक शाखाओंवाला शीशेका दीपाधार, मन्त्रों से झाड़-फूंक।

ঝাড়ন सं—झाड़न, झाड़नेका कपड़ा, झाड़ना, झाड़फूंक।

ঝাড়া (क्रि परि २)—झाड़ना, गर्द छुड़ाना; खाली करना, निकाल देना, फेंकना, झाड़फूंक करना। वि—साफ किया हुआ (—চাল); लगातार (-ঘণ্টা)। सं—हिलाव, सचालन (হাত—)।

ঝাড়ান (-नो), ঝাড়ানো (क्रि परि १०)—झाड़ू से साफ करना, झाड़फूक करना, निकलवाना। ঝাড়াই सं—ঝাড়া ঝাট झाड़नेका काम, सफाई। [मेहतर।

ঝাড়ু सं—ঝাঁটা। —দার सं—झाड़ूदार,

ঝাণ্ডা सं—पताका, निशान, झंडा।

ঝানু वि—দক্ষ चतुर, चालाक।

ঝাঁপ सं—লম্ফ कुदान, टट्टाल (জলে—দেওয়া); टट्टर जिससे दुकान बंद करते हैं (—ফেলা,—তোলা)।

ঝাপট, ঝাপটা (झापटा) सं—ধাক্কা धक्का; बौछार (বৃষ্টির—, ঝড়ের—, রোদের—)।

ঝাপটা सं—सिर का एक जेवर।

ঝাঁপতাল सं—संगीत का एकताल, झपताल।

ঝাপসা (झाप्सा) वि—অস্পষ্ট धुंधला (কুয়াশায়—)।

ঝাঁপা (क्रि परि ३)—ঢাকা झाँपना, ढाँकना।

ঝাঁপান सं—शीतला या मनसा देवी की पूजाका उत्सव। [ঝাঁপ দেওয়া कूदना।

ঝাঁপান (-नो), ঝাঁপানো (क्रि परि १०)—

ঝাঁপি सं—झाँपी, मूंज आदि की पिटारी।

ঝামটা (झाम्टा) सं—ধমক डपट, डाँट (মুখ—)।

ঝামা सं—झाँवाँ, बहुत जली हुई ईंट।

ঝামেলা सं—झमेला, झंझट।

ঝারা सं—धारा, शिवलिंग तुलसी वृक्ष आदिके ऊपर जल टपकाने के लिए नीचे छेदवाला जलपात्र। [जलपात्र।

ঝারি सं—ভৃঙ্গার, গাড়ু बधना सा पीतल का

ঝাল वि—कटु तीता, चरपरा, कड़ुवा। सं—मिर्च का स्वाद; मिर्च आदि मसाला, झालदार तरकारी, क्रोध; जलन, कुढ़न (—ঝাড়া,—মিটানো); धातुका पात्र जोड़ने का टाँका।

ঝালর सं—झालर (মশারির—, মুক্তার—)।

ঝালা (क्रि परि २)—धातुके बरतनमें टाँका

·लगाना ; कीचड़ निकाल कर साफ करना (পুকুর—)।

ঝালান (-নো), ঝালানো (क्रि परि १०)— পান দিয়া জোড়ানো धातुका बरतन टाँका लगा कर जोड़ना ; পঙ্কোদ্ধার করানো कीचड़ निकाल कर साफ कराना। ঝালাই করা क्रि—झालना।

ঝালাপালা वि—शोरगुल से परेशान (কান—)।

ঝি सं—नौकरानी, सेविका ; कन्या। ঝিয়ারী, ঝিউড়ী सं—कन्या, बेटी।

ঝিঁক सं—चुल्हे की चोटी या नोक।

ঝিকমিক सं=চিকমিক।

ঝিঙ্গা, ঝিঙে सं—तुरई, तोरी, नेनुवे की तरह एक तरकारी परन्तु इसका छिलका कुछ सफेद कड़ा तथा उस पर कुछ ऊंची रेखाएं है।

ঝিঁঝি सं=ঝিল্লী।

ঝিনঝিন सं—किसी अंग का सुन्न हो जानेका भाव, कंपन (হাত পা—করা)। ঝিনঝিনি सं—झुनझुनी, सनसनाहट।

ঝিনুক सं—শুক্তি सीप, सीप के समान धातु की छोटी कटोरी जिस से बच्चों को दुध पिलाया जाता है। [(গা—করা)।

ঝিম सं—ऊँघ, थकान। ঝিমঝিম वि—सुन्न

ঝিমান (-नो), ঝিমানো ঝিমনো (क्रि परि ११) —ऊँघना।

ঝিয়ারী सं—ঝি कन्या, पुत्री, बेटी।

ঝিরঝির सं—धीरे धीरे बहने का भाव (ঝিরঝিরে হাওয়া)।

ঝিল सं—বিল झील। [सं=খড়খড়ি।

ঝিলমিল सं=ঝিকমিক। ঝিলমিল (—খিলি)

ঝিলিক सं—झलक, हल्का प्रकाश।

ঝিলিমিলি वि—चमकदार और लहरिया।

ঝিল্লী, ঝিল্লি सं—ঝিঁঝিঁ পোকা झींगुर, पतला चमड़ा।

ঝুঁকা, ঝোঁকা (क्रि परि ६)—নত হওয়া नम्र होना, झुकना ; तरफदार होना, आकृष्ट होना। [झुकाना।

ঝুঁকান (-नो), ঝুকানো (क्रि परि १०)—

ঝুঁকি सं—ভার, দায়িত্ব दायित्व, जिम्मेवरी।

ঝুটা, ঝুটো वि—এঁটো, উচ্ছিষ্ট जूठा ; मिथ्या, झूठा, नकली, बनावटी।

ঝুটাপটি, (ঝুটো—) सं=ঝাপটা-ঝাপটি।

ঝুঁটি, ঝুটি सं—सिरपर बँधे हुए बालों का चूड़ा ; कलगी, शिखा।

ঝুড়ি सं—टोकरी, दौरी। ঝুড়ি ঝুড়ি वि—রাশি রাশি बहुत अधिक।

ঝুনা, ঝুনো वि—পাকা ও শক্ত कड़ा और सूखा (—নারিকেল) ; अनुभवी, चतुर।

ঝুপ सं=ঝপ।

ঝুমকা, ঝুমকো (झूमको) सं—झुमका, कान का एक गहना ; झुमके के आकार का एक फूल।

ঝুম-ঝুম, ঝুমুর-ঝুমুর सं=ঝম-ঝম।

ঝুমঝুমি सं—बच्चों का एक खिलौना जिसको हिलाने से शब्द होता है।

ঝুরঝুর सं=ঝরঝর।

ঝুরি सं—बरगद आदि पेड़ों की शाखा से लटकने वाली जड़। —ভাজা सं—तेल या घी में भूने हुए बेसन के सूतके से लच्छे।

ঝুল सं—कुर्ते आदि की लम्बाई ; मकड़ीके जाले के साथ मिली हुई धुंए की स्याही।

ঝুলন सं—हिलना, झूलना ; श्रीकृष्ण का झुला झूलनेका उत्सव (—যাত্রা)।

ঝুলা, ঝোলা (क्रि परि ६)—लटकना, झूलना। वि—लटकता हुआ।

ঝুলান (-नो), ঝুলানো, ঝুলনো, ঝোলানো (क्रि परि १२)—लटकाना। वि—लटका हुआ।

ঝাঁক सं—चिड़ियों मछलियों या फतिंगों का झुंड (ঝাঁকে ঝাঁকে)। [झाटी मा।

ঝাঁকড়া (झाँकड़ा) वि—झबरा (—চুল),

ঝাঁকা (क्रि परि २)—নড়া हिलना। सं—झावा, टोकरा (—মুটে)।

ঝাঁকান (-नो), ঝাঁকানো (क्रि परि १०)—নাড়ানো हिलाना। ঝাঁকানি, ঝাঁকুনি सं—हिलाव।

ঝাঁজ स—यौंच आँच, तेज, गर्मी, तेजी, उग्रता (কথার—, নস্যার—, ঔষধের—)।

ঝাঁজাল (-অ), ঝাঁজালো वि—ঝাঁজ युक्त तेज, उग्र, झाँसीला।

ঝাঁজর, ঝাঁজ सं—ঝর্ঝর; झन्झर, घुँघरू।

ঝাঁঝর, ঝাঝরা (झाँज्रा) वि—ফোঁপরা झाँझरीदार, अनेक छेदों वाला।

ঝাঝরা, (-রি) स—झझरा, पौधों में जल देनेके लिए अनेक छेदों वाली टोटीदार बरतन।

ঝাঁট स—झाड़ू से झाड़ना, बुहार।

ঝাঁটা स—ঝাড়ু, খেংরা, সম্মার্জনী झाड़ू, बुहारी।

ঝাঁটান (-नो), ঝাটানো (क्रि परि १०)—साफ करना, बुहारना, झाड़ू मारना।

ঝাড় स—ঝোপ झाड़ी, झाड़, छतसे लटकता हुआ अनेक शाखाओंवाला शीशेका दीपाधार; मन्त्रों से झाड़-फूंक।

ঝাড়ন स—झाड़न, झाड़नेका कपड़ा, झाड़ना, झाड़फूंक।

ঝাড়া (क्रि परि २)—झाड़ना, गर्द छुड़ाना; खाली करना, निकाल देना, फेकना, झाड़फूंक करना। वि—साफ किया हुआ (—চাল), लगातार (-দুঘণ্টা)। स—हिलाव, सचालन (গা—)।

ঝাড়ান (-नो), ঝাড়ানো (क्रि परि १०)—झाड़ू से साफ करना, झाड़फूंक करना, निकलवाना। ঝাড়াই सं—ঝাড়ার কাজ झाड़नेका काम, सफाई। [मेहतर।

ঝাড়ু सं—ঝাঁটা। —দার सं—झाड़ूदार,

ঝাণ্ডা सं—पताका, निशान, झंडा।

ঝানু वि—ঝুনা चतुर, चालाक।

ঝাঁপ स—ঝম্প कुदान, उछाल (ঝাঁপ—দেওয়া); टट्टर जिससे दूकान बंद करते हैं (—ফেলা,—তোলা)।

ঝাপট, ঝাপটা (झापटा) सं—ধাক্কা धक्का, बौछार (বৃষ্টির—, হাওয়ার—, স্রোতের—)।

ঝাপটা सं—सिर का एक जेवर।

ঝাঁপতাল स—संगीत का एकताल, झपताल।

ঝাপসা (झाप्सा) वि—অস্পষ্ট धुंधला (কুয়াশার—)।

ঝাঁপা (क्रि परि २)—ঢাকা झाँपना, ढाँकना।

ঝাঁপান सं—शीतला या मनसा देवी की पूजाका उत्सव। [ঝাঁপ দেওয়া कूदना।

ঝাঁপান (-नो), ঝাঁপানো (क्रि परि १०)—

ঝাঁপি स—झाँपी, मूंज आदि की पिटारी।

ঝামটা (झाम्टा) स—ধমক डपट, डाँट (মুখ—)।

ঝামা सं—झाँवाँ, बहुत जली हुई ईंट।

ঝামেলা सं—झमेला, झंझट।

ঝারা सं—धारा, शिवलिंग तुलसी वृक्ष आदिके ऊपर जल टपकाने के लिए नीचे छेदवाला जलपात्र। [जलपात्र।

ঝারি स—ভৃঙ্গার, গাড়ু बधना सा पीतल का

ঝাল वि—कटु तीता, चरपरा, कडुवा। स—मिर्च का स्वाद; मिर्च आदि मसाला, झालदार तरकारी, क्रोध, जलन, कुढ़न (—ঝাড়া,—মিটানো); धातुका पात्र जोड़ने का टाँका।

ঝালর स—झालर (মশারির—, মুক্তার—)।

ঝালা (क्रि परि २)—धातुके बरतनमें टाँका

लगाना; कीचड़ निकाल कर साफ करना (পুকুর—)।

ঝালান (-नो), ঝালানো (क्रि परि १०)—पান দিয়া জোড়ানো धातुका बरतन टाँका लगा कर जोड़ना; পঙ্কোদ্ধার করানো कीचड निकाल कर साफ कराना। ঝালাই করা क्रि—झालना।

ঝালাপালা वि—शोरगुल से परेशान (কান—)।

ঝি सं—नौकरानी, सेविका; कन्या। ঝিয়ারী, ঝিউড়ী सं—कन्या, बेटी।

ঝিঁক सं—चुल्हे की चोटी या नोक।

ঝিকমিক सं = চিকমিক।

ঝিঙা, ঝিঙে सं—तुरई, तोरी, नेनुवे की तरह एक तरकारी परन्तु इसका छिलका कुछ सफेद कड़ा तथा उस पर कुछ ऊंची रेखाएँ हैं।

ঝিঁঝিঁ सं = ঝিল্লী।

ঝিনঝিন सं—किसी अंग का सुन्न हो जानेका भाव, कंपन (হাত পা—করা)। ঝিনঝিনি सं—झुनझूनी, सनसनाहट।

ঝিনুক सं—শুক্তি सीप; सीप के समान धातु की छोटी कटोरी जिस से बच्चों को दुध पिलाया जाता है। [(গা—করা)।

ঝিম सं—ऊँघ, थकान। ঝিমঝিম वि—सुन्न

ঝিমান (-नो), ঝিমানো ঝিমনো (क्रि परि ११)—ऊँघना।

ঝিয়ারী सं—ঝি कन्या, पुत्री, बेटी।

ঝিরঝির सं—धीरे धीरे बहने का भाव (ঝিরঝিরে হাওয়া)।

ঝিল सं—বিল झील। [सं = থড়থড়ি।

ঝিলমিল सं = ঝিকমিক। ঝিলমিল (—মিলি)

ঝিলিক सं—झलक, हल्का प्रकाश।

ঝিলিমিলি वि—चमकदार और लहरिया।

ঝিল্লী, ঝিল্লি सं—ঝিঁ ঝিঁ পোকা झींगुर, पतला चमड़ा।

ঝুঁকা, ঝোঁকা (क्रि परि ६)—নত হওয়া नम्र होना, झुकना; तरफदार होना, आकृष्ट होना। [झुकाना।

ঝুঁকান (-नो), ঝুকানো (क्रि परि १०)—

ঝুঁকি सं—ভার, দায়িত্ব दायित्व, जिम्मेवरी।

ঝুটা, ঝুঁটো वि—এঁটো, উচ্ছিষ্ট जूठा; मिथ्या, झूठा, नकली, बनावटी।

ঝুটাপটি, (ঝুটো—) सं = ঝাপটা-ঝাপটি।

ঝুঁটি, ঝুটি सं—सिरपर बँधे हुए बालों का चूडा; कलगी, शिखा।

ঝুড়ি सं—टोकरी, दौरी। ঝুড়ি ঝুড়ি वि—রাশি রাশি बहुत अधिक।

ঝুনা, ঝুনো वि—পাকা ও শক্ত कड़ा और सूखा (—নারিকেল); अनुभवी, चतुर।

ঝুপ सं = ঝপ।

ঝুমকা, ঝুমকো (झूमको) सं—झुमका, कान का एक गहना, झुमके के आकार का एक फूल।

ঝুম-ঝুম, ঝুমুর-ঝুমুর सं = ঝম-ঝম।

ঝুমঝুমি सं—बच्चों का एक खिलौना जिसको हिलाने से शब्द होता है।

ঝুরঝুর सं = ঝরঝর।

ঝুরি सं—बरगद आदि पेड़ों की शाखा से लटकने वाली जड़। —ভাজা सं—तेल या घी में भूने हुए बेसन के सूतके से लच्छे।

ঝুল सं—कुर्ते आदि की लम्बाई; मकड़ीके जाले के साथ मिली हुई धुंए की स्याही।

ঝুলন सं—हिलना, झूलना, श्रीकृष्ण का झुला झूलनेका उत्सव (—যাত্রা)।

ঝুলা, ঝোলা (क्रि परि ६)—लटकना, झूलना। वि—लटकता हुआ।

ঝুলান (-नो), ঝুলানো, ঝুলনো, ঝোলানো (क्रि परि १२)—लटकाना। वि—लटका हुआ।

ঝুলি सं—थलि झोला।

ঝুলোঝুলি, (ঝুলা—) सं—बारबार जिद।

ঝোঁক सं—आग्रह, झुकाव, जिद; शौक, खिंचाव; पक्षपात; असर (নেশার—), झुके रहनेका भाव। [क्रि=ঝুঁকান।

ঝোঁকা क्रि=झुका। ঝোকান (-नो), ঝোঁকানো

ঝোটন सं=ঝুঁটি।

ঝোঁটা सं—झोंटा (तुच्छार्थ में)।

ঝোড়া सं—टोकरा। [छाँट डालना।

ঝোড়া (क्रि परि ६)—फालतू डालियों को

ঝোপ सं—झाड़ी।

ঝোল सं—तरकारी आदिका रसा (মাছের—)।

ঝোলা वि—लटकता या लटका हुआ; तरल (—গুড়)। सं—झोला, थैला।

ঝোলান क्रि=ঝুলান।

ঝোলানি सं—দোলন हल्कोरा, झकोरा, आन्दोलन, झुलने की क्रिया, पे ग oscillation

---

ট

টইটুম্বুর, (—টম্বুর) वि—কানায় কানায় পূর্ণ, ছাপাছাপি লবালব। [घण्टे का शब्द।

টং सं—बहुत खफा होने का भाव (রেগে—);

টংকার, টঙ্কার सं—धनुप की डोरी खींचकर छोड़ देने से उत्पन्न होनेवाला शब्द, टंकार।

টক वि—अम्ल खट्टा। स—अम्ल खटाई।

টকা (क्रि परि १)—खट्टा हो जाना।

টক্ स—टक् शब्द (लघु अर्थ में टिक्, टुक्। बारबार টক্টক্, টকাটক্, টিক্টিক্, টুক্টুক্)।

টক্টক্ वि—चमकदार (লাল—)। सं—लाल रंग (प्यार में টুকটুক)। টকটকে, টুকটুকে वि—बहुत लाल।

টকো (टोको) वि—खट्टा।

টক্কর सं—टक्कर; ঠোকর ठोकर, धक्का; होड़, मुकाबिला (-খাওয়া,—খাওয়া,—লাগা)।

টগবগ सं—जल के उबलने का शब्द; घोड़े की टाप।

টগর सं—एक सफेद फूल।

টঙ, টং, টঙ্গ सं—মাচা मचान, मंच।

টঙ্ক, টঙ্কা सं—টাকা रुपया; मुद्रा, सिक्का।

টঙ্কশাল स=টাঁকশাল।

টঙ্কার सं=টংকার।

টঙ্গ (टग्) सं=টঙ।

টঙ্কার सं=টংকার। [टान।

টন स—लगभग २७ मन की अंग्रेजी तौल,

টনক सं—होश, ध्यान, स्मरण (-নড়া, ध्यान आकृष्ट होना)।

টনটন स—टीसने का भाव (ফোড়া—করে)।

টনটনানি सं—टीस। টনটনে वि—तेज, तीव्र।

টনিক सं—टानिक, बल कारक औषध Tonic.

টপকান (टप्कानो), টপকানো (क्रि परि १६)—ডিঙানো लांघना।

টপ্ सं—गिरने का शब्द (लघु अर्थ में—টিপ, টুপ। बारबार—টপটপ, টিপটিপ, টুপটুপ) (—করে বৃষ্টি পড়ছে। টপ, টপাটপ या টুপটুপ করে খাচ্ছে)।

টপ্পা सं—टप्पा गाना, प्रेम-गीति।

টব स—जल रखने का गमला Tub

টবটব सं—जलके हिलाने का शब्द।

টমটম स—टमटम गाड़ी (—হাঁকান)।

টলটল स—जल के हिलने का भाव।

টলন, টল सं—নড়ন हिलाव; पतन; सरक।

টলমল सं—डगमगाहट।

টলা (क्रि परि १)—নড়া हिलना, हटना, टलना।

টলান (-नो), টলানো (क्रि परि १०)—নড়ানো हिलाना; हटाना; रद्द करना।

টসকান (-নো), টসকানো (क्रि परि १६)—भाङा टूटना, नष्ट होना।

টসটস सं—टपकने का शब्द, भीतर रस रहने का भाव प्रकाश (পেকে—করছে)। টসটসে वि—पका, रसभरा।

টহল सं—পায়চারী धीरे धीरे गमन, चहल कदमी। —দার सं—चौकीदार।

টহলান (-নো), টহলানো (क्रि परि १०)—टहलना; टहलाना।

-টা प्रत्य—सख्या जतानेका प्रत्यय (দশটা আম, বারোটা বেজেছে)। निर्देशक प्रत्यय (ঐ লোকটা, ঐ কাপড়টা, সে কাজটা)। परिमाण-वाचक प्रत्यय (এতটা, কতটা, খানিকটা (तुच्छार्थ में— —টা, —টে। प्यार में और लघु अर्थमें—টি)। [—রাইটার)।

টাইপ सं—छापे का अक्षर, हफ (—ফাউণ্ডারি,

টাউনহল सं—टौनहाल Townhall.

টাক सं—गंज (-পড়া)। [ক্রোশ—)।

—টাক वि—लगभग, करीब-करीब (পোয়া—

টাকরা (টাক্‌রা) सं—তালু तालु, मुँहके भीतर की उपरी छत।

টাঁকশাল सं—টঙ্কশাল टकसाल।

টাকা सं—টঙ্কা रुपया; धन (—ওয়ালা লোক, —করা,—জমানো)। —ভাঙানো क्रि—रुपया तुडाना। —ওড়ান (-নো) क्रि—फिजूल खर्च करना, रुपया उड़ाना। —কড়ি सं—रुपये-पैसे, धन, दौलत। —ওয়ালা सं, वि—रुपयावाला, धनवान।

টাঁকা (क्रि परि २)—प्रतीक्षा में रहना; टाँकना।

টাকু, টেকো सं—टेकुआ, तकला।

টাঙ্গা सं—ताँगा, एक घोड़े की एक खुली गाड़ी।

টাঙান (-নো), টাঙ্গানো, টাঙানো (क्रि परि १०)—ঝুলানো, লটকানো लटकाना (মশারি—, ছবি-)। वि—लटकाया हुआ (-সঠন)।

টাঙ্গি, টাঙি सं—পরশু टाँगी, कुल्हाड़ी।

টাট सं—ताँबे की थाली।

টাটকা वि—टटका, ताजा, नया।

টাটান (-নো), টাটানো (क्रि परि १०)—টনটন করা, আওয়াজ टीसना (ফোড়া—, চোখ—, डाह होना)। টাটানি सं—टीस; डाह।

টাটি सं—टट्टी, झाँप (ধোঁকার—)।

টাটু-টাট্টু सं—टट्टू, एक छोटा घोड़ा।

টান सं—আকর্ষণ खिंचाव, खींच; माँग, पीने की वस्तु का जोर से आकर्षण (হুঁকার—); साँस का कष्ट, दमा। (হাত—वि—कृपण, कंजूस; धनाभावग्रस्त)।

টানা सं—ताना (টানা প'ড়েন—बार बार आना जाना), किसी वस्तु को खींचने के लिए रस्सी।

টানা (क्रि परि २)—আকর্ষণ করা खींचना; फैलाना; खर्च कम करना (টেনে চলা); तरफदार होना, पीना (মদ—, গাঁজা—)। वि—चालित (গরুতে—); लगातार (—তিন ঘণ্টা); सीधा (—পথ)। —টানি सं—खींचातानी; धनका अभाव, तंगी। —দুধ सं—মাখন-তোলা দুধ मक्खन निकाला हुआ दूध। —পাখা—खिचनेवाला पंखा। —হেঁচড়া सं—घसीट।

টাপুর টুপুর सं—ফোঁটা ফোঁটা बूँद बूद (বৃষ্টি পড়ে—)।

টায়টায়, (-টোয়) क्रि वि—किसी प्रकार, जरा भी होने से न चलेगा ऐसे (পাচ টাকায়—চলবে)।

টাল सं—বাঁকাভাব टेढ़ापन, एक ओर हिलने का भाव; धक्का (—সামলানো); स्तूप, ढेर (—লাগানো)। —মাটাল सं—टालमटोल, अस्थिरता।

টানি सं—खपड़े की चौड़ी पटिया।

—টি प्रत्य—টা देखो।

টিক सं—ডাক, लक्ष्य निशाना। টিক, টিকটিক सं—टिक टिक ऐसा शब्द।

টিকটিকি सं—छिपकली, गिरगिट ; (व्यंग में) जासूस।

টিকলি सं—टिकली ; छोटी टिकिया।

টিকা सं—तिलक, टीका। টিকা, টিকে सं—चेचक आदि रोग प्रतिषेधक टीका। —ওঠা क्रि—टीका पक जाना। টিকা, টিকে सं—तम्बाकू सुलगाने की टिकिया।

টিকা, টেকা (क्रि परि ५)—टिकना, कुछ दिनों तक काम देना ; ठहरना, रहना ; बचना।

টিকান (-नो), টিকানো, টেকানো (क्रि परि ११)—टिकाना, कुछ दिनों तक कायम रखना ; बचना।

টিকারা सं—नक्कारा, एक बाजा।

টিকাল, (-अ), টিকালো, টিকলো वि—नुकीला (—নাক)।

টিকি सं—চৈতন चुटैया, शिखा।

টিকিট सं—टिकट (রেলের—, থিয়েটারের—, লটারির—)। ডাক—सं- डाक का टिकट (—আঁটা, —লাগানো,—মারা)।

টিটকারি (टिट्कारी) सं—ताना, व्यंग (—দেওয়া)।

টিট্টিভ, টিটিভ सं—टिटिहरी, एक छोटी चिड़िया।

টিন सं—टीन ; টিনের বাক্স, কেনেস্তারা कनस्तर, टीन का पात्र ; घर छाने का कलई किया हुआ लहरिया टीन।

টিপ सं—ফোঁটা तिलक, टीका, अंगूठे की निशानी ; चुटकी (এক—নস্য)। —সহি,—সই सं—अंगूठ की निशानी। [शब्द।

টিপ টিপ सं—दर्द, टीस, हल्की बारिश का

টিপা, টেপা (क्रि परि ५)—उंगली या हाथसे दबाना ; इशारा करना (চোখ—, তাকে টিপে দিয়েছি)। वि—दबा हुआ। টিপাটিপি, টেপাটেপি सं—आपस में दाव या इशारा बाजी।

টিপান (-नो), টিপানো, টিপনো টেপানো (क्रि परि ११) —दबवाना (পা—)।

টিপিটিপি क्रि वि—आहटन हो ऐसे धीरे धीरे कदम रख कर ; होंठ दबा कर (—হাসা) ; हल्के शब्द के साथ (—বৃষ্টি পড়িতেছে)।

টিপুনি, টেপন सं—টিপার কাজ उंगली या हाथका दबाव। টিপুনি सं—গুপ্ত সঙ্কেত इशारा।

টিপ্পনী सं—টীকা टिप्पणी ; बातके प्रसंग में संक्षेप से मन्तव्य-प्रकाश (—কাটা)।

টিমটিম सं—মিটমিট टिमटिमाहट। টিমটিমে वि—टिमटिमाने वाला। [सुग्गा, तोता।

টিয়া, টিয়ে, টেয়া सं—তোতা, শুক পক্ষী सुआ,

টিলা सं—टीला, छोटा पहाड़।

টীম सं—दल, गेंद खेलने वालों का एक पक्ष।

-টু-টুকু प्रत्य-টা देखो।

টুকটাক वि—অল্পস্বল্প थोड़ाबहुत, जरा जरा।

টুকিটাকি सं—छोटी मोटी वस्तु या विषय।

টুক টুক वि, सं—টক টক_ देखो।

টুকরা, টুকরো सं—टुकड़ा, खंड।

টুকরি सं—दौरी, टोकरी।

টুকা, টোকা (क्रि परि ६)—लिख लेना, टाँक लेना ; दोष का उल्लेख करना ; यात्रा के समय पुछताछ करना, टोकना।

টুকু, টুকুন वि—अल्प परिमाण सूचक (কত—, দুধ—)। [জল—)।

টুঙ্গি, টুঙি सं—मचान के ऊपर छोटा घर

টুটা (क्रि परि ६)—टुटना। वि—टूटा हुआ।

টুঁটি सं—गला, टोंटी, नरेटी।

টুনটুনি सं—एक छोटी चिड़िया।
টুপ सं—টপ देखो।
টুপি सं—টোপী, टोप।
টুল सं—बैठने की छोटी और ऊँची चौकी stool
টুলি सं—পল্লী, পাড়া টোলী, मुहल्ला।
টুলো वि—টোল সম্বন্ধীয় संस्कृत पाटशाला सम्बन्धी (-পণ্ডিত)।
টুস্ টুস্ सं, টুস টুসে वि—টসটস देखो।
—টে प्रत्य—টা देखो (চারটে, এই টে)।
টেংরা, ট্যাংরা सं—एक छोटी मछली।
টেঁক, ট্যাঁক सं—टेंट (টেঁকে গোঁজা)। —ঘড়ি—टेंट में रखने की घड़ी।
টেকসই (टेकशइ) वि—टिकाऊ, मजबूत।
টেকা, টেকানো क्रि—টিকা, টিকান देखो।
টেকো वि—गजा। सं—ढेकुआ, तकला।
টেক্কা सं—টক্কর, প্রতিযোগিতা टक्कर, होड़; ताश का इक्का।
টেক্স सं=ট্যাক্স।
টেটা, টাঁটা सं—मछली मारने का भाला सा एक अस्त्र जिसके मुँह में बहुत से सिकचे रहते हैं।
টেড়া (टेढ़ा), ট্যাড়া वि—বাঁকা, টেরচা टढ़ा, तिरछा, ऐंचाताना।
টেড়ি, টেরি, তেড়ি सं—বাঁকা সিঁথি तिरछी मांग (-কাটা)।
টেনা, তেনা सं—কানি चिथड़ा, लत्ता।
টেপা, টেপাটেপি, টেপানো क्रि—টিপা, টিপান देखो।
টেপারি, টাঁপারি सं—मकोय, एक छोटा फल।
টেবিল सं—मेज table
টেবো वि—ফুলো फूला हुआ, मोटा।
টের सं—अनुभव, बोध (—পাওয়া, ताड़ जाना)।
টেরচা वि=তেরচা।
টেরা, ট্যারা वि—ऐंचाताना।
টেলিগ্রাফ सं—टेलिग्राफ, तार। টেলিগ্রাম स—टेलिग्राम, तार का समाचार।
টেলিফোন सं—टेलिफोन, तार से बातचीत।
টোকা सं—ताड़ की पत्तियों का बना छाता जो किसान टोपी की तरह पहनते हैं।
টোকা क्रि—টুকা। [नुसखा।
টোটকা सं—टोटका दवा, चुटकुला, गुणकार
টো টো सं—निरर्थक भ्रमण।
টোপ सं—मछली पकड़ने के लिए वंशी में लगा हुआ खाद्य, चारा; लुभाने की वस्तु।
টোপর सं—दुलहे की ऊँची नुकीली टोपी, मौर।
টোপাকুল सं—बड़ा पका बेर।
টোল सं—चतुष्पाठी संस्कृत पाठशाला, তোবড়া भाव बरतन आदि में चोट से दबाव (—খাওয়া ঘটি)।
টোলা सं—পল্লী, পাড়া टोला, मुहल्ला।
ট্যাংরা सं=টেংরা।
ট্যা (टैं) सं—बहुत छोटे बच्चे के रोने का शब्द।
ট্যাক सं=টেঁক। ট্যাঁকশাল सं=টাকশাল।
ট্যাক্স सं—টেক্স टैक्स, चुंगी, महमूल।
ট্যাস वि—ফিরিঙ্গী फिरंगी, गोरा।
ট্রাম, ট্র্যাম स—शहरके भीतर लैन पर चलने वाली बिजली की गाड़ी, ट्रम।
ট্রেন सं—রেলগাড়ী रेलगाड़ी।

ঠ

ঠং सं—घंटा आदिके बजने का शब्द, ठन् (लघु अर्थ में-ঠুং)।
ঠক, ঠক্‌ঠক্ सं—ठोंकने का शब्द (लघु अर्थ में—ঠুক, ঠুক্‌ঠুক্)। ঠক ঠক सं—कांपने का भाव प्रकाश (-করে কাঁপছে)।

ঠক सं—প্রতারক, ঠগ ठग, लुटेरा।

ঠকা (क्रि परि १)—ठग जाना, ना कामयाब होना। ঠকানে वि—हरा देने वाला (জামাই—প্রশ্ন)।

ঠকান (-নো), ঠকানো (क्रि परि १०)—ठगना, धोखा देना, हरा देना, छकाना। ঠকানে वि—हरा देने वाला, आसानी से उत्तर देनेके अयोग्य (বরযাত্র—প্রশ্ন)।

ঠকামি, (—মো) सं—धोखा, ठगई; चुगली।

ঠকুর सं—হোঁচট ठोकर।

ঠগ सं—ঠক ठग, लुटेरा।

ঠন, ঠনঠন सं—धातु-पात्र पर आघात पड़ने का शब्द (लघु अर्थमें-ঠুন, ঠুন ঠুন)।

ঠমক सं—ठसक, नखरा।

ঠাঁই सं—ठाँव; भोजन के लिए आसन (—করা, —হওয়া)। क्रि वि—स्थान में (সব—)। ঠাঁই ঠাঁই क्रि वि—अलग अलग (ভাই ভাই—)।

ঠাওর सं, ঠাওরানো क्रि=ঠাহর, ঠাহরানো।

ঠাকুর सं—देवता, देवता की मूर्ति (-গড়া); पूज्य व्यक्ति (পিতা—, গুরু—); ब्राह्मण; रसोइया। स्त्री—ঠাকুরাণী, ঠাকরুণ। —জামাই सं—ননদাই ननदोई। —ঝি सं—ननद। —দাদা, (—দা) सं—पितामह, दादा। —দালান सं—दुर्गा आदि मूर्ति की पूजाका दालान। —পো सं—देवर। —বাড়ি सं—देवालय, मंदिर। —মা, ঠাকুমা सं—पितामही, दादी।

ঠাকুরালি सं—प्रभुत्व; दिल्लगी।

ঠাট सं—ঠমক, ভাবভঙ্গী ছলাকলা ठसक, नखरा; बाहरी-चाल; शान (—বজায় রাখা); ढाँचा (প্রতিমার—)।

ঠাট্টা सं—दिल्लगी, ठट्ठा।

ঠাড় वि—খাড়া, দণ্ডায়মান खड़ा।

ঠাণ্ডা वि—ठंडा, शीतल, शीत। सं—ठंढ।

ঠানদিদি, ঠানদি सं=ঠাকুরমা।

ঠাম सं—গঠন बनावट, रूप (বঙ্কিম—, সু—)।

ঠায় क्रि वि—स्थिर होकर, कुछ न करके (—বসে আছে); लगातार (-তিন দিন)।

ঠার सं—ইঙ্গিত इशारा (ঠারে ঠোরে);

ঠারা (क्रि परि ३)—इशारा करना (চোখ—)।

ঠাস सं—ঘন घना, गफ (-বুনন); चाप दबाव; ঠাসাঠাসি पास पास होने का भाव; थप्पड़ मारने का शब्द (—করে চড় মারল)।

ঠাসা (क्रि परि ३)—গাদা ठूसना, भरना; दबाना (ঠেসে ধরা); गूँधना (ময়দা—)। ঠাসাঠাসি सं—গাদাগাদি पास पास होनेका भाव, थोड़े स्थान में अनेक वस्तुओं का जमाव।

ঠাহর, ঠাওর सं—निरीक्षण, ताक, निगाह, ध्यान (—করে দেখা)।

ঠাহরান (-নো), ঠাহরানো (क्रि परि १०)—ঠাওরানো निरीक्षण करना, ध्यान से देखना, समझना (বোকা ঠাউরেছে)।

ঠিক वि—সত্য, যথার্থ उचित, ठीक, शुद्ध; दुरुस्त; योग्य; तैयार। सं—सत्यता, दुरुस्ती, गणित में जोड़ (অঙ্ক—হওয়া, ঠিকে ভুল)। —ঠাক वि—बिलकुल ठीक; सुसज्जित।

ঠিকরা, ঠিকরে सं—ছোট চিল ठीकरी।

ঠিকরান (-নো), ঠিকরানো, ঠিকরনো (क्रि परि १७)—ठोकर खा कर गिर पड़ना; छिटकना; चकाचौंध होना (চোখ—)।

ঠিকা, ঠিকে वि—ठीका, थोड़े समयके लिए नियुक्त (-চাকর,—গাড়ি)। —দার सं—ठीकेदार। —দারি सं—ठीकेदारी। —দারী वि—ठीकेदार-सम्बन्धी।

ঠিকানা सं—पता; निश्चयता।

ঠিকুজি सं—जन्मपत्री।

ঠুং সং—ঠং देखो।

ঠুংরি सं—एक प्रकारका गाना, ठुमरी।

ঠুক सं—ठोंकने का हल्का शब्द।

ঠুকরান (ठुकरानो), ঠুকরানো, ঠুকরনো, ঠোকরানো (क्रि परि १८)—ঠোকর দেওয়া चोंच में मारना या चुगना।

ঠুকা, ঠোকা (क्रि परि ६)—ठोंकना; सिर धुनना; मारना। ঠুকুনি सं—ठोंक, प्रहार, मार।

ঠুকান (-नो), ঠুকানো, ঠুকনো, ঠোকানো (क्रि परि १२)—ठोंकने का काम दूसरे से कराना।

ঠুঙ্গি, ঠুঙি सं—कागज या पत्तों का बना हुआ छोटा गहरा पात्र, दोना।

ঠুঁটা, ঠুঁটো वि—হস্তহীন, লুলো लुला।

ঠুন सं—ঠন देखो।

ঠুনকা (ठुनुका), ঠুনকো वि—ভঙ্গুর भुरभुरा, हलके आघात से टूटनेवाला। सं—जच्चाके स्तनका एक रोग।

ঠুমকি सं—ठुमक।

ঠুলি सं—घोड़ों या बैलों की आँखों पर डालने का पर्दा, अँधेरी; म्यान।

ঠুসা, ঠোসা (क्रि परि ६)=ঠাসা।

ঠেক, ঠেকনা (ठेक्ना) सं—ঠেস টেক।

ঠেকা (ठेका), ঠ্যাকা सं—अंडस, कठिनाई, संकट, तबला या ढोल बजानेकी वह क्रिया जिस में केवल ताल दिया जाय, ठेका।

ঠেকা (ठेका), ঠ্যাকা (क्रि परि १)—स्पर्श होना, छू जाना, लगना (গায়ে পা—)। अंडस में पड़ना (ঠেকে শেখা)। वि—छूआ हुआ। सं—स्पर्श। ঠেকাঠেকি सं—आपस में स्पर्श।

ঠেকান (ठेकानो), ঠেকানো (क्रि परि १०)—छूलाना, लगाना; रोकना, सम्हालना।

ঠেকার (ठेकार), ঠ্যাকার सं—দেমাক शेखी, घमंड। ঠেকারে, (ঠ্যা-) वि—घमंडी, शेखीबाज।

ঠেঙ্গা (ठेंगा), ঠেঙা सं—লাঠি डंडा, सोंटा।

ঠেঙ্গান (ठेंगानो), ঠেঙ্গানো, ঠেঙানো (क्रि परि १०)—डडे से मारना, पीटना, ठोंकना।

ঠেঙ্গানি, ঠেঙানি सं—ठोंक, मार।

ঠেলা (ठेला), ঠ্যালা (क्रि परि १)—सामने की ओर जोर लगाना या धक्का देना; ढकेलना; उपेक्षा करना, आज्ञा न मानना, अवज्ञा करना। स—धक्का; सकट; ठेला। ঠেলা ঠেলি सं—धक्कम-धक्का।

ঠেস सं—হেলান टेक, सहारा; टेकनेकी वस्तु, ताना, निंदा।

ঠেসা (ठेशा) (क्रि परि १)—ঠেস দেওয়া टेकना, उठंगना, बैठ कर पीछे सहारा लेना।

ঠেসাঠেসি सं—बड़ी भीड़, धक्कम-धक्का।

ঠেসান (-नो), ঠেসানো (क्रि परि १०)—टेकना, किसीके सहारे खड़ा करना।

ঠেসান सं—হেলান सहारा, टक (-দেওয়া)।

ঠোকন सं—प्रहार, मार, ठोंक।

ঠোকর सं—चोंच या अस्त्रादि का आघात (—দেওয়া,—মারা, —খাওয়া); अनधिकार मन्तव्य-प्रकाश; अल्प चर्चा (সব বিষয়ে —মারা)। [=ঠুকরান।

ঠোকরান (-नो), ঠোকরানো (क्रि परि १८)

ঠোকা सं—धक्का।

ঠোকা, ঠোকান (-नो), ঠোকানো (क्रि परि १०)=ঠুকান। [मारपीट।

ঠোকাঠুকি सं—आपस में धक्का, टक्कर;

ঠোঙ্গা, ঠোঙা सं—कागज या पत्तों का बना हुआ गहरा पात्र, दोना।

ঠোঁট सं—ওষ্ঠ होंठ। —কাটা वि—मुंहफट, स्पष्ट-वक्ता। —ফুলানো क्रि—होंठ फुलाना।

ঠোনা स—उंगली से गाल पर आघात (-মারা)।
ঠোসা क्रि—ঠুসা ठूँसना, भरना।
ঠ্যাং सं—পা पैर, टांग।
ঠ্যাকা सं=ঠেকা। ঠ্যাকার सं—ঠেকার।
ঠ্যাঙ্গা सं=ঠেঙ্গা। ঠ্যালা स=ঠেলা।

ড

ডগ, ডগা सं—सिरा, अग्रभाग, नोक।
ডগডগে वि—टकटके (—ঘা)।
ডগমগ वि—विभोर तल्लीन (ভাবে—)।
ডঙ্কা सं—डंका, ढिंढोरा।
ডজন सं—दर्जन, डजन, १२ अदद।
ডন सं—डंड, एक व्यायाम।
ডবডব सं—आँसू का भाव (চোখ—করা)।
ডবডবে वि—सजल, आँसू-भरा, डबडबाता हुआ (—চোখ)।
ডবল वि—द्विगुण डबल, दुगुना। —ড্যাগার सं—छापे का एक चिह्न जो पादटीका के लिए इस्तेमाल होता है।
ডমরু सं—ডুগডুগি डुग्गी, डमरु।
ডরা, ডরান (-নো), ডরানো (क्रि परि १०)—भय खाना, डरना।
ডলা (क्रि परि १)—মর্দন করা, মলা, টেপা मलना दबाना; ঠাসা गूंधना। ডলন सं—मर्दन, दबाव।
ডলান (-নো), ডলানো (क्रि परि १०)—টেপান मर्दन कराना, मलवाना, दबवना।
ডহর वि—গভীর गहरा। सं—গর্ত गढ़ा।
ডাইনী, ডাইন, ডান सं—डाकिनी डायन, टोनही।
ডাইল सं—ডাল दाल।
ডাংগুলি स=গুলিডাণ্ডা।
ডাক सं—डाक; শব্দ, पुकार, यश; नीलाम की बोली। —হরকরা सं—डाक ले जानेवाला नौकर, डाकिया। —বাংলো सं—डाक बंगला। —সাইটে वि—प्रसिद्ध, नामवर।
ডাকা (क्रि परि २)—आवाज करना (গরু ডাকছে, নাক—); पुकारना; बुलाना (গাড়ি—, নাম ধরে—, ঈশ্বরকে—); नीलाम की बोली बोलना; गरजना (মেঘ—, বান—)।
ডাকাডাকি सं—बारबार पुकार या बुलाहट।
ডাকাত, ডাকাইত सं—দস্যু डाकू, लुटेरा (ডাকাতের দল, বাড়িতে—পড়া)। ডাকাতি सं—দস্যুবৃত্তি डकैती। ডাকাতে वि—डाका-सम्बन्धी (—মামলা)।
ডাকান (-নো), ডাকানো (क्रि परि १०)—ডাকিয়া আনানো बुलवाना, बुला भेजना।
ডাকিনী सं=ডাইনী।
ডাক্তার स—डाक्टर doctor.
ডাগর वि—বড় बड़ा (—চোখ, মেয়ে—হয়েছে)।
ডাঙ্কুশ, ডাঙশ सं—অঙ্কুশ अंकुश।
ডাঙ্গা, ডাঙা सं—স্থল स्थल (জলে কুমির ডাঙ্গায় বাঘ, दोनों ओर विपत्ति)।
ডাঁটা सं—पतली डाली या उसके समान वस्तु (কুমড়ার—, সজনের—)।
ডাঁটি स—मूंठ, दस्ता।
ডাঁটো वि—कड़ा, कच्चा (—ফল)।
ডাণ্ডা सं—দণ্ড, মোটা লাঠি डंडा, सोंटा।
ডান वि—दाहिना। सं—दाहिनी दिशा; डायन। —পিটে वि—দুঃসাহসী, গোঁয়ার खतरनाक काम में साहस करनेवाला (—ছেলে)।
ডানা सं—পাখা पर, पंख।
ডাব सं—कच्चा नारियल।
ডাবর सं—बड़ा कटोरा (পানের—)।
ডামাডোল सं—গণ্ডগোল शोरगुल।

ডায়মন सं—हीरा-सी नकाशी (—কাটা বালা)।
ডাল सं—दाल, डाली, टहनी। —পালা सं-डालियाँ।
ডালকুত্তা सं—एक शिकारी कुत्ता। [सालन।
ডালনা (डाल्ना) सं—मसालेदार तरकारी,
ডালা सं—थाली-सी डलिया, ढक्कन (বাক্সের—)। ডালি सं—छोटी डलिया; भेंट, उपहार (—পাঠানো); आधार (কাপের—)।
ডালিম सं—দাড়িম্ব दालिम, दाड़िम, अनार।
ডাঁশ सं—बड़ा मच्छर।
ডাঁশা वि—আধপাকা अधपका (—ফল)।
ডাহা वि—পুরা पूरा, निरा; ज्यों का त्यों, एकदम (—মিথ্যা)। [दिशा।
ডাহিন, ডান वि—दाहिना। सं—दाहिनी
ডাহুক सं—जलमें चलने वाली एक चिड़िया।
ডিক্রী, ডিক্রি सं—अदालतका हुक्म, डिगरी। —দার सं—जिसको डिगरी मिली है।
ডিগডিগে वि—ছিপছিপে दुबला-पतला, शीर्ण।
ডিগবাজি (डिग्बाजि) सं—सिरके बल उलट जानेका खेल, कलाबाजी (—খাওয়া)।
ডিঙ্গা, ডিঙা स—मोटे पेड़का तना खोद कर बनायी हुई नाव। ডিঙ্গি, ডিঙি सं—छोटी नाव। [१०)—लाँघना, डांकना।
ডিঙ্গান (-नो), ডিঙ্গানো, ডিঙ্গনো (क्रि परि
ডিবা, (-বে) सं—কৌটা डिबिया; ढिबरी।
ডিম सं—ডিম্ব, আণ্ডা अंडा (—পাড়া; ডিমে তা দেওয়া, अंडे सेना); पैरकी पिंडली।
ডিম্ব (-अ) सं—ডিম अंडा।
ডিশ स—রেকাবি रकाबी।
ডিসমিস सं—खारिज, डिसमिस, बरखास्त।
ডিসেম্বর सं—दिसबर मास।
ডুকরান (डुक्रानो), ডুকরানো, ডুকরনো (क्रि परि १८)—ফোঁপাইয়া কাঁদা फुफकारके साथ रोना।
ডুগডুগ (डुग्डुग्) सं—डुग्गीका शब्द; कबड्डी।
ডুগডুগি (डुग्डुगि) सं—डमरू।
ডুগি सं—डुग्गी, तबलेका बायाँ।
ডুব सं—डूब। —মারা क्रि—गोता लगाना; छिप जाना।
ডুবন্ত (-अ) वि—निमज्जित, डूबा हुआ।
ডুবা, ডোবা (क्रि परि ६)—डूबना।
ডুবান (-नो), ডুবানো, ডুবনো, ডোবানো (क्रि परि १२)—डुबाना, प्लावित करना; बरबाद करना।
ডুবারী, ডুবুরী सं—डुबकी लगा कर नीचेसे चीज निकालनेवाला, गोताखोर।
ডুবি सं—डूबकी, डूबना (নৌকা—नाव का डूबना)। [(নৌকা—, সূর্য্য—)।
ডুবুডুবু वि—মগ্নপ্রায় डूबना ही चाहता है ऐसा
ডুমা, ডুমো सं—खंड, टुकड़ा।
ডুমুর सं—गूलर।
ডুরি सं—महीन रस्सी, डोरी; सूत।
ডুরে वि—ডোরাকাটা धारीदार (—শাড়ী)।
ডুলি सं—डोली।
ডেক सं—देगची। ডেকচি सं—छोटी देगची।
ডেকরা (डैक्रा), ড্যাকরা वि—दुष्ट, पाजी, अशिष्ट। [दर्द होता है।
ডেঙ্গু सं—एक बुखार जिससे शरीरमें बहुत
ডের, ডেরা वि—देड़ डेढ़।
ডেপুটি सं—डिप्टी, नायब।
ডেঁপো वि—ढीठ, बकवादी (—ছোকরা)।
ডেমি सं—दरखास्ती कागज।
ডেয়ে, (-য়ো) स—काला चिऊँटा।
ডেরা सं—বাসা डेरा, अड्डा। —ডাণ্ডা स—डेरा और असबाब (—গাড়া, —তোলা)।
ডেলা (डैला), ড্যালা स—দলা टुकड़ा, डला, ढेला, ढेली।

ডেলি প্যাসেঞ্জার सं—दैनिक यात्री ; जो रेलगाड़ी बड़े शहरके आसपासके गांवोंसे दैनिक यात्रियोंको ढोती है।

ডোকরা (डोक्रा , वि—হতভাগা बदनसीब।

ডোকলা (डोक्ला) वि—অপব্যয়ী फिजूलखर्च।

ডোঙ্গা, ডোঙা सं—ডিঙ্গা छोटी सँकरी नाव, नावसे जल सींचनेका पात्र।

ডোবা सं—ছোট পুকুর पोखरी, गढ़ी।

ডোবা, ডোবানো क्रि=ডুব।

ডোর स—डोरा, धागा।

ডোরা सं—রেখা धारी (-কাটা)।

ডোল सं—डोल, कुएंसे जल खींचने या अनाज रखनेका बरतन। [बनावट।

ডৌল (डउल), ডোল सं—গড়ন डौल, रूप,

ড্যাকরা वि=ডেকরা।

ড্যাগার सं—छापेका † यह चिह्न जो पादटीकाके लिए इस्तेमाल होता है।

ড্যাবড্যাব सं—आँखें फाड़नेका भाव।

ড্যাশ स—বতিচিহ্ন —यह चिह्न।

ড্রেন सं—নর্দমা नाली, मोरी।

ঢ

ঢং सं—घंटेका शब्द ; ढब, ढंग, कपट ; बनावट ; चाल ; नखरा।

ঢক্, ঢক্ঢক্ स—खाली घड़ा पत्थर आदि हिलाने या जल उँड़ेलने या निगलनेका शब्द (प्यारमें—ঢুক, ঢুক্‌ঢুক, ঢুক্ঢুকু। अचानक—ঢকাস)।

ঢক্কা सं=ঢাক।

ঢঙ सं=ঢং।

ঢনঢন सं—खाली घड़े आदि में आघातका शब्द। ঢনঢনে वि—खाली।

ঢপ सं—গড়ন बनावट, कीर्तन ; पोली नरम वस्तुमें आघातका शब्द (ঢপঢপ করা) (तुच्छार्थमें—ঢাপঢোপ)।

ঢল स—ঢালু জায়গা ढाल, उतार ; पहाड़से अधिक जलका पतन।

ঢলঢল स—जलके हिलनेका शब्द ; लावण्य रस आदिका लक्षण प्रकाश। ঢলঢলে वि—तरल, छलकनेवाला, ढीला ; लावण्ययुक्त (-মুখ)। [तरफदार होना।

ঢলা (क्रि परि १)—হেলিয়া পড়া खड़ेसे गिरना ;

ঢলান (-नो), ঢলানো (क्रि परि १०)—হেলানো खड़ेसे गिराना ; কেলেঙ্কারি করা व्याभिचार आदि कुकर्म करना। ঢলান, ঢলাঢলি सं—কেলেঙ্কারি व्याभिचार आदि कलकका काम।

ঢলানে वि—व्याभिचार आदि कुकर्म करनेवाला। स्त्री—ঢলানী।

ঢাক सं—ঢক্কা बड़ा ढोल। —পেটা क्रि—सर्वत्र प्रचारित करना।

ঢাকনা (ढाक्ना), ঢাকনি, ঢাকন स—ढक्कन।

ঢাকা (क्रि परि ३)—टांकना, छिपाना (গা—, अपनेको छिपाना)। ঢাক ঢাক গুড় গুড় सं—गुप्त बात जाहिर करनेकी तीव्र इच्छा।

ঢাকাই वि—ढाका शहर या जिलेका बना ; ढाका सम्बन्धी।

ঢাকী सं—बड़ा ढोल बजानेवाला।

ঢালা (क्रि परि ३)—उँड़ेलना। ঢালা, ঢালাও वि—फैला हुआ। ঢালাঢালি स—बारबार उँड़ेलना या ढालना।

ঢালাই स—साँचेमें ढालनेका काम। वि—साँचेमें ढाला हुआ (—করাই)। —খানা सं—ढलाईका कारखाना। [(—রাস্তা)।

ঢালু, ঢাল वि—গড়ানে, ক্রমনিম্ন ढालू, ढालवाँ

ঢিট वि—धृष्ट ढीठ, बेहया ; छका हुआ।

ঢিঢি सं—कलककी बातका प्रचारित होना।

ঢিঢিকার (-কার) सं—कलकका सर्वत्र प्रचार।

টিপ सं—प्रणाममें जमीनमें सिर लगानेका शब्द (-করে প্রণাম)। টিপটিপ सं—धड़कनेका शब्द (বুক—করা)।

টিপি, টিবি सं—स्तूप ढूह, टीला (উই—, মাটির—)।　　[मन्द।

টিমা, খিমা, টিমে वि—मन्थर, धीमा, मृदु,

টিল सं—ढेला, चक्का (-ছোঁড়া)।

টিলা, টিলে, টিল वि—शिथिल, আলগা ढीला; सुस्त, आलसी। টিলামি, টিলেমি सं—शिथिलता ढीलापन, सुस्ती; लापरवाही।

ঢু, ঢুঁ सं—মাথা বা শিং দিয়া গুঁতা सिर या सींगसे धक्का (-মারা, -দেওয়া)।

ঢুকা, ঢোকা (क्रि परि ६)—ढुकना, घुसना।

ঢুকান (-नो), ঢুকানো, ঢুকনো, ঢোকানো (क्रि परि १२)—घुसाना। वि—घुसा हुआ।

ঢুঁড়া, ঢোঁড়া (क्रि परि ६)—খোঁজা खोजना, ढूँढ़ना।　　[বেলায়—)।

ঢুঢু सं—ফক্কিকারি कुछ भी नहीं (কাজের

ঢুল, ঢুলুনি सं—ऊंघ, झपकी। ঢুলঢুলে, ঢুলুঢুলু वि—ऊंघ या नशेका लक्षणयुक्त (-আঁখি)।

ঢুলা, ঢোলা (क्रि परि ६)—ऊंघसे सिर हिलना।

ঢুলান (-नो), ঢুলানো, ঢুলনো, ঢোলানো (क्रि परि १२)—डुलाना, हिलाना (চামর—)।

ঢুলী सं—ढोल बजानेवाला।

ঢেউ सं—তরঙ্গ, ঊর্মি लहर। —খেলান वि—लहरिया, लहरदार।

ঢেঁকি सं—ढेंकी; (व्यंगमें) गुण-रहित (বুদ্ধির-)। -শাল, (-শালা) सं—ढेंकीका घर।

ঢেকুর, ঢেঁকুর सं—डकार, हिक्का। [(-লোক)।

ঢেঙ্গা (ढंगा), ঢেঙা, ঢ্যাঙ্গা वि—ऊंचा, लम्बा

ঢেঁটরা, ঢেঁড়া सं—ढिंढोरा। —পেটা क्रि—ढिंढोरा पीटकर घोषणा करना।

ঢেঁটা, ঢেঁটা वि—ढीठ, बेहया।

ঢেঁড়স (ढेंड़श), (ঢ্যাঁ—) सं—भिंडी, रामतरोई।　　[फूला हुआ।

ঢেঁপসা (ढँप्‌शा), (ঢ্যাঁ—) वि—मोटा,

ঢের वि—बहुत-सा, अनेक।

ঢেরা (ढेरा), ঢ্যারা सं— × यह चिह्न, लिखित वस्तु काटनेकी तिरछी रेखा। —সহি सं—अल्प-पढ़े-लिखे आदमीके लकीर खींचकर दस्तखत।

ঢেলা (ढेला) सं—টিল ढेला, चक्का।

ঢোক, ঢোঁক सं—घूंट।

ঢোকা, ঢোকানো क्रि = ঢুকা, ঢুকান।

ঢোঁড়া सं—विष-रहित एक प्रकारका सांप।

ঢোঁড়া क्रि = ঢুঁড়া।　　[ढुलवाई।

ঢোয়া (क्रि परि २०)—ढोना। ঢোয়াই सं—

ঢোয়ান (-नो), ঢোয়ানো (क्रि परि १४)—ढुलाना, ढोनेका काम कराना।

ঢোল, ঢোলক सं—ढोल। वि—ढोलकी तरह फूला हुआ। ঢোল-শোহরৎ सं—ढोल बजाकर घोषणा।

ঢোলা, ঢোলানো क्रि = ঢুলা, ঢুলান।

ঢোলাই सं = ঢোয়াই।　　[पोला।

ঢোসা, ঢোসকা (ढोश्‌का) वि—मोटा और

ঢ্যাঙ্গা ঢ্যাঙা, ঢ্যাঁটরা, ঢ্যাঁড়স, ঢ্যাপসা, ঢ্যারা, ঢ্যালা = ঢেঙ্গা आदि।

ত

ত अव्य—তো तो, तब।　　[कड़ाही, तवा।

তই सं—तई, थालीके आकारकी छिछली

তক क्रि वि—पर्यन्त तक।

তকতক सं—स्वच्छताका लक्षण प्रकाश (মেঝে—করছে)। তকতকে वि—स्वच्छ, साफ।

তকমা सं—तमगा, चपरास।

তকলিফ सं—तकलीफ, कष्ट।

তক্ত (-अ) सं—तख्त, सिंहासन। —তাউস सं—तख्त ताऊस। [চৌকি बड़ी चौकी।

তক্তা सं—तख्ता, पल्ला। —পোশ सं—बड़

তক্র (-अ) सं—ঘোল मट्ठा, छाछ।

তক্ষক (तक्खक) सं—ছুতার बढ़ई; एक साँप।

তক্ষণ सं—बढ़ईका काम।

তখন क्रि वि—तब उस समय; उस हालतमें, तो; उसके बाद। তখনই, তখনি क्रि वि—तभी, उसी समय, तुरत।

তগর सं—टगर।

তছনছ, তচনচ वि—तहस-नहस, अस्त-व्यस्त।

তছরূপ सं = তসরুফ।

তজ্জনিত (-अ) वि—उससे उत्पादित।

তজ্জন্য (-अ) क्रि वि—उस कारण, उसके लिए।

তজ্জাত (-अ) वि—उससे उत्पन्न। [धोखा।

তঞ্চক वि—বঞ্চক धोखेबाज। তঞ্চকতা सं—

তট सं—তীর नदीका किनारा; स्थान (কটি—)। —স্থ (-अ) वि—तीरमें स्थित; उदासीन, पक्षपात-रहित; घबड़ाया हुआ, व्याकुल, थकित।

তটিনী सं—नदी, दरिया।

তড়কা सं—बच्चोंका एक रोग जिसमें हाथ-पैर ऐंठते हैं, चिहुकवाई।

তড়পান (-নো), তড়পানো (क्रि परि १६)—नाहक उछलना, उत्साह क्रोध आदिके कारण बेचैन होना।

তড়বড় सं—बेचैनी छटपटी जल्दबाजी आदिका लक्षण प्रकाश। তড়বড়ে वि—चंचल, जल्दबाज।

তড়াক सं—उछलनेका वेग प्रकाश।

তড়াগ सं—দিঘি लंबा तालाब।

তড়িঘড়ি क्रि वि—तुरत, झट, तत्काल।

তড়িৎ सं—বিদ্যুৎ बिजली।

তণ্ডুল (तंडुल) सं—চাউল चावल।

তৎ सर्व—वह (—কাল, वह समय); उस (—কালে, उस समय; তৎ+অবধি=তদবধি, उस समयसे)। —কালিক, তাৎকালিক, তৎকালীন वि—उस समयका। —ক্ষণ सं—वह समय। —ক্ষণাৎ क्रि वि—तभी, उसी समय, तुरन्त, झट। —পর वि—चेष्टित, फुर्तीला। —পরে क्रि वि—उसके बाद। —সংক্রান্ত वि—उस सम्बन्धका। —সদৃশ (-अ), —সম (-अ) वि उसके समान।

তত (-अ) वि—उतना (—টাকা দিব না,—কাল বসিয়া থাকিব?); वैसा (—খারাপ নয়)। —ক্ষণ क्रि वि—तब तक।

ততোধিক वि—उससे अधिक। [वैसा।

তত্তুল্য (तत्तुल्य -अ) वि—उसके समान,

তত্ত্ব (तत्त्व-अ) सं—किसी वस्तुका यथार्थ ज्ञान, तत्त्व, विज्ञान; स्वरूप; समाचार, खबर (—নেওয়া); भेंट (শীতের—, शीतकालमें दामादको भेजे जानेवाले जड़ावर आदि। —করা, —পাঠানো —दामादको भेंट भेजना)। —তঃ क्रि वि—यथार्थ रूपसे। —তাবাস सं-भेंट भेजना और खबर लेना। —দর্শী सं—तत्त्वज्ञानी। —বিদ্যা सं—दर्शनशास्त्र। —বেত্তা सं—तत्त्वज्ञानी।

তত্ত্বাবধান सं—परिचालन, देखरेख।

তত্ত্বাবধায়ক सं—देखरेख करनेवाला।

তত্ত্বাবধারক सं—तत्त्व निर्णय करनेवाला।

তত্ত্বাবধারণ सं—तत्त्वका निर्णय।

তত্র (-अ) क्रि वि—সেখানে, তথায় वहाँ।

তত্রত্য (-अ) वि—তথাকার वहाँ का।

তত্রাচ, তথাপি क्रि वि—तथापि, तोभी।

তথা स—वह स्थान (তথাকার वहाँका)। वि—वैसा (যথা রাজা—প্রজা)। —কথিত (-अ)

वि—उस नामसे प्रचलित या कथित परंतु उसकी योग्यताके विषयमें संदेह है। —গত (-अ) सं—বুদ্ধদেব गौतम बुद्ध। —চ, —পি क्रि वि—তবুও, তাহা হইলেও तिस पर भी, तथापि। —বিধ (-अ) वि—उस प्रकारका। —ভূত (-अ) वि—उस अवस्था में परिणत। তথায় क्रि वि—সেখানে वहाँ। তথাস্তু अव्य—তাহাই হউক वसा ही हो। তথৈব, তথৈবচ (-अ) वि—वसा ही, कुछ भी नहीं। [रहस्य।

তথ্য (-अ) सं—असली हालत, सचाई, तत्त्व,

তদ্ सर्व—তাহা वह। তদনন্তর क्रि वि—তাহার পর उसके बाद। তদনুযায়ী वि—तदनुरूप, उसी तरह का। তদনুসারে क्रि वि—तदनुसार। তদন্ত (-अ) सं—तहकीकात, जाँच, खोज। তদন্য (-अ) वि—उससे भिन्न, दूसरा। তদবধি क्रि वि—उस समयसे, उस समय तक। তদবস্থ (-अ) वि—उस अवस्थामें परिणत, उस ढग से स्थित। তদভাব सं—उसका अभाव। তদভিন্ন (-अ) वि—उससे अभिन्न। তদর্থ (-अ), তদর্থে क्रि वि—तदर्थ, उस उद्देश्य से। তদাত্মা सं—उसके साथ मनकी एकता। তদীয় (-अ) वि—তাহার उसका। তদুপরি क्रि वि—उसके ऊपर। তদুপলক্ষে क्रि वि—उस प्रसंगमें। তদেক वि—उसके साथ एक (-चित्त)। তদ্গত (-अ) वि—उसमें लवलीन, एकाग्र (-चित्त)। তদ্দণ্ডে क्रि वि—उसी क्षण, तुरत। তদ্বৎ (तद्वत्) वि—उसके समान। তদ্বিধ (तद्विध -अ) वि—उस प्रकारका। তদ্ভাব सं—उसका भाव या धर्म। তদ্ভিন্ন (-अ) क्रि वि—उसके सिवाय। वि—उससे भिन्न। তদ্রূপ वि—समान, उस प्रकारका।

তদবির सं—पैरवी (মকদ্দমার—করা), उपाय।

তদানীং क्रि वि—তখন तब, उस समय। তদানীন্তন वि—তৎকালীন, তখনকার उस समयका।

তদা প্রভৃতি क्रि वि—তখন হইতে उस समयसे।

তদারক सं—অনুসন্ধান जाँच, तहकीकात; निरीक्षण, देखरेख।

তনখা (तन्खा) सं—বেতন तनखाह।

তনিমা सं—कृशता सूक्ष्मता।

তনু सं—शरीर देह। वि—কৃশ दुबला, थोड़ा।

তনুজ सं—তনয় पुत्र, बेटा।

তন্তু सं—সূত্র सूत, डोरी; ताँत रेशा। —বায় सं—कपड़ बुननेवाला, जुलाहा।

তন্ত্র (-अ) सं—शास्त्र, तंत्रशास्त्र; राज्य-शासन-पद्धति (সাধারণ-, প্রজা-)। वि—अधीन (পর-, স্ব-)। —ধারক सं—पूजा आदि कार्यमें जो पुस्तक देख कर मन्त्र पढ़ाता है।

তন্ত্রী सं—वीणा आदि बाजेका तार।

তন্দুর सं—बड़ा चुल्हा, भाड़।

তন্দ্রা सं—নিদ্রাবেশ ऊंघाई। তন্দ্রালু वि—তন্দ্রাবিষ্ট ऊघनेवाला।

তন্নতন্ন (-अ) वि—পুঙ্খানুপুঙ্খ, পাতিপাতি, सूक्ष्म, छानबीनका (-করিয়া খোঁজা)।

তন্নিবন্ধন, তন্নিমিত্ত (-अ) क्रि वि—তজ্জন্য।

তন্মনস্ক (तन्मनस्क-अ), তন্মনা (तन्मना) वि—जिसका मन उसके ऊपर लगा है, तल्लीन।

তন্ময় (तन्मय) वि—लवलीन।

তন্মাত্র (तन्मात्र-अ) वि—তাহা মাত্র केवलमात्र, वही सिर्फ, उतना ही। তন্মাত্রা सं—(सांख्यदर्शनमें) शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पंचभूतके ये सूक्ष्म रूप।

তন্বঙ্গী, তন্বী (तन्वी) वि—কৃশাঙ্গী दुबली-पतली (स्त्री)।

তপ सं—तपस्या; योग, व्रत। তপশ্চরণ, (-শ্চর্যা, -শ্চারণ) सं—तपकी साधना। তপস্বী

(तपस्वी) स—तपस्या करनेवाला, योगी, व्रती। स्त्री—তপস্বিনী।

তপন सं—सूर्य। [मछली।

তপসে, তপসি (तपसी) सं—एक छोटी

তপ্ত (-अ) वि—गरम, तपा हुआ, शोकार्त। —কাঞ্চন सं—आगसे शोधा हुआ सोना।

তফসিল सं—तफसील, विवरण; फिहरिस्त।

তফাত, তফাৎ सं—दूरका स्थान, अंतर; भेद। वि—दूरका, फासले परका, अलग।

তব (-अ) सर्व—तुम्हारा, तेरा, आपका।

তবক सं—तबक, पतला वरक (সোনার-)।

তবিয়ৎ सं—तबीअत, मिजाज।

তবু क्रि वि—তথাপি तोभी।

তবে क्रि वि—তাহা হইলে ऐसा होनेपर तोभी; उस हालतमें, उस कारण; उसके बाद, परंतु। [हुआ दस्तावेज।

তমসুক स—ऋण रुपया कर्ज लेते समय लिखा

তমস্বিনী (तमस्विनी) वि—अँधेरी (-রাত্রি)।

তমিস্র (-अ) सं—अंधकार, अँधेरा।

তমোঘ্ন (-अ, তমোপহ (-अ), তমোহর, তমোহা वि—अंधकार या अज्ञानका नाशक। सं—सूर्य, अग्नि।

তম্বি स—तंबीह, धमकी।

তম্বুরা स—তানপুরা तम्बूरा।

তয়খানা सं—तहखाना।

তয়ফা स्त्री—नाचनेवाली।

তয়ের वि—তৈয়ার।

-তর (-अ) वि—तरह, प्रकारका (কেমন—)।

তর सं—ত্বরা विलम्ब, देर (—সইছে না)।

তরকারি सं—আনাজ तरकारी, भाजी।

তরঙ্গ (-अ) सं—तरंग, लहर। —ভঙ্গ सं—ঢেউ ওঠা लहर उठना। তরঙ্গায়িত (-अ) वि—लहरवाला, लहरदार। তরঙ্গিণী सं—नदी। তরঙ্গিত (-अ) वि—लहरवाला।

তরজমা स—तरजुमा, अनुवाद। [का गाना।

তরজা (तर्जा) सं—दो दलोंमें प्रतियोगिता

তরণ सं—नदीके उस पार गमन। তরণী, (-ণি) सं—नाव, नौका।

তরতম (-अ) वि—न्यूनाधिक कमोवेश।

তরতর सं—जलप्रवाहका वेग प्रकाश।

তরতিব सं—तरतीब, सिलसिला।

তরফ सं—तरफ, ओर, पक्ष (আমার তরফে); जमींदारीका हिस्सा (বড়—, ছোট—)। —দার सं—पक्षका आदमी; पक्षपाती; एक उपाधि। —দারি सं—तरफदारी, पक्षपात। তরফা वि—पक्ष सम्बन्धी (এক—)।

তরবারি, (-বার) सं—तलवार, कृपाण।

তরবেতর वि—हर प्रकारका।

তরমুজ, (-বুজ) सं—तरबूज।

তরল वि—দ্রব जलकी तरह, तरल; चंचल (-মতি)। তরলিত (-अ) वि—বিগলিত, द्रवीभूत जो तरल हुआ है। তরলীকৃত (-अ) वि—जिसे तरल किया गया है।

তরসে क्रि वि—तरसों। [जाना।

তরা (क्रि परि १)—পার হওয়া पार होना या

তরান (-নো), তরানো (क्रि परि १०)—पार करना, उबारना।

তরাই सं—तराई, पहाड़के नीचेका मैदान।

তরাজ सं—लुंठन लूट।

তরাজু सं—দাঁড়িপাল্লা तराजू।

তরাস सं—ত্রাস डर, शंका। [हुआ।

তরিত (-अ) वि—पार किया हुआ; उबारा

তরিবৎ सं—আদব কায়দা शिष्टाचार, शिक्षा।

তরী, তরি सं—তরণী नाव, नौका।

তরু सं—গাছ पेड़, वृक्ष।

তরুণ वि—नया, युवा, जवान। स्त्री—তরুণী। —জ্বর सं—नया बुखार। তরুণিমা सं—तरुणता; यौवन।

তরে ক্রি বি—জন্য निमित्त, लिए, वास्ते।
তর্ক (-अ) सं—बहस, दलील, हेतु, सदेह। —জাল सं—तरह तरहकी बहसे। —বিতর্ক सं—वाद-विवाद। —বিদ্যা, —শাস্ত্র सं—न्यायशास्त्र। তর্কাতর্কি सं—वाद-विवाद झगड़ा। তর্কেতর্কে क्रि वि—सावधानीसे, खोजमें (-থাকা)। তর্কিত (-अ) वि—तर्क या विचार किया हुआ, अनुमित। তর্কী वि—তার্কিক बहुत बहस करनेवाला।
তর্জান (-नो), তর্জানো (क्रि परि १६)—तर्जना, डांटना।
তল सं- तला, पेंदा, पीठ, मंजिल (দ্বিতল)। তলেতলে क्रि वि—লুকাইয়া छिपकर, भीतर ही भीतर।
তলতল स—कोमलता या लचीलेपनका लक्षण प्रकाश (—করা); (प्यारमें—তুলতুল)। তলতলে वि—नरम (—পাকা আম, (प्यारमें —তুলতুলে वि—गुलगुला)।
তলপেট सं—नाभिके नीचेका स्थान।
তলব सं—तलब, माँग, पुकार, वेतन।
তলবার सं—तलवार।
তলা सं—তল मजिल (তিন—, উপর—), तला, नीचेका स्थान (গাছ—; কল—), स्थान (কালী—)।
তলাও सं—পুকুর तालाब।
তলান (-नो), তলানো (क्रि परि १०)—जल में नीचे गिरना या उतरना, भीतर प्रवेश करना; अच्छी तरह समझना (কথাটা তলিয়ে দেখ)।
তলানি सं—तलछट। [(শহর—)।
তলি सं—উপকণ্ঠ किनारा, निकटका स्थान
তলোয়ার स—तलवार।
তল্পি सं—बिस्तरे और कपडेकी गठरी। —তল্পা सं—बिस्तरे गठरी और दूसरे असबाब। —দার स—মোটবাহক गठरी ले जाने वाला नौकर।
তল্লাট सं—অঞ্চল प्रांत, स्थान (এ তল্লাটে)।
তল্লাশ सं—तलाश, खोज, तहकीकात (থানা—)।
তসবি सं—मुसलमानोंकी जपमाला।
তসবির सं—ছবি तसवीर।
তসর सं—एक प्रकारका रेशम।
তসরুফ, তছরুপ सं—गबन, चोरी (তহবিল—)।
তসলা सं—तसला, छिछली कड़ाही।
তস্কর सं—चोर। তস্করতা सं—चोरी।
তহবিল, তবিল सं—মজুত টাকা रोकड़, मौजूद रुपया। —দার सं—खजांची, रोकड़िया। —দারি सं—खजांचीका काम या पद।
তহসিল, তসিল सं—तहसील, वसूली, वसूल की हुई मालगुजारी।
তা सर्व—তাহা वह। सं—कागजका ताव, ताप, गर्मी (ডিমে—দেওয়া, अ डेसेना); পাক; মোচড় मरोड (গোঁফে—দেওয়া)। अव्य—तो (—আমি কি করিব)। তা'লে, তাহোলে क्रि वि—তাহা হইলে ऐसा होने पर।
তাই सर्व—তাহাই वही (যা চাও—পাবে)। क्रि वि—उस कारण। তাইতে—क्रि वि—তাহাতে उस कारण। তাইতো क्रि वि—उसी कारण तो, विस्मय सूचक शब्द (—কি করা যায়!)।
তাউই सं=তালুই।
তাওয়া सं—तवा, ठिकरा।
তাক स—भौचक्कापन (—লাগা), ताखा।
তাক, তাগ सं—লক্ষ্য, टिक निशाना (বন্দুকে—করা); अनुमान। তাকে তাকে क्रि वि—खोज में, प्रतीक्षामे (—থাকা)।
তাকত, তাকৎ सं—ताकत, शक्ति।
তাকা (क्रि परि २)—प्रतीक्षामें रहना।

তাকান (-নো), তাকানো (क्रि परि १०)—চাহে ताकना, देखना, नजर डालना।

তাকাবি स—तकावी, किसानको दिया हुआ ऋण।

তাকিয়া सं—गोल तकिया, मसनद।

তাগা स—অনন্ত बाँहका एक जेवर, तावीज।

তাগাড় स—चूना सुरखी कीचड़ आदि जल के साथ मिलाने का कुंड।

তাগাদা, তাগিদ सं—तकाजा, ताकीद।

তাচ্ছল্য, তাচ্ছিল্য (-অ) सं—तुच्छ ज्ञान अवज्ञा।

তাজ सं—ताज, मुकुट, ऊँची टोपी।

তাজা वि—টাটকা, ताजा, टटका, नया; तेज, फुर्तीला (—প্রাণ)।

তাজ্জব सं—तअज्जुब, आश्चर्य।

তাঞ্জাম सं—चार आदमियोंसे ढोयी जानेवाली एक खुली पालकी।

তাড়ন, তাড়না स—শাসন ताड़ना, डाँट-डपट, प्रहार। তাড়ক वि—ताड़ना करने वाला।

তাড়স सं—दर्दका असर (ফোড়ার তাড়সে জ্বর)।

তাড়া (क्रि परि २)—पीछा करना, धावा करना। सं—धमकी, डाँट, डपट।

তাড়া सं—ত্বরা शीघ्रता; प्रयोजन (কাজের—), जल्दी करनेके लिए दवाव। তাড়াতাড়ি सं—ত্বরা शीघ्रता (কোন—নেই)। क्रि वि—जल्द, झटपट, तुरत। তাড়াহুড়া, (-ড়ো) स—जल्दी करनेके लिए दवाव या पीड़न।

তাড়া स—গোছা, বাণ্ডিল गुच्छा, बंडल (কাগজের—, নোটের—)।

তাড়ান (-নো), তাড়ানো (क्रि परि १०)—भगाना, निकाल देना। তাড়িত (-অ) वि—ताड़न किया हुआ, दंडित; निकाला हुआ।

তাড়ি सं—ताड़ी।

তাড়িত वि—তড়িৎ সম্বন্ধীয় बिजली सम्बन्धी। सं—বিদ্যুৎ बिजली। —বার্তা, —সংবাদ सं—तारका समाचार।

তাত (-অ) स—पिता; पिता के समान पूज्य व्यक्ति (খুড়—, জ্যেঠ—); पुत्र के समान व्यक्तिके लिए स्नेह-सूचक सम्बोधन, बेटा। [আগুনের—)।

তাত (तात्) स—তাপ ताप, गर्मी (রোদের—,

তাঁত सं—करघा, कपड़ा बुननेका यंत्र, 'तांत।

তাঁতী स—जुलाहा। স্ত্রী—তাঁতিনী।

তাতা (क्रि परि २)—गरम होना।

তাতান (-নো), তাতানো (क्रि परि १०)—गरम करना, गर्माना। वि—गरम किया हुआ।

তাতে सव—তাহাতে उसमें।

তাৎকালিক वि—তৎকালিক। [आशय।

তাৎপর্য (तात्पर्ज अ) सं—মর্ম तात्पर्य,

তাথই, তাথৈ स—उछल-उछल कर नाचनेका ढंग, ताथैई।

তাদাত্ম্য (तादात्त-अ) सं—उसके साथ एकत्व भाव, तादात्म्य, तदात्मकता।

তাদৃশ (-অ) वि—সেই রকম उसके समान।

তান स—संगीतके स्वरका विस्तार, आलाप। —পুরা स—तानपूरा।

তানা-নানা सं—গানের বোল संगीत साधने का स्वर; ताना-रीरी; कार्यके आरम्भमें विलम्ब या हीला-हवाला।

তান্তব वि—सूतका बना, सूत सम्बन्धी।

তাপা (क्रि परि २)—তাতা गरम होना; तापना। [गरम करना।

তাপান (-নো), তাপানো (क्रि परि १०)—

তাবৎ वि—সমুদয়, সেই সমস্ত वे सभी, उतना। क्रि वि—तबतक।

তাবিজ सं—মাদুলি तावीज, जंतर ।

তাঁবু, তাম্বু सं—শিবির, পটাবাস तंबू, खेमा (—খাটানো)।

তাঁবে क्रि वि—আজ্ঞাধীন अधीन, तावेमें। —দার वि, सं—तावेदार, आज्ञाकारी नौकर। —দারি सं—अधीनता ; नौकरी।

তাম্বলী सं—ताम्बूली तमोली। [তামসী।

তামস वि—तमोगुण-युक्त, अँधेरा। स्त्री—

তামা सं—তাম্র ताँवा। তামাটে वि—ताँबा सा रंग वाला।

তামাক सं—तम्बाकू (—সাজা, —খাওয়া,—টানা)। —খোর वि—बहुत अधिक तम्बाकू पीनेवाला।

তামাদি सं—तमादी।

তামাম वि—समस्त सारा, पूरा, बिलकुल।

তামামি सं—समाप्ति (সাল—)।

তামাশা सं—तमाशा, दिल्लगी, खेल।

তামিল सं—পালন तामील।

তাম্বু सं=তাঁবু।

তাম্বুল सं—तांबूल, पान। —রাগ सं—पान खानेसे होंठों पर जो रंग होता है।

তাম্বুলী, তাম্বুলিক सं=তামলী।

তাম্র (-अ) सं—তামা ताँबा। —কুণ্ড सं—पूजामें व्यवहार किया जानेवाला ताँबेका गोल पात्र। —পট্ট (-अ), —ফলক सं—ताँबे की चद्दर। —শাসন स—ताँबेके पत्तर पर खुदा हुआ राजाकी आज्ञा। —কূট सं=তামাক। —লিপ্ত (-अ) सं—तमलूकका प्राचीन नाम। তাম্রাভ (-अ) वि—ताँबा सा रंगवाला।

তায় सर्व—তাহাতে আবার उसके ऊपर (একে ঘর—মাথাধরা); उसे, उसमें। [परिमाण।

তায়দাদ सं—जमीनकी सीमाका विवरण,

তার (तार्) स—धातुका तार, तारका समाचार, तारण, उद्धार, स्वाद। वि—ऊँचा, तीव्र (—স্বরে)। [उनका, वे।

তার, তারা ; তাঁর, তাঁরা सर्व—उसका, वे ;

তারক वि—तारण करनेवाला, उद्धार-कर्ता। स—तारका, नक्षत्र, आँखकी पुतली। —ব্রহ্মনাম सं—ओंश्रीरामराम—यह मंत्र।

তারকা सं—तारा, नक्षत्र, आँखकी पुतली, छापेका ※ यह चिह्न, सिनेमाकी श्रेष्ठ अभिनेत्री।

তারতম্য (-अ) सं—कमीबेशी।

তারল্য सं—तरलता, चंचलता।

তারা सं—नक्षत्र, आँखकी पुतली ; छापेका ※ यह चिह्न, दुर्गाका एक नाम। —নাথ, —পতি सं—चंद्र।

তারিখ सं—तारीख।

তারিফ सं—तारीफ, प्रशंसा।

তারুণ্য (-अ) सं—तरुणता, नयापन।

তার্পিন सं—तारपीनका तेल।

তাল सं—ताल, छंद, ताड़ (—পাতার পাখা), गोल पिंड (—পাকানো), ढेर, राशि, वृद्धि (তিলকে—করা)। তালে তালে क्रि वि—ताल के अनुसार (—পা ফেলিয়া)। —কানা वि—जिसको तालका ज्ञान नहीं है, असावधानी के कारण जो ख्याल नही करता, लापरवाह। —ঠোকা क्रि—ताल ठोंकना। —বৃন্ত (-अ) सं—पत्ती समेत ताडकी टहनी, ताडकी पत्तीका पंखा। —শাঁস स—कच्चे ताडफलके बीयेका गुद्दा। [होनेवाला।

তালব্য (-अ) वि—तालू से उच्चारित

তালা सं—কুলুপ ताला, तोप आदिके छूटने के ऊँचे शब्दसे उत्पन्न सामयिक बहरापन (কানে— লাগা)।

তালাক सं—तलाक, पत्नीत्याग। [का शब्द।

তালি सं—পটি, জোড টাঁকা ; ताली, हथेलियों

তালিকা सं—दर फिहरिस्त, सूची।
তালিম सं—तालीम, उपदेश।
তালু सं—टोटका तालू।
তালুই, তাউই सं—भाई या बहनके ससुर।
তালুক सं—ताल्लुका, भूसम्पत्ति। —দার सं—ताल्लुकेदार। —দারি सं—ताल्लुकेदारी।
তাশ (তাস) सं—तास (—খেলা, —পেটা)।
তাসান (-নো), তাসানো (क्रि परि १०)—गड्ढेके भीतरसे तास खींच कर ऊपर रखना, तास फेंटना।
তাহা, তা सर्व—वह, उस (তা থেকে उससे)।
তাহাকে, তাহার, তাঁহাকে, তাঁহার सर्व—उसको, उसका, उनको, उनका।
তাহাতে, তাতে सर्व—उसमें, उससे। क्रि वि—उसलिए, तो, उसके बाद।
তাহে क्रि वि—तब उसपर, उसलिए।
তিক্ত (-अ) वि—তিত कड़ुआ (नीम)।
তিড়বিড় सं—छटपटी, चंचलता प्रकाश। তিড়বিড়ে वि—चंचल।
তিত (-अ), তিতো, তেতো वि=তিক্ত।
তিতা (क्रि परि ५)—ভিজা भींगना।
তিতান (-নো), তিতানো (क्रि परि ११)—ভিজানো भिंगोना।
তিত্তির सं—तीतर।
তিথি सं—तिथि, मिती, प्रतिपदा आदि।
তিন वि, सं—तीन, ३। তিনটে वि—तीन।
তিনি सर्व—वे, वह (आदरार्थक एकवचन)।
তিন্তিড়ী सं—তেঁতুল इमली।
তিপ্পান্ন (-अ) वि, सं—तिरपन, ५३।
তিমি सं—ह्वेल मछली, तिमि गिल whale
তিমিত (-अ) वि—निश्चल स्थिर।
তিমির सं—अंधकार, अंधेरा।
তিয়াষ सं—तृषा प्यास।
তিয়াষিত (-अ) वि तृषा।
তিরাশি, (-শী) वि, सं—तिरासी ८३।
তিরি सं—तारकी तिरी।
তিরিক্ষি, (-ক্ষি) वि—क्रोध-प्रवण चिड़चिड़ा, गुस्सैल (—মেজাজ)।
তিরিশ, वि, सं—त्रिश तीस, ३०।
তির্যক वि—वक्र टेढ़ा, तिरछा; जिसका शरीर भूमिके समानान्तरमें है। তির্যগ্‌, যোনি सं—पशु आदि प्राणी।
তিল सं—तिल, बहुत थोड़ा परिमाण (—মাত্র, তিলার্ধ, তিল তিল করিয়া, তিলে তিলে); शरीरमें काला दाग। —কাঞ্চন सं—श्राद्धके पहले सुवर्णसहित तिलका दान। —পাটি सं—तिलकी पट्टी, एक मिठाई।
তিলক सं—ফোঁটা तिलक, टीका (—ধারণ, —কাটা, —পরা)। —সেবা सं—सारे शरीर में तिलक लगाना।
তিলী सं—तेली।
তিলেক वि—तिल-मात्र, थोड़ा।
তিষ্ঠান (-নো), তিষ্ঠানো, তিষ্ঠনো (क्रि परि १७)—थामा रहना, बसना, ठहरना, सहना।
তিসি सं—तीसी, अलसी।
তিস্‌রা वि, सं=তেসরা।
তীক্ষ্ণ (তীক্ষ্ন-अ) वि—नुकीला (—বাণ), सूक्ष्म (—বুদ্ধি), उग्र, तीव्र (—স্বর, —বিষ)।
তীব্র (-अ) वि—প্রখর, কড়া तेज (—রৌদ্র) तीव्र, उग्र।
তীর सं—কূল, তট तीर, तट। তীরস্থ (-अ) वि—तीरमें स्थित, तटपरका; मृत्युके समय गंगा-तीरमें लाया हुआ।
তীর सं—বাণ, শর बाण, तीर। তীরন্দাজ सं—तीर दाज, तीर चलानेवाला।
তীর্ণ (-अ) वि—উত্তীর্ণ दूसरे पार गया हुआ, उत्तीर्ण।
তীর্থ सं—तीर्थ, पवित्र स्थान (—করা—तीर्थ

दर्शन करना) ; गुरु (সতীর্থ) ; एक सरकारी शास्त्रीय उपाधि (কাব্য—, বেদান্ত—)। —काक सं—तीर्थके कौएकी तरह लालची।

তু सं—कुत्ते बिल्ली आदिको बुलानेका शब्द।

তুই सव—तू। —তোকারি सं—तू, तेरा आदि अपमान-जनक शब्द।

তুক सं—जादू टोना, वशीकरण-मंत्र। —তাক सं—जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र।

তুখড়, তোখড় वि—चतुर, दक्ष।

তুঙ্গ (-अ) वि—ऊंचा, उन्नत। —ভদ্রা स—मैसूरकी एक नदी।

তুচ্ছ (-अ) वि—तुच्छ, हीन, नीच। —তাচ্ছিল্য (-अ), (—তাচ্ছিল্য) स—अवज्ञा, अनादर, अपमान।

তুড়ি सं—अंगूठे और मध्यमा उंगलीके द्वारा शब्द चुटकी। —দেওয়া क्रि—संगीतमें ताल देने जम्हाई लेनेके दोषका खंडन करने लापरवाही दिखाने आदि के लिए चुटकी बजाना।

তুড়িয়া, তুড়ে (क्रि परि ६)—धमका कर (তুড়ে দেওয়া) ; जोरसे पूर्ण शक्तिसे।

তুণ্ড (-अ) सं—मुख, चोंच।

তুঁত सं—शहतूत।

তুঁতিয়া, তুঁতে सं—तूतिया।

তুন্দ सं—भूंड़ि मोटा पेट, तोंद।

তুফান सं—तूफान, आंधी।

তুবড়ান (-নো), তুবড়ানো, তুবড়নো, তোবড়ানো (क्रि परि १८)—টোল খাওয়া, চোপসানো भीतर से हवा या रस निकल जानेसे सिकुड़ना, पिचकना। वि—सिकुड़ा या पिचका हुआ (—ঘটি, —গাল)।

তুবড়ি सं—तुबड़ी, एक आतश बाजी (मिट्टी के घटमें से आगकी चिनगारियाँ छूटती हैं) ; मदारीकी वंशी, तूंबी।

তুমি सर्व—तुम (अकेले)। [-ঝগড়া)।

তুমুল वि—ঘোরতর भयानक, घोर (-युद्ध,

তুম্ব, তুম্বি, তুম্বী स—লাউ लौकी ; লাউয়ের খোল तूंबी।

তুরগ, তুরঙ্গ (-अ), তুরঙ্গম सं—घोडा।

তুরপুন सं—ভোমর बरमा drill.

তুরস্ক, তুরুস্ক (-अ) सं—तुर्किस्तान।

তুরুক সওয়ার सं—घोड़-सवार।

তুরুপ सं—रंगका ताश दे कर बाजी लेना।

তুর্ক, তুর্কী सं—तुर्क, तुर्की।

তুল वि—তুল্য समान, एकसा। —কালাম सं—भारी झगड़ा।

তুলট सं—रूईसे बना कागज, अपने शरीरके वजनके समान सोना चाँदी अन्न आदिका दान।

তুলতুল वि=তলতল।

তুলনা सं—उपमा, मिलान ; सादृश्य। তুলনীয় (-अ) वि—तुलनाके योग्य। [सं=তুলট।

তুলা सं—দাঁড়িপাল্লা तराजु, तुलना। —দান

তুলা, তূলা, তুলো सं—रूई (-ধোনা, -পেঁজা)।

তুলান (-নো), তুলানো, তুলনো, তোলানো (क्रि परि १२)—उठवाना, उखड़वाना।

তুলি, (-লী, -লিকা), তূলি सं—बालोंकी कलम। [हुआ

তুলিত (-अ) वि—तुलना की हुई ; तौला

তুল্য (-अ) वि—समान, एकसा, बराबर। —মূল্য वि—समान मूल्यका, बराबर वाला।

তুষ सं—धानका चोकर।

তুষিত (-अ) (क्रि परि ६)—तुष्ट किया।

তুহিন सं—हिम, पाला।

তূন, তূনীর स—तीर रखनेका चोंगा, तूण।

তূরী, তূর্য (-अ) सं—तुरही।

তূর্ণ (-अ) क्रि वि—शीघ्र, जल्दी।

তূল सं—তুলা रुई।

তূলি, তূলিকা, তূলী सं =तूलि। [मौनभाव।
তূষ্ণী सं—मौन, चुप्पी। তূষ্ণীম্ভাব सं—
তৃণ (-অ) सं—घास, तृण। —জ্ঞান सं—
तृणके समान तुच्छ बोध (—করা)।
তৃষা, তৃষ্ণা सं—पिपासा प्यास, भोग करनेकी
इच्छा (বিষয়—)। তৃষিত (-অ) वि—
प्यासा। তৃষ্ণার্ত, তৃষার্ত (-অ) वि—प्यास
से क्लेशित, प्यासा।
তে वि—तीनका संक्षिप्त रूप, ति- (তেকোনা,
তেমাথা, তেশিরা, তেভাগা)। स—अधिकरण
की विभक्ति (নদীতে, ঘরতে, ইহাতে)।
তেঁই क्रि वि—তাই ; সেই জন্য उस कारण।
তেইশ वि, सं—तेईस, २३। তেইশে सं—
सौर मासकी तेईसवीं तारीख।
তেওড়ান (तेंवड़ानो), তেওড়ানো (क्रि परि २)
—বাঁকিয়া যাওয়া टेढ़ा हो जाना।
তেজ सं—शक्ति, पराक्रम, प्रभाव, असर ;
प्रकाश। তেজস্কর वि—शक्तिवर्धक, उत्तेजक,
प्रकाश देनेवाला।
তেজপত্র, তেজপাতা, তেজপাত सं—तेजपत्ता।
তেজবরে सं—तीसरी बार विवाह करनेवाला।
তেজারত सं—तिजारत, व्यापार। তেজারতি
सं—महाजनी, सूद पर रुपये लगानेका
व्यापार। তেজারতী वि सूदी (—কারবার)।
তেজাল (-অ), তেজালো वि তেজস্কর।
তেজিমন্দি स—तेजी-मंदी भावका उतार-
चढ़ाव।
তেজিল (-অ) (क्रि परि १)—त्यागा।
তেজী, তেজস্বী वि—तेजस्वी, प्रतापी।
তেজীয়ান वि—शक्तिमान, बली।
তেজোময় वि—प्रकाश-युक्त।
তেড়ছা, তেরছা (तैढ़्छ), (—চা), তেড়া, ঢেড়া
वि—बाँका टेढ़ा (—চাহনি—तिर्छी नजर)।
তেড়ি सं=টেড়ি।

তেড়ে क्रि वि—ताड़ा करिया पीछा करके।
তেতলা वि—त्रितल तिम जिला।
তেতাল্লিশ वि, सं—तैंतालीस, ४३।
তেঁতুল सं—इमली। তেঁতুলে বিছা सं—गोजर,
कनखजूरा।
তেতো वि=তিক্ত।
তেত্রিশ वि, सं—तैंतीस, ३३।
তেপান্তর सं—जनहीन विशाल मैदान।
তেপায় सं—तिपाई।
তেমন (तैं-) क्रि वि—সেই প্রকার उसी प्रकार।
वि—वैसा। তেমনি वि—ठीक उसी प्रकार
का। क्रि वि—उसी समय। তেমনই वि—
সেই প্রকারই उसी प्रकारका।
তেমাথা सं—तिमुहानी।
তেমোহানা सं—तीन नदियोंका संगम।
তেয়াগ स—त्याग।
তেরচা वि—তেড়ছা। [कड़ी बात।
তেরিমেরি स—तेरी ऐसी-तैसी, एक गाली,
তেরিয়া वि—ढीठ, मारनेमें उतारू।
তেল सं—तेल, इमड (—হওয়া)। —কুটে,
—চিটে वि—तेलसे मैला। তেলা वि—तेलहा,
चिकना। [का एक फल।
তেলাকুচা, (-কুচো) सं—परवलके आकार
তেলাপোকা सं—আরসোলা तिलचटा।
তেলী स—तेली, तेल बेचनेवाली एक जाति।
स्त्री—তেলিনী।
তেলেগু स—तेलगू भाषा।
তেলো सं—হাত পায়ের চেটো हथेली, तलवा।
তেষট্টি वि, सं—तिरसठ, ६३।
তেষ্টা स—তৃষ্ণা प्यास।
তেসরা स—तीसरी तारीख।
তেহত্তর वि सं—तिहत्तर, ७३।
তেহাই स—तिहाई, तीसरा हिस्सा।
তেহারা वि—तेहरा, तीन लड़ोंवाला।

তৈয়ার, তৈয়ারি, তৈরী सं—তন্ত্রের निर्माण, गठन, बनावट। তৈয়ারী, তৈয়ার, তৈরী वि—बनाया हुआ (—জামা), तैयार (খাবার জন্ত—), पक्का (—আম)।

তৈল सं—तेल। —কার सं—कलू कोल्हू से तेल पेरनेवाला। —কিট্ট (-अ) स—খোল खली। —পায়িকা सं—তেলাপোকা। —যন্ত্র (-अ) सं—ঘানি कोल्हू। —সেক सं—शरीरमें तेल लेपन। তৈলিক सं—तेली। वि—तेल सम्बन्धी।

তো अव्य—तो, तव, उस हालतमें।

তোকমারি सं—तुकमलगा, तिल-सा एक छोटा बीया (भिगो कर पुल्टिस देते हैं)।

তোকে, তোদের सर्व—तुझे, तुम लोगोंका।

তোথোড় वि=तुथड़।

তোড় सं—तेज धार (জলের—)। [साधन।

তোড়জোড় स—तैयारी, असबाब, सामान,

তোড়া सं—रुपयोंकी थैली (টাকার—), गड्डी (নোটের—); फूलोंका गुच्छा।

তোতলা (तोत्‌ला) वि—तुतला।

তোতলান (-नो), তোতলানো (क्रि परि १०) —तुतलाना। তোতলামি सं—तुतलाहट।

তোফা वि—तोहफा, उमदा।

তোবড়া वि—টোল খাওয়া सिकुड़ा हुआ, पिचका हुआ। [=তুবড়ান।

তোবড়ান (-नो), তোবড়ানো (क्रि परि १०)

তোবা सं—किसी अनुचित काय या पापके न करने या अनुताप करनेके लिए मुसल्मानों की उक्ति, तोबा।

তোমরা, তোমাকে सव—तुमलोग, तुम्हें।

তোয় (-अ) सं—जल। —দ, —ধর सं—बादल, मेघ। —ধি, —নিধি सं—समुद्र।

তোয়াক্কা स—परवाह, डर।

তোয়াজ सं—सेवा, खुशामद

তোয়ালে सं—तौलिया।

তোরঙ্গ (-अ) सं—पटरा संदूक, पेटी।

তোরণ सं—সিংহদ্বার, ফটক फाटक।

তোলন सं—ওজন করা तौलना, उठाना। তোলিত (-अ) वि—तौला हुआ, उठाया हुआ।

তোলপাড় सं—हलचल उलट-पलट आंदोलन।

তোলা (क्रि परि ६)—उठाना; उन्नत करना, सग्रह करना (চাঁদা—); उद्धृत करना, हवाला देना (শাস্ত্র হইতে শ্লোক—), जगाना, उखाड़ना, निकाल देना, खींचना (ফোটোগ্রাফ—); कै करना (শিশুর দুধ—)। কানে—, ध्यानसे सुनना, सुनकर काम करना। গা—, बैठे से उठना। শোধ—, बदला लेना। হাই—, जम्हाई लेना। वि—उठाया हुआ (—জল, —ফুল); जिसे उठाया जा सकता है (—উনান)। सं—बाजारका मालिक वेचने वालोंसे चीजोंका जो अंश या पैसा वसूल करता है।

তোলান (-नो), তোলানো क्रि=তুলান।

তোলাপাড়া सं—তোলপাড় हलचल, बार बार चिंतन (মনে মনে—করা)।

তোলো स—चपटी हंडी।

তোশক सं—गद्दा।

তোষণীয় (-अ) वि—तुष्ट करने योग्य।

তোষামোদ सं—খোশামোদ खुशामद।

তোষামুদে वि—खुशामदी, चापलूस।

তৌজি सं—मालगुजारीकी फिहरिस्त।

তৌল (तउल) सं—ওজন वजन, तौल, तराजू। তৌলিক स—तौलनेवाला।

তৌলা (क्रि परि १), তৌলান (-नो), তৌলানো, তৌলনো (क्रि परि १५)—ওজন করা तौलना।

ত্যক্ত (-अ) वि—छोड़ा हुआ, वर्जित, फेका हुआ, परेशान, तंग, दिक।

ত্যাজ্য (-अ) वि—त्यागने योग्य। —পুত্র स—घरसे निकाला हुआ तथा सपत्तिसे वंचित पुत्र।

ত্যাঁদড় वि—बेहया, दुष्ट।

ত্রস্ত (-अ) वि—सन्त्रस्त, भयभीत।

ত্রি वि—তিন तीन। —কুল सं—पिता माता और ससुरका कुल। —জগৎ स—स्वर्ग पृथ्वी और पाताल। —তল वि—তেতলা तिमंजिला। —তাপ सं—आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक दुःख। —দিব सं—स्वर्ग। —পত্র स—तीन पत्तियों वाला, बेलपत्ती। —পদী सं—तीन पद युक्त कविता; तिपाई। —পুণ্ড্র (-अ), —পুণ্ড্রক सं—त्रिपुंड। —পুর सं—बंगालके पूर्व एक राज्य। —বর্গ (-अ) स—धर्म अर्थ काम ये तीन पुरुषार्थ। —বার্ষিক वि—तीन सालसे नियुक्त या घटित। —ভঙ্গিম वि—त्रिभंग (—ঠাম)। —সীমা स—तीन प्रान्त, निकटता, समीपता (ত্রিসীমায় না যাওয়া)।

ত্রিশ, তিরিশ वि, स—तीस, ३०।

ত্রিহুত स—विहारका तिरहुत जिला।

ত্র্যহস্পর্শ सं—एक दिनमें तीन तिथियोंका मेल।

ত্বদীয় (-अ) सर्व—तुम्हारा।

ত্বরা सं—शीघ्रता, जल्दी।

———

থ

থ वि—কিংকর্তব্যবিমূঢ়, হতভম্ব हक्कावक्का, भौचक्का (—হওয়া)।

থই, থাই सं—তল तला (অথই জল); ঠাঁই आश्रय (—পাওয়া)। থইথই सं—बाढ़का लक्षण प्रकाश (জল—করা)।

থকথক स—गाढ़ा होनेका लक्षण प्रकाश (কাদা—করছে)। থকথকে वि—थक्का बंधा हुआ (—দই)।

থকা (क्रि परि १)—थकना (থকে গেছে)।

থতমত (-अ) वि—हक्कावक्का, भौचक्का (—খাওয়া)।

থপ सं—नरम भारी वस्तुके गिरनेका शब्द (—করে বসা। লঘু अर्थमें—থুপ। जोरसे ধপাস। बार बार—থপথপ, থুপথুপ)

থমক स—रुक रुक कर चलना।

থমকান (-नो), থমকানো (क्रि परि १६)—एकाएक रुकना। থমকানি स—एकाएक रुक जाना।

থমথম सं—स्थिरता, स्तब्धताका लक्षण प्रकाश (শরীর—করছে, আকাশ—করছে)। থমথমে वि—स्थिर, निश्चल (—মেঘ)।

থর सं—स्तर तह (থরে থরে মেঘ)।

থরথর वि—कंपित। सं—कंपन, थरथरी। থরথরানি सं—কাঁপুনি थरथरी, थरथराहट, कंपकंपी।

থরহরি क्रि वि—थरथर कंपनके साथ।

থলথল वि—थलथल, मोटाईके कारण झूलता या हिलता हुआ (—করা)। থলথলে वि—स्थूल और कोमल (—মাংস)।

থলিয়া, থলি सं—झोली, थैली। থলে सं—বড় থলি, बड़ा थैला, बोरा।

থসথস स—गिलेपन और ढीलेपनका लक्षण प्रकाश (—করে)। থসথসে वि—लचीला।

থাই स=থই।

থাক सं—স্তর तह।

থাকা (क्रि परि ३)—রহা रहना, ठहरना, टिकना, रुकना, अभ्यास रहना (আমি

রোজ ব্যায়াম করিয়া থাকি)। থাকিয়া থাকিয়া, থেকে থেকে ক্রি বি—মাঝে মাঝে बीच-बीच में, रह-रह कर।

থান सं—कपडेका थान, सफेद किनारेकी धोती। বি—গোটা, আস্ত साबुत (—ইট)।

থানা सं—थाना, पुलिसकी चौकी, छावनी; पड़ाव। [तमाचा।

থাপ্পড়, থাবড়া, থাবড় सं—চড়, চাপড় थप्पड़,

থাবড়ান (-নো), থাবড়ানো (ক্রি परि १६) —চড় মারা थाप्पड़ मारना। [বসা)।

থাবড়ি सं—जमीन पर चूतडका दबाव (—থেয়ে

থাবা सं—पंजा, हथेली (—মারা)। বি—हथेली भर (থাবা থাবা ভাত)।

থাম सं—स्तम्भ खंभा, খুঁটি बल्ला।

থামা (ক্রি परि २)—रुकना, थमना, ठहरना, स्थिर होना, चुप रहना। [रोकना।

থামান (-নো), থামানো (ক্রি परि १०)—

থার্মমিটার सं—तापमान यंत्र Thermometer

থাল, থাল सं—थाली।

থাসা (ক্রি परि २)—ঠেকানো गूथना, मसलना (ময়দা—), ठूंसना।

থিকথিক सं=থুকথুক।

থিতান (-নো), থিতানো, থিতনো (ক্রি परि ११)—थिराना, तलछट जमना।

থিয়েটার सं—नाट्यशाला, अभिनय, नाटक।

থু, থুঃ सं—थू, थूकनेका शब्द। अव्य—छि।

থুকথুক, থিকথিক सं—अनेक कीड़ोंका एक स्थानमें समावेश (পোকা—করছে)।

থুড়থুড়, থুত্থুড় सं—बुढ़ापेका लक्षण प्रकाश (—করা)। থুড়থুড়ে, থুত্থুড়ে वि—जराग्रस्त (—বুড়ো)।

থুড়ি सं—भूल या अनुचित वाक्य अथवा कार्य के वापस लेनेका शब्द, तोबा।

থুৎকার सं—थूकना या उसका शब्द।

থুতনি, থুঁতনি, থুঁতি सं—चिबुक ठोडी, ठुड्डी।

থুতু (-থু) सं—निष्ठीवन थूक (—ফেলা)।

থপ্থপ सं=থপথপ।

থুপি सं—গুছি गुच्छी।

থুবড়া (-ড়ো) वि—স্থবির बहुत बुड्ढा, चलने में असमर्थ। स्त्री—থুবড়ী।

থুবড়ান (-নো), থুবড়ানো, থুবড়নো (ক্রি परि १८)—औंधे गिरना (মুখ থুবড়ে পড়া)।

থেই, থই सं=তাথই।

থেকে ক্রি বি—হইতে से (কোথা—, সেই—); চেয়ে अपेक्षा (তোমা থেকে ভালো)। থেকে থেকে ক্রি বি—থাকিয়া থাকিয়া।

থেঁত (-अ), থেঁতো वि—পিষ্ট, কুট্টিত पीसा हुआ, कूटा हुआ (শীলে—করা, মুখ—করা)।

থেঁতলান (थँतुलानो), থেঁতলানো (ক্রি परि १६)—কোটা, ছেঁচা कूटना, पीसना, मसलना; सताना, रौंदना।

থেবড়া (थैब्ड़ा), থ্যাবড়া वि—চেপটা चिपटा (-नाक)।

থেবড়ান (थैब्ड़ानो), থেবড়ানো (ক্রি परि १६)—চেপটা করা दबा कर चिपटा बनाना। वि—चिपटा।

থেল (-अ), থেলো वि—ডাবা बड़ा (हुक्का)।

থোওয়া ক্রি=থোয়া।

থোক सं—মোট कुल (—দশ টাকা), थोक, इकट्ठी वस्तु; समूह, गड्डी (থোকে থোকে)।

থোকা सं—গুচ্ছ, থোল गुच्छा।

থোড় सं—केलेके पेड़के भीतरका डंडा (इसकी तरकारी बनायी जाती है)।

থোড়া वि—थोडा, अल्प, कुछ। থোড়াই वि—थोडेही, कुछभी नही (—কেয়ার করি)।

থোড়া (ক্রি परि ६)—टुकडे टुकडे करके काटना।

থোতনা सं—बडी ठुड्डी।

থোঁতা वि—চড বড়া (—মুখ ভোঁতা)।

থোপনা, থোবনা, থোপা, থোপ सं—গুচ্ছ गुच्छा, फुंदना, झब्बा।

থোয়া (क्रि परि २०)—রাখা रखना।

থোলো सं—গোছা गुच्छा (আমের—, চাবির—)।

থ্যাবড়া वि—থেবড়া।

দ

-দ प्र—देनेवाला (বাজিদ, জলদ)। स्त्री—-দা (বরদা)।

দ सं—দন্ত।

দই सं—দধি दही (-পাতা)।

দংশ, দংশক सं—ডাঁশ, বড মশা बड़ा मच्छड़।

দংশন सं—কামড় दाँतसे काटना, डसना (पद्यमें—দংশিল)।

দংশান (-नो), দংশানো (क्रि परि १६)—দংশন করা दाँतसे काटना, डसना।

দংষ্ট্রা सं—बड़ा दाँत। দংষ্ট্রীন (-अ), দংষ্ট্রী वि, सं—बड़े बड़े दाँतों वाला।

দক্ষ (दक्ख-अ) वि—पटु निपुण।

দক্ষিণ सं—दक्षिण दिशा। वि—डान दहिना (—হস্তের ব্যাপার, भोजन)।

দক্ষিণাপথ सं—विन्ध्याचल पर्वत-मालासे दक्षिण का देश, दाक्षिणात्य।

দক্ষিণাবর্ত (-अ) वि—जिसका पेंच दहिनी ओर है (—শঙ্খ); दहिनी ओर घूमनेवाला। सं—दाक्षिणात्य।

দক্ষিণামুখ, দক্ষিণাস্য (-अ) वि—दक्षिणकी ओर मुँह किया हुआ। [(—হওয়া)

দক্খিনা, দখিনা वि—दक्षिण दिशासे आनेवाली

দখল सं—अधिकार दखल (সম্পত্তি—করা); ज्ञान (শাস্ত্রে—থাকা)। দখলিকার वि, सं—अधिकार वाला, मालिक। দখলী वि—दखल सम्बन्धी (—স্বত্ব); दखलके अन्दर।

দখিন सं—दक्खिन। দখিনা वि-दक्खिन का (—বাতাস)।

দগদগ सं—जलने या घावका लक्षण प्रकाश (আগুন—করছে)। দগদগে वि-ताजा (—ঘা)।

দগ্ধ (-अ) वि—পোড়া जला हुआ; दुःखित (—হৃদয়), भाग्यहीन (—কপাল)।

দগা (क्रि परि १)—सताना, जलाना, दुःख देना।

দগান (-नो), দগানো (क्रि परि १६)—सताना, दुःख देना या पाना।

দঙ্গল सं—জন দল, भीड़।

দজ্জাল वि—দুর্দান্ত उग्र, प्रचंड, कर्कशा (—মেয়ে, —বৌ)।

দড় (-अ) वि—দৃঢ় मजबूत (বাঁশের চেয়ে কঞ্চি—, गुरु गुड़ चेला शक्कर)।

দড়কচা वि—দরকচা।

দড়া सं—কাছি रस्सा (দড়ি-)।

দড়াম सं—धड़ाम, तोपके छूटनेका शब्द।

দড়ি सं—রশি, রজ্জু रस्सी।

দণ্ড (-अ) सं—दंड, डंडा, सजा (প্রাণ—, অর্থ—); हरजाना, जुर्माना, राजनीतिमें दमन (সাম, দান, ভেদ, দণ্ড); ६० पल या २४ मिनटका समय (দণ্ডেক—थोड़ी देर)।

দণ্ডনীয় (-अ), দণ্ডার্হ (-अ), দণ্ড্য (-अ) वि—दंड पानेके योग्य। —বিধি सं—फौजदारी कानून। —বিধান सं—दंडदान।—মুণ্ড सं—कत्लकी सजा (দণ্ডমুণ্ডের কর্তা)।

দণ্ডায়মান वि—খাড়া खड़ा।

দত্ত (-अ) वि—दिया हुआ अर्पित। सं—कायस्थोंकी एक उपाधि। स्त्री—দত্তা (বাগ—)। —হারী, দত্তাপহারী (-হারক) वि—दान दे कर जो छीन लेता है।

দদ্রু (- द्रु) सं—দাদ दाद ।

দধি सं—দই दही । —মঙ্গল सं—विवाह आदि के दिन भोरमें किया जाने वाला एक उत्सव (इसमे छोटे बच्चोंके साथ दुलहा या दुलहिन या बहु दही च्यूड़ा आदि खाते हैं) ।

দন্ত (-अ) सं—দাঁত, দশন दाँत । —কাষ্ঠ सं—দাঁতন दतौन । —धावन स—दाँत माँजना, मजन, दतौन । —শূল स—দাঁত-কনকনানি दाँतका दर्द । —স্ফুট सं—दाँत बैठाना, कठिन विषयका बोध (—করা) ।

দন্তী सं—दाँत वाला ; हाथी । দন্তুর वि—দাঁতালো दाँतवाला । দন্তোদ্গম, দন্তোদ্ভেদ सं—দাঁত ওঠা दाँतका निकलना ।

দপ स—आगके जलनेका शब्द (—ক'রে ব'লে ওঠা) । দপদপ सं—अग्निकी शिखा या उज्ज्वलता प्रकाश (আগুন—করা) ; दद, टीस (ফোড়া—করা) ।

দপ্তর स—दफ्तर, आफिस, कागजोंका बंडल, कचहरीके कागजात । —খানা सं—दफ्तर, कागजात रखनेका कमरा । দপ্তরী सं—दफ्तरी, जिल्दसाज, दफ्तरमें कागज स्याही कलम आदि रखने वाला ।

দফা सं—বার, ক্ষেপ दफा (দফায় দফায়), हालत (—রফা, —শেষ) । —দার सं—जमादार । —দারি सं—जमादारका पद या काम । দফে क्रि वि—दफामें, पुन । দফে দফে क्रि वि—बार बार, किस्तसे ।

দম (-अ) सं—दमन, इंद्रिय-सयम ।

দম (दम्) सं—साँस, दम (—বন্ধ, —নওয়া, —ফাটা), घड़ीकी कमानीमें पेच (—দেওয়া) ; धोखा (দমবাজ, धोखेबाज), नगेमें दम , भाफ या थोड़ी आँच (দমে সিদ্ধ হওয়া), भाफमें सिझायी हुई तरकारी आदि (আলুর), धम शब्द । দমাদম स—धमाधम ।

দমক सं—दमन करनेवाला ; वेग, धक्का ।

দমকল सं—जल निकालनेका कल, दमकल ।

দমকা वि—झोंकेदार (—হাওয়া) ।

দমা (क्रि परि १)—उदास होना, दिल टूटना, उत्साह-भंग होना ।

দমান (-নো), দমানো (क्रि परि १०) —दमन करना, दिल तोड़ना । দমিত (-अ) वि—दमन किया हुआ, संयत, वशीभूत ।

দম্বল सं—दही जमानेके लिए दूधमें दिया जानेवाला दहीका हिस्सा या खटाई ।

দম্ভ (-अ) स—घमंड, शेखी, अहंकार । দম্ভী वि—घमंडी, शेखीबाज ; पाखंडी ।

দয়িত (-अ) सं—पति, शौहर । स्त्री—দয়িতা ।

দর सं—दर, भाव, मूल्य (—করা, —কষা) । —দস্তুর सं—दर-भाव ।

দরকাঁচা (-কঁচা, দড়-) वि—पका परंतु भीतर में कडा । [जरूरी ।

দরকার सं—प्रयोजन, जरूरत । দরকারী वि—

দরখাস্ত (-अ) सं—আবেদন পত্র दरख्वास्त ।

দরগা सं—दरगाह, मकबरा ।

দরজা सं—दरवाजा, द्वार ।

দরজী सं—दर्जी ।

দরদ सं—ব্যাথা दर्द ; प्रेम, स्नेह, सहानुभूति, हमदर्दी । দরদী वि—ব্যথার ব্যথী हमदर्द ।

দরদর सं—अधिक प्रवाह (—করিয়া অশ্রু পড়া) ।

দরদালান सं—कमरा-सा घिरा हुआ बरामदा ।

দরবিগলিত (-अ) वि—धारके रूपमें प्रवाहित (—অশ্রু) ।

দরমা स—चटाई ।

দরাজ वि—उदार, दानशील (—হাত) ।

দরি स—শতরঞ্চি दरी ।

দরিদ্র (-अ) वि—গরিব गरीब । দরিদ্রতা सं—गरीबी ।

দরুণ अव्य—হেতু सबबसे, कारण ।

দরোয়ান, (দারো-) सं—दरबान। দারোয়ানি सं—दरबानका काम।

দর্প (-অ) सं—घमंड, गर्व। —হর, —হারী वि—घमंड तोड़ने वाला। দর্পিত (-অ, वि—गर्वित घमंडी। দর্পী वि—अहंकारी।

দর্বি, দর্বী सं—হাতা कलछुल।

দর্শন सं—दृष्टि दर्शन; ज्ञान (ভুয়ো—), तत्त्व ज्ञान (-শাস্ত্র), आँख। দর্শনী सं—প্রণামী भेंटके लिए दिया जाने वाला धन। দর্শিত (-অ) वि—दृष्ट; दिखाया हुआ।

দর্শা (क्रि परि १)—देखा जाना, होना, घटना (উপকার দর্শে)। [দেখানো दिखाना।

দর্শান (-নো), দর্শানো (क्रि परि १६)—

দল सं—गरोह, दल (ডাকাতের—; —পাকানো); समूह (দুষ্ট—); पत्ती (বিল্ব—); पंखड़ी (ফুলের—, নয়ন—), सिवार। —বল सं—अपने पक्षके लोग। দলাদলি सं—समाजमें दो दलोंका विरोध जिसमें दूसरे दलवालोंके यहाँ भोजन भी नही करते।

দলন स—मर्दन, পেষণ मसलना, मर्दन, शासन। वि—शासन करनेवाला। स्त्री—দলনী (দনুজ—)।

দলা (क्रि परि १)—मसलना, कुचलना।

দলান (-নো), দলানো (क्रि परि १०)—कुचलवाना, मसलवाना। দলিত (-অ) वि—মর্দিত कुचला हुआ (পদ—, —ফণিনী); मसला हुआ, सताया हुआ, दलित।

দলিল स—दस्तावेज।

দলো स—गुड़से रस निकल जाने पर जो चीनी तैयार होती है; खाँड़।

দশ वि, स—दस, १०। सं—जनता, पंच (দশের কথা)। —ই (दश अइ) सं—सौर मासकी दसवीं तारीख। দশক वि—दसवाँ। सं-दश संख्या, दहाई। —দশ सं—दशविध संस्कार। —দশকর্মান্বিত (-অ) वि—दशविध संस्कारोंमें अभिज्ञ पुरोहित, दशविध संस्कार-युक्त। —চক্র सं—दस या अधिक आदमियोंका षड्यंत्र (—চক্রে ভগবান ভূত)। দশধা क्रि वि—दस भागोंमें, दस प्रकारसे, दसों दिशाओंमें। —পঁচিশ सं—कौड़ियोंका एक खेल। —বাইচণ্ডী स्त्री—दश भुजाओं वाली देवी दुर्गा, कर्कशा नारी। —মহাবিদ্যা स्त्री—देवीके दस रूप (কালী, তারা, ষোড়শী, ভুবনেশ্বরী, ভৈরবী, ছিন্নমস্তা, ধূমাবতী, বগলা, মাতঙ্গী ও কমলা)। —মিক सं—दशमलव

দশন सं—দাঁত दाँत, दंशन।

দশা सं—हालत, दशा, जन्म समयके ग्रहादि की स्थितिके कारण असर; भक्तिभावके आवेशसे बेहोशी, समाधि।

দশাসই वि—লম্বাচওড়া लंबा और मोटा (পুরুষ—)। [खुला सूत।

দশি सं—কাপড়ের ছিলা कपड़ेके किनारेवाला

দষ্ট (-অ) वि—डसा हुआ (সর্প—); दाँत से कटा हुआ (কীট—)।

দস্তখত (दस्तखत) स—হাতের সহি, স্বাক্ষর हस्ताक्षर, दस्तखत।

দস্তা (दस्ता) स—जस्ता धातु।

দস্তানা स—হাতমোজা दस्ताना।

দস্তাবেজ सं=দলিল।

দস্তুর सं—প্রথা दस्तूर, नियम, रवाज, रीति (—মত)। দস্তুরি स—दस्तूरी, दलाली।

দস্যি वि—ऊधमी, उद्दंड (—ছেলে)।

দস্যু स—ডাকাত डाकू। দস্যুতা स—डकैती।

দহ, দ स—अथाह जल, संकट, भँवर।

দহন स—दाह, जलन, अग्नि। দহনীয় (অ) वि—दहनेके योग्य।

দহরম सं—মেলামেশা মেল-মিলাপ।

দহলা सं—ताशका दहला।

দহা (क्रि परि १)—পোড়া जलना, जलाना।
 দহ্যমান (दभ्यमान) वि—जलता हुआ।

দা सं—দাত্র, কাটারি कटारी, हँसुआ, काटनेका एक औजार। [বড়দা)।

দা सं-'দাদা' का संक्षिप्त रूप (ছোড়দা,

দাই स्त्री-धाइ धाय, नौकरानी।

দাইল सं=দাল।

দাউদাউ सं-आगके जलनेका शब्द।

দাওয়া सं—রোয়াক चबूतरा, দাবি, পাওনা दावा, लेना।

দাওয়াই, দাবাই सं-दवा, औषध।

দাঁও, দাঁ सं—दाँव, मौका।

দাখিল सं—पेश, दाखिल। वि—दाखिल किया हुआ, तुल्य, समान (বাবার—)। দাখিলা सं—मालगुजारी आदि की रसीद। দাখিলী वि—दाखिल किया हुआ।

দাগ सं—दाग, चिह्न, कलंक (কাদার-, চরিত্রের—, —তোলা, —ধরা, -পড়া, —হওয়া); लकीर, रेखा (—করা, —কাটা, —দেওয়া)। দাগী वि-दागी, दागदार, कलंकित (—আসামী, —চোর)। [दाग।

দাগড়া सं—मार या रगड़के कारण शरीरमें

দাগা सं—लिखना अभ्यास करनेके लिए आदर्श या नमूना (—বুলানো); कुश, दुख, तकलीफ; निंदा, बदनामी (—দেওয়া), धोखा। —বাজ वि—धोखेबाज, दगाबाज। —বাজি सं—दगाबाजी, विश्वासघात।

দাগা स—बड़ी मछलीकी पीठका टुकड़ा।

দাগা (क्रि परि २)—दाग देना, तपे लोहे आदिसे चिह्न लगाना, दागना (কামান—)।

দাগান (-নো), দাগানো (क्रि परि १०)—दूसरे से दाग दिलाना, दगवाना।

দাঙ্গা सं—दंगा, मारपीट।

দাঁড় सं—दाँड, नाव खेनेका बल्ला (—টানা)। वि—দণ্ডায়মান, খাড়া खड़ा (—করানো)।

দাঁড়কাক—सं—बड़ा कौआ।

দাঁড়া सं—নাখুন, डंक (কাঁকড়ার—)।

দাঁড়া सं—মেরুদণ্ড रीढ़ ((শির—)।

দাঁড়ান (-নो), দাঁড়ানো (क्रि परि १०)— খাড়া হওয়া खड़ा होना, থামা रुकना, ठहरना (দাঁড়াও আগি আসি); स्थिर होकर रहना (উঠানে জল—); सुप्रतिष्ठित होना (কারবার—, নিজের পায়ের উপর—)।

দাড়ি सं—শ্মশ্রু, दाढ़ी, চিবুক, থুতনি ठोढ़ी।

দাঁড়ি सं—দাঁড়িপাল্লা, তুলাদণ্ড तराजू; पूर्णच्छेदका चिह्न, पाई।

দাড়িম্ব, দাড়িম सं—ডালিম अनार।

দাঁড়ী सं—डाँड़ खेने वाला।

দাঁত सं—दाँत, दंत (—ওঠা, —খিচানো, —তোলা, —দেখানো, —বসানো)। —কপাটি सं —দাঁতে দাঁত লাগা, दाँतोंमें दाँत सट जाना।

দাতন सं—दतौन। [(—ঔষধালয়)।

দাতব্য (-অ) वि—देने योग्य, खैराती

দাতা वि, सं—देनेवाला, उदार, दानशील। स्त्री—দাত্রী। দাতৃত্ব सं—दानशीलता।

দাঁতাল (-অ), দাঁতালো वि—बड़े दाँतोंवाला।

দাত্র सं—দা।

দাদখানি सं—एक महीन चावल।

দাদন सं—पेशगी दाम, बयाना।

দাদা सं—बड़े भाई, दादा, नाना; नाती पोता आदिके लिए प्यारका सम्बोधन (अधिक प्यारमें-দাদু)। —ঠাকুর स— दूसरी जातिके द्वारा ब्राह्मणका सम्बोधन। —মহাশয় सं—दादा, नाना। —শ্বশুর स— पति या पत्नीके दादा या नाना।

দাদুর स—ব্যাঙ मेंढक।

দান सं—दान, अर्पण, उत्सर्ग। —বীর, —শৌণ্ড (-अ) वि—बड़ा दानी। —সজ্জা सं—दानके लिए सजा कर रखे हुए सामान। —সাগর सं—श्राद्धमें बहुत अधिक वस्तुओंका दान।

দানা, দানো सं—दानव, दैत्य। [योग्य।

দানীয় (-अ) सं—दानका पात्र। वि—दानके

দাপ, দাপট सं—गर्व, घमंड, झटका (ঝড়ের দাপট)। [पैर पटकना।

দাপাদাপি सं—पैर पटक-पटक कर चलना, हाथ-

দাপান (-नो), দাপানো (क्रि परि १०) —দাপাদাপি করা पर पटक-पटक कर चलना।

দাব सं—চাপ दबाव, बोझ, दमन।

দাবড়ি सं—ধমক धमकी, डाँट।

দাবা सं—शतरंजका खेल। —বোড়ে सं—शतरज खेलनेका मोहरा, गोटी।

দাবা (क्रि परि २), দাবান (-नो), দাবানো (क्रि परि १०)—চাপা दाबना, दबाना, वश में रखना (দাবিয়ে রাখা)। দাবা सं—दबा कर थाम रखना (বগল—করা)।

দাবাই सं=দাওয়াই। [वि—दावादार।

দাবি सं—दावा, नालिश; अधिकार। —দার

দাম सं—दाम, मूल्य, कीमत; गुच्छा (অলক—); माला; सिवार।

দামড়া सं—बधिया, षण्ड।

দামামা सं—दमामा, नगाड़ा। [कठिन है।

দামাল वि—जिसका दमन करना बहुत

দামিনী सं—বিদ্যুৎ बिजली।

দামী वि—कीमती।

দাম্পত্য (-अ) वि—दम्पति सम्बन्धी।

দাম্ভিক वि—দর্পী घमण्डी।

দায় सं—उत्तराधिकारसे मिलने वाली सम्पत्ति; संकट, विपत्ति (বড় দায়ে পড়েছি); अवश्य करने योग्य नैमित्तिक कर्म (কন্যা—, পিতৃ—); लाचारी (দায়ে পড়া, দায়ে ঠেকা, পেটের দায়ে)।

দায়ক वि—देनेवाला। स्त्री—দায়িকা।

দায়রা सं—फौजदारी बड़ी अदालत (—সোপর্দ)।

দায়াদ सं—वारिसी हिस्सेदार, सगोत्र; पुत्र।

দায়ী वि—देनेवाला, जिम्मेवार। स्त्री—দায়িনী।

দায়িত্ব (-अ) सं—जिम्मेवरी।

দায়ের सं—রুজু दायर।

দার सं—पत्नी, स्त्री।

দারচিনি सं=দারুচিনি।

দারণ सं—तोड़ना, फोड़ना।

দারা सं—দার पत्नी, स्त्री।

দারু सं—काठ, लकड़ी; दारू। —চিনি, (দার—) सं—दालचीनी। —ব্রহ্ম (-अ) सं—पूरीमें जगन्नाथजीकी लकड़ीकी मूर्ति।

দারুণ वि—अत्यन्त, तीव्र, उग्र, भयकर, कठोर।

দারোগা सं—दरोगा।

দারোয়ান सं—दरवान।

দার্ঢ্য (-अ) सं—कड़ापन, दृढ़ता।

দাল सं—ডাল दाल। [बरामदा।

দালান सं—পাকা বাড়ি पक्का मकान, इमारत;

দালাল सं—दलाल। দালালি सं—दलाली।

দাস सं—চাকর, भृत्य नौकर, गुलाम; कायस्थोंकी एक उपाधि। वि—अधीन (অবস্থার—)। स्त्री—দাসী। দাসখত सं—जन्म भर दास रहनेका प्रतिज्ञापत्र।

দাসমনোভাব सं—दास-सी मनोवृत्ति।

দাস্ত (-अ) सं—মলত্যাগ, ভেদ दस्त।

দাস্য (-अ) सं—दासका भाव, दासकी तरह ईश्वरकी उपासना। —বৃত্তি सं—नौकरी।

দাহ (-अ) सं—दाह, जलन; शव जलाने की क्रिया, ताप, गर्मी (জ্বরের—)। দাহন

सं—जलाना, सताना। দাহিকা वि—जलानेवाली। দাহী वि—जलानेवाला। দাহ্য (दाह्य -अ) वि—जलनेके योग्य।
দি सं—'দিদি' का संक्षिप्तरूप (ছোড় দি, বড় দি)।
দিক सं—दिशा, ओर (তাহার দিকে); पास (बाँ—)। —চক্র सं—চক্রবাল क्षितिज।
দিক वि—दिक, तंग। —দারি सं—परेशानी हैरानी।
দিকি, দিকিন क्रि—দেখি देखूँ (বল—)।
দিগকে, দিকে, দিগের, দের —बहुवचनकी विभक्तिके चिह्न। [क्षितिज।
দিগন্ত (-अ) सं—दिशाका छोर या प्रांत,
দিগ্‌দর্শন सं—दिशा प्रदर्शन; किसी विषयके बारेमें मामूली चर्चा। —যন্ত্র सं—दिशा निरूपण-यंत्र।
দিগ্ধ (-अ) वि—मिश्रित, युक्त (বিষ—)।
দিগ্‌বলয় सं=দিকচক্র। [দিগ্‌বসনা।
দিগ্‌বসন सं—दिग्वस्त्र; महादेव। स्त्री—
দিগ্‌বিদিক্ सं—দিক্ ও বিদিক্ दिशा और उलटी दिशा। वि—भला-बुरा (—জ্ঞানশূন্য)।
দিঘল वि—दीघ, लंबा।
দিঘি सं—लंबा बड़ा तालब।
দিঙ্‌মণ্ডল सं—দিকচক্র क्षितिज।
দিঠি सं—दृष्टि, नजर।
দিদি स्त्री—बड़ी बहन, जीजी, दादी नानी पोती नातिन बहन आदिका सम्बोधन। দিদিমা स्त्री—মাতামহী नानी।
দিদৃক্ষা सं—देखनेकी इच्छा। দিদৃক্ষমাণ, দিদৃক্ষু वि—देखनेके इच्छुक।
দিন सं—दिन, दिनरातका समय। —দিন क्रि वि—रोज-रोज। —পাত सं—কালযাপন समय गँवाना। —মান सं—দিনের বেলা दिनका समय। —মজুর सं—दिनके हिसाब से काम करने वाला मजदूर।
দিনেমার सं—डेनमार्क देश निवासी।
দিবা सं—दिन। —নিশি क्रि वि—दिनरात। —স্বপ্ন सं—दिनमें निद्रा या स्वप्न; मिथ्या कल्पना, ख्याली पुलाव।
দিব্য (-अ) वि—स्वर्गीय, अलौकिक। सं—सौगंध (—গালা, सौगंध खाना)।
দিব্যি वि—सुंदर (—চেহারা)। सं—सौगंध, कसम (মা কালীর—)।
দিয়া, দিয়ে विभ—द्वारा, से।
দিয়াশলাই, দেশলাই स—दियासलाई।
দিল सं—মন दिल। —খোশ वि—खुशदिल, दिलको खुश करने वाला। —দরিয়া वि—जिसका दिल समुद्रके समान उदार है।
দিশা सं—দিক दिशा (দিশেহারা, দিগ্‌ভ্রান্ত)।
দিস্তা, দিস্তে सं—২৪ তা दस्ता, २४ या २५ ताव कागजको गड्डी; मूठ (শামাদানদিস্তা)।
দীক্ষা (दिक्खा) सं—दीक्षा, मन्त्रोपदेश।
দীঘল वि—দিঘল लंबा।
দীঘি सं—দিঘি लंबा बड़ा तलाब।
দীন वि—गरीब, दुखित, विनीत। स्त्री—দীনা। —হীন वि—बहुत गरीब। দীনতা सं—गरीबी, अभाव (বুদ্ধির—)।
দীন सं—धर्म, मत (—দুনিয়ার মালিক)।
দীনার सं—अशरफी, स्वर्णमुद्रा।
দীপ सं—প্রদীপ दीपक, दीया। —শলাকা सं—दियासलाई।
দীপক वि—प्रकाश करनेवाला, उत्तेजक।
দীপন सं—प्रकाशन, उत्तेजन।
দীপান্বিতা सं—দেওয়ালির রাত্রি दीपावली, दीपावलीकी रात्रि। [दीवाली।
দীপাবলী, দীপালী, (-लि) सं—দেওয়ালি
দীপিকা वि—प्रकाशित करनेवाली। स—टीका, चाँदनी, दीपक। [प्रकाशित, उत्तेजित।
দীপিত (-अ) वि—বালা हुआ, जलाया हुआ,

দীপ্ত (-अ) वि—उज्ज्वल, चमकीला, प्रज्वलित।

দীপ্তি सं—प्रकाश, रोशनी।

দীপ্যমান वि—उज्ज्वल, शोभायमान।

দীয়মান वि—दिया जानेवाला।

দীর্ঘ (-अ) वि—लंबा, बड़ा, व्यापक (—দাস, —অবসর)। —জীবী वि—बहुत दिनोंतक जीनेवाला, चिरजीवी। —দর্শী वि—दूरदर्शी, भविष्य देखनेवाला। —নাস वि—लंबी नाक वाला। —পাদ वि—लंबे पैरोंवाला। —রোমা वि—जिसके शरीरमें बड़े बड़े बाल है। सं—भालू।

দীর্ঘিকা सं=দিঘি।

দীর্ণ वि—विदीर्ण फटा, टूटा।

দুয়ানি, দোয়ানি सं—दुअन्नी।

দুই, দু वि, सं—दो, २; दोनों (দুইটা, দুটো, দুই বার, দুমাস, দুনলা, দুমুখো)।

দুও, দুয়ো अन्य—धिक्कार, धत, छि।

দুঃখ (दुक्ख-अ) स—दुःख, कष्ट। দুঃখী वि—दुःखी, क्लेशित।

দুকূল सं—रेशमी वस्त्र, महीन कपड़ा।

দুগ্ধ स—দুধ दूध। —পোষ্য वि—जिसका पालन दूध पिलाकर किया जाता है (—শিশু)। —ফেননিভ (-अ) वि—दूधके फेन की तरह सुफेद (—শয্যা)। —দাত্রী वि—দুধালো दूध देनेवाली, दुधार (—গাভী)।

দুচানা स =দোচানা। দুটানা सं =দোটানা।

দুড়দুড় सं—बादलकी गड़गड़ाहट, दिलकी धड़कन। [धड़ाम।

দুড়ুম सं—तोप आदिसे गोली छूटनेका शब्द;

দুর अन्य—দূর, ধেৎ, দূর धत, भाग।

দুধ सं—दूध। —ছেঁড়া क्रि—दूध फटना। —তোলা क्रि—बच्चोंका दूध के करना। —দোয়া क्रि—दूध दुहना। —জ্বাল দেওয়া क्रि—दूध उबालना। —দাঁত, (দুধে দাঁত) सं—बच्चोंके दांत जिनके गिर जानेके बाद स्थायी दांत निकलते हैं।

দুধারী, (দো-) वि—दोनों ओर का, दुधारा।

দুধাল (-अ), দুধালো; দুধেলো वि=দুগ্ধবতী।

দুনলা वि—दो नलों वाला। सं—दुनाली बंदूक।

দুনা, দুনো वि—द्विगुण दुगुना, डबल।

দুনি स—ডোঙা डोंगी, জল সেচন করা जल सींचनेका एक पात्र।

দুপ सं—দুপ पैरकी आहट (बारबार—দুপদাপ)।

দুপুর, দুপহর सं—দ্বিপ্রহর दुपहर (-বেলা, রাত—)।

দুপাটি सं—দুই পঙ্‌ক্তি दो पाँतियाँ (—দাঁত)।

দুব্বো स—दूर्वा दूब।

দুভাষী वि, सं—दोभाषिया।

দুমড়া, দোমড়া वि—टेढ़ा, मरोड़ा हुआ।

দুমড়ান (-नो), দোমড়ানো (क्रि परि १८)—टेढ़ा करना, मरोड़ना, तह करना।

দুম্ स—দুড়ুম गोली छूटनेका शब्द; मुक्का मारनेका शब्द (बार बार—দুমদুম, দুমদাম)।

দুমনা, দোমনা वि—द्विमना, द्विधाग्रस्त दुबधामें पड़ा हुआ।

দুমুখো वि—दोमुंहा।

দুমেটে, দোমেটে वि—जिस मूर्तिमें दो बार मिट्टीका लेप दिया गया है।

দুষা स—मेंडकी एक जाति जिसके पीछेकी ओर मांसका लोंदा लटकता है, दुंबाह।

দুয়া, দুয়ো वि—दुर्भाग्यवाली (—রাণী)।

দুয়ার, দোর सं—দরজা दरवाजा।

দুর্ उप—दोष निंदा निषेध दुःख आदि सूचक उपसर्ग। দুরতিক্রমণ सं—क्लेशसे दूसरे पार गमन। দুরতিক্রম (-क्रमणीय, -क्रम्य) वि—দুর্লঙ্ঘ্য, দুস্তর क्लेशसे पार होने योग्य। দুরত্যয় वि=দুরতিক্রম। দুরদৃষ্ট (-अ) वि—दुर्भाग्य, बदनसीब। स—बुरा नसीब।

দুরধিগম, (-গম্য) वि—दुर्लभ, दुर्गम, गूढ़।
দুরপনেয় (-अ) वि—जिसका छूटना कठिन है (—কলঙ্ক)। দুরবগাহ (-अ) वि—दुर्गम, दुर्बोध, जिसमें उतरना या प्रवेश करना कठिन है। দুরবস্থ (-अ) वि—बुरी दशावाला, दरिद्र। দুরবস্থা सं—दुर्गति, बुरी दशा, खराब हालत। দুরভিসন্ধি सं—बुरा मतलब। দুরাকাঙ্ক্ষা सं—बुरी अभिलाषा। দুরাকাঙ্ক্ষী, (-কাঙ্ক্ষ) वि—बुरी अभिलाषा करनेवाला। দুরারোগ্য (-अ) वि—जिसको आरोग्य करना कठिन है। দুরারোহ वि—जिस पर चढ़ना कठिन है। দুরাশয় सं—बुरा मतलब। वि—बुरा मतलबवाला। দুরূহ (-अ) वि—कठिन, गूढ़। [(कवितामें—দুরুদুরু)।
দুরদুর स—দুড়দুড় गड़गड़ाहट, धड़कन
দুরন্ত वि—দুষ্ট, অশান্ত नटखट, ऊधमी, जिसका शासन करना कठिन है (—ছেলে); দুরারোগ্য (-ব্যাধি)। —পনা सं—দুষ্টামি, দৌরাত্ম্য नटखटी, ऊधम।
দুরবীন सं— দূরবীক্ষণ যন্ত্র दूरबीन।
দুরস্ত वि—ठीक दुरुस्त, सयत (ছেলেকে—করা)।
দুরি सं—दो बूटीवाला ताश।
দুরিত (-अ) सं—पाप।
দুর্গ (-अ) सं—কেল্লা, গড় किला।
দুর্গত (-अ) वि जिसकी बुरी गति हुई हो।
দুর্গন্ধ (-अ) स—बदबू। वि—बदबूदार। দুর্গন্ধী वि—दुर्गन्धयुक्त।
দুর্গা स्त्री-दशभुजा देवी। দুর্গোৎসব सं—आश्विन मासमें दुर्गापूजाका उत्सव।
দুর্ঘট वि—जिसका होना कठिन है। দুর্ঘটনা सं—अशुभ घटना, वारदात, आकस्मिक विपत्ति। [—ক্রোধ)।
দুর্জয় वि—जिसे जीतना बहुत कठिन है (—অরি,

দুর্জ্ঞেয় (-अ) वि—जो जल्दी समझमें न आ सके।
দুর্দম, দুর্দমনীয়, দুর্দম্য (-अ) वि—দুর্দান্ত जिसका दमन करना बहुत कठिन है।
দুর্দশা सं—দুরবস্থা बुरी दशा।
দুর্দান্ত (-अ) वि—দুর্দমনীয়।
দুর্দ্ধর্ষ (-अ) वि—जिसको हराना या दमन करना कठिन है।
দুর্নাম सं—बदनामी, निन्दा।
দুর্নিবার वि—जिसको रोकना कठिन है।
দুর্নিমিত্ত (-अ) सं—अशुभ लक्षण, बदशकुन।
দুর্বৎসর स—जिस साल अनिष्ट होता है।
দুর্বহ (-अ) वि—जिसको ढोना या सहना कठिन है।
দুর্বার वि—দুর্নিবার।
দুর্বিষহ (-अ) वि—असहनीय।
দুর্বুদ্ধি सं—कुबुद्धि, बुरा मतलब, बेवकूफी। वि—दुष्ट, बेवकूफ।
দুর্ভাবনা सं—अमगलकी आशका, व्याकुलता।
দুর্মূল্য (-अ) वि—মহার্ঘ, আক্রা महँगा।
দুর্যোগ सं—आँधी पानीका समय, अशुभ काल।
দুল सं—करनफूल।
দুলকি स—दुलकी चाल।
দুলদুল स—मुहम्मदके दामाद अलीका घोड़ा।
দুলা, দোলা (ক্রি পরি ৫)—দোল খাওয়া झूलना। [—झुलाना, दुलाना।
দুলান (-নো), দুলানো, দোলানো (ক্রি পরি ১২)
দুলাল—दुलारा लड़का। দুলালী स्त्री- दुलारी लड़की। [कहार।
দুলে सं—पालकी डोली आदि ढोनेवाला
দুশমন सं—शत्रु, दुश्मन। দুশমনি स—दुश्मनी, शत्रुता।
দুশ্চিকিৎস্য (-अ) वि—जिसका इलाज करना कठिन है।

দুশ্ছেদ্য (-अ) वि—जिसका छेदन करना या काटना कठिन है। [करना।
দুষা, দোষা (क्रि परि ६) —दोष देना, निंदा
দুষ্কৃত (-अ) वि—पापी। দুষ্কৃত, দুষ্কৃতি स—कुकर्म, पाप।
দুষ্ট (-अ) वि—दोषयुक्त (—व्रण), बुरा, खराब (—বুদ্ধি, —চরিত্র); अशुभ (—গ্রহ), ऊधमी (—বালক,—দুষ্টু ছেলে, नटखट लड़का। দুষ্টা स्त्री—छिनाल। দুষ্টামি, দুষ্টুমি स—नटखटी, ऊधम।
দুষ্পাচ্য (-अ) वि—जिसका हजम करना कठिन है।
দুষ্প্রবৃত্তি स—बुरी इच्छा।
দুস্থ (-अ) वि—बुरी गति प्राप्त; गरीब।
দুহিতা स्त्री—तनया कन्या।
দুহু सर्व—दोनों।
দূর स—दूरत्व, फासला। वि—बहुत फासले परका, निकाला हुआ। अव्य—धत। —দূর, দূর হ अव्य—दूर हो, भाग। —বীক্ষণ स—दूरबीन। দূরস্থ (-अ) वि—दूरका। দূরীকরণ स—बहिष्कार, अपसारण। দূরীকৃত (-अ) वि—बहिष्कृत, निकाला हुआ। দূরীভবন स—दूर होना, भाग जाना। দূরীভূত (-अ) वि—जो दूर हो गया है।
দূর্বা स—दूब।
দূষণ स—दोषारोप, ऐब लगाना। দূষক वि—ऐब लगानेवाला। দূষণীয়, দূষ্য (-अ) वि—निंदनीय, दोष लगाने योग्य। দূষিত (-अ) वि—जिसमें दोष हो (—বায়ু, —ঘা)।
দৃক् स—चक्षु, आँख, दृष्टि, नजर, ज्ञान। —পাত स—नजर डालना ताकना (কিছুতেই —করে না)।
দৃঢ় (-अ) वि—दृढ़, कड़ा, मजबूत, अटल (—চিত্ত, —নিশ্চয়, —প্রতিজ্ঞ)। দৃঢ়ীকরণ स—दृढ़ करना; सुप्रतिष्ठित करना। দৃঢ়ীকৃত (-अ) वि—दृढ़ किया हुआ। দৃঢ়ীভবন स—दृढ़ होना। দৃঢ়ীভূত (-अ) वि-दृढ़ बना हुआ, सुप्रतिष्ठित।
দৃপ্ত (-अ) वि—घमंडी ढीठ।
দৃশ্য (-अ) वि—दृश्य। स—देखने योग्य विषय; नाटकका दृश्य। —কাব্য स—नाटक। —পট स—नाटकका पर्दा।
দৃষ্ট (-अ) वि—देखा हुआ, प्रत्यक्ष, परीक्षित। स—दृष्टि (একদৃষ্টে—इकटक)। —চর, —पूर्व वि—पहले देखा हुआ।
দৃষ্টি स—दृष्टि, नजर, दर्शन, ज्ञान, लालच भरी दृष्टि, बुरी निगाह (—দেওয়া)। —পাত स—ताकना (—করা)। [দে, तू दे।
দে स—कायस्थोंकी एक उपाधि। क्रि—तूदे
দেউটি स—दीपक, मशाल।
দেউড়ি स—ड्योढ़ी, फाटक।
দেউল स—देवालय, मंदिर।
দেউলিয়া, দেউলে वि, स—दिवालिया।
দেওয়া (देवा) (क्रि परि १८)—देना, भेजना, सौंपना, डालना, लगाना (রোদে—, বেড়া—, জলসত্র—, গায়ে জামা—, গানে সুর—, আঁচড়—); भरती करना (স্কুলে—), प्रविष्ट कराना (জেলে—); छूना (হাত—) वि—दिया हुआ। [—दिलाना।
দেওয়ান (देवानो), দেওয়ানো (क्रि परि १६)
দেওয়ান (देवान) स—दीवान, मंत्री; राजसभा। দেওয়ানি स—दीवानका पद।
দেওয়ানী वि—दीवानी (—আদালত,—মকদ্দমা)।
দেওয়াল (देवाल), দেয়াল स—दीवाल, भीत।
দেওয়ালি (देवालि) स—दीपावली।
দেওর (देओर) स—देवर। [लिए संबोधन।
দেখ (देखो) क्रि—देखो; ध्यान खींचनेके

দেখতা (देखता) क्रि वि—देखते समय, सामने, समान कालमें (আমাদের—)।

দেখন (देखन) सं—दर्शन। —হাসি सं—जिसके देखनेसे आनंद होता है, सहेलीका एक नाम।

দেখা (देखा) (क्रि परि १) देखना, नजर डालना, ताकना, अनुभव रहना (ঢের দেখেছি); देखरेख करना (কাজকর্ম—); सेवा या इलाज करना (রোগীকে—, ডাক্তার দেখছে), प्रतीक्षा करना (দেখি কি হয়)। सं—दर्शन, भेट (—করা, —পাওয়া)। वि—देखा हुआ। —দেখি सं—देखा-देखी, भेंट। क्रि—दूसरोंको करते देख कर। —শুনা, —শোনা स—देख-रेख, निगरानी। —সাক্ষাৎ सं—भेट करके बातचीत। দেখিতে দেখিতে, দেখতে দেখতে—क्रि वि—आँखोंके सामने, देखते देखते, क्षणभर में। [—दिखाना।

দেখান (दैखानो), দেখানো (क्रि परि १०)

দেড় वि—डेढ़, पूरा और उसका आधा। দেড়া वि—डेढ़-गुना, ड्योढ़ा।

দেঁতো वि=দাঁতাল।

দেদার वि—प्रचुर, बहुत।

দেনা सं—कर्ज ऋण, देना, कर्जा। —দার, দেনদার वि—ऋणी, कर्जदार। —পাওনা स—लेन-देन।

দেব सं—देवता, ईश्वर, एक पूज्य उपाधि (গুরু—, পিতৃ—), ब्राह्मणोंकी एक उपाधि (দেবশর্মা)। —কুল स—দেউল मंदिर। —খাত स—झील, प्राकृतिक जलाशय। —দারু सं—देवदारका वृक्ष। —দুর্লভ वि—देवताको भी दुर्लभ, दुष्प्राप्य। —নাগর —নাগরী सं—देवनागरी लिपि। —শর্মা सं—ब्राह्मणोंकी साधारण उपाधि। —স্ব (-अ) सं—कृष्णार्पित संपत्ति। দেবত্র (-अ) सं=দেবস্ব। দেবারি सं—असुर। দেবালয়, দেবায়তন सं—मंदिर। দেবী स्त्री—देवी, देवता, महिलाओंकी एक उपाधि (মাতৃ—)। দেবোত্তর सं=দেবস্ব।

দেবল सं—पुजारी ब्राह्मण।

দেমাক सं—घमंड, शेखी।

দেয় (-अ) वि—देनेके योग्य।

দেয়ালা सं—शिशुका सोतेमें हँसना-रोना।

দেরকো, দেলকো सं—दीवट।

দেরাজ सं—दराज, मेजका खाना।

দেরি सं—देर, देरी, विलंब।

দেশ सं—देश, स्थान, अपना ग्राम (দেশে যাইব)। —বিদেশ सं—अनेक देश, स्वदेश और परदेश। দেশাত্মবোধ सं—अपने देश के स्वार्थको अपना स्वार्थ समझना। দেশিক वि—देशका, स्थानीय।

দেহ (-अ) क्रि—দাও दो। सं—शरीर।

দেহলী, (-লি) स—दरवाजेके बाहरका चबूतरा, दहलीज।

দেহি क्रि—দাও दो।

দেহী स—शरीर-धारी, प्राणी, आत्मा।

দৈবাৎ क्रि वि—হঠাৎ अकस्मात्।

দৈর্ঘ্য (-अ) सं—लंबाई।

দৈশিক वि—देश-सम्बन्धी, देशीय।

দো वि—दो, २। —আনি सं—দুআনি दुअन्नी। —আঁশলা वि—दोगला, दो प्रकार की वस्तुओंके मेलसे उत्पन्न। —কর वि—दो बार, दूसरी बार। —টানা सं—दोनों ओरका खिचाव। —তলা वि—দ্বিতল दोमंजिला। —পাটি सं—गुलमेंहदी। —ফলা वि—दो फलों वाला (—ছুরি); जो साल में दो बार फल देता है (—আমগাছ)। —বারা, (-বরা) स—दानादार चीनी। —ভাষী, দ্বিভাষী वि, सं—दुभाषिया। —মনা वि=

झमना। —রোখা वि—जिस कपड़ेके दोनों ओर एकसी नकाशी हो। —শালা स—दुशाला। —সুতি स—दोहरे सूतके विना कपड़ा। —হারা वि दोहरा, वहुत दुवला भी नहीं मोटा भी नहीं ऐसा (—গড়ন, —চেহারা)।

দোকান स—दुकान। দোকানী सं—दूकानदार।

দোক্তা सं—तम्बाकूकी सूखी पत्ती।

দোচালা स—दो छप्पर वाला घर।

দোছুট, দোছোট स—दुपट्टा, ओढ़ना।

দোজবরে वि—दूसरी वार विवाह करनेवाला।

দোদুল वि—झूलता हुआ। দোদুল্যমান वि—दोलायमान, वहुत हिलता हुआ। [झमड़ान।

দোমড়ান (-नो), দোমড়ানো (क्रि परि १८)=

দোয়া स—दुआ, आशीर्वाद। क्रि दुहना।

দোয়াত सं—मस्याधार दावात।

দোয়েল सं—एक गानेवाली छोटी चिड़िया।

দোর सं—দুয়ার द्वार, दरवाजा। —গোড়া स—देहलीके पासका स्थान।

দোল सं—झूलना (—খাওয়া); होली, हिंडोला, झूला। দোলক वि—झूलनेवाला। দোলন सं—झूलना। দোলনা स—हिंडोला। দোলা स—हिंडोला, डोली, खटिया।

দোলা (क्रि परि ६) =झुला।

দোলান (-नो), দোলানো (क्रि परि १२)= झुलान। দোলায়িত (-अ) वि—जो झुलाया जाता है।

দোষ सं—अपराध, कसूर, कलक, त्रुटि; रोग (মাথার—, চোখের—)। —গ্রাহী वि—दोष ग्रहण करने या देखने वाला। দোষজ্ঞ (-अ) वि—दोष-गुणका विचार कर सकनेवाला, विद्वान। দোষত্রয় स—त्रिदोष, वायु, पित्त, कफ; राग, द्वेष, मोह। দোষাদোষ सं—दोषगुण। দোষাবহ (-अ) वि—दोषजनक। দোষারোপ स—दोषका आरोप।

দোষা (क्रि परि ६)=दूषना।

দোসর (दोसर, सं—दूसरा आदमी, साथी, अनुचर (বনের—), सहाय।

দোসরা (दोसरा) वि—दूसरा। सं—दूसरी तारीख (खोर मासकी)।

দোসূতি (दोसूति) सं—दो टेन्वा।

দোস্ত (दोस्त-अ) सं—दफ्, मित्र दोस्त, मित्र।

দোস্তি सं—दोस्ती, मित्रता।

দোহদ सं—गर्भवतीकी साध; गर्भवती।—লক্ষণ सं—गर्भका लक्षण। —বতী स्त्री= गर्भवती।

দোহন सं—दुग्ध দোহা दूध दुहनेकी क्रिया।

দোহক स—दुहनेवाला।

দোহা (क्रि परि ६)—দোয়া दुहना।

দোহাই स—दिव्य दुहाई, कसम, सौगन्ध; छूता, बहाना वहाना, न्याय विचार या दया के लिए प्रार्थना (—হুজুর)। —দেওয়া क्रि—सहायताके लिए पुकारना।

দোহান (-नो), দোহানো, দোয়ানো (क्रि परि १०)—दूसरेसे दुहाना।

দোহার, দোয়ার सं—सगीतमें स्थायी या रामधुन आदि दुहराने वाला।

দোঁহার, দোঁহাকার सर्व—दोनोंका। দোঁহে सर्व—दोनों। [(—চেহারা)

দোহারা वि—दो सूत वाला; दोहरा, स्थूल

দৌড় (दउड़) सं—दौड़ (—দেওয়া, —করানো); सीमा (বুদ্ধির—)। —ঝাঁপ सं—दौड़-धूप, दौड़ और कूद। —মারা क्रि—भागनेके लिए दौड़ना।

দৌড়া (दउड़ा) (क्रि परि १), দৌড়ান (दउड़ानो),দৌড়ানো, দৌড়নো (क्रि परि १५) —दौड़ना। দৌড়াদৌড়ি स—छूटाछूटि दौड़धूप। [—दौड़ाना।

দৌড়ান (दउड़ानो), দৌড়ানো (क्रि परि १५)

দৌত্য (दउत्त -अ) सं—दूतका काम।
দৌবারিক (दउवारिक) सं—দ্বারপাল दरवान।
দৌরাত্ম্য (दउरात्य-अ) सं—ऊधम, उत्पात, ज्यादती, दुर्जनता।
দৌর্বল্য (-अ) सं—दुर्वलता, कमजोरी।
দৌলত सं—दौलत, धन (ধন—); अनुग्रह, कृपा (তোমার দৌলতে)। —খানা सं—धनी का महल।
দৌহিত্র (दउहित्र -अ) सं—लड़कीका लड़का, नाती। দৌহিত্রী स्त्री—नातिन।
দ্য, দ্যুলোক सं—स्वर्ग, आकाश। দ্যুতি सं—प्रकाश, ज्योति; सौन्दर्य।
দ্যূত (-अ) स—অক্ষক্রীড়া, পাশাখেলা शतरंज, जुआ। —কার सं—जुआड़ी। [प्रकाश।
দ্যোতক वि—प्रकाशक, सूचक। দ্যোতনা सं—
দ্রব (-अ) वि—तरल, पानीकी तरह पतला, गला हुआ। দ্রবীকরণ सं—गलाना, तरल करना। দ্রবীকৃত (-अ) वि—तरल किया हुआ। দ্রবীভাব सं—तरल होना; तरलता। দ্রবীভূত (-अ) वि—तरल वना हुआ, पिघला हुआ।
দ্রবণ सं—गलन, तरल होना। —বিন্দু सं—तरल होने योग्य गर्मीकी सीमा melting point. [उस प्रदेशके आदिवासी।
দ্রবিড় सं—दक्षिण भारतका द्रविड़ प्रदेश, দ্রবীকরণ, দ্রবীকৃত, দ্রবীভূত—দ্রব देखो।
দ্রব্য (-अ) सं—জিনিষ, পদার্থ वस्तु चीज। —গুণ सं—वस्तुका गुण।
দ্রষ্টব্য (-अ) वि—देखनेके योग्य, दर्शनीय।
দ্রাক্ষা (द्राक्खा) सं—আঙুর अगूर। [रेखा।
দ্রাঘিমা सं—দৈর্ঘ্য लंबाई, द्राघिमा, देशान्तर
দ্রাবিড় सं—दक्षिण भारतका एक प्रदेश, द्राविड़-निवासी। वि—द्राविड़ देशका।
দ্রুত (-अ) वि—शीघ्र, तेज (—বেগে)।
দ্রুম (-अ) सं—वृक्ष पेड़।
দ্রোহ सं—শত্রুতা दुश्मनी (রাজ—)।
দ্রোহী सं—शत्रु, दुश्मन (দেশ—)। দ্রোহিতা सं—शत्रुता।
দ্বন্দ্ব (दन्द-अ) सं—কলহ झगड़ा, विरोध, लड़ाई; जोड़ा, युगल; परस्पर विरोधी दो विषय जैसे—রাগ-দ্বেষ, সুখ-দুঃখ, শীত-উষ্ণ।—যুদ্ধ सं—दो आदमियोंकी लड़ाई, कुश्ती।
দ্বন্দ্বী वि—झगड़ालू, विरोधी।
দ্বয় (द्वय) वि—দুই दो; युगल (নেত্র—)।
দ্বার (द्वार) सं—দুয়ার, দরজা दरवाजा।—বান सं—দরোয়ান दरवान। —দেশ सं—दरवाजेका रास्ता, दरवाजा। দ্বারস্থ (-अ) वि—प्रार्थी-रूपसे द्वारपर उपस्थित। দ্বারী सं—দ্বারপাল दरवान।
দ্বি (द्वि) वि—দুই दो। দ্বিত্ব (-अ) सं—दुगुना या दोका होना। দ্বিজিহ্ব (-अ) वि—दो जीभवाला। सं—साँप। দ্বিতল वि—দোতলা दोमंजिला। দ্বিদল सं—दाल। দ্বিদৃক वि—दोनों नेत्रोंसे देखने वाला। দ্বিধা सं—सन्देह, दुविधा। ক্রি वि—दो भागोंमें, दो प्रकारोंसे। দ্বিপ सं—हाथी। দ্বিপদ, দ্বিপাদ वि—दो पैरों वाला। দ্বিভাষী वि सं=দোভাষী। দ্বিভুজ वि—दो हाथों वाला। দ্বিরদ सं—हाथी। দ্বিরাগমন सं—गौना। দ্বিরুক্ত (-अ) वि—दो बार कथित या लिखित। দ্বিরুক্তি सं—दो बार कथन या उल्लेख, असम्मति-ज्ञापन। দ্বিরেফ सं—ভ্রমর भौंरा। [कालापानी, देश-निकाला।
দ্বীপ स—टापू। দ্বীপান্তর स—निर्वासन
দ্বীপী सं—चिताबाघ तेंदुआ।
দ্বৈধ (दइध-अ) सं—विरोध, अनमेल (মত—); दुविधा, सदेह।
দ্বৈবিধ্য (दइविध्य-अ) सं—दो होनेका भाव।

দ্বৈরথ (दइरथ) वि—दो रथियोंका (-युद्ध)।

দ্ব্যণুক सं—दो अणुओंका मेल।

দ্ব্যর্থ (-अ) सं—दो प्रकारके अर्थ। वि—दो अर्थों वाला (वाक्य)।

দ্ব্যহ (-अ) सं—दो दिन। দ্ব্যাহ্নিক वि—दो दिनों तक रहने वाला, हर तीसरे दिन होनेवाला।

ধ

ধকধক सं—आगके जलनेका शब्द, भभक; (लघु अर्थमें—ধিকিধিকি); दिलकी धड़कन (लघु अर्थमें –ধুকধুক)। [व्यवहार।

ধকল सं—धक्का, असर; क्लान्ति, अधिक

ধড় सं—शरीरका मध्य भाग, सिर-रहित शरीर; देह (ধড়ে প্রাণ নাই)।

ধড়ফড় सं—दिलकी धड़कन, वचनी प्रकाश।

ধড়ফড়ানি सं—धड़कन, छटपटी, घबराहट।

ধড়া सं—কটিবসন कमड़में पहननेका कपड़ा। —চূড়া सं—कृष्णका वेश; (व्यंग में) पोशाक, पाजामा टोपी आदि।

ধড়াম सं—गिरनेका शब्द।

ধড়াস सं—जोरसे गिरनेका शब्द।

ধড়িবাজ वि—ফন্দিবাজ धूर्त।

ধন सं—धन, सम्पत्ति, दौलत, रुपया-पैसा; माल, मूल्यवान वाञ्छनीय वस्तु (পরম—), शिशुके लिए प्यारका सम्बोधन (বাপ—); (गणित में) योगका चिह्न (+), (ধনাত্মক positive)। —দ (-अ) वि—धनदाता। —দা स्त्री—लक्ष्मी। —দাস सं—पैसेका गुलाम; कञ्जूस, धनके लिए धनीका दासत्व करने वाला। ধনাঢ্য (-अ) वि, सं—বড়লোক धनी, दौलतमन्द। ধনাধ্যক্ষ (-अ) सं—কোষাধ্যক্ষ खजानेका अध्यक्ष (खजाञ्चीसे उच्च पद) treasurer. ধনার্জন सं—रोजगार, धनका कमाना।

ধনিয়া, ধনে सं–धनिया।

ধনী स्त्री—युवती, नारी। वि—धनी।

ধনু, ধনুক सं–धनुष। ধনুর্গুণ सं—धनुष की डोरी, रोदा ধনুর্বাণ सं—धनुष और तीर। ধনুষ্টঙ্কার, (-ষ্কার) सं—জ্যা-নির্ঘোষ धनुषकी डोरी खींचकर छोड़ देनेसे जो शब्द होता है, एक रोग जिसमें शरीरके अंग ऐंठ जाते हैं चिहुकवाई।

ধনে सं = ধনিয়া।

ধন্না सं = ধরনা। [धूप।

ধপ सं—गिरनेका শব্দ। लघु अर्थमें—

ধপধপ, ধবধব सं—सफेदी या शुक्लताका लक्षण प्रकाश। ধপধপে, ধবধবে वि–सफेद, शुक्ल।

ধব सं—पति, शौहर (বিধবা, पतिविहीना)।

ধবল वि–সাদা सुफेद, शुक्ल। सं—सुफेद कोढ़। [वेग।

ধমক सं—দাবড়ি धमक, डाँठ, प्रभाव, असर

ধমকান (-নো), ধমকানো (क्रि परि १९)— —धमकाना, डाँटना।

ধমকানি सं—धमक, डपट।

ধমনী, (-নি) सं—नाड़ी, धमनी।

ধর वि—पकड़ने वाला (ভূধর, पर्वत)।

ধরণ सं—धारण, पकड़।

ধরণা सं—ধর্না धरना।

ধরণী स्त्री—पृथ्वी, धरती। —ধর सं—पर्वत, पहाड़, वासुकि नाग।

ধরন सं—পদ্ধতি रीति, ढग (কাজের—); चेहरा, लक्षण। [सत्याग्रह।

ধরনা, ধন্না सं—धरना (—দেওয়া);

ধরা स्त्री–पृथ्वी, धरती। —তল सं—धरती, पृथ्वीकी सतह। —ধাম सं—संसार। —শায়ী वि—धरती पर लेटा गिरा या गिराया हुआ।

धरा (क्रि परि १)—पकड़ना (धरि माछ ना छुँई पानी, साँप भी मरे लाठी भी न टूटे); धारण करना (रूप—, वेश—, प्राण—), रखना, पेश करना, पसंद होना (मने—); अवलबन या ग्रहण करना (सोजा रास्ता—, सत्पथ—), आरंभ करना (गान—, मद—); कल्पना करना (धर यदि सब हय), गिनना (तार कथा धरो ना, ताके ध'रे दश जन), फल होना (ओषध धरेछे); दद करना, विकृत होना (माथा—, सर्दिते गला—, ओले मुख—); पैदा होना, प्रकट होना (गाछे फल—, फले रं—), समाना (घरे जिनिष धरे ना, मुखे हासि धरे ना), रुकना (वृष्टि—, पेट—), जलना (उनुन—); रसोई करनेमें नीचे जल जाना (भात—, डाल—)। वि—पकड़ने वाला (छेले—, धामा—, हाँमें हाँ मिलानेवाला, माछ—जाल); रसोई करनेमें जला हुआ। सं—आत्मसमर्पण (पुलिसे—देओया)। —पाकड़ा सं—पकड़-धकड, धर-पकड़, गिरफ्तारी। —काट स—बाँधाबाँधि परहेज, कठोर नियम। —छोंया सं—पकडा जाना, छुआ जाना, पास आना (—देय ना)। —धरि सं—कई एकके द्वारा धारण (—क'रे निये आसा)। —बाँधा वि—निर्धारित। धरिया, धरे क्रि—व्यापिया, यावत् समय तक (दुइ दिन—); सावधानीसे और धीरे धीरे (ध'रे ध'रे लेख)।

धरान (-नो) धरानो (क्रि परि १०)—पकड़ाना, पकडवाना; आदत डालना (मद—), समाना, जलाना (उनुन—)।

धरिये वि—पकड़नेवाला।

धर्णा सं=धरना।

धर्तव्य (-अ) वि—विचारने योग्य, गणना या धारणा करने योग्य (धर्तव्येर मध्ये नय, नगण्य, तुच्छ)।

धर्म (-अ) सं—पुण्य कार्य; मजहब, पंथ, उपासनाकी पद्धति, गुण, स्वभाव, शक्ति (जलेर—, काल—, यौवनेर—), यमराज। —घट सं—सत्याग्रह, हरताल। धर्मतः क्रि वि—धर्मके अनुसार। —द्रोही वि—नास्तिक। —ध्वजी वि—पाखंडी। —नाश सं—धर्मका नाश सत बिगाड़ना। —पिता, —बाप सं—दत्तक पुत्रका पिता, धार्मिक सम्बन्ध जोडकर स्वीकृत पिता। —प्रमाण सं—धर्मको साक्षी मान कर जो किया या कहा जाता है। —प्राण वि-धर्ममें अत्यत अनुरागी। —बुद्धि स—धार्मिक बुद्धि। —भय सं—धर्महानिका भय। —भीरु वि—धर्म-हानिके भयसे भीत। —साक्षी सं—धर्मको साक्षी रखकर प्रतिज्ञा ग्रहण। धर्माधिकरण स—न्यायालय; विचारक, हाकिम। धर्माधिकार सं—विचारकका अधिकार या कार्य। धर्माधिकारी सं—विचारक। धर्मान्तर सं—दूसरा धर्म। धर्मान्ध वि—कट्टर, अपने धर्ममें अंधेकी तरह विश्वास और दूसरे धर्ममें द्वेष-भाव रखनेवाला। धर्मावतार सं—धर्मका अवतार (विचारक, मालिक आदिके लिए सम्बोधन)। धर्मार्थे (-अ) क्रि वि—धर्मके निमित्त। धर्म्य (-अ) वि—धर्मसगत, धर्मयुक्त।

धर्षण सं—अत्याचार, ज्यादती, बलात्कार, सतीत्वनाश। धर्षक वि, सं—धर्षण करनेवाला। धर्षणीय (-अ) वि—धर्षण करनेके योग्य। धर्षित (-अ) वि—अपमानित, पराजित। धर्षिता स्त्री—जिस स्त्री पर अत्याचार या बलात्कार किया गया है, निर्यातिता, व्यभिचारिणी।

ধলা वि—সাদা, ফরসা सफेद, गोरा ।

ধস सं—মাটির চাপ ইত্যাদির স্থানচ্যুতি धँसन (—নামা) ; धँसनेका शब्द ।

ধসা (क्रि परि १) —ধসিয়া পড়া धँसना, खसकना (নদীর পাড়—, দেওয়াল—) ।

ধস্তাধস্তি स —টানাটানি खींचातानी , ঠেলাঠেলি धक्कमधक्का, कई आदमी मिलकर उठाने या हटानेकी चेष्टा , ; गुत्थम-गुत्था ।

-ধা प्रत्य —'प्रकार' अर्थका प्रत्यय (দ্বিধা, दो प्रकार ; বহুধা, अनेक प्रकार) ।

ধাঁ वि—चट, शीघ्र (—করে যাও) ।

ধাই स्त्री—দাই दाई, धाय ।

ধাঁই सं—धप्पड मारने आदिका शब्द ।

ধাওয়া (क्रि परि ८)—धावा करना, दौड़ाना । सं—धावा (পিছনে—করা) ।

ধাক্কা सं—धक्का, टक्कर, चोट ।

ধাঙ্গড়, ধাঙড় सं—धाँगड, मेहतर ।

ধাঁচ स —ढंग, प्रकार, किस्म ।

ধাড়ী वि, सं—जिसे बच्चा हुआ है (বাচ্চা ও ধাড়ী) ; उमरदार (বুড়ো—), सरदार, मुखिया ।

ধাত स —धातु ; स्वभाव, मिजाज ; शुक्र । ধাতস্থ (-अ) वि—अपनी स्वाभाविक अवस्थामें स्थित , स्वस्थ, चगा । ধাতব वि—धातु सम्बन्धी, धातुका ।

ধাতু स —सोना चाँदी आदि धातु , (आयुर्वेदमें) वायु पित्त कफ रक्त मांस अस्थि आदि , शुक्र , स्वभाव , (व्याकरणमे) क्रियावाचक शब्दका मूल जैसे खा उठ कर आदि । —গত (-अ) वि—स्वभावमें परिणत । —ঘটিত (-अ) वि—धातुके सयोगसे तैयार (—ঔষধ) । —দৌর্বল্য (-अ) सं—शुक्र या धातुकी कमजोरी । —দ্রাবক सं—सुहागा borax

ধাত্রী स्त्री = ধাই ।

ধাঁধা सं—दृष्टिभ्रम, चकाचौंध ; समस्या, उलझन, पहेली । গোলক—, भुलभुलैया ।

ধান सं—धान । —কোটা, —ভানা क्रि—धान कूट कर चावल निकालना । —বোনা क्रि—धान बोना । —রোয়া क्रि—धानके पौधे रोपना । ধানী वि—धानसा, कच्चे धानके रगवाला ।

ধানুকী स—धनुषधारी, तीरन्दाज ।

ধান্দা, (-ন্দা) सं—धधा, कामकाजकी चिन्ता या चेष्टा ।

ধান্য (-अ) स —धान । ধান্যেশ্বরী सं—(व्यगमें) धानकी शराब ।

ধাপ स —সিঁড়ির পইঠা सीढ़ीका डंडा ।

ধাপ্পা सं—धोखा, झाँसा । —বাজ वि—धोखेबाज । —বাজি स —धोखेबाजी ।

ধাবক वि सं—दौड़नेवाला, हरकारा ; धोबी । ধাবন स —दौड़ , धावा ; प्रक्षालन (দন্ত—) । ধাবমান वि—जो दौड़ रहा है । ধাবিত (-अ) वि—जो दौड़ा है । [आधार (গুণ—) ।

ধাম सं—आवास, घर ; तीर्थस्थान (কাশী—) ;

ধামসান (-नो), ধামসানো (क्रि परि १६)— मसलना, मलना ।

ধামা सं—बेंतकी डलिया । —চাপা सं—গোপন छिपाव । —ধরা वि—খোশামুদে चापलूस । क्रि—हाँ में हाँ मिलाना, चापलूसी करना ।

ধার स —उधार, ऋण, मंगनी ; सम्बन्ध (লেখাপড়ার—ধারে না), किनारा (নদীর—) ; तेजी, तीखापन ; धार (ছুরির—) ।

ধারক वि, सं—धारण करनेवाला , जिससे दस्त रुकता या मल कड़ा होता है (—ঔষধ) । ধারণ सं—धारण, ग्रहण ; रक्षण , वहन । ধারণা सं—बोध , निर्धारण , धारणा, स्मृति, एकाग्रता, अनुमान । ধারণীয় (-अ) वि—धारण करनेके योग्य ।

ধারয়িতা वि -धारण करनेवाला। स्त्री—धারয়িত্রী।
ধারা सं—प्रवाह धार (বারি—, অশ্রু—), बारिश, झरना, परम्परा, तरतीब (কাজের—), ढंग (কেমন—); कानूनकी धारा (১০৭—মতে, १०७ धाराके अनुसार; ১৪৪—জারি হয়েছে)।
ধারা (क्रि परि ३)—ऋणी रहना (তার কাছে পাঁচ টাকা ধারি)। [किताब।
ধারাপাত सं—धाराका गिरना, पहाड़ेकी
ধারবাহিক, ধারাবাহী वि—लगातार, क्रमिक, सिलसिलेवार।
ধারাল (-अ), ধারালো वि—শাণিত, খরধার पैना, तीखा, धारदार। [পতাকা—)।
-ধারী प्रत्य—धारण करनेवाला (অস্ত্র—,
ধারোষ্ণ (-अ) वि—थोड़ा गरम, गुनगुना।
ধার্য (-র্জ-अ) वि—धारण करनेके योग्य, निश्चित, निर्धारित (বিবাহের দিন—করা)।
ধাষ্টামি, ধাষ্টাম (-মো) सं—धृष्टता, ढिठाई, निंदित व्यवहार।
ধিক अव्य—छि छि, धिक्कार।
ধিকিধিকি क्रि वि—धकधक देखो।
ধিঙ্গী वि—ऊधमी (लड़की), दलका सरदार।
ধিনধিন सं—नाचनेका ढंग, बाजेका बोल।
ধিমা वि—ढिमा धीमा।
ধী सं—बुद्धि ज्ञान। —মান वि—बुद्धिमान।
ধীবর सं—জেলে मछुआ, धीमर।
ধীর वि—मृदु, धीमा (-গতি), स्थिर, धीर। —ভাবে क्रि वि—धीरे, शान्त भावसे।
ধুকধুক क्रि वि—धकधक देखो। [लाकेट।
ধুকধুকি सं—कण्ठहारमें लटकता हुआ लोलक,
ধুকপুক सं—আশঙ্কা-জনিত হৃৎস্পন্দন धड़कन।
ধুঁকুনি सं—हाँफा, हृत्स्पन्दन। [छेददार बर्तन।
ধুচনি, ধুচুনি सं—चावल आदि धोनेका
ধুৎ अव्य—হুৎ, ধেৎ, দূর ছাই। [(—গাপ)।
ধুত, ধৃত (-अ) वि—कंपित, विदूरित
ধুতি सं—मर्दानी धोती।
ধুতুরা, (-রা) सं—धतूरा।
ধুধু सं—आगके धधकनेका शब्द, धधक, सन्नाटा विस्तार उत्ताप आदिका लक्षण प्रकाश (মাঠ—করে, বুকের ভিতর—করে)।
ধুঁধুল सं—एक तुरई, नेनुआ।
ধুনচি, ধুনুচি सं—धूपदानी।
ধুনন, (ধূ-) सं—कम्पन, धूननेकी क्रिया।
ধুনা, ধুনো सं—धूप, धूना।
ধুনারী, ধুনরী, ধুনুরী सं—धुनियाँ।
ধুনি सं—धूनी, नदी (সুর—)।
ধুন্দুল, ধুঁধুল सं—नेनुआ।
ধুপ सं—धप गिरनेका शब्द, धूप (ছায়া)।
ধুম सं—धूम, समारोह। —ধড়াকা सं—धूमधड़क्का, भीड़भाड़। [ধুমসী।
ধুমসো, (-সা) वि - मोटा, स्थूल। स्त्री—
ধুয়া, ধুয়ো सं—कीर्तन आदिमें जो मूल दोहा पीछेवाले बार बार गाते हैं, स्थायी, टेक।
ধুঁয়া, ধোঁয়া सं—धूम, धुआँ।
ধুর, ধুরা सं—জোয়াল जूआ, धुरा।
ধুরন্ধর, ধুরীণ वि, सं—कार्य करनेमें निपुण, दक्ष।
ধুলট सं—कीर्त्तनके बाद भावके आवेशमें आकर धूलमें लोटना-पोटना।
ধুলা, ধূলা, ধুলো सं—धूल गर्द, मिट्टी। ধুলা-পা सं—गौनेके बदले विवाहके आठ दिनोंके अन्दर दुलहिनका दुलहेके साथ पति-गृहमें आगमन। —দেওয়া क्रि—धूल झोंकना, धोखा देना, धिक्कारना। —পাতা দেওয়া क्रि—अपमानित करना।
ধূপ सं—धूप, धूना।
ধূম सं—ধুঁয়া धुआँ। —পান सं—तमाक

ছুঁকো ইত্যাদি খাওয়া तम्बाकू आदिका धुआँ पीना। —খোর सं—तम्बाकू आदिका धुआँ पीनेवाला। ধূমল वि—धुएँके रंगका। ধূমাভ (-अ) वि—धुआँसा रंगवाला। ধূমায়মান वि—जिससे धुआँ निकल रहा है। ধূমায়িত (-अ) वि—धुएँसे ढका और धुआँ-वाला। [रंगवाला।

ধূম্র (-अ) सं—धूम, धुआँ। वि—धुआँसा

ধূর্ত (-अ) वि—धूर्त, चालाक, धोखेबाज।

ধূলি, (-লো) सं=धूल। —পটল सं—उड़ता हुआ धूलका बादल। —ময় वि—धूलमें मिला या मिलाया हुआ। ধূল্যবলুণ্ঠিত (-अ) वि—धूलमें लोटता हुआ।

ধূসর वि—खाकी। ধূসরিত (-अ) वि—खाकी रंगमें रंगा हुआ। ধূসরিমা सं—खाकी रंग।

ধৃত (-अ) वि—धृत, पकड़ा हुआ; गृहीत।

ধৃষ্ট (-अ) वि—ढीठ, बेहया। ধৃষ্টতা सं—ढिठाई, बेहयापन।

ধৃষ্য (-अ) वि=धर्षणीय।

ধেইধেই सं—उछल-उछल कर नाचनेका ढंग।

ধেড়ান (ধ্যাড়ানো), ধেড়ানো (क्रि परि १०) —काममें अनाड़ीपन दिखाना; नाकामयाब होना; पतला दस्त होना।

ধেড়ে वि—धाड़ी उमरदार, पट्ठा, जवान (বুড়ো বয়সে—রোগ)। सं—ऊदबिलाव।

ধের অব্য—धुत्, धत, छी।

ধেনো वि—जिसमें धान पैदा होता है (—জমি); धानसे बना (—মদ)। [योग्य।

ধেয় (-अ) वि—ग्रहण करने या जाननेके

ধেয়ান सं—ধ্যান ध्यान।

ধৈরজ सं—धैर्य, धीरता।

ধৈর্য (धइर्ज-अ) सं—धैर्य, सहिष्णुता।

ধোকড়, ধোকড়া, ধুকড়ি सं—कथड़ी, मोटा कपड़ा; थैला।

ধোঁকা सं—संदेह, धोखा, भिगोयी हुई दाल पीसकर और उसे बरफीनुमा काटकर तेल या घीमें भूनकर पकायी हुई तरकारी।

ধোঁকা (क्रि परि ३)—[illegible] हाँफना।

ধোনা (क्रि परि ६)—धुनना।

ধোপ सं—धुलाई (—দুরস্ত, —[illegible], ধু—)। —দস্ত (-अ), —দুরস্ত (-अ) वि—अच्छी तरह धुलवाया हुआ।

ধোপা, ধোবা सं—रजक धोबी। स्त्री—ধোপানি, ধোবানি।

ধোয়া (क्रि परि २०)—धोना, पखारना।

ধৌত (-अ) वि—धोया हुआ। ধোয়ানি सं—जिस जलसे धोया गया है।

ধোয়ান (-নো), ধোয়ানো (क्रि परि १४)—धुलवाना। वि—धोया हुआ (কাপড়—কি?)।

ধোঁয়া सं=ধূম।

ধোলাই सं—धुलाई।

ধোসা सं—धुस्सा, एक मोटा पशमी वस्त्र।

ধৌত (धउत-अ) वि—धोया हुआ। ধৌতি सं—प्रक्षालन, धोना; हठयोगकी एक क्रिया।

ধ্যান सं—गहरी चिंता, ध्यान, रूप चिंतन। —গম্য (-अ) वि—ध्यानसे जानने योग्य। —মগ্ন (-अ) वि—ध्यानमें लवलीन। ধ্যানস্থ (-अ) वि—ध्यान करता हुआ। ধ্যানী वि—ध्यान करनेवाला। ধ্যেয় (-अ) सं—ध्यानका विषय।

ধ্বংস (धंश-अ) सं—ध्वंस, नाश, वध, क्षय (যক্ষ্মা—)। ধ্বংসক वि—ध्वंस करनेवाला। ধ্বংসনীয় (-अ) वि—ध्वंस-योग्य। ধ্বংসপথ सं—नाश होनेका रास्ता। ধ্বংস-শেষ, ধ্বংসাবশেষ सं—ध्वंस होनेके बाद जो पड़ा रहता है; खंडहर।

ধ্বজ (-अ), ধ্বজা सं—পতাকা, निशान ध्वजा,

झंडा। ध्वजी वि, सं--जो झंडा लिये हो, पाखंडी (धर्म्मध्वजी)।

ध्वनि सं—आवाज, शब्द। ध्वनित (-अ) वि—शब्दित, बजाया हुआ।

ध्वस्त (-अ) वि—नष्ट, पतित।

ध्वान्त (-अ) सं—अंधकार, अंधेरा।

न

न वि, सं—नय नव, ९ (न'ाम के); नातेमें चौथा (—दिदि, —काका)। —बउ स्त्री—बड़ी मझली और तीसरी बहूके बाद चौथी बहू।

नइचा, नइचे सं=नलिचा।

नइले=नहिले। नওবং=নহবং।

নউই सं—नववीं तारीख।

नং सं—नंबरका संक्षिप्त रूप।

नकल सं—नकल, अनुकरण, प्रतिलिपि। वि—नकली, बनावटी, जाली। —नविस सं—नकल नवीस।

नक्शा सं—नक्काशीदार गहना, रेखाचित्र (बाड़ির—); मजाकका लेख या नाटक।

नकाशि सं—नक्काशी।

नकिब, नकीब सं—नकीब, राजसभामें आगन्तुककी सूचना देने वाला नौकर।

नकुल सं—नेउल, বেজি नेवला। [भाँड़।

नकुले वि, सं—नकल या मजाक करनेवाला,

नक्त (नक्त अ) सं—रात।

नक्र (नक्र-अ) सं—कुम्भीर मगर, घड़ियाल।

नक्षत्र (नक्खत्र अ) सं—नक्षत्र, तारा, भाग्य। —गति, —वेग सं—टूटते हुए सितारेका वेग। —पात सं—सितारेका गिरना, उल्कापात, नामी आदमीकी एकाएक मृत्यु या अवनति।

नख, (नखर) सं—नाखून। —दर्पण सं—किसी विषयमें प्रत्यक्ष और सूक्ष्म ज्ञान। —कुनी, —शूल सं—नाखूनका कोना बैठकर उंगली पक जानेका रोग। नखाघात सं—नाखूनसे आघात। नखी वि—नाखून वाला।

नगण्य (-अ) वि—तुच्छ, मामूली।

नगद वि—नकद। नगदा वि—काम समाप्त करते ही जो मजदूरी लेता है (-मजूर)।

नग्न (-अ) वि -উলঙ্গ, নেংটা नंगा, उघाड़ा। स्त्री—नग्निका।

नङ्गर (नंगर), (নো-), নোঙর सं—लंगर।

नचेत् अव्य—नतुवा, नहिले नहीं तो, न हो तो।

नच्छार वि—नीच, पाजी, लंपट।

नजर सं—दृष्टि, नजर, ख्याल; रखवाली (—राखा); लक्ष्य (উঁচু—), लालच-भरी नजर (—দেওয়া, ডাইনের—); उदारता या कंजूसीकी मात्रा (বড়—, ছোট—); पसंद (নেক—, সু—); भेंट, उपहार। —বন্দী वि—जिसे नजरके अंदर रखा गया है; जो पहरेके बाहर नहीं जा सकता, नजरबंद।

नजराना सं—नजराना, भेंट, उपहार।

नजिर, नजीर सं—नजीर, दृष्टांत, मिसाल।

नटखट, (—खटि) सं—परेशान करनेवाले छोटे-मोटे काम। नटखटे वि—परेशान करनेवाला, झंझटिया (काम)।

नड़चड़, नड़नचड़न सं—स्पंदन, कंपन, हिलना, उलट-फेर (কথার— হবে না)।

नड़नड़, (—बड़) सं—लगा रहकर हिलना या झूलना। नड़नड़े, नड़बड़े वि—लगा रहकर हिलता या झूलता हुआ।

नड़ा सं—बाहु भुजा।

नड़ा (क्रि परि १)—हिलना, काँपना, उलट-फेर होना (কথা—, হুকুম—)। वि—हिलता हुआ (—দাঁত)।

নড়ান (-নো), নড়ানো (ক্রি পরি ৫০)—নাড়া দেওয়া हिलाना, सरकाना, हटाना ; उलट-फेर करना।

নড়ি सं—লাঠি लाठी, छडी, सहारा (বৃদ্ধের—)।

নত (-अ) वि—নত अवनत, झुका या झुकाया हुआ (—মস্তক)। —জানু वि - घुटने टेक कर बैठा हुआ। নতি सं—प्रणाम, विनती, प्रार्थना।

নতুন वि—নূতন नया, नूतन।

নতুবা अव्य—নচেৎ, নহিলে नहीं तो। [गहना।

নথ सं—नथ, बालीकी तरह नाकका एक

নথি सं—नत्थी।

নদ सं—नदीका पुंलिंग-वाची नाम (সিন্ধু—, ব্রহ্মপুত্র—)। নদী सं—नदी, दरिया।

নদীমাতৃক वि—जो (भूमि या देश) नदियोंके रहनेसे उपजाऊ है। নদীমুখ सं—नदीका मुहाना।

নধর वि—सुडौल, मोटा-ताजा, सुंदर, कोमल (—কান্তি, —দেহ)।

ননদ, ননদী, ননদিনী, ননন্দা स्त्री ননদ।

ননী सं—নবনীত, মাখন मक्खन।

নন্দাই सं—ननदोई।

নন্দিত (-अ) वि—आनन्दित, खुश।

নফর सं—চাকর नौकर।

নব (-अ) वि—नया, नवीन। —কুমার सं—अभी पैदा हुआ बालक। —জীবন सं—नयी जिंदगी। —জ্বর सं—नया बुखार। —ডঙ্কা सं—कुछ भी नहीं। —বর্ষ (-अ) सं—नया साल, सालका आरंभ। —বিধান सं—ब्राह्म समाजकी एक शाखा।

নব (-अ) वि, सं—নয় नौ, ९। —দ্বার सं—शरीरके नव छिद्र (दो आखे, दो कान, नाकके दो छेद, मुख, पायु और उपस्थ)। —পত্রিকা सं—केले अरवी आदिके पत्तोंसे बनायी हुई देवीकी मूर्त्ति। —রস सं—अलंकार-शास्त्रमें कथित नव रस (शृंगार, हास्य, करुण अद्भुत, रौद्र वीर, भयानक, बीभत्स और शान्त)। —শাখ, —শায়ক सं कायस्थोंकी नौ श्रेणियां।

নবনী, নবনীত (-अ) सं—ননী मक्खन।

নবান্ন (-अ) सं—नया धान काटनेके बाद करने योग्य अनुष्ठान जिसमें चावलके चूर्ण दूध गुड़ नारियल आदिके साथ मिलाकर देवताको चढ़ाने और खाये जाते हैं।

নবোঢ়া स्त्री—नयी ब्याही स्त्री, नयी दुलहिन।

নব্বই वि, सं—नब्बे, ९०। [हालका।

নব্য (-अ) वि—नया, तरुण, आधुनिक

নভেম্বর सं—अंगरेजी नवंबर मास।

নভেল सं—उपन्यास।

নভোমণ্ডল सं—आकाश-मंडल।

নমঃ सं—प्रणाम (নমো-নমঃ)।

নমন सं—নতি प्रणाम, झुकना।

নমনীয় (-अ), নম্য (-अ) वि—झुकाये जाने योग्य, लचीला। নমনীয়তা सं—लचीलापन

নমশূদ্র सं—एक निम्न श्रेणीका शूद्र।

নমস্কার सं—प्रणाम, नमस्ते। নমস্কর্তা सं- नमस्कार करनेवाला। নমস্কার্য (-अ) वि—नमस्कारके योग्य। নমস্কৃত (-अ) वि—जिसे नमस्कार किया गया है। নমস্কারী सं—विवाहमें मान्य कुटुंबियोंको दिये जानेवाले कपडे। [पूजनीय। स्त्री—নমস্যা।

নমস্য (-अ) वि—प्रणम्य, नमस्कारके योग्य,

নমিত (-अ) वि—নত झुका या झुकाया हुआ।

নমুনা सं—नमूना, बानगी ; आदर्श।

নম্বর सं—नंबर, संख्या, अंक। নম্বরী वि - नंबरवाला ; प्रसिद्ध, अधिक मूल्यवान (—নোট)।

নম্র (-अ) वि—विनीत (—ভাবে, —স্বভাব)

नत, झुका हुआ। নম্রতা सं—विनय; कोमलता, लचीलापन।

নয় वि, सं—नव, नौ, ९, नहीं (হয়কে—কয়)। —ছয় वि—विशृंखल, अस्तव्यस्त, बिखेरा हुआ।

নয় सं—नीति, कानून। নয়জ্ঞ वि—कानूनदाँ।

নয় क्रि—নহে नहीं है। अव्य—नहीं तो, या (হয় সত্য—মিথ্যা)।

নয়ন सं—नेत्र आँख। (—কোণ, —জল); ले जाना।—বাণ सं—कटाक्ष। —সুক सं—नैन्सुक कपडा।

নয়না, নয়নি स—नेत्र, नयन।

নয়ানজুলি, (নয়ন-) सं—নরদমা पनाला, नाली, मोरी।

নর सं—মনুষ্য आदमी, नर। —কপাল सं—মড়ার খুলি खोपड़ी। —পশু सं—पशुके समान मनुष्य। —লোক सं—संसार। —সুন্দর सं—নাপিত नाई, नाऊ। [मोरी।

নরদমা, নরদামা, নর্দমা सं—पनाला, नाली,

নরম वि—कोमल, नरम, शांत, दयालु, शिथिल, कम; खराब। —গরম वि—नरम और कडा। [नरमाना, कोमल होना।

নরমান (-নো), নরমানো (क्रि परि १६)—

নরাধম वि—नीच, पापी। [नहरनी।

নরুন सं—नाखून काटनेका एक औजार,

নর্তন सं—नाच, नृत्य।

নর্দমা सं=নরদমা।

নর্দিত (-অ) वि—ध्वनित, बजाया हुआ।

নল स—চোঙা नल, धातुका पोला गोल खंड। —খাগড়া सं—नलके ऐसा पोला डंठलवाला एक लंबा तृण, नरकट। —চালা क्रि—गुप्त वस्तुकी खोजके लिए मंत्रसे नल चलाना।

নলা सं—लड़ी (তিন—, तिलडी)। নলা, নলী वि—नलवाला (দুনলা, দুনলী বন্দুক)।

নলিচা, নলচে सं—हुक्के आदिका खडा लकडी-वाला नल जिस पर चिलम बैठायी जाती है।

নলী, নলি, নলিকা सं—छोटा नल।

নলেন सं—खजूरका नया गुड।

নষ্ট (-অ) वि—নাশপ্রাপ্ত, नष्ट; विकृत, खराब, बरबाद, दुष्ट। —চন্দ্র सं—भाद्र कृष्णा और शुक्ला चतुर्थीका चन्द्र, जिसके देखनेसे दोष लगता है। —মতি वि—विकृत बुद्धि वाला, जिसकी बुद्धि विगड गयी है। নষ্টা स्त्री—भ्रष्टा, व्यभिचारिणी। নষ্টামি सं—দুষ্টামি अधम, पाजीपन।

নসিব, নসীব (नसीव) सं—नसीव, भाग्य।

নস্কর, নস্কর (लश्कर) सं—सिपाही, खलासी।

নস্য (-অ) सं—सुँघनी, (व्यंगमें) बहुत अल्प परिमाण, जरासा। [नौबतखाना।

নহবৎ सं—নওবৎ नौबत। —খানা स—

নহলা सं—ताशका नहला।

নহিলে, নইলে अव्य—না হইলে न होनेपर, नहीं तो।

নহে, নয় क्रि—नहीं (সত্য নহে, তুমি নয়)।

না, নাও सं—নৌকা नाव नौका।

না अव्य—नहीं, मत (করি না, খেয়ো না)। सं—अनुरोध-सूचक शब्द (পড়ই না, দাও না); अधिकता-सूचक शब्द (কত না দুঃখ); संदेह-युक्त प्रश्न-वाचक शब्द (খাবে না? न खाओगे या खायगा)? अव्य—या, अथवा (সত্য না মিথ্যা)।

নাই स—আবদার, প্রশ্রয় बच्चोंकी जिदमें उनकी इच्छाकी पूर्ति; प्रोत्साहन, सिर चढ़ाना (ছেলেকে—দিয়ে মাথা খেও না)।

নাই सं—নাভি नाभि, चक्रमध्य, निहाई।

নাই, नि—क्रियाका अभाव-वाचक भूतकालिक शब्द, नहीं हुआ है (এখনও হয় নাই, কাজ শেষ হয় নি, नहीं हुआ है)। নাই, নেই स—

অভাব-বাচক शब्द (केवल वर्त्तमानमें—পাড়ি—, রাত্রি—, সে এখানে—)।

নাইট্রোজেন सं—नाइट्रोजन गैस।

নাউ सं—লাউ लौकी।

নাওয়া (क्रि परि ४)—नहाना, स्नान करना।

নাওয়ান (-नो), নাওয়ানো (क्रि परि १२)—नहलाना, स्नान कराना।

নাক सं—নাসিকা नाक। —কাটা वि—छिन्ननास नकटा, बेहया। —খত, নাকেখত सं—খত देखो। —ছাবি सं— नकफूल। —ঝাড়া क्रि—नाकसे कफ निकाल फेंकना, छिनकना। —ডাক. क्रि—सोतेमें नाकसे शब्द निकलना, खर्राटे भरना। —বিঁধানো क्रि—नाक छेदना। —সিঁটকানো क्रि—घृणासे नाक चढ़ाना या सिकोड़ना।

নাকচ वि—রদ रद्द, रहित।

নাকানি-চোবানি सं—जलमें डूबनेसे नाक और मुखमें जलका प्रवेश ; (व्यंगमें) नेस्तनबूद।

নাকাড়া, (-ড়া), নাগরা सं—नगाड़ा।

নাকাল वि—হয়রান, জব্দ नेस्तनबूद।

নাকি अव्य—নহে কি क्या (তুমি—করি? পাগল—? ভাই—?), संदेहमें (সে—মারা গেছে?)।

নাখোশ, নাখুশ वि—असंतुष्ट, नाखुश।

নাগকেশর स—नागकेसर।

নাগর वि—नगर-सम्बन्धी, नागरिक। सं—छैला, प्रमी। —দোলা सं—घूमनेवाला झूला या हिंडोला।

নাগরা (नागरा) सं—एक देशी जूता।

নাগরালি सं—রসিকতা रसियापन, लपटता।

নাগরি (नागरि) सं—मिट्टीका घड़ा (গুড়ের—)।

নাগাড় क्रि वि—অবিরাম, একটানা लगातार।

নাগাদ, (-দ) क्रि वि—পর্য্যন্ত तक (বৈশাখ—)।

নাগাল सं—পৌঁছ पहुँच (এত উঁচু যে—পাই না)।

নাগেশ্বর सं—নাগকেশর।

নাচ सं—नाच, नृत्य (-ওয়ালী)। নাচন, নাচনি, নাচুনি सं—नर्तन, नाच। নাচনী, নাচুনী वि—नाचनेवाली। নাচিয়ে वि—नाचनेमें निपुण, नाचनेवाला।

নাচা (क्रि परि ३)—नाचना। [नचाना।

নাচান (-नो), নাচানো (क्रि परि १०)—

নাচার वि—নিরুপায় लाचार।

নাছোড় वि—न छोड़नेवाला, पिछलगा। —বান্দা वि, सं—फटकारने या दुतकारने पर भी जो पीछा नहीं छोड़ता, जिद्दी।

নাজিম सं—शासक (নবাব—)।

নাজির सं—अदालतका एक उच्च कर्मचारी, नाजिर। [नाकोंदम।

নাজেহাল वि—হয়রান, নাকাল नेस्तनबूद,

নাট सं—नाच, अभिनय। —মন্দির सं—मंदिरके सामनेवाला स्थायी मंडप जहाँ नाच-तमाशे होते हैं।

নাটাই सं—লাটাই परेता।

নাড়া (क्रि परि २)—हिलाना, घोंटना। स—हिलावट। —চাড়া स—हिलावट, स्थान बदलना (রোগীকে—করা)। —নাড়ি सं—बार बार स्थान बदलना।

নাড়ান (-नो), নাড়ানো, নড়ানো (क्रि परि १०)—हिलाना, स्थान बदलना।

নাড়ী, নাড়ি स—नाड़ी, नाड़ीका स्पंदन (—জ্ঞান, —টেপা)। —নক্ষত্র सं—जन्मका समय और नक्षत्र, पूरा विवरण। —ভুঁড়ি सं—अन्त्र, आँतें। [खानेवाले श्रीकृष्ण।

নাড়ু सं—লাড়ু लड्डू। —গোপাল सं—लड्डू

নাতজামাই (नात् -) स—पोतिन या नातिनका पति। নাতবউ स्त्री—नाती या पोतेकी पत्नी।

নাতি सं—पोता, नाती। নাতিনী, নাতনী स्त्री—पोतिन, नातिन।

নাতি वि—न-अति अनधिक, ज्यादा नहीं (—দীর্ঘ)। —শীতোষ্ণ (-अ) वि—गुनगुना, अल्प गरम। [सौभाग्यवती।

নাথ सं—प्रभु, पति। —বতী स्त्री—সধবা

নাদ सं—शब्द, नाद, गर्जना। নাদিত (-अ) वि—शब्दित, ध्वनियुक्त। নাদী वि—शब्द करनेवाला।

নাদ, লাদ सं लीद (ঘোড়ার—)। নাদি, লাদি स—छोटे पशुकी लीद (ছাগল—, ইঁদুর—)। [तोंदवाला)।

নাদা स—জালা मटका। নাদা-পেট वि—

নাদুস-নুদুস वि—মোটা-সোটা, গোল-গাল स्थूल और कोमल (—চেহারা)।

নানা, নানান वि—विभिन्न, अनेक (নানাপ্রকার, নানাবিধ, নানামতে ; নানান কাজ)।

নান্দী सं—नाटक आदिके आरम्भमें मगलाचरण। —মুখ स—विवाह आदि सस्कारके पहले पितरोंका श्राद्ध।

নাপছন্দ वि—অপছন্দ नापसद।

নাপিত सं—ক্ষৌরকার नाई, नाऊ, हज्जाम। स्त्री—নাপিতানী, নাপতিনী।

নাফা सं—नफा, लाभ।

নাবা (क्रि परि २)—নামা उतरना।

নাবান (नो), নাবানো (क्रि परि १०)—নামানো उतरवाना, उतारना।

নাবালক वि, सं—অপ্রাপ্তবয়স্ক नाबालिग।

নাবিক सं—मल्लाह, जहाज चलाने वाला।

নাবী वि—देरमें या अंतमें होनेवाला (—বর্ষা, —ফসল)।

নাব্য (-अ) वि—नाव जहाज आदिके चलने योग्य ; नाव आदिके द्वारा पार होने योग्य।

নাভি सं—নাই नाभि, चक्रमध्य।

নাম सं—আখ্যা, সংজ্ঞা नाम, यश (—ডাক, সুনাম, দুর্নাম), केवल बातमें (নামে বড়লোক) ; नाममात्र। নামতঃ क्रि वि—নামে नामसे। —জাদা वि—नामवर, प्रसिद्ध। [नामंजूरी।

নামঞ্জুর वि—नामंजूर। নামঞ্জুরি स—

নামতা सं—पहाड़ा।

নামা (क्रि परि २)—নাবা उतरना ; घटना (রোদ— ; দর—), नीच या हीन होना।

নামান (नो), নামানো (क्रि परि १०)—নাবানো उतरवाना उतारना। পেট—ক্রি—पतला दस्त होना।

-নামা प्रत्य—नामवाला (খ্যাত—)। सं—अधिकार-पत्र (ওকালত—)।

নামাবলী, (-বলি) सं—नामोंकी फिहरिस्त, देवताके नामकी छापवाली चादर।

নামী वि=নামজাদা।

নায়েব सं—जमींदारका गुमाश्ता या तहसीलदार, नायब (—মুনসী)। নায়েবি सं—तहसीलदारका पद। নায়েবী वि—तहसीलदाराना (—চাল)।

নারঙ্গ, নারঙ্গি, নারাঙ্গি सं—কমলালেবু नारंगी।

নারা (पद्यमें) (क्रि परि २)—না পারা न सकना।

নারিকেল, নারকেল, (-কল, -কোল) सं—नारियल। নারকেলী—, নারকুলে वि—नारियलकी शक्लका (—কুল), नारियल-सम्बन्धी। [थूक।

নাল सं—नल, लताका डंठल ; नाल, लार,

নালায়েক वि—नालायक, अयोग्य।

নালিক, নালীক स—एक पुरानी बंदूक।

নালিতা, নালতে स—পাটশাক पटुएकी पत्ती।

নালী, নালি स—नासूर (—ঘা), sinus

নাশ सं—नाश, ध्वस (অর্থ—, প্রাণ—, সর্ব—)। নাশন सं—वध, हत्या। নাশিত

(-অ) वि—जिसका नाश किया गया है।
নাশী वि नाशवान; नाशक। स्त्री—নাশিনী।
নাশপাতি स—नाशपाती।
নাশা (ক্রি পরি ২)—नाश करना।
নাস स—নস্য सुंघनी।
নাসা सं—नाक (-গ্র), नाकके भीतर फोड़ा।
নাস্তা (नास्ता) सं—नाश्ता, जलपान।
নাস্তানাবুদ वि—নাজেহাল नेस्तनबूद।
নাস্তি अव्य—নাই नहीं है।
নাস্তিক वि—वेद ईश्वर या शास्त्रीय धर्ममें विश्वास न करने वाला; नास्तिक। নাস্তিকতা, নাস্তিক্য (-অ) स—नास्तिकका भाव।
নাহক ক্রি বি—অনর্থক, उर्दूमें नाहक।
না হয় ক্রি বি—বরং बल्कि, नहीं तो; किंवा अथवा; অগত্যা लाचारी हालतमें।
নাহান (-নো), নাহানো, নাওয়ানো (ক্রি পরি ১২)—স্নান করানো नहलाना। [नहीं है।
নাহি ক্রি—নাই, নেই अभाव-वाचक शब्द
নি अव्य—নাই क्रियाका भूतकालिक अभाव-वाचक शब्द, नहीं हुआ है (খাই নি, হয় নি?)
নিউমোনিয়া सं—न्यूमोनिया, सन्निपात।
নিঙড়ান (-নো), নিঙড়ানো, নিঙড়নো (ক্রি পরি ১৭)—निचोड़ना।
নিঃ उप—अभाव निश्चय अधिकता आदि सूचक उपसर्ग। —শঙ্ক वि—निडर। —শব্দ वि—शब्द-रहित। —শেষ वि—जिसका शेष बचा नहीं है, समूचा। —শ্রেয়স सं—मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण। —শ্বাস स—साँस, दम (—টানা, —ফেলা); साँस लेनेका समय (এক নিঃশ্বাসে)। —শ্বসন सं—साँसका छोड़ना। —শ্বসিত (-অ) वि—साँसके रूपमें निकला हुआ। —সঙ্গ (-অ) वि—সঙ্গহীন वैरागी। —সন্তান वि—আঁটকুড়ো सन्तानरहित, लावल्द। —সম্পর্ক (-অ) वि—सम्बन्ध-रहित। —সম্বল वि—পাথেয়-শূন্য यात्रामें रुपया-पैसा रहित; खाली-हाथ। —সহায় वि—सहायक-रहित। —সাড় वि—অসাড় सुन्न। —সার वि—सार-रहित। —সারক वि—निकालने वाला। —সারণ सं—निर्वासन, निकाल देना। —সারিত (-অ) वि—निकाला हुआ। —স্ব वि—दरिद्र, मुफलिस। —স্রব, —স্রাব सं—तरल वस्तुका प्रवाह।
নিকট वि—समीप, पास (বাড়ীর নিকটে বা নিকট, তাঁহার—থাকিবে, বিপদ—)। নিকটত্ব, (-ত্ব) सं—नैकट्य पासमें स्थिति। নিকটবর্তী वि—निकटमें स्थित पासवाला।
নিকর सं—समूह (মধুকর—)।
নিকষ, (-ষ) सं—কষ্টিপাথর कसौटी। [निकाह।
নিকা स—मुसलमानोंका विधवा-विवाह,
নিকান (-নো), নিকানো, নিকনো (ক্রি পরি ১১)—लीपना, पोतना। वि—लीपा या पोता हुआ।
নিকায় सं—আবাস निवासस्थान, घर।
নিকাশ, নিকেশ सं—निकास (জল—করা), समाप्ति (হিসাব—); नाश (দফা নিকেশ)।
নিকেত, নিকেতন सं—আবাস घर, मकान।
নিক্তি सं—छोटी तराजू जिसमें सोना चाँदी आदि तौला जाता है।
নিক্বণ (निक्वन) स—झंकार, ध्वनि।
নিক্ষেপ स—फेंकनेका भाव, त्याग, अर्पण।
নিক্ষিপ্ত (-অ) वि—फेंका हुआ, अर्पित।
নিক্ষেপক वि—फेंकनेवाला।
নিখরচা वि—बिना-खर्च।
নিখর্ব (-অ) वि—दस हजार करोड़।
নিখাত (-অ) वि—खोदा हुआ; गाड़ा हुआ।

निखिल वि—समस्त, सम्पूर्ण। सं—सारी दुनिया।
निखुँत वि—निर्दोष, त्रुटि-रहित।
निगड़ सं—साँकल, बेड़ी।
निगमन सं—निर्गमन। [अर्थ समझना कठिन है।
निगूढ़ (-अ) वि—अत्यन्त गुप्त, गूढ, जिसका
निग्रह (-अ) सं—रोक, दमन, दंड, कष्ट।
निग्राहक वि—दमन करनेवाला।
निघण्टु सं—अभिधान शब्दकोश।
निडाड़ा (क्रि परि २)=निंड़ान (पद्यमें—निडाड़िल)।
निचय सं—समूह (वृक्ष—)।
निचु वि—नीचा। सं—निचु लीची।
निचोल सं—घाघरा लहगा, ओढ़नी।
निच्छिद्र (अ) वि—छेद-रहित।
निछक वि—निखालिस, विशुद्ध।
निछनि सं—लावण्य, लावण्य, वला, वरण।
निज (-अ) वि—आपना, निजका, स—स्वय खुद (निजे रेखेछि)। —स्व (-अ) सं—अपना धन। वि—निजका (—सम्पत्ति)।
निझुम वि—शब्द-रहित, सन्नाटा छाया हुआ।
निटोल वि—सुगोल सुडौल, गोल।
निठुर वि—निर्दयी, निठुर, बेरहम।
निड़बिड़ स—काम करनेमें देर या ढिलाई। निड़बिड़े वि-काम करनेमें देर करने वाला, ढीला।
निड़ान, निड़न सं—शस्य-क्षेत्रेर तृण उत्पाटन खेतमेंसे घास पात उखाड़ना। निड़ानि, निड़ेन, स—खुरपी।
निड़ान (-नो), निड़ानो, निड़नो (क्रि परि ११)—खुरपोसे घास पात खोद कर फेंकना।
नितम्ब (-अ) स—पाछा चूतड़, नितम्ब। नितम्बिनी स्त्री - सुडौल नितम्ब वाली स्त्री।
निताइ स—नित्यानन्द चैतन्यदेवके एक भक्त।
नितान्त (-अ) क्रि वि—अत्यन्त, निहायत।
निति (पद्यमें) क्रि वि—रोज, नित्य।
नित्य (-अ) वि—नित्य, चिरस्थायी। क्रि वि—सदा, रोज। —सेवा सं—नित्यकी पूजा या सेवा।
निथर वि—निश्चल, गति-रहित।
निद (पद्यमें) सं—नींद, निद्रा।
निदय वि - निर्दयी, बेरहम। [स्मारक वस्तु।
निदर्शन सं—चिह्न; उदाहरण; प्रमाण,
निदाघ स—ग्रीष्मकाल, गर्मी।
निदान सं - मूल कारण, निदान। वि—अन्तिम (—काल)। क्रि वि - एकान्त, अन्ततो गत्वा (—गक्के)।
निदारुण वि- कठोर, दुःसह (—क्रोध, -यन्त्रणा)।
निदिध्यासन, (—ध्यान) सं—एकाग्र चित्तसे ध्यान।
निदिष्ट (-अ) वि—आज्ञाप्राप्त, निर्दिष्ट।
निदेन वि—अन्तिम। क्रि वि—निदान, अन्ततो गत्वा।
निदेश सं—आदेश, आज्ञा, निर्देश। निदेष्टा वि, सं—आज्ञा देनेवाला।
निद्रा स—घुम नींद (—आसा, —भाङा; —याओया, —देओया, सोना)। —कर्षण सं—घुम आसा नींद आना। —गत (-अ) वि- निद्रित, सोया हुआ। —जनक वि नींद लानेवाला। —तुर वि - नींद लगा हुआ, निद्रालु। —विष्ट (-अ) वि—निद्रित, सोया हुआ। —वश स—घुमेर घोर निद्राका आवेश, नींद लगाना। —भङ्ग स—घुम भाङा नींदका टूटना। —भिभूत (-अ) वि—नींदमें डूबा हुआ। —लस वि—नींदके कारण सुस्त। —लु वि—निंदासा, जिसे नींद लगी है। निद्रित वि—घुमन्त सोया हुआ। निद्रोत्थित (अ) वि नींदसे जगा हुआ।

নিধন सं—मरण, मृत्यु, नाश।

নিধান सं—आधार भंडार; स्थापन।

নিধি सं—आधार (গুণ—, জল—), धन, धरोहर। নিধেয় (-अ) वि धरोहर रूपने रखने योग्य।

নিনাদ सं—শব্দ, गर्जना। নিনাদিত (-अ) वि—शब्दित, ध्वनियुक्त।

নিন্দা, নিন্দে सं—निंदा, शिकायत, बदनामी, कलंक, दोषारोप। নিন্দক वि—निंदा करनेवाला। নিন্দন, নিন্দাবাদ सं—निंदा करनेका काम। নিন্দনীয় (-अ), নিন্দাই (-अ), নিন্দ্য (-अ) वि—निंदाके योग्य। নিন্দিত (-अ) वि—निंदित घृणित। নিন্দুক वि—निंदा करनेवाला, शिकायती।

নিপট वि—अत्यंत, पूर्ण। क्रि वि—एकदम।

নিপতন सं—नीचे पतन। নিপতিত (-अ) वि—नीचे पतित, गिरा हुआ।

নিপাত सं—विनाश, मरण (শত্রু—, তুমি—যাও)।

নিপাতন सं—नीचे निक्षेप, हत्या, (व्याकरणमें) नियमका व्यतिक्रम। নিপাতিত (-अ) वि—नीचे गिराया हुआ।

নিপীড়ন सं—উৎপীড়ন पीड़न, दुःख प्रदान; मर्दन, मसलना। নিপীড়ক वि—पीड़न करनेवाला। নিপীড়িত (-अ) वि—जिसका पीड़न किया गया है। [मुख।

নিব सं—कलममें लगाये जानेवाला धातुका

নিবদ্ধ (-अ) वि—बंधा हुआ; जड़ा हुआ, रचित, स्थिर (—দৃষ্টি)।

নিবনিব (নিবনিব-अ) वि—निर्वाणोन्मुख, बुतनेवाला।

নিবনো क्रि=নিবান। নিবন্ত (-अ) वि—নির্বাণ-প্রায় बुतनेवाला, बुता हुआ।

নিবন্ধ (-अ) सं—প্রবন্ধ निबंध, लेख, प्रस्ताव, नियम, बंधन। নিবন্ধন क्रि वि—के हेतु, के कारण (অজ্ঞতা—)।

নিবর্তক वि—रोकनेवाला। নিবর্তন सं—निवृत्ति, रोक, लौट आना। নিবর্তিত (-अ) वि—रोका हुआ, लौट आया हुआ।

নিবসন सं—घर, रहनेका स्थान।

নিবহ (-अ) सं—সকল समूह। [घटना।

নিবা, নেবা (क्रि परि ५)—बुतना, बुझना,

নিবাত वि—वायु-रहित, वायु न रहनेसे स्थिर।

নিবান (-নো), নিবানো, নিবনো, নেবানো (क्रि परि ११)—बुताना, बुझाना; घटाना। वि—बुता हुआ।

নিবারণ—निषेध, रोक। নিবারণীয় (-अ), নিবার্য (-जे -अ) वि—रोकनेके योग्य। নিবারক वि, सं—रोकनेवाला। নিবারিত (-अ) वि—रोका हुआ, निषिद्ध।

নিবাস सं—বসতি रहनेका स्थान, घर, गाँव, देश (আপনার—কোথায়?)। নিবাসী वि, सं—বাসিন্দা रहनेवाला। स्त्री—নিবাসিনী।

নিবিড় वि—घन घना, गाढ़ा (—অন্ধকার,—বন)।

নিবিষ্ট (-अ , वि—एकाग्र, दत्तचित्त, प्रविष्ट।

নিবীত सं—উত্তরীয় ओढ़ना, गलेका जनेऊ।

নিবৃত্ত (-अ) वि—ক্ষান্ত, বিরত रुका हुआ। নিবৃত্তি सं—रोक, विराम, वैराग्य।

নিবেদন सं—জ্ঞাপন जताना; प्रार्थना; समर्पण (আত্ম—)। নিবেদিত (-अ) वि—अर्पित, निवेदित। নিবেদনীয় (-अ), নিবেদ্য (-अ) वि—निवेदन या अर्पण करनेके योग्य।

নিবেশ सं—स्थापन, प्रवेश, डेरा डालना। নিবেশিত (-अ) वि—स्थापित, प्रविष्ट। নিবেশন सं—प्रवेश। নিবেশক वि, सं—स्थापन या प्रवेश करनेवाला।

নিবোনিবো वि=নিবনিব।

निभ वि—सदृश, तुल्य सा (দুগ্ধফেন—শয্যা, दूधके फेन-सा बिछौना)।

निभाঁজ वि—ভাঁজ-শূন্য जिसमें शिकन न हो, ভেজাল শূন্য मिलावट-रहित, खरा, शुद्ध।

निভৃত (-अ) वि—एकांत, निर्जन। सं—गुप्त स्थान (নিভৃতে বসিয়া)।

निम सं—निम्ब नीम। [মৃতপ্রায় बहुत घायल।

निम- उप—आधा (—রাজী)। —খুন वि—

निमक सं—লবণ, नून नमक। —হারাম वि—অকৃতজ্ঞ, কৃতঘ্ন नमकहराम। —হারামি सं—नमकहरामी। —হালাল वि—কৃতজ্ঞ नमक-हलाल। —হালালি सं—नमकहलाली।

निमकि सं—घीमें तला हुआ मैदेका नमकीन खाद्य, नमकीन समोसा।

निमग्न (-अ) वि—डूबा हुआ, लवलीन।

निमज्जन सं—डुबाना, डूबकर स्नान। निमজ্জিত (-अ) वि—डूबा हुआ।

निमन्त्रण सं—न्योता (—খাওয়া, —রক্ষা)।

निमন্ত্রিত (-अ) वि—जिसे न्योता दिया गया है।

निমাই सं—चैतन्य-देवका मातृ-दत्त नाम।

निमित्त (-अ) स—कारण हेतु, निमित्त, बनाने-वाला (—কারণ जैसे, घटका कुम्हार), शुभाशुभ लक्षण (দুর্নিমিত্ত)।

निमिष, निमेष सं—पलकका गिरना, पलकके गिरनेमें जितना समय लगता है, क्षण।

निमीलन सं—বোজা मूँदना। निमीलित (-अ) वि—मूँदा हुआ।

निम्न (-अ) वि—नीচু नीचा (—ভূমি, —গামী), नीचेवाला (—লিখিত, —ভাগ)। सं—निम्न स्थान। —গ (-अ) वि—नीचे जाने वाला। स्त्री—निम्नगा।

निम्ब (-अ) स =निम।

नियত (नियत -अ) क्रि वि—सदा। वि—नित्य; स्थिर; संयत, रोका हुआ।

नियति सं—विधिर विधान भाग्य, किस्मत।

नियन्ता वि, सं—नियामक, परिचालक, शासक। स्त्री—नियन्त्री। नियन्त्रित (-अ) वि—नियमित नियमसे बंधा हुआ, परिचालित, सयत।

नियम सं—नियम, पाबंदी, विधि, धारा, कानून, क्रम, संयत आचार (অনিয়ম), संयम व्रत आदि (—ভঙ্গ)। —অনুসারে, নিয়মানুসারে क्रि वि—नियमानुसार। নিয়মন सं—ব্যবস্থাপন नियम बद्ध करनेका कार्य। নিয়মপূর্বক क्रि वि—नियमसे। নিয়মাবলী सं—नियम-समूह। নিয়মিত (-अ) वि—नियम-बद्ध, नियन्त्रित (—ব্যায়াম)। নিয়মী वि—नियम पालनेवाला, सयमी। নিয়ম্য (-अ) वि—संयत करने या नियमके अंदर लानेके योग्य। নিয়ামক सं, वि—नियम करनेवाला, व्यवस्थापक, परिचालक।

नियुक्त (निजुक्त अ) वि—ব্যাপৃত लगा हुआ (পাঠে—); বাহাল बहाल, मुकर्रर (চাকরিতে—)।

নিযুক্তি सं—नियुक्ति, बहाली, मुकर्ररी।

নিযুত (निजुत) वि, सं—दस लाख।

নিয়োগ सं—कार्यका भार अर्पण, बहाली (চাকরিতে—করা, —পত্র); तैनाती (যুদ্ধে—); निर्देश, प्रयोग, निवेश। নিয়োক্তা (निजोक्ता) वि, सं—नियोग करनेवाला। নিয়োগী स—एक उपाधि।

নিয়োজন सं—नियुक्त करण, काममें लगाना। নিয়োজক वि, सं—नियुक्त करनेवाला। নিয়োজয়িতা वि, सं—काममें लगानेवाला। নিয়োজিত (-अ) वि—जिसे काममें लगाया गया है। নিয়োজ্য (-अ) वि—काममें लगाने के योग्य।

निर्, निः- उप—अभाव निश्चय अत्यंत

बहिष्कार आदि भाव सूचक उपसर्ग (निर्भय, निरभिमान, निःशङ्क निःशाम)।

निरक्षवृत्त (अ) स —विषुवत रेखांतर।

निरक्षर वि—अनपढ़, अशिक्षित।

निरखिल (-अ) (पद्यमें) क्रि—निरीक्षण करिल उसने देखा।

निरग्नि सं, वि—जो अग्निहोत्रका अनुष्ठान नहीं करता ; अग्नि रहित। [स्वेच्छाचारी।

निरङ्कुश वि—नियमका बंधन न माननेवाला,

निरञ्जन वि—निर्मल। सं—परमात्मा, दुर्गा आदिकी मिट्टीकी मूर्तिका पूजाके बाद जलमें गिराना।

निरत (-अ) वि—व्यापृत लगा हुआ, तल्लीन, आसक्त। निरति सं—अत्यन्त आसक्ति।

निरतिशय वि—अत्यन्त, बहुत।

निरन्तर क्रि वि—अविच्छिन्न, लगातार।

निरन्न वि—अन्न-रहित, दरिद्र।

निरपत्य (-अ) वि—निःसन्तान बेऔलाद।

निरपराध वि—निर्दोष, बेकसूर। स्त्री—निरपराधा, निरपराधिनी। [बेपरवाह ; स्वतंत्र।

निरपेक्ष (-अ) वि—पक्षपातशून्य बेतरफदार ;

निरव वि—नीरव।

निरवकाश वि—जिसे फुरसत नहीं है, जिसमें अवकाश नहीं है। सं—अवकाशका अभाव।

निरवच्छिन्न (-अ) वि—सिलसिलेवार। क्रि वि—निरन्तर लगातार।

निरवद्य (-अ) वि—निर्दोष, निंदाके अयोग्य।

निरवधि वि—सीमा-रहित, अनत। क्रि वि—निरंतर।

निरवयव वि—निराकार। [आश्रय रहित।

निरवलम्ब (-अ), (-म्बन) वि—अवलबन या

निरवशेष वि—निःशेष जिसमें कुछ बाकी बचा न हो। [(—उपवास)।

निरम्बु वि—जिसमें जल भी न पिया जाता है

निरय सं—नरक। [कारण।

निरर्थक वि—अर्थ-रहित। क्रि वि—वृथा, बिना

निरलस वि—आलस्य-रहित, उद्यमी।

निरशन सं—अनशन उपवास।

निरस वि=नीरस।

निरसन सं—खंडन, रहित करण, निवारण।

निरस्त (-अ) वि—निवृत्त ; खंडित।

निरस्त्र (-अ) वि—अस्त्ररहित, बेहथियार।

निरस्त्रीकरण सं—युद्धके सामान घटाना, अस्त्रहीन करना।

निराकरण सं—निर्णय ; खंटन।

निराकाङ्क्ष (-क्ष-अ) वि—लालसा-रहित, निस्पृह। निराकाङ्क्षा सं—इच्छाका अभाव।

निराकुल वि—व्याकुल ; शांत, निश्चिंत।

निराधार वि=निरालम्ब। [आनदका अभाव।

निरानन्द (-अ) वि—आनंद-रहित। सं—

निरानब्बे वि, स —निनानवे, ९९।

निरापद वि—विपत्ति-रहित, सुरक्षित। निरापदा सं—विपत्तिका अभाव। [निराभरण।

निराभरण वि—आभूषण-रहित। स्त्री—

निरामय वि—स्वस्थ नीरोग, चंगा, स्वस्थ।

निरामिष वि—मछली मांस आदि आमिष रहित (भोजन) (निरामिषाशी, शाक-भोजी)।

निरालम्ब (-अ) वि—बिना सहारे रहनेवाला, निराश्रय। [स्थान।

निराला वि—निर्जन, सुनसान। सं—एकान्त

निराश्वास वि—जिसे भरोसा नहीं है।

निरास स =निरसन।

निरिख सं—दर, भाव।

निरिविलि वि, सं =निराला।

निरीश्वर वि—जिसमें ईश्वरको नहीं माना जाता (-वाद) ; नास्तिक।

निरीह वि—शांत, भोला। [रूपसे कथन।

निरुक्ति स —शब्दके अर्थका निर्देश, निश्चय

निरुत्तर वि—लाजवाब, जो उत्तर न दे या प्रतिवाद न करे।

निरुत्साह वि—उत्साह-रहित।

निरुत्सुक वि—आग्रह-रहित।

निरुद्देश वि—लापता।

निरुद्यम वि—उद्यम-रहित, सुस्त।

निरुद्विग्न (-अ) वि—न घबराया हुआ।

निरुपम वि—अनुपम, तुलना-रहित। स्त्री—निरुपमा।

निरुपाय वि—उपायरहित, प्रतिकार करनेमें असमर्थ, सहायहीन। सं—उपायका अभाव।

निरूपण सं—निर्णय, निश्चय। निरूपक वि, सं—निर्णय करनेवाला। निरूपित (-अ) वि—निश्चित, निर्धारित।

निरेट वि—ठोस, कठिन ; (व्यंगमें) वेवकूफ।

निरेस वि—निकृष्ट खराब।

निर्गम, निर्गमन सं—बाहर निकलना, निकास। निर्गत (-अ) वि—निकला हुआ।

निर्घात सं—आघात, चोट, वज्रपात। वि—प्रचंड, अन्वर्थ।

निर्घृण (-अ) वि—घृणा-रहित, निर्लज्ज, वेहया।

निर्जन वि—एकान्त, सुनसान। सं—एकान्त स्थान ; निर्जनता।

निर्जर वि—जरा-शून्य, बुढ़ापा-रहित।

निर्जल वि—जल-रहित (—शुष्क)। निर्जला वि—निरम्बु (निर्जला एकादशी) ; (व्यंगमें) खरी (निर्जला मिथ्या)। [वशीभूत।

निर्जित (-अ) वि—हराया हुआ, पराजित,

निर्जीव वि—कमजोर, दुर्बल ; अचेत।

निर्झर सं—उत्स झरना, सोता। निर्झरिणी स्त्री—नदी।

निर्णय सं—निश्चय ; फैसला, सिद्धांत। निर्णायक, निर्णेता वि, सं—निर्णय करनेवाला। निर्णीत (-अ) वि—निर्णय किया हुआ। निर्णेय (-अ) वि—निर्णय करने योग्य।

निर्दय वि—दयारहित, निर्दयी, वेरहम।

निर्देश सं—प्रदर्शन ; आदेश ; उल्लेख। निर्देशक, निर्देष्टा वि, सं—निर्देश करनेवाला।

निर्द्वन्द्व (-अ) वि—विवाद-रहित, सहनशील।

निर्धारण सं—निश्चय, निर्णय।

निर्धूम वि—धूमशून्य धुआँ-रहित। [(—नेत्र)।

निर्निमेष वि—एकटक, जिसमें पलक न गिरे

निर्वंश—वि—सन्तानहीन वेऔलाद।

निर्वचन सं—विशेष रूपसे कथन।

निर्वन्ध (-अ) सं—जेद, आवदार, पीड़ापीड़ि आग्रह, जिद (सनिर्वन्ध, निर्वन्धातिशय) ; विधान (दैवेर—, प्रजापतिर—)।

निर्वापण सं—निवानो बुताना, बुझाना ; शांत करना। निर्वापक वि, सं—बुतानेवाला। निर्वापित (-अ) वि—बुता हुआ।

निर्वाह सं—निर्वाह, संपादन ; पालन। निर्वाहक वि, सं—निर्वाह करनेवाला। निर्वाहित (-अ) वि—निर्वाह किया हुआ।

निर्विघ्न (-अ) वि—विघ्न या बाधा रहित।

निर्विचार वि—विचार-रहित। निर्विचारे क्रि वि—विचार न करके ; न छाँट कर।

निर्विण्ण (-अ) वि—दुःखित, खेदयुक्त, पछताया हुआ, विरक्त।

निर्विवाद वि=निर्द्वन्द्व। निर्विवादे क्रि वि—विवाद न करके। निर्विवादी वि—जो विवाद नहीं करता, शांत, भोला।

निर्विरोध, निर्विरोधी वि—अविरोधी, निरीह जिसका किसीसे विरोध नहीं है।

निर्विशेष वि—अभिन्न। सं—भेदका अभाव (अपत्यनिर्विशेषे, अपनी सन्तानके साथ भेद न करके)।

निर्विष वि—विष रहित।

निर्बीज वि—बीज या जीवाणु रहित।
निर्वीर्य (-र्ज-अ) वि—कमजोर, दुर्बल।
निर्बुद्धि वि—बुद्धि-हीन, बेवकूफ। [वैराग्य।
निर्वेद सं—खेद, अनुताप; निराशा,
निर्बोध वि—अज्ञानी, मूर्ख।
निर्व्याज वि—अकपट निष्कपट, भोला, सीधा।
निर्भावना सं—चिंताका अभाव।
निर्भीक वि—निडर, साहसी।
निर्भूल वि—जिसमें भूल नहीं है, शुद्ध।
निर्मक्षिक वि—जिसमें मक्खी या कोई दूसरा जीव न हो। [हो, ममता-रहित।
निर्मम वि—जिसे ममता वासना या दया न
निर्मलि सं—एक बीज जिसे घिसकर डालनेसे जल निर्मल होता है।
निर्माण सं—तैयार रचना, बनानेका काम; बनावट, गठन। निर्माता वि, सं—बनानेवाला। निर्मित (-अ) वि—बनाया हुआ।
निर्माल्य (-अ) सं—देवताको चढ़ाया हुआ फूल माला आदि। [(कार्मुक—बाण)।
निर्मुक्त (-अ) वि—मुक्त, रिहा; छोड़ा हुआ
निर्मूल वि—मूल-सहित उखाड़ा हुआ; मूल-रहित (—जनरव)।
निर्मोक सं—साँपेर खोलस साँपकी छोड़ी हुई त्वचा, केंचुली; कवच, बकतर।
निर्यातन (-र्जा-) सं—उत्पीड़न पीड़न, अत्याचार, बदला (वैर—)। निर्यातक वि, सं—पीड़न करनेवाला। निर्यातित (-अ) वि—उत्पीड़ित, अत्याचारित।
निर्लज्ज (-अ) वि—बेशर्म बेशर्म। [रहित।
निर्लिप्त (-अ) वि—आसक्ति-रहित, सम्बन्ध-
निर्लोभ वि—लोभ-रहित।
निर्लोम वि—रोआँ-रहित।
निलय सं—आलय, मकान, आधार।
निलाज वि—निर्लज्ज।

निलाम सं—नीलाम। निलामी वि—नीलामका, नीलाम सम्बन्धी।
निलीन वि—विलीन लवलीन; निमग्न।
निशपिश सं—अस्थिरता प्रकाश (शारिवार कर हात—करा)।
निशादल सं—नौसादर।
निशान सं—पताका झंडा, ध्वजा। निशान, निशाना सं—निदर्शन, चिह्न, लक्ष्य (बन्दूकेर निशाना करा)। निशानदिहि सं—पहचान।
निशि सं—रात्रि, रात (दिवा—)।
निशित (-अ) वि—शानित धारदार, तीखा।
निशीथ सं—आधी रात। निशिथिनी सं—रात्रि, गहरी रात।
निश्चय सं—निश्चय, निश्चित ज्ञान; निर्णय, सिद्धांत (कृत—, दृढ़—)। वि—निश्चित निःसन्देह, अवश्य, जरूर। निश्चायक सं, वि—निश्चय करनेवाला। निश्चित (-अ) वि—निःसन्देह।
निश्चल वि—अचल, अटल, स्थिर।
निश्चिन्त (-अ) वि—बेफिक्र चिंतारहित।
निश्चेष्ट (-अ) वि—चेष्टा-रहित, आलसी।
निश्वास सं—निःश्वास।
निषङ्ग (-अ) सं—तूणीर तरकश। निषङ्गी वि, सं—तरकशवाला, तीरंदाज।
निषण्ण (-अ) वि—बैठा हुआ; लेटा हुआ।
निषिक्त (-अ) वि—सिक्त, भिजा, गीला।
निषिद्ध (-अ) वि—जिसका निषेध किया गया है। [सं—गहरी नींद।
निषुति वि—निद्रित, निस्तब्ध, सुनसान।
निषुप्त (-अ) वि—निद्रित, सोया हुआ।
निषेक सं—सेचन सिंचन, सींचना।
निषेध सं—वारण, माना मनाही, निषेध।
निषेधक वि, सं—निषेध करनेवाला।
निष्क (-अ) सं—सोनेका सिक्का, मुहर।

निष्कम्प (-अ) वि—कंपन-रहित, स्थिर।
निष्कर वि—जिस जमीनमें कर या माल-गुजारी नहीं देनी पड़ती।
निष्करुण वि—करुणा-रहित, निर्दयी।
निष्कर्मा वि—कमहीन, बेकार; आलसी।
निष्कर्ष (-अ) सं—सार, निचोड़, खुलासा।
निष्काशन, (-सन) सं—बहिष्करण निकालना। निष्काशित, (-सित) वि—निकाला हुआ, बहिष्कृत।
निष्कृति सं—निस्तार, अव्याहति मुक्ति छुटकारा।
निष्क्रमण सं—बहिर्गमन बाहर निकलना। निष्क्रान्त (-अ) वि—निकला या निकाला हुआ।
निष्क्रय सं—मूल्य, वेतन; भाड़ा, विक्रय, बिक्री।
निष्क्रिय (-अ) वि—क्रियाहीन, निश्चेष्ट। —प्रतिरोध सं—स्वयं निश्चेष्ट रहकर दूसरेके काममें रुकावट डालना।
-निष्ठ प्रत्य—अवलंबी (धर्म—, एक—)।
निष्ठा सं—निष्ठा, दृढ़ विश्वास (—वान, —वती)।
निष्ठीवन सं—थूतु थूक।
निष्पत्ति सं—फसला, निपटारा, मीमांसा; समाप्ति, उत्पत्ति (बाङ-)।
निष्पन्न (-अ) वि—सम्पन्न, समाप्त।
निष्पादन सं—सम्पादन। निष्पादक वि, सं—सम्पादन करनेवाला। निष्पादनीय (-अ), निष्पाद्य (-अ) वि—सम्पादन करनेके योग्य। निष्पादित (-अ) वि—सम्पादित।
निष्पिष्ट (-अ) वि—पीसा हुआ; कुचला हुआ।
निष्प्रभ (-अ) वि—प्रकाश-रहित, प्रभाहीन।
निसर्ग (-अ) सं—स्वभाव, प्रकृति (—शोभा)।
निसिन्दा सं—एक पौधा।
निसूदन सं—वध, विनाश। वि—विनाशकारी।
निस्तरङ्ग (-अ) वि—तरंग-रहित, स्थिर।
निस्पन्द (-अ) वि—स्पंदन-रहित, स्थिर।
निस्पृह (-अ) वि—इच्छा-रहित।
निस्वन (निश्शन) सं—शब्द, आवाज।
निहत (-अ) वि—विनाशित, जो मार डाला गया है।
निहारिल, नेहारिल (-अ) (पद्यमें) क्रि—(उसने) देखा, निहारा।
निहित (-अ) वि—स्थापित, स्थित; गुप्त।
नीच वि—नीचु नीचा, निकृष्ट, अधम, अभद्र। सं—निम्न स्थान नीची जगह। —जनोचित वि—नीचोंका-सा।
नीचु, निचु वि—निम्न, नीचा, झुका हुआ।
नीड़ सं—घोंसला, आवास।
नीत (-अ) वि—जो ले जाया गया है।
नीवार सं—एक प्रकार वन्य धान कोदो।
नीयमान वि—जो ले जाया जा रहा है, जिसका ग्रहण किया जा रहा है।
नीर सं—जल, पानी।
नीरन्ध्र (-अ) वि—छिद्र-रहित।
नीरव, निरव वि—शब्दरहित; चुप, मौन।
नीरस, निरस वि—रस-रहित; अरसिक (—लोक)।
नीराजन, (-ना) सं—अनेक उपचारोंसे पूजा, [आरती।
नीरोग वि—रोग-रहित, चंगा, स्वस्थ।
नील वि—नीले रंगका; काला। सं—नील रंग। —कंठ (-अ) सं—शिव, एक चिड़िया जिसका कंठ नीला होता है। —कर सं—जो नीलके पौधोंकी खेती कराता है। —कुठि सं—नील रंग बनानेकी कोठी या कारखाना। —गाइ सं—नीलगाय। —मणि सं—कृष्णके प्यारका नाम; नील मणि।
नीला सं—नीलम।

নীলাভ (-अ) वि—कुछ नीले रङ्गका, आसमानी।
নীলাম্বর सं—नीला वस्त्र; नीला आकाश। वि—जिसका कपडा नीला हो। নীলাম্বরী सं—नीली साडी।
নীলিমা सं—नीला रंग; नीलापन।
নীহার, নিহার स—कुहार पाला; कुहरा। নীহারিকা सं—आकाशमें कुहरेकी तरह प्रकाश-पुंज या नक्षत्रोंका समूह।
নুকন (-नो), নুকনো নুকানো, নুকোনো क्रि, वि=লুকান।
নুটি सं—सूतका गोला।
নুড়নুড়ি, নুড়ুড়ি सं—घंटी, गलेकी कौड़ी।
নুড়া, নুড়ো सं—খাটি गुच्छा (খড়ের—), लोढ़ा। लघु अर्थमें নুড়ি।
নুন सं—লবণ नमक नोन। নুনিয়া स—नमक बनानेवाली एक जाति, नोनिया।
নুর सं—नूर, ज्योति, प्रकाश, दाढ़ी।
নুলা, নুলো वि—लूला, हाथ-रहित।
নূপুর सं—घूंघुर घुंघरू।
নৃত্য (-अ) सं—नाच। —পর वि—जो नाच रहा है। स्त्री—নৃত্যপরা।
নৃপ (-अ) सं—नरोंका पालक, राजा।
নৃশংস (-अ) वि—निर्दयी, जालिम, क्रूर।
নে अव्य—नहीं (চাই নে)। क्रि—(तू) ले (স্নান নে)।
নেই क्रि—নাই नहीं है। —আঁকড়ে वि=নাছোড়বান্দা।
নেউল सं—বেজি, नकूल नेवला।
নেওটা, ন্যাওটা, (-टो) वि—स्नेहके द्वारा वशीभूत, दुलारा।
নেওয়া (नेवा) (क्रि परि १९)—লওয়া लेना।
নেওয়ান (-नो), নেওয়ানো (क्रि परि १६)—লওয়ানো लिवाना, ग्रहण कराना।
নেংচান (नैंङ्चानो), নেংচানো (क्रि परि १६)=ল্যাংচান।
নেংটা, ন্যাংটা, ল্যাংটা, वि—नंगा।
নেংটি, ল্যাংটি सं—কৌপীন लंगोटी। [चुहिया।
নেংটি ইঁদুর, (নেংটে—) सं—छोटा चूहा,
নেংড়া, ন্যাংড়া वि, सं=ল্যাংড়া। [लत्ता।
নেকড়া (नैकड़ा), ন্যাকড়া सं—चिथड़ा,
নেকড়ে सं—भेड़िया।
নেকনজর सं—कृपादृष्टि।
নেকরা (नैकरा), ন্যাকরা सं—दिल्लगी, नखरा।
নেকা (नै-), ন্যাকা वि—जानकर अनजान बनने वाला। নেকামি, (-मी), নেকাপনা सं—दिखावटी भोलापन।
নেকার (नै-), ন্যাকার स=ন্যাকার।
নেজ (नै-), ন্যাজ स=লেজ।
নেজা सं= লেজা। [वाला।
নেটা (नै-) वि—बायें हाथसे काम करने
নেড়া (नै-), ন্যাড়া वि—मुंडा; खुला; पत्ती आदिसे रहित (—তালগাছ); आभूषणरहित (-হাত)। —নেড়ী सं—वैष्णवोंका एक संप्रदाय।
নেড়ে सं—निम्न श्रेणीका मुसलमान।
নেতা (नै-), ন্যাতা सं—कानि लत्ता जिससे घर या चौका लीपा जाता है।
নেতিয়ে পড়া क्रि—मुरझाना, नींद वेहोशी आदिसे ढीला पड़ जाना।
নেপটান (-नो), নেপটানো, লেপটানো (क्रि परि १६)—लिप्त होना, लिपटे रहना। वि—लिप्त, लिपटा हुआ।
নেপথ্য स—नेपथ्य, अभिनय आदिमें परदेके भीतरका स्थान जहाँ नट सजते हैं। নেপথ্যে क्रि वि—परदेकी ओटसे।
নেপা, ল্যাপা (क्रि परि १)=লেপা। [पांडुरोग।
নেবা, ন্যাবা स—কামলা রোগ कवल रोग,

নেবু सं—नींबू (কাগজি—, পাতি—; কমলা—, नारंगी)।

নেমি, নেমী सं—पहियेका घेरा।

নেয়াই सं—নেহাই। [बीनते हैं, निवार।

নেয়ার सं—चौड़ा फीता जिससे चारपाई

নেয়ে सं—মাঝী मल्लाह।

নেশা स—नशा। —খোর वि—नशेबाज।

নেহাই, নেয়াই सं—निहाई, जिस लोहे पर धातु पीटते हैं।

নেহাত क्रि वि—নিতান্ত निहायत, अत्यंत।

নেহারিল क्रि—(उसने) देखा, ताका।

নৈকট্য (नइकत्य-अ) सं—निकटता।

নৈকষ্য (-अ) वि—विशुद्ध (—कुलीन, जिसने ভঙ্গ या বংশজ के कुलमें कन्या न ब्याही हो)।

নৈদাঘ वि—गर्मीकी ऋतु सम्बन्धी।

নৈবেদ্য (-अ) सं—देवताको चढ़ाया हुआ भोग।

নৈরাশ, নৈরাশ্য (-अ) सं—निराशा।

নৈশ (-अ) वि—रातका (—বিদ্যালয়)।

নোংরা वि—गंदा, घृणा-योग्य, मैला; अश्लील। सं—कूड़ाकरकट, गंदी चीज।

নোংরামি सं—নোংরা আচরণ घृणित व्यवहार, बुरा बरताव।

নোকর सं—नौकर। নোকরি सं—नौकरी।

নোকসান सं—লোকসান नुकसान।

নোঙর (नोङर) सं—নঙ্গর लंगर।

নোক্তা सं—नुकता, बिन्दु।

নোটিস सं—विज्ञापन, नोटिस (—জারি করা)।

নোড়া सं—लोढ़ा।

নোনতা (नोन्ता, वि—लवणाक्त खारा।

নোনা सं—नोना, नमकका वह अंश जो पुरानी दीवारोंमें लगा मिलता है, शरीफा।

নোয়া सं—लोहा, लोहेकी चूड़ी (सधवाका चिह्न)।

নোয়া (क्रि परि २०)—নত হওয়া झुकना।

নোয়ান (-नो), নোয়ানো क्रि परि १४)—নত করা झुकाना। वि—झुका हुआ।

নোলক सं—नाकका लोलक।

নোলা सं—जीभ, खानेका लालच।

নৌ (नउ) सं—नाव, नौका; जहाज (—সেনা)। নৌকা, (-का) सं—नाव।

নৌকা-জীবী वि, सं—जो नाव चलाकर जीविका निर्वाह करता है, मल्लाह। নৌবহর सं—जंगी जहाजोंका बेड़ा। নৌবাহিনী सं—जल सेना।

ন্যাকার सं—নেকার, বমি कै, उलटी; घृणा (—জনক)।

ন্যগ্রোধ सं—বটবৃক্ষ बरगद।

ন্যস্ত (-अ) वि—रखा हुआ, स्थापित, अर्पित।

ন্যাওটা (नैवटा), ন্যাংটা, ন্যাকড়া, ন্যাকরা, ন্যাকা, ন্যাকার, ন্যাড়া, ন্যাবা —নেওটা आदि देखो।

ন্যাটা सं—एक छोटी गोल मछली।

ন্যায় सं—तर्कशास्त्र, न्याय, इनसाफ। वि—तुल्य, सदृश, सा, भाँति (পশুর—)।

ন্যায়তঃ क्रि वि—न्यायसे। —নিষ্ঠ (-अ) वि—न्यायवान। —নিষ্ঠা सं—न्यायपरता। —পথ सं—न्यायका रास्ता, धर्ममार्ग।

ন্যায্য (नैज्य -अ) वि—उचित।

ন্যাস सं—धरोहर, अर्पण, त्याग, धर्मार्थ प्रदत्त सम्पत्ति।

ন্যুব্জ (-अ) वि—कुबड़ा, औंधा; टेढ़ा।

ন্যূন वि—कम, अल्प। —কল্পে, —পক্ষে क्रि वि—कमसे कम। ন্যূনাধিক वि—কমবেশী कमज्यादा। ন্যূনাধিক্য (अ) सं—কমিবেশি कमोबेशी।

প

-প প্রত্য—পায়ী পীনেবালা (স্তন্যপ, পাদপ); পালনেবালা (গোপ, নৃপ)।
পইছা, পঁইছা সং—পহুঁচী, কলাই পর পহননে কা एक आभूषण।
পইঠা সং—সিঁড়ির ধাপ সীঢ़ीকা ডंডা।
পইতা, (-তে) সং—উপবীত जनेऊ; उपनयन-संस्कार (—দেওয়া, —হওয়া)।
পইপই ক্রি বি—बारबार।
পংক, পংকজ, পংগু=পঙ্ক, পঙ্কজ, পঙ্গু।
পঁইত্রিশ বি, সং—पैंतीस, ३५।
পঁইষট্টি বি, সং—पैंसट, ६५।
পঁচাত্তর বি, সং—पचहत्तर, ७५।
পঁচানব্বই বি, সং—पचानवे, ९५।
পঁচিশ বি, সং—पचीस, २५।
পঁচিশে সং—सौर मासकी पचीसवीं तारीख।
পঁয়তাল্লিশ বি, সং—पैंतालीस, ४५।
পঁয়ত্রিশ বি, সং=পঁইত্রিশ।
পঁয়ষট্টি বি, সং=পঁইষট্টি।
পকেট সং—पाकेट, जेब। —মার সং—पाकेटमार, गिरहकट।
পক্ব (पक्व-अ) বি—পাকা, पका, सुफेद (—কেশ), पकाया हुआ (—অন্ন), निपुण (পরি-)। পক্বাশয় সং—পাকস্থলী पक्वाशय, पेटमेंका वह स्थान जहाँ अन्न पचता है।
পক্ষ (पक्ख-अ) সং—पक्ष, पाख, पंख; तरफ; दल; १५ दिन, विशेष अवस्था (আমার পক্ষে যথেষ্ট, পারত পক্ষে), विवाहकी संख्या (দ্বিতীয় পক্ষের স্ত্রী)। —গ্রহণ সং—दो विरोधी पक्षोंके एकमें योगदान। —পাত সং—तरफदारी। —পাতী বি—तरफदार। —পাতিতা, —পাতিত্ব সং—तरफदारी। —পুট সং—पंखका आधार, डैनेका भीतरी भाग। —বল সং—सहायक लोग, सहायकोंका दल। পক্ষাঘাত সং—आधे अंगका लकवा। পক্ষান্ত (-অ) সং—पक्षका अंत पूर्णिमा या अमावस। পক্ষান্তর সং—दूसरा पक्ष, किसी विषयकी दूसरी तरफ। পক্ষান্তরে ক্রি বি—दूसरे पक्षमें, परन्तु। পক্ষীয় (-অ) বি—पक्ष-सम्बन्धी, दलका। পক্ষোদ্গম, পক্ষোদ্ভেদ সং—डैना उगना डैना निकलना।
পক্ষী (पक्खी) সং—পাখী परेरू, चिड़िया। स्त्री—পক্ষিণী। পক্ষিরাজ সং—गरुड़।
পগার সং—डोबा, नाला पोखरा, गड्ढा; जमीनका मेड़।
পঙ্ক (-अ) সং—পাঁক, কর্দম कीचड़।
পঙ্কজ (-अ) সং—পদ্ম कमल। পঙ্কজিনী সং—कमलवाला तालाब। পঙ্কিল বি—कीचड़दार, गंदला। পঙ্কোদ্ধার সং—कीचड़ निकालकर तालाब आदिका साफ करना; (व्यंगमें) जीर्ण-संस्कार।
পঙ্ক্তি সং—পাঁত, পাতি श्रेणी, कतार, एक लेखकी पंक्ति, सतर।
পক্ষি, পখী সং—पखरू (মজুর—)।
পঙ্গপাল সং—टिड्डी।
পঙ্গু বি—খোঁড়া लंगड़ा।। [सड़न।
পচন সং—পাক रसोई, हाजमा। পচন, পচ সং—
পচপচ, প্যাচপ্যাচ (पँच—) সং—कीचड़में चलनेका शब्द। পচপচে, প্যাচপেচে বি—कीचड़दार।
পচা (ক্রি পরি १)—सड़ना। বি—सड़ा, गंदा। —গরম সং—उमस, जिसमें बहुत पसीना निकलता है।
পচান (नो), পচানো (ক্রি পরি १०)—सड़ाना।
পচ্য (-अ) বি—पचने योग्य, पकाने योग्य।
পছন্দ (-अ) সং—पसंद, रुचि।
পঞ্চ (पञ्च-अ) বি, সং—পাঁচ, ৫ पाँच,

৫। —গব্য (-अ) सं—दूध, दही, घी, गोमूत्र, गोबर। পঞ্চত্ব सं पाँच भूतोंमें मिलन, मृत्यु। পঞ্চধা क्रि वि—पाँच प्रकारसे, पांच बार। —নখ स —जिस पशुके पैरोंमे पाँच पाँच नाखून हैं। —পাত্র सं—पूजामें व्यवहृत एक पात्र। —প্রদীপ सं—आरतीका पाँच मुखवाला दीया। —প্রাণ, —বায়ু सं—प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान। —ভূত स—पृथ्वी, जल, अग्नि वायु, आकाश। —মকার सं—तन्त्रोक्त पाँच साधन मद्य, मांस, मछली, मुद्रा, मैथुन। —যজ্ঞ (-अ) सं—वेदपाठ, अतिथि-सत्कार, श्राद्धतर्पण, देवता-पूजा, गवादि पशुकी सेवा। পঞ্চামৃত (-अ) सं—गर्भिणीको पंचम मासमें सेवन कराने योग्य दही, दूध, घी, शहद और चीनी। পঞ্চান্ন (-अ) वि, सं—पचपन, ५५। পঞ্চাশৎ वि, सं—पचास, ५०। পঞ্চেন্দ্রিয় (-अ) स —चक्षु, कर्ण, नासिका, जिह्वा और त्वचा ये पांच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा वाक्, हाथ, पैर, मलद्वार और उपस्थ ये पांच कर्मेन्द्रियाँ। [ठठरी।

পঞ্জর स —পিঞ্জর, খাঁচা पिंजड़ा ; পাঁজরা, কঙ্কাল

পঞ্জা सं—पाँच बूटीवाला ताश।

পঞ্জিকা, পঞ্জী, পঞ্জি सं—পাঁজি; पंचांग, पत्रा।

পট্ सं—पटकनेका शब्द। क्रि वि—एकाएक (—ক'রে মারা গেল), (बारबार—পট্‌পট্, পটাপট)।

পট स —वस्त्र, चित्र, नाटकका पर्दा। —মণ্ডপ स —শামিয়ানা शामियाना। —বাস, পটাবাস सं—তাঁবু, शिविर तंबू।

পটকা (पटका) सं—एक आतशबाजी (फटनेसे शब्द होता है), मछलीका फेफड़ा। वि—दुबला (রোগা—)।

পটকান (-नो), পটকানো (क्रि परि १६)—ফেলা, আছাড় দেওয়া पटकना ; हराना।

পটল स —अध्याय ; छत, परवल। —তোলা क्रि—मर जाना (व्यंगमें)।

পটহ (अ) सं—बड़ा ढोल, कानका पर्दा।

পটা (क्रि परि १)—मेल होना, बनना, पटरी बैठना, राजी होना। [करना, वशमें लाना।

পটান (-नो), পটানো (क्रि परि १०)—राजी

পটাবাস स —পট देखो।

পটি सं—कपडेकी पट्टी या लंबी धज्जी, बाजार का विभाग (লোহা—, তুলা—)।

পটু वि—निपुण, दक्ष, चतुर, समर्थ।

পটুয়া, পটো स —चित्रकार।

পটোল सं—পটল परवल।

পট্ট (पट्ट-अ) सं—পাটা पीढ़ा, तख्ता, सिंहासन, पट्टा, सनद, पटुआ। —মহিষী स्त्री—পাটরাণী पटरानी।

পঠন सं—पाठ, पढ़ना, आवृत्ति, अध्ययन। পঠনীয়, পাঠ্য (-अ) वि—पढ़ने योग्य। পঠিত (-अ) वि—पढ़ा हुआ। পঠ্যমান वि—जो पढ़ा जा रहा है। পঠদ্দশা सं—ছাত্রাবস্থা पढ़ाईकी अवस्था, विद्या अध्ययन काल।

পড়তা सं—भाग्य (—খারাপ); सौभाग्य, हिसाब करने पर जो सख्या मिलती है (গড়—); लागत। [(ঝড়তি—)।

পড়তি सं—पतन, अवनति, गिरी हुई चीज

পড়্‌পড় स —कपडा आदि फाड़नेका शब्द।

পড়পড় (पड़-अ पड-अ) वि—पतनोन्मुख, गिरने लायक।

পড়শী सं—প্রতিবেশী पडोसी।

পড়া (क्रि परि १)—पढ़ना। सं—पाठ, अध्ययन (স্কুলের—, পড়া-শুনা, পড়ার বই)। वि—पठित (—বই)।

পড়া (क्रि परि ९)—गिरना, लेटना पड़ जाना; दूसरी जगह या अवस्थामें आना (মেঝে তায় পড়ে—, বিপদে—, হাতে—); पड़ा रहना (অনেক টাকা বাকি পড়ে আছে), हमला करना (ভারতে—); उपस्थित होना, घटना (নূতন বৎসর—, মনে—, ডাকাত—), कम होना, घटना (বেলা—, জোর—)। वि—पतित (—বাড়ি)। [पढ़ाना।

পড়ান (নো), পড়ানো (क्रि परि १०)—

পড়িয়ান, পঁড়েন सं—कपड़ेकी चौड़ाईकी ओर के सूत; बटखरा।

পড়ুয়া, পঁড়ো स—छात्र, विद्यार्थी।

পঁড়ো वि—गिरा हुआ, पड़ा हुआ (—বাড়ি)।

পড়োপড়ো वि—পড়পড়, পতনোন্মুখ गिरने लायक।

পণ स—प्रतिज्ञा; जूआ; बाजी, दाँव, शर्त; दहेज; दाम; बीस गंडे।

পণ্ড (पण्ड-अ) वि—विफल, व्यर्थ नष्ट। —শ্রম सं—वृथा श्रम।

পণ্ডিত वि, सं—पंडित, विद्वान संस्कृत जानने वाला, संस्कृत या बंगलाका शिक्षक (—মহাশয়)। —মূর্খ (-अ) वि, स—पंडित होकर भी जो व्यवहारिक विषयमें मूर्ख है। পণ্ডিতম্মন্য (-अ) वि, सं—जो अपंडित होकर भी अपनेको पंडित समझता है। পণ্ডিতি सं—शिक्षकका कार्य (স্কুলে—করা)। পণ্ডিতী वि—पंडित-सा, संस्कृतशब्दपूर्ण (—ভাষা)।

পণ্য (-अ) स—বিক্রেয় দ্রব্য विकनेकी चीजें; महसूल, किराया, मूल्य। वि—विकने योग्य (-द्रव्य)। —वीथि सं—दूकानोंकी कतार। —শালা स—दूकान, बाजार, कारखाना।

পতঙ্গ (-अ) सं—फतिंगा, उड़ने वाला कीड़ा।

পতত্র (अ) सं—डैना, पंख। পতত্রী, (-त्रि) सं—পাখি चिड़िया।

পতন सं—পাত, পড়া गिरना, अधोगति।

পতনোন্মুখ वि—পড়িতে উন্মুখ गिरने लायक।

পতাকা सं—निशान झंडा। পতাকী वि—झंडावाला।

পত্তন (पत्तन) स—निर्माण आरंभ, नींव डालना (বাড়ী—করা), नगर।

পত্তনি वि—पट्टे पर दी हुई (जमीन) जिस जमीन पर नियत मालगुजारी देनी होती है (—তালুক)। —দার सं—पट्टेदार।

পত্র (-अ) सं—पत्र, खत चिट्ठी, पत्ती, छपा हुआ कागज (খবরের—); पत्तर (সোনার—); बगरा (জিনিস—, বিছানা—)। —পাঠ स—चिट्ठी पढ़ना क्रि वि—चिट्ठी पढ़ते ही। —পুট सं—पत्तीका दोना। —বাহ, বাহক स—हरकारा।

পথ स—पथ, मार्ग, रास्ता (হাটা—, पगडंडी)। —কর सं—रास्ता बनाने या मरम्मत करने के लिए कर। —খরচ सं—পাথেয় मार्गव्यय। —চাওয়া क्रि—राह देखना, प्रतीक्षा करना। —দেখা (दे-) क्रि—সরিয়া পড়া सरक जाना, भाग जाना। —প্রান্ত (-अ) स—रास्ते का छोर। —ভ্রান্ত (-अ), —হারা वि—भूला-भटका। পথে বসানো क्रि—रास्तेमें बैठाना, सब कुछ छीन लेना।

পথিমধ্যে क्रि वि—मार्गके बीचमें, चलते-चलते।

পথ্য (-अ) सं—वह हलका खाद्य जो रोगीको दिया जाता है। वि—हितकर।

পদ स—পা, চরণ पैर; पद, नौकरी, दोहा, संख्या (ভোজের—)। —ক্ষেপ स—পা ফেলা पैर रखना। —চারণ स—পায়চারি टहलना। —ছায়া, —ছাযা स—चरणोंमें

आश्रय। —চ্যুত (-अ) वि—বরখাস্ত बरखास्त, मौकूफ। —দলিত (-अ) वि—कुचला हुआ। —ধূলি सं—पैरकी धूल। —পল্লব सं—पल्लव-सा कोमल चरण। —প্রান্ত (-अ) सं—পায়ের তলা तलवा। —প্রার্থী वि—उमेदवार, चरणोंमें आश्रय चाहने वाला। —ব্রজে क्रि वि—पैदल। —রজ, —রেণু सं—पদধূলি। —লেহন सं—পা চাটা पैर चाटना, खुशामद करना। —সেবা सं—পা টেপা पैर दबाना। —স্খলন सं—পা পিছলান पैर फिसलना, कर्तव्यसे गिरना। পদস্থ (-अ) वि—उच्च पदमें स्थित। পদাঘাত सं—লাথি लात। পদাঙ্ক (-अ) सं—पदचिह्न। পদাতিক, পদাতি सं—पैदल सैनिक। পদানত (-अ) वि—चरणोंमें गिरा हुआ। পদানুগমন सं—अनुसरण, पैरके चिह्नोंसे चलना। পদানুবর্তী वि—अनुसरण करनेवाला। পদাম্বুজ, পদারবিন্দ (-अ) सं—चरण-कमल। পদার্পণ सं—পা দেওয়া पदार्पण, आगमन, प्रवेश। পদাশ্রয় सं—चरणोंमें आश्रय। পদাশ্রিত (-अ) वि—चरणोंके आश्रित। পদাহত वि—लात मारा हुआ। পদে পদে क्रि वि—पग पगमें, बारबार। পদোন্নতি सं—पदमें या वेतनमें वृद्धि।

পদক सं—তক্তি तमगा।

পদবী, (-वि) सं—उपाधि, खिताब।

পদ্ম (पद्‌-अ) सं—উৎপল कमल। —রাগ स—चूनी एक लाल मणि, चुन्नी। —লোচন, —পলাশলোচন वि—जिसकी आँखें कमलके दलके समान हैं। পদ্মা स्त्री—लक्ष्मी; बगालकी एक बहुत बड़ी नदी। পদ্মাকর सं—जिस तालाबमें अनेक कमल होते हैं। পদ্মাক্ষ (-अ) वि—পদ্মলোচন। পদ্মাবতী स्त्री—देवी मनसाका नाम। পদ্মালয়া स्त्री—लक्ष्मी। পদ্মাসন सं—आलथी-पालथी।

পনস, পণস सं—কাঁঠাল कटहल।

-পনা प्रत्य— -पन, -त्व आदि भाववाचक प्रत्यय (গিন্নী—, পাজি—)।

পনির, পনীর सं—छेना।

পন্নগ सं—সর্প साँप।

পবিত্র (-अ) वि—पवित्र, पाक। পবিত্রিত (-अ) वि—जो पवित्र हुआ है। পবিত্রীকৃত (-अ) वि—जो पवित्र किया गया है।

পয় स—शुभ चिह्न सौभाग्य। —মন্ত (-अ), পয়া वि—भाग्यवान्, सु-लक्षण-युक्त।

পয়ঃ, পয় (-अ) सं—दूध, जल। পয়ঃপ্রণালী सं—नाला, नहर, सोता; নরদমা पनाला।

পয়গম্বর सं पगंबर, मुहम्मद।

পয়জার सं—চটি জুতা पजार, स्लीपर।

পয়দা सं—पैदाइश, जन्म।

পয়মাল वि—नष्ट, बरबाद।

পয়লা सं, वि—পহেলা। [বিস্তর—আছে)।

পয়সা सं—पैसा, रुपया-पैसा, धन (তার

পয়স্বিনী वि—दुधार (गाय)।

পয়া वि—पय देखो।

পয়ার सं—एक छद जिसमें चौदह चौदह अक्षरों की दो पंक्तियाँ हों।

পয়োদ सं—बादल, मेघ।

পয়োধর सं—स्तन; बादल।

পয়োধি, পয়োনিধি सं—समुद्र, सागर।

পর वि—অপর गैर, पराया। सं—दूसरा आदमी (-হস্তগত ধন)। क्रि वि—बाद, अनंतर (ইহার—; পর পর, পরে পরে, एकके बाद दूसरा)। —কলা सं—काँच, आईना। —কাল सं—जीवनका अंतिम भाग, परलोक (—ঝরঝরে হওয়া)। —কীয় (-अ) वि—पराया, दूसरा। —কীয়া

स्त्री—खेली। —गाछ सं—दूसरे पेड़पर उगनेवाला पौधा। —चर्चा सं—दूसरेके विषयमें चर्चा, दूसरेकी निंदा। —चूल, —चूला सं—बनावटी केश। —छिद्र (-अ) सं—दूसरेका अवगुण। —जीवी वि, सं—दूसरेके आश्रयसे जीनेवाला। —त्र (-अ) क्रि वि—परलोकमें, भविष्यतमें दूसरे स्थानमें। —दार स्त्री—दूसरेकी स्त्री। —पुरुष सं—पतिसे भिन्न दूसरा पुरुष। —वाद सं—निंदा। —वास सं—प्रवास, परदेश। —वासी वि, सं—प्रवासी। —भाग्योपजीवी वि, सं=परजीवी। —भृत् सं—कौआ जो कोयलके बच्चोंको पालता है। परभृत (-अ), स—गैर (कौए) के द्वारा पली हुई कोयल। —माद स—प्रमाद, भ्रम, अज्ञान। —मान्न (-अ) स—पायस खीर। —मुखापेक्षा सं—दूसरेकी सहायताकी प्रतीक्षा। —मुखापेक्षी वि—जो दूसरेकी सहायता चाहता है। —श्व (-अ) क्रि वि—परसों। —ईर्षालु वि—ईर्षालु, डाह करनेवाला। —स्व (-अ) स—पराया धन। —हित स—दूसरेका हित।

परठा, (-टा-) सं—परांठा।

परन सं—परिधान पहनना।

परश सं—स्पर्श। —पाथर सं—पारस-पत्थर।

परश क्रि वि—परसों। सं—कुल्हाड़ी।

परा (क्रि परि १)—परिधान करा पहनना (कापड़—, गहना—, टिप—)। वि—पहना हुआ।

पराग स—फूलोंका रेणु। [निवृत्त।

पराङ्मुख (पराङ्मुख) वि—विमुख; प्रतिकूल,

परान स—प्राण। [पहनाना, लगाना।

परान (-नो), पराना (क्रि परि १०)—

पराम्न (-अ) स—दूसरेका दिया हुआ भोजन।

परावर्त (-अ) स—बदल। परावर्तन स—लौट आना, पुनरागमन। परावर्तित (-अ, वि—जो लौटाया गया है। परावृत्त (-अ) वि—लौट आया हुआ। परावृत्ति सं—लौट आना, प्रत्यागमन।

परामाणिक स—नास्तिक नाहि, इस्लाम।

पराधीन (-अ) वि दूसरेके अधीन।

पराश्रयी (-य) वि—दूसरे पर निर्भर रहने वाला पराश्रित (-अ) वि—दूसरेका आश्रित।

परश्व (-अ) सं—आनेवाला दिन।

पराभूत (-अ) वि—पराजय प्राप्त, पराजित।

परि-उप—विशेषता विशेष आदि सूचक उपसर्ग। —कल्पना स—चिंतन, योजना, कल्पना। —क्लिष्ट (-अ) वि—बहुत क्लिष्ट। —चर सं—सेवक। —च्छद स—पोशाक पहनावा। —च्छन्न (-अ) वि—साफ। —च्छिन्न वि—परिमित, सीमाबद्ध, विभक्त। —णत (-अ) वि—पूरा, पका अवस्थान्तर प्राप्त। —णति सं—परिणाम, अवस्थान्तर प्राप्ति। —णाम सं—अंतिम अवस्था या फल, भविष्य। —णीत (-अ) वि—विवाहित। —णीता वि, स्त्री—विवाहिता। —णेता सं—विवाह करनेवाला, पति। —ताप सं—पश्चात्ताप, खेद। —तप्त (-अ) वि पछताया हुआ। —तुष्ट (-अ) वि—संतुष्ट। —तृप्त (-अ) वि—अत्यन्त तृप्त। —त्राहि सं—बचानेके लिए पुकार। —दर्शन स—विशेष-रूपसे दर्शन, निरीक्षण। —दर्शक वि, स—निरीक्षण करनेवाला। —दृश्यमान वि—दिखाई पड़नेवाला। —देवन, —देवना सं—पश्चात्ताप, खेद। —धान सं—शरीरमें धारण, पहनना; पहननेका वस्त्र। —धेय वि—पहननेके योग्य। स—पहनने का वस्त्र। —धि सं—घेरा। —पक्व (-अ) वि—अच्छी तरह पका, अनुभवी, बुद्धिमान।

—পক্ষী वि, सं—विरुद्ध, शत्रु। —পাক सं—हजम हाजमा। —পাটী, —পাটি सं—श्रृंखला। वि—सजाया हुआ। —প্রেক্ষিত (-अ) सं—चित्रमें वस्तुओंके दूरत्व निकटत्व आदिका प्रकाश। —প্লুত (अ) वि—प्लावित, डूबा हुआ। —বহন सं—किसी वस्तुके भीतरसे ताप बिजली आदिका प्रवाह। —বাহী वि—जिसके भीतरसे ताप विद्युत् आदि प्रवाहित हो सकते हैं। —বাদ, পরীবাদ सं—अपवाद निंदा। —বাদক, বাদী वि—निंदक। —বার सं—कुटुंब, पत्नी। —বৃত (-अ) वि—वेष्टित घिरा हुआ। —বেদন सं—बड़े भाईके पहले छोटे भाईका विवाह। —বেদনা सं—बहुत दर्द, सोच-विचार। —বেশ, —বেষ सं—घेरा, दायरा, मंडल (সূর্যের—)। —বেশন, (-ষণ) सं—परोसना। —বেশিত, (-ষিত) (-अ) वि—परोसा हुआ। —বেশক वि, सं—परोसने वाला। —ভব स—पराजय। —ভ্রমণ सं—घूमना, प्रदक्षिणा। —ভ্রষ্ট (-अ) वि—विच्युत, गिरा हुआ। —মাপ सं—तौल। —মিতি सं—नाप नाप विद्या। —মেয় (-अ) वि—परिमाण करने योग्य, नापनें योग्य। —শোধ सं—चुकता। —করণ सं—शोधन, साफ करना। —ষ্কার वि—साफ, स्वच्छ, स्पष्ट निष्कपट, सुंदर। —ষ্কৃত (-अ) वि—साफ किया हुआ। —সমাপ্তি सं—समाप्ति, खातमा। —সর स—चौड़ाई, विस्तार। —সীমা सं—सीमा, हद। —স্থিতি स—हालत। —স্ফুট वि—स्पष्ट, प्रकाशित, खिला हुआ। —স্রুত (-अ) वि—चुआया हुआ। —হসনীয় (-अ) वि—दिल्लगी के योग्य। —হিত (-अ) वि—पहना हुआ। —হৃত (-अ) वि—वर्जित, छोड़ा हुआ।

পরিখা सं—गड़थाई खाई खन्दक।

পরিমল सं—सौरभ, सुगंध।

পরী स्त्री—परी; सुंदरी स्त्री।

পরীক্ষা, (-ক্ষে) सं—परीक्षा, इम्तहान, जाँच। পরীক্ষক वि, सं—इम्तहान लेनेवाला। পরীক্ষণ सं—परीक्षा लेना। পরীক্ষণীয় (-अ) वि—परीक्षाके योग्य; जिसकी परीक्षा ली जायगी। —গার सं—जिस गृहमें परीक्षा होती है। —ধীন वि—जिसकी परीक्षा ली जा रही है; परीक्षाके अधीन। —র্থী सं—परीक्षा देनेके इच्छुक। পরীক্ষিত (-अ) वि—जिसकी परीक्षा या जाँच हो गयी है। পরীক্ষোত্তীর্ণ (-अ) वि—इम्तहानमें कामयाब।

পরুষ वि—कठोर कड़ा (—বাক্য)।

পরে क्रि वि—তাহার পর बाद, अनंतर। পরে পরে क्रि वि—एकके बाद दूसरा, क्रमसे।

'পরে क्रि वि—উপরে ऊपर।

পরোক্ষ (-अ) वि—जिसके विषयमें प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है, इंद्रियोंसे परे, अप्रत्यक्ष।

পরোপজীবী वि—পরের গলগ্রহ दूसरेके आश्रयसे जीनेवाला।

পরোয়া सं—परवाह, शंका, फिक्र।

পরোয়ানা सं—आज्ञापत्र, परवाना।

পর্কটি, (-টী) स—पाकुड़ पाकड़।

পর্জন্য (-अ) सं—मेघ, बादल।

পর্ণ (-अ) सं—पत्ता, पत्ती; पान। —শালা सं—पत्तोंसे छाया हुआ घर, झोंपड़ी।

পর্দা सं—यवनिका परदा, आवरण (চোখের—); (व्यंगमें) शर्म, लज्जा, सकोच, जनानखाना। —নশিন, (-শী-) वि—पर्दानशीन। —প্রথা सं—स्त्रियोंको बाहर निकलकर लोगोंके सामने न होने देनेकी रवाज।

পর্ব (-अ) सं—পরব उत्सव, त्योहार, गाँठ, जोड़, दो गाँठोंके भीतरका हिस्सा।

পর্বত सं—पहाड़। পর্বতীয় (-অ) वि—पहाड़ी। —প্রমাণ वि—पर्वत सा, विशाल।

পর্বাহ (-অ) सं—त्योहारका दिन।

পর্য্যঙ্ক (পর্যঙ্ক-অ) सं—[illegible] पलंग।

পর্য্যটক वि, सं—भ्रमणकारी। পর্য্যটন सं—भ्रमण।

পর্য্যন্ত (-অ) क्रि वि—[illegible] तक, भी।

পর্য্যবসান सं—समाप्ति, खातमा, परिणाम। পর্য্যবসিত (-অ) वि—परिणाम-प्राप्त।

পর্য্যবেক্ষণ सं—परीक्षण निरीक्षण। পর্য্যবেক্ষক वि, सं—निरीक्षक।

পর্য্যাপ্ত (-অ) वि—यथेष्ट काफी।

পর্য্যায় सं—पारी बारी, क्रम, एक ही अर्थका शब्द। —ক্রমে क्रि वि—बारी बारीसे।

পর্য্যালোচন, (-না) सं—अच्छी तरह विचार या आलोचना। পর্য্যালোচিত (-অ) वि—विशेष रूपसे आलोचित।

পর্যুদস্ত (-অ) वि—पराजित, हारा हुआ।

পর্যুষিত (-অ) वि—बासी; सड़ा।

পল सं—घड़ी या दंड का ६० वाँ भाग समय, क्षण, मांस (পলান্ন), पहल, किसी समतल वस्तुमें ऊँची रेखा (—কাটা গহনা)।

পলকা (पलका) वि—भंगुर, टूटनेवाला।

পলতা (पल्ता) सं—परवलकी पत्ती।

পলতে सं=পলিতা।

পলল सं—पंक कीचड़।

পলস্তারা, (-স্ত-) सं—पलस्तर।

পলা सं—तेल घी आदि उठानेके लिए दस्ता वाली कटोरी।

পলাণ্ডু सं—[illegible] प्याज।

পলাতক वि—भगोड़ा।

পলান (-নো) क्रि—পালান।

পলান্ন (-অ) सं—পোলাও पुलाव।

পলায়ন सं—पालान भागना, चपत होना।

পলায়িত (-অ) वि—भागा हुआ। পলায়মান वि—जो भाग रहा है।

পলাশ सं—एक पेड़ जिसके फूल सुंदर लाल परन्तु गंधहीन होते हैं, पलास, ढाक; [illegible] पत्ती (পত্র-পাতন)। [मिट्टीकी पर्त।

পলি सं—बाढ़के बाद खेतोंमें जमी हुई

পলিত (-অ) सं—केशकी शुक्लता। वि—पका, [illegible]; वृद्ध। [पलीता।

পলিতা, পলতে सं—पलिता, बाती बत्ती,

পলো, [illegible] सं—बाँसकी तीलियोंका बना पिंजड़ा-सा मछली पकड़नेका एक औजार।

পল্লব सं—कोंपल नयी पत्ती; आवरण (নেত্র—)। —গ্রাহী वि, सं—अल्पज्ञ-[illegible]। পল্লবিত (-অ) वि—जिसमें नये नये पत्ते हैं; हरा-भरा, विस्तार-युक्त (—বর্ণনা)।

পল্লী, পল্লি सं—पाड़ा मुहल्ला; गाँव।

পল্বল (पल्वल) सं—छोटा पोखरा, कीचड़दार स्थान, दलदल। [घना।

পশম सं—पशम, ऊन। পশমী वि—पशमका

পশিল (-অ) क्रि—(वह) प्रविष्ट हुआ, घुसा।

পশ্চাৎ क्रि वि—पश्चात् बाद, अनंतर, पीछे (পশ্চাদ্ধাবন, পশ্চাদ্ভাগ, টেবিলের পশ্চাতে)।

পশ্চিম सं—पश्चिम। क्रि वि—पीछे, बाद अनंतर। পশ্চিমা, (-মে) वि—पश्चिमका, पछवाँ; पश्चिम देशीय।

পশ্বাচার (पश्वाचार) सं—पशु-सा आचरण, एक तांत्रिक आचार। পশ্বাচারী सं—एक तांत्रिक साधक।

পসরা (पसरा) सं—बिकनेकी चीजोंका टोकरा। [दृष्टि)।

পসলা (पसला) सं—दर्वा बौछार (এক—

পসার सं—পসরা (দোকান—); व्यवसाय का विस्तार; मरीज मुवक्कील आदिकी अधिकता।

পসারী सं—दूकानदार, बेचनेवाला। स्त्री—पसारिणी।

পস্থরি सं—पसेरी।

পস্তান (-নো), পস্তানো (क्रि परि १६)—पछताना, अफ़सोस करना। পস্তানি सं—पश्चात्ताप, पछतावा।

পহর सं—প্রহর पहर।

পহেলা, পয়লা सं—सौर मासकी पहली तारीख। वि—पहला। क्रि वि—पहले, आगे।

পা सं—पैर टाँग; पाया।

পাই सं—पाई, पैसेके तिहाई मूल्यका एक छोटा सिक्का, बड़ा घड़ा (৩ড়ের পাই)।

পাইক सं—पैदल सिपाही, प्यादा।

পাইকার, (-কের) सं—थोक माल खरीद कर जो खुदरा बेचता है, फ़ुटकर बेचनेवाला। পাইকারী वि—थोक मालके भावका।

পাইখানা सं=পায়খানা।

পাইজ सं=পাঁজ।

পাইজর सं—पैंजनी।

পাইন सं—পান, ঝান टाँका, एक गलने योग्य धातु जो धातुके बर्तन जोड़नेमें काम आती है, चीढ़का पेड़।

পাইপ सं—नल।

পাউডার सं—चूर्ण, बुकनी, चेहरे पर लगानेकी सुगंधित बुकनी।

পাউণ্ড सं—पौंड, लगभग आधा सेर, बिलायती सोनेका सिक्का।

পাউরুটি, (পাঁ-) सं—डबल रोटी।

পাওনা सं—पावना, लहना, लेन (দেনা—)। —গণ্ডা सं—अपने पावनेका धन। —দার सं—लेनदार।

পাওয়া (क्रि परि ८)—पाना, मिलना, सकना, लगना (ক্ষুধা—, ঘুম—), आवेश होना (ভূতে—)। वि—पाया हुआ।

পাওয়ান (-নো), পাওয়ানো (क्रि परि १६)—दिलाना (টাকা পাইয়ে দেওয়া)।

পাংশু सं—পাঁশ, छाई राख, खाक। वि—भुरा खाकी। পাংশুল वि—धूलि-धूसर धूल लगा हुआ, कलंकित।

পাক सं—রন্ধন रसोई, परिपाक, हजम, परिणति, केशकी शुक्लता (চুলে—ধরা)। —চক্র सं—घटनाचक्र, षड्यंत्र। —যন্ত্র (-অ) सं—पाकस्थली, पेटमें अन्न पचनेका स्थान, पकानेका यंत्र। —শালা सं—রান্নাঘর रसोई घर। —স্থলী सं—पेटमें अन्न पचनेका स्थान। —স্থালী सं—रसोई करनेका बरतन। —স্পর্শ सं=बउभात।

পাক सं—মোচড় बटनेसे डोरी रस्सी आदिमें पड़नेवाली ऐंठन, घुमाव (—খাওয়া, সাত—), पेंच (জিলিপির—)।

পাঁক सं—পঙ্ক, कादा कीचड़।

পাকড়ান (পাক্‌ড়ানো), পাকড়ানো (क्रि परि १६)—धरा पकड़ना। পাকড় सं—पकड़ (ধর—)। পাকড়াও सं—पकड़ (—করা)।

পাকলান (পাক্‌লানো), পাকলানো (क्रि परि १६)—मसूड़ेसे चबाना।

পাকা (क्रि परि २)—पकना, सुफेद होना (চুল—), अनुभवी होना। वि—पका, अनुभवी, अभिज्ञ, निपुण, पूरा (—এক মন), टिकाऊ (—রং), जलाया हुआ (—ইট); ईंट पत्थर आदिसे बना हुआ (—রাস্তা, —বাড়ী); पक्का (—কথা, —খাতা)। —দেখা सं—विवाहकी बातचीत पक्की करना, तिलक। —পনা, পাকামি, (-মো) सं—জেঠামি थोड़ी उमरमें बूढ़ों-सा वर्ताव। —লেখা सं—पक्की लिखावट, सुंदर हस्ताक्षर। —সোনা सं—असली सोना। —হাড় सं—पक्की हड्डी,

बूढ़ेका शरीर (जो अनेक दु:ख कष्ट सहकर मजबूत हुआ है)।

পাঁকাটি स—सनका सूखा डंठल।

পাকাটে वि—रोगा दुबला-पतला (-গড়ন)

পাকান (नो), পাকানো (क्रि परि १०) —পাক দেওয়া बटना, मरोड़ना, गाली बनाना, लपेटना, उलझाना; सलाहके लिए इकट्ठा होना (জোটনা—); पकाना (ফল—, রুটি—)। वि—बटा हुआ, लपेटा हुआ, उलझा हुआ; पका हुआ।

পাকাপাকি स—पक्की बात, दोनों पक्षोंमें कर्तव्यका निश्चय। वि—निर्धारित, निश्चित। क्रि वि—स्थायी रूपसे।

পাকামি, (-মো) सं—পাকা देखो।

পাকাশয় स =पाकस्थली।

পাকী वि—पक्की तौलका, ८० तोले या उससे अधिककी तौल वाला।

পাকিস্তান (-कि-, -स्तान) स—पाकिस्तान।

পাকুড় सं—पाकड़का पेड़। [करके या हो कर।

পাকেপ্রকারে क्रि वि—घटनाचक्रसे लाचार

পাক্কা वि—পাকা पक्का, पूरा।

পাখনা (पाख्ना) स—পাখা, ডানা पंख, डैना। পাখসাট, (পাক-) सं—ডানার ঝাপটা डैनेका झपट्टा।

পাখা स—ডানা, পাখনা पंख, डैना, পালক पर, पंखा (—করা, पंखा झलना)।

পাখালে क्रि—पखारता है धोता है (प्राय. पद्यमें)।

পাখি, পাখী सं—पक्षी, पखेरू, चिड़िया; झिलमिलीकी पटरी, पहियेका आरा।

পাখোয়াজ स—मृदङ्ग-पखावज। পাখোয়াজী वि, सं—पखावजी।

পাগড়ি, পাগ सं—पगड़ी, साफा।

পাগল वि, स—पागल; सिड़ी, सनकी, (प्यारमें) भोला। स्त्री—पागलिनी, पागली।

পাগলা वि—पगला (—কুকুর); पागल-सा, सनकी। পাগলামি, (-মো) सं—पागलपन, सनक, नटखटी। [होनेके योग्य।

পাঙক্তেয় (-अ) वि—पंक्ति-भोजनमें शामिल

পাঙাশ (पाङाश), পাঙাশ वि—फेकाशे पीला, फीका। स—एक मछली।

পাঁচ वि, सं—पाँच ५। পাঁচই, পাঁচুই सं—सौर मासकी पाँचवी तारीख। —ফোড়ন स जीरा, मंगरेला, मेथी, सौंफ राई—इन पाँच मसालोंका मेल। —মিশালী, (-মিশলী, -মিশুলী) वि—पँचमेल।

পাচক वि, सं—रसोइया, पचानेवाला।

পাঁচড়া सं—খোস खुजली जिसमें छोटे बड़े फफोले निकलते है। [काढ़ा।

পাচন स—पचनेकी क्रिया, हाजमा, पाचक,

পাঁচন सं—काढ़ा।

পাচনবাড়ি, পাচনি स—गौ हाँकनेकी छड़ी।

পাঁচালি सं—सत्यनारायण शनिचर लक्ष्मी आदि की कथाकी कवितापुस्तक (শনির—, লক্ষ্মীর—), कहानी (পথের—)।

পাচিকা स्त्री—रसोई पकानेवाली।

পাঁচিল सं—প্রাচীর दीवाल, चहारदीवारी।

পাচ্য (-अ) वि—पचने या हजम होनेके योग्य; पकाने लायक।

পাছড়ান (पाछ्ड़ानो), পাছড়ানো (क्रि परि १६)—पछोड़ना, पछाड़ना। [अंश।

পাছতলা (पाछ्तला) सं—पैताना; निचला

পাছা स—नितम्ब चूतड। —পেড়ে वि—তিন পাড় विशिष्ट तीन किनारे वाली (साड़ी)।

পাছাড় सं—आछाड़ पटकन, पछाड़।

পাছু, পিছু, পেছু क्रि वि—पीछे। स—पीछेकी दिशा (—হটা, —ডাকা), पीछा (—নেওয়া, पीछा करना)। পাছুতে, পিছুতে

ক্রি বি—পশ্চাতে, পিছনে पीछे (—लागा, दिक करना, पीछे पड़ना); बादको, अन्तमें।

পাছে ক্রি বি—यदि, अगर, शायद, पीछे।

পাঁজ स—পাইজ रूईकी बत्ती जिससे सूत काता जाता है। [पसली।

পাঁজর, পাঁজরা सं—पंजर, कंकाल; ठठरी,

পাঁজা सं—पजावा, भट्ठा।

পাঁজা सं—कंधे और जाँघके नीचे हाथ रख कर किसी आदमीको उठाना (-ক'রে ধরা বা তোলা, —কোলা)।

পাঁজি सं=পঞ্জিকা।

পাজী वि—নচ্ছার पाजी, शरारती।

পাঞ্জা सं—করতল हथेली; থাবা पंजा, हथेलीकी छाप। [पंजाबी।

পাঞ্জাব सं—पंजाब। পাঞ্জাবী वि, सं—

পাঞ্জাবি सं—एक ढीली कमीज, पंजाबी।

পাট सं—কোষ্ঠা पटुआ; ভাঁজ तह (কাপড়—করা, —ভাঙা, तह खोलना), पटिया, तख्ता, सिंहासन, तख्त (রাজ—, —রাণী); वैष्णवों का पीठस्थान, अस्ताचल (সূর্য্য পাটে বসেছেন); गृहस्थीका रोजाना काम (বাসী —সারা)। —কিলে वि—পাটল ईंटके रंग का। —নী, পাটুনী स—খেয়াঘাটের মাঝী खेवट, पार करनेवाला मल्लाह।

পাটব सं—पटुता, निपुणता। [गुलाबी।

পাটল वि—পাটকিলে ईंटा-सा रंगवाला,

পাটলিপুত্র (-अ) सं—पटनेका पुराना नाम।

পাটা सं—तख्ता, चक्की (বুকের—, छातीकी चौड़ाई या हिम्मत)। —তন सं—लकड़ी का मचान। [टुकड़ा।

পাটালি सं—सुखाये हुए गुड़का बरफीनुमा

পাটি सं—कतार, पंक्ति, जोड़ेका एक (এক —জুতা), एक चटाई (শীতল—)।

পাটী, পাটি सं—शृंखला (পরিপাটি), शैली, कतार। —গণিত सं—अंक-गणित।

পাটেশ্বরী स्त्री—পাটরাণী पटरानी।

পাটোয়ার, (-রী) वि—पटवारी, नफा-नुकसानके विषयमें बहुत अधिक ध्यानशील करनेवाला (পাটোয়ারী বুদ্ধি)।

পাট্টা सं—पट्टा, कपड़ेका जोड़ा (দো—, দেড়—)। গাল— सं—गलमुच्छा, गालों परके बढ़ाये हुए बाल।

পাঁঠা सं—ছাগল बकरा। स्त्री—পাঁঠী।

পাঠান सं—पठान।

পাঠান (-নো), পাঠানো (क्रि परि १०)—पठाना, भेजना (ডেকে—, ব'লে—, बुला भेजना)।

পাড় सं—नदी तालाव आदिका किनारा, तीर, कपड़ेका किनारा; चलानेके लिए पैरका दबाव ((ঢেঁকিতে—দেওয়া)। [चूर)।

পাঁড় वि अत्यंत, पक्का (—মাতাল, नशेमें

পাড়া स—পল্লী मुहल्ला। পাড়াগাঁ सं—পল্লীগ্রাম गाँव, देहात। —গেঁয়ে वि—देहाती। —পড়শী सं—पड़ोसी। —মাথায় করা क्रि—इतना अधिक झगड़ा करना जिससे मुहल्ले भरके आदमी इकट्ठे हो जायँ।

পাড়া (क्रि परि २)—পাতিত করা गिराना, उतारना (ফল—, উপরের তাক থেকে—), अंडा देना, बिछाना (বিছানা—), चोटसे गिराना (এক কোপে পেড়ে ফেলা); चिल्लाकर कहना (গালি—, ডাক—)।

পাড়ান (-নো), পাড়ানো (क्रि परि १०)—गिरवाना, उतरवाना। ঘুম—, सुलाना। ঘুম-পাড়ানী वि—सुलानेवाली। ঘুমপাড়ানে ছড়া सं—बच्चोंको सुलानेका गीत।

পাড়ি सं—नदीके पार जाना, नदीके इस पारसे उस पारका फैलाव।

পাঁড়ে सं -পাণ্ডে।

পাণি सं— হাথ। —গ্রহ, —গ্রহণ सं— विवाह, शादी। —পীড়ন सं—করমর্দন हाथ मिलाना; विवाह।

পাণ্ডা सं—पंडा, मुखिया; प्रबंधक— (দলের—, সভার—)।

পাণ্ডাল सं—पंडाल, सभा-मडप।

পাণ্ডু सं—মেরা, কামলা कवल-रोग। পাণ্ডু, পাণ্ডুর वि—দেকাশে पीला, फीका। পাণ্ডুলিপি सं—पुस्तक आदिकी हाथकी लिखी प्रति, कापी।

পাণ্ডে सं—পাঁড়ে पाँड़े।

পাত सं—पतन (বৃষ্টি—, তুষার—); स्राव, बहाव (রক্ত—), नाश, क्षय (দেহ—করা); निक्षेप (দৃষ্টি—, কর্ণ—)।

পাত सं—পত্র, পাতা पत्ती (কলা—)। ज्योनारमें पत्तल बिछानेका प्रबन्ध (—পাতা, —করা), पत्तर (লোহার—)। —তাড়ি सं—बच्चोंके लिखनेके लिए ताड़के पत्तोंका गुच्छा। (—গোটানো, भागनेकी तैयारी करना)।

পাতক सं—পাপ पाप, गुनाह। পাতকী वि, सं—पापी। स्त्री—পাতকিনী।

পাতকুয়া, -কুয়া, -কুয়ো सं—छोटा कुआँ।

পাতন सं—नीचे गिराना, उतारना; सुलाना, बिछाना, नाश करना।

পাতলা वि—पतला (—কাগজ, —দুধ); महीन, दुबला-पतला (—গড়ন)।

পাতশাহ सं—বাদশাহ।

পাতা सं—পত্র, পাত पत्ता, पन्ना (বহির—); फैलेका पत्ता जिसपर भोजन करते हैं। চোখের—, पलक। পায়ের—, चरण।

পাতা (क्रि परि २)—বিছানো बिछाना, फैलाना (বিছানা—); ভিক্ষা চাওয়া भीख मांगना (লোকের কাছে হাত—); रखना, स्थापित करना, उन्मुख करना (কান—, ফাঁদ—; আড়ি—, ওত—; সই—, दही जमाना बুক—; মাথা—, सिर पर लेना; সংসার— नयी गृहस्थी शुरु करना)। वि—फैला हुआ, स्थापित।

পাতান (-নো), পাতানো (क्रि परि १०)— बिछवाना, सम्बन्ध जोड़ना (সই—)। वि—बनावटी सम्बन्धसे युक्त (—বোন)।

পাতি सं—পঙক্তি कतार। —পাতি सं—छान छानबीन (—পাতি করিয়া খোঁজা)।

পাতি उप—निकृष्ट जातिका बोधक उपसर्ग (—কাক, —নেবু, —হাঁস)।

পাতিব্রত্য (-अ) स—पातिव्रत, सतीधर्म।

পাঁতি सं—पंक्ति, पाँति, कतार; शास्त्रीय व्यवस्था-पत्र (—দেওয়া)।

পাতিত वि—नीचे गिराया हुआ। [अवस्था।

পাতিত্য (-अ) स—पतित होनेका भाव या

পাতী वि—गिरनेवाला।

পাত্তা सं—पता, ठिकाना, समाचार।

পাত্র (-अ) सं—बर्तन, आधार, विषय, पात्र, योग्य व्यक्ति (দয়ার—); आदमी (আমি ছাড়বার—নই); दूल्हा, वर। পাত্রস্থ (-अ) वि—वरके साथ विवाहित (কন্যা—করা)।

পাথর स—पत्थर, पत्थरकी थाली, नग, मणि (আংটির—)। পাথরি, পাথুরি सं— पथरी। পাথুরে वि—पत्थरका (—কয়লা)।

পাথার सं—समुद्र, विशाल जल-राशि (অকূল—)।

পাথেয় (-अ) स—পথখরচ मार्गव्यय।

পাদ सं—পা पैर; मूल, जड़, श्लोकका चौथाई अंश; चौथा हिस्सा। —চারণ स—পায়চারি टहलना। —চারী वि पैदल चलने वाला। —টীকা सं—पन्नेके नोचकी टोका, फुटनोट।

—প वि, सं—जड़से पीनेवाला, वृक्ष पेड़।

পাদরী सं—ईसाई धर्मका पुरोहित या प्रचारक।

পাদাড় सं—আদাড় मकानके पीछेवाला कूड़ाखाना।

পাদান सं—पावदान।

পাদুকা सं—जूता, खड़ाऊ।

পাদোদক सं—चरणामृत।

পাদোন वि—পোনে पौन, तीन-चौथाई।

পাদ্য (-अ) सं—पैर धोनेका जल।

পান सं—पीना, पान। —দোষ सं—शराब पीनेकी आदत। —পাত্র सं—जल या शराब पीनेका पात्र।

পান सं—তাম্বুল पान; पानका बीडा।

পান सं—ঝাল एक गलने योग्य धातु जो धातुके वतन जोड़नेमें काम आती है।

পানকৌড়ি, -ড়ী (पानूकउडी) सं—पनडुब्बा (चिड़िया)।

পানতুয়া (पानूतुआ) सं—गुलाब-जामुन।

পানসি (पानूशि) सं—एक हलकी नाव।

পানসে (पानूशे) वि—ফিকা फीका, स्वादहीन।

পানা सं—पानीमें तरनेवाला पौधा, शरबत (মিছরির—); तुल्य, सा (চাঁদ—মুখ)।

পানি सं—जल, पानी। —বসন্ত, পানবসন্ত (-अ) सं—জলবসন্ত छोटी चचक। —ফল, পানফল सं—सिंघाडा। [वस्तु।

পানীয় (-अ) वि—पीने योग्य। स—पेय

পানে क्रि वि—প্রতি ओर, तरफ।

পান্তা स—पानीसे भिगोया हुआ बासी भात।

পান্থ (पान्थ -अ) सं—পথিক राहगीर। —নিবাস, —শালা सं—धर्मशाला, चट्टी, सराय।

পান্না स—पन्ना, मरकत।

পাপ सं—पाप, गुनाह; विपत्ति, बला (—বিদায় করা), पापी। —গ্রহ सं—अशुभ ग्रह।

পাপঘ্ন (-अ) वि—पापनाशक। —বুদ্ধি सं बुरी अक्ल। वि—बुरी अक्ल वाला।

পাপড়ি सं—ফুলের দল पखडी।

পাঁপর सं—पापड।

পাপিয়া सं—पपीहा।

পাপোশ सं—पैरकी धूल पोंछनेके लिए दरवाजे पर रखा हुआ बिछावन।

পাব सं—গাঁট गाँठ, पर्व, दो गाँठोंके बीचका हिस्सा (আঙুলের—, বাঁশের—)।

পাবক वि, सं—पवित्र करनेवाला; अग्नि।

পাবদা (पाब्दा) सं—एक छोटी पतली मछली। [स्त्री—পাবনী।

পাবন वि—पवित्र करनेवाला। सं—शोधन।

পামর वि, सं—पापी, अधम; नीच आदमी (আ-)। स्त्री—পামরী। [यत्र।

পাম্প सं—पप, कुए आदि से जल उठानेका

পায়খানা स—पैखाना, शौचालय।

পায়চারি स—হাঁটা टहलना।

পায়জামা सं—ইজার पाजामा।

পাঁয়তারা सं—पतरा, कामके पहले घमड।

পায়দল क्रि वि—হাঁটিয়া, পদব্রজে पैदल।

পায়পায় क्रि वि—প্রতিপদে कदम कदम पर।

পায়রা सं—পারাবত কবুতর कबूतर।

পায়স सं—পায়েস, পরমান্ন खीर।

পায়া सं—पाया, पावा, खंभा। —ভারি सं—उच्च पदके कारण घमंड।

পায়ু स—मलद्वार।

পায়েস सं—खीर।

পার सं—नदी आदिका दूसरा किनारा (পারে যাওয়া); उत्तरण, पार होना, उद्धार, प्रांत, तीर (এ—, ও—),

পারক वि—समर्थ।

পারক্য (-अ) वि—পরকীয় पराया, पारलौकिक।

পারগ वि—पार जानेवाला, समर्थ, निपुण।
পারণ, পারণ সं—उपवासके दूसरे दिन किया जानेवाला पहला भोजन।
পারতন্ত্র (-अ) सं—परतन्त्रता, अधीनता।
পারতপক্ষে क्रि वि—পারিলে, সম্ভব হইলে हो सके तो, सभव हो तो।
পারত্রিক वि—पारलौकिक।
পারদ सं—পারা पारा।
পারদর্শী वि—दक्ष, निपुण; दूरदर्शी, परिणाम देखनेवाला; बुद्धिमान। পারদর্শিতা सं—बुद्धिमानी।
পারমার্থিক वि—मोक्ष सम्बन्धी।
পারম্পর্য (-अ) सं—ধারাবাহিকতা लगातार होनेका भाव, सिलसिला।
পারলৌকিক वि परलोक सम्बन्धी।
পারশে (पार्शे) सं—एक छोटी मछली।
পারসী (पार्शी) स—ফারসী फारसी, पारसी। পারসীক वि—फारस देश सम्बन्धी। सं—फारस देशका निवासी। পারস্য (-अ) सं—फारस देश।
পারা स—পারদ पारा।
পারা वि—सदृश, तुल्य, सा (পাগল—)
পারা (क्रि परि ३)—सकना, समर्थ होना, बाधा हीन या अनुमति प्राप्त होना (ইহাতে পারে, সে এখন যাইতে পারে)। [पार होना।
পারান (-नो), পারানো (क्रि परि १०)—
পারানি सं—पार होनेका महसूल।
পারাপার सं—दोनों किनारे, एक किनारेसे दूसरे किनारे गमन; समुद्र।
পারাবত सं—পায়রা कबूतर।
পারাবার सं—समुद्र, दोनों तीर।
পারায়ণ सं—पुराण आदिका विधि-पूर्वक सम्पूर्ण पाठ।
পারিতোষিক स—বকশিশ इनाम।
পারিপাট্য (-अ) सं—शृंखला, सजावट।
পারিপার্শ্বিক वि चारों ओरका।
পারিভাষিক वि—परिभाषा सम्बन्धी।
পারিষদ सं—सदस्य, राजसभाके लोग, अनुचर।
পারুল सं—एक सुगंधित फूल।
পারুষ্য (-अ) सं—वचनकी कठोरता।
পার্থক্য (-अ) सं—पृथकता, भेद।
পার্থিব (-अ) वि—पृथ्वी सम्बन्धी, इस लोकका (—স্নেহ, —সুখ)।
পার্বণ सं—उत्सव, त्योहार, अमावस्या आदि पर्वमें किया जानेवाला श्राद्ध। পার্বণী सं—त्योहारका इनाम, त्योहारी।
পার্বত্য (-अ) वि—पर्वतीय पहाड़का, पर्वतमय, (—প্রদেশ); पर्वतमें रहने या उत्पन्न होनेवाला (—জাতি, —তরুলতা)।
পার্শ্ব (पार्श-अ) सं—পাশ बगल, दिशा। —চর सं—सहचर; मुसाहब। —পরিবর্তন सं—পাশ ফেরা करवट लेना या बदलना।
পার্ষদ सं—পারিষদ।
পাল सं—पालक (প্রদেশ—), एक उपाधि; समूह दल, झुंड (গরুর—); नाव चलानेका पाल; चंदवा, शामियाना।
পালং, পালঙ, পালম सं—पालकका साग।
পালক वि—पालन करनेवाला। सं—पर, डैना।
পালকি सं—शिबिका पालकी।
পালঙ্ক, পালং, (-ङ) सं—পর্যঙ্ক पलंग।
পালট सं—उलटाव, पलटाव।
পালটা वि—उलटा, दूसरे पक्षके द्वारा किया हुआ (—জবাব, —নালিশ)।
পালটান (नो), পালটানো (क्रि परि १६)—उलटना, पलटना, लौटाना, बदलना।
পালটি (पाल्टि) सं—जिसके साथ

विवाहका सम्बन्ध किया जा सके (—घर)।

পালন सं—পোষণ रक्षण पालन, परवरिश। পালনীয় (-अ) वि-पालने योग्य। পালয়িতা सं—पालनेवाला। स्त्री—পালয়িত্রী।

পাল-পার্বণ सं—पालने योग्य पावण या त्योहार।

পালা सं—छोटी डाली (ডাল—), बारी, पारी। (—করিয়া কাজ করা, এইবার আমার—), संगीत कीतन या अभिनयका विषय (কংশবধের—), तुषार, पाला, हिम।

পালা (क्रि परि २)—पालना, पालन करना।

পালান सं—जीन, काठी, গরুর স্তন गायका थन।

পালান (-नो), পালানো (क्रि परि १०)—পলায়ন করা भाग जाना, चम्पत होना।

পালি, (-ली) सं—রাশি ढेर, कतार, श्रेणी, अन्नकी एक नाप, पाली भाषा।

পালিত वि—পোষা पाला हुआ। सं—एक उपाधि। स्त्री—পালিতা।

পালিশ सं—पालिश, चिकनाहट।

পালো सं—सिंघाड़ा आदिका मैदा, बार्ली।

পালোয়ান सं—মল্ল पहलवान।

পাল্য (-अ) वि=পালনীয়।

পাল্লা सं—किवाड़ (দরজার—); पलड़ा (দাঁড়ি—); बटखरा; होड़ (—দেওয়া); दूरी, फासला (দূর—); वश, फेर (তুমি তার পাল্লায় পড়েছ)।

পাশ स—দড়ি रस्सी, बंधन, गुच्छा, पास, बगल। পাশাপাশি क्रि वि—पास-पास। वि—सटा हुआ।

পাঁশ सं—छाइ राख, कूड़ा (ছাই—)।

পাঁশুটে वि—পাংশুবর্ণ खाकी।

পাশব वि-पशु-सम्बन्धी, पशु-सा।

পাশবিক वि-पशु-तुल्य, पशुका।

পাশা सं—चौपड़, चौसर, पाँसा।

পাশী वि, सं—फंदावाला, बहेलिया।

পাশ্চাত্য (अ) वि—पश्चिम देश सम्बन्धी, यूरोपका (—সভ্যতা), पीछेका।

পাষণ্ড (अ), পাষণ্ডী वि सं- अधार्मिक नास्तिक, पाखंडी।

পাষাণ सं—পাথর पत्थर। वि—कड़ा, बेरहम, पासंग (—ভার, तराजू बराबर करना)।

পাস (पाश वि—परीक्षामें उत्तीर्ण। सं—इम्तहानमें कामयाबी (—করা, পাসের খবর); अभिनय रेलगाडी आदिमें जानेका आज्ञा पत्र; पास pass। [गया।

পাসরিল (-अ) (पद्यमें) क्रि—(वह) भूल

পাহাড় स-पर्वत, पहाड़, करारा। —তলি सं—तराई। পাহাড়িয়া, পাহাড়ে वि सं—पर्वतीय, पहाड़ी। পাহাড়ী सं—पहाड़ी जाति। वि-पहाड़का।

পাহারা सं—पहारा, चौकसी, रखवाली। —ওয়ালা, (—ওলা) सं—पहारावाला, सिपाही, कान्स्टेबल।

পিক सं—কোকিল कोयल, चबाये हुए पानका रस, पीक, थूक। —দান, —দানি सं—पीक-दान, उगल-दान।

পিঙ্গল, পিঙ্গ (पिंग-अ) वि—कुछ पीला।

পিচ सं—कोयलेसे बनी एक कठिन वस्तु जिसे गला कर सड़कों पर दिया जाता है, पीक, थूक, एक फल, आड़ू।

পিচকারি सं—पिचकारी।

পিচবোর্ড, (পিস-) सं—जमाया हुआ मोटा कागज, दफ्ती।

পিচুটি, (পি-) सं—आँखकी मैल या कीचड़।

পিচ্ছিল, (-চ্ছ-) वि—पिच्छल फिसलनेवाला, तेलहा; लसलसा।

পিছ सं—पीछा (পিছে, पीछे)। —টান सं—पीछेकी ओरका आकर्षण, ममता। —পা वि—पीछे हटनेवाला, अनग्रसर।

পিছন सं—पीछा, पीछेका स्थान (—দিক)।

পিছল, পিছলা वि=পিচ্ছিল।

পিছলান (पिछलानो), পিছলানো, পিছলনো (क्रि परि १७)—হড়কানো फिसलना (পা—)।

পিছান (-नो), পিছানো, পিছনো (क्रि परि ११)—पीछे जाना, हट आना, पीछे रह जाना, पिछड़ना।

পিছু क्रि वि, सं=পাছু।

পিঞ্জর, (-ঞ্জ) सं—পিঞ্জর, खाँचा पिजड़ा।

পিঁজা, পেঁজা (क्रि परि ५)—रुईको खींच कर रेशा अलग अलग करना।

পিঞ্জর स—खाँचा पिजड़ा, ठठरी।

পিট स—ताशके खेलमें एक वारका दान।

পিটন सं—প্রহার मार। [पीटनेका मुगरा।

পিটনা (पिट्ना), (-ন) स—छत फर्श आदि

পিটপিট (पिट्पिट्) स—वार वार आँख मींचना और खोलना, हर वातमें टोकनेकी आदत; पाकसाफ रहनेकी सनक। পিটপিটে वि—हर वातमें टोकनेवाला, अत्यधिक पवित्रता का सनकी।

পিটা, পেটা (क्रि परि ५)—पीटना, ठोंकना।

পিটন, পিটনি, পিটুনি स—প্রহার मार।

পিটান (-नो), পিটানো, পিটনো, পেটানো (क्रि परि ११)—পিট पीटना; মার मारना, ठोकना, पिटवाना। [चावल।

পিটালি, পিটুলি स—जलके साथ पिसा हुआ

পিটুনি सं—পলায়ন, চম্পট चम्पत (-দেওয়া)।

পিঠ सं—পৃষ্ঠ पीठ, पीछा, पीछेका स्थान; आगेका स्थान (দুইয়ের পিঠে তিন—২৩ তেইশ)। —দাঁড়া सं—रीढ़। পিঠাপিঠি, পিঠোপিঠি वि—পর পর एकके वाद दूसरा (—দুই ছেলে)। क्रि वि—पीठकी ओर पीठ रखकर।

পিঠা, পিঠে सं—পিষ্টক पिसा चावल या दाल नारियल छेना खोआ आदि मिलाकर बनायी हुई मिठाई।

পিঁড়া, পিঁড়ে स—पीढ़ा, पाटा, चबूतरा।

পিঁড়ি सं—पीढ़ा।

পিণ্ড (-अ) स—पकाये हुए चावल आदिका गोल लोंदा जो श्राद्धमें पितरोंको अर्पित किया जाता है, डला (চিনির—, মাংস—)। —দ (-अ) सं—पिंड-दान करनेवाला, पिंडाधिकारी। [चीनीमें पकाया हुआ खजूर।

পিণ্ডখর্জুর सं—

পিণ্ডি, পিণ্ডী सं—पायेर গুলি पिंडली,

পিতল सं—पीतल।

পিতৃ स—পিতা पिता। —তুল্য (-अ) वि—पिताके तुल्य। —কার্য (-अ) सं—पितरोंके लिए श्राद्ध तर्पण आदि। —কুল सं—पिताका वंश। —গণ सं—पितरलोग। —দায় स—मृत पिताका श्राद्ध आदि कर्तव्य। —পক্ষ (-अ) सं—कुआर की कृष्ण प्रतिपदासे अमावस्या तकका समय; पिताके साथ सम्बन्ध-युक्त कुटुम्बी। —পুরুষ स—पुरखा।

পিতৃব্য (-अ) सं—चचा। —পত্নী स्त्री—पिसी फूफी, वुआ। —স্থানীয় (-अ) वि—पिताके तुल्य; पिताके समान पूज्य। —হন্তা सं পিতৃঘাতী पिताका हत्यारा।

পিত্ত (-अ) स—पित्त। —কোষ, পিত্তাশয় सं—पित्तकी थैली। —ঘ্ন (-अ), —নাশক वि—पित्तका दोष दूर करनेवाला। —পড়া स—अधिक भूख लगने पर भोजन न

मिलनेसे पित्तका वृथा स्राव। —বক্কা सं—भूखके समय थोड़ासा खाद्य खाना।

পিত্তল सं—पीतल

পিত্রালয় सं—पिताका घर, नैहर।

পিত্র্য (-অ) वि—पैतृक, पितासे सम्बन्ध- [युक्त।

পিদিম सं—প্রদীপ दीया, चिराग।

পিধান सं—খাপ कोप, म्यान, ढक्कन।

পিন सं—আলপিন पिन, काँटा।

পিনাস सं—नाकमें घाव होनेका रोग पीनस।

পিঁপড়ে सं—পিপীলিকা च्यूँटी।

পিপা, পিপে सं—पीपा।

পিপাসা सं—प्यास, लालच। পিপাসিত (-অ), পিপাসী वि—प्यासा। পিপাসু वि—पीने या पानेके इच्छुक।

পিপীলিকা सं=পিঁপড়ে।

পিপুল, (পিঁ-) सं—पिप्पली।

পিপ্পল सं—पीपल।

পিয়ন सं—পেয়াদা प्यादा, हरकारा, चिट्ठी-रसाँ।

পিয়া वि, सं—प्रिया, प्रेमिका (पद्यमें)।

পিয়াজ, পিঁয়াজ, (পেঁ-) सं—प्याज।

পিয়ার, (পে-) सं—ভালবাসা प्यार। পিয়ারা, (পে-) वि—प्यारा। स्त्री—পিয়ারী, (পে-)।

পিয়ালা सं—বাটি प्याला।

পিয়াস, (-সা) —प्यास। পিয়াসী वि—प्यासी।

পিরান सं—कमीज, कुर्त्ता।

পিরালী, পিরিলী सं—एक पतित ब्राह्मण जाति।

পিরিচ सं—রেকাবি रकाबी।

পিরিতি, (-বী-), পিরিত सं—प्रेम, इश्क।

পিল सं—हाथी, फील, दवाको गोली। —খানা सं—फीलखाना। —পিল सं—च्यूँटोंकी तरह एक स्थानमें जमाव, गड्ढेसे च्यूँटोंका झुंडके साथ निकलना। —সুজ सं—दीवट।

পিলে सं—প্লীহা तिल्ली।

পিশিত सं—मांस। —পিণ্ড (-অ) सं—स्तन।

পিশুন वि—चुगलखोर, निंदक।

পিষা, পেষা (क्रि परि ५)—বাটা पीसना। वि—पिसा हुआ। পেষাই सं—पिसाई।

পিষ্ট (-অ) वि—पिसा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ।

পিষ্টক सं=পিঠা।

পিসা, পিসে (পিশে) सं—फूफा। পিসী, পিসি स्त्री—फूफी, बुआ। পিসতুত (-অ), (-তো) वि—फुफेरा (—ভাই, —বোন, —দেওর, —শালী)। পিসশ্বশুর सं—पति या पत्नीका फूफा। পিসশাশুড়ী स्त्री—पति या पत्नीकी फूफी।

পিস্তল सं—पिस्तौल, तमचा।

পিহিত (-অ) वि—म्यानमें रखा हुआ, छिपा हुआ।

পীচ, পিচ सं—एक फल, आडू।

পীড়া सं—रोग, क्लेश, दर्द। পীড়ক वि, सं—पीडा देनेवाला। পীড়ন सं—क्लेश दान, मर्दन, সাদর গ্রহণ (পাণি—)। পীড়িত (-অ) वि—रुग्ण, क्लेशित। —পীড়ি, (পেড়া-) सं—दबावके साथ अनुरोध।

পীত वि—হলদে पीला। পীত (-অ) वि—पान किया हुआ, पिया हुआ।

পীন वि—स्थूल, मोटा।

পীনস सं=পিনাস।

পীবর वि—स्थूल, मोटा, बलवान।

পীযূষ सं—अमृत, सुधा।

পীর सं—मुसलमान साधु।

পুঁই सं—एक शाग, पोई।

পুং सं—पुरुष, नर। পুংশ্চলী वि, स्त्री—छिनाल। পুংশ্চিহ্ন (-অ) सं—पुरुषका जननेन्द्रिय। পুংত্ব (-অ) सं—पुरुषत्व, पुरुषका भाव।

পুংগব, পুঙ্গব सं—साँढ़। वि श्रेष्ठ (নর—)।

পুকুর सं—पুষ্করিণী तालाव, पोखरा।

পুঙ্খানুপুঙ্খ (-अ) क्रि वि—बारीक छानबीनके साथ, अति सूक्ष्म।

পুঁচকে (पुच के) वि—छोटा, नन्हा (—ছেলে)।

পুচ্ছ (-अ) स —লেজ দুম, पूँछ।

পুছা (क्रि परि ६) -पूछना।

পুঁছা (क्रि परि ६)—মোছা, পোঁছা पोंछना।

পুঁছান (-नो), পুঁছানো, পুঁছনো, পোঁছানো (क्रि परि १० —মোছানো पोंछनेका काम दूसरेसे कराना।

পুঁজ सं—पीब, मवाद। [स चित घन।

পুঁজি स—पूजी, मूलधन। —পাটা स—

পুঞ্জ (-अ) सं—समूह, राशि, ढेर। পুঞ্জিত (-अ), পুঞ্জীভূত (-अ) वि—ढेर लगा हुआ। পুঞ্জীকৃত (-अ) वि—टेर लगाया हुआ।

পুট सं—आवरण, आधार, जिससे पकड़ा जाता है (চক্ষু—, পক্ষ—), अंजलि (কর—, কৃতাঞ্জলিপুটে); दोना (পত্র—); औषध पकानेका एक मुँह-बंध बर्तन। পুটিত (-अ) वि—पुटपाक किया हुआ।

পুঁটলি, পুঁটুলি सं—पोटली, छोटी गठरी।

পুঁটি स—एक छोटो मछली।

পুটিং सं—पुटीन, खड़िया मिट्टीकी बुकनीमें तीसीका तेल आदि मिलाकर बनाया हुआ एक पलस्तर जिससे शीशा आदि सटाते हैं।

পুড়ান (-नो), পুড়ানো, পুড়নো, পোড়ানো (क्रि परि १२)—जलाना, भस्म करना, मनमें दुःख देना। वि—जला हुआ दग्ध।

পুণ্য (-अ) स -पुण्य, धर्म, शुभ कर्म, पुण्य-जनक काय। —দম। वि—पुण्यजनक कम करनेवाला। —কীর্তি वि स—पुण्य कर्म करके जिसने यश पाया है। —তোয়া वि—जिस नदीका जल पवित्र माना जाता है। —বল सं -पुण्यकी शक्ति। —শ্লোক वि, स—

পুণ্যকীর্তি। পুণ্যাহ (-अ) सं—जिस दिन पुण्य कर्म किया जाता है, पर्व-दिन।

পুতলি स—পুতুল खिलौना, गुड़िया (মহের—), आँखकी पुतली।

পুঁতি स -मोतीकी शकलवाली काँचकी छोटी गोली, इससे माला बना कर बच्चे गुड़िया को पहनाते हैं।

পুতুপুতু सं—बड़ी सावधानी।

পুতুল सं—गुड़िया ; मूर्ति।

পুত্তলিকা, পুত্তলি, (-লী) स—পুতুল गुड़िया।

পুত্তুর स =পুত্র।

পুত্র, পুত্র (-अ) स—ছেলে, তনয়, সুত, लड़का, बेटा, पुत्र। —কাম वि, सं—पुत्रकी कामना करनेवाला। —বধূ स्त्री—पतोहू। পুত্রী, পুত্রিকা स्त्री—কন্যা लड़की। পুত্রীয় (-अ) वि—पुत्र सम्बन्धी।

পুঁথি, পুথি स—पोथी, हाथकी लिखी पुस्तक।

পুদিনা स—पुदीना।

পুনরপি क्रि, वि—আবারও फिर, फिर भी।

পুনরায় क्रि वि—আবার फिर, पुन.।

পুনরুত্থান (पुनरुत्थान) सं—फिरसे उठना, मृत्युके बाद फिर जीवित होना।

পুনর্বার क्रि वि=পুনরায়। [पुनर्जन्म।

পুনর্ভব (-अ) वि—फिरसे उत्पन्न। सं—

পুনর্ভূ स्त्री—दो बार विवाहिता स्त्री।

পুনর্যাত্রা स—प्रत्यागमन, लौट आना (জগন্নাথের—)।

পুনশ্চ (-अ) क्रि वि—আবার पुन, फिर।

পুব, পূব, পূর্ব सं—पूब दिशा। वि—पूर्व दिशा का, पूर्वी (পূর্ব পাকিস্তান, পূর্ব পাঞ্জাব)। পুবে, পূবে वि—पूरबैया (—হাওয়া)।

পুরঃসর (पुरस्सर) वि अग्रवर्ती। क्रि वि—सामने, पूर्वक (প্রণাম—)।

পুরতঃ क्रि वि—सामने, आगे।

পুরদ্বার सं—नगरका फाटक, महलकी ड्योढ़ी।
পুরন (-अ), পুরনো वि—पुराना।
পুরনারী स्त्री अन्त पुरमें रहनेवाली स्त्री।
পুরন্ত (-अ) वि—পরিপুষ্ট पूरा, भरा।
পুরবাসী सं—नगरनिवासी।
পুরা, পুরো वि—पूरा, पूर्ण, भरा। —পুরি क्रि वि—पूरा भरकर, पूर्ण रूपसे।
পুরা क्रि वि—प्राचीन समयमें। सं—पुराना जमाना (—তত্ত, —বিৎ)।
পুরা, পোরা (क्रि परि ६)—पूण होना, भर जाना; पूण करना, भरना, घुसाना, भीतर रखना।
পুরাতত্ত্ব (-त -अ) सं—प्राचीन युगका वृत्तान्त, इतिहास। —বিৎ, —জ্ঞ वि, सं—प्राचीन तत्त्वका जाननेवाला। [जमानेका।
পুরাতন वि—পুরনো पुराना, प्राचीन, पुराने
পুরান (-नो), পুরানো, পুরনো, পোরানো (क्रि परि १२)—पण करना, भरना, पूरा करना (আশা—, লক্ষ টাকা—)।
পুরাবৃত্ত (-अ) स =পুরাতত্ত্ব।
পুরি सं—লুচি पूरी, पूड़ी।
পুরিয়া सं— কাগজের মোড়ক पुड़िया।
পুরীষ सं—विष्ठा मल, गू।
পুরু वि—मोटा, स्थूल (— কাগজ)।
পুরুত सं—पुरोहित, पुजारी। [चलनेवाला
পুরোগ (-अ), পুরোগামী वि—অগ্রগামী आगे
পুরোধাঃ सं—पुरोहित।
পুরোবর্ত্তী वि—सामनेका, आगेवाला।
পুল सं—সেতু, সাঁকো पुल।
পুলক सं—हर्ष, आनद, रोमांच। পুলকিত (-अ) वि—हर्षित। [समोसा।
পুলি सं— এক প্রকার পিঠা एक मिठाई, मीठा
পুলিন सं— তট तीर, नदीका किनारा।
পুলিন্দা सं—বাণ্ডিল, পুঁটলি बडल, पुलिंदा।
পুলিস सं—पुलिस, पुलिसका जिम्मा (পুলিসে দেওয়া)।
পুষা क्रि=পোষা।
পুষ্করিণী सं—পুকুর, সরোবর तालाब।
পুষ্কল वि—प्रचुर, बहुत, पूर्ण।
পুষ্ট (-अ) वि—तैयार, स्थूल; पका या पाला हुआ। পুষ্টি सं—पोषण, समर्थन, मजबूती।
পুষ্প (-अ सं—ফুল फूल। —বৃষ্টি सं—ऊपरसे फूलोंकी वर्षा। —মাস सं—मधुमास वसंत ऋतु। —রাগ सं—পোখরাজ মণি पुखराज। পুষ্পাঞ্জলি स—अंजलि भर फल जो देवता आदिको चढ़ाया जाता है। পুষ্পাসব स —फूलोंका मधु। পুষ্পিত (-अ) वि—फूला हुआ। পুষ্পিতা स्त्री वि—ऋतुमती।
পূগ सं—সুপারি सुपारी।
পূজা, পূজো स —আরাধনা पूजा, उपासना, स्वागत। পূজক सं, वि—पूजा करनेवाला, पुजारी। পূজন स —पूजा, आदर। পূজয়িতা सं, वि =পূজক। পূজাই (-अ) वि—पूजाके योग्य। পূজারী, পূজরী सं—দেবল देव मन्दिरका पुजारी। পূজিত (-अ) वि—অর্চিত जिसकी पूजा की गयी है, सम्मानित। [(পূজিয়াছি কত দেবে)।
পূজা (क्रि परि ६)—पूजा करना, पूजना
পূত (-अ) वि—पवित्र, पाक।
পূতি वि—পচা गन्धयुक्त बदबूदार।
পূতিকা सं—পুঁই শাক एक शाक, पोई।
পূপ सं =পিঠা।
পূব सं=পূব।
পূয় सं=পুঁজ। [है, पूर।
পূর सं—পরিপূরণ पूरण, जो भीतर भरा जाता
পূরণ स—पूरण, भरनेकी क्रिया, समाधान (সমস্যা—), गुणा। পূরক वि—पूरा करने

वाला। स—वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्याको गुणा किया जाय, प्राणायामका प्रथम अंश। পূরিত (-अ) वि—पूर्ण किया हुआ। পূরয়িতা स, वि—पूर्ण करनेवाला।

পূর্ণ (-अ) वि—पूर्ण, पूरा, भरा; अखंड, समूचा, समाप्त; सफल। —কাম वि—जिसकी कामना पूर्ण हुई है। —গর্ভা स्त्री—আসন্ন-প্রসবা जिसका गर्भ पूर्ण हुआ है। —চ্ছেদ सं—যতি पूर्ण विराम पाई। —যৌবন (-अ) वि—पूर्ण युवा। —মাত্রা सं—पूरी मात्रा, समूचा अंश। পূর্ণায়ু सं—पूरी आयु। वि—दीर्घ जीवो। পূর্ণেন্দু स—पूर्ण चन्द्रमा।

পূর্ত (-अ) सं—जनताके हितके लिए तालाव खोदना रास्ता बनाना आदि कार्य (—বিভাগ)।

পূর্ব (-अ) स—पूर्व पुरुष वि पिछला, पीछेका, पहलेका; पूर्व दिशाका (—পাকিস্তান)। —গামী वि—आगे चलने वाला। —জ্ঞান स—पहलेका अनुभव, भविष्यकी घटनाके विषयमें ज्ञान। —তন वि—पहलेका। —রাত্র स—रात्रिका प्रथम भाग। —রাত্রি सं—गत रात्रि, पिछली रात। —লক্ষণ स भविष्य घटनाका चिह्न। —সংস্কার स—पहलेका अभ्यास, पूर्व जन्मका संस्कार। পূর্বাপর वि—আগাগোড়া आदिसे अन्त तकका। পূর্বাপেক্ষা क्रि वि—আগেকার চেয়ে पहलेकी अपेक्षा। পূর্বাভাস सं—जो पहले बतला दिया जाता है, सूचना, भूमिका। পূর্বাবধি क्रि वि—আগে থেকে पहलेसे। পূর্বাহ্ণ (-अ स—दिनका प्रथम अंश।

পৃক্ত (-अ) वि—সং যুক্ত लगा हुआ।

পৃচ্ছা सं—প্রশ্ন जिज्ञासा।

পৃথগন্ন स—परिवारमें जिसकी रसोई अलग पकती है।

পৃথু, পৃথুল वि—स्थूल; विशाल महान्।

পৃষ্ট (-अ) वि—জিজ্ঞাসিত पूछा हुआ

পৃষ্ঠ (-अ) सं—पीठ; पीछेकी दिशा, ऊपरका अंश। —প্রদর্শন सं—পলায়ন चम्पत। —ভঙ্গ (-अ) स—हार कर पलायन।

পৃষ্ঠা सं—पुस्तकके पन्नेका एक पृष्ठ। পৃষ্ঠাঙ্ক (-अ) सं—पुस्तकके पृष्ठकी क्रमिक संख्या।

পেঁকো वि—পাঁক-যুক্ত कीचड़दार; कीचड़सा।

পেখম सं—मोरकी फैलायी हुई दुम (-ধরা)।

পেঁচ (पच), প্যাঁচ स—পাক मरोड़, घुमाव, पेंच; कुटिलता, कपट, धोखा; समस्या; संकट। পেঁচাও, পেঁচোয়া, পেঁচালো (पं-) वि—कुटिल; जटिल; पेचदार

পেচক, পেঁচা (पँचा), প্যাঁচা स—उल्लू। स्त्री—পেচকী, পেঁচী।

পেঁচান (पँचानो), পেঁচানো (क्रि परि १०) —পাকানো वटना, लपेटना; जटिल करना।

পেঁচো स—एक कल्पित देवता, कहा जाता है कि उसके असरसे बच्चोंको मिरगीका रोग हो जाता है (পেঁচোয় পাওয়া)।

পেছু स—पीछा (—নেওয়া, पीछा करना)।

পেঁজা (क्रि परि ५)=পিঁজা।

পেজী वि—पृष्ठोंवाला (ষোল—)।

পেট सं—उदर, पेट, गर्भ; मन। —আঁটা क्रि—मल कठिन होना। —কামড়ানো क्रि—पेटमें दर्द होना। —নরম হওয়া, —নামানো क्रि—पतला दस्त होना। —ফাঁপা क्रि पेटमें वा भर जाना। —ভরা क्रि—अधिक भोजनसे पेट भर जाना। —রোগা वि—अजीर्ण रोगी। —হওয়া क्रि—गर्भ होना। পেটের অসুখ स—पेटकी बीमारी, उदरामय पतला दस्त।

পেটের কথা सं—दिलकी बात।

পেটরা सं– पिटारा, बाकस, पेटी।

পেটা (क्रि परि ५) —পিটা पीटना, ठोंकना। वि पीटकर गढा हुआ (—লোহার কড়া); जो ठोंक कर बजाया जाता है (—ঘড়ি)।

পেটাই सं—पिटाई। [वशीभूत।

পেটাও, পেটোয়া वि—अधीन, आज्ञाकारी,

পেটান (क्रि परि ११)= পিটান। [हिस्सा।

পেটি सं—पेटी, कमरबंद; मछलीके पेटका

পেটুক वि—पेटू, भोजन-प्रिय।

পেট্রোল सं- पेट्रोल एक तेल petrol

পেড়া (पैडा), প্যাড়া सं—पेड़ा, एक मिठाई।

পেড়াপীড়ি सं –পীড়াপীড়ি।

পেণ্টুলুন सं—पाजामा, इजार pantaloon

পেত্নী, পেত্নী स्त्री—प्रेतनी, भूतनी; मैली-कुचैली बदसूरत औरत।

পেতি वि—तुच्छ, हीन।

পেতে सं—ছোট চুবড়ি छोटी टोकरी।

পেন सं—কলম कलम pen

পেনশন सं—निवृत्ति-वेतन, पेन्शन pension

পেনসিল सं—पेन्सिल pencil

পেঁপে सं पपीता। [वस्तु, पेय।

পেয় (-अ) वि—पीने योग्य। सं—पीनेकी

পেঁয়াজ सं—পিয়াজ प्याज।

পেয়াদা सं—प्यादा, हरकारा।

পেয়ার, পেয়ারা, পেয়ারী—পিয়ার देखो।

পেয়ারা सं—अमरूद।

পেয়ালা सं—পিয়ালা प्याला।

পেরু सं—पेरू, मुर्गीसी एक चिडिया।

পেরন (नो), পেরনো (क्रि परि १०)—पार होना, व्यतीत होना।

পেরেক सं—कील, कँटिया।

পেলব वि—कोमल, लघु।

পেশ सं—সম্মুখে স্থাপন पेश।

পেশল वि—सुंदर, कोमल।

পেশা सं व्यवसाय, पेशा। —কার, —কর, सं, वि—वेश्या। —দার वि—पेशेवर, व्यवसायी। —দারী वि—पेशा सम्बन्धी, व्यापारिक। [या गाँठ।

পেশী, পেশি सं—शरीरके भीतर मांसकी गुत्थी

পেশোয়াজ सं—नाचनेवालीका ढोला लहगा।

পেষণ सं—দলন, বাটা पीसना, चूर्णन। পেষণী सं—लोढ़ा; चक्की। পেষিত (-अ) वि—पीसा हुआ। পেষা क्रि, পেষাই सं—পিষা देखो।

পেস্ত सं—पिस्ता।

পৈতা (पइता), (-তে) सं—जनेऊ।

পৈতামহ (-अ) वि—पितामह सम्बन्धी।

পৈতৃক वि—बपौती।

পৈত্তিক वि—पित्त सम्बन्धी।

পৈশাচ वि—पिशाच सम्बन्धी। পৈশাচিক वि—पिशाच सम्बन्धी, पिशाचका-सा।

পৈশুন, পৈশুন্য (-अ) सं—निंदा-प्रचार, चुगलखोरी। [ভাস্কর—)।

পো सं—पुत्र, लड़का, बेटा (ঠাকুর—, देवर;

পোঁ सं—बंसीका शब्द, सहनाईका धारावाही सुर; दूसरेका अनुयायी होना या हांमें हाँ मिलाना।

পোকা सं—कीड़ा, कीट।

পোক্ত (-अ) वि—শক্ত मजबूत, अनुभवी।

পোখরাজ सं—পুষ্পরাগ पुखराज।

পোঁছ, (-চ) सं—লেপ लेप (এক—রং); पोंछना (ঝাড়—)।

পোঁছা, পোঁছানো (क्रि परि ६)—পুঁছা देखो।

পোঁটলা सं—বড় পুঁটলি गठरी, गट्ठर।

পোঁটা सं— শিকনি नाकका बलगम; मछलीकी आँत।

পোড় सं—दहन, दाह (—খাওয়া)।

পোড়া (क्रि परि ६)—जलना, दग्ध होना। वि—जला हुआ, दग्ध (—কাঠ, —কপাল)।

পোড়ান (-नो), পোড়ানো (क्रि परि १२)— পুড়ান देखो।

পোড়ানে वि—जलाने या सताने वाला।

পোত सं—नाव, जहाज (অর্ণব—)। পোতাধ্যক্ষ (-अ) सं—जहाजका कप्तान या चालक।

পোঁত सं—घरके खंभेका जमीनमें गाड़ा हुआ अंश। [फर्श तक नींव।

পোতা, পোঁতা सं—बाहरी जमीनसे मकानकी

পোঁতা (क्रि परि ६)—প্রোথিত করা, গাড়া गाड़ना, जमीनमें बाँस आदिका कुछ हिस्सा गाड़ना (খুঁটি—); रोपना (গাছ—)। वि—প্রোথিত वि—गाड़ा हुआ।

পোদ सं—एक उपाधि एक जाति।

পোদ্দার सं—सराफ, सुनार।

পোদ্দারি सं—सराफी।

পোনা सं—रोहू आदि बड़ी मछलीका बच्चा। —মাছ सं—रोहू आदि मछली।

পোয়া सं—पाव, चौथाई। —বারো स— सतरंजका एक दाव; (व्यंगमें) सौभाग्य।

পোয়াতী स्त्री—जच्चा, प्रसूति।

পোয়ান (-नो) (क्रि परि १४)=পোহান।

পোয়াল सं—खड़, বিচালি पुआल।

পোরা, পোরান—পুরা, পুরান देखो।

পোলাও सं—পলান্ন पुलाव।

পোলো सं—পলো।

পোশাক, (-কা-) सं—পরিচ্ছদ पोशाक। পোশাকী वि—भद्र समाजमें जानेके लिए पहनने योग्य (—কাপড়)।

পোষ सं—पोस, पालनेवालेके वशमें रहना (কুকুর—মানে)।

পোষড়া स—पूस महीनेका त्योहार।

পোষণ सं—पुष्टि, पालन, वर्धन। পোষক वि— पालनेवाला, पुष्ट करनेवाला (শরীর—); सहायक। পোষকতা स—समर्थन, सहायता।

পোষণীয়, পোষ্য (-अ) वि—पोषण-योग्य, पालने लायक। পোষ্য सं—परिवारके लोग जिनका पालन किया जाता है (—বর্গ)।

পোষা (क्रि परि ६)—पोसना, पालन करना (পাখি—, ছেলে—)।

পোষান (-नो), পোষানো (क्रि परि १४)— प्रयोजनके अनुरूप होना, पोसाना, पटरी बैठना।

পোষ্টাই वि—शरीरकी पुष्टि करने वाला पुष्टई।

পোষ্ট, (পোস্ট) सं—डाक (—কার্ড, —মাষ্টার)।

পোস্ত (-अ) सं—पोस्ता। —দানা सं— पोस्तेका दाना।

পোস্তা सं—घाट, গঞ্জ হাট, सट्टी, गंज पुश्ता।

পোহান (-नो), পোহানো (क्रि परि १४)— পোয়ান प्रभात होना; पौ फटना (রাত—); तापना (রোদ—, আগুন—); सहना (হাঙ্গামা—)।

পৌঁছা (पउंछा) (क्रि परि १), পৌঁছান (-नो), পৌঁছানো (क्रि परि १५)—पहुँचना, उपस्थित होना, पहुँच पाना (অত উঁচুতে হাত পৌঁছায় না); पहुँचा देना (তাকে বাড়ি পৌঁছিয়ে দাও)।

পৌত্তলিক (पउत्तलिक) वि—मूर्ति-पूजक। পৌত্তলিকতা स—मूर्तिपूजा। [स्त्री—पोती;

পৌত্র (-अ) स—पोता, पुत्रका पुत्र। পৌত্রী

পৌনঃপুনিক वि—बारबार होनेवाला। स—वह दशम लव जिसमें एकही अंक बारबार आता है recurring.

পৌনে वि—चौथाई कम, पौन (—চার)।

পৌর (-अ) वि—पुर या नगरमें उत्पन्न; पुर सम्बन्धी।

পৌরুষ सं—पुरुष-सा उद्यम, पराक्रम, साहस। পৌরুষেয় (-अ) वि—आदमीका किया हुआ, पुरुष सम्बन्धी।

পৌরোহিত্য (-अ) सं—পুরুতগিরি पुरोहितका काम, पुरोहिताई।
পৌর্বদেহিক वि—पूर्व जन्मका।
পৌর্বাপর্য্য (-अ) सं—पूर्वापर सम्बन्ध, धारावाहिक भाव, क्रम, सिलसिला।
পৌর্বাহ্ণিক वि—पूर्व दिनका।
পৌষ सं—पूसका महीना। পৌষা, পৌষে वि—पूसमें उत्पन्न।
প্যাঁ सं—बच्चोंके रोनेका शब्द चेंचें मेंमें।
প্যাচপ্যাচ=পচপচ।
প্যাঁচ, প্যাঁচা—পেঁচ, পেঁচা देखो।
প্যানপ্যান सं—रुलाईके साथ माँग, घेघे मेंमे। প্যানপেনে वि—रोते हुए माँगने वाला।
প্যারা सं—लेखका अनुच्छेद, प`रा paragraph
প্যারাশুট सं—हवाई जहाजसे कूद कर उतरनेका छातानुमा यन्त्र, प`राशूट। —বাহিনী सं—छतरी फौज।
প্যারী वि—प्रिया, प्यारी। स्त्री—राधिका।
প্যাসেঞ্জার सं—सवारी, यात्री, पसिंजर।
প্রকট वि—स्पष्ट, जाहिर। প্রকটন सं—प्रकाशन, प्रकट करना। প্রকটিত (-अ) वि—प्रकट किया हुआ।
প্রকম্প (-अ), প্রকম্পন सं—अधिक कंपन, कँपकपी। প্রকম্পিত (-अ) वि—अधिक कंपित।
প্রকার सं—श्रणी, जाति, भद, किस्म, उपाय (কি প্রকারে ?)। প্রকারান্তর सं—दूसरा प्रकार (প্রকারান্তরে)।
প্রকাশ্য (-अ) वि—प्रकाशित करने योग्य, लोगोंकी दृष्टिके भीतरका (—স্থান); लोगोंके समक्ष (—নিন্দা)।
প্রকীর্ণ (-अ) वि—ছড়ানো बिखेरा हुआ, विविध।
প্রকৃত (-अ) वि—सत्य, यथार्थ, सच्चा, असली, प्रस्तावित। —পক্ষে क्रि वि—वस्तुतः असलमें।
প্রকৃতি सं—स्वभाव, चरित्र, धर्म, प्रकृति, दुनिया; प्रजा, नारी। —গত (-अ) वि स्वाभाविक।—স্থ (-अ) वि—स्वाभाविक अवस्थामें स्थित।
প্রকৃষ্ট (-अ) वि—श्रेष्ठ उत्तम।
প্রকোপ सं—उग्रता, प्रबलता तेजी, अत्यत क्रोध। প্রকোপিত (-अ) वि—क्रोधित।
প্রকোষ্ঠ (-अ) सं—কক্ষ, घर कमरा, कोठरी, कोहनीसे कलाई तक हाथ।
প্রক্রিয়া सं—किसी कार्यकी सिद्धिके लिए विशेष प्रकारका अनुष्ठान (তান্ত্রিক—, রাসায়নিক—)।
প্রখর वि—तीक्ष्ण, तेज (—রৌদ্র)।
প্রগতি सं—अग्रगति, क्रमिक उन्नति।
প্রগল্ভ (-अ) वि—निडर, ढीठ, वेहया, निस्संकोच बात करनेवाला। स्त्री—প্রগল্ভা।
প্রচুর वि—यथेष्ट, काफी।
প্রচেষ্টা सं—प्रयास, अनेक आदमियोंकी चेष्टा।
প্রচ্ছদ सं—आवरण। —পট सं—मलाट पुस्तककी जिल्दके ऊपरका कागज या कपड़ा।
প্রজনন सं—सतान उत्पादन, गभधारण, जन्म।
প্রজা सं—प्रजा, रिआया, रैयत, सतान, जनता। —তন্ত্র सं—जनताके प्रतिनिधियोंके द्वारा राज्य-परिचालन। —পতি स—सृष्टि करनेवाला ब्रह्मा; तितली।
প্রজ্ঞান सं—विशेष ज्ञान, सकेत, चिह्न।
প্রণত (-अ) वि—प्रणाम करनेवाला, प्रणाम करता हुआ।
প্রণাম स—बडे और पूज्य व्यक्तिके चरणों पर या जमीनमें सिर रखकर प्रणाम अथवा अपने सिर पर हाथ जोड़कर नमस्कार।
প্রণামী सं—प्रणाम करते समय दिया जानेवाला

घन वस्त्र आदि (ঠাকুর—, শঙ্খ—, শাড়ীর —কাপড়)।
প্রণালী सं—पद्धति, रीति, शैली ; नाली जल- [डमरुमध्य।
প্রণাশ सं—मृत्यु मौत।
প্রণিপাত सं—धरती पर माथा टेक कर प्रणाम।
প্রণোদিত (-अ) वि—प्रेरित प्रवर्तित।
প্রতি उप—विरोधी विपरीत बदला आदि अर्थ-वाचक उपसर्ग। —কার सं—उपाय निवारण (রোগের—, বিপদের—) । —কূল वि—विरुद्ध, विपरीत। —কৃতি सं तसवीर, मूर्ति। —ক্রিয়া सं—विपरीत क्रिया, बदला, प्रयोगके बाद जो क्रिया होती है (ঔষধের—)। —ঘাত सं—बदलेमें आघात, वार करनेवाले पर वार। —জ্ঞাত (-अ) वि—जिस विषयमें प्रतिज्ञा की गयी है। —নিবৃত্ত (-अ) वि—लौट आया हुआ। —নিয়ত क्रि वि—निरतर, सदा। —পক্ষ (-अ) सं—विरुद्ध पक्ष, प्रतिवादी, शत्रु। —পত্তি सं—प्रतिष्ठा, इज्जत (—শালী)। —পদে क्रि वि—पग पगमें। —ফল सं—बुरे कामका कुफल (পাপের—), बदला सजा। —ফলন सं—दर्पण आदिमें पतित प्रकाशका दूसरी ओर लौट आना। —ফলিত वि—प्रतिबिम्बित। —বচন सं—प्रत्युत्तर, जवाब का जवाब। —বাসী सं—पड़ोसी। —বিধান सं—प्रतिकार, निवारण ; बदला, प्रतिशोध। —বিধিৎসা सं—प्रतिकार करनेकी इच्छा। —বেশ सं—पड़ोस ; चारों ओरके विषय। —বেশী सं—पड़ोसी। —ভাত (-अ) वि—प्रकाशित, ज्ञात। —ভূ सं—प्रतिनिधि, जमानती। —লোম वि—विपरीत, उलटा (—বিবাহ, निम्न वर्णके पुरुषके साथ उच्च वर्णकी स्त्रीका विवाह)। —শব্দ (-अ) सं—पर्याय, गूंज। —শ্রুতি सं—प्रतिज्ञा। —ষিদ্ধ (-अ) वि—निषिद्ध। —ষ্ঠান सं—समिति, स्थायी सभा। —ষ্ঠাপন सं—संस्थापन। —সংহার सं—लौटा लेना, निवारण। —সরণ सं—किरणकी वक्रता प्रकाशक मोड़। —হত (-अ) वि—बाधाप्राप्त, रोका हुआ। —হনন सं—हत्यारेकी हत्या। —হন্তা वि, सं—हत्यारे की हत्या करने वाला। —হিংসা सं—प्रतिशोध, बदला।
-প্রতিম वि तुल्य, सदृश (সোদর-)।
প্রতীক सं—नमूना, चिह्न।
প্রতীকার सं =প্রতিকার।
প্রতুল वि—प्रचुर ; वृद्धि, बहुतायत।
প্রত্ন (-अ) वि—प्राचीन ; प्राचीनकाल सम्बन्धी। —তত্ত্ব (-अ), —বিদ্যা सं—पुरातत्त्व। —তাত্ত্বিক सं पुरातत्त्वका जाननेवाला।
প্রত্যক্ वि—आन्तर भीतरी, पीछेका ; पाश्चात्त्य। [(অঙ্গ—)।
প্রত্যঙ্গ (-अ) सं—अवयव, अंगका अंग
প্রত্যবায় सं—पाप, दोष।
প্রত্যভিবাদন सं—नमस्कारके उत्तरमें नमस्कार।
প্রত্যর্পণ सं—ফেরত लौटाना, वापसी।
প্রত্যহ (-अ) क्रि वि—प्रतिदिन, रोज।
প্রত্যাখ্যান सं—অস্বীকার उपेक्षा, त्याग।
প্রত্যাদেশ सं—देवताका आदेश। প্রত্যাদিষ্ট (-अ) वि—देवताका आदेश पाया हुआ।
প্রত্যানয়ন सं—ফিরাইয়া আনা लौटा लाना।
প্রত্যাশা सं—कृत कर्मके फल रूपसे या दूसरेसे कुछ पानेकी आशा। প্রত্যাশী वि—आकांक्षी।
প্রত্যাসন্ন (-अ) वि—आसन्न, समीपका।
প্রত্যাহত (-अ) वि—बाधाप्राप्त, रोका हुआ।
প্রত্যুক্তি सं—उत्तर, जवाब।
প্রত্যুত (-अ) अ—परन्तु, बल्कि।

প্রত্যুত্তর सं—उत्तरका उत्तर।
প্রত্যুত্থান (प्रत्युत्थान) सं—आये हुए व्यक्तिके सम्मानार्थ खड़ा होना।
প্রত্যুৎপন্ন (-अ) वि—ठीक समय पर उत्पन्न। —মতি, —বুদ্ধি स—उपस्थित बुद्धि उसी क्षण कर्त्तव्य निश्चय करनेकी बुद्धि। वि—वैसी बुद्धि वाला। —মতিত্ব (-अ) स—वैसी बुद्धि प्रयोग करनेकी शक्ति।
প্রত্যুদাহরণ सं—दृष्टान्तके विरुद्ध दृष्टान्त।
প্রত্যুদ্গমন सं—मान्य व्यक्तिके स्वागतके लिए आगे आगमन या जाते हुए उनके साथ साथ कुछ दूर तक गमन।
প্রত্যুপকার सं—उपकार करनेवालेका उपकार।
প্রথিত (-अ) वि—प्रसिद्ध, नामी। —নামা, —যশা वि—नामवर, मशहूर, विख्यात।
-প্রদ प्रत्य—देनेवाला (সুখ—)।
প্রদীপ सं—पিদিম दीया, दीपक।
প্রদৃপ্ত (-अ) वि—प्रकाशित; घमंडी ढीठ।
প্রদেয় (-अ) वि—दानके योग्य।
প্রপিতামহ (-अ) सं—परदादा, दादाका बाप। প্রপিতামহী स्त्री—दादाकी माँ।
প্রপৌত্র (-अ) सं—पोतेका पुत्र। প্রপৌত্রী स्त्री—पोतेकी पुत्री।
প্রবণ वि—आसक्त, उन्मुख, झुका हुआ (স্নেহ—), आसानीसे किसी अवस्थाको प्राप्त होनेवाला (ভাব—, ভঙ্গ—)।
প্রবহ (-अ) सं—प्रवाह, वायु। —মাণ वि—बहनेवाला। প্রবহণ सं—प्रवाहित होना, बहना।
প্রবাদ सं—চলতি কথা कहावत, मसल, [जनश्रुति।
প্রবাল सं—मूँगा, विद्रुम, सामुद्रिक प्राणी-विशेषसे उत्पन्न प्रस्तर-सदृश पदार्थ coral (लाल प्रवाल एक रत्न है), अंकुर। —দ্বীপ सं—प्रवाल कीटजात पदार्थसे उत्पन्न द्वीप।
প্রবাস सं—विदेशमें निवास; विदेश। প্রবাসী सं—विदेश-वासी। स्त्री—প্রবাসিনী।
প্রবাহ सं—स्रोत, अविच्छिन्न गति (বায়ু—, বিদ্যুৎ—)। (पद्यमें—প্রবাহিল)। প্রবাহিত (-अ) वि—प्रवाहयुक्त। প্রবাহী वि—बहनेवाला, प्रवहमाण। প্রবাহিণী स्त्री—नदी।
প্রবিষ্ট (-अ) वि—भीतर गत, घुसा हुआ।
প্রবীণ वि—वृद्ध, बहुदर्शी, अनुभवी। स्त्री—প্রবীণা।
প্রবীর स—श्रेष्ठ वीर।
প্রবুদ্ধ (-अ) वि—ज्ञानप्राप्त, निद्रासे जगा [हुआ।
প্রবৃত্ত (-अ) वि—नियुक्त, संलग्न, उद्यत, रत, आरब्ध।
প্রবৃত্তি सं—स्पृहा, अभिरुचि, मनका झुकाव (কর্ম্মে—, ভোগে—)। —হওয়া क्रि—इच्छा होना। —থাকা क्रि—प्रवृत्ति रहना। —মার্গ सं—काम्य कर्मका अनुष्ठान, सांसारिक विषयों या भोगोंका ग्रहण।
প্রবৃদ্ধ (-अ) वि—बहुत वृद्ध या वृद्धि-प्राप्त।
প্রবেশ सं—ভিতরে গমন भीतर जाना, घुसना, पैठना (গৃহে—করা); जानकारी (দুরূহ তত্ত্বে—করা)। (पद्यमें—প্রবেশিল)। প্রবেশক, প্রবেষ্টা वि—सं—प्रवेश करने या कराने वाला।
প্রবেশিকা स—जिससे प्रवेश किया जाय, प्रवेश-पत्र, टिकट, विश्वविद्यालयमें प्रविष्ट होनेकी परीक्षा, प्राथमिक पुस्तक। প্রবেশিত (-अ) वि—जिसे प्रविष्ट कराया गया है।
প্রবেশ্য (-अ) वि—प्रवेश-योग्य।
প্রবোধ स—সান্ত্বনা, আশ্বাস ढाढ़स, धीरज, दिलासा (শোকে—দেওয়া), ज्ञान, जागना।
প্রবোধন सं—ढाढ़स देना, ज्ञान देना, जागरित करना, उत्तेजित करना। প্রবোধিত (-अ) वि—जिसे दिलासा दिया गया है।

প্রব্রজ্যা स—सन्यास सन्यासी हो कर भ्रमण।

প্রভঞ্জন स—বড় आँधी, तूफान, वायु।

প্রভব स—उत्पत्ति, जन्म, कारण, प्रभाव

প্রভা सं—दीप्ति, चमक, उज्ज्वलता।

প্রভাকর सं—সূর্য सूर्य, दिवाकर।

প্রভাত स—প্রাতঃ, সকাল सुबह, सवेरा। প্রভাতী, প্রভাতকালীন वि—सुबहका (—সঙ্গীত)।

প্রভাব स—শক্তি सामर्थ्य प्रभुत्व, असर।

প্রভিন্ন वि विभिन्न पृथक; प्रकाशित।

প্রভু सं—মনিব मालिक, स्वामी, राजा, ईश्वर, महात्मा। [निकला हुआ।

প্রভূত (-अ) वि—प्रचुर, अत्यंत, उत्पन्न,

প্রভৃতি स—आदि इत्यादि, वगैरह।

প্রমা स—निश्चय ज्ञान।

প্রমাই सं—পরমায়ু आयु।

প্রমাণ सं—सबूत, विश्वासका हेतु प्रदर्शन (—দেওয়া); परिमाण (পর্বত—); पूरी नापका (—মূর্তি)। প্রমাণতঃ क्रि वि—प्रमाणके अनुसार। —পঞ্জী स—किसी प्रसंगके प्रमाण स्वरूप ग्रंथोंकी सूची। —সই वि—पूरी नापका (—কাপড়, —ওজন)। —সাপেক্ষ (-अ) वि—जिसका प्रमाण आवश्यक है। —সিদ্ধ (-अ) वि—प्रमाणसे सिद्ध। প্রমাতা सं—प्रमाण करनेवाला, ज्ञाता। প্রমাণিত (-अ), প্রমাণীকৃত (-अ) वि =প্রমাণসিদ্ধ।

প্রমাতামহ (-अ) स—नानाका बाप, परनाना। প্রমাতামহী स्त्री—नानाकी माँ।

প্রমাদ स—भ्रम, भ्रांति, विस्मृति।

প্রমিত (-अ) वि—प्रमाणित, ज्ञात, निश्चित।

প্রমিতি सं—निश्चय ज्ञान। [मुखिया।

প্রমুখ प्रत्य—आदि वगैरह। वि सं—प्रधान;

প্রমুখাৎ क्रि वि—মুখ হইতে, जबानि मुखसे (শুনা—শোনা)।

প্রমুদিত (-अ) वि—आनन्दित, हर्षित, प्रसन्न।

প্রমেয় (-अ) वि—प्रमाणित करने योग्य, अवधार्य, परिमेय। स—प्रमाणित करने योग्य विषय। [बहुमूत्र रोग।

প্রমেহ (-अ) सं—धातुक्षय रोग, सूजाक,

প্রমোদ स—विलास आमोद-प्रमोद (—কানন, —ভবন)। প্রমোদন सं—हर्ष उत्पादन।

প্রমোদিত (-अ) वि—हर्षित, आनन्दित।

প্রযত (-अ) वि—संयत, नियमित, पवित्र।

প্রযত্ন (-अ) सं—प्रयास, चेष्टा, उद्यम।

প্রয়াগ सं—नदियोंका संगम-स्थान (দেব—, বিষ্ণু—); इलाहाबादमें गंगा और यमुना का संगम-स्थान, तीर्थराज।

প্রয়াণ स—प्रस्थान, गमन, यात्रा। প্রয়াত (-अ) वि—प्रस्थित, गत।

প্রয়াস सं—प्रयत्न, परिश्रम। প্রয়াসী वि—प्रयत्नशील, अभिलाषी।

প্রযুক্ত (-अ) वि—प्रयोग किया हुआ, नियुक्त, सम्मिलित, उल्लिखित, अर्पित। क्रि वि—के कारण (অসুস্থতা—, रोगके कारण; বিদ্বেষ—, द्वेषके कारण)।

প্রযোক্তা सं—प्रयोगकर्ता, प्रयोजक, अनुष्ठाता।

প্রয়োগ स—व्यवहार, इस्तेमाल; नियोग, उल्लेख, उदाहरण। [प्रेरक।

প্রযোজক सं—प्रयोक्ता, संचालक, प्रवर्तक,

প্রয়োজন स—দরকার आवश्यकता; हेतु, कारण प्रयोग करना, उद्देश्य। প্রয়োজনীয় (-अ) वि—দরকারী आवश्यकीय।

প্রয়োজ্য (-अ) वि—प्रयोग-योग्य।

প্ররোচক सं—प्रेरणा या उत्तेजना देनेवाला, उसकाने या उभाड़ने वाला। वि—उत्तेजक।

প্ররোচন, প্ররোচনা स—प्रेरणा, उत्तेजना, उत्साहदान, नियोजन, प्रवर्तन। প্ররোচিত (-अ) वि—उत्साहित, उसकाया हुआ।

প্ররোহ (-अ) सं—अंकुर, कली, कोंपल, कल्ला ; उगना, जमना।

প্রলপন सं—प्रलाप बकना।

প্রলম্ব (-अ) सं—लटकी हुई वस्तु, डाली, टहनी, माला। [लटकता हुआ।

প্রলম্বন सं—लटकना। প্রলম্বিত (-অ) वि—

প্রলয় सं—संसारका विनाश, कल्पान्त। প্রলয়ংকর, (-ঙ্কর) वि—प्रलयकारी, भयंकर। स्त्री—প্রলয়ংকরী, (-ঙ্করী)।

প্রলাপ सं—व्यर्थकी बातें, निरर्थक वाक्य (—বকা, পাগলের—, জ্বরের—)।

প্রলীন वि—लयप्राप्त, तल्लीन, तन्मय।

প্রলুব্ধ (-अ) वि—बहुत लालची, लोभी ; लोभाकृष्ट।

প্রলেপ सं—लेप, उबटन (কাদার—, ঔষধের—, —দেওয়া, —মাখানো, —লাগানো)।

প্রলোভন सं—लोभ उत्पादन, लालच (অর্থের—) ; लोभजनक विषय (—হইতে দূরে থাকা)। প্রলোভিত (-अ) वि—प्रलोभनके वशीभूत, जो ललचाया गया है।

প্রশংসক सं, वि—प्रशंसा करनेवाला, सराहनेवाला। প্রশংসন सं—प्रशंसा करना। প্রশংসনীয় (-अ) वि—प्रशंसाके योग्य। প্রশংসিত (-अ) वि—प्रशंसा-प्राप्त। প্রশংসা सं—तारीफ, बड़ाई, गुण-वर्णन। প্রশংসার্হ (-अ) वि=প্রশংসনীয়।

প্রশমন सं—शान्त करना, निवारण, शान्ति (রোগের —)। প্রশমিত (-अ) वि—ह्रास-प्राप्त, शान्त, निवारित (জ্বর—হইয়াছে)।

প্রশস্ত (-अ) वि—उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, योग्यतम (—কাল) ; प्रशंसनीय, उदार (—হৃদয়), चौड़ा (—রাস্তা) ; विशाल।

প্রশস্তি सं—प्रशंसा, स्तुति।

প্রশস্য (-अ) वि =প্রশংসনীয়।

প্রশাখা सं—छोटी शाखा, टहनी, डाली।

প্রশান্ত (-अ) वि—स्थिर, धीर, चंचलता-रहित (—চিত্ত, —মূর্তি, —মহাসাগর)।

প্রশিষ্য (-अ) सं—शिष्यका शिष्य।

প্রশ্ন (प्रस्न-अ) सं—प्रश्न, जिज्ञासा (—করা, प्रश्न पूछना)। —সমাধান सं—प्रश्नका उत्तर या मीमांसा। প্রশ্নোত্তর सं—प्रश्न और उत्तर।

প্রশ্রয় (प्रस्रय) सं—आशकारा, नाई बढ़ावा, सिर चढ़ाना, बच्चोंको उनकी प्रार्थित वस्तु दे दे कर उनकी आदत बिगाड़ना (—দেওয়া) ; सस्नेह व्यवहार, नम्रता।

প্রশ্বাস सं—फेफड़ोंमें वायु ग्रहण।

প্রষ্টব্য (-अ, वि—जिज्ञास्य पूछने योग्य।

প্রষ্টা सं—पूछनेवाला।

প্রসক্ত (-अ) वि—आसक्त, अनुरक्त। প্রসক্তি सं—आसक्ति, अनुरक्ति, प्रेम, प्रसंगोपात्त विषय (অতি— सं—लक्षणका लक्ष्यसे बाहर भी गमन अतिव्याप्ति।

প্রসঙ্গ (प्रशंग-अ) सं—प्रस्ताव, आलोच्य विषय, सम्बन्ध, वार्ता, आसक्ति, अध्याय, अवसर (কথা-প্রসঙ্গে)। —ক্রমে, প্রসঙ্গতঃ क्रि वि—प्रसंगक्रमसे, संयोगसे।

প্রসন্ন वि सन्तुष्ट, खुश, अनुकूल (—হওয়া, প্রভুরে—করা, —দৃষ্টি) ; शान्त और प्रफुल्ल ; निर्मल (—সলিলা নদী)।

প্রসব सं—जनन, गर्भविमोचन, जन्म, उत्पत्ति, बच्चा, सन्तान, फल, फूल। —করা क्रि—बच्चा जनना, ब्याना। —করান क्रि—बच्चा जनाना, प्रसव कराना। —হওয়া (—हवा) क्रि—प्रसव होना। (ফল—করা क्रि—फल होना। আসন্ন-প্রসবা स्त्री—जिस स्त्री या

स्त्री-प्रयुक्त असी — बच्चा होनेवाला है)। प्रसविता सं—जनयिता, पिता। स्त्री—प्रसवित्री प्रसविनी। [फैलना।
प्रसर सं—विस्तार, फैलाव। प्रसरण सं—
प्रसाद सं—प्रसादी, पूज्य व्यक्तिका जूठा प्रसाद; प्रसन्नता; अनुग्रह (महा— स — देवीको चढ़ाया हुआ मांस प्रसाद)। प्रसादात् क्रि वि—अनुग्रहके फल-स्वरुप।
प्रसाधन सं—शरीरकी शोभा सम्पादन, वस्त्र आभूषण आदि सम्पादन। प्रसाधक वि, सं—सजानेवाला। प्रसाधनी सं—चिरुनि, कँघूई कघी, सजानेकी सामग्री। प्रसाधित (-अ) वि—सजा सजाया, सम्पादित।
प्रसार स—विस्तार फैलाव पसार, सचार, गमन। प्रसारण स—विस्तार करना फैलाना, पसारना बढ़ाना (हस्त—करा, हाथ फैलाना या पसारना); प्रचार करना। प्रसारित (-अ) वि—फैलाया हुआ, पसारा हुआ। प्रसारी वि फैलानेवाला, व्याप्त, विस्तृत (दूर—)। प्रसार्य (-अ) वि—फैलाने योग्य। प्रसार्यमाण वि—जो फैल रहा है।
प्रसिद्ध (-अ) वि—विख्यात, मशहूर, नामी, बहुजन-विदित। प्रसिद्धि स—ख्याति, शोहरत, जनश्रुति (लोक—)।
प्रसुप्त (-अ) वि—निद्रित सोया हुआ।
प्रसू वि, स—जननेवाली, माता (प्रकृ—)।
प्रसूत (-अ) वि—उत्पन्न, प्रसव किया हुआ। प्रसूता स्त्री—जच्चा; उत्पन्न कन्या। प्रसूति स्त्री—जच्चा, जननी।
प्रसून स—फूल फूल कुसुम।
प्रसृत (प्रसृत-अ) वि—फैला हुआ, विस्तृत।
प्रस्तर (प्रस्तर) स—पाथर पत्थर। प्रस्तरीभूत (-अ) वि—पत्थरमें परिणत।
प्रस्तुत वि—तयार, उद्यत; बना हुआ।
प्रस्तुति सं—तैयार करनेकी क्रिया, निर्माण।
प्रस्थ (प्रस्थ-अ) सं—एक मान ... चौड़ाई, विस्तार, फैलाव।
प्रस्थ, प्रस्त (-अ) सं—थाना, टा अदद, मद, एक तरह की वस्तुओंका समूह (एक— बिछाना)। [प्रस्थित (-अ) वि गत।
प्रस्थान (प्रस्थान) सं—गमन, यात्रा, प्रस्थान
प्रस्फुट, प्रस्फुटित (प्रस्फुटित-अ) वि—खिला हुआ (—कुसुम)।
प्रस्फुरण सं—स्पंदन, कंपन।
प्रस्रवण (प्रस्रवन) सं—झर्ना झरना, सोता, फुहारा, क्षरण। [मूत्रत्याग (—करा)।
प्रस्राव स—पेशाब, सूत्र; पेशाव करना,
प्रहत (-अ) वि—आघात-प्राप्त, चोट खाया हुआ, बाधा-प्राप्त।
प्रहर स—पहर, तीन घंटेका समय। [प्रहार।
प्रहरण स—अस्त्र-शस्त्र, आयुध, हथियार;
प्रहरी स—पहरेदार। स्त्री—प्रहरिणी।
प्रहसन सं—हास्य-रसात्मक नाटक, दिल्लगी।
प्रहृत (-अ) वि—प्रहार खाया हुआ, घायल।
प्रहेलिका सं—हेयालि पहेली, समस्या।
प्राकार स—प्राचीर चहार-दीवारी।
प्राकृत (-अ) वि—प्राकृतिक; गँवार। सं—एक प्राचीन भाषा। [महाप्रा—)।
प्राक्काल सं—पहलेका समय, पूर्वकाल
प्राक्तन वि—पूर्व जन्मका; पहलेके समयका। स—अदृष्ट, भाग्य, नसीब।
प्राखर्य (-अ) सं—प्रखरता तीव्रता।
प्रागुक्त (-अ) वि—पूर्व-कथित।
प्रागैतिहासिक वि—जिस समय तकका इतिहास जाना गया है उससे पूर्व युगका।
प्राङ्गण स—उठान आँगन, सहन।
प्राङ्मुख वि—पूर्वमुखी।

প্রাচী सं—पूर्व दिशा।

প্রাচীন वि—সেকেলে पुराने जमानेका, वृद्ध।

প্রাচীর सं—পাঁচিল दीवार।

প্রাচুর্য (-अ) सं—अधिकता, बहुतायत।

প্রাচ্য (-अ) वि—पूर्वदेशीय, एशिया भारत या चीन आदि देश सम्बन्धी (—সভ্যতা, —দর্শন)।

প্রাঞ্জল वि—সরল सहज, सुगम।

প্রাঞ্জলি वि—জোড়হাত बद्धांजलि।

প্রাণ सं—পরাণ प्राण, साँस, जीवन। —গতিক वि—जीविका सम्बन्धी, शरीरका। —পণে क्रि वि—जी जानसे। —প্রতিম वि—प्राणतुल्य। —প্রতিষ্ঠা सं—मूर्तिमें मंत्र द्वारा प्राणोंकी स्थापना। —বঁধু सं—प्राणोंके समान प्रिय मित्र। —যাত্রা सं—जीविका-निर्वाह। —সংশয় सं—प्राण नाशकी शंका। প্রাণাত্যয় सं—मृत्यु। প্রাণান্ত (-अ) सं—मृत्यु (—কর)। প্রাণান্ত-পরিচ্ছেদ सं—अत्यंत अधिक परिश्रम या कष्ट। প্রাণেশ, প্রাণেশ্বর सं—प्राणपति, स्वामी, पति या प्रणयीका सम्बोधन।

প্রাণায়াম सं—साँस ग्रहण धारण और त्याग।

প্রাতঃ सं—প্রভাত, সকাল सवेरा। —কাল सं—সকাল বেলা सुबह। —কালীন वि—सुबहका। —কৃত্য (-अ) सं—सुबहके करने योग्य नित्य कर्म, शौच स ध्या-वदन आदि। —প্রণাম सं—सुबहका प्रणाम। প্রাতরাশ, প্রাতর্ভোজন सं—सुबहका भोजन, कलेवा।

প্রাতিকূল্য (-अ) सं—विरुद्धाचरण, शत्रुता, [दुश्मनी]।

প্রাতিভাসিক वि—सत्य न होकर भी सत्य-सा प्रतीत होने वाला (—জগৎ)।

প্রাত্যহিক वि—प्रतिदिनका। (—শিক্ষা)।

প্রাথমিক वि—আদ্য आरम्भकालीन, प्रारम्भिक

প্রাদুর্ভাব सं—आविर्भाव, प्रकट होना, प्रथम प्रकाश, उत्पत्ति, बहुल उद्भव (মশার—)। প্রাদুর্ভূত (-अ) वि—आविर्भूत, प्रकट; उत्पन्न।

প্রাদেশিক वि—प्रदेश-सम्बन्धी (—ভাষা)। প্রাদেশিকতা सं—प्रान्तीयता, एकही भाषाका विभिन्न-प्रदेश-जात विकार।

প্রাধান্য (-अ) सं—श्रेष्ठता; मुख्यता, प्रधानता (—দেওয়া), नेतृत्व; प्रभाव।

প্রান্ত (-अ) सं—अन्त, सीमा, किनारा, सिरा, प्रदेश (সীমা—)। —বর্তী वि—प्रान्तस्थ।

প্রান্তর सं—वृक्षरहित विशाल मदान।

প্রাপণ सं—পাওয়ানো प्राप्त कराना, दिलाना।

প্রাপক वि—प्राप्त करानेवाला।

প্রাপ্ত (-अ) वि—लब्ध पाया हुआ। —কাল सं—उचित समय। वि—मुमुर्षु। —বয়স্ক (-अ) वि, सं—সাবালক बालिग। —যৌবন वि, सं—जवान, युवक। स्त्री—প্রাপ্তযৌবনা।

প্রাবরণ सं—आवरण-वस्त्र, ओढ़ना, चादर।

প্রাবল্য (-अ) सं प्रवलता, शक्तिकी अधिकता। [वर्षाऋतुका]

প্রাবৃট্ सं—वर्षाऋतु। প্রাবৃষ (-अ) वि—

প্রাভাতিক वि—सुबहका।

প্রামাণিক वि—प्रमाण-सिद्ध, विश्वास-योग्य, प्रधान, मुखिया। सं—समाजपति; एक उपाधि।

প্রায় वि—सदृश, तुल्य, समान, बराबर, लगभग; कुछ कम (—মৃত, শেষ হয়েছে)। सं—मृत्युकामनासे उपवास (প্রায়োপবেশন)। [अधिकांश स्थलोंमें]।

প্রায়, প্রায়ঃ, প্রায়শঃ क्रि वि—अकसर;

প্রায়শ্চিত্ত (-अ) सं—पाप-क्षालनके लिए कठोर तप या पुण्यदान, दंड, हरजाना।

প্রায়িক वि—साधारण, लगभग, प्राय या बहुधा होनेवाला।

প্রায়োদ্বীপ सं—উপদ্বীপ तीन ओर पानीसे घिरा हुआ स्थल-भाग।

প্রায়োপবেশন सं—एक व्रत जिसमें भोजन छोड़कर मृत्युकी प्रतीक्षामें बैठे रहते हैं।

প্রারব্ধ (-अ) सं—अदृष्ट भाग्य, किस्मत फलोन्मुख पापपुण्य-संस्कार। वि—जिसका आरम्भ हो गया है। প্রারম্ভ (-अ) सं—आरम्भ।

প্রার্থক सं वि—प्रार्थी, याचक।

প্রার্থন सं—प्रार्थना करना, याचना। প্রার্থনা सं—याचना, आवेदन, विनती। প্রার্থনীয় (-अ), প্রার্থয়িতব্য (-अ) वि—प्रार्थना के योग्य। প্রার্থয়িতা, প্রার্থী सं—प्रार्थी, याचक। প্রার্থিত (-अ) वि—याचित, जिस विषयके लिए प्रार्थना की गयी हो वांछित।

প্রাশন सं—भोजन (অন্ন—)।

প্রাশস্ত্য (-अ) स—प्रशस्तता, श्रेष्ठता, फलाव। [मीमांसक।

প্রাশ্নিক (प्रास्निक) स—प्रश्न पूछनेवाला,

প্রাসাদ सं—हर्म्य इमारत, महल।

প্রাহরিক वि—प्रहर-सम्बन्धी। [पूर्वाह्न।

প্রাহ্ন (-अ) सं—दुपहरके पूर्वका समय,

প্রিয় (-अ) वि—ভালবাসার লোক। प्रिय, प्यारा स्त्री—প্রিয়া (सम्बोधनमें—প্রিয়ে)। —চিকীর্ষা सं—प्रिय कार्य करनेकी इच्छा, शुभ कामना। —চিকীর্ষু वि—शुभेच्छु। —বাদী वि—प्रिय वचन बोलने वाला।

প্রীণন स—प्रीति सम्पादन, हर्षित करना।

প্রীত (-अ) वि—सन्तुष्ट, आनन्दित, हर्षित, खुश। প্রীতি सं—सन्तोष, आनन्द, हर्ष, खुशी, प्यार, प्रेम (—উপহার, —ভাজন)।

প্রীতিভোজ, (-ভোজন) सं—आनन्दके लिए भोज, खुशीकी दावत।

প্রীয়মাণ वि—प्रीतिका अनुभव करने वाला।

প্রেক্ষক वि, सं—दर्शक, निरीक्षक।

প্রেক্ষণ सं—दर्शन, दृष्टि, चक्षु। প্রেক্ষিত (-अ) वि—दृष्ट, देखा हुआ। প্রেক্ষণীয় (-अ) वि—दर्शनीय, देखने योग्य।

প্রেক্ষা सं—दर्शन निरीक्षण, चर्चा, अभिनय नृत्यादिका देखना। প্রেক্ষাগার, প্রেক্ষাগৃহ (-अ) स—रंगालय, नाट्यशाला, मानमन्दिर, वेधशाला observatory. [প্রেতিনী।

প্রেত स—भूत, पिशाच, मृतक प्राणी। स्त्री—

প্রেপ্সু वि—पानेका इच्छुक।

প্রেম सं—ভালবাসা प्रणय, प्रीति, अनुराग, प्यार, मुहब्बत (প্রেমালাপ, প্রেমাশ্রু)। প্রেমিক सं—प्रेमी। स्त्री—প্রেমিকা।

প্রেয় (अ) वि—वांछित, प्रिय।

প্রেয়সী स्त्री—प्रियतमा, प्रमिका।

প্রেরক वि—भेजनेवाला, प्ररण करनेवाला।

প্রেরণ सं—भेजना, नियोग। প্রেরণা सं—नियोग, प्रवृत्ति शक्ति प्रतिभा आदिका संचार (—পাওয়া, —দেওয়া)। প্রেরিত (-अ) वि—भेजा हुआ, प्रेषित, प्रेरणा-प्राप्त।

প্রেষক वि—प्ररक, भेजनेवाला।

প্রেষণ सं—प्रेरण, भजना। প্রেষণা सं—प्ररणा। প্রেষিত (-अ) वि—प्रेरित, नियोजित। প্রেষ্য (-अ) वि—भेजने योग्य। सं—भृत्य, नौकर।

প্রোক্ত (-अ) वि—पूर्वकथित।

প্রোথিত (-अ) वि—गाड़ा हुआ।

প্রোষিত (-अ) वि—विदेश गया हुआ। —ভর্তৃকা स्त्री—जिस स्त्रीका पति विदेश गया हुआ है।

প্রৌঢ় (प्रउढ़-अ) वि—याधावयसी अधेड़।

প্লব (-অ) सं—ভেলা बेड़ा ; तैरना। —মান वि—जो तैर रहा हो।
প্লাবন सं—जलका बहाव, बाढ़, तैराना। প্লাবক सं, वि—प्लावित करने वाला। প্লাবিত (-अ) वि—जलमें डूबा हुआ। প্লাবিতা सं—जल पर तैरानेकी शक्ति। প্লাবী वि—प्लावित करनेवाला (कूल—)।
প্লিহা, প্লীহা सं—तिल्ली तिल्लीकी वृद्धि
প্লুত (-अ) सं—तीन मात्राओंका स्वर (रोने गाने पुकारनेमें)। —গতি सं—उछल कर चलना। वि—उछल कर चलने वाला।
প্লেগ सं—एक सक्रामक रोग plague
প্লেন वि—कोरा सादा जो नक्काशीदार न हो समथल plain सं—हवाई जहाज plane
প্ল্যাটফর্ম सं—प्लैटफार्म, रेल स्टेशनका चबूतरा, मंच platform

फ

ফইজত, (-ৎ) सं—फटकार, झगड़ा, फजीहत।
ফকির सं—फकीर। ফকিরি सं—फकीरी। ফকিরী वि—फकीरका, फकीर-सा।
ফক্কড় वि, सं—বাচাল, ফাজিল बकवादी; घोखेबाज। ফক্কুড়ি सं—ফাজলামি बकवाद।
ফক্কা वि—कुछ भी नहीं, खाली।
ফক্কিকা सं—फाँकि कूट प्रश्न, पहेली।
ফচকে वि—বাচাল बकवादी। ফচকেমি सं—বাচালতা बकवाद।
ফজলি सं—एक प्रकारका आम।
ফট্ सं—फटनेका शब्द।
ফটক, ফাটক सं—फाटक। ফাটক सं—कारागार जेलखाना, कैद। [जुआ।
ফটকা सं—बिकनेवाली चीजोंके भाव पर
ফটকিরি सं—फिटकिरी।
ফটিক वि—स्वच्छ निर्मल, पारदर्शक (—জল) सं—स्फटिक। [कथन।
ফড়ফড় सं—कपड़ेके फटनेका शब्द, लगातार
ফড়িং सं—পতঙ্গ फतिंगा।
ফড়িয়া, ফড়ে सं—दलाल जो थोक माल खरीद कर फुटकर बेचता है, फेरीवाला।
ফণা, ফণ सं—फन। ফণী सं—साँप। स्त्री—ফণিনী।
ফতুয়া सं—फतूही छोटा कुर्ता।
ফতুর वि—নিঃস্ব जिसकी सारी सम्पत्ति या पूंजी नष्ट हो गयी है।
ফতে सं—जय, फतह, सिद्धि।
ফতোয়া सं—फतवा।
ফন্দি सं—फंद छल, घोखा, कूट कौशल। —বাজ वि—छलिया, धोखेबाज, कुचक्री।
ফপরদালাল सं—जो बिना बुलाये किसी काममें दखल देता है या अपनेको कर्ता जतानेके लिए बातें करता है। ফপরদালালি सं—वैसा काम।
ফয়তা सं—मुसलमानी उपासना।
ফয়সালা सं—फैसला, राय। [दूर।
ফরক सं—फर्क, भेद। वि—भिन्न, पृथक,
ফরকান (-নো), ফরকানো (क्रि परि १६)—ফাঁক করা अलग करना (পা—)।
ফরফর सं—पतली चीजोंके हिलनेका शब्द।
ফরমান सं—बादशाह या नवाबका आज्ञापत्र, फरमान। [फरमाइश करना।
ফরমান (-নো), ফরমানো (क्रि परि १६)—
ফরমাশ सं—फरमाइश, आज्ञा। ফরমাশী वि—फरमाइशी।
ফরসা, (-শা) वि—गोरा, गौर (গায়ের রং—); साफ (আকাশ—হওয়া); खतम, समाप्त (কাজ—)।
ফরসি, ফুরসি सं—হুড়গুড়ি फरशी।
ফরাশ सं—फर्श, बिछौनेकी चादर; नौकर जो

बिछौना बिछाना बत्ती जलाना आदि काम करता है। [वि—फरांसीसी।

फरासी स—फांस देशका आदमी या भाषा।

फरियाद स—फर्याद नालिश, अभियोग।

फरियादी स—फर्यादी, मुद्दई, वादी।

फर्द (-अ) स—तालिका फिहरिस्त, फर्द।

फर्मा स—पुस्तकके जितने पृष्ठ एक बारमें छपते हैं, फरमा।

फल स—फल (गाछे—धरा, —पाड़ा); परिणाम (पापेर—); हिसाब लगानेसे जो संख्या मिलती है (भाग—); उपकार, फायदा (ऊषधे—हओया); बाण भाला छुरी आदिका फल। —कथा स—अंतिम बात, सारांश। —दर्शी वि, स—परिणाम देखनेवाला। फलवन्त (-अ) वि—फल लगा हुआ, फलदार। —प्रद (-अ), —प्रसू वि—फल देनेवाला, उपकारक।

फलक स—बाण आदिका फल, पत्तर (छात्र—), ढाल। [सरमें।

फलतः क्रि वि—फलस्वरुप, इस लिए मुख्त-

फलद (-अ) वि—फल देनेवाला।

फलन स—फलकी पैदाइश, घटनाका घटना या सत्य होना, फल होना या मिलना।

फलना वि—फलाना।

फलन्त (-अ) वि—फला हुआ, फल देनेवाला।

फलश्रुति स—किसी पुण्य कार्यके करनेसे जो फल होता है उसका विवरण या उसका श्रवण अत्यधिक प्रशंसा-वाक्य।

फलसा (फल्सा) स—एक खटमिट्ठा छोटा फल, फालसा।

फला स—फलक बाण आदिका फल, संयुक्त वर्णका अंतिम अक्षर (व फला, य फला, न फला, म फला, र फला)।

फला (क्रि परि १) —फल होना, सत्य होना। वि—फलदार; (गो—सालमें दो बार फल देने वाला)।

फलाओ वि—फैलाया हुआ।

फलाकाङ्क्षा स—कृत कर्मके फलकी आशा।

फलागम स—फलकी उत्पत्ति या उसका मौसिम।

फलान (-नो), फलानो (क्रि परि १०)—फल पैदा करना अपनी योग्यता बढ़ा कर दिखाना (विद्या—)।

फलाना वि—अमुक फलाँ, फलाना।

फलाफल स—कर्मका भला या बुरा फल।

फलार स—च्युड़ा दही मिठाई आदिका भोजन।

फलारे वि—वैसा भोजन जिसको प्रिय है (—बामुन)।

फलित (-अ) वि—फला हुआ, फलदार, सफल (ज्योतिषगणना—हओया)।

फले क्रि वि—फलस्वरूप, परिणामतः।

फलोदय स—फलका उदय।

फलोन्मुख (फलोन्मुख) वि—जो शीघ्र फल देगा, फल देनेमें उद्यत।

फष्टिनष्टि स—फाजलामि हँसी-दिल्लगी, मजाक।

फस् (-अ) अ—एकाएक, अचानक, तुरंत। स—दियासलाई जलानेकी तरह शब्द।

फसका (फस्का) वि—आलगा ढीला (—गेरो)।

फसकान (नो), फसकानो (क्रि परि १६) —फिसलना, हाथसे निकल जाना।

फसफरस स—फासफोरस नामका मौलिक तत्त्व (दियासलाई बनानेमें लगता है)।

फसल स—खेतकी उपज, फसल। फसली वि—फसल सम्बन्धी। स—अकबरका चलाया हुआ संवत। [फरमाइश।

फाइफरमाश स—छोटी मोटी चीजोंकी

फाओ, फाउ स—घलुआ।

फाँक स—फासला, अंतर, दूरी, खुला हिस्सा,

खाली स्थान, अवकाश। वि—पृथक, अलग, खाली। —তাল सं—अचानक पाया हुआ मौका (ফাঁকতালে কিছু পাওয়া)। —ফাঁক वि—তফাত তফাত अलग अलग दूर दूर (—ক'রে সাজান)।

ফাঁকা वि—खुला, उन्मुक्त, खाली, फजूल। सं—खुला स्थान। —ফাঁকা वि—प्राय खाली (—ঠেকছে)।

ফাঁকি सं—कर्तव्यकी अवहेलना और उसे छिपानेकी चेष्टा (কাজে—দেওয়া); धोखा; कूट प्रश्न, पहेली। —বাজ वि—धोखेबाज, कर्तव्य पूरा न करनेवाला।

ফাগ सं—আবীর अबीर।

ফাগুন सं—फागुन।

ফাজিল वि—वाचाल, बकवादी, बातूनी; अतिरिक्त, फाजिल, जमासे अधिक खर्च।

ফাজলামি सं—वाचालता बकवाद।

ফাট सं—বিদারণ, চিড় दरार।

ফাটক सं—फाटक।

ফাটল सं—दरार।

ফাটা (क्रि परि २)—চিড় খাওয়া फटना।

ফাটান (-नो), ফাটানো (क्रि परि १०)—फाड़ना, চৌরান फटवाना, फड़ाना। वि—फाडा हुआ।

ফাটাফাটি सं—आपसमें तोड़फोड़ (মাথা—)।

ফাড়া (क्रि परि २)—ছেঁড়া फाड़ना, चीरना।

ফাঁড়া सं—ज्योतिषके द्वारा निर्धारित मृत्यु-योग या विपत्तिकी संभावना (—কাটানো)।

ফাঁড়ি सं—घाटि, थाना पुलिसकी चौकी।

ফাতনা (ফাবনা) सं—मछली पकडनेकी बंसीकी डोरीमें बँधी हुई हलकी लकड़ी या सोले का टुकडा जो जल पर तैरता रहता है। (বড় কাঁদের চুড়ি)।

ফাঁদ सं—फंदा; वृत्तके व्यासका फासला

ফাঁদা (क्रि परि २)—फैलाना (ব্যবসা—)।

ফাঁদালো वि—बड़ा मुँह या घेरा वाला (—হাঁড়ি)।

ফানুস सं—फानूस।

ফাঁপর सं—संकट, विपत्ति, भौचक्कापन।

ফাঁপা (क्रि परि २)—फूलना, हवा भर जाना; समृद्ध होना (ব্যবসায়—)। —वि—पोला।

ফাঁপান (-नो), ফাঁপানো (क्रि परि १०)—फुलाना; हवा भरना। वि—फूला हुआ।

ফায়দা सं—नफा, फायदा।

ফারখত सं—त्याग-पत्र, चुकती।

ফারসী सं—फारसी।

ফাল सं—हलका फाल।

ফালতো वि—फालतू, अतिरिक्त।

ফালা, ফালি सं—लंबा टुकड़ा, फाँक।

ফালাও वि—फैलाया हुआ।

ফালি सं—कतरा, लंबा पतला टुकड़ा।

ফাল্গুন सं—फाल्गुन मास।

ফাঁস सं—रस्सीका फंदा या गाँठ जो आसानीसे ढीला किया या कसा जा सकता है।

ফাঁস वि—আলগা ढीला; भडाफोड।

ফাঁসা (क्रि परि २)—खुल कर गिरना, धसना (খুড়ির তলা—, হাঁড়ি—); बिगड़ जाना, नष्ट होना (মতলব ফেঁসে গেল)।

ফাঁসান (-नो), ফাঁসানো (क्रि परि १०)—बिगाड़ना, नष्ट करना, विपत्तिमें डालना।

ফাঁসি सं—উদ্বন্ধন फाँसी, रस्सीका फंदा।

ফি वि—फी, प्रत्येक।

ফিক सं—टीस; मुसकराहट (—করে হাসা)।

ফিকা, ফিকে वि—ফেকাশে फीका, पीला।

ফিকির सं—ফন্দি मतलब, उपाय, कौशल, तदवीर।

ফিঙ্গা, ফিঙা, ফিঙে सं—एक चिड़िया, गुलेल।

ফিচেল वि—ফন্দিবাজ धूर्त।

ফিট वि—মাপসই ठीक, बराबर fit सं—

मूर्छा, बेहोशी। —फाट वि—सजा हुआ, बना-ठना।

ফিটন, ফিটিন सं—एक चार पहियेवाली घोडा गाड़ी (इसका टप्पन खोल सकते हैं)।

ফিতা, ফিতে स—फीता।

ফিনকি सं—स्फुलिङ्ग चिनगारी, तेज पतली धारा (—দিয়ে রক্ত ছোটা)।

ফিনফিন सं—पतलापन। ফিনফিনে वि—पतला (—ধুতি)।

ফিনিক सं—प्रभा, ज्योति।

ফিরত, ফেরত सं—प्रत्यर्पण वापस। वि—वापस किया हुआ, लौट आया हुआ (বিলাত—); लौटता हुआ (—ডাক)।

ফিরতি सं—वापसी। क्रि वि—लौटते समय।

ফিরা, ফেরা (क्रि परि ५)—लौट आना, अभिमुख होना, घूमकर देखना; घूमना; बदलना (কপাল—, চেহারা বা শরীর—, अच्छा होना); टहलना।

ফিরান (-नो), ফিরনো, ফেরানো (क्रि परि ११)—ফেরত দেওয়া वापस करना, लौटा देना (কাপড়—); प्रार्थना न सुनकर वापस करना (ভিখারী—); लौटा लाना; बदलना (হুঁকার জল—), फिरसे लगाना (ঘরে চুন—)। [बदल हेराफेरी।

ফিরাফিরি, (ফেরা—) सं—বারংবার ফেরত বা

ফিরিঙ্গী सं—फिरंगी, गोरा।

ফিরিস্তা सं—फर्द फिहरिस्त।

ফিরে क्रि वि—पुन., फिर (—বার)।

ফিরোজা स—फीरोजा; फीरोजी रंग।

ফিসফিস सं—फुसफुसाहट।

ফী सं—दर्शनी पारिश्रमिक, फीज (ডাক্তারের—); वेतन (স্কুলের—; कर (কোর্ট—)।

ফুঁ स—ফুৎকার फूंक।

ফুক क्रि वि—फूंककी तरह शीघ्र।

ফুঁক सं—ফুৎকার फूंक (ঝাড়—)।

ফুকর, ফোকর सं—छिद्र छेद, सुराख, खाना।

ফুকরান (-नो), ফুকরানো (क्रि परि १८)—पुकारना, चिल्लाकर बोलना, चिल्लाना।

ফুকো, ফুকো वि—फूंकसे बनाया हुआ, पोला, हलका (—শিশি)। स—फूंका।

ফুঁকা, ফোঁকা (क्रि परि ६)—फूंकसे उड़ाना, फजल खर्च करना; फूंकना।

ফুঙ্গী सं—बौद्ध संन्यासी।

ফুচকে (फुच्के) वि—পুচকে छोटा, नन्हा।

ফুট सं—१२ इंचकी नाप, फुट।

ফুট सं—उबलनेकी हालत (জলে—ধরা)।—কলাই सं—कुछ भूना हुआ मटर उर्द आदि।

ফুটকি (फुट्कि) सं—বিন্দু बिंदी, नुकता।

ফুটন सं—उबलनेकी अवस्था, खिलने या पहले पहल निकलनेकी हालत (জল—, ফুল—, হাসি—, কথা—)।

ফুটন্ত (-अ) वि—उबलता या खौलता हुआ; खिला हुआ (—ফুল)।

ফুটফুটে वि—गोरा (—ছেলে)।

ফুটবল सं—फुटवाल, बड़ा गेन्द।

ফুটা, ফুটো स—छिद्र छेद, सुराख। वि—सुराखदार, छेदवाला।

ফুটা, ফোটা (क्रि परि ६)—खिलना (ফুল—, আকাশে তারা—, মুখে হাসি—); निकलना (মুখে কথা—); खुलना (পাখির চোখ—); उबलना, खौलना (জল—), सीझना (ভাত—); गर्मी पा कर फूलना (খই—); गड़ना, धंसना (কাঁটা—)। वि—खिला हुआ (—ফুল)।

ফুটান (-नो), ফুটানো, ফুটনো, ফোটানো (क्रि परि १२)—खिलाना, विकसित कराना (ফুল—); खौलाना (দুধ—); चुभाना,

गड़ाना। वि—खिला हुआ, खौला हुआ; चुभा हुआ।

फुटানি, ফুটনি, ফুটুনি सं— गडाने या चुभानेकी क्रिया (দাঁত—), शेखी, चाल।

ফুটি सं—फट, एक प्रकारका खरबूजा। —ফাটা वि—फूटकी तरह फटा।

ফুটো=ফুটা। [पीनेका शब्द।

ফুড়ুক, ফুড়ুত सं—चिड़ियाके उडने या हुक्का

ফুৎকার स —फूँ फंक।

ফুফু स्त्री—পিসী फफी।

ফুরান, ফুরন सं—চুক्ति कोई काम करानेके पहले उसकी मजदूरी या पारिश्रमिक निश्चित करण, ठीका।

ফুরান (-नो), ফুরানো, ফুরনে (क्रि परि १२)— खतम होना (টাকা—, চাল—, গল্প—)।

ফূর্তি सं—স্ফূর্তি आनद, मौज। —বাজ वि— मौजी, उमंगी।

ফুল सं—फूल, कुसुम, प्रसवके समय जो मांसपिंड सतानकी नाभिके साथ लगा रहता है, आँवलनाल। —কপি सं—फूल-गोभी। —কারি सं—वस्त्र आदि पर नक्काशी। —খড়ি सं—চাখড়ি खरिया मिट्टी। —ঝুরি, —ঝুরি सं—एक आतश बाजी जिसके जलानेपर चिनगारियाँ टपकती है। —দান, —দানি सं—फूलदान, गुलदस्ता। —বাবু स — शौकीन आदमी, छैला, बांका। —শয্য सं— শুভরাত্রি सुहागरात, विवाहको तीसरी रातको दंपतिके एक साथ फूलोंकी शय्या पर पहले पहल शयन, फूलोंका बिछौना।

ফুল वि—पूरी नापका (—শার্ট, —জামা)।

ফুলন্ত (-अ) वि—फूल लगा हुआ।

ফুলরি, ফুলুরি सं—दाल पीस कर तेलमें भूना हुआ बड़ा आदि, फुलौरी, पकौड़ी।

ফুলা, ফোলা (क्रि परि ६)—স্ফীত হওয়া फूलना, सूजना, मोटा होना, धनवान होना। वि— फला हुआ।

ফুলান (-नो), ফুলানো, ফুলনো (क्रि परि १२) —স্ফীত করা, ফাঁপান फुलाना।

ফুলেল তেল सं—सुगंधित तेल।

ফুল্‌কা, ফুল্‌কো वि—फुलका, पतला और पोला (—লুচি)। स —पतली परत, मछलीके कानका भीतरवाला कघीसा अंग जिसे हिला हिला कर वे साँस लेती है।

ফুলিঙ্ক स —स्फुलिङ्ग चिनगारी।

ফুল্ল (-अ) वि—প্রস্ফুটিত खिला हुआ (-কুসুম); फैला हुआ (—জ্যোৎস্না), प्रफुल्लित (—আনন)।

ফুসকুড়ি सं— ছোট ফোড়া फुड़िया, फुंसी।

ফুসফুস स —फेफड़ा, फुसफुसाहट।

ফুসলান (-नो), ফুসলানো, ফুসলনো, ফোসলানো (क्रि परि १८)- फुसलाना, बहकाना।

ফেউ सं—ফেরু सियार, जो सियार बाघके पीछे रह कर चिल्लाता रहता है। —লাগা क्रि—উত্যক্ত করা दिक करना, चिढ़ाना।

ফেঁকড়া, (ফ্যাঁ-) सं—প্রশাখা शाखाकी शाखा, एक विषयसे उत्पन्न दूसरा विषय; झंझट। [पीला, फीका।

ফেকাশে (फकाशे), -সে, (ফ্যা-) वि—পাণ্ডুবর্ণ

ফেচাং (फैचाङ), (ফ্যা-) सं—ফেঁকড়া झंझट, आफत। [पगड़ी।

ফেটা (फैटा), (ফ্যা) सं—পটি फेंटा, छोटी

ফেটান (फैटानो), ফেটানো (क्रि परि १०)— নাড়িয়া কাঁপানো हाथसे हिलाकर फुलाना, फेंटना (ডাল-বাটা—)।

ফেন (फैन) सं—माड़ फेन। ফেনা सं— —গাঁজ ঝাগ, गाज।

ফেনান (फैनानो), ফেনানো (क्रि परि १०)— ফেনায়িত করা फेंटना; बढ़ा कर बोलना।

ফেনায়মান (ফে-) वि—झागदार, फेनवाला। ফেনায়িত (फेनायित-अ) वि—फेटा हुआ। ফেনিল (फेनिल वि—সফেন झागदार, फेनमें भरा।

ফেনি स—बड़ा बतासा।

ফেব্রুয়ারি सं—अंग्रेजी फरवरी मास।

ফের क्रि वि—আবার, পুনরায় फिर, पुन। स—বেড়, বেষ্টন घेर (কাপড়ের—, কথার—), संकट (গ্রহের—, ফেরে পড়া), बदल, परिवर्तन (রকম—)।

ফেরত स—फिरत वापस। ফেরতা वि—प्रत्यागत लौटा हुआ (বিলাত—, স্কুল—); लौटते समयका। स—घेर (—দিয়ে শাড়ি পরা)।

ফেরা, ফেরানো—फिरा, फिराना देखो।

ফেরার वि—পলায়িত फरार। ফেরারী वि—পলাতক भगेडा (—আসামী)।

ফেরি सं—घूमकर सौदा विक्रय, फेरी।

ফেরু सं=ফেউ।

ফেরেব सं—জুয়াচুরি, প্রবঞ্চনা फरेब। —বাজ वि—फरेबी। —বাজি ফেরেবি सं—फरेब, धोखा।

ফেল वि—অনুত্তীর্ণ नाकामयाब (পরীক্ষায়—হওয়া)। सं—দেউলিয়া दिवाला (ব্যাঙ্ক—হইল)।

ফেলনা (फेल्ना) वि—फेंक देने लायक।

ফেলা (फेला) (क्रि परि १)—নিক্ষেপ করা फेंकना (থুতু—, বিপদে—), खतम करना, चुकना (দরিয়া—, খাইয়া—); अचानक कुछ करना (দেখে—)। वि—छोड़ा हुआ, फेंका हुआ। —ছড়া क्रि—लापरवाहीसे बिखेरना।

ফেসাদ (फेसाद) (ফ্যা--) सं—झंझट झंझट, दिक्कत, आफत; झगड़ा। ফেসাদে वि—झंझटिया, झगडालू।

ফোকর सं=फक्कर।

ফোকলা (फोकला) वि—দন্তহীন दाँत रहित।

ফোঁকা सं=फूंका।

ফোটা क्रि, वि=ফুটা।

ফোঁটা स—বিন্দু बिंदी, नुकता; टिप तिलक, ताशकी बुंदकी, छोटा। वि छोटा, नन्हा (এক—মেয়ে)। —কাটা क्रि—तिलक लगाना, शरीरमें चदन आदिका चिह्न लगाना। ভাই— स—भैया दूज, भ्रातृ द्वितीया।

ফোটোগ্রাফ सं—আলোক-চিত্র अक्सी तसवीर।

ফোঁড় सं—छिद्र-करण; छेद (এ ফোঁড় ও—)।

ফোড়ন सं—সম্বরা छौंक, बघार, (व्यंगमें) बातचीत करते समय बीच बीचमें मंतव्य (टिप्पणी) प्रकटन।

ফোড়া सं—স্ফোটক, ব্রণ फोडा।

ফোঁড়া (क्रि परि ६)—छिद्र करना, छेदना।

ফোতো वि—तुच्छ, निसार, फोकट।

ফোঁপরা (फोंपरा), (ফো-) वि—ঝাঁঝরা झंझरा, पोला। [फूल सी जड़।

ফোঁপল सं—नारियलके भीतर उत्पन्न अंकुरकी

ফোঁপান (-नो), ফোঁপানো (क्रि परि १४)—গুমরাইয়া কাঁদা सिसकना; फुफकारना।

ফোয়ারা सं—फुहारा, फौवारा।

ফোলা क्रि, वि=ফুলা।

ফোঁস स—फुफकार, क्रोधकी गर्जना।

ফোসকা (फोस्का) स—फफोला, छाला।

ফোসলান क्रि=ফুসলান।

ফৌজ (फउज) स—সৈন্যদল फौज, पलटन, सेना। —দার सं—सेनापति, कोतवाल। —দারি सं—मारपीट खून आदि सम्बन्धी मुकदमा। —দারী वि फौजदारी।

ফ্যাঁকড়া (फकड़ा) सं=কেঁকড়া।

ফ্যাকাশে, ফ্যাচা, ফ্যাটা =ফেকাশে, ফেচা, ফেটা।

ক্যা ক্যা सं—गरीबी या बेकारीका भाव प्रकाश।

প্যালক্যাল सं—आँखका आश्चर्य चकित भाव (—ক'রে চাওয়া)।　　[fashion.

ক্যাশন सं—शौकोनी ढंग; रिवाज, रीति

ক্যাসাদ सं—ফেসাদ।

ফ্রেম सं—কাঠামো ढाँचा (ছাবর—, চশমার—)।

ফ্লানেল सं—फलालेन एक पशमी वस्त्र।

ব

বই सं—বহি पुस्तक, किताब। अ—बिना, सिवाय (তোমা—, তা—কি)।　[फल।

বঁইচ सं—फालसेकी तरहका एक खटमिट्ठा

বইঠা सं—नावका डाँड़ नाव खनेका बल्ला।

বউ स्त्री—বধূ बहू, पत्नी, दुलहिन, पतोहू। —কথাকও सं—कोयल जातिकी एक चिड़िया। —কাটকী स्त्री—बहूको सताने वाली सास। —দিদি स्त्री—भौजाई, भाभी। —ভাত सं—পাকস্পর্শ विवाहके बादका एक संस्कार जिसमें दुलहेके कुटुम्बी नयी दुलहिनका छूआ हुआ अन्न खाते हैं।

বউনি सं—दिनकी पहली बिक्री (—করা, —হওয়া)।

বউল, বোল सं—মুকুল बौर, मंजरी।

বওয়া वि—বহা।

বওয়াটে वि—বখা।

বংশ सं—कुल, वंश, बाँस। —গত (-अ) वि—बपौतीसे प्राप्त। বংশজ सं—उच्च कुलकी एक श्रेणी जो कुलीनसे नीचे है। —ধর सं—कुलकी रक्षा करनेवाला, संतान। —বৃক্ষ, —লতা सं—वंशावली, कुर्सीनामा। —লোচন सं—बंसलोचन, बाँसके भीतर उत्पन्न एक कड़ी वस्तु। বংশানুক্রম सं—कुल की परम्परा। বংশানুচরিত सं—कुलका इतिहास। বংশীয়, বংশ্য (-अ) वि—कुलमें उत्पन्न, कुल सम्बन्धी।

বংশী सं—বাঁশ, বেণু बाँसुरी। —ধর, —ধারী वि सं—बाँसुरीवाला, श्रीकृष्ण।

বক सं—বগ बगुला; एक फूल। —ধার্মিক सं—बगुला-भगत। —যন্ত্র सं—भभका, अर्क खींचनेका एक यन्त्र retort.

বকনা सं—बछिया, जिस गायको अभी बछड़ा नहीं हुआ है।

বকবক सं—बकवाद, बकबक।

বকরা सं—ছাগ, ছাগল, পাঁঠা बकरा। বকরি, (-री) स्त्री—ছাগী, পাঁঠী बकरी।

বকরীদ सं—बकरीद, एक मुसलमानी त्योहार।

বকলম सं—दूसरेके बदले हस्ताक्षर करनेवाला।

বকলস, (বগ-) सं—फीता आदि फँसानेका काँटा, अंकुसी buckles.

বকশিশ सं—बकसीस, इनाम।

বকসী सं—एक उपाधि, बख्शी।

বকা (क्रि परि १)—बकना, धमकाना। वि—বখা आवारा।

বকাট, বকামি —বখা देखो।　[बकवाना।

বকান (-नो), বকানো (क्रि परि १०)—

বকাবকি सं—বচসা झगड़ा, धमकी।

বকুনি सं—धमकी, फटकार।

বকুল सं—मौलसरी।

বকেয়া वि, सं—बाकी, शेष, बकाया।

বক্ত্র (-अ) सं—मुँह, मुख आनन।

বক্র (-अ) वि—বাঁকা टेढ़ा, तिरछा। —দৃষ্টি सं—तिरछी नजर, कटाक्ष। বক্রীকরণ सं—বাঁকানো टेढ़ा करना। বক্রোক্তি सं—श्लेष, ताना।

বক্রী वि, सं—बाकी, बकाया।

বক্ষ, বক্ষঃ (বক্ষ্-অ) सं—वूक छाती, हृदय (বক্ষস্থল, বক্ষঃস্থল)।

বক্ষ্যমাণ वि—जो कहा जायगा।

বখরা सं—भाग, अंश, हिस्सा। —দার सं—हिस्सेदार।

বখা, বকা, বখাটে, বকাটে, বকাট, বওয়াটে वि—वाचाल बकवादी; आवारा। বখামি, বকামি, (-মো) सं—आवारापन।

বখেয়া सं - बखिया सिलाई।

বগ सं—बक बगुला।

বগয়রহ अ—ইত্যাদি आदि, वगरह।

বগল सं—बगल, काँख; पासका स्थान निकट। —দাবা सं—बगलमें दबाकर धारण।

বগলি सं—थैल थैली।

বগা सं—बक बगुला (व्यंगमें)। स्त्री—বগী।

বগি सं—बग्गी गाड़ी, एक फूलकी थाली जिसका किनारा बहुत ऊँचा नहीं होता और भीतरको तरफ जरा मुड़ा रहता है।

বঙ্কিম वि—বাঁকা टेढ़ा।

বঙ্গ (বঙ্গ-অ) स— বাংলা দেশ बंगाल; पूर्वी बंगालका पुराना नाम। বঙ্গজ वि बंगालमें उत्पन्न। सं—कायस्थोंको एक श्रेणी।

বঙ্গীয় (-অ) वि—बंगाल सम्बन्धी।

বচসা स—झगड़ा, तकरार।

বছর स—वत्सर, साल, वर्ष। বছরকি स—বাৎসরিক শ্রাদ্ধ सालाना श्राद्ध।

বজরা सं—बड़ी नाव बजरा।

বজায় वि—रक्षित, स्थापित, कायम, स्थिर।

বজ্জাত वि -बदजात, बदमाश, दुष्ट। বজ্জাতি सं—बदमाशी।

বঞ্চন, বঞ্চনা सं—धोखा, छल। বঞ্চক वि, स—धोखेबाज, धूर्त, ठग। বঞ্চিত वि—प्रतारित, जो ठगा गया हो, रहित।

বট सं—बरगदका पेड़।

বট (বটো) क्रि—हो। [(ঠাট্টা—)।

বটকেরা (बटकेरा) सं—বিদ্রূপ दिल्लगी

বঁটি सं—तरकारी आदि काटनेका हंसुआ जो एक लकड़ी पर खड़ा रहता है।

বটিকা, বটী स—বড়ি, গুলি बटी, गोली।

বটু, বটুক स—ब्राह्मणका बालक।

বটুয়া सं—कपड़की छोटी थैली, बटुवा।

বটে क्रि—হয় है, हो (তুমিও— সেও—)। वि—ठीक (যা রটে তা কিছু না কিছু—, जनश्रुतिका कुछ मूल अवश्य है। বাহাদুর—, তাই—)। अ— (प्रश्नमें) তাই নাকি ऐसा है क्या (বটে ?), धमकीमें (বটে রে।)।

বড্ড (-অ) वि—खूब बहुत, ज्यादा (—রাগকা, — মরেছে)।

বড় (-অ), বড়ো वि—खूब बहुत ज्यादा (—মিষ্ট, —ভাল); बड़ा, लंबा, उमरमें बड़ा (—ছেলে, —বউ, —বাবু); ऊँचा (—বংশ, —ঘর), धनी (—লোক); अत्यंत; निहायत। —একটা अ—प्राय, अकसर (—ঘটে না)। —কথা सं शेखीकी बात (ছোট মুখে—)। —গলা स—शेखी, घमंड, ऊँचा स्वर (—ক'রে বলা)। —জোর वि—बहुत अधिक हुआ तो (—দশ টাকা দাম হবে)। —ঠাকুর सं —বড় ঠাকুর, ভাশুর भसुर, पतिके बड़े भाई। —দিন सं—बड़ा दिन। —মানুষ सं—धनी, बड़ आदमी। —মানুষি सं—बड़े-आदमीपन बड़प्पन। —মানুষী, —मानुषी सं—धनी सा चाल (—চাল)। —মুখ स—अधिक आशा या उत्साह (—ক'রে এসেছি নিরাশ ক'রো না)। [औजार, बंसी।

বঁড়শি, বড়শি सं—मछली फसानेका एक

বড়া स—पीसी हुई दाल आदिकी तली हुई टिकिया बड़ा।

বড়াই सं—घमंड, शेखी, गर्व।

বডিস (बडिस) सं—जनानी कुर्ती bodice

বড়ি सं—গুলি गोली, वटी ; কুম্হড়ৌরী, बडी ।

বণ্টন सं—विभाजन, बाँटना । বণ্টক वि, सं—बाँटनेवाला ।　[बत्तीसवीं तारीख ।

বত্রিশ वि, सं—बत्तीस, ३२ । বত্রিশে स—

বৎস (-अ) सं—বাছা (प्यारमें) बेटा ; বাচ্চা, শাবক बच्चा, बछड़ा । —তর सं—बछड़ा । —তরী स्त्री—बछिया ।

বৎসর सं—বছর साल, वष ।

বদ वि—খারাপ, মন্দ बुरा । —খত वि—বিশ্রী बदसूरत, भद्दा । —খেয়াল सं—बुरी इच्छा, बुरा मतलब, बदचलनी । —জবান स—गाली । —নাম स—बदनामी, निंदा । —বু स—बदबू । —রাগী वि-थोड़ेमें बहुत खफा होनेवाला । —হজম सं—অপরিপাক बद-हजमी ।

বদন सं—मुख, चेहरा ।

বদনা स—बधना ।

বদর, বদরিকা, বদরী सं—কুল बेर ।　[पीर ।

বদর सं—मुसलमान मल्लाहोंका माना हुआ एक

বদল सं—বিনিময় परिवर्तन बदला, पलटा ।

বদলান (-नो), বদলানো (क्रि परि १६)—बदलना । বদলাবদলি सं—অদলবদল परिवर्तन । বদলি सं—बदली, तबादला ।

বদান্য (-अ) वि—दाता उदार ।

বদ্দি सं—বৈদ্য बैद चिकित्सक ; एक जाति ।

বদ্ধ (-अ) वि—বাঁধা, আবদ্ধ बधा हुआ (—কবরী, প্রতিজ্ঞা—) ; बंद (কারা—, মুষ্টি—) ; क्रमवार स्थापित (শ্রেণী —,ধারা—) । —পরিকর वि-कमर कसा हुआ, उद्यत । —মুষ্টি वि-मुट्ठी बधा हुआ , कृपण । —মূল वि जिसकी जड़ जमोनमें अच्छी तरह गड़ गयी है , मनमें अच्छी तरह जमा हुआ (সংস্কার —হওয়া) । বদ্ধাঞ্জলি वि-हाथ जोड़े हुए ।

বদ্বীপ सं—नदीके मुहाने पर पानीसे घिरी हुई त्रिकोण धरती ।

বধ सं—হত্যা कत्ल, हत्या । —ভূমী, —স্থান सं—वधस्थान, मसान　বধার্হ (-अ) वि—हत्याके योग्य ।

বধির वि—কালা बहरा ।

বধু, বধূ स्त्री—বউ बहू, दुलहिन , पतोहू, पत्नी (পুত্র—, ভাতৃ—, কুল—) । —জন, सधवा विवाहिता नारी ।　[नन्ही बहू ।

বধুটি, বধূটি, (-टी)—स्त्री थोडी उमरकी बहू,

বঁধু स्त्री प्रिय मित्र , प्रणयी ।

বধ্য (-अ) वि—हत्याके योग्य । —ভূমি सं—वधस्थान, मसान ।

বন सं—অটবী, অরণ্য, জঙ্গল, বিপিন वन, जंगल । —চর, বনে চর वि सं—जो वनमें चरता है (पशु व्याध आदि) । —চারী वि, सं—वनमें भ्रमण करने या रहने वाला । বনজ, বনজাত (-अ) वि वनमें उत्पन्न । —বিড়াল सं—वन-बिलाव । —ভোজন सं—চড় ইভাতি जगलको रसोई जिसमें हर एक आदमी कुछ कुछ लाता है । —মানুষ स—वनमानुष ।

বনবন্ सं—तेजीसे घूमनेका भाव (—ক'রে ঘোরা) ।

বনা (क्रि परि १)—मतका मेल होना, पटरी बैठना (তার সঙ্গে আমার বনে না) , होना (বোকা—, পাগল—) ।

বনাত सं—एक मोटा ऊनी कपड़ा, बनात ।

বনান (-नो), বনানো (क्रि परि १०) -मतका मेल कराना, पटरी बैठाना, मेल रखना ।

বনানী स—घना जगल ।

বনাম अ—ওরফে उर्फ , खिलाफ बनाम ।

বনিতা स्त्री—स्त्री, पत्नी नारी ।　[स्थिति ।

বনিবনাও सं—मनका मेल, पटरी बैठनेकी

বনিয়াদ, বনেদ स—ভিত্তি नीव, बुनियाद ।

বনিয়াদী, বনেদী वि—खानदानी (—বংশ, —বড়লোক)।

বনুই सं—ভগিনীপতি बहनोई। [ভাস)।

বন্দ सं—खंड, हिस्सा (তিন বন্দে পাঁচ দিবা

বন্দনা, বন্দন सं—স্তব स्तुति। বন্দক वि, सं—वंदना करनेवाला। বন্দনীয়, বন্দ্য (-अ) वि—वंदनाके योग्य।

বন্দর सं—बंदरगाह।

বন্দিত (-अ) वि—जिसकी वंदना की गयी है

বন্দী सं—কয়েদী कैदी। वि—बद्ध (বাক্য—)। स्त्री—বন্দিনী।

বন্দুক सं—আগ্নেয়াস্ত্র बंदूक।

বন্দে क्रि—वंदना करता हूं (—মাতরম্)।

বন্দেগি सं—बंदगी, सलाम।

বন্দেজ सं—ব্যবস্থা इंतजाम, प्रबंध

বন্দোবস্ত (-अ सं—ব্যবস্থা इंतजाम, प्रबंध, बंदोबस्त।

বন্দ্য (-अ) वि—वंदना या पूजाके योग्य

বন্দ্যোপাধ্যায়, বাঁড়ুজ্যে, ব্যানার্জী सं—ब्राह्मणोंकी एक उपाधि।

বন্ধ (-अ) सं—বন্ধনী, বাঁধন बंधन, गांठ, गिरह, रोक; दैनिक कार्यकी समाप्ति (স্কুল পাঁচটায়—; अवकाश, छुट्टी (পূজার—)। वि—आबद्ध, बंधा हुआ, बंद (দরজা—করা, দরজা—হওয়া); रहित, स्थगित, रुका हुआ (দোকান—, রাস্তাঘাট—)।

বন্ধক सं—रेहन, गिरवी, गिरो। বন্ধকী वि—रेहन रखा हुआ।

বন্ধন सं—বাঁধন बांधनेकी क्रिया; बंधन। বন্ধন, বন্ধনী सं—जिससे कोई चीज बांधी जाय। বন্ধনী सं—ব্র্যাকেট घेर-लकीर, कोष्ठक।

বন্ধু सं—मित्र, दोस्त, हितैषी।

বন্ধুর वि—অসমতল, উঁচুনীচু, উবড়-খাবড় ऊबड़-खाबड़ ऊंचानीचा, खुरदरा।

বন্ধ্য (-अ) वि फल-रहित संतान रहित, बांधनेके योग्य। বন্ধ্যা स्त्री—বাঁঝা बांझ।

বন্য (-अ) वि বুনো जंगली।

বন্যা सं—বান, জলপ্লাবন बाढ़।

বপন सं—বোনা बीज बोनेकी क्रिया; বয়ন बुनाई, बुनावट।

বপু सं शरीर, देह।

বপ্তা सं—बोनेवाला वपनकर्ता। [टीला।

বপ্র (-अ) सं- धुस्स वद, किलेकी भीत,

বম, বমবম, বোম सं—शिवके उपासकोंका गाल-वाद्य जिसमें बमबम शब्द होता है।

বমন सं—বমি क, उलटी।

বমি सं—বমন कै; বিবমিষা मिचली, मतली (গা—বমি করা); कै से निकली हुई वस्तु।

বম্বেটে सं—জলদস্যু समुद्री डाकू।

বয়ঃ सं—वय, उमर, अवस्था, आयु, यौवन (বয়ঃপ্রাপ্ত, बालिग)। —ক্রম सं—বয়স उमर। —সন্ধি सं—बचपन और यौवनकी संधि। বয়স্থ, বয়ঃস্থ (-अ) वि—उमरदार, जवान, अधेड़। বয়স্থা स्त्री वि—विवाह-योग्या। [—কন্যা)।

বয়কট सं—বর্জন वर्जन, त्याग (বিদেশী জিনিষ

বয়ড়া सं—बहेड़ा।

বয়ন सं—বোনা बुननेकी क्रिया (বস্ত্র—)।

বয়স, বয়েস सं—उमर, अवस्था; अधिक उमर, यौवन। —ফোঁড়া सं—जवानीमें चेहरे पर उत्पन्न फोडिया। বয়সী वि—उमरका (আধা—, সম—)। বয়সোচিত वि—उमरके योग्य।

বয়স্ক (-अ) वि—उमरवाला; अधिक उमरका, सयाना। स्त्री—বয়স্কা। [स्त्री—বয়স্যা।

বয়স্য (-अ) सं—सखा, दोस्त, हमजोली।

বয়া सं—पानीपर तैरने वाला निशान, बोया।
বয়াটে वि—आवारा, भ्रष्टाचारी।
বয়ান, বয়ন सं—वदन चेहरा, मुख मण्डल।
বয়ান स—बयान, बखान हाल, चेहरा।
বয়াম, বয়েম स—चीनी मिट्टी आदिका वर्तन।
বয়েই গেল (गैलो) क्रि वि—'मुझे परवा नहीं' इस अर्थका प्रयोग। [दोहा।
বয়েৎ, বয়েৎ सं—अरबी फारसी या उर्दूका
বয়ে যাওয়া क्रि—आवारा हो जाना, भ्रष्ट होना।
বয়োজ্যেষ্ঠ (-अ) वि—उमरमें बड़ा। [धर्म।
বয়োধর्म सं—यौवनके स्वाभाविक गुण दोष या
বর सं—किसी देवता या बड़ेसे माँगा हुआ मनोरथ, दुलहा (বর-কনে); पति। वि—उत्तम, श्रेष्ठ (বন্ধু—, उत्तम मित्र)।
বরং, বরঞ্চ (-अ अ—वरन् बल्कि।
বরকন্দাজ सं—बंदूकची, मालिककी रक्षा करने वाला सिपाही।
বরকর्ता सं—विवाहमें बरातियोंका मुखिया।
বরখাস্ত (-अ) वि—मौकूफ, गत।
বরখেলাপ वि विरुद्ध, अन्यथा।
বরগা सं—कड़ीके ऊपरकी तिरछी लकड़ी या लोहा जिस पर छत बंठायी जाती है।
বরগি, বর্গী सं—मराठा लुटेरा।
বরজ सं—फूस आदिसे छाया हुआ खेत जिसमें पानकी खेती होती है।
বরণ सं—सम्मानके साथ ग्रहण या नियोग (পতিত্বে—করা, গুরু-রূপে—করা); पूजा, स्वागत, स्वीकार (করা—); प्रार्थना। —ডালা सं—सूप या डलिया जिसमें वरण या पूजाके सामान रहते हैं। বরণীয় (-अ) वि - वरण या मनोनीत करने योग्य, प्रार्थनीय।
বরতরফ वि—पदच्युत बरखास्त, मौकूफ।
বরদ वि—वर देने वाला। स्त्री—বরদা।
বরদান सं—वर प्रदान; वर।
বরদার सं—नौकर, हुकुम बजाने वाला।
বরদাস্ত (-स्त -अ) सं—वरदाश्त, सहन।
বরন सं—वर्ण, रंग।
বরপুত্র (अ) सं—देवताके वरसे उत्पन्न पुत्र, देवताकी कृपा या शक्ति पाया हुआ आदमी (সরস্বতীর— विशिष्ट विद्वान)।
বরপ্রদ (-अ) वि—वर देनेवाला।
বরফ स—तुषार, जमाट जल बर्फ।
বরফি, বর্ফি, सं—बर्फी, एक मिठाई।
বরবটি सं—बोड़ा, एक पतली लबी फली जिसकी तरकारी बनती है।
বরবর্ণিনী स्त्री—सुंदरी स्त्री।
বরমালা सं—वर या दूलहेको पहनानेकी माला।
বরযাত্র (-अ) सं—बारात।
বরযাত্রী स—बराती।
বরয়িতা वि—वरण करनेवाला। सं—पति।
বরষা स—वर्षा, बारिश। বরষন (पद्यमें) स—वर्षण।
বরা सं—বরাহ सूअर।
বরাঙ্গনা स्त्री—सुंदरी स्त्री।
বরাট, বরাটক सं—कौड़ी, सूत, रस्सी।
বরাত सं—कामका भार, भाग्य, किस्मत (—ভাল নয়)।
বরাদ্দ (-अ) वि—निर्धारित, नियत। सं—दी जानेवाली वस्तुका नियत परिमाण।
বরানুগমন सं—विवाहमें वरके साथ कन्याके घर गमन।
বরাবর क्रि वि—हमेशा, सदा, हर दफे, सीधे, निकट। वि—तुल्य, ठीक।
বরাভয় सं—आशीर्वाद और अभय।
বরাভরণ सं—विवाहमें वरको दिये जानेवाले आभूषण।
বরাহ (-अ) स—सूअर।
বরিষন (पद्यमें) स—वर्षण, वारिश।

বরিষ্ঠ (-অ), বরীয়ান্ वि—श्रेष्ठ, पूजनीय। स्त्री—বরিষ্ঠা, বরীয়সী।

বরুণ सं—जल देवता ; नेपचुन ग्रह।

বরেণ্য (-অ) वि—श्रेष्ठ पूजनीय।

বরেন্দ্র (-অ) सं—उत्तरी बंगाल।

বর্গী सं—प्राचीन मराठी सेना जो मुसलमानी अमलमें बंगालमें लूटमार करती थी।

বর্ণ (-অ) सं—रंग; अक्षर, जाति। —জ্ঞান सं अक्षर-परिचय। —শ্রেষ্ঠ (-অ) सं—ब्राह्मण। —মালা सं—ककहरा। —সঙ্কর, —সঙ্কর वि—दोगला।

বর্ণন, বর্ণনা सं—विवरण, व्याख्या, गुण-कथन। বর্ণনীয় (-অ) वि—वर्णन करने योग्य। বর্ণিত (-অ) वि—कथित।

বর্তন सं—स्थिति, स्थापन जीविका, पेषण।

বর্তনী सं—गोल परिधि, वृत्त चक्कर।

বর্তা (क्रि परि १), বর্তান (-নো), বর্তানো (क्रि परि १३) —मौजूद रहना (বেঁচে বর্তে থাক), कृतार्थ होना (বাঁচোয়া গেছে বর্তে গেল); वपौतीसे प्राप्त होना।

বর্তি, বর্তিক, বর্তিকা सं—বাতি बत्ती दीया।

বর্তী प्रत्य—स्थित अर्थका प्रत्यय (অগ্র—, দূর—)

বর্তুল वि—गोल। सं—गोल वस्तु।

বর্ত্ম (বর্ত-অ) सं—मार्ग पथ, रास्ता; आचार।

বর্ধন सं—वृद्धि करण बढ़ाना। বর্ধক वि—बढ़ानेवाला। বর্ধমান वि बढ़नेवाला। सं—पश्चिमी बंगालका एक नगर। বর্ধিত (-অ) वि वृद्धिप्राप्त बढ़ा हुआ। বর্ধিষ্ণু वि—बढ़ने वाला।

বর্শি सं—বঁড়শি।

বর্বর वि—असभ्य गंवार, नीच। [बक्तर वाला।

বর্ম (-অ) सं—কবচ बकतर। বর্মী वि—

বর্মা सं—क्षत्रियोंकी एक उपाधि ; बरमा देश।

বর্শা सं—সড়কি भाला, बरछा।

বর্ষ (-অ) सं—साल वर्ष।

বর্ষাতি वि वर्षा सम्बन्धी। सं—बरसाती।

বর্ষান (-নো), বর্ষানো (क्रि परि १६) —वर्षण करना।

বর্ষিষ্ঠ (-অ) वि—सबसे वृद्ध।

বর্ষী वि वर्षण करने वाला।

বর্ষীয় (-অ) वि—বয়স্ক उमरवाला।

বর্ষীয়ান वि—बहुत वृद्ध। स्त्री—বর্ষীয়সী।

বর্ষোপল सं—করকা ओला, पत्थर।

বল सं—शक्ति, बल, ताकत, सामर्थ्य। বলদ (-অ) वि—शक्ति देने वाला। —পূর্বক क्रि वि—সবলে बलसे, जबरदस्ती। —বৎ वि—शक्तिवाला ; बहाल, कायम, कारगर। —বিদ্যা सं—यन्त्रविद्या, यन्त्रगति-शास्त्र mechanics

বল सं—কন্দুক गेंद, बाल (ফুট—)। —নাচ सं—साहब-मेमोंके नाचका उत्सव।

বলক सं—उबाल, उफान।

বলদ सं—ষাঁড় बैल ; दामड़ा बधी।

বলয় सं—বালা, কঙ্কণ कंगन, हाथमें पहननेका कड़ा ; मंडल। বলয়িত (-অ) वि -कंगन पहना हुआ, कंगनसा गोल ; घेरा हुआ, वेष्टित।

বলা (क्रि परि १) —কথা कहना, बोलना, जताना, सूचित करना ; सम्मति देना ; उल्लेख करना। वि—कथित, कहा हुआ (—কথা)। —কওয়া सं—কথোপকথন बातचीत, वार्तालाप। क्रि—समझाना। —বলি सं—आपसमें कथन (লোকে বলে —लोग कहते हैं they say)।

বলাই सं बलदेवजी।

বলান (-নো), বলানো (क्रि परि १०)—কথান कहलाना।

বলি सं—यज्ञमें चढ़ायी हुई वस्तु, पशु जो देवताके सामने काटा जाय (পাঁঠা—) ।

বলি, বলী स—शरीरमें चमड़ेकी शिकन, ववासीरसे मलद्वारमें मांसकी गिल्टी । বলিত (-अ) वि—शिकनदार, शिथिल ।

বলিয়া, ব'লে क्रि वि—कारणसे, के हेतु ; शीघ्र (সে এল ব'লে) । क्रि—कह कर ।

বলিহারি वि—চমৎকৃত, মোহিত मोहित, उत्तम । अ—वाहवा शाबाश, वाह वाह ।

বলীবর্দ (-अ) सं—बैल, बर्धा ।

ব'লে=বলিয়া ।

বল্কল सं—वाकल छाल । [सं—एक हरिण ।

বল্গা सं—लागाम लगाम, बाग । —হরি

বল্মীক, বল্মিক (बल्मिक) सं—ढ़ेईढ़ी दीमकोंका लगाया हुआ मिट्टीका ढेर, बांबी ।

বল্লম स —भल्ल, बर्शा बरछा, भाला ।

বল্লি, বল্লী, বল্লরী, (-रि) सं—लता, बेल ।

বশ सं—अधीनता, काबू, अधिकार ; प्रभाव (দৈববশে) । বশংবদ वि—वशमें, अधीन, वशीभूत । বশতঃ क्रि वि—कारणसे, के हेतु (ভুল—, প্রয়োজন—) । বশতা स — अधीनता । বশী वि—वश करनेवाला जितेन्द्रिय ।

বশম্বদ, বশানুগ वि—वशीभूत, आज्ञाधीन ।

বশ্য (-अ) वि—वश करने योग्य । বশ্যতা सं—अधीनता ।

বস্, বাস্ वि—प्रचुर, काफी, भरपूर, बस ।

বসত सं—रहनेकी स्थिति (—বাটি) ।

বসতি स —वस्ती, आबादी ; घर, वास ।

বসবাস सं—बराबर निवास ।

বসা स —चर्बी, मेद ।

বসা (क्रि परि १)—बैठना ; आरम्भ होना, कुछ कालके लिए जारी रहना (হাট—, মেলা—) ; जमना (দই—, জলের নীচে কাদা—) । वि—बैठा हुआ (—লোক, —চোখ) ।

বসান (-नो), বসানো (क्रि परि १०)—बैठाना, लगाना, मारना (কিল—, কোপ—) ; जड़ना (আংটিতে পাথর—), हतोत्साह करना । वि—बैठाया हुआ, स्थापित ।

বসু सं—धन ; कायस्थोंकी एक उपाधि । —ধা, —ন্ধরা, —মতী स्त्री—पृथ्वी । —ধারা सं—यज्ञोपवीत विवाह आदि शुभ कार्यमें दीवाल पर घीकी जो पाँच या सात धाराएँ दी जाती हैं ।

বস্তা सं—छाला बोरा, बड़ा थैला ; गाँठ । —পচা वि—अधिक दिन गाँठमें रहनेसे सड़ा ।—বন্দী वि—बोरेमें भरा हुआ ; गाँठमें बाँधा हुआ ।

বস্তি, বস্তী स —पेड़ू, मूत्राशय ; वास, आबादी, गरीबोंकी घास फूस खपड़ैल आदिकी बस्ती ।

বহ (-अ) वि—वाहक ढोने या ले जाने वाला (আজ্ঞা—, বার্তা—) । सं—वाहन सवारी, यान ; पथ । বহন सं—ढोनेकी क्रिया, वहन, लेकर गमन । বহনীয় (-अ) वि—ढोने योग्य । বহমান वि—जो वह रहा है ; जो ढोया जा रहा है ।

বহর सं—नौका, नाव ; जहाज ; जहाजोंका बेड़ा, पनहा, चौड़ाई, अर्ज (হাতে বহরে, लम्बाई-चौड़ाईमें) ।

বহা, বওয়া (क्रि परि २)—বহন করা ढोना, वहना ; सहना ; समर्थ रहना । বয়ে যাওয়া क्रि—हानि होना (বড় বয়ে গেল, कुछभी हानि नहीं होगी) ।

বহান (-नो), বহানো, বওয়ানো (क्रि परि १२)—वहाना, प्रवाहित करना ; ढोनेका काम दूसरेसे कराना ।

বহি, বই सं—কেতাব किताब, वही ।

বহিঃ উপ —বাহির বাহर। বহিঃস্থ, বহিষ্ঠ (-অ) वि— बाहर वाला।

বহিত্র (-অ) सं—नाव ; जहाज ; डाँड।

বহিরঙ্গ (বহিরঙ্গ -অ) सं—बाहरका अंग, अनात्मीय।

বহির্জগৎ सं—बाहरी दुनिया।

বহির্বাটী सं—बाहिर बाड़ि मकानका बाहरी हिस्सा, बैठका।

বহির্বাণিজ্য (-অ) सं—दूसरे देशोंसे व्यापार।

বহির্ভূত (-অ) वि—बाहरका, बाहरी।

বহিষ্ক্রান্ত (-অ) वि—बाहर निकला हुआ।

বহু वि—अनेक बहुत, अधिक। —কেলে वि—पुराने जमानेका। —তর वि—बहुत, अत्यंत, अनेक प्रकारका। বহুত্র (-অ) क्रि वि—बहुत जगह, अनेक स्थलोंमें। —দর্শী वि—अनुभवी अनेक विषयोंका जानने वाला। —দর্শিতা सं—अनुभव, अभिज्ञता। —পত্নীক वि—जिसके अनेक पत्नियाँ हैं। —বিধ (-অ) वि—अनेक प्रकारका। —ভাষী वि, सं—अधिक बोलने वाला, वाचाल, अनेक भाषाओंका जानने वाला। —মুখী वि—अनेक दिशाओंमें (—প্রতিভা)। —রূপী वि—स्वाँगी। सं—गिरगिट, छिपकली। —স্বামিক वि—जिसके अनेक मालिक हैं।

বহুব্রীহি वि—बहुत धान या अन्न वाला। सं—एक समास।

বহেড়া, বয়ড়া सं—बहेड़ा।

বহ্নি सं—अग्नि, आग।

বহ্বাড়ম্বর (बह्वाडम्बर) सं—भारी आडम्बर।

বহ্বারম্ভ (बह्वारम्भ -অ) सं—आडम्बर के साथ आरम्भ।

বা अ—किंवा या, अथवा ; सम्भावना प्रकट करनेमें (হবেও বা, शायद होगा) ; वितर्कमें (কেনই বা না হবে, क्यों नहीं होगा ?)।

বাঁ वि—वाम बायाँ।

বাই सं—वायु, सनक (শুচি—) ; व्यासन, शौक, चसका (মাছধরা—)। [-ওয়ালী)।

বাই स्त्री—पेशेवर नाचनेवाली (-নাচ, -জী,

বাইচ सं =বাচ।

বাইবেল सं—बाइबिल, इंजील।

বাইরে क्रि वि—বাহিরে बाहर। [डाल।

বাইল सं—ताड़ नारियल आदिकी पत्ता सहित

বাইশ वि, सं—बाईस, २२। বাইশে सं—बाईसवीं तारीख।

বাইস, বাস सं—बसूला, लकड़हारेकी कुल्हाड़ी।

বাইসিকেল सं—बाइसिकिल, दो पहियेकी पैर-गाड़ी bicycle

বাউটি सं—भुजाका एक गहना।

বাউরী सं—एक निम्न जाति।

বাউল सं—गाना गाकर भीख माँगने वाला एक सम्प्रदाय, एक प्रकारका कीर्तन।

বাঁও, বাম सं—दोनों ओर फैलाये हुए हाथों की लम्बाई, लगभग चार हाथ, जलकी गहराई की एक नाप (लगभग ४ हाथ) (দশ—জল)।

বাওয়া (क्रि परि ४) —नाव चलाना, डाँड़ खेना।

বাংলা, বাঙ্লা सं—बंगाल ; बंगला भाषा ; चार छप्परों वाला बंगला।

বাঃ अ—বাহবা वाह वाह, शाबाश, दिल्लगी या विस्मय प्रकाशक शब्द।

বাক্ सं—कथा बात (—চাতুরী, —রোধ, —সংযম) ; जिह्वा, बोलनेकी इन्द्रिय।

বাঁক सं—बहंगी, टेढ़ापन ; नदी रास्ता आदिकी मोड़।

বাকল सं =বল্কল।

বাঁকা वि—वक्र टेढ़ा, तिरछा, कपट। सं—श्रीकृष्णका एक नाम, बाँकेबिहारी। —চোরা वि—टेढ़ा-मेढ़ा।

বাঁকা (ক্রি পরি ২) —टेढ़ा होना, विरुद्ध होना, राजी न होना (বেঁকে বসা)।

বাঁকান (-নো), বাঁকানো (ক्रि परि १०)—टेढ़ा करना। वि—टेढ़ा। [बक्राया।

বাকি सं—शेष, बचा हुआ अंश, बाकी,

বাক্য (-अ) सं—কথা बात, वचन ; वाक्य। —দান सं—वचन-दान, स्वीकार। —বাণ सं—तीखी या कड़ी बात। —বাগীশ वि—बकवादी। —ব্যয় सं—व्यर्थकी बातें। বাক্যালাপ सं—वार्तालाप।

বাক্স, বাক্স (बाक्श अ) सं- बाकस, संदूक, पेटी (কাঠের—, টিনের—, কাগজের—, ক্যাশ—, হাত—, গহনার—)। —বন্দী वि—सदूकमें ब द।

বাখান सं—वर्णन, बयान, प्रशंसा।

বাখারি सं—বাঁশের ফালি, চটা बाँसकी तीली या खपाची।

বাগ सं—बगीचा, कौशल ; तरीका (কাজের—জানা), मौका (বাগে পেয়েছি) ; शासन (—মানা)। —ডোর सं—लगाम। [अड़ंगा।

বাগড়া सं—ব্যাঘাত बाधा, विघ्न, अड़चन,

বাগাড়ম্বর सं—बातोंका आडम्बर।

বাগান सं—উদ্যান बगीचा, बाग। —বাড়ি सं—बागवाला मकान।

বাগান (-नो), বাগানো (क्रि परि १०) —कौशलसे प्राप्त करना (চাকরি—, কাজ—), वशमें लाना (ঘোড়াকে—)। টেড়ি—, তেড়ি—क्रि—तिरछी माँग फैलाकर दोनों ओरके बालोंको भेड़के सींग-सा ऊँचा करना।

বাগিচা सं—छोटा बाग, बगीचा।

বাগীশ वि—अच्छा बोलनेवाला, वाक्य-विशारद।

বাগুরা सं—জাল, ফাঁদ फंदा।

বাগ্‌জাল सं—वाक्योंका आडम्बर।

বাগ্দণ্ড (वाग्दण्ड-अ) सं—झिड़की, धमकी।

বাগ্দত্ত (-त्त-अ) वि—प्रतिज्ञात, प्रतिश्रुत, अंगीकृत वचन दिया हुआ। [(कन्या)।

বাগ্দত্তা वि, स्त्री –विवाहके लिए वचनबद्धा

বাগ্দান सं– कन्या ब्याहनेके लिए वचनदान।

বাগ্দী सं– पासी, दुसाध एक निम्न जाति।

বাগ্দেবী स्त्री—सरस्वती।

বাগ্‌ধারা स —वाकशैली, मुहावरा।

বাগ্‌বিতণ্ডা सं—झगड़ा, कलह तक।

বাগ্‌বিন্যাস स —वाक्यमें शब्दोंका यथास्थान स्थापन या प्रयोग syntax

বাগ্মী (वाग्मी) वि—सुवक्ता। सं—বাগ্মিতা।

বাগ্‌যত (-अ) वि—स यत-वाक्, मौन।

বাগ্‌যন্ত্র (-अ) सं—कंठनली, वागिन्द्रिय।

বাগ্‌যুদ্ধ (-अ) स —झगड़ा, कलह, तर्क।

বাগ্‌রোধ स –वाक्य बोलनेमें रुकावट, गला रुंधना।

বাঘ सं—ব্যাঘ্র बाघ, शेर। स्त्री—বাঘিনী।

বাঘা सं—बाघ (तुच्छार्थमें)। वि—बड़ा, तेज (—তেঁতুল)।

বাঘী सं—ঘুর্চাকর কোড়া बाघी।

বাঙ্গাল, বাঙাল सं—पूर्वी बंगालका निवासी।

বাঙ্গালা, বাঙ্গলা, বাংলা, বাঙলা सं—बंगाल ; बंगला भाषा। वि—बंगला भाषा सम्बन्धी या उसमें रचित (—ব্যাকরণ)।

বাঙ্গালী, বাঙালী सं–बंगाली। स्त्री—বাঙ্গালিনী, (-ঙা-)।

বাঙ্‌নিষ্পত্তি सं– शब्द या वाक्यका उच्चारण।

বাঙ্ময় (वाङ्मय) वि–शब्दोंसे रचित, वाग्मी।

বাচ स —বাইচ सँकरी और बहुत लंबी नावोंके तेजीसे चलानेकी होड़ (—খেলা)।

বাচক वि—বোধক बतानेवाला। বাচন सं—पाठ। বাচনিক वि—বাচিক मौखिक, जबानी।

বাচবিচার स —छानबीन, छाँटना, चुनना।

বাঁচা (क्रि परि ३)—बचना, जीवित रहना ; छुटकारा पाना (বেঁচে গেল) ।
বাঁচান (-नो), বাঁচানো (क्रि परि १०)—बचाना, जीवित करना, रक्षा करना (লজ্জা থেকে—, টাকা—) ; बचा रहना (আইন বাঁচিয়ে চলা) ।
বাচাল वि—अधिक बोलनेवाला, बकवादी । सं—বাচালতা ।
বাচিক वि—वाचनिक जबानी ।
বাঁচোয়া सं—बचाव, रक्षा, उबार ।
বাচ্চা सं—छाना, शावक बच्चा, शिशु ।
বাচ্য (-अ) वि—कथनीय कहने योग्य अभिधेय । स—व्याकरणमें क्रियाका कर्ता या कर्मसे अन्वय (কর্তৃ—, কর্ম—, ভাব—) ।
বাছনি सं—बाछा, वत्स बेटा ; मनोनयन ।
বাছবিচার, (বাচ-) सं—कर्तव्य-अकर्तव्यका विचार, छानबीन । [(বাছাধন) ।
বাছা सं—वत्स बेटा, स्नेह-सबोधन, शिशु
বাছা (क्रि परि ३)—बिनना, चुनना, पृथक्‌ करना । वि—चुना हुआ, साफ । —বাছ वि—चुने हुए । বাছাই सं—निर्वाचन , साफ करनेकी क्रिया ।
বাছুর स—बछड़ा, बछिया । [बाज ।
বাজ सं—বজ্র वज्र (—পড়া) ; श्येन शिकरा
বাজখাঁই वि—कड़ा और ऊ चा (—গলা) ।
বাজনদার सं—बजाने वाला, बाजा वाला ।
বাজনা स—বাদ্য बाजना (গান—, ঢাকের—) ।
বাজরা सं—टोकरा ; बाजरा ।
বাজা (क्रि परि ३) —बजना, घड़ीमें समय होना (চারটে বেজেছে) ; सुननेमें कड़ा मालूम होना (কানে—), बुरा लगना (প্রাণে বেজেছে) । वि—बजने वाला (—ঘড়ি) ।
বাজান (-नो), বাজানো (क्रि परि १० —बजाना ; ठोंक कर जाँचना (টাকা—, হাঁড়ি—) ।
বাজারে वि—बाजारू ।
বাজি स—ভেলকি इंद्रजाल, जादूगरी (ভোজ—, —কর), आतशबाजी (—পোড়ানো) ; दाँव, बाजी (—রাখা) ; खेल । —মাত सं—खेलमें जीत ।
বাজী सं—घोड़ा बाण, बाजी ।
বাজীকরণ सं—औषधि प्रयोगसे कामोद्दीपन ।
বাজু सं—बाँहका एक गहना ; पलंगके बगलवाली लकड़ी ।
বাজে वि—तुच्छ निकम्मा, फजूल, फालतू ।
বাজেয়াপ্ত (-अ) वि—जब्त ।
বাঁঝা, বাঁজা स्त्री—বন্ধ্যা बाँझ ।
বাঞ্ছনীয় (-अ) वि—चाहने योग्य ।
বাঞ্ছা सं—इच्छा, चाह । বাঞ্ছিত (-अ) वि—चाहा हुआ, प्रार्थित । —কল্পতরু स—सभी इच्छाओंका पूरा करने वाला ; ईश्वर ।
বাট सं—मार्ग, रास्ता पथ ।
বাঁট सं—হাতল दस्ता (কোদালের—), गाय आदिके स्तनकी ढेपुनी ।
বাটখারা सं—बटखरा, बाट ।
বাটনা सं—पीसा हुआ मसाला , जो पीसा जाता है (—বাটা) ।
বাটপাড়, (-পার) सं—डाकू, लुटेरा, राहजन ।
বাটপাড়ি, (-পারি) सं—डकैती, राहजनी (চোরের উপর—) ।
বাঁটপাট, (-ভুই, -জল) सं—बटलोई ।
বাটা स—कटोरा (পানের— पानदान) । एक छोटी मछली ; बट्टा, छूट ।
বাটা, বাঁটা (क्रि परि ३)—पीसना (মসলা—) । वि—पीसा हुआ ।
বাঁটা (क्रि परि ३)—बाँटना ।
বাটালি सं—छेनी, रुखानी ।
বাটি स—পেয়ালা प्याली, कटोरी ।
বাটিকা सं—छोटा मकान (উদ্যান—) ।

বাটী सं—वाड़ि मकान, घर।
বাটুল सं—गोली, गेंद। [(ভাগ—)।
বাটোয়ারা, (বাঁ-) सं—बंटन बंटवारा ; तकसीम
বাটা, বাটা सं—बट्टा ; छूट।
বাড় सं—वृद्धि, बढ़ाव, बढ़ती। বাড়তি वि—आवश्यकतासे अधिक, फालतू। सं—बढ़ती।
বাড়ন্ত (-অ) वि—बढ़नेवाला, समाप्त (ঘরে চাল—)।
বাড়ই, বাড়্ই, বড়্ই सं—छूतार बढ़ई।
বাড়তি सं—बढ़ती, वृद्धि अधिकता।
বাড়ন, বাড়ুন सं—झांटा बढ़नी, झाड़।
বাড়ন্ত (-অ) वि—বাড় देखो।
বাড়া (क्रि परि ২)—बढ़ना, परोसनेके लिए सजाना (ভাত—)। वि—बढ़ा हुआ, परोसनेके लिए सजाया हुआ (—ভাত)।
বাড়ান (-नो), বাড়ানো (क्रि परि १०)—बढ़ाना, प्रशंसा करना, इज्जत दिखाना।
বাড়াবাড়ি सं—अधिक वृद्धि, अधिक मात्रामें कोई काम (—করা)।
বাড়ি सं—आघात चोट (লাঠির—)।
বাড়ি, বাড়ী सं—मकान, घर। (কোঠা—, सं—पक्का मकान। বার— सं—बाहरको मंजिल। শ্বশুর— सं—ससुरार)। বাড়ী বাড়ী—हर एक मकान।
বাঁড়ুজ্যে सं—বন্দ্যোপাধ্যায়। [লিংग।
বাণলিঙ্গ (-অ) सं—नर्मदा नदीमें प्राप्त शिव-
বাণিজ্য (-অ) सं—ব্যবসায় व्यापार।
বাণ্ডিল सं—पुलिन्दा बंडल।
বাত सं—वायु, हवा (বাতাহত); गठिया। —কর্ম (-অ) सं—अधोवायु त्याग।
বাতলান (-नो), বাতলানো (क्रि परि १६)—बतलाना, समझा देना।
বাতাবি सं—एक प्रकारका बड़ा नीबू।
বাতায়ন सं—खानाला जंगला, झरोखा।

বাতাস सं—वायु (—করা, पंखा झलना)।
বাতাসা सं—बतासा। [भ्रष्ट (—वृक्ष)।
বাতাহত (-অ) वि—हवासे घायल या नष्ट-
বাতি सं—दीया, बत्ती (সাঁঝের—)।
বাতিক सं—बाई सनक, पागलपन ; प्रबल शथ शौक (মাছ ধরা—)।
বাতিল वि—रद्द, खारिज।
বাতুল वि—पागल, सनकी।
বাত্যা सं—झड़ आँधी।
বাৎসরিক वि—सालाना, वार्षिक। [प्रति स्नेह।
বাৎসল্য (-অ) स—माता-पिताका संततिके
বাথান सं—गोशाला, गोचर भूमि।
বাদ सं—वाक्य (অনু-); कथन, तर्क (বাদানু-); झगड़ा ; विचार, मत (অদ্বৈত—); बाधा, प्रतिबंध, शत्रुता (—সাধা); वर्जन, त्याग (—দেওয়া)। বাদে—क्रि वि—सिवाय, छोड़कर (তুমি আমি—); बाद (তিন দিন—)।
বাদক वि, सं—बजानेवाला, बजवैया।
বাদন सं—बाजा बजानेकी क्रिया।
বাদর सं—বাদল। [सा।
বাঁদর सं—वानर, बंदर। বাঁদুরে वि—बंदरका-
বাদল सं—বর্ষা वर्षा, बारिश। বাদলা सं—बारिश। वि—वर्षा सम्बन्धी, बदलीका।
বাদলে, বাদুলে वि—वर्षा सम्बन्धी, वर्षा ऋतुमें उत्पन्न।
বাদশাহ, বাদশা सं—बादशाह। বাদশাহি, (-শাই) सं—बादशाहत। বাদশাহী, (-শাই) वि—बादशाहका-सा।
বাদা सं—घना जंगल ; जलमय स्थान।
বাদাড় सं—जंगल।
বাদাম सं—নৌকার পাল नावका पाल, बादाम।
বাদিত (-অ) वि—बजाया हुआ।
বাদিত্র (-অ) सं—बाजा।

বাঁদিপোতা सं—डोरिया रंगीन कपड़ा (इससे प्रायः रजाई बनायी जाती है)।

বাদী वि, सं—बोलने वाला, दार्शनिक मत माननेवाला (অদ্বৈত—); मुद्दई, फरियादी। स्त्री—বাদিনী।

বাঁদী स्त्री—दासी, लौंडी बांदी।

বাদুড় सं—चमगादड़।

বাদে क्रि वि—বাদ देखो।

বাদ্য (-অ) सं—बाजा, बाजेका बजना। —ভাণ্ড (-অ) सं—बाजे-गाजे।

বাধ सं—बाधा, प्रतिबंध, शत्रुता (—সাধা)।

বাঁধ सं—बाँध, बंद; धुस्स।

বাধক वि—बाधा देनेवाला। सं—विघ्न, एक स्त्री रोग, रजोदोष।

বাঁধন सं—बंधन (দড়ির—, স্নেহের—)। বাঁধনি, বাঁধুনি सं—बंधन; शृंखला (কথার—)।

বাধা सं—विघ्न, रुकावट, प्रतिबंध, अड़चन, कार्यके आरंभमें छींक आदि अशुभ लक्षण।

বাধা (क्रि परि २) —अटकना, फँसना (পেরেকে কাপড়—); नियम-विरुद्ध होना (সবকে বাধে, আইনে বাধে); कठिन मालूम होना। (গোল—, गड़बड़ाना, झगड़ा खड़ा होना। মামলা—, मुकदमा छिड़ना। যুদ্ধ—, लड़ाई छिड़ना)।

বাধান (-নো), বাধানো (क्रि परि १०) —अटकाना, फँसाना, उलझनमें डालना छेड़ना (মুশকিল—, ঝগড়া—)।

বাঁধা सं—दृढ़ रेहन, गिरो।

বাঁধা (क्रि परि २) —बाँधना (বেড়া—, সোনার—, বই—, ঘর—), रोकना (ট্রামগাড়ি—); मिलना, जमना (দল—, জমাট—); कड़ा करना (বুক—, साहस करना); रचना (গান—)। वि—बँधा हुआ; नियत (—মাহিনা)। বাঁধাই सं—बंधाई। —বাঁধি सं—धराबाँधा नियम बंधा हुआ नियम।

বাঁধান (-নো), বাঁধানো (क्रि परि १०) —बंधवाना, बनवाना (দাঁত—, ফ্রেম—)। वि—बँधा हुआ; बनाया हुआ।

বাধিত (-অ) वि—बाधा-प्राप्त; कृतज्ञ, एहसानमंद (—হওয়া, —থাকা)।

বাধ্য (অ) वि—আজ্ঞাবহ आज्ञाकारी (বাপের—); मजबूर होने वाला (হইতে—, করিতে—)। বাধ্যতা सं—वशमें रहनेका भाव, आज्ञाका पालन करना। বাধ্যবাধকতা सं—एकके दूसरेके वशमें रहनेका सम्बन्ध।

বান सं—বন্যা, जल प्लावन बाढ़।

বানচাল वि—जिसकी पेंदी फट गयी है (নৌকা—হওয়া); अस्त-व्यस्त।

বানর सं—बंदर, कपि। বানুরে वि—बंदरका-सा। स्त्री—বানরী।

বানান सं—हिज्जे, अक्षर-विन्यास।

বানান (-নো), বানানো (क्रि परि १०) —बनाना, रचना, रसोईके लिए काटना (তরকারি—)। वि—बनाया हुआ, रचा हुआ; काटा हुआ। [(গহনার—)।

বানি सं—बनानेकी मजदूरी, बनवाई

বান্ত (-অ) सं—कै से निकली हुई चीज।

বান্দা सं—গোলাম गुलाम, बंदा, नौकर; (व्यंगमें) आदमी (আমি তেমন—নই)।

বান্ধব सं—बांधव, कुटुंबी; दोस्त। বান্ধবী स्त्री—बंधुकी पत्नी, पुरुषका नारी-बंधु; सखी, सहेली।

বাপ सं—বাবা पिता, बाप, जनक; स्नेह-संबोधन बेटा; (तुच्छार्थमें—বাপু); भय विस्मय आदि सूचक शब्द (বাপরে!)। বাপে

খেদানো মারে তাড়ানো वि—घरसे निकाला हुआ, आवारा।

বাপান্ত (-अ) सं—बापको गाली (—করা)

বাপী, বাপি स —पुष्करिणी तालाब।

বাপু सं—বাপ देखो।

বাফতা सं—बाफता एक रेशमी कपडा।

বাবত अ—জন্য, দরুন বাবদ (থাইখরচ—)।

বাবরি स —कंधे तक लटकते हुए घुंघराले बाल।

বাবলা सं—बबूल।

বাবা सं—বাপ पिता, बाप, स्नेह-संबोधन, बेटा, देवता साधु आदिकी उपाधि, (—বিশ্বনাথ, সাধু—); भय विस्मय कष्ट आदि सूचक शब्द। বাবাজী सं—साधु, संन्यासी, स्नेह-सबोधन (জামাতা—)। বা~-জীবন सं—स्नेह या आदर सूचक संबोधन।

বাবু सं—बाबू; कर्मचारी (আফিসের বড়—); शौकीन, विलासी, छैला। —গিরি, —য়ানা, —য়ানি सं—शौकीनी, छैलापन, बडे आदमीकी-सी चाल।

বাবুই सं—एक छोटी चिड़िया जो ताड़ खजूर आदिकी टहनियोंमें लटकता हुआ घोंसला बुनती है, बया।

বাবুর্চী सं—बावर्ची, मुसलमान रसोईदार।

বাম वि—বাঁ बायाँ (—দিক); विरुद्ध (বিধি—)। सं—बायीं ओर।

বামন वि, सं—बौना, नाटा आदमी; ब्राह्मण।

বামনাই सं—ब्राह्मणका अधिकार (तुच्छार्थमें)।

বামা स्त्री सुन्दरी स्त्री, नारी।

বামাচার स – एक तांत्रिक साधन जिसमें मदिरा मांस मछली मुद्रा और मैथुन आवश्यक है। বামাচারী स, वि वैसा साधक।

বামাবর্ত (अ) वि—जिसके पेंच बायीं ओर हो (—শঙ্খ); बायीं ओर घूमने वाला।

বামাল क्रि वि—मालके साथ (চোর—ধরা পড়েছে)।

বামুন सं ब्राह्मण, बाभन, रसोइया।

বামেতর वि –ডান दहिना।

বায় सं—বায়ু, हवा।

বায়না स —बयाना, पेशगी; किसी वस्तुके पानेके लिए बच्चोंकी जिद या हठ।

বায়ব, বায়বীয়, বায়ব্য (-अ) वि—वायु सम्बन्धी, वायुके तुल्य।

বায়স सं—কাক कौआ।

বাঁয়া सं—तबलेके साथ बायीं ओर बजाये जानेवाला बाजा बायाँ।

বায়ু स—वायु, हवा, वायु-रोग, सनक। —গ্রস্ত (-अ) वि—पागल, सनकी। —যান सं—हवाई जहाज।

বায়োস্কোপ सं —চলচ্চিত্র सिनेमा।

বার सं—वार सप्ताहका दिन, दफा (এই—, প্রত্যেক—); बारी (—পড়া), समूह साधारण (—নারী, वेश्या)। सं—मनाही। বার-বার, বারংবার क्रि वि वार वार, पुन· पुनः।

বার सं, वि =বাহির (—ক'রে দাও)।

বার (-अ), বারো वि, स – बारह, १२। —ভূত सं—साधारण मनुष्य, ऐरा-गैरा आदमी। —মেসে वि—वारहों महीने होने या फलने वाला, वारहमासी।

বারক वि –मना करने या रोकने वाला।

বারকোশ स —लकड़ीकी बडी थाली।

বারণ सं—रोक, निषेध, मनाही। বারণীয় (-अ) वि -निषेध करने या रोकने योग्य।

বারণ स —হস্তী हाथी।

বারত्ত स —वार्ता समाचार।

বারনারী, (-বধূ, -বনিতা) स्त्री—वेश्या।

বারবরদার स —बोझ ढोने वाला। বার বরদারি सं—बोझ ढोनेका काम या मजदूरी।

বারয়িতা वि—रोकने या मना करने वाला।

বারশিঙ্গা सं—बारहसिंगा, एक हरिण।

বারাঙ্গনা स्त्री=বারনারী। [(বারান্তরে)।

বারান্তর सं—दूसरी बार दूसरा समय

বারান্দা, বারাণ্ডা सं—बरामदा, ओसारा।

বারি सं—जल पानी। [(গোরা—) barrack

বারিক सं—सिपाहियोंके रहनेका घर

বারিত (-अ) वि—रोका या मना किया हुआ।

বারিদ, বারিবাহ, বারিবাহক सं—बादल, मेघ।

বারুই, বারুজীবী सं—पान रोपने और बेचने वाली एक जाति।

বারুদ सं—बारूद।

বারেক क्रि वि—एक बार।

বারেন্দ্র (-अ) सं—उत्तरी बंगालके ब्राह्मणों या कायस्थोंकी एक श्रेणी।

বারোয়ারি सं—मुहल्लेके सभीकी सहायतासे किया जानेवाला उत्सव या पूजा आदि।

বার্তা, (-র্ত্তা) सं—वार्ता, समाचार, खबर। —বহ (-अ) सं—खबर ले जाने वाला दूत।

বার্তাকু सं—बेगन भंटा।

বার্ধক্য (-अ) सं—वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

বার্নিশ सं—चिकना करनेके लिए लेप।

বার্য (-अ) वि—বারণীয়। —মাণ वि—मना किया जाने वाला।

বার্লি सं—जौका महीन आटा, बार्ली।

বার্ষিক वि—सालाना। বার্ষিকী सं—दक्षिणा जो सालमें एक बार गुरुओं या पंडितोंको दी जाती है।

বাল सं—बालक, शिशु। —খিল্য (-अ) सं—पुराणोंमें कथित अंगूठेके समान ऋषि, (तुच्छार्थमें, नादान बच्चे (युवकोंका बच्चोंका-सा बर्ताव देख कर कहा जाता है)। —চর্যা सं—शिशु पालन। —বিধবা स्त्री बचपनमें विधवा। —ভাষিত (-अ) सं—बच्चोंकी बात। —রোগ सं—बच्चोंका रोग। —সুলভ वि—बच्चोंका-सा।

বালতি सं—बालटी।

বালাপ্পা सं=বাইল।

বালা सं—कंगन, कड़ा, बालिका।

বালাই सं—बला, अमंगल (—নিয়ে মরি); अशुभ सूचक बातोंके उत्तरमें उक्ति (বালাই, মরবে কেন)। [इमारत।

বালাখানা सं—कोठेके ऊपरका कमरा,

বালাপোশ सं—दोलाई पतली रजाई, रूईदार ओढ़ना। [प्रकारका उसना भुजिया चावल।

বালাম सं—चावल ढोनेवाली बड़ी नाव, एक

বালি सं—बालूका बालू। —য়াড়ি सं—बालूका टीला या पहाड़।

বালিশ सं—उपाधान तकिया।

বালু, বালুকা सं—बालू।

বাল্য (-अ) सं—लड़कपन।

বাঁশ सं—बाँस। —গাড়ি सं—जमीनकी हद दिखानेके लिए बाँस या खूँटा गाड़नेकी क्रिया।

বাঁশরি, বাঁশি सं—बाँसुरी।

বাষট্টি वि, सं—बासठ ६२।

বাষ্প (-अ) सं—भाप ; आँसू (—মোচন, বাষ্পাকুল) ; आभास, लेश (বাষ্পও জানি না)। —পোত सं—अगिनबोट, धूआँकश। —যান, —রথ, —শকট सं—রেলগাড়ি रेलगाड़ी।

বাষ্পীয় (-अ) वि—भाप-सम्बन्धी।

বাস सं—अवस्थान, स्थिति, निवास ; वस्त्र, सुगंध, महक।

বাস্ अ—बस।

বাসক (বাসক্) सं—अडूसा।

বাসক (বাসক্-अ) सं=বাকস।

বাসন सं—सुवासित करण, बासन ; बरतन, पात्र (মাটির—, —কোসন)।

বাসনা सं—इच्छा।

বাস্না सं—केलेके पेड़का छिलका।

বাসন্তিক वि—वसन्त सम्बन्धी।

বাসন্তী स्त्री—दुर्गा देवी। वि—वसन्त सम्बन्धी, वासंती रंगका। —পূজা सं—चैत्र शुक्ला सप्तमीसे नवमी तक की जानेवाली दुर्गापूजा।

বাসব सं—इन्द्र।

বাসর सं—दिन दिवस (রবি—, শ্রাদ্ধ—)। —ঘর सं—जिस कमरेमें विवाहकी रात्रिको दुलहा-दुलहिन रहते हैं। —জাগা सं—विवाह की रात्रिको दुलहे-दुलहीनके साथ स्त्रियों का जागना।

বাসা सं—ভাড়াটে বাড়ি ডেরা, किरायेका मकान; घोंसला (পাখির—), जानवरोंके रहनेका स्थान (বাঘের—, সাপের—)।

বাসা (क्रि परि ३)—समझना। ভাল—क्रि—प्यार करना।

বাসাড়ে वि, सं—किरायादार।

বাসিত (-अ) वि—सुवासित, सुगंधित।

বাসিন্দা सं—वाशिंदा, निवासी।

বাসী वि—रहनेवाला, निवासी, बासो (—ভাত)। —ঘর सं—जिस कमरेमें सुबह झाड़ू नहीं लगाया गया है। —কাপড় सं—रातका पहना हुआ कपड़ा। —বিয়ে, —বে सं—विवाहके दूसरे दिनका कुशण्डिका आदि अनुष्ठान। —মড়া सं—पिछली रातका मरा हुआ मुर्दा। —মুখ सं—सुबह बिना धोया मुख।

বাস্তু सं—निवासस्थान, पुश्तैनी मकान। वि—वंश-परंपरासे बसा हुआ (—ভিটা)। —কার सं—इंजीनियर। —সাপ सं—जो पुराना साँप घरमें डेरा बनाये रहता है। —হারা वि, स—उद्‌वासित।

বাহ (-अ), বাহক वि—बोझ ढोने वाला। (ভার—); ले जाने वाला (সংবাদ-বাহক)।

বাহন सं—जिसके द्वारा ढोया जाय, सवारी।

বাহবা, বাহা अ—বাঃ, শাবাশ वाह वाह, शाबाश।

বাহাত্তর वि, सं—बहत्तर, ७२। বাহাত্তুরে वि—७२ साल उमर वाला, बढ़ापेके कारण जिसकी बुद्धि काम नहीं देती।

বাহাদুর वि—बहादुर, वीर। सं—एक उपाधि (রায়—, রাজা—)। বাহাদুরি सं—बहादुरी।

বাহাদুরী কাঠ सं—साखू आदिकी कड़ी लकड़ी।

বাহানা, বায়না सं—आवदार किसी वस्तुके पानेके लिए बच्चों आदिकी जिद या हठा; छूता बहाना।

বাহান্ন (-अ) वि, सं—बावन, ५२।

বাহার सं—बहार, शोभा। [नियुक्त, मुकर्रर।

বাহাল वि—बजाय बहाल, ज्यों-का-त्यों, कायम,

বাহিত (-अ) वि—ढोया हुआ, बहा हुआ, जिसके द्वारा चलाया जाय (মনুষ্য— যান)।

বাহিনী सं—सेना, फौज, नदी। वि—ढोनेवाली, बहनेवाली (কাশীতে গঙ্গা উত্তর—)।

বাহির, বার सं—बाहरी स्थान। क्रि वि—बाहर। वि—निकला हुआ। বাহিরে, বাইরে क्रि वि—बाहर, दूसरी जगह।

বাহিরায় क्रि—বাহির হয় बाहर निकलता है।

বাহিরিল (-अ) क्रि—বাহির হইল बाहर निकला।

বাহী वि—ढोनेवाला (ভার—)।

বাহু सं—भुज भुजा, बाँह। —বল सं—हाथ या शरीरकी शक्ति। —মূল सं—काँख, बगल। —যুদ্ধ (-अ) सं—कुश्ती।

বাহুল্য (-अ) सं—बहुतायत, अधिकता।

বাহ্য (वाज्झ-अ) वि—बाहरका, बाहरी (—জগৎ)। —জ্ঞান स—बाहरी विषयोंका

জ্ঞান, হোশ। —ইন্দ্রিয় (-अ), বাহ্যেন্দ্রিয় সं—बाहरी इंद्रिय। [वि—ढोया जानेवाला।
বাহ্য (बाज्झ-अ) वि—ढोने योग्य। —यान
বাহ্যে (बाज्झे) सं—मल, पखाना, दस्त। —করা क्रि—पखाना फिरना। —পাওয়া क्रि—झाड़ा लगना। —যাওয়া क्रि - पखाने जाना।
বাহ্বাস্ফোট (बाव्भास्फोट) सं—बाँह पर थप्पड़, ताल ठोंकनेकी क्रिया; ललकार।
বিউলি सं—छिलका-रहित उड़दकी दाल।
বিংশ (-अ), বিংশতি वि, सं—बिश, कुड़ि बीस, २०।
বিকচ वि—खिला हुआ; केश-रहित।
বিকট वि—भयंकर (—চীৎকার, —মূর্তি), उत्कट (—শব্দ)।
বিকনো क्रि—বিকানো।
বিকম্পিত (-अ) वि—अधिक कंपित।
বিকরাল वि—भयजनक, भीषण।
বিকর্ষণ सं—विरुद्ध दिशाका खिचाव, आकर्षण का उलटा repulsion
বিকল वि—अंशरहित, अपूर्ण, बिगड़ा हुआ; व्याकुल। বিকলাঙ্গ (-अ) वि—जिसका कोई अंग टूटा या खराब है।
বিকশিত, বিকসিত (-अ) वि—खिला हुआ।
বিকান (-नो), বিকানো (क्रि परि ११)—बिक जाना, खपना।
বিকার स—परिवर्तन, अवस्यान्तर, खराबी, सड़ाव, परिवर्तनसे उत्पन्न वस्तु जैसे दूधका विकार दही; तेज बुखारके कारण बुद्धिका विकार, प्रलाप। বিকারী वि—परिवर्तनशील, विकारको प्राप्त होनेवाला। বিকার্য (-अ) वि—विकृत होने योग्य। [पहर (—বেলা)
বিকাল, বৈকাল, বিকেল सं—यपराह्न तीसरा
বিকাশ, বিকাস सं—विकास, खिलना, प्रकाश।
বিকিকিনি सं—বেচা-কেনা खरीद-फरोख्त।
বিকিরণ स—ছড়ানো चारों ओर फैलाना (আলোক—) radiation
বিকৃত (-अ) वि—विकारप्राप्त। —মস্তিষ্ক (-अ) वि—पागल, सनकी। বিকৃতি स—विकार।
বিকেল सं—विकाल।
বিক্রয় सं—বিক্রি बेचना, बिक्री। বিক্রয়ী वि—बेचनेवाला। বিক্রি सं—बिक्री, फरोख्त।
বিক্রীত (-अ) वि—बिका हुआ। বিক্রেতা वि, सं—बेचनेवाला। स्त्री—বিক্রেত্রী। বিক্রেয় (-अ) वि—बिकने योग्य।
বিক্রিয়া सं—विकार, विकृति। [রক্ত—)।
বিক্ষত (विक्खत-अ) वि—आहत घायल
বিক্ষিপ্ত (-अ) वि—छितराया हुआ, बेचैन (—চিত্ত)।
বিক্ষুব্ধ (-अ) वि—हिलाया हुआ; चंचल।
বিক্ষেপ सं—फेंकाव, निक्षेप; बेचैनी (চিত্ত—)।
বিক্ষোভ सं—हिलाव, चचलता, बेचैनी।
বিখ্যাত (-अ) वि—प्रसिद्ध, नामवर। বিখ্যাতি स—प्रसिद्धि, नामवरी।
বিগড়ান (-नो), বিগড়ানো, বিগড়নো (क्रि परि १७)— बिगड़ना, खराब होना; विरुद्ध होना; बिगाड़ना।
বগত (-अ) वि—अतीत बीता हुआ।
বিগর্হিত (-अ) वि—निंदित, घृणित।
বিগলিত (-अ) वि—गला हुआ।
বিগ্রহ (-अ) सं—देवताकी मूर्ति; शरीर; युद्ध, शब्द विच्छेद।
বিঘটন सं—अंशका अलग अलग होनेकी क्रिया; विश्लेषण; ध्वस।
বিঘত सं—बित्ता, लगभग ९ इंच।
বিঘা सं—बीघा, ३२०×२० वर्ग हाथ भूमिका परिमाण, एक एकर का प्राय- तृतीयांश।
বিচক্ষণ वि—बुद्धिमान, अनुभवी, निपुण।

বিচরণ सं—भ्रमण, टहलना।

বিচার सं—तर्क, बहस, विचार, मीमांसा, फैसला (হাকিমের—)। বিচারক सं—विचार करनेवाला, हाकिम। বিচারণীয়, বিচার্য্য (-अ) वि—विचारने योग्य। বিচারালয় सं—अदालत। বিচারিত (-अ) वि—विचार किया हुआ।

বিচালি सं—धड़ पुआल, चारा।

বিচি, বীচি सं—बिया, बीज।

বিচিকিৎসা सं—सदेह, शक।

বিচূর্ণ (-अ) सं—बारीक चूर्ण, महीन बुकनी। বিচূর্ণিত (-अ) वि—अच्छी तरह चूर्ण किया हुआ।

বিচ্ছু सं—केंकड़ा विछा विच्छू। [सं—पतन।

বিচ্যুত (-अ) वि—गिरा हुआ, पतित। বিচ্যুতি

বিছা सं—बिच्छू, गोजर।

বিছান (-नो), বিছানো (क्रि परि ११)—পাতা बिछाना। वि—बिछाया हुआ।

বিছানা सं—बिछौना, बिस्तरा।

বিছুটি, বিছুতি सं—एक जंगली पौधा जिसके छूनेसे जलन पैदा होती है और खुजलाता है, बिच्छूका पौधा। [में जमाव।

বিজবিজ सं—কিলবিল छोटे कीड़ोंका एक स्थान

বিজয়া सं—दुर्गा; भांग; दुर्गामूर्ति जलमें बहानेकी तिथि, आश्विन शुक्ला दशमी।

বিজলী, (-লি) सं—বিদ্যুৎ बिजली।

বিজাতি सं—भिन्न जाति। বিজাতীয় (-अ) वि—भिन्न जातिका; अत्यंत (—ক্রোধ)।

বিজিগীষা सं—विजय पानेकी इच्छा। বিজিগীষু वि—विजय पानेके इच्छुक।

বিজুরি सं—बिजली।

বিজৃম্ভন सं—হাই তোলা जम्हाई।

বিজোড় वि—बेजोड़, दो से भाग देनेके अयोग्य।

বিজ্ঞ (बिग्ग-अ) वि—ज्ञानी, पडित।

বিজ্ঞাত (-अ) वि—अच्छी तरह जाना हुआ।

বিজ্ঞেয় (-अ) वि—अच्छी तरह जानने योग्य।

বিট सं—काला नमक।

বিটকেল (बिट्केल) वि—बदसूरत, भद्दा।

বিটপী सं—पेड़, वृक्ष।

বিটলে (बिट्ले) वि—धूर्त, पाजी, दुष्ट।

বিড়ঙ্গ (-अ) सं—बायविड़ंग।

বিড়বিড় सं—अस्पष्ट धीमी बात।

বিড়ম্বনা, বিড়ম্বন सं—वृथा चेष्टा, धोखा; क्लेश। বিড়ম্বিত (-अ) वि—वंचित, धोखा खाया हुआ; हानि उठाया हुआ।

বিড়া, বিড়ে, বিঁড়ে सं—बींड़ा, गेंडुरी; पानके २० गड्डेकी ढोली।

বিড়াল सं—বেড়াল बिल्ली; बिलाव। स्त्री—বিড়ালী। —তপস্বী वि—बगुला भगत।

বিড়ি सं—बीड़ी, पानका बिड़ा।

বিতণ্ডা (वितण्डा) सं—कुतर्क।

বিতস্তি सं—বিঘত बित्ता।

বিতাড়িত (-अ) वि—भगाया हुआ।

বিতান सं—চাঁদোয়া चंदवा, मडप।

বিতিকিচ্ছি वि—बदसूरत, भद्दा।

বিতৃষ্ণ (-अ) वि—तृष्णा-हीन, निस्पृह, जिसमें इच्छा न हो। বিতৃষ্ণা सं—अनिच्छा, घृणा, विराग।

বিত্ত (-अ) सं—सम्पत्ति, जायदाद, धन।

বিত্রস্ত (-अ) वि—बहुत घबड़ाया हुआ।

বিদকুটে, (-घुटे) वि—बदसूरत, भद्दा।

বিদায় सं—दूर करण, अपसारण (আপদ— করা); जानेकी आज्ञा (—চাওয়া); बिदा, प्रस्थान, रुखसत; बिदाई; दक्षिणा (ব্রাহ্মণ—, কাঙালী—)।

বিদারণ सं—तोड़फोड़। বিদারক वि—तोड डालनेवाला (হৃদয়—)। বিদারিত वि—तोड़ा हुआ।

विदाही वि—जलानेवाला ; जलन पैदा करनेवाला।

विदुषी स्त्री—विद्यावती स्त्री।

विदूरित (-अ) वि—विताड़ित। [घायल।

विद्ध (-अ) वि—विंधा हुआ, छेद किया हुआ,

विद्युच्छ्टा सं—विजलीकी चमक।

विद्युत् सं—विजली। विद्युद्गर्भ (-अ) वि—जिसके भीतर विजली है। विद्युद्दाम, विद्युन्माला सं—विजलीकी रेखायें। विद्युद्वेग सं—विजलीकी तरह गति।

विद्योत्साही वि—विद्यामें उत्साह देनेवाला।

विद्रावित (-अ) वि—पिघला हुआ।

विद्रूप सं—दिल्लगी, हँसी, मजाक।

विद्वज्जन सं—विद्वान व्यक्ति।

विद्वत्कल्प (-अ) वि—पंडिततुल्य।

विद्विष्ट (-अ) सं—ढंकना पात्र।

विध, विधा सं—प्रकार (नानाविध)।

विंध सं—छिद्र, छेद।

विंधा, वेंधा (क्रि परि ५)—कोंटा विंधना, छेदना। वि—विंधा हुआ, छिदा हुआ।

विंधान (-नो), विंधानो, विंधनो, वेंधानो (क्रि परि ११)—विंधाना, छेद कराना।

विधान सं—विधि व्यवस्था, नियम ; संपादन (मर्यादा—)।

विधाय अ—कारण कारणसे।

विधि सं—नियम, व्यवस्था, कानून, पद्धति, क्रम, उपाय ; तकदीर ; ब्रह्मा। —पूर्वक क्रि वि—विधिसे, नियमसे। —बद्ध (-अ) वि—नियम-बद्ध। —मत क्रि वि—नियमसे, अच्छी तरह। —लिपि सं—करमका लेख, भाग्य। —सम्मत (-अ) वि—उचित।

विधित्सा सं—इच्छा, इरादा।

विधूत, विधृत (-अ) वि—कंपित।

विधुर वि—कातर दु:खी। स्त्री—विधुरा।

विधेय (-अ) वि—उचित, ठीक, करने योग्य।

विध्वंस (-अ) सं—विनाश, लोप। विध्वंसी वि—नाश करने या होने वाला। विध्वस्त (-अ) वि—नष्ट, बरबाद।

विनत (-अ) वि—झुका हुआ, प्रणत। विनति सं—विनय, नम्रता, झुकाव प्रार्थना।

विननि, विनुनि सं—वेणी बंधन।

विनान (-नो), विनानो, विननो (क्रि परि ११)—वेणी गूँथना, लट सन आदि बंट कर वेणीकी तरह बनाना, विलाप करना (विनिये कांदा)। वि—वेणीकी तरह गूँथा हुआ।

विनामा वि—नाम-हीन, गुम-नाम।

विनाशी वि—नाशवान, ध्वंसशील।

विनि, बिनि क्रि वि—विना, सिवाय (विनि सुताय गाँथा)। [हुआ।

विनि:सृत (विनिस्सृत-अ) वि—निकला

विनिद्र (-अ) वि—निद्राहीन (—रजनी) विनिद्रा सं—निद्राका अभाव, जागरण।

विनिपात सं—पतन, दैवी बला।

विनिवर्तन सं—प्रत्यावर्तन लौटना, वापसी। विनिवर्तित (-अ) वि—लौटाया हुआ, रोका हुआ। विनिवृत्त (-अ) वि—लौटा हुआ, रुका हुआ।

विनिमय सं—बदला, परिवर्तन।

विनियोग सं—अर्पण, प्रयोग। [प्रेरित।

विनियोजित (-अ) वि—नियुक्त, आदिष्ट,

विनोद सं—आमोद विनोद खेल-कूद। वि—मनोहर (—वेश)। विनोदन सं—तोषण (चित्त—)। विनोदिनी स्त्री—तोषण करनेवाली, राधिका।

विन्ति स—ताशका एक खेल ; क्रमिक तीन ताशोंका समूह।

विन्दू सं—छोटा बूँद ; विंदी, चिह्न। —विसर्ग (-अ) सं—जरा भी (—जानि ना)।

বিন্যাস सं—स्थापन, सजावट, रचना (বেশ—)।
বিন্যস্ত (-अ) वि—स्थापित, सजाया हुआ।
বিপজ্জনক वि—खतरनाक।
বিপণি, (-ণী) सं—दूकान, बाजार।
বিপৎকাল सं—विपत्तिका समय।
বিপত্নীক वि—মৃতদার जिसकी पत्नी मर गयी है, [रँडुआ।
বিপৎসংকুল वि—खतरनाक।
বিপথ सं—बुरा मार्ग (—গামী)।
বিপদুদ্ধার सं—विपत्तिसे उद्धार।
বিপদ্গ্রস্ত (-अ) वि—विपत्तिमें पड़ा या फसा हुआ।
বিপদ্ভঞ্জন सं, वि—विपत्ति दूर करना या करने- [वाला।
বিপন্ন (-अ) वि=বিপদ্গ্রস্ত।
বিপন্মুক্তি (विपन्मुक्ति) सं—विपत्तिसे छुटकारा।
বিপাক सं—कर्मका फल, विपत्ति, विपरिणाम।
বিপিতা सं—সৎবাপ सौतेला बाप।
বিপিন सं—वन, जंगल।
বিপুল वि—विशाल, बहुत बड़ा, महान।
বিপ্রকর্ষণ सं=বিকর্ষণ।
বিপ্রলম্ভ (-अ) सं—धोखा, झगड़ा, नियोग। বিপ্রলব্ধ (-अ) वि—वंचित, धोखा खाया हुआ। বিপ্রলব্ধা स्त्री—निर्दिष्ट स्थानमें जा कर नायकको न पानेवाली नायिका।
বিফল वि—निष्फल, नाकामयाब, असिद्ध।
বিবক্ষা सं—बोलनेकी इच्छा।
বিবদমান वि—जो विवाद कर रहा है, झगड़ा [करनेवाला।
বিবমিষা सं—कै करनेकी इच्छा, ओकाई।
বিবর सं—गढ़ा, गुफा, छिद्र।
বিবরণ सं—ब्योरा, वृत्तान्त, वर्णन। বিবরণী सं—विवरण युक्त लेख (সভার কার্য—)।
বিবর্ণ (-अ) वि—जिसका रंग विकृत हो गया है, मलिन, फीका।
বিবর্ত (-अ) सं—चक्कर, परिवर्तन, एकमें दूसरेका भान। —বাদ सं—मायावाद, स्वप्नमें आत्म-निष्ठ मनके द्वारा अनेक वस्तुओं तथा व्यक्तियों की कल्पनाकी तरह ब्रह्म-निष्ठ मायाके द्वारा इस विचित्र सृष्टिकी कल्पना हुई है ऐसा वेदान्तका सिद्धान्त।
বিবসন, বিবস্ত্র (-अ) वि—नंगा।
বিবস্বান सं—भास्कर, सूर्य।
বিবাগ सं—विदेश, परदेश। বিবাগী वि—देशत्यागी; सन्न्यासी।
বিবাদ सं—झगड़ा, विरोध, तकरार, मुकदमा। বিবাদী वि—झगड़ालू; विवाद सम्बन्धी (—সম্পত্তি)। सं—मुद्दालेह।
বিবি स्त्री—बीबी, मेम; ताशकी बीबी। বিবিয়ানা सं—मेमोंकी तरह चाल या शौकीनी। —কুমড়া सं—कोंहड़ा काशीफल।
বিবিক্ত (-अ) वि—सुनसान, अकेला।
বিবুধ सं—विद्वान्, पंडित।
বিবৃত (-अ) वि—वर्णित, विस्तृत। বিবৃতি सं—वर्णन, व्याख्या, मंतव्य।
বিবেক सं—धर्मज्ञान, वैराग्य, हिताहितका [ज्ञान।
বিবেচনা सं—विचार। বিবেচনীয় (-अ), বিবেচ্য (-अ) वि—विचारके योग्य। বিবেচিত (-अ) वि—विचार किया हुआ।
বিব্রত (-अ) वि—ব্যতিব্যস্ত घबड़ाया हुआ, [परेशान।
বিভক্ত (-अ) वि—बँटा हुआ, खंडित, अलग किया हुआ।
বিভা सं—प्रभा, किरण, प्रकाश।
বিভাজক—वि, सं—भाग करनेवाला, भाजक।
বিভাজ্য (-अ) वि—भाग करने योग्य, भाज्य।
বিভাবন, (-না) सं—चिंता, विचार।
বিভাবরী सं—रात्रि, रजनी।
বিভাবসু सं—सूर्य, अग्नि, चंद्रमा।
বিভুঁই सं—परदेश।
বিভোর वि—मशगूल, लवलीन, तन्मय।

বিভ্রাট सं—गड़बड़ी, संकट।

বিভ্রান্ত (-अ) वि—भ्रममें पतित, हक्काबक्का। বিভ্রান্তি सं—भ्रम।

বিমনস্ক, বিমনা वि—अनमना, उदास।

বিমা सं—बीमा।

বিমাতা स्त्री—सौतली माँ।

বিমানঘাঁটি सं—हवाई जहाजका अड्डा।

বিমুখ वि—प्रतिकूल, खिलाफ।

বিয়স্তি (-अ) स्त्री—सद्य प्रसूति।

বিয়া, বিয়ে सं—विवाह, शादी।

বিয়ান, বিয়েন सं—प्रसव (তিন—)।

বিয়ান (-নো), বিয়ানো, বিয়নো (क्रि परि ११) —प्रसव करना, जनना, ब्याना।

বিয়াল্লিশ वि, सं=বেয়াল্লিশ।

বিরক্ত (-अ) वि—वैराग्य-युक्त, अनुराग-रहित; नाराज; परेशान (—করা)। বিরক্তি सं—वैराग्य; परेशानी (—কর)।

বিরত (-अ) वि—निवृत्त। বিরতি सं—निवृत्ति।

বিরাগ सं—आसक्ति-हीनता, उदासीनता, वैराग्य।

বিরাজ सं—स्थिति, अवस्थान। বিরাজমান वि—अवस्थित, शोभमान, मौजूद। বিরাজিত (-अ) वि—अवस्थित।

বিরানব্বই वि, सं—बानवे, ९२।

বিরাশি, (-শী) वि, सं—बयासी, ८२।

বিরূপ वि—कुरूप; असन्तुष्ट। [झील।

বিল स—गर्त गढ़ा, गुफा; जलमय स्थान,

বিলকুল वि—पृथक्; अनोखा। क्रि वि—अच्छी तरह। अ—आश्चर्य!

বিলাত, বিলেত स—विलायत। বিলাতী, বিলিতী वि—विलायती।

বিলান (-নো), বিলানো, বিলনো (क्रि परि ११) —बाँटना, वितरण करना। [बस्त।

বিলি सं—वितरण, बाँटना, पट्ट पर देना, बंदो-

বিলীয়মান वि—लय होने वाला।

বিলেপন, বিলেপ सं—पोतना; लेप।

বিলোকন सं—दर्शन, अवलोकन।

বিলোড়ন सं—हिलाव, मथन।

বিলোম वि—विपरीत, उलटा।

বিলোল वि—चंचल, अस्तव्यस्त, लालचभरा।

বিল্ব (বিল্ল -अ) सं—श्रीफल बेल।

বিশ सं, वि—बीस, २०।

বিশুষ্ক (-अ) वि—बहुत सूखा।

বিশ্রী (বিস্রী) वि—कुत्सित भद्दा, बदसूरत; अप्रिय (—কথা)।

বিশ্ব (বিশ্শ -अ) सं—संसार, ब्रह्माण्ड। वि—समस्त, तमाम। —জনীন वि—समस्त संसार या मनुष्य सम्बन्धी। —নিন্দক, —নিন্দুক वि—सभीकी निंदा करनेवाला। —বিশ্রুত (-अ) वि—जगत्-प्रसिद्ध।

বিশ্বসনীয় (-अ) वि=বিশ্বাস্য।

বিশ্বাস, বিশ্বেস सं—विश्वास; एतबार। —ভাজন सं—विश्वासका पात्र। —হন্তা वि—बेईमान। বিশ্বাস্য (-अ) वि—विश्वास-योग्य। [आराम।

বিশ্রাম, বিশ্রান্তি (বিস্রান্তি) सं—विश्राम,

বিষ सं—विष, जहर। —কুম্ভ (-अ) सं—विषका घड़ा; ईर्षालु। বিষঘ্ন (-अ) वि—विष-नाशक। —দন্ত, —দাঁত सं—जहरीला दाँत। —দুষ্ট (-अ) वि—जहरीला। —ফোড়া सं—जहरीला फोड़ा।

বিষম वि—দারুণ भीषण, बहुत कठिन, उत्कट; असमान, बेजोड़; श्वासनालीमें खाद्य-वस्तुके घुस जानेसे हिचकी (-লাগা, -খাওয়া)।

বিষয় सं—विषय, वस्तु, जायदाद। বিষয়ক वि—सम्बन्धी, विषयका। বিষয়ী वि—गृहस्थीमें आसक्त, दुनियादार। सं—जाननेवाला, ज्ञाता, आत्मा।

বিষান (-নো), বিষানো, বিষনো (क्रि परि ११) विषयुक्त होना ; बहुत दर्द करना (ফোড়া বিষিয়ে ওঠা)।

বিষুব सं—जिस समय दिन और रात का मान बराबर होता है। —সংক্রান্তি सं—चैत्र-संक्रान्ति।

বিষ্ঠা सं—गु मल।

বিসংবাদ सं—मतभेद, অমিল अनमेल, मनमुटाव, विरोध। [विरुद्ध।

বিসদৃশ (-अ) वि—भिन्न प्रकार का, उलटा,

বিসমিল্লা सं—खुदाका नाम ग्रहण ; (व्यंगमें) श्रीगणेश, कार्यारंभ (বিসমিল্লায় গলদ)।

বিসর্গ (-अ) सं—त्याग, मलत्याग, विसर्ग, (:) यह चिह्न। [रोग।

বিসর্প (-अ)—शरीरके चमड़ेमें तीव्र जलनका

বিসূচিকা सं—हैजा, कालरा। [हुआ, व्याप्त।

বিস্তৃত (विस्तृत-अ) वि—विस्तृत, फैला

বিসৃষ্ট (-अ) वि—छोड़ा हुआ, फेंका हुआ।

বিস্তর (विस्तर) वि—अनेक, प्रचुर।

বিস্ফারিত (विस्फारित-अ) वि—फैला हुआ, खुला हुआ (—নেত্র)।

বিস্ফোটক, বিস্ফোট सं=विषफोड़ा।

বিস্ফোরক वि—शीघ्र जलने या भभकने वाला। বিস্ফোরণ सं—धड़ाके के साथ फटना या जल उठना।

বিস্ময় (विस्मय) सं—आश्चर्य। —কর, বিস্ময়াবহ (-अ) वि—आश्चर्यजनक। —চিহ্ন (अ) सं—आश्चर्यका (! यह) चिह्न। বিস্ময়াবিষ্ট, বিস্ময়াপন্ন (-अ) वि—विस्मित, आश्चर्य-चकित।

বিস্রস্ত (विस्रस्त -अ) वि—पतित, गिरा हुआ।

বিস্বাদ (विस्वाद) वि—स्वादहीन, बेमजा।

বিহগ, বিহঙ্গ, বিহঙ্গম सं—पक्षी, चिड़िया। स्त्री— বিহগী, বিহঙ্গী, বিহঙ্গিনী, বিহঙ্গমী।

বিহনে क्रि वि—बिना, सिवाय।

বিহরণ सं—विहार, भ्रमण।

বিহান सं—प्रभात, सवेरा।

বিহ্বল (বিব্‌ভল) वि—व्याकुल, घबड़ाया हुआ।

বীচি सं—तरंग, लहर। —ভঙ্গ (-अ) सं—लहरका टूटना।

বীজ सं—বিচি, আঁঠি बिया, बीज, जीवाणु (দধির—, বসন্তের—) ; मूल, कारण। —মন্ত্র (-अ) सं—अपने इष्ट देवका प्रतीक-स्वरूप मंत्र।

বীজন सं—व्यजन पंखा झलना, हवा करना।

বীট सं—एक साग ; चीनी।

বীত (-अ) वि—गत, गुजरा हुआ। —কাম वि—कामना-रहित। —নিদ্র (-अ) वि—निद्राहीन। —রাগ वि—आसक्तिसे मुक्त। —শ্রদ্ধ (-अ) वि—जिसकी श्रद्धा नष्ट हो गयी है।

বীথি, বীথিকা, বীথী सं—श्रेणी, पाँति, वृक्ष-छायायुक्त मार्ग ; दूकान।

বীন सं—वीणा।

বীবর सं—ऊदबिलाव।

বীভৎস (-अ) वि—घृणा-योग्य, बदसूरत।

বীর-প্রসূ वि—वीर पुत्र जननेवाली।

বীরাচার सं—तंत्रोक्त एक साधन। বীরাচারী सं—वैसा साधन करनेवाला।

বুক सं—বক্ষ छाती, सीना, हृदय। —পাতা क्रि—दुःख सहनेके लिए तैयार होना। —বাঁধা क्रि—विपत्तिमें मन दृढ़ करना।

বুকনি सं—बुकनी, चूर्ण, चुटकुला।

বুচকি सं—छोटी गठरी, पोटली।

বুজরুক वि—पाखंडी। বুজরুকি सं—पाखंड।

বুজা, বুঁজা, বোজা, বোঁজা (क्रि परि ६)— मूंदना, भर जाना (গর্ত—)। वि—मूँदा हुआ, भरा हुआ।

बुझान (-नो), बुझानो बुझनो, बोझानो (क्रि परि १२)—भरना। वि—भरा हुआ।

बुझ स—बोध, समझ, बूझ, ढाढ़स (—मानে না)।

बुझ, बोझा (क्रि परि ६)—समझना, जानना, विचारना। —पड़ा, (बोझा पड़ा) सं—बातचीतके द्वारा निबटेरा।

बुझान (-नो), बुझानो, बुझनो, बोझानो (क्रि परि १२)—समझाना, जताना, व्याख्या करना, ढाढ़स देना।

बुझि क्रि—मुझे ऐसा लगता है, ऐसा अनुमान होता है, शायद (तुमि—राग करले? बुझि वा); है क्या? (तुइ बुझि?)।

बुट सं—छोला चना; बूट जूता।

बुटि सं—बूटी (—दार)।

बुड़ा, बुड़ो वि, सं—बूढ़ा, बुड्ढा; उमरदार; बड़ा (— आङुल—अंगूठा)। स्त्री—बुड़ी। बुड़ानि, बुड़ामो, बुड़ोमि (-मो), बुड़ोपना सं—बूढ़ासा वर्ताव।

बुड़ान (-नो), बुड़ानो, बुड़नो (क्रि परि १२)—बूढ़ा होना; बोरना डुबाना।

बुड़ि सं—५ गंडा।

बुंद वि—नशेमें चूर। सं—बूंद बिंदु।

बुद्धि सं—बुद्धि. ज्ञान समझ, अक्ल। —খাটানো क्रि—दिमाग लड़ाना —गम्य (-अ) वि—बुद्धि द्वारा जानने योग्य। —जीवी वि—बुद्धिके द्वारा जीविका चलाने या काम निकालने वाला। —भ्रंश (-अ) सं—बुद्धिका लोप। —मत्ता सं—बुद्धिमानी, होशियारी।

बुदबुद सं—बुडबुड़ि, जलदिय बुलबुला।

बुनट स—बुनावट।

बुना, बोना (क्रि परि ६)—रपन करना बोना; रचन करना बुनना।

बुनन, बुनानि, बुननि सं—बुनाई; बुनावट।

बुनो वि—बन्य जंगली। स—जंगली जाति।

बुभुक्षा सं—खानेकी इच्छा, भूख। बुभुक्षित (-अ) वि—भूखा। बुभुक्षु वि—खानेके इच्छुक, भूखा।

बुरुज स—बुर्ज।

बुरुल सं—अंगूठेकी चौड़ाई, लगभग एक इंच।

बुरुश सं—कूची, ब्रूश, बालोंकी कलम।

बुलबुल सं—बुलबुल चिड़िया।

बुलान (-नो), बुलानो, बुलनो, बोलानो (क्रि परि १२)—हलके हाथसे फेरना (माथाय हात —, तुलि—)।

बुलि सं—बोली, वाक्य, भाषा।

वृक सं—नेकड़े बाघ भेड़िया।

वृक्ष (वृक्ख-अ) सं—गाछ, तरु पेड़, दरख्त। —छाय, छाया सं—पेड़की छाया। —वाटिका सं—बागान-बाड़ि बागवाला मकान। वृक्षाग्र (-अ) सं—पेड़की चोटी।

वृत (-अ) वि—वरण किया हुआ; आदरके साथ गृहीत। वृति स—वरण; घेरा।

वृत्त (-अ) सं—गोला, मंडल; चरित्र (वृत्त)।

वृद्ध (-अ) वि—बूढ़ा, उमरमें बड़ा (वयो—, ज्ञान—)। सं—वृढ़ा आदमी। स्त्री—वृद्धा। —प्रपितामह सं—दादाका दादा। —प्रपितामही स्त्री—दादाकी दादी। —प्रमातामह सं—नानाका दादा। —प्रमाता-मही स्त्री—नानाकी दादी।

वृद्धाङ्गुलि सं—बुड़ो आङुल अंगूठा।

वृद्धि सं—बाढ़ बढ़ती, उन्नति (श्री—, उन्नति, तरक्की); ब्याज, सूद। —श्राद्ध (-अ) स—यज्ञोपवीत विवाह आदि शुभ कार्यके पहले पितरोंके अभ्युदयके लिए किया जाने वाला श्राद्ध।

বৃন্ত (-अ) सं—বোঁটা ডণ্ঠল (পুষ্পের—, —চ্যুত), স্তনাগ্র स्तनकी ढेपुनी।
বৃশ্চিক सं—বিছা बिच्छू, एक राशि।
বৃষ (-अ) सं—साँड़, बैल, बर्षा, एक राशि। —স্কন্ধ (-अ) वि—साँडकी तरह कधावाला।
বৃষণ सं—अण्डकोष फोता।
বৃষোৎসর্গ (-अ) स—एक प्रकारका श्राद्ध जिसमें चार साँड़ उत्सर्ग करके छोड़ दिये जाते हैं।
বৃহতী सं—भटा सा एक बहुत छोटा फल।
বে सं—বিয়ে विवाह, शादी। [उपसर्ग।
বে उप—अभाव विरोध निन्दा आदि सूचक
বেআইনী वि—गैरकानूनी।
বেআক্কেল वि—बुद्धिहीन, मूर्ख।
বেআদব, বেয়াদব वि—अशिष्ट, अभद्र।
বেইমান वि—বিশ্বাসঘাতক बेईमान।
বেওয়া स्त्री—बेवा, विधवा।
বেওয়ারিস वि—लावारिस।
বেকুফ, বেকুব वि—बेवकूफ, मूर्ख।
বেখাপ सं—मेल न होना, पटरी न बैठना।
বেখাপ্পা वि—बेढब।
বেগতিক वि—निरुपाय लाचार। सं—लाचारी।
বেগর क्रि वि—बिना, बगैर।
বেগার सं—बेगार (—খাটা, —ঠেলা)।
বেগুন सं—भंटा, बैंगन।
বেগুনী, বেগনী, বেগনি वि—बैंजनी। सं—बेसन मिलाकर भुना हुआ बैंगनका लम्बा टुकड़ा।
বেগোছ वि—অগোছালো विश्रृङ्खल, अस्तव्यस्त।
বেঙ (बैंङ) सं—ব্যাং मेंढक। বেঙাচি सं—বেঙের ছানা मेंढकका दुमदार बच्चा।
বেঙ্গমা-বেঙ্গমী सं—বিহঙ্গম-বিহঙ্গমী कहानीका नर पक्षी और मादा चिड़िया।
বেচা (बेंचा) (क्रि परि १)—बेचना। —কেনা सं—खरीद-फरोख्त।
বেচারা वि—बेचारा; गरीब, भोलाभाला।
বেচাল वि—चरित्र-हीन, भ्रष्ट। सं—निंदित आचरण।
বেজন্মা सं—जारज, दोगला।
বেজায় वि—अत्यत, बहुत अधिक, अनुचित।
বেজার (बैजार) वि—नाराज, परेशान।
বেজি, বেঁজি सं—নেউল नेवला।
বেঞ্চ, বেঞ্চি सं—बेंच, लम्बी चौकी।
বেটা (बैटा), ব্যাটা सं—बेटा, पुत्र; (तुच्छार्थक) सम्बोधन (ওরে—)। स्त्री—বেটী। —ছেলে सं—लड़का, पुत्र, पुरुष, मर्द।
বেঁটে वि—नाटा, बौना।
বেঠিক वि—भूल, गलत।
বেড় सं—घेरा, परिधि।
বেড়া (बैड़ा) सं—टट्टर, टट्टी (বাঁশের—, —দেওয়া)। वि—घेरनेवाला (—জাল)।
বেড়া (क्रि परि १)—घेरना।
বেড়ান (बैड़ानो), বেড়ানো (क्रि परि १०)—टहलना, घूमना, चहल-कदमी करना।
বেড়াল सं—বিড়াল बिल्ली।
বেড়ি सं—बेड़ी, बटलोई पकड़नेका एक लोहे का औजार।
বেড়ে वि—उमदा, बढ़िया, अच्छा।
বেঁড়ে वि—লেজ-কাটা दुम-कटा।
বেঢপ वि—बेढब, बेडौल।
বেত सं—बेंत।
বেতন सं—মাহিনা वेतन, तनखा। —ভুক্, —ভোগী वि—वेतन पर काम करनेवाला।
বেতর (-अ) वि—बतरह, बहुत अधिक; दूसरे प्रकारका।
বেতরিবৎ वि—अशिक्षित, गँवार।
বেতস सं—बेंतकी लता।
বেতার वि—स्वादहीन; बिना तारका, बेतार।
বেতাল सं—प्रेत, भूत; संगीतमें तालका

ভগ। বেতালা वि—जिसका ताल ठीक नही है; अप्रासंगिक, अयोग्य (—কথা)।

বেতী सं—खपाची, तीली (বাঁশের—)।

বেতে वि—वातका (रोगी)।

বেত্তা वि—जानने वाला, ज्ञाता।

বেত্র (-अ, सं—বেত बेंत। বেত্রাসন सं—बेंत की कुर्सी आदि।

বেদখল वि—जमीनके अधिकारसे रहित। सं—अन्याय रूपसे दखल।

বেদন सं—ज्ञान, अनुभव, बोध।

বেদনা सं—कष्ट, दर्द, तकलीफ।

বেদনীয় (-अ) वि—ज्ञेय, जानने योग्य।

বেদম वि—श्वास-रहित, जिसमें दम लेना कठिन है (—হাসি); अत्यत (—প্রহার)।

বেদস্তুর वि—प्रथाके विरुद्ध।

বেদান্ত (-अ) स—वेदका अंतिम भाग, उपनिषद; वेदव्यास-रचित ब्रह्मसूत्र। —বাদ सं—वेदांत दर्शनका सिद्धांत, अद्वैतवाद। —বাদী, বেদান্তী वि, स—अद्वैतवादी, संसारको मिथ्या जाननेवाला।

বেদিত (-अ) वि-जताया हुआ। বেদিতব্য (-अ), বেদ্য (-अ) वि—जानने योग्य।

বেদী, বেদি, বেদিকা सं—वेदी।

বেদুইন सं—आरब देशकी एक घूमने वाली जाति, बद्दू। [स्त्री—বেদেনী।

বেদে सं—एक घूमने वाली जाति; बिसाती।

বেধ सं—गहराई, मोटाई, छेद; छेदना। বেধক, বেধী वि, स—छेदनेवाला, चुभानेवाला। বেধন सं—चुभाना, बेधना। বেধিত (-अ) वि—चुभा हुआ, छिदा हुआ। বেধনীয় (-अ), বেধ্য (-अ) वि—चुभाने योग्य। सं—निशाना।

বেধড়ক वि—अत्यंत अधिक, निडर, उग्र। [सूई।

বেধনী, বেধনিকা सं—छेदनेका औजार, बरमा, বেঁধা—বিঁধা।

বেনা स—खस, एक तृण।

বেনামা, বেনামী वि गुमनाम; मालिकके बदले दूसरेका नाम युक्त (—সম্পত্তি)।

বেনিয়া, বেনে सं—बनिया।

বেনিয়ান स—दलाल; बनियाइन।

বেনেতী स—बिसाती, पसरहट्टा।

বেনো वि—बाढ़का (—জল)।

বেপমান वि—कपमान।

বেপরোয়া वि—बेपरवाह, निर्भय।

বেপার स—ব্যাপার व्यापार।

বেফাইদা क्रि वि—वृथा, फजूल।

বেবাক वि—च धन-रहित, भडाफोड़।

বেবন্দোবস্ত (-अ) सं—बदइंतजामी।

বেবাক वि—सारा, समस्त, कुल।

বেমানান वि—बेढब, अयोग्य। [स्त्री।

বেমালুম क्रि वि—बेमालूम, बिना किसीको पता

বেয়াই स—समधी, पुत्र या कन्याका ससुर। स्त्री—বেয়ান।

বেয়াড়া वि—विकट, बेढब, बदसूरत, खराब।

বেয়াদব=বেআদব।

বেয়ান स्त्री—বেয়াই देखो।

বেয়ারা स—हरकारा, नौकर।

বেয়ারাম सं—ব্যারাম बीमारी।

বেয়ারিং वि—डाकसे बिना महसूल दिये या कम महसूल लगाये प्रेरित (—চিঠি)।

বেয়াল্লিশ वि, स—बयालीस, ४२।

বের=বাহির।

বের, বেরঙ सं—विकृत या दूसरा रंग।

বেরন (-নো), বেরনো, বেরুনো (क्रि परि ११) —निकलना।

বেরসিক वि—अरसिक।

বেরাদার सं—बिरादर, भाई, कुटुंबी।

বেরাল, বেড়াল=বিড়াল।

বেরিবেরি सं—शोथकी एक बीमारी, बेरीबेरी।

বেল सं—বেল। वेला फूल ; वेल फल।
বেলন, বেলনা, বেলুন सं—बेलना।
বেলা (बैला) सं—वेला, समय, दिनका समय (—যাওয়া, —পড়া, दिन ढलना); देर, विलंब (—করে ঘুম ভাঙ্গল) ; मौका, अवसर ; विषयमें (নিজের—)। —বেলি क्रि वि—दिन रहते।　[फूल।
বেলা सं—समुद्रकी रेतीली भूमि, बेला
বেলা (बेला) (क्रि परि ?)—बेलना।
বেলুন सं—गुब्बारा।
বেলে वि—बलुआ, बालूभरा (—মাটি, —পাথর)। —মাছ सं—एक छोटी मछली।
বেলেল্লা वि—बेहया, लपट, मतवाला।
বেলেস্তারা सं—फोड़े आदि पर पलस्तर।
বেলোয়ারী वि—काँचका बना (—চুড়ি)।
বেল্লিক वि—बेहया, दुष्ट, लंपट।
বেশ सं—সজ্জা वेश, पोशाक, आभूषण। বেশী वि—वेशधारी भेस पहना हुआ।
বেশ वि—ভাল अच्छा, अधिक, खूब (—ক'রে কান মলা)। सं—अधिकता (কম—, —কম)।
বেশন सं = বেসন।
বেশর, বেসর सं—बेसर, नथ।
বেশি सं—अधिकता। বেশী वि—अधिक।
বেশ্ম (वेश्म -अ) सं—मकान, गृह।
বেষ্টন सं—ঘেরা घेरा, प्रदक्षिण। বেষ্টিত (-अ) वि—घिरा हुआ। বেষ্টনী स—जिससे घेरा जाय।
বেসন (बैशन), বেসম सं—वेसन, दाल-चूर्ण।
বেসর=বেশর।
বেসরকারী वि—गैरसरकारी।
বেসাত (बेशात) सं—बचनेकी चीजें। বেসাতি सं—बिक्री, बेचना। বেসাতী सं—पनसारी, दुकानदार, बिसाती।
বেসামাল वि—जिसको सम्हालना कठिन है।
বেসুরা, বেসুর (-अ), বেসুরো वि—जिसका छर ठीक नहीं है, वेछरा।
বেহদ্দ (-अ) वि—सीमासे अधिक, बेहद।
বেহাই = বেয়াই। বেহান = বেয়ান।
বেহাত वि—दूसरेके हाथमें गया हुआ।
বেহায়া वि—बेहया।
বেহার सं—बिहार प्रदेश।
বেহারা = বেয়ারা।
বেহালা सं—बेहला, एक बाजा।
বেহিসাব सं—हिसाबका न होना। वि—बहुत अधिक। বেহিসাবী वि—हिसाब-रहित (—লোক, — খরচ)।
বেহুঁশ, বেহোশ वि—बेहोश।
বৈ (बइ) सं—पुस्तक। क्रि वि—सिवाय। বৈ কি क्रि वि—अवश्य।　[वाला, संदिग्ध।
বৈকল্পিক (बइ-) वि—किसी एक पक्षमें होने
বৈকাল सं— বৈকাল तीसरा पहर। বৈকালিক, বৈকালীন वि—तीसरे पहरका (—আহার)। বৈকালী सं—देवताको तीसरे पहर दिया जाने वाला खाद्य।
বৈচিত্র্য (-अ) सं—विचित्रता।
বৈঠক सं—सभा, मजलिस ; हुक्का बठानेका आधार, बैठकी। — খানা सं—बैठका।
বৈঠকী वि—मजलिसके योग्य (—গান)।
বৈঠা सं—डाँड़।　[करनेवाला।
বৈতনিক वि—বেতনভোগী वेतन लेकर काम
বৈতরণী सं—पुराणोक्त एक नदी जो यमके द्वार पर मानी जाती है।
বৈদান্তিক वि—वेदान्त सम्बन्धी, वेदान्तका ज्ञाता, अद्वैतवादी। सं—अद्वैतवादी व्यक्ति।
বৈদেশিক वि—विदेश सम्बन्धी, परदेशी।
বৈদ্য (-अ) सं—কবিরাজ बैद, चिकित्सक ; ब्राह्मणोंसे नीचेकी एक जाति।　[सम्बन्धी।
বৈদ্যুত, বৈদ্যুতিক वि— তাড়িত बिजली-

বৈধ (-অ) वि—उचित, ठीक।
বৈধব্য (-অ) सं—विधवापन। [विषमता।
বৈধর্ম্য (-অ) सं—भिन्न धर्मका भाव,
বৈপরীত্য (-অ) सं—विपरीत भाव, विरुद्धता।
বৈপিত্র (-অ), বৈপিত্রেয় (-অ) वि—एक माताके गर्भसे दूसरे पिताके द्वारा उत्पन्न (—ভ্রাতা)।
বৈবাহিক वि—विवाह-सम्बन्धी। सं—समधी। स्त्री—বৈবাহিকা।
বৈভব सं—धन-सम्पत्ति, दौलत, विभूति।
বৈমনস্য (-অ) सं—घबराहट, बेखबरी।
বৈমাত্র (-অ), বৈমাত্রেয় (-অ) वि—सौतेली मातासे उत्पन्न (—ভ্রাতা, —ভগ্নী)।
বৈমানিক वि—हवाई जहाज सम्बन्धी। सं—हवाई जहाजी।
বৈর (-অ) सं—वैर, शत्रुता। —নির্যাতন सं—প্রতিশোধ বদলা। বৈরী सं—शत्रु।
বৈরাগী वि—जिसके मनमें वैराग्य उत्पन्न हुआ है। सं—वैष्णवोंका एक भिक्षुक सम्प्रदाय।
বৈলক্ষণ্য (-অ) सं—भिन्नता, विलक्षणता।
বৈশাখ सं—বোশেখ वैशाख मास। বৈশাখী वि—वैशाख मासका (কাল— सं—चैत्र वैशाखके तीसरे पहर वायु-कोणसे आनेवाला तूफान)।
বৈশিষ্ট্য (-অ) सं—विशेषत्व, विलक्षणता।
বৈষম্য (-অ) सं—भिन्नता, विषमता।
বৈষয়িক वि—विषय-सम्बन्धी, दुनियादार।
বৈসাদৃশ্য (-অ) सं—अनमेल, भिन्नता।
বোঁ वि—तेज दौड़ या घूमनेका वेग सूचक (—ক'রে দৌড়ানো)।
বোকা वि—बेवकूफ, मूर्ख। বোকামি सं—बेवकूफी; नादानी। —পাঁঠা सं—बड़ा बकरा।
বোচকা, (বোঁ-) सं—गठरी, पोटली।
বোঁচা वि—नक-चेंठा, नक-कट्टा।
বোজা, (বুঁ-)=বুজা।

বোঝা सं—भार बोझ। বোঝাই सं—भार लादना। वि—भार लादा हुआ।
বোঝা, বোঝানো=বুঝা, বুঝানো।
বোট सं—नाव, नौका boat.
বোটকা वि—बकरेका-सा (—গন্ধ)। [ढेपुनी।
বোঁটা सं—डंठल (ফলের—, ফুলের—, পাতার—);
বোঠে सं—बैठा नाव खेनेका छोटा डाँड़।
বৌঠান स्त्री—বধূঠাকুরাণী, বউদিদি भाभी, भौजाई।
বোড়া सं—एक साँप।
বোড়ে सं—शतरंजकी गोटी।
বোতল सं—बोतल, बड़ी शीशी।
বোতাম सं—बटन, कमीज आदिकी गोल घुंडी।
বোদা वि—स्वादहीन, फीका।
বোঁদে सं—बूँदिया, एक मिठाई।
বোদ্ধা वि—ज्ञाता, जाननेवाला।
বোধ सं—बोध, समझ, ज्ञान, बुद्धि, अनुभव, (—করা, —হওয়া); अनुमान, ढाढ़स, जागरण। বোধক वि, सं—जलाने वाला, जगाने वाला। বোধন स—चेताना, जताना, जगाना; दुर्गा-पूजाके पूर्व आश्विन शुक्ला षष्ठीके दिन देवमूर्तियोंके जगानेका अनुष्ठान। বোধিত (-অ) वि—बोध-प्राप्त; जगाया हुआ। বোধ্য (-অ) वि—जानने योग्य।
বোন स्त्री—ভগিনী बहन। —ঝি स्त्री—बहनकी लड़की। —পো सं—बहनका लड़का (বোনঝি या বোনপো केवल स्त्रियोंके साथ सम्बन्ध बतलाता है। पुरुषोंके लिए उनके स्थानमें—ভাগনী या ভাগনে कहा जाता है)।
বোনা=বুনা।
বোনাই सं—ভগিনীপতি बहनोई।
বোনেদ=বনিয়াদ।
বোবা वि—मूक गूंगा।

বোম सं—बम, गाड़ीका वह लंबा बाँस जिसके साथ जूआ लगा रहता है।

বোমা सं—विस्फोटक पदार्थोंसे भरा हुआ लोहेका गोला, बम ; बोरेमेंसे चावल आदिकी बानगी निकालनेके लिए एक नुकीली कलछुल।

বোম্বাই सं—बंबई ; एक आम। वि—बंबईका (—চাদর)।

বোম্বেটে सं—जलदस्यु, दरियाई डाकू।

বোয়াল सं—एक बड़ी मछली।

বোরকা, (-খা) सं—बुरका।

বোরা सं—চটের থলে, ছালা बोरा।

বোরো सं—एक धान।

বোল सं—बुलि बोली , বউল बौर।

বোলতা सं—बर्रे।

বোলান=বুলান।

বোশেখ=বৈশাখ।

বৌ (বউ) स्त्री—बहू, दुलहिन, पत्नी। —ঠাকরুণ=বৌঠান। —ভাত=বউভাত।

ব্যজন सं—पंखा झलना। ব্যজনী सं—पंखा।

ব্যঞ্জন सं—तरकारी आदि भोजनोपकरण ; प्रकाशन ; व्यंजन। [घबराया हुआ, परेशान।

ব্যতিব্যস্ত (-अ) वि—काममें फँसा हुआ ;

ব্যতিরেক सं—अभाव, राहित्य (অন্ন ব্যতিরেকে)।

ব্যতীত (-अ) क्रि वि—बिना, सिवाय।

ব্যত্যয় सं—विपरीत भाव, लंघन, खिलाफी (কথার—)।

ব্যথা सं—বেদনা दर्द, कष्ट। ব্যথিত (-अ) वि—दु:खित, क्लेशित। ব্যথী वि—हमदर्द (ব্যথার—)। [(কার্য্য-ব্যপদেশে)।

ব্যপদেশ सं—छूता, অছিলা बहाना ; सिलसिला

ব্যবকলন सं—वियोग, घटाव।

ব্যবসা, ব্যবসায় सं—व्यापार, रोजगार, पेशा, उद्यम। ব্যবসায়ী, ব্যাবসাদার सं—व्यापार करनेवाला, रोजगारी, पेशेवर।

ব্যবহর্তা सं—व्यवहार करनेवाला, विचारक, हाकिम।

ব্যবহার सं—आचरण, बर्ताव, कानून (—শাস্ত্র)। ব্যবহারজীব, (-জীবী) सं—আইন ব্যবসায়ী, উকীল वकील। ব্যবহার্য্য, ব্যবহর্তব্য (-अ) वि—व्यवहारके योग्य।

ব্যবহিত (-अ) वि—ओटवाला, ढका हुआ।

ব্যয় सं—व्यय, खर्च, क्षय। [अलग व्यक्ति।

ব্যষ্টি सं—पृथकत्व, एक एक वस्तु ; अलग

ব্যসন सं—विषयमें अधिक आसक्ति, नशा ; विपत्ति। ব্যসনী वि—किसी प्रकारके व्यसनमें आसक्त।

ব্যস্ত (-अ) वि—काममें लगा या फँसा हुआ, घबराया हुआ। —বাগীশ वि—जल्दबाज। —সমস্ত (-अ) वि—चंचल, जल्दबाज, उतावला।

ব্যাং, ব্যাঙ, বেঙ, सं ভেক मेंढक। [विवरण।

ব্যাখ্যা, ব্যাখ্যান सं—अर्थ प्रकाश, व्याख्या,

ব্যাগ सं—चमड़े आदिका थैला जिसे आसानीसे खोला और बंद किया जा सकता है, बैग।

ব্যাঘাত सं—बाधा, प्रतिबंध। [बघनहाँ।

ব্যাঘ্র (-अ) सं—बाघ, शेर। —নখ सं—

ব্যাঙ=ব্যাং। ব্যাঙাচি=বেঙাচি।

ব্যাঙ্গমা-ব্যাঙ্গমী=বেঙ্গমা-বেঙ্গমী।

ব্যাজ सं—छल, कपट, विलंब ; सूद ; बिल्ला badge. —স্তুতি सं—कपट प्रशंसा।

ব্যাজার=বেজার।

ব্যাট सं—गेंद खेलनेका बल्ला bat

ব্যাটা=বেটা।

ব্যাণ্ড सं—बैंड बाजा band

ব্যাণ্ডেজ सं—घाव आदि पर बाँधनेकी पट्टी।

ব্যাদড়া = বেয়াড়া।

ব্যাদান सं—फैलाव (মুখ—করা)।

ব্যাধ सं—बहेलिया।

ব্যানার্জী सं=বন্দ্যোপাধ্যায়।

ব্যাপন सं—फैलाव, विस्तार। ব্যাপক वि—व्यापनेवाला, सर्वत्र फैला हुआ।

ব্যাপা (क्रि परि ३)—व्यापना, सर्वत्र फैलना।

ব্যাপার सं—घटना, কাণ্ড वारदात, समारोह, विषय, कार्य, रोजगार। ব্যাপারী वि, सं—रोजगारी।

ব্যাপী वि—व्यापनेवाला, सर्वत्र फैला हुआ (স্থান—, কাল—, বহুদূর—)। [(কার্য্যে—)।

ব্যাপৃত (-अ) वि—नियुक्त, लगा हुआ

ব্যাপ্ত (-अ) वि—सवत्र फैला हुआ, पूर्ण।

ব্যাপ্তি सं—व्याप्त होनेका भाव; (दर्शनमें) एक पदार्थमें दूसरे पदार्थका पूण रूपसे फैला हुआ होना।

ব্যাবর্তন सं—लौट आना, वापसी। ব্যাবর্তিত (-अ) वि—लौटाया हुआ। ব্যাবৃত্ত (-अ) वि—लौट आया हुआ, खंडित। [पेशा।

ব্যাবসা सं—ব্যবসা, কারবার कारोबार रोजगार,

ব্যাবহারিক, (ব্যব-) वि—व्यवहार सम्बन्धी, लौकिक (—জগৎ, यह दृश्यमान संसार जो जाग्रत अवस्थामें सत्य रूपसे प्रतीत होता है); क्रियात्मक (—জ্যামিতি); कानून सम्बन्धी।

ব্যামো सं—रोग, बीमारी।

ব্যায়াম सं—कसरत।

ব্যারাম सं= ব্যামো।

ব্যারিষ্টার सं—बारिस्टर।

ব্যাল सं—साँप; हिंसक पशु।

ব্যাসক্ত (-अ) वि—अत्यत आसक्त।

ব্যাহত (-अ) वि—बाधा प्राप्त, रोका हुआ।

ব্যাহৃত (-अ) वि—कथित उक्त, उच्चारित।

ব্যুৎক্রম सं—उलटा क्रम, अनियम।

ব্যুৎপত্তি सं—ज्ञान, अनुभव, पांडित्य; (व्याकरणमें) शब्दके धातु आदिका विभाग।

ব্যুৎপন্ন (-अ) वि—ज्ञानी, पडित, अनुभवी।

ব্যুৎপাদক वि—जताने या समझाने वाला।

ব্যূহ (-अ) सं—युद्धमें सेनाको सजानेका तरीका। [हवाई जहाज।

ব্যোম सं—आकाश। —যান सं—विमान

ব্রণ (-अ) सं—फोड़ा, फुंसी।

ব্রততী, (-তি) सं—लता, बेल।

ব্রহ্ম (ब्रम्ह-अ) सं—निगुण परमात्मा, संसारका मूल कारण व्यापक चेतन सत्ता (-জ্ঞ,- -জ্ঞান -বাদ); सगुण ईश्वर (—কৃপা)। —জ্ঞানী वि, सं—अपने आत्मा रूपसे ब्रह्मको जाननेवाला; ब्राह्म समाजके अनुयायी व्यक्ति। —তালু सं—মাথার চাঁদি खोपड़ी। —দৈত্য (-अ), —পিশাচ सं—ब्राह्मण जो मर कर प्रेत हुआ हो। —পুত্র (-अ) स—ब्रह्मपुत्र नदी। —বাদী वि, सं—अद्वैतवादी, वेदान्ती। —রন্ধ্র (-अ) सं—तालु का छिद्र। —শাপ सं—ब्राह्मणका दिया हुआ सराप। —সূত্র (-अ) सं—जनेऊ; वेदान्त-सूत्र। —স্ব (अ) सं—ब्राह्मणकी संपत्ति। —হা वि—ब्राह्मणका हत्यारा।

ব্রহ্ম (-अ) सं—बरमा देश। [जमीन।

ব্রহ্মোত্তর, ব্রহ্মত্র (-अ) सं—ब्राह्मणको दी हुई

ব্রাণ্ডি सं—विलायती शराब।

ব্রাহ্ম (-अ) वि—ब्रह्म सम्बन्धी, आर्य समाज की तरह बंगालका एक धमसंप्रदाय सम्बन्धी (—ধর্ম, —সমাজ)। सं—ब्राह्म धर्मका अनुयायी व्यक्ति। ব্রাহ্মিকা स्त्री—ब्राह्म समाजकी महिला।

ব্রীড়া सं—लज्जा, शर्म। [लकीर bracket

ব্র্যাকেট सं—दीवालमें लगी अंकुसी, घेर

ব্লটিং सं—सोखता blotting paper.

ব্লাউজ स—जनानी कुर्ती blouse.

ভ

ভ सं—नक्षत्र, तारा, ग्रह ; भ्रम ; भूल।
ভক स—एकाएक आग गंध आदिके निकलने का भाव, भक।
ভকত वि, स—भगत। ভকতি सं—भक्ति।
ভক্ত (-अ) वि, सं—भक्त, सेवक, अनुयायी, भात। —বিটেল वि—बगुला भगत। [बहनोई।
ভগিনী, ভগ্নী स्त्री—बहन। —পতি सं—
ভগ্ন (-अ) वि—टूटा हुआ, खंडित, गिरा हुआ (—স্তূপ), नष्ट (ভগ্নোৎসাহ); हारा हुआ। —দূত सं—हारनेकी खबर लानेवाला दूत। —প্রায় वि—टूटनेवाला, जिसका नाश होना ही चाहता है। ভগ্নাংশ (-अ) सं—भिन्न, खंडित अंश। ভগ্নাবশেষ सं—खंडहर।
ভগ্নী=ভগিনী।
ভঙ্গ (-अ) सं—ভাঙা टूटना, टेढ़ापन (ভ্রূ—), नाश, (স্বাস্থ্য—); हारकर भागना (রণে—দেওয়া); लंघन, तोड़ना (প্রতিজ্ঞা—); अंत, समाप्ति (সভা—); ভঙ্গী त्योरी (ভ্রূ—)। —কুলীন सं—जिस कुलीनका विवाह-सम्बन्ध বংশজ या শ্রোত্রিয় के घरमें हुआ है। —প্রবণ वि—ঠুনকো भगुर, भुरभुरा।
ভঙ্গী, ভঙ্গি सं—अंग हिलानेका ढंग, ढग (বসিবার—, বলিবার—)।
ভঙ্গিমা =ভঙ্গী।
ভঙ্গুর वि—ঠুনকো भगुर, भुरभुरा। [उलझन।
ভজকট (भज-अ कट-अ) सं—ঝঞ্ঝাট झंझट,
ভজন सं—भजन, कीर्तन, पूजा।
ভজন, ভজং सं—बुरी सलाह, भाँजी।
ভজা (क्रि परि १)—भजना, उपासना करना।
ভজান (-नो), ভজানো (क्रि परि १०)—उपासना कराना, सलाह दे कर राजी करना, प्रमाणित करना, सही साबित करना।
ভঞ্জক वि—तोड़ने रोकने या भाँजी मारने वाला।
ভঞ্জন सं—तोड़ना, रोकना, नाश।
ভটভট सं—बुलबुले आदिके फटनेका शब्द।
ভট্টাচার্য্য, ভটচার্জি स—ब्राह्मणोंकी एक उपाधि।
ভড় सं—बड़ी नाव, कायस्थोंकी एक उपाधि।
ভড়ং सं—ढोंग, बाहरी आडंबर। [भड़कना।
ভড়কান (-नो), ভড়কানো (क्रि परि १६)—
ভড়ভড় सं—हुक्का पीनेका शब्द।
ভণিতা सं—कविके द्वारा कवितामें अपने नामका उल्लेख, कथा बातचीत या व्याख्यानका आडंबर-पूर्ण आरंभ। [—पाखंड।
ভণ্ড (-अ) सं, वि—कपट, पाखंडी। ভণ্ডামি सं
ভণ্ডুল वि—পণ্ড विफल, नष्ट, व्यर्थ। [सूचक नाम।
ভদন্ত (-अ) सं—बौद्ध सन्न्यासियोंका सम्मान
ভদ্র (-अ) वि—सभ्य, सज्जन (—লোক, भद्रपुरुष), शिष्ट (—ব্যবহার)। स—कल्याण। ভদ্রাসন सं—বসত-বাটী रहनेका निजी मकान। ভদ্রোচিত वि—भद्र पुरुषकेयोग्य।
ভনভন सं—भनभनाहट।
ভনা (क्रि परि १) — कहना, बोलना, अपने नामका कवितामें उल्लेख करना।
ভপঞ্জর स — नक्षत्र-मंडल, राशिचक्र।
ভব (-अ) स—जन्म, उत्पत्ति, पैदाइश; सत्ता, स्थिति, ससार, दुनिया, शिव। —ঘুরে वि—आवारा, भटकनेवाला। —তারণ वि, सं—संसार-बंधनसे उबारनेवाला, ईश्वर। —পার स—संसार-बंधनसे मुक्ति। —বন্ধন सं—संसार-बंधन, बार बार इस संसारमें जन्म ग्रहण। —লীলা सं—जीवन-काल, ज़िंदगी (—সংবরণ या সাঙ্গ করা, मर जाना)।
ভবাদৃশ (-अ) वि—आपके समान।
ভবার্ণব सं—संसार-समुद्र। [होनेवाला।
ভবিতব্য (-अ) सं—होनहार। वि - अवश्य

ভরী सं—जिसने हठ किया है।
ভব্য (-अ) वि शांत, शिष्ट, साधु, होनहार।
ভব্যিযুক্ত (-अ) वि—भद्र-सा, भद्र, शिष्ट।
ভয়ষা, ভঁয়বা वि—भैंससे उत्पन्न।
ভয়াতুর, ভয়ার্ত (-अ) वि—डरा हुआ, डरपोक।
ভয়ান वि—डरावना, विकट।
ভর सं—भार, दबाव, टेक, आश्रय, अधिकार; आवेश। वि—समस्त, पूरा, परिमित।
ভরতি वि—भरा हुआ, पूर्ण, भरती।
ভরন सं—घटिया कसकूट।
ভরনা सं—भार, दबाव, आश्रय।
ভরভর सं—गंधका फैलना। (प्यारमें) भुरभुर। ভরভরে, ভুরভুরে वि—महकीला।
ভরম सं—सम्भ्रम सम्मान, इज्जत।
ভরসা सं—भरोसा, विश्वास।
ভরা सं—मालसे लदी हुई नाव।
ভরা (क्रि परि १)—भरना; भर जाना। वि—भरा हुआ, पूर्ण। —গাঙ सं—भरी हुई नदी। —যৌবন सं—भरी जवानी।
ভরাট वि—पूर्ण, भरती।
ভরান (-नो), ভরানো (क्रि परि १०)—भराना।
ভরাট वि—पूर्ण।
ভরি सं— तोला भरी।
ভরিত (-अ) वि—पोसा हुआ; भरा हुआ।
ভর্জন स—भाजा भुजना। ভর্জিত (-अ) वि—भूना हुआ।
ভর্ৎসনা, ভর্ৎসন सं—धमकी, डाँट, फटकार। ভর্ৎসিত (-अ) वि—धमकाया हुआ।
ভল্ল (-अ) स—भाला, बरछा।
ভল্লুক, ভাল্লুক सं—भालू, रीछ।
ভসকা, ভেসকা वि—स्वादमें पानी-सा, फीका।
ভস্ত্রা सं—हापर धोंकनी, भाथी, मशक।
ভস্ম (भस्म-अ) स—छाई राख। ভস্মাবশেষ सं—जलनेके बाद जो कुछ बचा रहता है।
ভস্মসাৎ, ভস্মীভূত (-अ) वि—भस्ममें परिणत।
ভস্মীকৃত (-अ) वि—भस्म किया हुआ।
ভা सं—आलोक प्रकाश, ज्योति, प्रभा।
ভাই सं—सहोदर सगा भाई, मित्र, बराबर वालोंके लिए संबोधन। —ঝি स्त्री—भतीजी। —পো सं—भतीजा। —ফোঁটা सं—भैयादूज।
ভাউলে सं—घरवाली नाव, बजरा।
ভাও सं—भाव, दर, दाम।
ভাং सं—भंग, विजया, बूटी।
ভাংচি सं—भाँजी।
ভাঁওতা सं—धाप्पा झाँसा, धोखा।
ভাক্ वि—भागी हिस्सेदार।
ভাগ सं—विभाग, बँटवारा, अंश, हिस्सा; खंड, स्थान; गणितका भाग। —শেষ सं—भाग देने पर जो बचा रहता है। —হর वि, सं—अंश ग्रहण करनेवाला। —হার सं—भाग देनेकी शैली।
ভাগা (क्रि परि २)—पलायन करना भागना।
ভাগাড় सं—मृत पशु फेकनेका स्थान, मरघट।
ভাগান (-नो), ভাগানো (क्रि परि १०)—তাড়ানো भगाना।
ভাগাভাগি सं—आपसमें बँटवारा।
ভাগিনেয় (-अ), ভাগিনা, ভাগনে (भाग्ने) सं—भांजा। ভাগিনেয়ী, ভাগনী स्त्री—भांजी।
ভাগ্য (-अ) सं—कपाल, अदृष्ट तकदीर, नसीब, क़िस्मत। —ক্রমে क्रि वि—भाग्यसे। —বান् वि—किस्मतवर। —হীন वि—बदनसीब।
ভাগ্যে, ভাগ্যিস क्रि वि—भाग्यसे।
ভাঙ सं—ভাং।
ভাঙানি सं—ভাংচি भाँजी; रेजगारी, रेजगी।
ভাঙানী वि, स्त्री—परिवारके लोगोंमें फूट डालनेवाली।

ভাঙানে वि—तोड़नेवाला ।

ভাঙ্গ, ভাঙ सं—ভাং भग । ভাঙ্গড়, ভাঙড় सं—সিদ্ধিখোর भगेड़ी । [मछली ।

ভাঙ্গন, ভাঙন सं—नदीके तीरका धँसना , एक

ভাঙ্গা, ভাঙা (क्रि परि २)—टूटना, तोड़ना, खोल कर कहना । वि—टूटा हुआ, तोड़नेवाला (হাড়ভাঙ্গা খাটুনি) । ভাঙাভাঙা वि—टूटाफूटा, भग्नप्राय, टूटीफूटी (भाषा) ।

ভাঙ্গান (-नो), ভাঙ্গানো, ভাঙানো (क्रि परि १०) —तुड़वाना, भाँजी मरवाना । वि—टूटा हुआ, तुड़वाया हुआ ।

ভাজ स्त्री— भाईकी स्त्री, भावज ।

ভাঁজ सं—পাট, দুমড়ান भाँज, तह ।

ভাজন सं—पात्र, योग्य व्यक्ति (ভক্তি-) ।

ভাজা (क्रि परि २)—भूनना । वि—भूना हुआ (—ডাল) । ভাজাভাজা वि—भूना हुआ-सा , सतप्त, दुःखी ।

ভাঁজা (क्रि परि २)—तह करना, भाँजना , मुगदर आदि घुमाना, अलापना ।

ভাজি सं—भूनी हुई तरकारी । [हुआ ।

ভাজিত (-अ) वि—भाग किया हुआ, बटा

ভাজ্য (-अ) सं—भाग करने योग्य अंक । वि—विभागयोग्य ।

ভাট सं—वंशका परिचय देनेवाला, भाट ।

ভাঁট सं—एक छोटा पौधा ।

ভাটা, ভাঁটা सं—नदी जलका समुद्रकी ओर प्रवाह, भाटा । ভাটি, ভাটি सं—नदी-जलके उतारकी दिशा ।

ভাঁটা सं—गेंद ।

ভাটি, ভাটি सं—भट्ठा , धोबीके कपड़े भट्ठीमें सिझानेकी हण्डी , शराबकी भट्ठी ।

ভাটিয়ারি, (-য়ালি) सं—एक रागिणी ।

ভাঁড় सं—पुरवा, कुल्हड़ ; भाँड़, मसखरा ।

ভাঁড়ামি, (-মো) सं—मसखरापन ।

ভাড়া सं—किराया । वि—किराये पर दिया जानेवाला (— গাড়ি) । ভাড়াটিয়া, ভাড়াটে सं—किरायादार । वि—किराये पर दिया जानेवाला ।

ভাঁড়ান (-नो), ভাড়ানো (क्रि परि १०)— धोखा देना, ठगनेके लिए छिपाना (নাম—) ।

ভাঁড়ার सं—ভাণ্ডার भडार । ভাঁড়ারী सं—भडारी । [प्रकाश ।

ভাণ स—छल, धोखा, बनावटी बर्ताव ; दीप्ति,

ভাণ্ড (-अ) सं—बर्तन, पात्र, बाजा (রাজ—) ।

ভাণ্ডার सं—भंडार । ভাণ্ডারী सं—भंडारी ।

ভাণ্ডীর सं—बरगद , एक छोटा पौधा ।

ভাত (-अ) वि—আলোকিত रोशन ।

ভাত सं—अन्न पकाया हुआ चावल । ভাতে सं—चावलके साथ सिझाया हुआ आलू आदि । ভাতে ভাত सं—भात और उसके साथ सिझाया हुआ दूसरा खाद्य ।

ভাতা सं—भत्ता ।

ভাতার सं—ভর্তা भतार ।

ভাতি सं—प्रकाश, प्रभा, शोभा ।

ভাদর सं—भादो, भाद्रपद । ভাদুরে, ভাদ্দুরে वि—भाद्र मासका । [स्त्री ।

ভাদ্দর বউ, ভাদ্র বউ स्त्री—भ्रातृवधू छोटे भाईकी

ভান सं—छल धोखा, बनावटी बर्ताव , प्रकाश, ज्ञान, प्रभा, शोभा ।

ভানা (क्रि परि २)—ढेंकीसे कूट कर अनाजसे चोकर अलग करना (ধান—) ।

ভাপ, ভাপরা सं—बाष्प भाप । ভাপসা, ভেপসা वि—भाप-सा, पसीना-सा ।

ভাব स—अस्तित्व, हस्ती, सत्ता, स्थिति, उत्पत्ति ; हालत, तरीका, मनका भाव, चिंता, मनशा, प्रीति, दोस्ती (স্কুলের ছেলেদের সঙ্গে বেশ —হয়েছে) , आशय । —গতিক सं—हालत, लक्षण । —গর্ভ (-अ) वि—गूढ़ार्थक,

উত্তম भावोंसे पूर्ण। —গ্রাহী वि—मर्मज्ञ, दूसरेके मनकी इच्छाका ग्रहण करनेवाला। —শুদ্ধি स—विचारकी पवित्रता।

ভাবন सं—चिंतन; सजावट; सृष्टा। ভাবনা स—चिंता फिक्र, सोच; पुट।

ভাবা (क्रि परि ३)—सोचना, सोचमें पड़ना, व्याकुल होना। [सोचमें डालना।

ভাবান (-नो), ভাবানো (क्रि परि १०)—

ভাবান্তর स—मनके भावका परिवर्तन।

ভাবিত (-अ) वि—चिंतित, फिक्रमंद, सोचमें पड़ा हुआ, पुटपाक किया हुआ।

ভাবোন্মাদ (भावोन्माद) स—दशा मनके भावों की अधिकतासे विह्वलता।

ভাব্য (-अ) वि—भावना करने योग्य।

ভাম स—ऊदबिलाव।

ভায়রাভাই सं—শালীপতিভাই साढू।

ভায়া सं—ভাই भाई, भइया।

ভার स—भार, बोझ, जिम्मेवारी, वजन, दबाव; घबराहट; पालन-पोषण, रखवाली, समूह, बहंगी। वि—कठिन (বাঁচা—)। —কেন্দ্র (-अ) सं—माध्याकर्षणका केंद्र। —বাহ, —বাহক, —বাহী वि—बोझ ढोनेवाला। —সহ (-अ) वि—भार सह सकनेवाला।

ভারা सं—মাচা मचान।

ভারাক্রান্ত (-अ) वि—भारकी अधिकताके कारण अभिभूत (হৃদয়—, বক্ষ—)।

ভারিক্কি वि—गभीर स्वभाववाला (—মেজাজ, —চাল, —মানুষ)। ভারিক্কে, (-क्की) वि—गभीर प्रकृतिका।

ভারী, ভারি वि—वजनदार, भारी, कठिन, अत्यंत (—দুঃখ, —বিপদ)।

ভারো वि, सं—बोझ ढोनेवाला।

ভাল (भालो), ভালো वि—उत्तम, अच्छा, चंगा, तंदुरुस्त, भोलाभाला, उचित (—দেখায় না), सम्मति-सूचक शब्द (—তাই হবে)। स—कल्याण, हित। ভালমন্দ वि—अच्छा और बुरा। सं—शुभाशुभ; स्वादिष्ट भोजन; मृत्यु।

ভালবাসা (भालोबाशा) (क्रि परि ३) प्यार करना, आसक्त होना, पसंद करना। सं—प्रेम, प्रणय, प्यार, मुहब्बत, स्नेह।

ভালুক स—ভল্লুক भालू, रीछ।

ভাশুর स—भसुर, जेठ, पतिका बड़ा भाई। —ঝি स्त्री—जेठकी कन्या। —পো सं—जेठका पुत्र, जेठौत।

ভাসন্ত (-अ) वि—तैरता हुआ। [हुआ।

ভাসমান वि—भासता हुआ, प्रकाशमान, तैरता

ভাসা (क्रि परि ३)—तैरना, न डूब जाना, उतराना, बह जाना, प्लावित होना (চোখের জলে মুখ—)। ভাসাভাসা वि—छिछला, अगभीर। [तैराना।

ভাসান (-नो), ভাসানো (क्रि परि १०)—

ভাসুর सं—भसुर, जेठ।

ভাস্বর (भास्शर) वि—उज्ज्वल, चमकदार।

ভিকিরী स =ভিখারী।

ভিক্ষা (भिक्खा), ভিক্ষে सं—भिक्षा, प्रार्थना, भिक्षासे प्राप्त वस्तु। ভিক্ষাপুত্র (-अ) सं—जो द्विज बालक जनेऊके समय किसीसे भिक्षा लेकर उसके पुत्रके समान हो जाता है। ভিক্ষা-মা स्त्री—वैसी भिक्षा देनेवाली स्त्री।

ভিখ स—भिक्षा, भीख।

ভিখারী, ভিখিরী, ভিকিরী सं—भिखमंगा, भिक्षुक।

ভিজা, ভেজা (क्रि परि ५)—भींगना, तर होना, नरम होना, पसीजना। ভিজা, ভিজে वि—सिक्त, আর্দ্র भींगा हुआ, तर, गीला। ভিজে বেড়াল स—भींगी बिल्ली, छिपा रुस्तम (निन्दार्थमें)।

ভিজান (-নো), ভিজানো, ভিজনো, ভেজানো (क्रि परि ११) —भिगोना, गीला करना।
ভিজিট सं—डाक्टरकी फीस या मेहनताना।
ভিটকিলি, (-কিলিমি) सं—भान, ভণ্ডামি बनावटी बर्ताव, पाखंड, बीमारीका बहाना।
ভিটা, ভিটে सं—वास्तु वह स्थान जिस पर घर उठाया जाय। ভিটামাটি, (ভিটে-) सं—घरके नीचेकी मिट्टी (—উৎসন্ন করা)।
ভিড় सं—জনতা भीड़, जमावड़ा।
ভিড়া, ভেড়া (क्रि परि ५)—तीरमें लगना, मिलना, जुटना।
ভিড়ান (-নো), ভিড়ানো, ভিড়নো, ভেড়ানো (क्रि परि ११)—तीरमें लगाना (তীরে নৌকা—)।
ভিত सं—ভিত্তি, বনিয়াদ नींव, जमीनसे फर्श तककी दीवार, ओर (চারি ভিতে)।
ভিতর क्रि वि—भीतर। सं—भीतरी स्थान। —বাড়ি सं—अंदर महल, रनिवास। ভিতরে ভিতরে क्रि वि—তলে তলে भीतर ही भीतर, छिप कर।
ভিতু वि—डरपोक, कायर।
ভিত্তি स—ভিত नींव, दीवाल, मूल कारण। —হীন वि—অমূলক निर्मूल, मिथ्या, निराधार।
ভিদ্যমান वि—छेदनेवाला।
ভিন वि—दूसरा, गैर (—গাঁ)।
ভিন্ন (-अ) क्रि वि—छाड़ा, বিনা सिवाय, छोड़कर। वि—दूसरा, अलग, खंडित। —রুচি वि—विभिन्न रुचिवाला।
ভিমরুল सं—लखेरी।
ভিয়ান सं—মিষ্টান্নাদি পাক मिठाई बनानेके लिए भट्टीका जलाना और पकाना।
ভিরমি स—मूर्छा, वेहोशी, गश।
ভিস্তি सं—भिश्ती, मशक।

ভী, ভীতি सं—भय, डर।
ভীতু, ভিতু वि—ভীরু डरपोक।
ভীমরতি सं—बुढ़ापा, अधिक उमरके कारण बुद्धिका ठिकाने न रहना।
ভীমা वि—डरावनी।
ভীরু वि—ভীতু डरपोक।
ভুঁই, ভুঁই सं—মাটি मिट्टी, भूमि, देश।
ভুঁইফোড় वि—एकाएक आविर्भूत, नया बढ़ा हुआ, नया रुपयावाला।
ভুঁইয়া सं—ভৌমিক जमीदार, एक उपाधि।
ভুও वि=ভুয়া।
ভুক্ত (-अ) वि—ভক্ষিত खाया हुआ, भोगा हुआ; अंतर्गत, शामिल। —ভোগী वि—अनुभवी, कष्ट उठा कर जिसने अनुभव प्राप्त किया है। ভুক্তাবশেষ सं—खानेके बाद जो कुछ पड़ा रहता है, जूठन।
ভুক্তন सं—পূরণ भरना, भुगतान।
ভুক্তি सं—भोग, दखल।
ভুখ सं—भूख। ভুখা वि—भूखा। [कष्ट उठाना।
ভুগা, ভোগা (क्रि परि ६)—भुगतना, भोगना,
ভুগান (-নো), ভুগানো, ভুগনো, ভোগানো (क्रि परि १२)—कष्ट देना।
ভুক্ষিত (-अ) वि—ভুক্ত खाया या भोगा हुआ।
ভুটান स—भारतके उत्तर हिमालयके ऊपरका भूटान देश। [स—बुलबुला।
ভুড়ভুড় स—बुलबुलेका शब्द। ভুড়িভুড়ি
ভুঁড়ি स—तोंद। ভুঁড়ো वि—तुंदिल।
ভুতি, ভুতুড়ি सं—कटहलके कोयेके अलावा भीतरी अखाद्य अंश।
ভুতুড়ে, (ভূ-) वि—भूत प्रेत सम्बन्धी।
ভুনি स—भूनी हुई दालके साथ बनी हुई सूखी खिचड़ी। [सार-रहित।
ভুয়া, ভুয়ো, ভুও वि—पोला, झूठा, दिखावटी,
ভুরভুর=ভরভর।

ভুরা, ভুরো सं—खाँड़, कच्ची शक्कर।

ভুরু सं—भ्रू भौंह। [अयोग्य।

ভুল सं—भूल, गलती, चूक। वि—गलत,

ভুলা, ভোলা (क्रि परि ६)—भूलना, गलती करना, मोहित होना (রূপ দেখে—)।

ভুলান (नो), ভুলানো, ভুলনো, ভোলানো (क्रि परि १२)—भुलाना, मीठी मीठी बातें कहकर ठगना, समझाकर या दूसरे विषयमें मन खींचकर बच्चोंको ठंढा करना, मोहित करना। वि—बहलाने योग्य (ছেলে-ভুলানো ছড়া)।

ভুলো वि—जो अकसर भूल करता या भूल जाता है (—মন)। [घसनेका शब्द।

ভুস, ভুস सं—पानी कीचड़ आदि में डूबने या

ভুষি, ভুসি सं—चोकर, भूसी।

ভুসা, ভুসো सं—धुएँ के साथ उठे हुए कोयले के चूर, काजल। —কালি सं—वैसे काजलसे बनी स्याही।

ভূ सं—पृथ्वी, भूमि, स्थान। —চিত্র (-अ) सं—मानचित्र पृथ्वीका नक्शा। —ছায়া सं—पृथ्वीकी छाया जो ग्रहणके समय चंद्रमा पर पड़ती है। —পতিত (-अ) वि—धरती पर गिरा हुआ। —বিদ্যা सं—पृथ्वीके सम्बन्धमें सारी बातोंकी विद्या। —ভার सं—पृथ्वी पर पापोंका भार। —ভারত सं—भारत और सारी पृथ्वी। —লুণ্ঠিত (-अ) वि—धरतीपर गिरा या लोटा हुआ। —স্বামী सं—जमींदार।

ভূঁ ভূঁই=ভুঁই।

ভূত सं—भूत, प्रेत, जिन, शैतान; जीव, प्राणी, जगतका उपादान—मिट्टी जल अग्नि वायु और आकाश ये पाँच भूत। वि—गत, अतीत। —চতুর্দশী स—कातिंकी कृष्णा चतुर्दशी। —পূর্ব (-अ) वि—जो पहले था (—মন্ত্রী)। —যোনি सं—भूत प्रेत आदि, प्रेत रूपसे जन्म। —শুদ্ধি सं—मन्त्रोंके द्वारा शरीरके पाँच भूतोंकी शुद्धि।

ভূতাবিষ্ট (-अ) वि—जिसपर भूत सवार हुआ है। [धन।

ভূতি सं—अणिमादि आठ ऐश्वर्य, विभूति,

ভূতুড়ে=ভুতুড়ে।

ভূমা वि—व्यापक, सर्वव्यापी। सं—ब्रह्म।

ভূমি स—भूमि, जमीन, खेत, पृथ्वी; आधार, खान। —কম্প (-अ) सं—भूडोल। —সাৎ वि—धरतीपर पतित, समथल, चौरस।

ভূমিকা सं—वक्तव्य विषयकी सूचना; अभिनेताका अंग या चरित्र।

ভূমিষ্ঠ (-अ) वि—धरती पर गिरा हुआ; जन्मा हुआ (সন্তান—হইল)।

ভূম্যধিকারী सं—जमींदार।

ভূয়ঃ क्रि वि—पुनः, फिर। वि—प्रचुर, अनेक। ভূয়সী वि स्त्री—अनेक (—প্রশংসা)। ভূয়োদর্শন सं—बहुत अनुभव। ভূয়োভূয়ঃ क्रि वि—बारबार।

ভূয়িষ্ঠ (-अ) वि—अनेक, प्रचुर।

ভূরি सं—बहुत, प्रचुर (—ভোজন)।

ভৃঙ্গার सं—गाडू, झारि पीतलका बधना।

ভৃত (-अ) वि—पाला-पोसा, पूर्ण। ভৃতক वि वेतन-प्राप्त। ভৃতি स—वेतन, मजदूरी; पालन, पोषण।

ভৃষ্ট (-अ) वि—भाजा भूना हुआ।

ভেউভেউ सं—चिल्लाकर रोनेका शब्द, कुत्तेका भौंकना।

ভেংচান (भंड्चानो), ভেংচানো, ভেঙানো (क्रि परि १६)—मुंह बनाना। ভেংচানি, ভেংচি सं—चिढ़ानेके लिए मुखकी विकृति (—কাটা, मुंह बनाना)।

ভেকা, ভেকো वि—हतबुद्धि भौचक्का, हक्काबक्का।

ভেখ, ভেক सं—वेश, भेख, भेस ।

ভেঙ্গান (भेंगानो), ভেঙানো (क्रि परि १०)— ভেংচান मुँह बिगाड़ना, किसीकी नकल कर उसे चिढ़ाना ।

ভেজা, ভেজান = ভিজা, ভিজান ।

ভেজান (भजानो), ভেজানো (क्रि परि १०)— बंद करना, किवाड़ लगा देना, उठंगाना ।

ভেজাল (भैंजाल) वि—मिलावटी, खोट मिलाया हुआ । सं—मिलावट, खोट ।

ভেট सं—সওগাত, উপঢৌকন भेंट, उपहार, मुलाकात ।

ভেটকি सं—एक मछली ।

ভেড়া (भैंड़ा) सं—मेष, भेड़ा । स्त्री—ভেড়ী ।

ভেড়ুয়া, ভেড়ো वि—भेड़-सा ; स्त्रैण ; कायर ।

ভেড়ে वि—বোকা बेवकूफ, कायर, निकम्मा ।

ভেতর = ভিতর ।   —কার वि—भीतरका, अन्तरस्थ ।

ভেতো वि—भात खानेवाला ।

ভেত্তা वि—छेदनेवाला ।

ভেদ सं—भेदनेकी क्रिया, भिन्नता, मतभेद, विच्छेद ; दस्त । ভেদক, ভেদী वि—छेदनेवाला । ভেদজ্ঞান (-द-) सं—भिन्नताका ज्ञान, समान न समझना । ভেদন सं—भेदनेकी क्रिया । ভেদনীতি सं—शत्रुपक्षके लोगोंको बहकाकर अपनी ओर मिलाने या उनमें द्वेष उत्पन्न करनेकी नीति । ভেদিত (-अ) वि—भेदा हुआ । ভেদনীয় (-अ), ভেদ্য (-अ) वि—भेदनेके योग्य ।

ভেপসা वि—ভাপ देखो ।

ভেঁপু सं—भोंपा, भोंपू ।

ভেবা (भेंबा), ভ্যাবা वि—বোকা बेवकूफ, भौंचक्का । ভেবাচাকা, (ভ্যা-) सं—हक्काबक्का होनेकी हालत ।

ভেরী, (-रि) सं—बड़ा ढोल, नगाड़ा ।

ভেরেণ্ডা सं— এরণ্ড, রেড়ি रेंड । —ভাজা क्रि— बेकार बैठा रहना, व्यर्थका काम करना ।

ভেল वि—कृत्रिम बनावटी, खोटा । [जादूगरी ।

ভেলকি सं—যাদু, ইন্দ্রজাল जादू । —বাজি स —

ভেলা (भैला) सं—প্লব बेड़ा ।

ভেসকা = ভসকা ।   [—পণ্ড হওয়া नष्ट होना ।

ভেস্তা, ভেস্তে वि—পণ্ড नष्ट, भ्रष्ट । ভেস্তে যাওয়া

ভেস্তান (-नो), ভেস্তানো (क्रि परि १६)—পণ্ড হওয়া नष्ट होना, बिगड़ जाना ।

ভৈক্ষ, ভৈক্ষ্য (भैक्ख -अ) वि—भिक्षासे प्राप्त । सं—भिक्षान्न , सन्न्यास ।

ভৈষজ, ভৈষজ্য (-अ) सं—दवा ; इलाज ।

ভো सं—संबोधन सूचक शब्द ।

ভোঁ सं—बाँछरीका शब्द, गुंजन ; खालीपन (ঘর ভোঁ ভো) ; वेग सूचक शब्द (ভোঁ করে দৌড় দিল) ।

ভোক্তব্য (-अ) वि—खाने या भोग करने योग्य ।

ভোগবতী सं—पाताल-गंगा ।

ভোগা सं—फाँकि धोखा ।   [देखो ।

ভোগা, ভোগান, ভোগানো— ভুগা, ভুগান

ভোগান্তি सं—कष्टभोग ।

ভোগায়তন सं—भोगका आधार, शरीर ।

ভোচকানি सं—अधिक भूखके कारण थकावट ।

ভোজ सं—भोजनोत्सव, ज्योनार ।

ভোজন सं—खाना, खानेकी वस्तु, भोज, ज्योनार । ভোজয়িতা वि, सं—खिलानेवाला । ভোজী वि, सं—खानेवाला (মাংস—, আমিষ—) ।

ভোজবাজি सं—ভেলকিবাজি ।

ভোজালি सं—कूकरि कटार, छुरा ।

ভোট वि—भूटान देशका । सं—तिब्बत देश , वोट, सम्मति । ভোটাভুটি सं—पक्ष या विपक्षमें सम्मति दान ।   [মুখ—করা) ।

ভোঁতা वि—भोंथरा, बोलती बंद (থোঁতা

ভোঁদড় सं—ऊदविलाव।
ভোঁতা, ভুঁলো वि—मोटा, तुंदिला।
ভোম, ভোঁ वि—चूर (নেশায়—হওয়া)।
ভোমর सं—बरमा, छेदनेका एक औजार।
ভোমরা सं—भ्रमर भौंरा। [জীবন—)।
ভোর सं—तड़का। वि—पूरा, भर (দিন—,
ভোল सं—ছদ্মবেশ वेश, भेस। [शिव।
ভোলা वि—भूलनेवाला, आत्मविस्मृत। सं—
ভোলা, ভোলান=ভুলা, ভুলান।
ভোঁসভোঁস सं—सांसका शब्द।
ভ্যা सं—भेड़का शब्द।
ভ্যাবাচাকা=ভেবাচাকা।
ভ্রমি, (-মী) सं—ঘূর্ণিজল भवर।
ভ্রাতুষ্পুত্র (-अ)=ভাইপো।
ভ্রাম্যমাণ वि—घूमने या चक्कर काटने वाला।
ভ্রূ सं—ভুরু भौंह, भौं। —ভঙ্গি, ভ্রুকুটি, (-টী) सं—भ्रूभंग। —ক্ষেপ सं—दृष्टिनिक्षेप, ताकना, ग्रहण योग्य समझना (ভ্রুক্ষেপ করে না)। —বিলাস सं—सुंदर ढंगसे भ्रूका संचालन। —লতা सं—सुंदर टेढ़ी भौंह। —সংকেত सं—भ्रूका इशारा।

म

মই सं—बांसकी सीढ़ी, निसेनी, खेतके ढेले तोड़नेका यंत्र, हेंगा।
মইলা, মইলে स—कपड़े पर काला धब्बा।
মউ सं—মধু शहद। —চাক स—मधुमक्खियोंका छत्ता। —মাছি सं—मधुमक्खी।
মউরি स—মৌরি सौंफ।
মথা (क्रि परि ७)—মন্থন করা मथना।
মকদ্দমা सं—মামলা मुकदमा।
মকর स—কুম্ভীর मगर, घड़ियाल, एक राशि।
মকররী=মোকররী।

মকাই, মক্কা सं—भुट्टा, मकई।
মকুব सं—রেহাই, অব্যাহতি छुटकारा, मौकूफ।
মক্কেল सं—मुवक्किल।
মক্তব सं—मुसलमानी मदरसा। [लिखना।
মকশ (-अ) स—अभ्यास, लिखे हुए पर
মগ सं—आराकान देशका निवासी, बरमी (মগের মুলুক, अराजक देश); दस्तादार गिलास।
মগজি सं—कपड़ेका किनारा।
মগডাল सं—सबसे ऊंची टहनी।
মঙ্গলচণ্ডী स्त्री—दुर्गा।
মচ্ सं—लकड़ी आदिके टूटनेका शब्द। মচমচ্ सं—टूटने या चबानेका शब्द। মচমচে वि—मचकनेवाला, खस्ता (प्यारमें —মুচমুচে)।
মচকান (-नो), মচকানো (क्रि परि १६)—मोच आना। মচকানি सं—मोच।
মচ্ছব सं—মহোৎসব वैष्णवोंका भोज।
মছলন্দ=মসলন্দ। [ऊपर-कथित।
মজকুর सं—मजकूर, लिखित विवरण। वि—
মজবুত वि—শক্ত, দৃঢ় मजबूत, टिकाऊ।
মজা सं—मजा, मजाक, आनन्द; सजा (—টের পাবে)। —দার वि—मजेदार।
মজা (क्रि परि १)—मशगूल होना, लवलीन होना, मोहित होना, विपत्तिमें फंसना, तालाब आदि भर जाना, ज्यादा पक जाना। वि—कीचड़से भरा हुआ (तालाब आदि), ज्यादा पका।
মজান (-नो), মজানো (क्रि परि १०)—मोहित करना, विपत्तिमें डालना; भ्रष्ट करना (কুল—)।
মজুদ, মজুত वि—संचित, मौजूद।
মজুমদার सं—मालगुजारीका हिसाब रखनेवाला, एक उपाधि। [मजदूरी।
মজুর सं—শ্রমজীবী मजदूर। মজুরি स—
মজ্জন सं—অবগাহন स्नान, गोता।

মজ্জা सं—नलीकी हड्डीके भीतरका गूदा, गूदा। —গত (-अ) वि—अन्तर्निहित दिलमें जमा हुआ, बान पड़ा हुआ।
মঞ্জন स—মাঞ্জন मांजना, मजन।
মঞ্জুর वि स्वीकृत मजूर। মঞ্জুরি स—मंजूरी।
মট स - कड़ी चीजके टूटनेका शब्द।
মটকা स—ঘরের চালের মাথা छप्परके ऊपरका सिरा, मटका, एक रेशमी कपड़ा, कपट निद्रा (—মেরে থাকা)।
মটকান (-नो), মটকানো (क्रि परि १६)—शब्दके साथ मरोड़ना (আঙুল—, ঘাড়—)।
মটকি स—ছোট মটকা।
মড়ক स—মহামারী मरी, वबा।
মড়মড় स—लकड़ी आदिके टूटनेका शब्द।
মড়া स—लाश, शव, मुर्दा।
মড়ুঞ্চে, মড়াঞ্চে वि—मृतवत्सा जिस स्त्रीकी संतान जिंदा नहीं रहती।
মণ स—४० सेरकी तौल, मन।
মণিবন্ধ (-अ) स—कलाई। [(ভাতের—)।
মণ্ড (-अ) सं—মাড় माड़ी, लेई-सी वस्तु
মণ্ডল सं—गोलक, परिधि, चक्र, प्रदेश (ব্রজ—), ग्रामका प्रधान या मुखिया, एक उपाधि।
মণ্ডা स—गोल या मंदिर-नुमा मिठाई।
মত (मत्) स—सम्मति, राय, सिद्धांत, धारणा, विधि।
মত (मतो), মতো, মতন वि—सदृश, तुल्य, अनुसार, योग्य। स—प्रकार (নানামতে)।
মতলব स—अभिप्राय, तात्पर्य, नीयत (কু—); कौशल, तरकीब। —বাজ, মতলবী वि—ফন্দিবাজ मतलबी, स्वार्थी। [मनमुटाव।
মতান্তর स—भिन्न मत, मतोंका अनैक्य,
মতামত स—सम्मति असम्मति।
মতিচুর स—मोतिचूर, एक मिठाई।
মৎকুণ स—ছারপোকা खटमल।
মত্ত (मत्त अ) वि—मतवाला, मस्त।
মৎস্য (-अ) सं—মাছ मछली। —গন্ধা स्त्री—सत्यवती, वेदव्यासकी माता। —জীবী स—জেলে मछुआ। —মুখী स—श्राद्धके बाद तेरहवें दिन आमिष खाकर नियम-भंग, तेरही।
মৎস্যাশী वि—मछली खानेवाला।
মদির वि—नशा पैदा करने वाला।
মদীয় (-अ) वि—मेरा, मेरे सम्बन्धका।
মদো वि - शराब सा, शराबी। [मछली।
মদ্গুর स—মাগুর মাছ एक छिलका-रहित
মদ্দ (-अ), মদ্দা, মদ্দানী —मर्द देखो।
মধু स - शहद, शराब, वसंत। वि—मीठा, मधुर। —কর स—भौंरा। स्त्री—মধুকরী। —চক্র (-अ) स - मधुमक्खियोंका छत्ता।
মধুপ (-अ) स—भौंरा। —পুরী स—मथुरा।
মধুরথ (-अ) स—কোকিল कोयल।
মধুর वि—मीठा, आनंद जनक। মধুরিমা सं—मधुरता, मिठास।
মধূৎসব स—वसंतोत्सव।
মধ্য (-अ) स—মাঝ बीच, कमर, भीतरका भाग, अवकाश। वि—बीचका, भीतरका। —দিন स—दुपहर। —বর্তী वि—बीचका। स—पंच, मध्यस्थ। —বর্তিতা, মধ্যস্থতা सं—बीचबचाव। —বয়স্ক (-अ) वि—अधेड़। —বিত্ত (-अ) वि—ধনী ও দরিদ্রের মাঝামাঝি। मध्यम वर्गका। —রাত্র (-अ) स—आधी रात, रातका दुपहर। মধ্যস্থ (-अ) वि—बीचका। स—সালিস बिचवान, बीचबचाव करनेवाला।
মন स—४० सेरकी तौल, चित्त, मन, याद, स्मरण, विचार, पसंद, संकल्प, इच्छा —কষাকষি स—मनमुटाव। —কেমন করা क्रि—विरहसे चित्त बेचैन होना। —খারাপ হওয়া क्रि—चित्त उदास होना। —খোলা

वि—उदार सरल, सीधा। -गड़া वि—ख्याली, मनगढ़ंत, काल्पनिक। —দেওয়া क्रि—ध्यान देना। —পাওয়া क्रि—प्रीति या समर्थन प्राप्त होना। —ভাঙা क्रि—दिल टूटना। —ভার হওয়া क्रि—नाराज होना। -মরা वि—उदास, हतोत्साह। —যোগানো क्रि—किसीके इच्छानुसार काम करके उसे खुश करना। —রাখা क्रि—किसीके इच्छानुसार काम करके उसका सद्भाव कायम रखना। मনে মনে क्रि वि—अपने मनमें। মনে হওয়া क्रि—मनमें लगना (আমার এইরূপ মনে হইল, मुझे ऐसा लगा)।

মনঃকল্পিত (-नकल्पित -अ)=মনগড়া।

মনঃকষ্ট (-अ), মনঃপীড়া स—मनका कष्ट।

মনঃপূত (-अ) वि— পছন্দসই मनभावन, प्रिय।

মনঃপ্রাণ स—दिल और जान।

মনঃসংযোগ स—মনোনিবেশ ध्यान।

মনক্কা सं—मुनक्का।

মননীয় (-अ) वि—चिंताके योग्य।

মনশ্চক্ষু स—অন্তর্দৃষ্টি सं—मनकी दृष्टि।

মনসা (-नशा) स्त्री—साँपोंकी देवी। सं—एक कटीली झाड़ी। [अभिलाषा।

মনস্কাম (-नस्का-), মনস্কামনা स—मनकी कामना,

মনস্তাপ सं—অনুতাপ पछतावा, मनका क्लेश।

মনস্বী (-नस्वी) वि—बुद्धिमान, महामना, स्थिर चित्तवाला।

মনান্তর स—মনোমালিন্য मनमुटाव। [भेजना।

মনিঅর্ডার सं—मानी आर्डर, डाकसे रुपया

মনিব सं—प्रभु, मालिक।

মনিব্যাগ सं—मानी बैग, रुपये पैसेकी थैली।

মনিহারী स—शौकीनी चीजोंका बेचनेवाला, शौकीनी चीजें (—দোকান)। [पंडित।

মনীষা स—बुद्धि। মনীষী वि, स—विद्वान,

মনোনয়ন सं—निर्वाचन, पसंद, चुनाव।

মনোনিবেশ=মনঃসংযোগ।

মনোবাঞ্ছা सं—मनकी कामना।

মনোবিকার स—मनका विकार।

মনোভঙ্গ (-अ) स—दिलका टूटना। [हालत।

মনোভাব स—मनशा, अभिप्राय, मनकी

মনোমত (-अ) वि— পছন্দসই मनभावन।

মনোমালিন্য (-अ)=মনান্তর।

মনোযোগ सं—ध्यान, एकाग्रता।

মনোলোভা वि—मनको लुभानेवाला।

মনোহরসাহী सं—एक प्रकारका कीर्तन।

মনোহরা सं—एक मिठाई।

মন্ত্র (-अ) सं—मंत्र (পূজার—, সাপের—, দীক্ষার—); मंत्रणा, रहस्य। —গুপ্তি सं—मंत्रणाका गुप्त रखना। —পূত (-अ) वि—मंत्रसे पवित्र किया हुआ। —মুগ্ধ (-अ) वि—मंत्रसे मोहित। —দেওয়া क्रि—दीक्षा देना।

মন্থর वि—ধীর ह्रस्त, मंद, धीमा।

মন্দ (-अ) वि—খারাপ खराब, बुरा, अशुभ, दुष्ट, बीमार, अल्प, ह्रस्त, धीमा।

মন্দা सं—माँग या दामकी कमी।

মন্দাক্রান্তা सं—संस्कृतका एक छंद (जैसे—मेघदूतका)।

মন্দাগ্নি सं—अपच, अजीर्ण, बदहजमी।

মন্দিরা सं—छोटा करताल, खजनी। [गया है।

মন্দীভূত (-अ) वि—जो धीमा या क्षीण हो

মন্মথ (मन्मथ -अ) सं—मदन।

মন্যু सं—क्रोध, गुस्सा, शोक।

মফঃস্বল, মফস্বল सं—मुफस्सल, नगरके बाहरका स्थान, गाँव ; पिछली पीठ (কাপড়ের মদর—)।

মবলগ सं—নগদ नकद। वि—कुल।

মম (-अ) सव—मेरा। মমতা सं—आसक्ति, प्रेम, स्नेह, मोह, अपनापन।

-ময় प्रत्य—भरा, पूर्ण (দয়াময়, জলময়)।

ময়দা सं—मैदा, महीन आटा।

मयदान सं— माठ मैदान ।

मयना सं—मैना ; मुआयना ।

मयरा स —हलवाई ।

मयला वि—मैला, गदा, काला, मलिन । सं—मैल , मल, विष्ठा ।

मयान सं—मोयन, जो घी मैदा गूँधते समय मिलाया जाता है।

मयाल स —एक बड़ा साँप, अजगर ।

मर वि—नाशवान, मरनेवाला ।

मरक = मड़क ।

मरण सं—मृत्यु मौत । मरणापन्न वि—मरणासन्न। मरणाशौच सं—मृत्युके कारण अशौच। मरणोन्मुख (-न्मु-) वि—मरणासन्न, मुमुर्षु ।

मरद सं—मर्द, पुरुष ।

मरम सं—दिल, हृदय । मरमी वि—दरदी हमदर्द।

मरमर (मर-अ-मर-अ) वि—मृतप्राय, मुमुर्षु ।

मरशुम सं—मौसिम ; मौका । मरशुमी वि—मौसिमी ।

मरा (क्रि परि १)—मरना , घटना, कम होना । वि—मृत, मुर्दा ; क्षीण । मरा मास स —खुशकि सूखी खाल, रूसी ।

मराइ सं—धान रखनेका गोल खत्ता ।

मरि, मरिमरि अ—विस्मय आनंद सहानुभूति आदि भाव सूचक शब्द ।

मरिच सं—मिर्चा । गोल—, सं—काली मिर्च । लङ्का—, सं—लाल मिर्चा ।

मरिचा, मरचे सं—मुर्चा, जग ।

मरिया वि—मरनेको तैयार । क्रि वि—जानपर खेलकर ।

मरीचिका सं—मृगतृषा, मरुस्थलमें जलका भ्रम ।

मरु सं—मरुस्थल ।

मर्जि स —इच्छा, मरजी ।

मर्तमान सं—एक बड़ी जातिका केला ।

मर्द (-अ), मर्द्द (-अ) स —मरद मर्द, पुरुष । वि—साहसी, वीर । मर्दानि, मर्द्दानि सं—मरदानगी, साहस । मर्दा, मर्द्दा वि—पुरुष जातिका । मर्दानी, मर्द्दानी स्त्री—मर्दका-सा स्वभाव वाली स्त्री ।

मर्म (-अ) सं—दिल, हृदय, शरीरका सधिस्थान जहाँ आघात पहुंचनेसे अधिक वेदना होती है ; आशय, अर्थ, रहस्य । मर्मच्छद वि—हृदय-वेधक । मर्माघात सं—संधिस्थलमें या हृदयमे आघात । मर्माहत (-अ) वि—हृदयसे आघात प्राप्त । मर्मान्तिक वि—हृदय-वेधक । मर्मार्थ (-अ) सं—तात्पर्य, गूढ़ अर्थ । मर्मी वि—रहस्य जानने वाला , हमदर्द । मर्मोद्घाटन, मर्मोच्छेद सं—भेद खोलना ।

मर्मर सं—सूखे पत्तोंके टूटनेका शब्द ; संगमरमर ।

मल स —मैल, विष्ठा, मुर्चा, पाप, स्त्रियोंके पैरमें पहननेका कड़ा ।

मलम्बा सं—मुलम्मा, गिलट, कलई ।

मला सं—मैल, मैलापन ।

मला (क्रि परि १)—मलना, मसलना । कान— क्रि, सं—कान ऐंठना ।

मलाट सं—पुस्तकका आवरण, जिल्द ।

मलिदा स —मलीदा, एक कोमल ऊनी वस्त्र ।

मलिन वि—मयला मैला, गदा, कलंकित, उदास ।

मलिनिमा सं—मैलापन, मलिनता ।

मशक सं—मशा मच्छड़ ; मशक, चमडेका थैला जिसमें पानी भर कर ले जाते हैं ।

मशगुल वि—मशगूल, लवलीन ।

मशमश स —नये जूतेका शब्द ।

मशा सं—मच्छड़ ।

मशान सं—स्मशान, वधका स्थान ।

मशाय, मशाइ सं—'महाशय' शब्दका संक्षिप्त रूप ।

मशारि सं—मसहरी ।

मसनद सं—सिंहासन ।

मसलन्द (-अ) सं—एक महीन चटाई ।

मसला (मश्‌ला) सं—मसाला ।

মসি, মসী सं—लिखनेकी स्याही। —জীবী सं—कवानी क्लर्क, करणिक। [तीसी।

মসিনা, মসনে, (मस्ने), মসীনা स—তিসি

মসুর, মসূর, মসুরি स—मसूर दाल।

মসূরিকা, মসূরী, (মসুরীকা) सं—शीतला, छोटी माता।

মসৃণ (मसृन) वि—चिकना, तेलहा, कोमल।

মস্করা सं— পরিহাস दिल्लगी, मसखरी।

মস্ত (-अ) वि—बड़ा, विशाल, महान, अत्यंत।

মস্যাধার सं—दावात। [अदालत।

মহকুমা सं—जिलेका एक अंश, मुनसफी

মহড়া=মোহড়া।

মহদাশ্রয় (-स्र-) सं—महत्का आश्रय।

মহনীয় (-अ) वि—माननीय।

মহম্মদ सं—मुहम्मद। মহম্মদীয় (-अ) वि—मुहम्मदका ; मुसलमानी।

মহরম सं—मुहर्रम। [अंश।

মহল सं—भवन, बड़ा मकान, जमींदारीका

মহলা सं—अभिनयका अभ्यास, शिक्षाका परिचय।

মহাকায় वि—विशाल शरीरवाला।

মহাগুরু सं—पिता, माता, आचार्य, पति।

মহাজন सं—महान धार्मिक व्यक्ति, ऋणदाता, बनिया। মহাজনি सं—महाजनी, लेन देनका व्यवसाय। মহাজনী वि—रुपयेकी लेन देनका व्यवसाय सम्बन्धी।

মহাতপা वि, सं—महान तपस्वी।

মহাতেজা वि—महान प्रतापी।

মহানবমী स—नवरात्रिकी नवमी तिथि, दुर्गापूजाका तीसरा या अंतिम दिन।

মহান্ত (-अ) सं—मठस्वामी, महंत।

মহাপাতক सं—महापाप, ब्राह्मणकी हत्या, मदिरापान चोरी, गुरुपत्नी-गमन और इनमें से किसीके साथ सम्बन्ध ये पांच महापाप हैं।

মহাপাত্র (-अ) स—प्रधान मंत्री, एक उपाधि।

মহাপ্রভু स—চৈতন্যদেব गौरांग महाप्रभु।

মহাপ্রয়াণ, (-প্রস্থান) सं—मृत्यु, मृत्युके लिए यात्रा।

মহাপ্রসাদ सं—देवताका प्रसाद, मांस-प्रसाद।

মহাপ্রাণ वि—মহানুভব महात्मा।

মহাফেজ स—मुहाफिज, कागजात रखनेवाला।

মহাবোধি स—गौतम बुद्ध।

মহাব্যাধি सं—कुष्ठरोग कोढ़।

মহামহিম वि—बड़ी महिमा वाला।

মহামূল্য (-अ) वि—बहुत कीमती।

মহার্ঘ, মহার্ঘ্য, মহার্হ (-अ) वि—बहुत महंगा।

মহার্ণব सं—बड़ा समुद्र।

মহাল स—जमींदारीका अंश।

মহালয়া सं—शारदीय नवरात्रिकी पिछली या आश्विन कृष्ण अमावस्या।

মহাষ্টমী सं—नवरात्रिकी अष्टमी तिथि।

মহিষ सं—भैंस, भैंसा।

মহীরুহ (-अ) स—वृक्ष, पेड़।

মহীলতা स—কেঁচো केंचुआ।

মহুয়া सं—महुआ।

মা स्त्री—माँ, माता ; माताके समान स्त्री या कन्या अथवा देवीके लिए संबोधन (পিসীমা, বউমা, মা দুর্গা) ; विस्मय या भय सूचक शब्द (ওমা! মাগো!)। মা-মরা वि—मातृहीन।

মাই स—स्तन (—খাওয়া, —দেওয়া)।

মাইনে=মাহিনা।

মাইরি सं—कसम खानेका एक शब्द।

মাইল सं—आधा कोस, मील।

মাংসাদ (-अ), মাংসাশী वि—मांसाहारी।

মাকড়সা, মাকড় सं—मकड़ी। (পোকা-মাকড়, कीड़े-मकोड़े)।

মাকড়ি सं—कानकी बाली।

মাকাল सं—एक छोटा फल जो देखनेमें बहुत लाल परंतु भीतरके बीये कड़ुए और काले हैं।

মাকু सं—ढरकी। [नहीं निकलती।

মাকুন্দ (-अ) सं, वि—जिस पुरुषके दाढ़ी-मूछ

মাখন, মাখম सं—मक्खन।

মাখা (क्रि परि ३)—मलना, लगाना (তেল—); गूधना (ময়দা—)।

মাখান (-नो), মাখানো (क्रि परि १०)—लगाना, पोतना, चुपड़ना, मलना। মাখামাখি सं—आपसमें तेल अबीर आदि अधिक लगाना, अधिक घनिष्ठता या मेलमिलाप।

মাগ स्त्री—पत्नी, स्त्री, जोरू।

মাগা, মাঙ্গা (क्रि परि ३)—मांगना, चाहना। মাগন, মাঙ্গন सं—याचना, भिक्षा। মাগনা, মাঙনা क्रि वि—मुफ्तमें।

মাগী स्त्री—औरत (अवज्ञामें)।

মাগুর=মদ্গুর।

মাগ্‌গি=মহার্ঘ। [१०)—मंगवाना।

মাঙ্গান (-नो), মাঙ্গানো, মাঙানো (क्रि परि

মাচা, মাচান सं—मचान, मंच।

মাছ सं—মৎস্য मछली। —রাঙা सं—एक मछली पकड़नेवाली चिड़िया।

মাছি सं—मक्खी। —মারা वि—मक्षिकाके स्थानमें मक्षिका लिखनेवाला, मूर्ख नकलनवीस या केरानी।

মাজ सं—पेड़के तनेके बीचका हिस्सा।

মাজন सं—मंजन।

মাজা सं—কোমর कमर।

মাজা (क्रि परि ३)—माँजना, रगड़ कर साफ करना। वि—माँजा हुआ (—বাসন)।

মাঝ सं—मध्य, बीचका भाग। —খান सं—बीच, मध्य-भाग। মাঝামাঝি वि—बीचका, मध्यवर्ती। क्रि वि—बीचमें। মাঝে মাঝে क्रि वि—बीच बीचमें, कभी कभी।

মাঝার सं—मध्य, बीच।

মাঝারি वि—मध्यम श्रणीका, छोटे बड़े या भले-बुरेके बीचवाला।

মাঝী, (-ঝি) सं—मल्लाह, माँझी।

মাঞ্জা सं—माँझा, गुड्डीके डोरे पर चढ़ाया जाने-वाला कलफ।

মাটকোঠা सं—मिट्टीका दुमंजिला मकान।

মাটি, (-টী) सं—मिट्टी, धरती। वि—नष्ट (কাজ—হওয়া)। —দেওয়া क्रि—कब्र देना, गाड़ना। —মাড়ানো क्रि—आना, पधारना। গা মাটি মাটি করা क्रि—शरीरमें अकड़ मालूम होना। মাটির মানুষ सं—भोला-भाला आदमी।

মাঠ सं—ময়দান मैदान, खेत। মাঠে মারা যাওয়া क्रि—वृथा नष्ट होना।

মাঠা सं—মাখন मक्खन; ঘোল ছাচ্ছ, मट्ठा।

মাড় सं—माँड़ी, भातका पसावन।

মাড়া (क्रि परि ३)—मलना; माँड़ना (ঔষধ—)।

মাড়ান (-नो), মাড়ানো (क्रि परि १०)—मलवाना, पधारना, पैर रखना; कुचलना।

মাড়ি सं—गाढ़ा रस; मसूड़ा।

মাঢ়ী, (-ঢ়ি) सं—मसूड़ा।

মাণবক (-अ) सं—छोटा बालक, बौना।

মাত सं—तरल अंश, राब। वि—मोहित, पराजित।

মাতন सं—मत्त होना, सड़ाव, खमीर।

মাতব্বর वि, सं—मुखिया, प्रधान, इज्जतदार, मातबर।

মাতা स्त्री—माँ, जननी, माता या कन्याके समान स्त्रीके लिए संबोधन (শশ্রু—, सास, বধূ—, पतोहू)।

মাতা (क्रि परि ३)—मत्त होना, उमंगसे उछलना; सड़ना, खमीर पैदा होना।

মাতান (-नो), মাতানো (क्रि परि १०)—मत्त करना, मोहित करना सड़ाना।

মাতামাতি सं—मत्त-सा बर्ताव, उछल-कूद।

মাতাল वि—मतवाला, शराबी।

মাতৃঃস্বসা = মাতৃস্বসা।

মাতুল सं—मामा। स्त्री—মাতুলানী।

মাতৃক वि—माता सम्बन्धी। [वध करनेवाला।

মাতৃঘাতী, (-ঘাতক, -হন্তা) वि, सं—माताका

মাতৃদায় सं—माताकी मृत्युके बाद उनके श्राद्धादिका कर्तव्य और उसका भार।

মাতৃপক্ষ (-अ) सं—माताकी तरफके आदमी, नानाके घरके लोग। [मौसी।

মাতৃষ্বসা, মাতৃঃস্বসা स्त्री—माताकी बहिन,

মাতৃস্তন্য (-अ) सं—माताके स्तनका दूध।

মাতোয়ারা, (-য়ানা) वि—মাতাল मतवाला, मत्त, लवलीन। [सीधी रेखा।

মাত্রা सं—मात्रा, परिमाण, अक्षरके ऊपरवाली

মাৎসর্য্য (-अ) सं—পরশ্রীকাতরতা, ईर्षा डाह, दूसरेकी उन्नति देख कर मनमें जलन।

মাথা सं—मस्तक, सिर, बुद्धि, चोटी, छत; मुखिया। —উঁচু করা क्रि—आत्म-सम्मान या अहंकार दिखाना। —কাটা যাওয়া क्रि—बहुत शरमिंदा होना। —কোটা, —খোঁড়া क्रि—धरती पर सिर धुनना। —খাও सं—एक कसम। —খাওয়া क्रि—हानि करना, नुकसान पहुंचाना, सिर खाना। —খারাপ सं—पागलपन, सिड़। — গরম सं—उत्तेजना, क्रोध। —গলানো क्रि—नाक घुसाना, हस्तक्षेप करना। —ঘষা सं—सिरके बाल साफ करने या तेल सुगंधित करनेका एक मसाला। —ঘোরা सं—सिर-घूमना। — ধরা सं—শিরঃপীড়া सिर-दर्द। — পাগলা वि—পাগলাটে सनकी। —ব্যথা सं—सिर-दर्द; দায় जिम्मेवारी, गरज। —হেঁট वि—लज्जा या अपमानसे सिर नीचा।

মাথায় মাথায় क्रि वि—सीमा तक, लबालब।

মাথালো, মাথাল (-अ) वि—बुद्धिमान, माथावाला। [का खाने योग्य कोमल अंश।

মাথি, মেথি सं—खजूर आदि पेड़के सिरेके भीतर

মাথুর वि—मथुरा-सम्बन्धी। सं—श्रीकृष्णकी मथुरा-लीला।

মাদল सं—एक प्रकारका ढोल।

মাদার सं—एक खट्टा फल, एक कंटीला पेड़।

মাদী स्त्री—मादा।

মাদুর सं—चटाई। [बाँधते हैं।

মাদুলি सं—कवच, जिसमें दवा भर कर बाँहमें

মাদৃশ (-अ) वि—मेरे सदृश।

মাদ্রাজ सं—मद्रास। মাদ্রাজী वि—मद्रास सम्बन्धी। सं—मद्रास-निवासी।

মাদ্রাসা सं—मदरसा। [संग्रह।

মাধুকরী सं—मधुकरी, अनेक गृहोंसे भिक्षा-

মাধ্যন্দিন वि—दुपहरका।

মাধ্যম वि—बीचवाला, मध्यस्थ। মাধ্যমিক वि—दो श्रेणियोंके बीचवाला।

মাধ্যাকর্ষণ सं—पृथ्वीके मध्य भागका वह आकर्षण जो सदा सब पदार्थोंको अपनी ओर खींचता रहता है।

মাধ্যাহ্নিক = মাধ্যন্দিন।

মান सं—पैमाना, तौल, नाप। —চিত্র (-अ) सं—नक्शा। —দণ্ড (-अ) सं—তুলাদণ্ড तराजू; মাপকাঠি पैमाना। —মন্দির सं—ग्रह-नक्षत्रोंका दर्शन-स्थान।

মান सं—इज्जत, प्रतिष्ठा, प्रेमीके ऊपर कोप; अहंकार। —খোয়ান (-नो), (-নো) क्रि—इज्जत गंवाना। —ভাঙান (-नो), (-নো) क्रि—मानमोचन करना, रूठे हुए प्रियको मनाना। —দ (-अ) वि—इज्जत देने या रखने वाला। —পত্র (-अ) सं—अभिनंदन-पत्र। —হানি सं—सम्मानकी हानि, बेइज्जती।

মান, মানকচু सं—एक बड़ी जातिका बंडा।
মানত सं—মানসিক मनौती, मानता।
মানন, মাননা सं—मान, इज्जत। মাননীয় (-अ) वि—इज्जतदार। (खत लिखनेमें मान्य पुरुषके लिए—মাননীয়েষু और स्त्रीके लिए—মাননীয়াসু लिखा जाता है)।
মানসিক वि—मनका। सं—मनौती।
মানা सं—मनाही, मुमानियत।
মানা (क्रि परि २)—आदर करना, मान देना, विश्वास करना, समझना, स्वीकार करना, मानना।
মানান वि—सुदृश्य, सुंदर, योग्य। सं—शोभा, योग्यता। মানানসই वि—योग्य, उपयोगी, ठीक, शोभा देनेवाला।
মানান (-नो), মানানো (क्रि परि १०)—शोभा देना, अच्छा प्रतीत होना (বেশ মানিয়েছে); स्वीकार कराना।
মানিক सं—लाल रंगका एक मणि; प्यारका सम्बोधन। —জোড় सं—बगुलेकी जातिकी एक चिड़िया, (व्यंगमें) दो मित्र जो सदा एक-साथ रहते हैं या जिनका स्वभाव एक-सा है।
মানুষ सं—मनुष्य, आदमी, व्यक्ति; पालन-पोषण, परवरिश (ছেলে—করা)। वि—मनुष्य सम्बन्धी। (ছেলে—, सं—बालक, बच्चा। বন—, सं—आदमीकी शक्लका एक बड़ा बंदर, बनमानुस। ভাল—, स—भला आदमी। মেয়ে—, स्त्री—औरत)।
মানে सं—अर्थ, तात्पर्य, आशय।
মানোয়ার सं—जंगी जहाज man-of-war
মান্দ্য (-अ) सं—मद होनेका भाव, कमी, सस्ती।
মান্য (-अ) वि—माननीय, मानने योग्य। स—मान, इज्जत। মান্যি सं—मान, इज्जत।
মাপ सं—नाप; क्षमा। মাপক वि, सं—नापनेवाला। মাপকাঠি सं—पैमाना। মাপজোখ सं—नापजोख, नाप-तौलकर परिमाण या वज़न निर्धारण।
মাপা (क्रि परि २)—नापना।
মাফ, মাপ सं—মার্জনা क्षमा, माफी, छूट (টাকার সুদ—)।
মাফিক वि—तुल्य, समान, अनुरूप।
মাভৈঃ क्रि—डरो मत।
মামড়ি सं—घावकी पपड़ी। [—मुकदमेबाज।
মামলা सं—মকদ্দমা मुकदमा। —বাজ वि, सं
মামা, মামু सं—মাতুল मामा। মামাত (-अ), মামাতো वि—ममेरा। মামাশ্বশুর सं—ममिया ससुर। মামীশাশুড়ী स्त्री—ममिया सास।
মামুলী वि—मामूली, साधारण, प्रचलित, चलता।
মায় क्रि वि—সমেত सहित, मै।
মায়া सं—ममता, स्नेह, प्रेम, जादूगरी, कपट, अज्ञान, अविद्या, प्रकृति, ब्रह्मकी शक्ति जो संसारकी कल्पना करती है। —কান্না सं—कपट रुदन। —জাল सं—गृहस्थीके बंधनका फंदा। —বশে क्रि वि—ममताके कारण। —বাদ सं—वेदांत का अद्वैतवाद जिसमें यह संसार ब्रह्म-शक्ति मायाकी कल्पनामात्र माना जाता है।
মার सं—कामदेव; प्रहार, मार। —ধর, (-ধোর) सं—मारपीट। —কুটে, (-টো) वि—छोटी छोटी बात पर मार-पीट करनेवाला। —মুখ (-अ), (-মুখো) वि—मारनेमें तैयार या उद्यत। [या कौशल, चालबाजी।
মারপেঁচ (मारपेंच), মারপ্যাচ स—बातोंका पेच
মারবাড়ী=মারোয়াড়ী। [गोली।
মারবেল, মার্বেল सं—संगमर्मर या शीशेकी
মারহাট্টা सं—महाराष्ट्र, मराठा। [जाना)।
মারা वि—मृत, नष्ट (—যাওয়া, —পড়া, मर

मारा (क्रि परि २)—मारना वध करना, हत्या करना ; चुराना (ठका—, पकेट—) ; बंद करना (वन्ध—) ; घटाना (दम—) ; पीटना, ठोंकना, ठोंक कर बैठाना, लगाना ; चिपकाना ; करना (इयारकि—, दिल्लगी करना, इश्कबाजी की बातें करना)। चाल—, चाल मारना। फुर्ति—, ऐश-आराम करना। उँकि—, झाँकना। छुट—, दौड़—, दौड़ पड़ना। लाफ—, कूद पड़ना। मालकोंचा—, धोतीके सामनेका कटोरा और लटकाया हुआ अंश पैरोंके बीचमेसे पीछे ले जाकर काछके साथ कस कर खोंचना)। वि—लगा हुआ (टिकिट —, मार्का—)। मारामारि सं—मारपीट।

माराठा स—मराठा। माराठी सं—मराठी भाषा।

मारात्मक (मारात्तक) वि—प्राणनाशक, मार डालनेवाला ; भीषण।

मारि, मारी सं—मड़क मरी, वबा (—भय, मड़क—)। [देश-निवासी।

माड़ोयाड़ी, मारवाडी स—मारवाड़ी, मारवाड़-

मार्का सं—निशान चिह्न (—मारा क्रि—चिह्न लगाना। वि—चिह्नित)। [कपड़ा।

मार्किन सं—अमेरिका-निवासी ; मारकीन

मार्ग (-अ) सं—पथ, रास्ता (ज्ञान—, गाड़ी—) ; मलद्वार।

मार्च सं—अंग्रेजी मार्च मास।

मार्जना सं—क्षमा, माफी। मार्जनीय (-अ) वि—क्षमाके योग्य।

मार्बेल=मारबेल।

माल वि—ऊंचा (—भूमि)। स—एक जाति ; माला (शाड़—)।

माल सं—माल, वस्तु, धन ; मालगुजारी, मदिरा। —खाना=खाजानाखाना। —गुजार सं—मालगुजारी देनेवाला। —गुजारि सं—राजस्व, खाजना मालगुजारी। —जमि सं—मालगुजारी पर लिया हुआ खेत। —मसला सं—उपकरण सामग्री, बनानेका सामान।

मालकोंचा सं—मारा में देखो।

मालञ्च (-अ) सं—फूलोंका बगीचा।

मालपुया, मालपोया सं—मालपूआ।

मालभूमि सं—ऊँची भूमि।

मालसा सं—अथरा, मिट्टीका बड़ा कसोरा।

माला सं—माला, हार माला, गजरा ; समूह श्रेणी। —कर, —कार वि, सं—माला बनानेवाला। —बदल सं—विवाहके समय दुल्हे-दुलहिनमें माला-बदलौवल।

माला स—नारियल बेल आदिकी खोलीका कटोरा-सा टुकड़ा। [मल्लाह।

माला, मालो सं—जेले एक जाति, धीवर,

मालाइ सं—दुधेर सर मलाई।

मालिका सं—माला माला।

मालुम सं, वि—ज्ञान, बोध, मालूम।

मालो सं—जेले धीवर, मल्लाह।

माल्य (-अ) सं—माला।

माल्ला सं—मल्लाह, माँझी।

माष, माषकलाइ सं—उरदकी दाल।

माषा सं—माशा, ८ रत्तीकी तौल।

मास सं—मांस ; महीना। —काबार सं—महीनेका अंतिम दिन। —माहिना सं—मासिक वेतन। मासहारा (माशोहारा) सं—मासिक वृत्ति या सहायता।

मासतुत (-तो) (-तुतो) वि—मौसेरा।

मासश्वशुर सं—मौसिया ससुर। स्त्री—मास-शाशुड़ी। [पत्रिका।

मासिक वि—हर मासका। स—मासिक

मासी, (-सि) स्त्री—मौसी।

माशुल सं—शुल्क, महसूल, भाड़ा।

मास्तुल सं—मस्तूल।

माहिना, माहिने सं—मासिक वेतन।

মাহিষ্য (-अ) सं—एक जाति।
মাহুত सं—महावत।
মিউজিয়াম सं—अजायब घर।
মিউনিসিপালিটি सं—नगरकी सफाई आदिका प्रबंध करनेवाली संस्था, म्युनिसिपलिटी, नगरपालिका।
মিছরি सं—मिसरी।
মিছা, মিছে वि—মিথ্যা झूठा। क्रि वि—वृथा। —মিছি क्रि वि -झूटमूठ, निरर्थक।
মিছিল सं—শোভাযাত্রা जलूस; मुकदमेका कागजपत्र। [फैसला।
মিট सं—মিল मेल। —মাট सं—निबटेरा,
মিটমিট सं—टिमटिमाना, बार बार आँखें खोलना और बंद करना। মিটি-মিটি क्रि वि—टिमटिमाते हुए। सं—अधखुली आँखोंकी दृष्टि। মিটমিটে वि—टिमटिमाता हुआ; कपटी (—শয়তান)। [होना, खतम होना।
মিটা, মেটা (क्रि परि ५)—चुकना, सम्पन्न
মিটান (-नो), মিটানো, মিটনো, মেটানো (क्रि परि ११)—समाप्त करना, निबटाना।
মিঠা, মিঠে वि—মিষ্টি मीठा, मधुर।
মিঠাই, মেঠাই सं—মিষ্টান্ন मिठाई।
মিত (-अ) वि—परिमित, थोड़ा, संयत। —ব্যয়ী वि—कमखर्च। —ব্যয়িতা सं—कमखर्ची। —ভাষী वि—कम बोलने वाला।
মিতবর सं—बारातमें दूल्हेके साथ जानेवाला लड़का, शहबाला।
মিতা, মিতে सं—मित्र, दोस्त।
মিতাক্ষর=মিত্রাক্ষর।
মিতাচার सं—संयत आचरण। মিতাচারী वि—संयत आचरण करनेवाला, संयमी।
মিতালি सं—मित्रता, दोस्ती।
মিতাহার, মিতাশন सं—अल्प भोजन। মিতাহারী, মিতাশী वि—अल्प-भोजी।

মিতি सं—नाप (ক্ষেত্র—); ज्ञान।
মিত্র (-अ) सं—दोस्त; कायस्थोंकी एक श्रेणी और उपाधि।
মিত্রাক্ষর सं—पद्यके दोनों चरणोंके अंतिम अक्षरोंमें तुकवाला छंद, तुकांत।
মিথ্যা, মিথ্যে वि—মিছা झूठा, कपटी। क्रि वि—निरर्थक। सं—झूठ। মিথ্যাচরণ, মিথ্যাচার सं—झूठा बर्ताव, कपट आचरण। মিথ্যাবাদ सं—झूठी बात। মিথ্যাবাদী सं, वि—झूठ बोलनेवाला। स्त्री— মিথ্যাবাদিনী।
মিথ্যুক=মিথ্যাবাদী।
মিনতি सं—बिनती, प्रार्थना, अर्ज।
মিনমিন सं—क्षीणताका लक्षण प्रकाश (—ক'রে কথা বলা, —ক'রে আগুন জ্বলা)। মিনমিনে वि—धीमा।
মিনসা, মিনসে सं—पुरुष, मर्द (तुच्छार्थमें)।
মিনা सं—मीना, सोने चाँदी आदि पर किया जानेवाला रंगबिरंगा काम।
মিনার सं—मीनार, स्तंभ।
মিনি=বিনি।
মিনিট सं—मिनट, ६० सेकंड।
মিয়া सं—मियाँ, महाशय।
মিয়াদ सं—मीआद, समय, कद। মিয়াদী वि—मीआदी (—জ্বর)।
মিয়ান (-नो), মিয়ানো, মিয়নো (क्रि परि ११)—भुरभुरा न रहना, नरम नम या मन्द हो जाना। वि—नरम, उत्साह-हीन।
মিরগেল=মৃগেল।
মিল सं—मेल, एकता, सुलह, समता, दोस्ती, तुक, कपड़े आदि तैयार करनेकी मिल या कारखाना।
মিলন सं—मिलाप, मेल, संयोग, भेंट, एकता।
মিলনান্ত (-अ) वि—जिस कहानीके अंतमें नायक-नायिकाका मिलाप होता है।

মিলা, মেলা (क्रि परि ५)—मिलना, जुड़ना, जुटना, प्राप्त होना, समान होना, ठीक होना, तुकांत होना। মিলামিশা, মেলামেশা सं—मेल-मिलाप।

মিলা, মেলা (मैला) (क्रि परि ५)—आँखे खोलना, ताकना (চোখ মেলে দেখ)।

মিলান (-नो), মিলানো, মিলনো, মেলানো (क्रि परि ११)—मिलाना, तुक मिलाना, मिलान करना, गल जाना, लुप्त होना (মুখে সন্দেশ या আকাশে মেঘ মিলিয়ে গেল)।

মিলিত (-अ) वि—संयुक्त, मिला हुआ, इकट्ठा, प्राप्त।

মিশ सं—मिश्रण, मेल। वि—स्याही-सा (—কাল)। মিশমিশ सं—कालेपनका लक्षण प्रकाश। মিশমিশে वि—काला।

মিশা, মেশা (क्रि परि ५)—मिलना, मिश्रित होना (তেলে জল মেশে না)। মিশামিশি, মেশামিশি स—मेलजोल, घनिष्ठता।

মিশান (-नो), মিশানো, মিশনো, মেশানো (क्रि परि ११)—मिलाना, घोलना। वि—मिला हुआ, मिश्रित, घोला हुआ।

মিশান, মিশন, মেশান स—मिश्रण, मिलावट।

মিশুক वि—मिलनसार, मेली, जल्दी हिलमिल जानेवाला।

মিষ্ট (-अ) वि—मीठा, मधुर, सुखकर। মিষ্টি, মিষ্টি स—মিষ্টান্ন मिठाई, मीठी वस्तु। মিষ্টতা स—मिठास। —মুখ स—गृहस्थकी प्रसन्नता के लिए मेहमानका थोड़ी मिठाई खा लेना। মিষ্টান্ন (-अ) स—পায়স खीर ; मिठाई।

মিসর स—मिस्र देश Egypt.

মিসি स—दाँत काला करनेका मंजन।

মিসিবাবা स्त्री—अंगरेजोंकी लड़की (नौकर-नौकरानियोंकी भाषामें)।

মিস্ত্রী सं—कारीगर, मिस्तरी। রাজ—, सं—थवई। ছুতার—, सं—बढ़ई। [मोतीचूर।

মিহি वि—महीन, सूक्ष्म। —দানা सं—

মিহির सं—सूरज, सूर्य।

মীন सं—মৎস্য मछली।

মুই सर्व—আমি मैं (ग्रामीन)।

মুকুতা स—মুক্তা मोती।

মুকুল सं—কলিকা, কুঁড়ি कली, कोंपल। মুকুলিত (-अ) वि—जिसमें कलियाँ आयी हों, अधखिला।

মুক্ত (-अ) वि—খোলা खुला, छुटा हुआ, मुक्ति प्राप्त, छोड़ा हुआ, साफ (মকড়ি—করা))।

—কণ্ঠে क्रि वि—গলা ছাড়িয়া निःसंकोच, खुल्लमखुल्ला। —কেশী, —কেশা वि, स्त्री—खुले केशवाली। —বেণী वि स्त्री—खुली वेणी-वाली। —হস্ত (-अ) वि—खुले हाथों दान करनेवाला।

মুখ सं—আনন, আস্য मुंह, मुख, चेहरा ; प्रवेशका मार्ग, छिद्र, मुहाना ; आरंभ ; नोक ; सामना ; प्रधान। —খানগা করা क्रि—मुख खोलना या चलाना। —করা क्रि—धमकाना। —খারাপ করা, —খিস্তি করা क्रि—भद्दी बातें कहना, गाली देना। —খিচান क्रि—ভেংচানো मुंह बिगाड़ना। —গোঁজ করা क्रि—क्रोध आने पर कुछ न कह कर मुंह खींचे रहना। —চাওয়া क्रि—मुंह ताकना, आशा करना। —ছুটান (-नो) क्रि—मुँह चलाना, लगातार गाली देते रहना। —দেখা क्रि—दूल्हे या दुलहिनको आशीर्वादके लिए देखना। —শাগা क्रि—सूरन आदिके खानेसे मुँह खुजलाना। —সিটকান क्रि—नाक-भौं सिकोड़ना। —চন্দ্র (-মুখচন্দ্র-अ) सं—चन्द्रमा-सा सुंदर मुख। —চুন—स लज्जासे मुंह पीला पड़ना। —চোরা वि

—लजीला मुँहचोर। —ছবি (-खच्छवि) सं—चेहरा। —ঝামটা, —নাড়া सं—फटकार। —পত্র (-खपत्र-अ) सं—भूमिका, आरंभ। —পদ্ম (-खपद्म-अ) स—कमल-सा सुंदर मुख। —পাত্র (-खपात्र-अ) सं—अगुआ, मुखिया। —পোড়া वि—जिसका मुँह जल गया है (एक गाली)। —ফোড় वि—स्पष्टवक्ता। —ব্যাদান (-खब्‍-) स—मुंह फैलाना। —ভঙ্গী (-खभ-) स—मुँह बिगाड़ना। —ভার सं—क्रोध या दुःखके कारण मुखका भारीपन। —রক্ষা स—इज्जत बचाना। —রুচি सं—चेहरेका लावण्य। —রোচক वि—स्वादिष्ट। —শুদ্ধি सं—भोजनके बाद खाने योग्य पान मसाला आदि। মুখস্থ (-अ) वि—कंठस्थ, याद, मुखमें स्थित। মুখে চুন-কালি দেওয়া क्रि—मुँहमें कालिख पोतना।

মুখর वि—वाचाल अधिक बोलनेवाला, बातूनी, आवाज करता हुआ, अगुआ, मुखिया। स्त्री—মুখরা। মুখরিত (-अ) वि—आवाज करता हुआ।

মুখাগ্নি स—शवके मुखमें अग्नि प्रदान।

মুখান (-नो), মুখানো, মুখনো (क्रि परि १२) —पैर बढ़ाये रहना, मुँहतक आना; चौकन्ना रहना।

মুখামুখি, মুখোমুখি क्रि वि—आमने-सामने।

মুখামৃত (-अ) स—थूक थूक।

মুখার্জি, (-র্জী)=মুখোপাধ্যায়।

মুখি सं—सूरन आदिकी आँख या गाँठ।

-মুখী वि— मुख वाली (চন্দ্র—, পোড়ার—); और (অন্তর্মুখী)।

মুখুজ্যে=মুখোপাধ্যায়।

মুখে মুখে क्रि वि—लोगोंके मुँहसे सुन कर, न लिख कर, पहलेसे तैयारी न करके।

-মুখো वि- मुखवाला (পোড়ার—); और (ঘর—)।

মুখোপাধ্যায়, মুখার্জী, মুখুজ্যে सं—ब्राह्मणोंकी [एक उपाधि।

মুখোশ स—नकली मुख, चेहरा।

মুগ स—मूंगकी दाल।

মুগা सं—मोटा रेशम।

মুগুর सं—मुगदर, गदा, हथौड़ा।

মুগ্ধ (-अ) वि—मोहित, आसक्त, बालक-सा भोला; मूर्ख।

মুঘল=মোগল। [হাসা क्रि—मुसकुराना।

মুচকি सं—मुसकान। মুচকিয়া হাসা, মুচকে

মুচড়ান (-नो), মুচড়ানো, মুচড়নো, মোচড়ানো (क्रि परि १८)—মুচড়ান मरोड़ना, ऐंठना, बटना।

মুচমুচ सं—মচমচ देखो।

মুচলেকা सं—स्वीकार पत्र, मुचलका।

মুচি सं—धातु गलानेकी कटोरी।

মুচী, মুচি स—চর্মকার मोची, चमार।

মুচুকুন্দ स—एक फूलका पेड़।

মুচ্ছুন্দী सं=মুৎসদ্দী।

মুছলমে क्रि वि—एकदम, बिलकुल।

মুছা, মোছা (क्रि परि ६)— পোঁছা पोंछना, साफ करना।

মুছান (-नो), মুছানো, মুছনো, মোছানো (क्रि परि १२)—পোঁছানো दूसरेका अंग पोंछना।

মুজরা, মুজরো सं—नाच गानका प्रदर्शन; पावनेमेंसे छूट।

মুঞ্জ (-अ) स—एक तृण या घास, मूंज।

মুঠ स—मुट्ठी, दस्ता, बेंट।

মুঠা, মুঠি, মুঠো स—मुट्ठी, बँधी हुई हथेली। वि—मुट्ठीभर। [लावा।

মুড়কি स—गुड़ या चीनीका रस मिला-हुआ

মুড়মুড় स—भुरभुरी चीजके टूटनेका शब्द।

মুড়মুড়ে वि—भुरभुरा।

মুড়, মুড়ো সं—मछलीका सिर ; सिरा, छोर ।
মুড়, মুড়া वि—मूंड़ा हुआ (—মাথা), अग्र-प्रास (—ঝাঁটা) ।
মুড়া, মোড়া (क्रि परि ६)—तह करना, मोड़ना, लपेटना । वि—तह किया हुआ, लपेटा हुआ ।
মুড়ান (-নো), মুড়ানো, মুড়নো, মোড়ানো (क्रि परि १२)—নেড়া করা मूंड़ना, सिरके बाल बनाना ; कतरना ; छाँटना । वि—मूंड़ा हुआ, छाँटा हुआ ।
মুড়া মাখন, (মুড়ো—) स सूखा मक्खन ।
মুড়ি स—फरुही, मुरमुरा ; मछलीका सिर (মাছের—ঘণ্ট) ; कपड़ेका तह किया हुआ किनारा , ओढ़ना (লেপ—দেওয়া) ।
মুড়ো स—মুড়া मछलीका सिर ।
মুণ্ডপাত (मुण्डपात) स—सिर काटना, सजा ।
মুত सं—मूत पेशाब ।
মুতা, মোতা (क्रि परि ६)—पेशाब करना ।
মুতান (-নো), মুতানো, মুতনো, মোতানো (क्रि परि १२)—पेशाब कराना ।
মুৎফরক্কা वि—मुतफरिक, तरह-तरहका ।
মুৎসদ্দী, মুচ্ছুদ্দী सं—गुमाश्ता, मुनीम, एजंट ।
মুথা, মুথো सं—मोथा ।
মুদা (क्रि परि ६)—मूंदना ।
মুদিত (-অ) वि—प्रसन्न, खुश , मूँदा हुआ ।
মুদী, (-দি) सं—मोदी, बनिया, पनसारी । —খানা सं—मोदीखाना, पनसारीकी दूकान ।
মুদগ (-অ) स—मूगकी दाल ।
মুদগর स=মুগুর ।
মুদ্দই स—मुद्दई, वादी, अभियोक्ता ।
মুদ্দৎ सं—मोआद, अवधि ।
মুদ্দাফরাশ, (-ফো-) स—शव ढोने और जलाने वाला, चण्डाल, डोम ।
মুদ্রাকর स—छापनेवाला, मुद्रक । —প্রমাদ स—छपाईकी गलती ।
মুদ্রাঙ্কন सं—मुद्रण, छपाई ।
মুদ্রাদোষ सं—किसी अगके हिलाने या बातचीतमें किसी एक खास शब्दके दुहरानेकी आदत , तकिया कलाम, सखुन तकिया ।
মুদ্রাশঙ্খ (-অ) स—सीसेका भस्म, मुरदासख ।
মুদ্রিকা सं—আংটি अगूठी ।
মুনশী स—मुंशी, लेखक, विद्वान । মুনশীয়ানা स—विद्वत्ता, पाण्डित्य ।
মুনসেফ स—मुंसिफ ।
মুফৎ वि—मुफ्त, विना दामका ।
মুমূর্ষু वि—मरणासन्न ।
মুরগি स—मुर्गी ।
মুরছা स—मूर्छा, वेहोशी ।
মুরতি सं—मूर्ति, शकल, चेहरा ।
মুরদ स—ताकत, सामर्थ्य ।
মুরব্বী, মুরুব্বী सं—रक्षक, वली । মুরুব্বিয়ানা स—मुरव्वी-सी चाल (व्यगमें) ।
মুরি स—নর্দমা, जलनाली नाली, मोरी ।
মুর্দা स—शव, मुरदा । মুর্দাফরাশ=মুদ্দাফরাশ ।
মুলতবী वि—स्थगित, मुलतवी ।
মুলা, মুলো स—मूली ।
মুলুক, মুল্লুক सं—देश, मुल्क ।
মুশকিল स—সংকট मुश्किल, दिक्कत । —আসান सं—संकट-निवारण ।
মুষড়ান (-নো), মুষড়ানো, মুষড়নো, মোষড়ানো (क्रि परि १८)—দমিয়া যাওয়া उत्साह भंग होना, दिल टूटना , मुरझाना ।
মুষল, মুশল, মুসল स—ঢেঁকির মোনা मूसल , मुगदर । মুষলধার, (-ধারা) सं—मूसलधार ।
মুষা सं—धातु गलानेकी कटोरी, घड़िया ।
মুষ্ক (-অ) सं—अण्डकोष, फोता ।
মুষ্টি स—मुट्ठी , बेंट, दस्ता । वि—मुट्ठीभर ।

—ভিক্ষা सं—मुट्ठी भर चावल आदिकी भिक्षा। —মেয় (-अ) वि—इने-गिने, थोड़े। —যোগ सं—টোটকা ঔষধ टोटका दवा, चुटकुला।

মুসলিম सं—मुसलमान।

মুসাফির सं—मुसाफिर, यात्री।

মুসাবিদা सं—খসড়া मसौदा।

মুহরি, মুহুরি, (-রী) स—কেরানী मुहर्रिर, करणिक। [बार बार।

মুহুঃ क्रि वि—पुन। মুহুর্মুহুঃ क्रि वि—

মুহ্যমান वि=মোহ্যমান।

মূক वि—বোবা गूँगा।

মূঢ় (-अ) वि—मूर्ख; मुग्ध।

মূত্র (-अ) सं—पेशाव। —কৃচ্ছ্র (-अ) सं—एक रोग जिसमें पेशाव कष्टसे होता है।

মূরতি सं—মূরতি मूर्ति।

মূর্খ (-अ) वि—বোকা बेवकूफ, अपढ़।

মূল सं—শিকড়, গোড়া जड़, आदि कारण, उत्पत्ति-स्थान। वि—प्रथम, प्रधान। —গায়েন सं—प्रधान गायक। —ধন सं—पूँजी। —মন্ত্র (-अ) सं—বীজমন্ত্র अपने इष्टदेव या देवीका मंत्र।

মূলক सं—मूला मूली। वि मूलस्वरूप।

মূলাধার सं—मूल कारण।

মূলীভূত (-अ) वि—आदि कारण रूप।

মূলোচ্ছেদ, মূলোৎপাটন सं—जड़से उखाड़ना।

মূষিক, মূষীক सं—इन्दुर मूसा, चूहा।

মৃগ (-अ) सं—हिरन, मृग। —নাভি, —মদ सं—কস্তুরী कस्तूरी। —রাজ, মৃগেন্দ্র (-अ) सं—सिंह। মৃগাক্ষী स्त्री, वि—मृगलोचनी।

মৃগেল सं—মিরগেল रेहू जातिकी एक मछली।

মৃৎ, মৃদ্ सं—मिट्टी (মৃৎপাত্র, মৃদ্ভাণ্ড)।

মৃত (-अ) वि—मरा हुआ, मुरदा। মৃতক सं—मृत शरीर, शव, मृत्युके कारण अशौच।

মৃতকল্প (-अ) वि—मुमुर्षु, मरणासन्न। মৃতদার वि—বিপত্নীক रंडुआ। মৃতপ্রায় वि=মৃতকল্প।

মৃতবৎসা वि, स्त्री=মড়ঞ্চে।

মৃতাপত্যা वि, स्त्री=মৃতবৎসা।

মৃতাশৌচ सं=মরণাশৌচ।

মৃদঙ্গার सं—पत्थरका कोयला।

[মে] সং—अंग्रेजी मई महीना।

মেওয়া (मेवा) सं—मेवा।

মেকী वि—बनावटी, नकली, जाली।

মেঘ सं—बादल। —করা क्रि—बादल छा जाना। —ডাকা क्रि—बादल गरजना।

মেঘাড়ম্বর सं—घटा। —মন্দ্র (-अ) सं—बादलका गर्जन। মেঘলা (मेघ्ला) वि—মেঘাচ্ছন্ন बादल छाया हुआ।

মেচেতা, মেছেতা सं—चेहरे पर की चित्ती।

মেছুনী स्त्री—মৎস্যজীবিনী मछली बेचनेवाली।

মেছুয়া, মেছো सं—জেলে मछुआ। वि—मछली सम्बन्धी, मछली-सा, मछली खानेवाला।

মেছোহাটা सं—मछलीका बाजार।

মেজ (-अ), মেজো वि—मझला, दूसरा (—ছেলে)। মেজদা (मेज्दा) सं—मझले भाई साहब।

মেজাজ सं—मिजाज। মেজাজী वि—मिजाज-दार, घमंडी। [जमीन।

মেঝে, মেজে सं—গৃহতল फर्श, पक्की बनी हुई

মেঝো वि=মেজ।

মেটে वि—मिट्टीका बना, मिट्टी-सा।

মেটে, মেটুলি सं—कलेजी।

মেঠাই सं—मिठाई। [ईश्वर)।

মেঠো वि—मैदान सम्बन्धी, मैदानका (—

মেড়া (मैड़ा) सं—ভেড়া भेड़ा। वि—भेड़-सा, मूख, बेवकूफ।

মেডেল सं—पदक, मेडल।

মেথর (मैथर) सं—मेहतर। स्त्री—মেথরানী।

মেথি सं—मेथी।

মেথি, মেথী सं =মাথি ।
মেদা (मैदा) वि—मादा-सा, निकम्मा ।
মেদামারা वि—बेवकूफ, नालायक ।
মেদি सं—मेंहदी ।
মেদুর वि—कोमल, चिकना, काला । [शर्मीला ।
মেনী सं—बिल्ली । —মুখো वि—लाजुक
মেয়াদ सं =মিয়াদ ।
মেয়ে स्त्री—कन्या, लड़की; औरत । —মানুষ स्त्री—औरत, नारी, स्त्री, पत्नी । মেয়েলী वि—स्त्री-सा ।
মেরজাই सं—मिरजई ।
মেরাপ (मेंराप) सं—मण्डप ।
মেরামত सं—मरम्मत, संस्कार । মেরামতি सं—मरम्मतका काम या उसकी मजदूरी ।
মেল सं—मिलन, एकता, सुलह, विवाहमें कुलका मेल (ফুলিয়া—) ।
মেলা (मैला) वि—अनेक, बहुत । स—मेला, नुमाइश ।
মেলা (मैला) (क्रि परि ५)—कपडा आदि सूखने देना ।
মেলা, মেলান क्रि =মিলা, মিলান ।
মেশা, মেশান क्रि=মিশা, মিশান ।
মেষ सं—ভেড়া भेड़ा ।
মেস (मेस) सं—होटल जहाँ बहुतसे आदमी रहते और रुपये दे कर खाते हैं ।
মেসো सं—मौसा ।
মেহগনি सं—एक कीमती लकडी । [—मजदूरी ।
মেহনৎ सं—मिहनत । মেহনতি, মেহনতানা स
মেহেদি सं—মেদি मेहदी ।
মেহেরবান वि—मिहरबान ।
মৈত্র (मइत्र-अ) वि—मित्र सम्बन्धी । মৈত্র, মৈত্রেয় (-अ) सं—ब्राह्मणोंकी उपाधि ।
মোকররী वि—जिसकी मालगुजारी नियत है ।
মোকাবিলা सं—मुकाबला, फैसला, निबटेरा ।
মোকাম सं—मुकाम, रहनेका स्थान ; व्यापार का स्थान ।
মোক্তার सं—मुख्तार । [दृढ ।
মোক্ষম (मोक्खम) वि—निर्घাত अव्यर्थ, अचूक,
মোগল सं—मुगल । মোগলাই (मोगलाइ) वि—मुगलका ।
মোচ सं—नोक, सिरा, मूछ ।
মোচড় स—पाक मरोड़, ऐंठन ।
মোচড়ান (-नो), মোচড়ানো= মুচড়ান ।
মোচা सं—केलेका फल ।
মোছ, মোচ सं—গোঁফ मूँछ ।
মোছা, মোছান=মুছা, মুছান ।
মোট सं—বস্তা, গাঁটরি गठरी, मोटरी, बोझ । वि—कुल, सब, संक्षेपमें कथित (—কথা) । মোটামুটি क्रि वि—मोटे हिसावसे । মোটে क्रि वि—একেবারেই एकदम, बिलकुल, सिर्फ । মোটের উপর क्रि वि—सब ओर विचार करके ।
মোটন सं—मटकाना मोड़ना (অঙ্গুলি—) ।
মোটা वि—मोटा ; बड़ा, अधिक (—মাহিনা, —টাকা); जिसमें कारीगरी नहीं है (—কাজ) । —সোটা वि—হৃষ্টপুষ্ট मोटाताजा ।
মোড় सं—বাঁক मोड, घुमाव ।
মোড়ক सं—পুরিয়া पुड़िया ।
মোড়ল सं—মণ্ডল गाँव या दलका मुखिया । মোড়লি सं—मुखियापन ।
মোড়া सं—बेंतका बना ऊँचा गोल आसन, मोढ़ा ; ऐंठन, मरोड़ , शरीरकी अकड़ तोड़ना (আড়া-মোড়া ভাঙ্গা) ।
মোড়া, মোড়ান=মুড়া, মুড়ান ।
মোতা, মোতান=মুতা, মুতান ।
মোতাবেক क्रि वि—मुताबिक ।
মোতায়েন वि—कायम, स्थापित, नियुक्त ।
মোতি सं—मोती ।
মোতিচুর, (मति-) सं—मोतीचर ।

মোদক सं—मिठाई लड्डू ; हलवाई।
মোদিত (-অ) वि—आनंदित, हर्षित।
মোদের सर्व—আমাদের हमलोगोंका ; আমাদিগকে हमलोगोंको।
মোদ্দা क्रि वि—परंतु, संक्षेपमें।
মোনা सं—ढेंकीका मूसल।
মোমবাতি सं—मोमबत्ती।
মোয়া सं—लावे आदिका लड्डुआ।
মোর सर्व—আমার मेरा।
মোরগ सं—कुक्कुट मुर्गा। स्त्री—মুরগী।
মোরব্বা सं—मुरब्बा।
মোরা सर्व—আমরা हमलोग।
মোলাকাত सं—मुलाकात।
মোলায়েম वि—मुलायम।
মোল্লা सं—मुल्ला, मौलवी।
মোষ सं—মহিষ भसा।
মোষড়ান=মুষড়ান।
মোসলেম, মুসলিম सं—मुसलमान।
মোসাহেব सं—मुसाहब। মোসাহেবি सं—मुसाहबी।
মোহ (-অ) सं—मूर्छा, बेहोशी, भ्रम, अज्ञान, मूर्खता मोह, ममता। —ঘোর सं—अज्ञानसे भ्रांति। —নিদ্রা सं—मायाके प्रभावसे अज्ञान, जादूकी निद्रा।
মোহড়া, মহড়া सं—सामना, आगेका स्थान; मोरचा ; अभिनयका अभ्यास।
মোহন্ত (-অ) सं=মহান্ত।
মোহরৎ सं—सालके आरम्भमें दूकानके नये हिसाबका खोलना (নূতন খাতা—)।
মোহানা, মোহনা सं—मुहाना, नदीमुख।
মোহ্যমান (मोह्यमान) वि—मोह-प्राप्त।
মৌক্তিক (मउक्तिक) सं—मुक्ता मोती।
মৌচাক, মউচাক सं—मधुमक्खियोंका छत्ता।
মৌতাত, মউতাত सं—नियत समय पर नशा पीनेकी इच्छा, अफीम आदि नशीली वस्तुका सेवन।
মৌমাছি=মউমাছি।
মৌরলা सं—एक छोटी मछली।
মৌরী सं—মউরি सौंफ।
মৌরুসী वि—मौरूसी।
মৌলবী सं—मुल्ला, मौलवी।
মৌলানা सं—मुसलमान विद्वानकी उपाधि।
মৌলিক वि मूल सम्बन्धी, आदिका (—গবেষণা)। सं—ब्राह्मणों या कायस्थोंको एक श्रेणी। —वर्षा ऋतुका, मौसिमी।
মৌসুম सं—मौसिम, वर्षा ऋतु। মৌসুমী वि
ম্যাও सं—म्याँव, बिल्लीकी बोली ; जिम्मेवारी (—সামলাবে কে ?)।
ম্যাজম্যাজ (मैज्मैज्) सं—हरारत। ম্যাজমেজে वि—हरारत-सा, बेचैन। [स्ट्रेट।
ম্যাজিষ্ট্রেট (मॅजिस्ट्रेट) सं—जिलाधीश, मजि-
ম্যাজেন্টা (मैजेन्टा) सं—एक लाल रंग।
ম্যানেজার (मैनेजार) सं—मनेजर, प्रबधक।
ম্যাপ (मैप) सं—नक्शा, मानचित्र।
ম্যালেরিয়া (मैलेरिया) सं—मलेरिया बुखार।
ম্রিয়মাণ वि—मरणासन्न ; उदास।
ম্লান वि—मलिन, मुरझाया हुआ, उदास, अप्रसन्न, थका, दुर्बल। ম্লানিমা सं—मलिनता, उदासी, थकावट। [वि—नीच।
ম্লেচ্ছ (म्लेच्छ अ) सं—यवन म्लेच्छ, अहिन्दू।

य

য (ज-अ) सर्व—যত जितने (—জন, —দিন)।
যক (जक) सं—यक्ष, जक, प्रेत जो गाड़े हुए धनका पहरा देता है (যকের ধন)।
যকৃৎ (जकृत) सं—कलेजी।
যক্ষ্মা (जक्खा) सं—तपेदिक।

যখন (जखन) क्रि वि—जब, जिस समय, जिस कारण। —তখন क्रि वि—जिस किसी समय, असमयमें, बार बार।

যজ্ঞ (जग्गॅ -अ) सं—यज्ञ। —ডুমুর सं—बड़ी जातिका गूलर।

যৎ (जत्) सर्व—जो, जिस। —কিঞ্চিৎ वि—कुछ, थोडा-बहुत। —পরোনাস্তি वि—जिसके ऊपर और कुछ नहीं है, बहुत अधिक।

যত (जत-अ) वि—संयत नियमित; जितना, जितने (—লোক, —টাকা, —রূপ)। —কিছু वि—जो कुछ है सब, जितना।

যতন (जतन) सं—जतन, यत्न।

যতমান (जतमान्) वि—यत्नशील, कोशिश करनेवाला।

যতি (जति) सं—छंदके चरणोंके अंतमें विराम। —চিহ্ন (-अ) सं—कामा पाई आदि चिह्न। —পাত, —ভঙ্গ (-अ) सं—यथायोग्य स्थानपर यति न रहनेसे छंदका दोष।

যতি, যতী (जति) सं—सन्यासी।

যতেক (जतेक्) वि—जितना, जितने।

যত্ন (जत्न-अ) सं—चेष्टा, कोशिश, उद्यम, सेवा, ध्यान। —পূর্ব্বক क्रि वि—यत्नसे। —শীল वि—कोशिश करनेवाला। যত্নে क्रि वि—यत्नके साथ, हिफाजतसे।

যত্র (जत्र-अ) क्रि वि—जहाँ, जिस विषयमें। —তত্র (-अ) क्रि वि—जहाँ तहाँ।

যথা (जथा) वि—जैसा, जिस प्रकार, जितना। क्रि वि—जैसे, अनुसार। —আজ্ঞা क्रि वि—जैसी आज्ञा है। —ইচ্ছা क्रि वि—जैसी इच्छा हो, इच्छानुसार। —কর্ত্তব্য (-अ) वि—जैसा करना उचित हो वैसा। —ক্রম वि—तरतीबवार। —ক্রমে क्रि वि—क्रमसे। —জ্ঞান क्रि वि—ज्ञानके अनुसार। —তথ (-अ) वि—यथार्थ, ठीक। —তথা क्रि वि—जहाँ तहाँ। —নিয়মে क्रि वि—नियमानुसार। —পূর্ব্ব (-अ) क्रि वि—पहलेकी तरह, वैसे ही। —বৎ क्रि वि—ज्योंका त्यों, विधिके अनुसार। —যথ (-अ) वि—यथायोग्य, यथार्थ, ठीक, ज्योंका त्यों। —রুচি क्रि वि—रुचिके अनुसार। —শাস্ত্র (-अ) क्रि वि—जैसा शास्त्रमें है। —সম্ভব क्रि वि—जहाँ तक हो सके। —সর্ব্বস্ব (-अ) सं—सारी सम्पत्ति। —সাধ্য (-अ) क्रि वि—सामर्थ्यके अनुसार। —স্থান सं—योग्य स्थान, नियत जगह। যথায় क्रि वि—जहाँ, जिस स्थान पर।

যথার্থ (जयार्थ-अ) वि—ठीक, वाजिब, सत्य; योग्य। যথার্থতঃ क्रि वि—প্রকৃতপক্ষে सचमुच, वस्तुतः।

যথেচ্ছ (जथेच्छ-अ) क्रि वि—इच्छानुसार। যথেচ্ছাচার सं—स्वेच्छाचार, मनमाना आचरण। যথেচ্ছাচারী वि—मनमाना आचरण करनेवाला। যথেচ্ছাচারিতা=যথেচ্ছাচার।

যথেষ্ট (जथेष्ट-अ) क्रि वि—जितना चाहिये। वि—बहुत, अनेक, खूब। [मुनासिब ठीक।

যথোপযুক্ত (जथोपजुक्त-अ) वि—यथोचित,

যদবধি (जदवधि) क्रि वि—जिस समयसे।

যদি (जदि) क्रि वि—अगर, यदि, शायद। যদিস্যাৎ क्रि वि—निहायत यदि। যদিও क्रि वि—यद्यपि, अगरचे, ऐसा होने परभी। যদিবা क्रि वि—अथवा यदि। [निर्भर रहनेवाला।

যদ্ভবিষ্য (जद्भविष्य-अ) वि—भाग्य पर

যন্ত্র (जन्त्र-अ) सं—औजार, हथियार, मशीन, अंग; बाजा, जंतर। —পাতি सं—औजार और उसके साथका सामान।

যন্ত্রণা (जंत्रना) सं—क्लेश, तकलीफ।

যন্ত্রী (जन्त्री) वि, सं—यन्त्रका चालक, बाजा बजानेवाला।

যব (जब) सं—जौ ।
যবদ্বীপ (जबद्वीप) सं—जावा टापू । [যবনী ।
যবন (जबन) सं—म्लेच्छ, अहिन्दू । स्त्री—
যবস্থব (जब-अ-स्थब-अ) वि - स्थगित, जिसका निबटेरा न हुआ हो ।
যবাগূ (जबागू) सं —जौका मंड ।
যবানিকা (जबानिका), যবানী सं=যোয়ান ।
যবিষ্ঠ, যবীয়ান্ (जबीयान्) वि कनिष्ठ, छोटा ।
যবে (जबे) क्रि वि—যখন जब ।
যম (जम) सं—यमराज । —দণ্ড (-अ) सं—मृत्युके बाद यमराजके द्वारा पापकी सजा । —দ্বিতীয়া सं—भैयादूज । —পুকুর सं—कुमारियोंका एक व्रत । —যন্ত্রণা सं—यमराजकी दी हुई सजाका क्लेश ।
যমক (जमक) सं—एक ही उच्चारणवाले दो शब्दोंकी पुनरावृत्ति । वि—यमज, जुड़वाँ ।
যমজ (जमज) वि—जुड़वाँ ।
যমানী सं=যোয়ান ।
যশোধন (जशोधन) वि—नामवर ।
যশোমতী, যশোদা (जशोदा) स्त्री—नंदकी स्त्री जिसने श्रीकृष्णको पाला था ।
যষ্টিমধু (जष्टिमधु) सं—मुलेठी ।
যা (जा) स्त्री—জা देवरानी, जेठानी ।
যা सर्व—যাহা जो कुछ । [जैसे ही ।
যাই (जाइ) क्रि वि—যেহেতু जिस कारण,
যাওয়া (जावा) (क्रि परि ६)—जाना, गत होना, नष्ट होना, करते जाना, रहना ।
যাচা (जाचा) (क्रि परि २)—माँगना, चाहना, जाँचना, आँकना । যাচাই सं—कूत, दामका अंदाजा । [जचवाना, परीक्षा कराना ।
যাচান (-नो), যাচানো (क्रि परि १०)—
যাচ্ঞা (जाच्ञा) सं—प्रार्थना, माँग ।
যাচ্ছেতাই (जाच्छेताइ) वि—भद्दा, खराब ।
যাত (जात -अ) वि—गत, भूत, प्राप्त, ज्ञात ।
যাতা (जाता) स्त्री—देवरानी, जेठानी ।
যা-তা (जा-ता)=যাহা-তাহা ।
যাতায়াত (जातायात) सं—आनाजाना ।
যাত্রা (जात्रा सं—यात्रा, गमन, प्रस्थान, निर्वाह उत्सव आदिमें देवताका जलूस (দোল—, স্নান—); जलूस (শোভা—); दृश्यपट-रहित नाटक (—ওয়ালা, —গান, যাত্রাভিনয়); बार, दफा (এ—বেঁচে গেল) ।
যাত্রিক (जात्रिक) सं—यात्री, मुसाफिर ।
যাথাতথ্য (जाथातथ्य-अ) सं—सत्यता, यथार्थता । [सम्बोधन ।
যাদু (जादु) सं—जादू ; बालकके लिए स्नेह-
যাদৃশ (जादृश-अ) वि—जिस प्रकारका, जैसा ।
যান (जान) सं—सवारी, यान ।
যান্ত্রিক (जांत्रिक) वि, सं—यंत्र-सम्बन्धी ; यंत्र चलानेवाला ।
যাপক (जापक) वि—वितानेवाला । যাপন सं—बिताना, व्यतीत करना ।
যাপ্য (जाप्य-अ) वि—जो रोग एकदम आराम नही होता दबा हुआ रहता है ।
যাবজ্জীবন (जावज्जीवन) क्रि वि—जीवन भर । वि—जीवन भरका । [सारा, सब ।
যাবৎ (जाबत्) क्रि वि—तक, जब तक । वि—
যাবতীয় (-अ) वि—सब ।
যাবনিক वि—म्लेच्छ सम्बन्धी । [समय ।
যাম (जाम) सं—पहर, तीन घंटेका
যাযাবর (जाजावर) वि, सं—बंजारा, सदा घूमनेवाला ।
যারপরনাই (जारपरनाइ) वि—बहुत अधिक ।
যারি सर्व—যাহারই जिसका ही ।
যাহা (जाहा) सर्व—जो कुछ, जो । —তাহা वि खराब, बुरा (—বলা, —খাওয়া) ।
যাঁহা (जाँहा) क्रि वि—जैसेही, ज्योंही (—বলা তখনি); जहाँ, जैसे ।

যাহাকে, যাহার, যাঁহাকে, যাঁহার সর্ব—जिसको, जिसका, जिनको, जिनका (आदरार्थक एकवचन)। [एकवचन)।

যিনি (जिनि) सर्व जो व्यक्ति (आदरार्थक

যীশু (जीशु) स—ईसा-मसीह।

যুক্ত (जुक्त-अ) वि—जुड़ा हुआ, मिलित, संयुक्त, योग्य, उचित। —কর—জোড়হাত। —প্রদেশ स—संयुक्त प्रांत, उत्तरप्रदेश।

যুক্তি सं—न्याय, विचार, युक्ति, सलाह; मिलन, संयोग।

যুগপৎ क्रि वि—एकही साथ, समकालमें।

যুগী (जुगी) सं—एक निम्न जाति।

যুঝা, যোঝ (जोझा) (क्रि परि ६)—लड़ना, युद्ध करना।

যুত (जुत्) वि—युक्त, सहित। [व्यापृत।

যুধ্যমান (जुध्यमान्) वि—लड़नेवाला, युद्धमें

যুযুৎসা सं—लड़नेकी इच्छा। যুযুৎসু वि—लड़नेके इच्छुक। सं—एक जापानी कुश्ती।

যূথ सं—झुण्ड, दल।

যূষ (जूश) स—झोल रसा, जूस।

যে (जे) सर्व—जो (—কেহ, —কিছু, —জন্য, —কারণে, —রকম, —প্রকার)। अ—कि (সে বলিল যে দোকান বন্ধ); विस्मय-सूचक (বৃষ্টি এলো যে!), अधिकता-सूचक (যে বড় বৃষ্টি!)। —সে সব—जो कोई। वि—मामूली।

যেই क्रि वि—जैसे ही, ज्यों ही। सर्व—जो।

যেখানে (जेखाने) क्रि वि—जहां, जिस स्थानपर, जिस हालतमें। —সেখানে क्रि वि—जहाँ तहाँ।

যেথা, যেথায় (जेथाय) क्रि वि—जहाँ।

যেন (जैन-अ) क्रि वि—मानो, जिससे (এমন ক'রে বল যেন স্পষ্ট হয়); सावधान करनेमें (দে'খো—ভুলো না), प्रार्थनामें (হে ভগবান—রোগ সারে)।

যেমন (जेमन) वि—जैसा, जिस प्रकारका। क्रि वि—जैसे यथा, जैसे ही, ज्योंही। —তেমন वि—जैसा-तैसा, मामूली

যেমনই क्रि वि—जैसे ही। যেমনি, যেম্‌নি वि—जैसा। क्रि वि—ज्योंही, जभी।

যোক্তা (जोक्ता) वि—संयोग करनेवाला।

যোগ (जोग) स—योग, मिलन, जोड़, योग-दर्शन, योगसाधन, जरिया (নৌকা যোগে); समय (রাত্রিযোগে)। —করা क्रि—जोड़ लगाना। —দেয়া क्रि—योगका हिसाब करना। —দেওয়া, —দান করা क्रि—शामिल होना, हाथ बँटाना।

যোগাড় (जोगाड़) सं—आयोजन, तैयारी, प्रबन्ध। —যন্ত্র (-अ सं—सामानका जुटाना।

যোগাড়ে वि—सामान जुटानेमें चतुर।

যোগান (जोगान) सं—সরবরাহ सामानका जुटाना या जुहाना supply.

যোগান (जोगानो), যোগানো (क्रि परि १४) —সরবরাহ করা लाकर देना, जुटाना, जुहाना, अभावकी पूर्ति करना। [मिलन, एकता।

যোগাযোগ (जोगाजोग) सं—सम्मेलन, भेंट,

যোগেশ (जोगेश) स—विष्णु।

যোজক सं—जोड़नेवाला; स्थल-डमरूमध्य।

যোজন (जोजन) स—चार कोस।

যোধ (जोध) सं—लड़ाका; लड़ाई।

যোয়ান (जोआन) स—अजवायन।

যোষিৎ, যোষা (जोषा) स्त्री—स्त्री, औरत।

যৌক্তিক (जउक्तिक्) वि—युक्तिसे सिद्ध।

যৌতুক (जउतुक) सं—दहेज, जहेज।

যৌথ (जउथ-अ) वि—मिला हुआ, साझेका (—কারবার)।

যৌন (जउन-अ) वि—योनि सम्बन्धी। [पद।

যৌবরাজ্য (जउब-अ-राज्य-अ) सं—युवराजका

র

রইরই सं—হইহই शोर-गुल, चिल्लाहट।
রওয়া क्रि=রহা।
রওয়ানা, রওনা सं—रवाना, यात्रा। वि—प्रेरित, जानेके लिए निकला हुआ।
রং, রঙ सं—रंग, वर्ण, दिल्लगी, मजाक, ताशका एक रंग, किसी एक बारके खेलमें जिस रंगके ताशोंको प्रधानता दी जाती है। রংচং सं—तरह तरहके रंग। রংচঙা, রংচঙে वि—रंगीन, रंग-बिरंगा। রংবেরং वि—अनेक रंगोंका।
রক सं=রোয়াক।
রকম सं—प्रकार, तरह, ढंग। এক—, वि—एकसा, न भला न बुरा। —রকম वि—तरह तरहके। রকমারি वि—नाना प्रकारके।
রক্ত (-अ) सं—खून, रुधिर। वि—लाल, रंजित, रंगा हुआ, आसक्त। —গঙ্গা सं—खूनका बहाव। —জিহ্ব (-अ) वि—जिसकी जीभ लाल है। —দুষ্টি, —দোষ सं—शरीरके रक्तका विकार। —পায়ী वि—खून पीनेवाला। —মোক্ষণ सं—इलाजके लिए शरीरसे खून निकालना। রক্তাক্ত (-अ) वि—खूनसे तराबोर। রক্তাভ (-अ) वि—कुछ लाल। রক্তারক্তি सं—रक्तपात। রক্তোৎপল सं—लाल कमल।
রক্তি सं—अनुराग, आसक्ति।
রক্তিমা सं—लाली। রক্তিম वि—लाल।
রক্ষণ (रक्खन्) सं—रक्षा, पालन, रखवारी। রক্ষক वि, स—रक्षा करनेवाला, रखनेवाला। রক্ষা सं—বাঁচোয়া बचाव, त्राण, राखी। রক্ষণাবেক্ষণ सं—सावधानीके साथ रक्षा, निगहबानी। রক্ষণীয় (-अ) वि—रक्षा करने योग्य। রক্ষিত (-अ) वि—रक्षित, पाला-पोसा। (रक्खित्) कायस्थोंकी एक उपाधि। রক্ষিতা स्त्री—रखेली। রক্ষী सं—প্রহরী पहरेदार, संतरी; रक्षक। রক্ষ্য (-अ) वि—रक्षा करनेके योग्य।
রগ सं—कनपटी। —চটা वि—খিটখিটে चिड़चिड़ा। —চেনা क्रि—किसीकी आदत या स्वभाव पहचानना।
রগড় सं—মজা रंगत, मजा, आनंद, रगड़।
রগড়ান (रगड़ानो), রগড়ানো (क्रि परि १६)—ঘষা, মর্দন করা रगड़ना।
রঙ=রং। রঙান, রঙিন=রঙ্গান, রঙ্গিন।
রঙ্গ (-अ) सं—नाट्य, नाट्यशाला, अभिनय-गृह, रणभूमि, मल्लभूमि, अखाड़ा; दिल्लगी, मजाक, मजा, राँगा। —দার वि—রঙ্গিন रंगीन, मजेदार। —ভঙ্গ (-अ) सं—हँसीकी अंगभंगी। —রস सं—आमोद-प्रमोद, रंगरली, दिल्लगी।
রঙ্গান (-नो), রঙ্গানো (क्रि परि १०)—রঙান रंजित करना, रंगना। वि—रंजित, रंगा हुआ।
রঙ্গিন वि—রঙিন रंगीन, रंजित।
রচা (क्रि परि १)—रचना, बनाना। [রজকিনী।
রজক सं—ধোবা धोबी। स्त्री—রজকী,
রজন सं—चीड़ वृक्षका सूखा गोंद (तारपीन निकाल लेने पर जो बाकी रहता है)।
রজ্জু सं—দড়ি रस्सी।
রটনা, রটন सं—प्रचार, शोहरत।
রটন্তী सं—माघ कृष्णा चतुर्दशी।
রটা (क्रि परि १)—प्रचारित होना (গুজব—, अफवाह उड़ना)।
রটান (-नो), রটানো (क्रि परि १०)—प्रचारित करना। রটিত (-अ) वि—प्रचारित।
রড় सं—दौड़।
রণ सं—युद्ध, लड़ाई, जंग; शब्द, आवाज। —তরী स—जंगी जहाज। —রঙ্গিনী वि—

स्त्री—लडाई करनेवाली। রণৎ वि— शब्दाय-मान आवाज करता हुआ। রণন सं—आवाज करना। রণিত (-अ) वि—ध्वनित।

রণ্ড (र ड-अ) वि—बच्चा वेऔलाद; फलरहित। রণ্ডা स्त्री—वन्ध्या वाँझ, विधवा, वेश्या।

রত (-अ) वि—आसक्त नियुक्त, लवलीन।

রতন सं—रत्न।

রতি सं—रत्ती, आनन्द, सम्भोग, आसक्ति।

রত্তি वि—बहुत थोड़ा या छोटा (একরত্তি মেয়ে)।

রত্ন (-अ) स—रत्न, मणि, सर्वोत्तम वस्तु या व्यक्ति। —গর্ভ (-अ) वि—जिसके भीतर रत्न हो। स—समुद्र। —গর্ভা स्त्री—सुपुत्रकी माता। —জীবী, —বণিক सं—जौहरी। —প্রসূ, —প্রসবিত্রী, —প্রসবিনী= রত্নগর্ভা। রত্নাভরণ, রত্নালংকার सं—জড়োয়া গহনা जड़ाऊ गहना।

রদ্দী वि—रद्दी खराब (—মাল)।

রদ্দা सं—घौंस, मार।

রনপা सं—लकड़ी या बाँस जिसमे पाँव रख कर कुछ ऊँचे पर चलते हैं stilt [—শালা)।

রন্ধন सं—রান্না, पाक रसोई बनाना (—গৃহ,

রপ্ত (-अ) सं—अभ्यास, रफ्त। রপ্তে রপ্তে क्रि वि—अभ्यासके द्वारा क्रमश, रफ्ता रफ्ता। [निर्यात।

রপ্তানি स—रफ्तनी, मालका वाहर जाना,

রফা सं—निष्पत्ति फैसला, निबटेरा, खातमा, नाश (দফা—)।

রবাব सं—वीणाकी तरहका एक बाजा।

রবার सं—रबड़। [पाये आया हुआ।

রবাহূত वि—विना बुलाये या विना निमत्रण

রবি स—सूर्य, रविवार। —বাসর सं—रविवार। —শস্য (-अ), —শস্য (-अ) स—रवी, वह फसल जो वसत ऋतुमें काटी जाती है।

রম্ভা सं—कदली, কলা केला।

রশি सं—মড়ি रस्सी। রশা सं— দড়া रस्सा।

রশুন सं=রসুন। [बरौनी।

রশ্মি (रश्मि) सं—किरण, लगाम, रस्सी; [बरौनी।

রস सं रस; स्वाद, जल जुकाम शुक्र, धनका मद (ভারী — হয়েছে), मजाक र गत, पारा रसायन। —কড়া सं—चीनीके शीरेमें पकाये हुए नारियलका लड्डू। —কর্পূর सं—रस-कपूर। —কলি स—वैष्णवोंका टीका या तिलक। —কষ सं—रसका लेश (তার কথায় — নেই)। —গর্ভ (-अ) वि—रससे भरा। —গোল্লা सं—रसगुल्ला, छेनेकी एक बंगला मिठाई। —বড়া स—गुड़ या चीनीके शीरे में तला हुआ दालका बडा। —বতী वि स्त्री—रसिका। सं—रसोई घर। —বেত্তা वि—रसज्ञ। —ভঙ্গ (-अ) सं—रंगमें भंग। —ময় वि—रसिक, रसभरा। —রঙ্গ स= রঙ্গরস। —রাজ स—श्रेष्ठ रसिक; पारा। —শালা सं—रासायनिक परीक्षाका स्थान। —সিন্দুর सं—হিঙ্গুল ईंगुर, सिंगरफ। রসস্থ (-अ) सं—जुकामके कारण शरीरका भारी-पन। রসাঞ্জন स—सुरमा। রসাধিক্য (-अ) स—जुकामकी अधिकता।

রসদ सं—सिपाहियोंका भोजन, खाद्य।

রসা (क्रि परि १)—रसदार होना, गीला होना, कोमल होना, थोड़ा सड़ना।

রসান (-নো), রসানো (क्रि परि १०)—रसदार या कोमल करना।

রসান सं—सोने आदिको चमकाना, उज्ज्वल करनेका मसाला, बातोंमें रस भरना, रंगीली बातें करना।

রসাভাস सं—नीच रस साहित्यके नव रसोंमें जो सभ्य समाजके योग्य नहीं है।

রসাল वि—रसदार। स—आम।

রসালাপ सं—रसीली बातचीत।

রসাস্বাদ, (-স্বাদন) सं—रसका स्वाद ग्रहण।
রসিদ सं—रसीद।
রসুই सं—रसोई। —ঘর सं—रसोईघर।
রসুয়ে वि, सं—रसोइया (—বামুন)।
রসুন सं—রশুন लहसून।
রসুল सं—रसूल, पैगंबर।
রহসে क्रि वि—छिपकर, एकान्तमें।
রহস্য (-अ) सं—गुप्त भेद, गूढ़ तत्त्व, मजाक, दिल्लगी। वि—गुप्त। রহস্যালাপ सं—रसीली बातचीत, गुप्त प्रेमालाप। [ठहरना।
রহা, রওয়া (क्रि परि २)— थाका रहना,
রা सं—रव, शब्द, आवाज (মুখে—নেই, রা-কাড়া)।
রাই स्त्री—राधिका ; छोटी सरसों।
রাং, রাঙ सं—रांगा। —ঝাল सं—धातु-पात्र झालनेका रांगा। রাংতা सं—रांगेका वरक।
রাং सं—रान।
রাংচিতা सं—एक छोटा पौधा जो बगीचेके चारों ओर घेरनेके लिए लगाया जाता है।
রাকা सं—पूर्णिमा।
রাখা (क्रि परि ३)—रखना, रक्षा करना, आश्रय देना, कायम रखना, पालना, नियुक्त करना, छोड़ना, स्थगित करना।
রাখাল सं—चरवाहा, रखने वाला। রাখালি सं—चरवाही।
রাখি सं—राखी, रक्षाबंधनका डोरा।—পূর্ণিমা सं—श्रावणपूर्णिमा।
রাগ सं—अनुराग, आसक्ति, प्रेम, रंग, लाली ; गुस्सा (—করা, —পড়া)। রাগত (-अ) वि—क्रोधित, खफा।
রাগা (क्रि परि ३)—क्रोध करना, बिगड़ना।
রাগান (-नो), রাগানো (क्रि परि १०)—क्रोधित करना, नाराज करना।
রাগান্ধ (-अ) वि—क्रोधसे बेहोश।
রাগান্বিত (-अ) वि—क्रोधित, खफा ; आसक्त।
রাগী वि—क्रोधी, क्रोधित ; आसक्त।
রাঙ सं=রাং। [शकरकंद।
রাঙ্গা, রাঙা वि—लाल। —আলু सं—
রাঙ্গান (-नो), রাঙ্গানো, রাঙানো (क्रि परि १०)—लाल करना, रंगना।
রাজ सं—राज्य, राजा। —কন্যা, —কুমারী स्त्री—राजकुमारी। —কীয় (-अ) वि—राज्य सम्बन्धी, सरकारी। —গদি सं—सिंहासन, राजाका पद। —চক্রবর্তী सं—सम्राट। —ড়া सं—राजा, राजाके तुल्य लोग (রাজা-রাজড়া)। —তক্ত (-अ) सं—सिंहासन। —পট্ট (-अ) सं—राजाका दिया हुआ सनद। —পুত सं—राजपूत। —পুতানা सं—राजपूताना। —পুরুষ सं—राजाके वंशके लोग, राजकर्मचारी। —প্রাসাদ सं—राजमहल। —বংশী सं—एक जाति। —বাটী, (-বাড়ী) सं—राजाका मकान। —বিধি सं—আইন कानून। —বিপ্লব सं—गदर। —মজুর सं—थवईका मददगार मजदूर। —মিস্ত্রী सं—थवई। —যোটক सं—विवाहके लिए दूलहे-दुलहिनकी जन्म-राशियों का मेल जो शुभ माना जाता है।
রাজত वि—चाँदीका।
রাজি, রাজী सं—श्रेणी, पंक्ति, समूह, रेखा।
রাজিত (-अ) वि—शोभित। রাজিল (-अ) क्रि—विराजमान हुआ, शोभित हुआ।
রাজী वि—स्वीकृत, राजी, माननेको तैयार। —নামা सं—राजीनामा, स्वीकारपत्र।
রাজ্য (-अ) स—राज्य, रियासत, शासन।
রাজ্যাভিষেক सं—राजतिलक। রাজ্যের वि—तमाम, बहुत अधिक (রাজ্যের লজ্জা)।
রাঁড় स्त्री—विधवा, बेवा ; रखेली।
রাঢ় सं—बंगालमें गंगाके पश्चिमका प्रांत।

রাঢীয় (-য়), রাঢী वि—ब्राह्मणोंकी एक श्रेणी सम्बन्धी, गंगाके पश्चिम प्रांतका।

রাত सं—रात्रि, रात। —করা क्रि—किसी कामके लिए रातमें अधिक विलंब करना। —কাটান क्रि—रात बिताना। —কানা वि—जिसे रातको नहीं सूझता।

রাতারাতি क्रि वि—रातके अन्दर, रातोंरात।

রাত্তি सं—रात्रि, रात।

রাতুল वि—গাঢ় लाल (—চরণ)।

রাত্রি, (-ত্রী) सं—रात, रजनी (समासमें कुछ शब्दोंके बाद—রাত্র होता है जैसे অর্ধরাত্র, দ্বিরাত্র, দিবারাত্র, পূণ্যরাত্র, পূর্বরাত্র, মধ্যরাত্র)। —চর वि, सं—रातमें विचरनेवाला, निशाचर। —বাস सं—रातमें निवास; रातमें सोते समय पहननेका कपड़ा।

রাত্র্যন্ধ (-ন্ধ) वि—রাতকানা।

রাঁদা, রেঁদা सं—रंदा।

রাঁধনি, রাঁধনী (-ধনী) सं—রান্ধুনি।

রাঁধা क्रि—রান্ধা।

রান্ধুনি, রাঁধনী, রাঁধুনী सं—अजवाइन-सा एक मसाला। स्त्री—रसोई पकानेवाली।

রান্ধা, রাঁধা (क्रि परि २)—रसोई पकाना। वि—पकाया हुआ।

রান্না सं—রন্ধন रसोई बनाना, रसोई। —ঘর सं—रसोई-घर। —বান্না सं—रसोई और उसके सम्बन्धित काम।

রাব सं—पतला और महका हुआ गुड़, राब।

রাবড়ি सं—रबड़ी।

রাবিশ स—कूड़ा-करकट।

রাম सं—परशुराम, बलराम, श्रीरामचन्द्र। वि—बड़ा (—ছাগল, —দা)। —ধনু सं—इंद्रधनुष। —পাখি सं—मुर्गी।

রামায়েত, (-ইৎ), রামাৎ सं—रामावत, एक वैष्णव संप्रदाय।

রায় सं—सम्मति, राय; एक उपाधि। —বাঘিনী स्त्री—बड़ी बाघिन, उग्रा या कर्कशा नारी। —বাহাদুর सं—राय बहादुर। —সাহেব सं—राय साहब।

রায়ৎ सं—জমিদারের প্রজা रैयत, रिआया।

রায়তী वि—रैयतका।

রাশ सं—গাদা राशि, ढेर (এক—জিনিষ); जन्मराशि। —নাম सं—जन्मराशिके अनुसार दिया हुआ नाम जिसका प्रायः व्यवहार नहीं होता। —ভারী वि—गंभीर स्वभाव वाला, सजीदा।

রাশি सं—ढेर, संख्या, राशि।

রাশীকৃত (-ত) वि—স্তূপীকৃত, গাদাকরা ढेर लगाया हुआ।

রাস सं—लगाम, रास।

রাসন वि—जीभ सम्बन्धी।

রাসভ सं—গর্দভ गधा।

রাস্না (रास्ना) सं—दूसरे पेड़ पर उगने वाला पौधा।

রাহা स—राह (—খরচ); उपाय (সু—)। —জান सं—राहजन। —জানি सं—राहजनी।

রাহিত্য (-ত্য) सं—अभाव।

রাহী सं—पथिक, राहगीर।

রিং स—चाबियाँ रखनेकी अंगूठी; अंगूठी।

রিঠা, রিঠে सं—रीठा।

রিপু स—शत्रु। ষড়রিপু सं—काम क्रोध लोभ मोह मद मात्सर्य ये छः हानि-कारक चित्तवृत्तियाँ।

রিফু सं—रफू।

রিরি सं—सिहरनेका भाव।

রিষ, রীষ स—डाह, द्वेष, गुस्सा।

রিষারিষি, রেষারেষি (-ষি) सं—आपसमें द्वेष।

রিষ্টি, রিষ্টি सं—ग्रहदोष, पाप।

রিসালা सं—रिसाला, घुड़सवार सेना।

রীতি सं—ढंग, प्रकार, परिपाटी, शैली, रवाज, स्वभाव, बर्ताव। —মত (-अ) क्रि वि—नियमानुसार, अच्छी तरह, बहुतायतसे।
রীম सं—कागजके २० दिस्ते।
রীল सं—लकड़ी या धातुकी घिरनी जिसमें सूत लपेटा जाता है।
রুই सं—रेहू मछली।
রুইতন सं—ताशका ईंटा।
রুখা, রোখা (क्रि परि ४)—आक्रमण करनेके लिए खड़ा हो जाना या तैयार होना; रोकना।
রুখা, রুখো वि—रूखा, सूखा, तेलरहित (—মাথা); जिसमें भोजन नहीं देना पड़ता (—মাহিনার চাকর)।
রুগী वि, सं = রোগী।
রুগ্ন (-अ) वि—बीमार। स्त्री—রুগ্না।
রুচা, রোচা (क्रि परि ६)—रुचना, अच्छा मालूम होना। [दायर।
ঋজু वि—थाड़ा खड़ा, सीधा, समान, दाखिल;
রুটি सं—रोटी।
রুদ্ধ (-अ) वि—बंद, रोका हुआ, घेरा हुआ।
রুধা, রোধা (क्रि परि ६)—रोकना।
রুনুঝুনু, (-ঝুনু) सं—घुंघरूका शब्द।
রুপা, রূপা, (-পো) सं—चांदी। রুপালী, রুপোলী वि—चांदीके तबकसे मढ़ा हुआ, रुपहला, चाँदी-सा। (রুপোর চাবিতে সব দরজাই খোলে—रिश्वतसे सभी काम होते हैं)।
রুমাল सं—रूमाल। [लगाना।
রুয়া, রোয়া (क्रि परि २०)—রোপণ করা पौधा
রুল सं—लकीर खींचनेका गोल डंडा; लकीर।
রুলি सं—पतला कंगन।
রুষ্ট, রুষিত (-अ) वि—खफा, क्रोधित।
রুহিদাস, (রুই-) सं—एक चमार संत।
রূঢ় (-अ) वि—प्रसिद्ध, शब्दके व्युत्पत्ति-लब्ध अर्थसे भिन्न अर्थ प्रकट करनेवाला; कड़ा, कठोर, अप्रिय।
রূপ सं—शकल, सूरत, सौंदर्य, नेत्रका विषय; तरह, प्रकार (এইরূপ, নানারূপে); स्वरूप (উদারতারূপ গুণ); विभक्तियुक्त शब्द या धातु। —কথা सं—উপকথা कहानी। —দস্তা सं—रांगा मिला हुआ सीसा। রূপসী (-পসী) वि स्त्री—सुंदरी।
রূপা सं = রুপা।
রূপিত (-अ) वि—रूपयुक्त, प्रकट।
রূপী वि—स्वरूप (নৃসিংহরূপী বিষ্ণু)।
রেওয়াজ सं—দস্তুর, चलन रवाज।
রেক सं—अन्न नापनेका एक बर्तन।
রেকাব सं—रकाब; रकाबी, तश्तरी।
রেখা सं—लकीर, चिह्न, थोड़ी जगह। —গণিত सं—ज्यामिति।
রেজগি, (-কি) सं—रेजगी, रुपयेसे कमके सिक्के (पैसे नहीं)।
রেজাই सं—বালাপোশ रूईदार ओढ़ना, रजाई।
রেজিষ্টারী, রেজিষ্টি सं—रजिस्ट्री।
রেডিও सं—बेतार या बिजलीकी लहरसे बात संगीत आदिका प्रचार।
রেড়ি सं—एरंड रेंड़ (রেড়ির তেল)।
রেতি सं—उका रेती।
রেঁদা सं = রাঁদা।
রেয়াত सं—रिआयत, छुटकारा, अनुग्रह।
রেয়ো सं = রবাহুত।
রেল सं—रेल, रेलगाड़ी। [देर तक रहती है।
রেশ सं—बाजा बजनेके बाद जो ध्वनि थोड़ी
রেশন सं—বরাদ্দ করা খাদ্য राशन ration.
রেষারেষি, (-রেষি) सं—রিষ देखो।
রেস स—गतिका होड़, घुड़-दौड़ race
রেসালা सं = রিসালা।
রেস্ত (-अ) सं—পুঁজি, সম্বল नकदी, पूंजी।

রেহাই सं—रिहाई, छुटकारा।
রেহান सं—रेहन, गिरवी।
রোক सं—रोकड़, नकद रुपया।
রোকড় सं—नकद रुपयेका हिसाब।
রোকা सं—रुक्का, पुर्जा।
রোখ सं—আক্রোশ ক্রোধ, দ্বেষ; जिद।
রোখা क्रि=রুখা।
রোগা वि—बीमार, रोगी, दुबला-पतला।
রোগাটে वि—दुबला-पतला, कृश। রোগাপটকা वि—कृश और दुबला।
রোগী सं—बीमार आदमी। वि—बीमार। स्त्री—রোগিণী।
রোচা क्रि=রুচা। [रोजाना मजदूरी।
রোজ सं—रोज, प्रतिदिन, तारीख, दिन,
রোজা सं—भूत-प्रेत झाड़नेवाला, ओझा।
রোথো, রোদ্দো वि—रद्दी, खराब।
রোদ सं—রৌদ্র धूप। —ওঠা क्रि—धूप निकलना। —পড়া क्रि—धूप उतरना, वेला ढलना। —পোয়ান (-नो) क्रि—धूप तापना।
রোঁদ स—नियत इलाकेमें घूम कर पहारा round
রোদন स—रोना, रुदन, रुलाई।
রোধ सं—बाधा, रोक। রোধিত (-अ) वि—रोका हुआ। রোধক, রোধী वि—रोकनेवाला।
রোধা (क्रि परि १)—रोकना।
রোপা (क्रि परि १)—रोपना।
রোম सं—লোম रोम, देहके बाल। —কূপ सं—लोमकूप। রোমশ वि=লোমশ।
রোমক सं—रोम देश निवासी। [पागुर।
রোমন্থ (अ), রোমন্থন सं—চর্বিত-চর্বণ जुगाली,
রোমহর্ষ, (-হর্ষণ) स=লোমহর্ষ।
রোমাঞ্চ (-अ) स=রোমহর্ষ। রোমাঞ্চিত (-अ) वि—जिसके रोंगटे खड़े हुए हैं।
রোমাবলী, (-বলি) सं—देहके रोंगटे।
রোমোদ্গম, রোমোদ্ভেদ सं—रोमोंका निकलना, रोमांच।
রোয়া क्रि=রোপা।
রোঁয়া सं—रोंगटा, रोम, रोयाँ।
রোয়াক सं—রক, চাতাল घरके सामनेवाला खुला चबूतरा।
রোরুদ্যমান वि—जो फट-फूट कर रो रहा है।
রোল सं—রব শব্দ; चिल्लाहट। [चौकी।
রোশনচৌকি सं—शहनाईका बाजा, रोशन-
রোশনাই, রোশনি स—रोशनी।
রোস (-अ) क्रि—সবুর কর ठहरो।
রোহ, রোহণ सं—चढ़ना, चढ़ाई।
রোহিত सं—রুইমাছ रेहू मछली। [भयकर।
রৌদ্র (-अ) सं—রোদ धूप। वि—प्रचंड,
রৌপ্য (-अ) सं—রূপা चांदी।
র‍্যাপার सं—गरम चादर या ओढ़ना।

ल

লওয়া (क्रि परि ७)—নেওয়া लेना, ग्रहण करना साथ रखना, पसंद होना।
লওয়ান (-नो), লওয়ানো (क्रि परि १६) —নেওয়ান लिवाना, ग्रहण कराना।
লওয়াজিম सं—आवश्यक सामग्री, लवाजमा।
লক্লথ सं—लकलाट।
লক, লখ सं—नख, गुड्डी उड़ानेका धागा।
লকলক सं—लचक (বেত — করে); (लघु अर्थमें—লিকলিক)। লকলকে, লিকলিকে वि—लचकनेवाला।
লক্ষ (लक्ख-अ) सं—दृष्टि, नजर, ध्यान, निशाना, लक्ष्य; लाख, सौ हजार (—পতি)।
লক্ষ্মণ (लक्खण) सं—लक्ष्मण।
লক্ষ্মী (लक्खी) स्त्री—लक्ष्मी, कमला, सम्पत्ति, घरकी मालकिन। वि—सुशील (—ছেলে)। —ছাড়া वि—जिसे लक्ष्मी छोड़ गयी है, अभागा, बदनसीब, आवारा।

লগন सं—लग्न, विवाहका मुहूर्त। लगनসা सं—जिस समय विवाह पूजा आदिके लग्न होते हैं।

লগা सं—আঁকশি लग्गा, लंबा बाँस जिसके सिरेमे पेड़से फल आदि तोड़नेके लिए अकुड़ी हो, नाव धकेलनेका बाँस।

লগি सं—लग्गी।

লগুড় सं—डंडा, गदा। [का कारवार।

লগ্নি सं—रेहन रख कर सूद पर रुपया लगाने

লঙ্কা सं—लंका ; लाल मिच।

লঙ্ঘন सं—अतिक्रम डाँकना, लंघन ; उपवास। লঙ্ঘনীয় (-अ) वि—डाँकने था लघन करने के योग्य। [लाजेंज।

লবেঞ্চুস, লবনচুষ सं—चीनीकी रंगीन मिठाई.

লজ্জা सं—শরম शर्म, संकोच ; मान। —কর, —জনক वि—लज्जाजनक। —বতী स्त्री —लजवंती, छुईमुई। লজ্জালু वि—लजीला।

লটকান (-नो), লটকানো (क्रि परि १६) —টাঙান, ঝুলান लटकाना। वि—लटकाया हुआ। [लटकने वाला।

লটপট सं—लचक, लटक। লটপটে वि—

লটবহর सं—साथके बहुतसे असबाब।

লটারি सं—लाटरी, एक जूआ।

লড়া (क्रि परि १)—लड़ना, युद्ध करना। লড়াই सं—लड़ाई, युद्ध, झगड़ा।

লড়ান (-नो), লড়ানো (क्रि परि १०)— लड़ाना। [लड़ाका।

লড়ায়ে, লড়িয়ে वि—लड़ने वाला, युद्ध-प्रिय,

লণ্ঠন सं—लालटेन।

লণ্ডভণ্ড (-अ) वि—বিপর্য্যস্ত, উলটপালট अस्त-व्यस्त, उलटा-पुलटा।

লতান (-नो), লতানো (क्रि परि १०)—लताकी तरह फैलना। লতানে, লতানো वि—लता की तरह फैला हुआ।

লপটান (-नो), লপটানো (क्रि परि १६)— लिपटना, उलझना, जकड़ना।

লপ্ত (-अ) सं - लगाव, संयोग (একলপ্তে পাঁচ বিঘা জমি)।

লবঙ্গ (-अ) स—लौंग।

লবনচুষ=লবেঞ্চুস।

লবেজান वि—नाकोंदम, परेशान।

লম্ফ (-अ) सं—লাফ कुदान, उछाल। —ঝম্ফ (-अ) सं—লাফঝাঁপ, লাফালাফি कूदफाँद। লম্ফন सं—उछलना, कूदना।

লম্ব (-अ) वि—लटका हुआ, लंबा, खड़ा। सं—लंबाई, समकोणमे स्थित खड़ीरेखा। —মান वि— দোলায়মান लटकता हुआ।

লম্বা वि—लंबा। सं—लबाई। —দেওয়া क्रि— পলায়ন করা भाग जाना, चंपत होना। লম্বাই स—দৈর্ঘ্য लबाई (লম্বাই-চাওড়াই—लबाई, चौड़ाई, शेखीकी बाते, डींग)। লম্বাটে वि—लबा-सा। লম্বালম্বি क्रि वि—लबाईकी ओर। লম্বিত (-अ) वि - लटकता हुआ। [का खलासी।

লশকর स—लश्कर, पैदल फौज, जहाज

লশুন स—রশুন लहसुन।

লহ (-अ) क्रि— লও लो।

লহনা सं—পাওনা पावना, लेना।

লহমা सं—क्षण।

লা सं—लाख, लाह।

লাইন सं—लकीर, रेखा, लैन, रेलकी लैन।

লাউ सं—लौकी, कद्दू।

লাক্ষণিক वि—लक्षण द्वारा समझने योग्य (अर्थ), लक्षणसे भविष्य बतानेवाला।

লাক্ষা सं—लाख, लाह। —রস स—অলক্তক, আলতা अलता।

লাখ वि, स—লক্ষ लाख, सौ हजार।

লাখেরাজ सं—নিষ্কর मुआफी, जागीर।

लाग सं—नागाल लगाव, पहुँच।
लागसई वि—उपयुक्त योग्य, ठीक बैठा हुआ।
लागा (क्रि परि ३)—लगना, जुडना, रुकना, उपयोगी होना, ठीक बैठना, चोट लगना, दर्द करना।
लागाओ वि—लगा हुआ, सटा हुआ।
लागाड़ = नागाड़।
लागान (नो), लागानो (क्रि परि १०)—लगाना, मिलाना, जोड़ना, शिकायत करना।
लागानि सं—चूकलि चुगली, शिकायत।
लागाम सं—लगाम, बाग।
लागिया, लागि विभ—जन्य लिए।
लाङ्गल सं—हल, हर। लाङ्गली वि, सं—हरवाहा, खेतिहर।
लाङ्गूल स—लेज दुम, पूछ। लाङ्गूली वि, सं—लेजओयाला दुमदार; वदर।
लाचार वि—लाचार, मजबूर।
लाज सं—खई लावा।
लाज सं—लज्जा लाज। लाजुक वि—लजीला।
लाञ्छन सं—लांछन, निशान, कलक। लाञ्छना सं—डाँटफटकार, हतक, निदा। लाञ्छित (-अ) वि—धमकाया हुआ, निंदित, अपमानित, चिह्नित, कलंकित।
लाट वि—तह-खुला (भाँज-करा कापड़—करा)। सं—स्तभ, खंभा; नीलाममें विकनेवाली चीजोंका समूह, नीलाम; जमींदारी का अंश, प्रादेशिक शासक, लाट (बड़—, छोट—)।
लाटाई सं—लाटाई परेता।
लाटिम, लाट्टू सं—लट्टू।
लाठालाठि सं—डडोसे मारपीट।
लाठि सं—छड़ी, लाठी, डडा। —पेटा सं, वि—लाठीसे चोट या घायल। लाठियाल, लेठेल सं, वि—लठैत, लाठीवाला।
लाडडू, लाडू = नाडू।
लाथि सं—लात।
लाद = नाद।
लादा (क्रि परि ३)—लादना। लादाई वि—लदा हुआ।
लाफ स—लम्फ कुदान, उछाल।
लाफान (-नो), लाफानो (क्रि परि १०)—कूदना, उछलना। लाफालाफि, लाफझांप सं—कूदफाँद।
लाबड़ा, लावड़ा स—लौकी आदि कई तरह की सब्जियोंकी मिली हुई तरकारी।
लाम्पट्य (-अ) सं—छिनाला।
लायेक वि—नावालक वालिग; लायक योग्य।
लाल सं—लाला, लार, थूक। —काटा, —गड़ान, —पड़ा क्रि—लार टपकना।
लालचे वि—कुछ लाल।
लालन सं—लाड़-प्यारसे पालन।
लालस वि— लोलुप लोभी, लालची।
लालसा (-लशा) सं—लोभ, लालच।
लाला सं—लार। [लालची।
लालायित (-अ) वि—अतिशय लोलुप बहुत
लालित्य (-अ) सं—सौंदर्य, खूबसूरती, काति।
लाश सं—मड़ा लाश, शव।
लास्य, लास सं—स्त्रियोंका नाच।
लिकलिक—लकलक देखो।
लिखन सं—लिपि लिपि, लेख, लिखना।
लिखा, लेखा (क्रि परि ५)—लिखना, चिट्ठी भेजना, अंकित करना। वि—लिखा हुआ (हाते-लेखा बई)।
लिखान (-नो), लिखानो, लिखनो, लेखानो (क्रि परि ११)—लिखाना।
लिखित (-अ) वि—लिखा हुआ। लिखितव्य (-अ) वि—लिखने योग्य।
लिखिये वि—सुलेखक।

লিঙ্গায়েত सं—एक शैव संप्रदाय।

লিচু सं—लीची।

লিপি सं—चिट्ठी, अक्षर, लेख, चित्र, वर्णमाला। —কর,—কার वि—लेखक, नकल उतारने वाला (—প্রমাদ, नकल उतारने मे गलती)।

লিপ্ত (-अ) वि—लिपा हुआ (কর্দম—, তৈল—); संलग्न, अनुरक्त, जुड़ा हुआ। —পাদ वि—जिसके पैरकी अंगुलियाँ चमडेसे जुड़ी हुई हैं। [लालची, लोभी।

লিপ্সা सं—लालच, लोभ। লিপ্সু वि—

লিভার सं—यकृत। [लुप्त, गायब।

লীন वि—लयप्राप्त, मिलित, तन्मय, लवलीन;

লীলা सं—विलास, खेल, प्रमोद, अवतारों की लीला (কৃষ্ণ—, —ভূমি, —খেলা), जीवनका खेल (ভব—, মানব—)। লীলায়িত (-अ) वि—हावभाव-युक्त।

লু सं—गर्म हवा, लू।

লুই= লোহি।

লুকাচুরি, (লুকো-) सं—एक खेल जिसमें कई लड़के चोर बनकर छिप जाते हैं; आपस में छिपाव, आँखमिचौली।

লুকান (-नो), লুকানো, লুকনো (क्रि परि १२)—छिपना, छिपाना। वि—गुप्त, छिपा हुआ।

লুকায়িত (-अ) वि—गुप्त, छिपा हुआ।

লুঙ্গি सं—लुंगी।

লুচি स—पूड़ी।

লুট, লুঠ सं—লুণ্ঠন लूट, बिखेरी हुई चीजों का बहुतसे आदमी मिलकर ग्रहण (হরির—)। —তরাজ, —পাট सं—बहुतसे आदमी मिलकर लूट।

লুটা, লোটা (क्रि परि ६)—लुटना; लोटना; धरतीसे छू जाना (অঞ্চল লুটিতেছে)।

লুটান (-नो), লুটানো, লুটনো, লোটানো (क्रि परि १२)—গড়াগড়ি দেওয়া लोटना।

লুটাপুটি, (লুটো-) सं—গড়াগড়ি लोटपोट (হাসতে হাসতে—)।

লুটেরা सं—लुटेरा, डाकू।

লুণ্ঠন सं—लूट; लोट। লুণ্ঠিত (-अ) वि—लूटा हुआ; जमीन पर गिरा हुआ।

লুপ্ত (-अ) वि—गायब, छिपा हुआ।

লুব্ধ (अ) वि—लालची, ललचाया हुआ।

লূতা सं—মাকড়সা मकड़ी। —তন্তু सं—मकड़ीका जाला।

লেই सं—लेई। [परि १६)—लंगड़ाना।

লেংচান (लेंङ्चानो), লেংচানো, নেংচানো (क्रि

লেংটা (लेंङ्टा), লেংটি=নেংটা, নেংটি।

লেংড়া (लेंङ्ड़ा) वि—খোঁড়া, খঞ্জ लंगड़ा। सं—एक आम।

লেখ सं—लिपि लेख, लिखा हुआ विषय (শিলা—); चिट्ठी। [—); रेखा; गिनती।

লেখা सं—लेख, लिपि, लेखन, हस्ताक्षर (হাতের

লেখা (क्रि परि ५)—लिखना, चिट्ठी भेजना। वि—लिखा हुआ। —পড়া सं—लिखना-पढ़ना, विद्या (—শেখা); लिखापढ़ी, कानूनसे लिखकर देना (দলিল লেখাপড়া করে দেওয়া)।

লেখান (-नो), লেখানো = লিখান।

লেখালিখি सं—लिखापढ़ी, पत्र-व्यवहार।

লেখিত (-अ) वि—लिखाया हुआ, अंकित।

লেখ্য (-अ) सं—लिखनेयोग्य, लिखित (—ভাষা)।

লেঙ্গট, লেঙট (लैङट) सं—নেংটি लंगोटी।

লেঙ্গুড়, লেঙুড় स—दुम, पूँछ।

লেচি सं—सने हुए आटेका लोंदा।

লেজ (लेंज), ল্যাজ सं—লাঙ্গূল दुम।

লেজা (लेंजा) सं—मछलीकी दुम या पिछला हिस्सा (—মুড়ো)।

লেজুড় सं— লেজ दुम।
লেঠা (लैठा), ন্যাঠা सं—ঝঞ্ঝাট झंझट, अड़चन।
লেডিকেনি सं—গোল পানতুয়া गुलाब-जामुन-सी एक छेनेकी मिठाई।
লেপ स—প্রলেপ लेईके समान पोतनेकी चीज; लेई, पोतना, रजाई। লেপক वि—पोतने वाला।
লেপটান (-नो), লেপটানো=নেপটানো।
লেপন स—पोतना (গোময়—, চন্দন—)। লেপনীয় (-अ), লেপ্য (-अ) वि—पोतने योग्य।
লেপা (क्रि परि १)—निकानो पोतना, लीपना।
লেফাফা स—খাম लिफाफा। —দুরস্ত (-अ) वि—जिसकी बाहरी दिखावट अच्छी है।
লেবু=নেবু।
লেমোনেড स—नींबूकी महकवाला सोडा-वाटर।
লেলান (-नो), লেলানো (क्रि परि १०)—काटने के लिए दौड़ाना (কুকুর—)।
লেলিহান वि—बार बार चाटनेवाला; लौ निकलता हुआ (—অগ্নিশিখা)।
লেশ सं—अल्प अंश, थोड़ा हिस्सा (—মাত্র)।
লেহ, লেহন सं—চাটা चाटना। लेही वि—चाटने वाला। লেহ্য (लेह्‌य-अ), লেহনীয় (-अ) वि—चाटने योग्य, चाट कर खाने योग्य।
লৈখিক (लइ-) वि—लेखन सम्बन्धी; लिखित (—ভাষা)।
লো अ—ওলো अरी, स्त्रियोंके द्वारा दूसरी स्त्री का सम्बोधन।
লোক सं—आदमी, व्यक्ति (ভাল—, বড়—, স্ত্রী—, —সমাগম); लोग, जनता। —চক্ষু स—लोगोंकी दृष्टि। —চরিত্র (-अ) सं—मनुष्यका चरित्र। —নিন্দা स—बदनामी। —মত स—जनताकी राय। —রঞ্জন स—जनताको प्रसन्न करना। —সংখ্যা सं—जनसंख्या। —সমাগম स—लोगोंका आगमन या जमाव। —হিত सं—जनताका हित। লোকতঃ क्रि वि—समाजकी दृष्टिमें, लोगोंके सामने। —পিতামহ सं—ब्रह्मा। —প্রবাদ सं—लोकोक्ति, कहावत, जनश्रुति। —প্রসিদ্ধ वि—संसारमें विख्यात। —লজ্জা स—जनताके सामने लज्जा। —লীলা सं—ভবলীলা जीवनका खेल।
লোকসান, নোকসান सं—नुकसान, हानि।
লোকাচার स—सामाजिक प्रथा।
লোকাতীত वि—अलौकिक, लोकोत्तर, अनोखा।
লোকাপবাদ स—बदनामी।
লোকাভাব स—आदमियोंका अभाव।
লোকায়ত वि—नास्तिक, चार्वाक। स—नास्तिक मत।
লোকারণ্য (-अ) स—अनेक मनुष्योंका जमाव।
লোকালয় स—বসতি बस्ती।
লোচ্চা वि—लुच्चा, लंपट।
লোটন स—जमीन पर लोटना; एक कबूतर।
লোটা, লোটান=লুটা, লুটান।
লোনা, নোনা वि—লবণাক্ত नमकीन, लोना।
লোপাট वि—लुप्त, गायब, नष्ट।
লোফা (क्रि परि ६)—ऊपरसे गिरनेवाली वस्तु को पकड़ना।
লোভ स—लालच, चाह। লোভন सं—प्रलोभन। লোভনীয় (-अ) वि—लोभ करने योग्य, लोभजनक। লোভিত (-अ) वि—ललचाया हुआ। লোভী वि—लालची।
লোম सं—शरीरके छोटे छोटे बाल।—কূপ स—शरीरके चमड़ेमें छोटे छोटे छेद जहाँसे लोम निकलते हैं। লোমশ वि—अधिक रोमवाला। —হর্ষ (-अ), —হর্ষণ, লোমাঞ্চ (-अ) स—हर्ष भय आदिके कारण रोंगटे खड़े होना, रोमांच।
লোর सं—অশ্রু आँसू।

লোল वि—शिथिल, लटकता हुआ, हिलता-डोलता, उत्सुक, लोभी।

লোলুপ वि—बहुत लालची।

লোষ্ট্র, লোষ্ট (-अ) सं—ঢিল ढेला।

লোহ (-अ) सं—लोहा ; लोहू।

লোহা सं—लोहा, लोहेकी चूडी (सधवाका चिह्न)। —লক্কড় सं—लोहा लकड़ी आदि।

লোহি सं—लूई लोई, एक प्रकारका कंबल।

লৌকিকতা सं—सामाजिक शिष्टाचार ; विवाह आदिके समय इष्ट-मित्रोंके द्वारा भेट।

লৌল্য (-अ) सं—लालच।

লৌহ (-अ) सं—लोहा। वि—लोहेका। —কার सं—लोहार। —বর্ত্ম (बर्त -अ) सं—रेलकी पटरी। —মল सं—মরিচা मूरचा, जंग।

লৌহিত্য (-अ) सं—রক্তিমা लाली।

ল্যাঙট, ল্যাঙোট सं—কৌপীন लँगोटा।

ল্যাংবোট सं—जो नाव जहाजके साथ बधी रहकर उसके साथ साथ चलती है, पिछलगा आदमी।

শ

শ वि, सं—শত सौ (চার শ)।

শংকর, শঙ্কর सं—शिव, एक मछली। শংকরী, শঙ্করী स्त्री—दुर्गा।

শংসন, শংসা सं—प्रशंसा, कथन, उल्लेख।

শক सं—एक प्राचीन जाति, युग। শকাদিত্য (-अ) सं—राजा शालिवाहन। শকাব্দ (-अ) सं—राजा शालिवाहनका चलाया हुआ संवत जो ईस्वी सनसे ७८ या ७९ साल कम है।

শকট सं—গাড়ি गाड़ी।

শকল सं—मछलीका छिलका, अंश, टुकड़ा।

শকুন, শকুনি सं—गीध।

শকুন सं—शुभाशुभ लक्षण।

শক্ত (-अ) वि—समर्थ, ताकतवर ; कड़ा, मजबूत।

শক্তি सं—बल, सामर्थ्य। —শালী वि—शक्तिमान, ताकतवर। —মত্তা सं—बल, ताकत। —শেল सं—रावणका फेंका हुआ अस्त्र जिसके लगनेसे लक्ष्मण अचेत हो गये थे।

শক্তু सं—छातू सत्तू।

শক্য (-अ) वि—साध्य, जो किया जा सके।

শখ सं—शौक, व्यासन, चसका ; पसंद। শখের জিনিস सं—शौकीनी चीज।

শঙ্কনীয় (-अ) वि—शंकाके योग्य।

শঙ্কর=শংকর।

শঙ্কা सं—भय, डर, संदेह।

শঙ্খ (-अ) स—শাঁখ शंख, घोंघा। —চিল सं—सुफेद चील। —চূড় सं—एक बड़ा साँप। —বণিক=শাঁখারী। —বিষ सं—সেঁকো संखिया।

শজারু सं—साही।

শজিনা, শজনে सं—सहिजन।

শটকে=শতকিয়া।

শটি, শটী सं—हरदीकी तरहका एक कंद जिसका चूर्ण अरारोट-सा इस्तेमाल होता है, तीखुर।

শড়া वि—পচা सड़ा। [रस्सियाँ आदि बनती हैं।

শণ सं—सन, एक पौधा जिसकी छालसे

শত (-अ) वि, सं—শ सौ, १००। শতক सं—सैकड़ा, सौकी संख्या, सौ वस्तुओंकी समष्टि (শান্তি—) ; शताब्दी। শতকরা क्रि वि—सैकडे। শতকিয়া, শটকে सं—१से १०० तककी गिनती। শতক্রতু स—सौ अश्वमेध यज्ञ करनेवाले इंद्र। শতগ্রন্থি वि—जिसमें सैकड़ों गाँठे हैं, बहुत ही फटापुराना। শতঘ্নী सं—प्राचीन कालकी एक तोप। শততম (-अ) वि—सौवाँ। শতদল सं—

कमल। শতধা क्रि वि—सैकड़ों प्रकारसे, सेकड़ों खंडोंमें। শতমারী वि—जिस वैद्यने पारे को सौ वार जलाया है ; जिसके हाथमें सैकड़ों रोगी मरे हैं। শতমুখ वि—जो किसी विषयके सम्वन्धमें उत्साहके साथ बोलता है। শতমুখী सं—झाँटा झाड़ू। শতমূলী सं— सतवार। শতরঞ্চি सं—दरी। শতশঃ क्रि वि—सैकडों प्रकारसे। শতাব্দ, শতাব্দী सं—शताब्दी, सदी। শতেক वि—एक सौ।

শনি सं—शनिग्रह (अशुभ)। শনির দশা सं—साढ़े साती। শনির দৃষ্টি सं—शनि ग्रहको देवताकी दृष्टि जो मनुष्यके लिए अशुभ मानी जाती है। শনিবার सं—शनिवार।

শনৈঃ क्रि वि—धीरे धीरे।

শনৈশ্চর सं—शनि ग्रह।

শপ सं—মাদুর चटाई।

শপ্ত (-अ) वि—शाप-प्राप्त।

শফর सं—सफर।

শফরী सं—एक छोटी मछली।

শব (शव) सं—शव, लाश, मुर्दा। —ব্যবচ্ছেদ सं—मुर्दको चीरफाड़। —সাধনা सं—मुर्देपर बैठ कर एक तांत्रिक साधना।

শবর सं—व्याध बहेलिया।

শবাধার सं—अरथी, जनाजा।

শবেরাত सं—एक मुसलमानी त्योहार।

শব্দ (-अ) सं—ध्वनि, लफ्ज। —কোষ सं—অভিধান लुगत। —ব্রহ্ম (-अ) सं—वेद —ভেদী वि—शब्दवेधी।

শব্দায়মান वि—शब्द करता हुआ।

শব্দিত (-अ) वि—ध्वनित, शब्द-युक्त।

শম सं—शान्ति ; मनका सयम।

শমন सं—यम, शान्ति सपादन ; घटाना।

শম্বর सं—साँभर मृग।

শম্বুক सं—শামুক घोंघा।

শয়তান सं—शैतान। শয়তানি सं—शैतानी।

শয়তানী वि—शैतान सम्वन्धी।

শয়ন सं—শোয়া लेटना सोना, निद्रा, शय्या।

শয়িত (अ) वि—सोया हुआ। শয়নৈকাদশী स—आषाढ शुक्ला एकादशी, हरिशयनी।

শয়ান वि—लेटा हुआ, सोया हुआ।

শয্যা (शय्या) सं—बिछाना बिस्तर, पलंग। শয্যাগত (-अ) वि—बिस्तर पर पड़ा हुआ, बहुत बीमार।

শর स—बाण, तीर, सरकंडा। —শয্যা सं—बाणोंकी शय्या जिस पर पितामह भीष्म पड थे। —সন্ধান सं—धनुष पर बाण चढ़ाना।

শর सं—मलाई, बालाई। —পুরিয়া सं—मलाईकी गिलौरी।

শরচ্চন্দ্র सं—शरद् ऋतुका चंद्रमा।

শরণ सं—আশ্রয় बचाव, रक्षा, घर ; रक्षक। শরণাগত (-अ), শরণাপন্ন (-अ), শরণার্থী वि —शरणार्थी। শরণ্য (-अ) वि—शरण लेने के योग्य, रक्षा करनेमें समर्थ।

শরণী, (-ণি) = সরণী।

শরদিন্দু सं—शरद् ऋतुका चंद्रमा।

শরবৎ सं—शरबत।

শরম सं—लज्जा, शर्म।

শরা सं—मिट्टीका कसोरा, हंडीका ढक्कन।

শরাসন सं—ধনু धनुष।

শরিক वि, सं—हिस्सेदार, साझी। শরিকানা वि—हिस्सेमें प्राप्य। শরিকী, শরিকানী वि—साझेका।

শর্ত (-अ) सं—কড়ার शर्त, नियम।

শর্বরী सं—रात्रि, रात।

শলভ सं—टिड्डी, पतंग।

শলা स—सलाई, शल्य।

শলাকা स—लोहेकी सलाई, छड़ ; दियासलाई।

শল্ক (-अ) सं—मछलीका छिलका ; छाल। शल्की वि—छिलकेदार।

শশ, শশক सं—खरहा, खरगोश। শশবিষাণ सं—खरहेका सींग, असम्भव वस्तु।

শশব্যস্ত (-अ) वि—बहुत घबराया हुआ।

শষ্প, শস্প सं—हरी घास।

শসা सं—खीरा।

শস্য (-अ) सं—फसल, अनाज, गल्ला ; गरी।

শহর सं—शहर, नगर। —তলি सं—শহরের উপকণ্ঠ शहरके आसपासकी बस्ती। শহুরে वि—शहरी, नगर-निवासी।

শহিদ, শহীদ सं—शहीद, धर्मयुद्धमें मृत व्यक्ति।

শা=শাহ্।

শাঁই सं—बबूल-सा एक पेड़।

শাংকর, শাঙ্কর वि—शिवका, शंकराचार्यके द्वारा लिखित (—ভাষ্য, वेदान्त-सूत्रकी टीका)।

শাক सं—भाजी, सब्जी, खानेयोग्य पत्ती (পালং—)।

শাকান্ন (-अ) सं—शाक और भात।

শাকুনিক वि, सं—शकुन जाननेवाला, पशु-पक्षियोंका शब्द सुनकर शुभाशुभ निर्णय करनेवाला, बहेलिया।

শাক্ত (-अ) वि, स—देवीका उपासक, तांत्रिक।

শাক্য (-अ) स—एक प्राचीन क्षत्रिय जाति, गौतम बुद्ध।

শাঁখ, শাঁক सं—শঙ্খ शंख। —বাজান क्रि—शंख फूकना। শাঁখা सं—शंखकी चूड़ी। শাঁখারী सं—शखसे चूड़ी अंगूठी और दूसरी चीजें बनाने और बेचनेवाली एक जाति।

শাঁখআলু स—शकरकंद। [भूतनी, चुड़ैल।

শাঁখচুন্নী, শাঁকচুন্নী, শাঁখিনী, শাঁকিনী स्त्री—

শাগ सं—शाक, खानेयोग्य पत्ती। [शागिर्दी।

শাগরেদ सं—शागिर्द, चेला। শাগরেদি सं—

শাট सं—वस्त्र।

শাটী, শাড়ি, শাড়ী सं—जनानी धोती, साड़ी।

শাঠ্য (-अ) सं—धूर्तता।

শাঁড়া वि—जिसमें फल नहीं लगता।

শাড়ি, শাড়ী=শাটী।

শাণ, শাণিত=শান, শানিত।

শাদি सं—शादी, विवाह।

শান सं—सान, कसौटी ; पक्की फर्श (—বাঁধান)।

শানা सं—ताँतकी कंघी।

শানা (क्रि परि ३), শানান (-নো), শানানো (क्रि परि १०)—सान धराना। वि—सान धराया हुआ, तेज किया हुआ।

শানিত वि—सान पर तेज किया हुआ।

শান্ত (-अ) वि—रुका हुआ, चुप, शिष्ट, विनयी (—ছেলে)।

শান্তি सं—निवृत्ति, स्थिरता, अमन। —জল सं—पूजा होम आदिके पश्चात् पवित्र जल का छिड़काव।

শাপ सं—बद-दुआ, सराप। —ভ্রষ্ট (-अ) वि—शापके फल-स्वरुप हीन दशा प्राप्त। শাপান্ত (-अ) सं—शापका अंत। শাপিত (-अ) वि—शाप प्राप्त।

শাবক सं—छाना बच्चा (পশু—, পক্ষি—)।

শাবল सं—खोदनेका रंभा।

শাবাশ अ—বলিহারি वाह वाह।

শাব্দ (-अ) वि—शब्द सम्बन्धी। শাব্দিক वि—शब्द-शास्त्रका जाननेवाला, व्याकरणका ज्ञाता। [पगड़ी।

শামলা वि—काला। सं—दुशाले आदिकी

শামা सं—दिया, दीपक। —দান सं—चिराग-दान, शमादान।

শামি सं—हसुए आदिको बेंटमें कस कर बिठानेके लिए लोहेकी चपटी अंगूठी, शामी।

শামিয়ানা सं—चाँदवा, शामियाना।

শামিল वि—अंतगत ; सदृश।

শামুক सं—घोंघा।
শায়ক सं—बाण, तीर।
শায়িত (-अ) वि—लिटाया हुआ।
শায়ী वि—लेटनेवाला। स्त्री—শায়িনী।
শায়েস্তা वि—शिक्षाप्राप्त, विनीत, सजा दे कर वशमें किया हुआ, शाइस्ता।
শারী स्त्री—छुग्गी, शारिका।
শারীর वि—शरीर सम्बन्धी। শারীরক वि, सं—शरीरधारी ; आत्मा ; वेदांत-सूत्र।
শার্ট सं—कमीज।
শার্দূল सं—व्याघ्र बाघ, शेर।
শাল सं—साखू, दुशाला ; घर, जगह (ঢেকি—, কামার—)। —প্রাংশু वि—साखूके पेड़सा ऊंचा।
শালগম सं—शलजम।
শালতি सं—छोटी सकरी नाव।
শালা सं—घर, जगह ; साला, एक गाली। শালাজ स्त्री—सालेकी स्त्री, सरहज।
শালি सं—हेमन्त ऋतुका धान।
শালিক सं—एक छोटी चिड़िया।
-শালী वि—युक्त, विशिष्ट (বল—)। स्त्री—শালিনী।
শালী स्त्री—साली, एक गाली।
শালুক सं—कमलकी जड़, कुमुदका फूल। [पेड़।
শাল্মলী (शाल्मली) सं—শিমুল গাছ सेमलका
শাশুড়ী स्त्री—শ্বশ্রু सास।
শাঁস सं—फल बीज आदिका गूदा। শাঁসালো वि—गूदावाला ; मालदार।
শাসন सं—दमन, सजा, संचालन, आज्ञा, विधि ; सनद (তাম্র—)। —তন্ত্র (-अ) सं—राज्यशासन-प्रणाली। শাসনীয় (-अ) वि—शासन-योग्य। শাসিত (-अ) वि—दंडित, परिचालित। [देना।
শাসা (क्रि परि २)—শাসন করা धमकाना, सजा
শাসান (-नो), শাসানো (क्रि परि १०)—सजा का भय दिखाना, डराना। [शिक्षक।
শাসিতা, শাস্তা वि—शासक, सजा देनेवाला,
শাহ্ सं—বাদশা बादशाह, महाराजा। —জাদা सं—बादशाहका लड़का। स्त्री—শাহ্জাদী। শাহান শাহ্ सं—शाहंशाह।
শিউরন (-नो), শিউরনো—শিহরান देखो।
শিউলি=শেফালিকা। [रस निकालता है।
শিউলী सं—खजूरके पेड़का तना छीलकर जो
শিং, শিঙ্ सं—सींग।
শিংশপা सं—शीशमका पेड़।
শিক सं—গরাদে छड़।
শিকনি सं—পোঁটা नाकका बलगम।
শিকড় सं—जड़, मूल, सोर।
শিকল सं—सांकल, जंजीर।
শিকা, শিকা, শিকে सं—छीका, सिकहर।
শিক্ষক (शिक्खक) सं—सिखानेवाला, उस्ताद, गुरु। শিক্ষকতা (-कता) सं—शिक्षक होनेका भाव, शिक्षण-कार्य।
শিক্ষণ सं—अध्ययन, शिक्षा, तालीम, उपदेश। শিক্ষণীয় (-अ) वि—शिक्षा देने योग्य।
শিক্ষয়িতা सं—शिक्षक। स्त्री—শিক্ষয়িত্রী।
শিক্ষা सं—शिक्षा, सीख, तालीम, अध्ययन, अभ्यास, उपदेश, अनुभव। —নবিশ सं—नवसिखुआ। —নবিশী सं—नवसिखुआपन। —প্রদ (-अ) वि—जिसमें शिक्षा मिले।
শিখ सं—सिख, नानकपंथी।
শিখা, শেখা (क्रि परि ५)—सीखना, अभ्यास करना। वि—सीखा हुआ।
শিখান (-नो), শিখানো, শিখনো, শেখানো (क्रि परि ११)—सिखाना, अभ्यास कराना। वि—शिक्षा-प्राप्त, सिखाया हुआ।
শিখী सं—मयूर मोर।
শিঙ—শিং सींग।

শিঙ্গা, শিঙা सं—सींगका बाजा, सिंगा, तुरही।

শিঙ্গাড়া, শিঙাড়া सं—सिंघाड़ा।

শিঙ্গি, শিঙি सं—सिंघी मछली।

শিঞ্জন, শিঞ্জিত (-अ) सं—घूघरू आदिका शब्द; गुंजन।

শিঞ্জিনী सं—नूपुर घूंघरू।

শিটা, শিটে सं—छिबड़ा सीटी।

শিঠি, সিঠি सं—শিস सीठी।

শিতি वि—काला, नीला। —কণ্ঠ (-अ) सं—नीलकंठ, शिव; मोर।

শিথান सं—सिरका तकिया, सिरहाना।

শিম सं—सेम, छीमी।

শিমুল सं—सेमल।

শিশ, শিশী सं—सेम, छीमी।

শিয়র सं—सिरहाना।

শিয়াল, শেয়াল सं—शृगाल गीदड़। [नागफनी।

শিয়ালকাঁটা सं—एक काँटेदार पौधा,

শির, শিরঃ सं—सिर, मस्तक। শিরঃপীড়া सं—মাথাধরা सरदर्द।

শির सं—शिरा; छोटी नाड़ी; ऊंची रेखा (পাতার—)। —দাঁড়া सं—মেরুদণ্ড रीढ़।

শিরনামা सं—चिट्ठी आदिके ऊपर पानेवालेका नाम-पता।

শিরনি, শিন্নি सं—पीरको चढ़ायी हुई मिठाई या आटा केला चीनी आदि मिली हुई वस्तु।

শিরপেচ सं—পাগড়ি पगड़ी। [पगड़ी।

শিরস্ত্রাণ सं—सिरको बचानेवाली टोपी या

শিরা सं—शिरा, खून बहनेवाली नाड़ी, ऊँची रेखा। শিরাল (-अ) वि—शिरवाला; ऊँची रेखायुक्त। [आदर पूर्वक मानने योग्य।

শিরোধার্য (-अ) वि—सिर पर धरने या

শিরোনাম=শিরনামা। [दी हुई पगड़ी।

শিরোপা सं—सम्मान या पुरस्कारके रूपमें

শিরোভাগ सं—अगला हिस्सा, ऊपरका अंश।

শিরোরুহ (-अ) सं—सिरका बाल।

শিল सं—करका ओला, पत्थर; सिलवट (—নোড়া); सान धरानेका पत्थर।

শিলা सं—पत्थर, ओला (— বৃষ্টি)। —জতু सं—शिलाजीत। —পট্ট (-अ) सं—सिलवट। —লিপি सं—शिलालेख।

শিশা सं—शीशा, काँच। শিশি सं—शीशी।

শিশির सं—हिम, ओस; शीतऋतु।

শিশু सं—छोटा बच्चा (—কন্যা, মৃগ—)। —কাল सं—बचपन। —সাহিত্য (-अ) सं—बाल-साहित्य। —সুলভ वि—बच्चोंका-सा।

শিশু सं—शीशमका पेड़।

শিশুক, শিশুমার=শুশুক।

শিশ্ন (-अ) सं—लिंग, पुं-जननेन्द्रिय। শিশ্নোদরপরায়ণ वि—कामुक और पेटू। [की लौ।

শিষ सं—শস্যের মঞ্জরী अनाजकी बाल; दीपक

শিস सं—सीटी।

শিহরন सं—रोमांच, सिहरना।

শিহরান (-नो), শিহরানো (क्रि परि १, १०), শিউরন (-नो), শিউরনো (क्रि परि १७)—रोमांच होना, सिहरना।

শীকর सं—जलकी बूंद।

শীতল वि—ठंढा, सर्द; शांत, तृप्त; देवताका संध्या समयका भोग। — পাটি सं—एक प्रकारकी बहुत चिकनी चटाई।

শীতলা स्त्री—चेचकके रोगकी देवी।

শীতাংশু सं—चंद्रमा।

শীতাতপ सं—ठंढक और गर्मी या धूप।

শীতার্ত (-अ), শীতালু वि—अधिक ठंढकसे क्लेशित।

শীতোষ্ণ (-अ) वि—ठंढक और गर्मी।

শীর্ষ (-अ) सं—सिर, सिरा, चोटी।

শীলন सं—अनुशीलन, अभ्यास।

শৈঁদ=শিঁদ। [चोंचसी नाक वाला या वाली।
শুক सं—तोता, सुग्गा। —নাস वि—तोतेकी
শুকতারা सं—शुक्रग्रह।
শুক্তি, শুক্তিকা सं—ঝিনুক सीप।
শুকত, (-তি) सं—सुखनेके कारण बिकनेवाली चीजोंका जो वजन कम हो जाता है।
শুকনা, শুকনো वि—सूखा।
শুখা, শুখো वि—सूखा; जिसमें वेतनके अतिरिक्त भोजन-वस्त्र नहीं दिया जाता।
শুঁকা, শোঁকা (क्रि परि ६)—सूँघना। [सुंघाना।
শুঁকান (-নো), শুঁকানো, শুঁকনো (क्रि परि ६)
শুকান (-নো), শুকানো, শুকনো (क्रि परि १२) —सूखना, सुखाना; दुबला होना; उपवास करना। वि—सूखा हुआ, सुखाया हुआ।
শুচি वि—शुद्ध, पवित्र। —বাই=छूँचिबाई।
শুঁটকা, শুঁটকো वि—सूखा और सिकुड़ा हुआ। শুঁটকী वि—सूखा हुआ (—মাছ)।
শুঁটি सं—फली, छीमी।
শুঁঠ सं—सोंठ सूखा अदरक।
শুঁড় सं—सूँड़।
শুঁড়ী सं—कलवार। [कलवार।
শুণ্ড (-अ) सं—सूँड़। শুণ্ডী सं—हाथी;
শুধরান (-নো), শুধরানো, শুধরনো, শোধরানো (क्रि परि १८)—सुधारना, शोधना, संस्कार करना; सुधरना। [देना।
শুধা, শোধা (क्रि परि ६)—अदा करना, चुका
শুধা (क्रि परि ६)—पूछना। [पूछना।
শুধান (-নো), শুধানো, শুধনো (क्रि परि १२)
শুধু वि—सिर्फ, केवल; खाली (—হাত)। শুধু শুধু क्रि वि—অকারণ वृथा, बिना कारण।
শুন, শুনি सं—কুকুর कुत्ता।
শুনা, শোনা (क्रि परि ६)—सुनना, श्रवण करना, मानना, पालन करना। वि—सुना हुआ, श्रुत।
শুনান (-নো), শুনানো, শুননো, শোনানো (क्रि परि १२)—सुनाना; धमकाना। শুনানি सं—सुनवाई।
শুবা सं—सन्देह, शक, शुबहा।
শুভ सं—मंगल, कल्याण। वि—मंगलप्रद, कल्याणकारी। —দৃষ্টি सं—विवाहके समय सिर पर चद्दर उढ़ा कर दुल्हे और दुलहिनका आपसमें ताकना। —রাত্রি सं—सुहागरात।
শুভংকর, শুভঙ্কর वि—कल्याणकारी। सं—शुभंकरी नामक गणित-पुस्तकका लेखक।
শুভাকাঙ্ক্ষী, শুভানুধ্যায়ী वि—शुभचिंतक।
শুভ্র (-अ) वि—শাদা सफेद।
শুঁয়া, শুঁয়ো सं—रोआँ।
শুঁয়াপোকা, (শুঁয়ো-) सं—रोएँदार कीड़ा।
শুয়ার, শুওর, শুয়োর सं—सुअर; एक गाली।
শুরু सं—शुरू, आरंभ। [शोरवा।
শুরুয়া सं—মাংসের ঝোল मांसका जूस,
শুলফা, শুলফো सं—सोआ, एक साग।
শুশুক सं—सूस।
শুশ্রূষা सं—सेवा, परिचर्या।
শুষা, শোষা (क्रि परि ६)—सोखना, चूस लेना।
শুষ্ক (-अ) वि—শুকনা सूखा, नीरस; उदास।
শূকর सं—শুয়ার सुअर।
শূন্য (-अ) सं—आकाश, सुन्ना, बिंदी, सिफर। वि—खाली। —দৃষ্টি सं—खाली नजर, उदास दृष्टि।
শূর্প, শূর্প (-अ) सं—কুলা सूप।
শৃগাল (सृगाल) सं—শিয়াল गीदड़।
শৃঙ্গ (सृंग-अ) सं—শিং सींग; शिखर, चोटी। শৃঙ্গী वि—सींगवाला।
শেওলা (सैवला) सं—শৈবাল सिवार।
শেঁকো=সেঁকো।
শেখর सं—मुकुट, शिखर।
শেখা, শেখান=শিখা, শিখান।
শেজ सं—শয্যা बिस्तरा। —ফুলনি सं—विवाह

की रात्रिमें दुलहे-दुलहिनके साथ जागनेवाली स्त्रियोंको दूसरे दिन सुबह बिस्तरा उठानेके लिए वरपक्षकी तरफसे दिये जानेवाले रुपये जो स्त्रियाँ आपसमें बाँट लेती हैं।

শেঠ सं—सेठ, महाजन, सौदागर। [परजाता।

শেফালী, শেফালি, শেফালিকা सं—हरसिंगार,

শেমিজ सं—स्त्रियोंका साड़ीके नीचेवाला पहनावा जो घुटनों तक लटकता है।

শেয়াল सं—शियाल गीदड़।

শেল सं—सूली, एक अस्त्र।

শেল্ফ् सं—ताखा, ताक shelf

শেষ सं—अंत, समाप्ति, बाकी, नाश। वि—अंतिम, आखिरी (—বয়স); समाप्त, खतम, बचा हुआ। শেষের দিন सं—अंतिम दिन, मृत्युका समय। শেষাশেষি क्रि वि—समाप्त होनेके समय, आखिरी वक्त।

শৈত্য (शइत्त-अ) सं—ठढक।

শৈথিল্য स—शिथिलता, लापरवाही।

শৈব (-अ) वि—शिव सम्बन्धी। सं—शिवका उपासक।

শৈবাল, শৈবল सं—শেওলা सिवार।

শৈল (-अ) सं—पहाड़। वि—पर्वत सम्बन्धी। —রাজ सं—हिमालय।

শৈশব सं—बचपन, लड़कपन।

শোওয়া=শোয়া।

শোক सं—गम, रंज, मृत्युसे दुःख, शोक (পুত্র—, টাকার—, —পাওয়া)। শোকাকুল वि—शोकसे व्याकुल। শোকানল सं—शोक की आग या जलन। শোকান্বিত (-अ) वि—शोकार्त। শোকাবিষ্ট (-अ) वि—शोकार्त। শোকাবেগ सं—शोकका वेग।

শোঁথা, শোঁকা, শোঁকান=শুঁথা, শুঁথান।

শোচন, শোচনা सं—पश्चात्ताप, अफसोस, शोच, शोक करना। শোচনীয় (-अ) वि—शोक करनेके योग्य, जिसकी हालत देखकर दुख होता है।

শোণিত सं—रक्त, खून। শোণিতাক্ত (-अ) वि—রক্তমাখা लहूसे लथपथ।

শোথ सं—सूजन, किसी अंगका फूलना।

শোধ सं—परिशोध, चुकता, बदला, शोधन। —বোধ स—चुकता और निबटेरा।

শোধন सं—शोधन, शुद्ध करना, साफ करना, संशोधन; चुकता। শোধিত (-अ) वि—शोधा हुआ। শোধনীয় (-अ) वि—शोधने योग्य।

শোধা=শুধা।

শোনা, শোনান=শুনা, শুনান।

শোভন वि—सुंदर, मनोहर।

শোভা सं—सुन्दरता, छटा। —পায় না क्रि—अच्छा नहीं लगता। শোভিল (-अ) क्रि—शोभित हुआ। শোভাযাত্রা सं—मिछिल जलूस।

শোভিত (-अ) वि—शोभायमान। [सोना।

শোয়া, শোওয়া (क्रि परि १०) —শয়ন করা लेटना;

শোয়ান (-नो), শোয়ানো (क्रि परि १४)—लिटाना, सुलाना। [शोरगुल।

শোর सं—शोर, चिल्लाहट। —গোল सं—

শোরা सं—एक क्षार, शोरा।

শোল स—एक मछली।

শোলা=সোলা।

শোষ सं—सूखापन; क्षयरोग; नासूर।

শোষক वि—सोखनेवाला। [सोखा हुआ।

শোষণ सं—सोखना। শোষিত (-अ) वि—

শোষা=শুষা।

শোহরৎ सं—घोपणा, ढिंढोरा।

শৌখিন (शउ-), শৌখীন वि—शौकीन; कमनीय। শৌখিনতা सं—शौकीनी।

শৌণ্ড (-अ) वि—মাতাল मतवाला, आसक्त, मशहूर (দান—)। শৌণ্ডিক सं—ढंड़ि

কলবার। শৌণ্ডিকালয় সং—কলবারখানা, শরাবকী দূকান।

শৌর্য (শউর্জ-অ) স—সাহস, পরাক্রম।

শ্মশান (শশান) স—মরঘট, স্মশান।

শ্মশ্রু (শস্রু) সং—গোঁফদাড়ি দাঢ়ী ঔর মূঁছ, দাড়ি দাঢ়ী। শ্মশ্রুল বি—দাঢ়ী ঔর মূঁছ-বালা।

শ্যামা স্ত্রী—কালী (দেবী)। সং—এক চিড়িয়া। —পূজা সং—কালীকী পূজা জো দিবালীকী রাতকো হোতী হৈ। [শ্যালী স্ত্রী—শালী সালী।

শ্যালক, শ্যাল সং—শালা সালা। শ্যালিকা,

শ্যেন সং—বাজ শিকরা।

শ্রবণ (স্রবন) স—শোনা সুননা; কান। শ্রবণীয়, শ্রব্য, শ্রাব্য (-অ) বি—সুননে যোগ্য।

শ্রম (স্রম) সং—মেহনত। —জীবী বি সং—মজুর মজদূর। —বারি সং—ঘাম পসীনা।

শ্রমণ (স্রমন) সং—বৌদ্ধ সন্ন্যাসী।

শ্রমিক=শ্রমজীবী। [(টীকায়—)।

শ্রাদ্ধ (স্রাদ্ধ-অ) স—শ্রাদ্ধ; নাশ, বৃথা ব্যয়

শ্রান্ত (স্রান্ত-অ) বি—থকা; ধীমা, নিবৃত্ত। শ্রান্তি সং—থকাবট; বিশ্রাম। [বৌদ্ধ সাধু।

শ্রাবক (স্রাবক) বি—সুননেবালা স—চেলা,

শ্রাবণ (স্রাবন) সং—সাবন। বি—শ্রবণ-ইংদ্রিয় সম্বন্ধী। শ্রাবণে, শ্রাবুনে বি—সাবনমেঁ উৎপন্ন।

শ্রী (স্রী) স—লক্ষ্মী, সম্পত্তি, ধন, সৌভাগ্য, শোভা, কাংতি (মুখের—, বিশ্রী)। শ্রী, শ্রীমান্, শ্রীযুক্ত, শ্রীযুত, শ্রীমৎ সং—নামকে পহলে আদর ঔর স্নেহ সূচক উপাধি (দেবতা দেবতুল্য ব্যক্তি যা পবিত্র বস্তুকে পূর্ব—শ্রী। জৈসে,—শ্রীশ্রীদুর্গা, শ্রীগুরু, শ্রীঅঙ্গ, শ্রীমুখ। জীবিত ব্যক্তিকে নামকে পূর্ব—শ্রী। আদরমেঁ—শ্রীযুক্ত, শ্রীযুত। অধিক আদরমেঁ শ্রীল। স্নেহমেঁ শ্রীমান্। মহিলাকে নামমেঁ শ্রীমতী; আদরমেঁ শ্রীযুক্তা সন্ন্যাসী দেবতা আদিকে নামমেঁ শ্রীমৎ। জৈসে শ্রীমৎ স্বামী শঙ্করাচার্য, শ্রীমদ্ভগবদ্ গীতা)।

শ্রীক্ষেত্র (স্রীক্খেত্র-অ) সং—জগন্নাথ পুরী।

শ্রীঘর সং—জেলখানা (ব্যঙ্গমেঁ)।

শ্রীচরণকমলেষু (-চরণেষু)—পূজ্য ব্যক্তিকো খত লিখনেকে আরংভমেঁ ঐসা লিখা জাতা হৈ।

শ্রীবৃদ্ধি সং—সৌভাগ্য যা ধনকী বৃদ্ধি।

শ্রীভ্রষ্ট (-অ) বি—জিসকী শোভা যা সংপত্তি নষ্ট হো গয়ী হৈ। [—যশস্বী।

শ্রুত (স্রুত-অ) বি—সুনা হুআ। —কীর্তি বি

শ্রুতি (স্রুতি) সং—শ্রবণ, কান, লোকোক্তি (জন—), বেদ। —ধর বি, সং—কোই বাক্য সুনতেহী জিসকো যাদ হো জাতা হৈ।

শ্রূয়মাণ বি—জো সুনা জা রহা হৈ।

শ্রেণী, শ্রেণি (স্রেনি) স—পংক্তি, সারি কতার, কক্ষা, দল জাতি।

শ্রোণী (স্রোণী), শ্রোণি সং—নিতম্ব চূতড়।

শ্রোতা (স্রোতা) সং—সুননেবালা। শ্রোতৃবর্গ স—সুননেবালে। শ্রোতব্য (-অ) বি—সুননেযোগ্য। শ্রোত্র (-অ) সং—কান, শ্রবণেন্দ্রিয়, বেদ। শ্রোত্রিয় (-অ) স—বেদ-বেদাংগ মেঁ পারংগত ব্যক্তি, ব্রাহ্মণোঁকী এক শ্রেণী।

শ্রৌত (অ) বি—বেদ-বিহিত।

শ্লথ (-অ) বি—ঢিলা শিথিল, ঢীলা।

শ্লাঘা স—প্রশংসা তারীফ; শেখী। শ্লাঘনীয়, শ্লাঘ্য (-অ) বি—প্রশংসা যোগ্য।

শ্লিষ্ট (-অ) বি—সংযুক্ত, মিলা হুআ।

শ্লীপদ স—গোদ ফীলপা। [লজ্জা, ইজ্জত।

শ্লীল বি—শিষ্ট, ভদ্র। শ্লীলতা স—শিষ্টতা,

শ্লেষ স—সংযোগ, আলিংগন; তানা।

শ্লেষ্মা (শ্লেস্শা) সং—কফ, শিকনি, গয়ের, বলগম।

শ্লৈষ্মিক বি—বলগম সম্বন্ধী। [পরসোঁ)।

শ্ব (-অ) ক্রি বি—আগামী দিন (পরশ্ব,

শ্বস্তি স—খোশামোদ চাপলূসী।

শ্বশুর सं—ससुर ।

শ্বশ্রূ (शश्रू) स्त्री—শাশুড়ী सास ।

শ্বসন सं—साँस ग्रहण और त्याग ।

শ্বাপদ स—हिंसक पशु ।

শ্বাস सं—साँस, दमा, मृत्युके पूर्वकी साँस (রোগীর—ওঠা, নাভি—) ।

শ্বিত্র (अ) स—ধবল রোগ सुफेद कोढ़ । শ্বিত্রী सं—ধবল রোগী सुफेद कोढ़ी ।

শ্বেত वि—সাদা, শুভ্র सुफेद, शुक्ल । —দ্বীপ सं—বিলাত विलायत, इंगलैंड ।

শ্বৈত্য (-अ) स—শুক্লতা सुफेदी, सुफेद कोढ़।

ষ

ষট্ वि, सं—ছয় छः, ६ । —চক্র (-अ) सं—तांत्रिक साधनके लिए शरीरके भीतरके छ. स्थनोंमें कल्पित छ प्रकारके पद्म (মূলাধার, স্বাধিষ্ঠান, মণিপূরক, অনাহত, বিশুদ্ধ ও আজ্ঞা) । —পদ स—ভ্রমর भौंरा ।

ষড়যন্ত্র (-अ) सं—চক্রান্ত साजिश ।

ষড় দর্শন सं—सांख्य, पातंजल, पूर्वमीमांसा, वेदांत, वैशेषिक, न्याय—वेदके अनुयायी ये छ दर्शन-शास्त्र ।

[নামর্দ ।

ষণ্ড (-अ) स—षाँड़, বৃষ बैल, षाँड़ । वि—

ষণ্ডা वि—বলিষ্ঠ सडमुसंड, तगड़ा । ষণ্ডামার্ক (-अ) वि, स—तगडा और गँवार , शुक्राचार्य के दो पुत्र ।

ষষ্টি वि, स—ষাট साठ, ६० ।

ষষ্ঠী स्त्री—छठी ; संतानकी रक्षा करनेवाली देवी । —বাটা सं—জামাই-ষষ্ঠীর তত্ত্ব जेठ शुक्ला षष्ठीको दामादके लिए भेट।

ষাট वि, सं—साठ, ६० ।

ষাট, ষাঠ स्त्री—ষষ্ঠি দেবী संतानकी रक्षा करनेवाली देवी। ষাট্‌ ষাট্‌ सं—संतानके रक्षार्थ षष्ठी देवीका नाम उच्चारण। ষেটের কোলে क्रि वि—षष्ठी देवीकी कृपासे ।

ষাণ্মাসিক वि—छ मासमें होनेवाला या प्रकाशित होनेवाला अथवा किया जानेवाला।

ষেটেরা सं—संतानके जन्मके बाद छठी रातको की जानेवाली पूजा, छठी ।

ষোড়শ वि, सं—ষোল सोलह, १६ । सं—श्राद्धमें १६ प्रकारके दानकी सामग्रियाँ । वि—सोलहवाँ ।

ষোল (-अ) वि, सं—सोलह, १६ । —আনা वि—सोलहों आने, पूरापूरा ।

স

স- उप—सहित, युक्त (সজল, সপরিবার) ; सदृश, समान (সগোত্র, সধর্মা) ।

সই स्त्री—सखी, सहेली । सं—दस्तखत ।

সইস सं—साईस ।

সওগাত सं—উপঢৌকন भेट, सौगात ।

সওদা सं—ক্রয় खरीद, सौदा, व्यापार ।

সওদাগর सं—সদাগর, বণিক सौदागर, व्यापारी ।

সওয়া वि—সপাদ सवा ।

সওয়া=সহা ।

সওয়ায় क्रि वि—ব্যতীত, ছাড়া सिवाय ।

সওয়ার सं—আরোহী सवार, घुड़सवार ।

সওয়ারি सं—যানবাহন सवारी, गाड़ी ।

সওয়ারী सं—আরোহী सवार ।

সওয়াল सं—प्रश्न, सवाल, जिरह ।

সং=সঙ । সং=সম্ ।

সংকট, সঙ্কট सं—विपत्ति, मुसीबत, आफत ; संकरा रास्ता (গিরি—) । वि—खतरनाक ।

সংকটাপন্ন (-अ) वि—आफतमें फँसा हुआ ।

সংকলন, সঙ্কলন सं—मिलन मेल, जोड़, संग्रह ।

সংকলিত, সঙ্কলিত (-अ) वि—संग्रह किया हुआ। সংকলয়িতা, সঙ্কলয়িতা सं—संग्रह करनेवाला।

সংকল্প, সঙ্কল্প (-अ) सं—संकल्प, उद्देश्य, पक्का इरादा। —বিকল্প सं—द्वैध दुवधा।

সংকীর্তন, সঙ্কীর্তন सं—भजन, कीतन।

সংকুল, সঙ্কুল—वि—परिपूर्ण (বিপৎ—, শ্বাপদ—)। [থাবাড়ে—হবে না)।

সংকুলান सं—पर्याप्ति, यथेष्ट परिमाण (একসের

সংকেত, সঙ্কেত सं—इङ्गित इशारा, निशान, चिह्न। [संकोच।

সংকোচ, সঙ্কোচ सं—कुंठा लज्जा, हिचकिचाहट,

সংক্রম, সংক্রমণ सं—संचार, एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन; संक्रांति, संक्रामक रोग आदिका फैलना। সংক্রমিত, সংক্রামিত (-अ) वि—संचारप्राप्त, फैला हुआ।

সংক্রান্ত वि—संचारित, व्याप्त; सम्बन्धी, विषयक (বিবাহ—কার্য্য)।

সংক্রান্তি सं—सौर मासका अंतिम दिन।

সংক্ষোভ सं—आंदोलन, हलचल, व्याकुलता, बचनी। সংক্ষুব্ধ (-अ) वि—बेचैन।

সংখ্যক वि—(समासके अन्तमें) संख्या-परिमित, संख्या-पूरक (দশসংখ্যক या দশম সংখ্যক শ্লোক, दसवाँ श्लोक)।

সংখ্যা सं—गणना, गिनती, अंक, विचार। —গুরু वि—जो संख्यामें अधिक हैं (—সম্প্রদায়)। —লঘু वि—जो संख्यामें कम हैं (—সম্প্রদায়)।

সংখ্যাত (-अ) वि—गिना हुआ, विचारा हुआ।

সংখ্যান सं—गिनती।

সংখ্যাপন सं—निर्णय, प्रचार।

সংখ্যেয় (-अ) वि—गिनने योग्य।

সংগত, সঙ্গত (-अ) वि—मिला हुआ, योग्य, उचित। (संगत्) सं—गानेके साथ बाजेका मेल।

সংগতি, সঙ্গতি सं—मिलन, मेल, सामंजस्य, योग्यता; दौलत (—পন্ন, —শালী)।

সংগৃহীত (-अ) वि—एकत्र किया हुआ, बटोरा हुआ। [वि—छिपाया हुआ।

সংগোপন सं—छिपाव। সংগোপিত (-अ)

সংগ্রহ (-अ) सं—संग्रह, संचय। সংগ্রহীতা, সংগ্রাহক वि, सं—संग्रह करनेवाला।

সংঘ (-अ) सं—दल, समूह, समिति, बौद्ध भिक्षुसमाज।

সংঘট্ট (-अ) सं—संघर्ष, संघटन।

সংবৎসর सं—पूर्ण বৎসর पूरा साल।

সংবরণ सं—संयम, दमन, रोक, सम्हाल (ক্রোধ—); छिपाव।

সংবর্দ্ধন, (-না) सं—स्वागत, सम्मान। সংবর্দ্ধিত (-अ) वि—स्वागत किया हुआ, सम्मान-प्राप्त।

সংবলিত (-अ) वि—युक्त, सहित।

সংবাদ सं—खबर, समाचार; बातचीत (সখী—)। —পত্র (-अ) सं—समाचार पत्र, अखबार।

সংবাহন, (-বাহ) सं—ভারবহন बोझ ढोना, देह मलना। সংবাহক वि, सं—ভারবাহী बोझ ढोनेवाला, देह मलनेवाला।

সংবিৎ सं—ज्ञान, होश।

সংবিদিত वि—उत्तम रूपसे विदित।

সংবিধান सं—रचना, संघटन।

সংবিষ্ট (-अ) वि—लवलीन, निद्रित।

সংবৃত (-अ) वि—आवृत, गुप्त।

সংবেগ सं—घबराहट, वेग।

সংবেদ, সংবেদন, (-না) सं—अनुभव, बोध, ज्ञान। সংবেদ্য (-अ) वि—अनुभव करने योग्य।

সংযত (शंजत-अ) वि—नियंत्रित, नियमित, परिमित (—वाक्, সংযতাহার)।

সংযম (शंजम) सं—नियम, निग्रह, दमन, रोक, व्रत आदिके पूर्व दिनका कृत्य। সংযমন सं—दमन, रोक; व्रत आदिका पालन।

সংযুক্ত (-अ) वि—मिलित, सहित।

সংযোজন, (-ना) स—जोड़ने या मिलानेका कम। সংযোজিত (-अ) वि—संयुक्त, मिला हुआ।

সংশয় (शंशय) सं—संदेह, शक, आगा-पीछा, दुबधा। সংশয়িত (-अ) वि—संदेहास्पद। সংশয়িতা वि—संदेह करनेवाला।

সংশ্রয় (शंस्रय) सं—आश्रय, अवलंब।

সংসক্ত (-अ) वि—आसक्त, लगा हुआ। সংসক্তি सं—आसक्ति, लगाव।

সংসদ सं—समिति, सभा।

সংসার (शंशार) स—जगत्, संसार, सृष्टि; गृहस्थी (—ত্যাগ, —ধর্ম, —করা, —পাতা), विवाह (তাহার দুই—)। —যাত্রা सं—गृहस्थीके काय (কায়ক্লেশে—নির্বাহ করি)। সংসারী वि, सं—गृहस्थ, परिवार वाला, संसार की मायामें फसा हुआ।

সংসিদ্ধ (-अ) वि—सिद्ध, पूर्ण।

সংসৃতি स—साथ साथ गमन, प्रवाह, आवा गमन।

সংসৃষ্ট (-अ) वि—सम्बन्धयुक्त।

সংস্কর্তা वि, सं—संस्कार करनेवाला।

সংস্কার सं—शोधन, शुद्धि, सुधार (সমাজ—); मरम्मत (জীর্ণ—); धार्मिक संस्कार (উপনয়ন—, বিবাহ—, —বর্জিত), मन पर पड़ा हुआ प्रभाव (জ্ঞান—, কর্ম—, কু—), छाप; जन्मका स्वाभाविक संस्कार (যোনিজ—); पूव जन्मका सस्कार।

সংস্ক্রিয়া सं—संस्कार, शोधन।

সংস্থা सं—स्थिति, अवस्था, हालत; समिति, जिंदगी बसर करनेका ढंग।

সংস্থান सं—सन्निवेश, विन्यास, स्थिति, गठन, बनावट, प्रबन्ध (অন্নের—)।

সংস্পর্শ (शंस्पर्श-अ) सं—लगाव, सम्बन्ध। সংস্পৃষ্ট (-अ) वि—सम्बन्धयुक्त, छूआ हुआ।

সংস্রব सं—सम्बन्ध, संग।

সংহত (-अ) वि—मिलित, एकत्रित, गाढ़ा या घना किया हुआ, जमाया हुआ, दृढ़।

সংহরণ स—संहार, नाश, वध, प्रत्याकर्षण।

সংহর্তা सं—हत्याकारी, कातिल।

সংহার सं—विनाश, वध, समाप्ति, अन्त; प्रलय, प्रत्याहार, खुले बालोंका गूँथना (বেণী—)। সংহারক वि—संहार करनेवाला, वधिक।

সংহিত (-अ) वि—संगृहीत, मिलित।

সংহৃত (-अ) वि—वध किया हुआ, प्रत्याहृत, संकुचित।

সকড়ি सं—कच्ची रसोई, जूठन।

সকরুণ वि—সদয় रहमदिल, दयालु।

সকল वि—সমস্ত, সমুদয় सारा, सब, कुल।

সকাল सं—सवेरा (—হওয়া, —বেলা); अविलंब। সকাল সকাল क्रि वि—जल्दी जल्दी, वेला रहते)।

সকাশ सं—निकट, समीप।

সকৃৎ अ—एक बार।

সকৌতুক वि—कौतूहलयुक्त।

সক্ত (-अ) वि—आसक्त, संलग्न।

সক্তু सं—শক্তু, छातू सत्तू।

সক্ষম (शक्खम) वि—समथ।

সখ सं—শখ शौक, चसका।

সখা सं—मित्र, दोस्त। स्त्री—সখী। সখ্য (-अ) सं—मित्रता, दोस्ती।

সগুণ वि—सत्त्व रज तम ये तीन गुण युक्त (—ঈশ্বর)। [जाति।
সগোত্র (-अ) सं—জ্ঞাতি एक गोत्रके लोग,
সঘন वि—मेघयुक्त, बादल छाया हुआ (—গগন)। क्रि वि—बार बार, निरंतर।
সঙ, সং सं—मसखरा।
সঙিন=সঙ্গিন।
সঙ্কট, সঙ্কলন, সঙ্কল্প, সঙ্কীর্তন, সঙ্কুল, সঙ্কেত, সঙ্কোচ आदि— সংকট आदि देखो।
সঙ্গ (-अ) सं—संग, सोहबत, मिलन, आसक्ति। সঙ্গে क्रि वि—साथ, सहित। সঙ্গে সঙ্গে क्रि वि—साथ-साथ; तुरन्त।
সঙ্গত, সঙ্গতি आदि—সংগত आदि देखो।
সঙ্গিন, সঙ্গীন वि—সঙিন संगीन, गुरुतर, संजीदा, सकट-युक्त।
সঙ্গী सं—साथी, हमजोली।
সঙ্ঘ, সঙ্ঘট্ট=সংঘ, সংঘট্ট।
সচকিত (-अ) वि—त्रस्त डरा हुआ, चकित।
সচন্দন वि—चंदन पोता हुआ।
সচরাচর क्रि वि—प्रायशः, अकसर।
সচল वि—চালু चलनेवाला।
সচিব सं—मन्त्री, वजीर; सहायक।
সচেতন वि—জীবন্ত चेतन।
সচেষ্ট (-अ) वि—चेष्टा-युक्त।
সচ্চরিত্র (-अ) वि—चरित्रवान। [दौलतमद।
সচ্ছল वि—जिसका खच अच्छी तरह चलता हो,
সচ্ছিদ্র (-अ) वि—सूराखदार।
সজনী स्त्री—सखी, सहेली।
সজনে (शज्ने) सं—सहिजन।
সজল वि—जलयुक्त, आँसुओंसे पूण।
সজাগ वि—जागता हुआ, सावधान।
সজাতি सं—एक जातिका मनुष्य। সজাতীয় (-अ) वि—एक जातिका।
সজারু सं—शजारु साही।

সজীব वि—जीवित, जिंदा।
সজোর वि—ताकतवर। সজোরে क्रि वि—जोरसे।
সজ্জা सं—सजावट। সজ্জিত (-अ) वि—सजा-सजाया।
সজ্ঞান वि—चेतन, ज्ञानयुक्त। সজ্ঞানে क्रि वि—জ্ঞানতঃ जानते या ज्ञान रहते हुए, होशसे।
সঞ্চয় सं—संग्रह, पूँजी, संचय। সঞ্চয়ন सं—संचय करना, जमा करना। সঞ্চয়ী वि—संचय करनेवाला।
সঞ্চরণ सं—विचरण, गमन, संचार, कंपन।
সঞ্চার सं—एक स्थानसे दूसरे स्थानमें गमन, गति, विस्तार। সঞ্চারিত (-अ) वि—संचार या प्रचार किया हुआ, फैलाया हुआ।
সঞ্জাত (-अ) वि—उत्पन्न, पैदा। [झालर।
সঞ্জাব सं—संजाफ, मगजी, गोट, किनारा,
সট্ अ—झट (—ক'রে স'রে পড়া)।
সটকা सं—सठक।
সটকান (-नो), সটকানো (क्रि परि १६)—भागना, चंपत होना, सटकना।
সটান वि—सरपट, बहुत तेज दौड़का भावसूचक।
সঠিক वि—यथार्थ ठीक, सही।
সডাক वि—डाकका महसूल सहित।
সড सं—साजिश, षड्यन्त्र।
সড়কি सं—বল্লম भाला, बरछा।
সড়গড় (-अ) वि—মুখস্থ घोखा हुआ।
সড়সড় सं—सड़ासड़; खुजली गुदगुदी आदिका अनुभव।
সড়সড়ি सं—सालन, मसालादार तरकारी।
সড়াক, সড়াৎ सं—तेज चालका शब्द (—ক'রে পিছলে পড়ল, খাপ হ'তে—ক'রে তলোয়ার বার ক'রল)।
সতত (-अ) क्रि वि—सदा, हमेशा।
সততা (-तता) स—सं—सज्जनता, ईमानदारी।

সতর (-अ) वि, सं—सत्रह, १७।

সতর্ক (-अ) वि—सावधान, होशियार।

সতাত (-अ), (-তো) वि—वैमात्र सौतेला।

সতিন, সতীন स्त्री—সপত্নী सौत। সতিনী वि—सौत सम्बन्धी।

সতী स्त्री—साध्वी पतिव्रता, मृत पतिके साथ जो स्त्री जल मरती है। —দাহ सं—मृत पतिके साथ एक चितामें जीवित स्त्रीका जलना। —গিরি, —পনা सं—(व्यंगमें) सतीपन।

সতীর্থ (-अ) सं—सहपाठी, सहाध्यायी।

সতৃষ্ণ (-अ) वि—प्यासा, तृष्णापूर्ण।

সতেজ वि—তেজালো जोरावर, पनपता हुआ।

সতের (-अ) वि, सं—সতর।

সৎকার सं—দাহ दाह, शव जलानेकी क्रिया; सम्मान आदर।

সৎমা स्त्री—বিমাতা सौतेली माँ।

সত্তম वि—श्रेष्ठ, उत्तम, साधु।

সত্তর वि, सं—सत्तर, ७०।

সত্ত্বেও क्रि वि—होने पर भी।

সত্য (-अ) सं, वि—सत्य, यथार्थ, ठीक, सही। —নিষ্ঠ (-अ) वि—सत्यमें निष्ठा रखनेवाला, सत्यवादी। —প্রতিজ্ঞ (-अ) वि—दृढ़ प्रतिज्ञा करनेवाला। —ভঙ্গ (-अ) सं—प्रतिज्ञा-भंग। —সন্ধ (-अ) वि—वचनको पूरा करनेवाला।

সত্যাসত্য वि, सं—सत्य और मिथ्या।

সত্যি वि—সত্য सच, सही। সত্যি সত্যি क्रि वि—सचमुच, वास्तवमें, वाकई।

সত্র (-अ) सं—ছত্র सदावर्त।

সত্বর क्रि वि—शीघ्र, जल्दी, तुरंत।

সদন सं—मकान, घर; निकट।

সদয় वि—दयालु, रहमदिल।

সদর वि—प्रधान, उच्च, सदर; बाहरी। सं—ड्योढ़ी, मकानका बाहरी हिस्सा। —আলা सं—सबजज, जिलाधीश।

সদর্প (-अ) वि—घमंडके साथ, गर्वयुक्त।

সদসৎ वि—सत् और असत् अच्छा और बुरा।

সদাগর सं—सौदागर।

সদাব্রত (-अ) सं—सदावर्त।

সদাশয় वि—महानुभाव।

সদিচ্ছা सं—शुभ इच्छा।

সদুত্তর सं—योग्य उत्तर।

সদুদ্দেশ্য (-अ) सं—शुभ उद्देश्य।

সদুপায় सं—उत्तम उपाय।

সদৃশ (-अ) वि—एकसा, समान, तुल्य।

সদ্গোপ सं—ग्वालोंकी एक जाति।

সদ্ব্যবহার सं—अच्छा बर्ताव, उत्तम उपयोग; (व्यंगमें) भोजन।

সদ্ব্যয় सं—अच्छे काममें खर्च।

সদ্ভাব सं—मित्रता, दोस्ती, प्रेमभाव।

সদ্ম (-अ) सं—मकान, घर।

সদ্য (-अ) क्रि वि—अभी, तुरंत। वि—इसी समयका, ताजा।

সধবা स्त्री—सौभाग्यवती।

সধর্মা, সধর্মী वि—एक धर्मवाला, समान [गुण युक्त।

সন—সাল।

সনাক্ত (-अ) सं—शनाक्त।

সনির্বন্ধ (-अ) वि—अति आग्रहयुक्त।

সনে (पद्यमें) अ—সঙ্গে साथ, सहित।

সন্তত (-अ) वि—फैलाया हुआ, निरंतर।

সন্তপ্ত (-अ) वि—दुःखी, सताया हुआ, तपाया हुआ।

সন্তরণ सं—সাঁতার तैरना।

সন্তর্পণ सं—अच्छी तरह तृप्ति दान। সন্তর্পণে क्रि वि—बहुत सावधानीसे।

সন্ত্রস্ত (-अ) वि—भयभीत।

সন্ত্রাস सं—बहुत डर। —বাদ सं—राज्याधिकार प्राप्तिके लिए हिंसात्मक कार्य ही साधन है ऐसा मत।

সন্দিগ্ধ (-अ) वि—संदेहयुक्त।

সন্দিহান वि—संदेह करनेवाला, शक्की।

সন্ধান स—खोज, निशाना, रहस्य, भेद, निशाना लगाना (ধনুতে শর—)।

সন্ধি सं—मिलन, जोड़, गाँठ ; मेल (বয়ঃ—) ; दिन और रात या दो तिथियों के मिलनेका समय। —পূজা सं—नवरात्रमें दुर्गा-पूजा की अष्टमी और नवमी तिथियोंकी संधि समयकी विशेष पूजा। [परिणत।

সন্ধিত (-अ) वि—मिलित, संयुक्त, मदिरामें

সন্ধিৎসু वि—खोज करनेके इच्छुक, खोजी।

সন্না सं—छोटा चिमटा, चिमटी।

সন্নিকট वि—अति समीप।

সন্নিকর্ষ (-अ) स—निकटता। সন্নিকৃষ্ট (-अ) वि—पासवाला, समीपका।

সন্নিধান, সন্নিধি सं—समीपता ; समागम।

সান্নিপাত सं—एकमें मिलन ([illegible]—) ; समूह, पतन, मृत्यु, त्रिदोषका विकार।

সন্নিবদ্ধ (-अ) वि—दृढ़तासे बंधा हुआ, गूथा हुआ। [तल्लीन, एकाग्र।

সন্নিবিষ্ট (-अ) वि—प्रविष्ट, सामने रखा हुआ,

সন্নিবেশ सं—स्थिति, संयोग, अंतर्भाव।

-সন্নিভ (-अ) वि—(समासके अंतमें) सदृश, तुल्य (চন্দ্র-)। [अच्छी तरह स्थापित।

সন্নিহিত (-अ) वि—पासवाला, सटा हुआ ;

সন্ন্যস্ত (-अ) वि—समर्पित, छोड़ा हुआ।

সন্ন্যাস स—संन्यास, गृहस्थाश्रमका त्याग ; एक रोग 'जिससे एकाएक हृद्गति बंद होकर मृत्यु हो जाती है। সন্ন্যাসী सं—संन्यासी ; चतुर्थाश्रमी, भिक्षु। स्त्री—সন্ন্যাসিনী।

সন্মার্গ (সন্মার্গ-अ) सं—उत्तम मार्ग।

সপ सं—बड़ी चटाई।

সপক্ষ (-अ) सं, वि—जो अपने पक्षमें हो, सहायक, तरफदार, पंखवाला।

সপত্ন (-अ) वि, स—विरोधी, शत्रु।

সপত্নী स्त्री—সতিন सौत।

সপত্নীক वि—সস্ত্রীক पत्नीके साथ।

সপরিবার वि—परिवारके साथ।

সপসপ सं—गीलेपनका लक्षण प्रकाश (ভিজে— করছে)। সপসপে वि—गीला।

সঁপা (क्रि परि १)—सौंपना, अर्पण करना, देना।

সপাং, সপাৎ सं—बेंत चाबुक आदि मारनेका शब्द।

সপাদ वि—चौथाईके साथ, सवा ; पैरवाला।

সপাসপ स—गीली वस्तु खाने या बेंत चाबुक आदि मारनेका शब्द।

সপিণ্ড (-अ) सं—एकही कुलमें उत्पन्न सातवीं पीढ़ी तकका पुरुष जो एकही पितरोंको पिंड दान करता है। সপিণ্ডীকরণ सं—मृत्युके एक साल बादका श्राद्ध।

সপ্ত (-अ) वि, सं—सात, ७। সপ্তক सं—सातका समूह। সপ্ততি वि सं—सत्तर ७०। সপ্তদ্বীপ सं—पुराणके अनुसार पृथ्वीके सात विभाग—जंबु, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर। সপ্তধা क्रि वि—सात भागोंमें, सात प्रकारसे, सात बार। সপ্তপদী सं—विवाहमें वर और वधूका एकसाथ सात कदम चलना, भाँवर। সপ্তপাতাল सं—पुराणके अनुसार पृथ्वीके नीचे वाले सात लोक अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल। সপ্তম वि—सातवाँ। সপ্তমী सं—सातवीं तिथि। সপ্তলোক, সপ্তস্বর্গ (-अ) स—पुराणके अनुसार—भूः, भुव, स्व., जन, महः, तपः, सत्य, ऊपरके ये सात लोक। সপ্তসমুদ্র (-अ) सं—पुराणके अनुसार

—लवण, इक्षुरस, सुरा, घृत, दधिमंड, क्षीर, स्वादूदक ये सात समुद्र ।

সপ্তাহ सं—হপ্তা हफ्ता, सात दिन ।

সপ্রতিভ (-अ) वि—प्रतिभायुक्त, बुद्धिमान; फुर्तीला, स कोच-रहित ।

সপ্রমাণ वि—प्रमाण सहित, प्रमाणित ।

সফর सं—विदेश भ्रमण, सैर, सफर ।

সফরী सं—পুঁটিমাছ एक छोटी मछली ।

সফল वि—फलयुक्त, सार्थक, कामयाब । —কাম, —মনোরথ वि—जिसकी कामना सिद्ध हुई है ।

সব वि—कुल, सारा, समस्त । —জান্তা वि—हरफन-मौला । সবাই सर्व—সকলে सबलोग । সবে सर्व—सबलोग । क्रि वि—सब समेत (—পাঁচ টাকা); अब (—সন্ধ্যা) ।

সবজি सं—আনাজ सब्जी, तरकारी ।

সবর্ণ (-अ) सं—समान वर्ण, स्वजाति ।

সবল वि—ताकतवर । সবলে क्रि वि—ताकतसे, जबरदस्ती ।

[सिनेमा) ।

সবাক वि—बोलता (—চিত্র, —छवि, बोलता

সবিতা सं—सूर्य; ईश्वर; जन्मदाता । সবিত্রী वि स्त्री—प्रसव करनेवाली ।

সবিনয় वि—विनय सहित ।

সবিরাম वि—विरामयुक्त, जो लगातार न हो ।

সবিশেষ क्रि वि—अच्छी तरह, उत्तम रूपसे, ब्योरेवार ।

সবিস্তার वि—विस्तार सहित ।

সবুজ वि—হরিৎ हरा, सब्ज ।

সবুর सं—सब्र, धैर्य ।

সবে—সব देखो ।

সব্য (-अ) वि—बायाँ, बायाँ और दाहिना दोनों । —সাচী वि, सं—दोनों हाथोंसे बाण चला सकनेवाला, अर्जुन, जो दोनों हाथोंसे समान काम कर सकता है ।

সভর্তৃকা स्त्री—सधवा ।

সমকক্ষ (-अ) वि—समान प्रतियोगी, प्रतिद्वन्द्वी ।

সমগ্র (-अ) वि—कुल, सारा, सब ।

সমঝান (-नो), সমঝানো (क्रि, परि १६)—समझना; समझाना ।

সমঞ্জস वि—उचित, योग्य, ठीक ।

সমতল वि—जिसकी सतह बराबर है ।

সমতীত (-अ) वि—गत, बीता हुआ ।

সমধিক वि—बहुत अधिक ।

সমন सं—अदालतमें हाजिर होनेका हुक्मनामा ।

সমনাম सं—पर्यायवाची शब्द synonym.

সমন্বয় स—मेल, अविरोध, मिलन ।

সমন্বিত (-अ) वि—युक्त, मिलित ।

সমপৃষ্ঠ (-अ)=সমতল ।

সমবয়সী, সমবয়স্ক (-अ) वि—एक उमरका ।

সমবায় सं—समूह, मिलन, साझेकी कंपनी, मिलित उद्योग । সমবায়ী वि—नित्य सम्बद्ध, उपादानभूत । —কারণ सं—उपादान कारण ।

সমবেত वि—सम्मिलित, नित्य सम्बन्धसे युक्त ।

সমবেদনা सं—सहानुभूति, हमदर्दी ।

সমব্যথিত वि—हमदर्द, सहानुभूति-सम्पन्न ।

সমভাব सं—एक-सी हालत ।

সমভিব্যাহার स—साथ, एकसाथ गमन ।

সময় सं—समय, वक्त (এমন—, একটার—); अवसर, फुरसत, मौका; अंतिम समय । সময়ান্তর सं—दूसरा समय । সময়ান্তরে क्रि वि—दूसरे समय । সময়ে সময়ে क्रि वि—समय समय पर, कभी कभी । সময়োপযোগী वि—समयके उपयोगी । যথাসময়ে क्रि वि—ठीक समय पर ।

সমর্থক वि—समथन करनेवाला ।

সমর্থন सं—किसी प्रस्तावके पक्षमें सम्मति प्रदान । সমর্থিত (-अ) वि—समर्थन-प्राप्त ।

সমর্পণ स—सौंपना, त्याग देना, दान देना

(কন্যা—, আত্ম—)। সমর্পিত (-अ) वि—सौंपा हुआ। [या व्यक्तियोंका समूह।

সমষ্টি स— मोट कुल, एक श्रेणीके सब पदार्थों

সমসাময়িক वि—एक समयका। [बद्ध।

সমস্ত (-अ) वि—समुदाय सब, कुल; समास-

সমস্যা स—पहेली, जटिल विषय, उलझन (কঠিন সমস্যায় পড়েছি)।

সমাকীর্ণ (-अ) वि—पूर्ण, घना, संकुल।

সমাগত (-अ) वि—आया हुआ। সমাগম स—मिलन, आगमन।

সমাচ্ছন্ন (-अ) वि—आच्छन्न छाया हुआ।

সমাজ स—समाज, समुदाय, सभा, गरोह, वैष्णवोंकी समाधि। —চ্যুত (-अ) वि—समाजसे निकाला हुआ। —সংস্কার स—समाज-सुधार। —পতি स—समाजका प्रधान व्यक्ति।

সমাদর स—विशेष आदर, सम्मान। সমাদৃত (-अ) वि—विशेष आदर प्राप्त।

সমাধা, সমাধান स—निष्पत्ति फैसला मीमांसा।

সমান वि—तुल्य, बराबर, सदृश (—ধর্মা)। सं—नाभि या उदरकी वायु। সমানাধিকরণ वि, स—जिनका आश्रयस्थान एक है।

সমানুপাত स—बराबरका सम्बन्ध या औसत।

সমান্তর स—बराबरका अंतर या फासला। সমান্তরাল, সমান্তর वि—समानांतर, बराबर दूरीवाला (—রেখা)।

সমাপক वि—पूरा करनेवाला। সমাপিকা वि—जिससे वाक्यका अर्थ पूरा होता है (—ক্রিয়া)।

সমাপন स—पूरा करना, समाप्त करना। সমাপিত (-अ) वि—समाप्त या पूरा किया हुआ।

সমাপন্ন (-अ) वि—प्राप्त, विपत्तिमें फँसा हुआ, समाप्त। [खातमा, अंत।

সমাপ্ত (-अ) वि—पूरा, खतम। সমাপ্তি स—

সমাবর্তন स—ब्रह्मचर्य-काल समाप्त होनेपर गृहस्थाश्रममें लौट आना; विश्वविद्यालयके उत्तीर्ण छात्रोंको उपाधि वितरणका उत्सव convocation [तल्लीन।

সমাবিষ্ট (-अ) वि—प्रविष्ट, समाया हुआ;

সমাবৃত (-अ) वि—अच्छी तरह ढका हुआ, घेरा हुआ।

সমাবেশ सं—एकमें मिलाना, एकमें स्थित या अंतर्गत होना, प्रवेश। সমাবেশিত (-अ) वि—स्थापित प्रविष्ट कराया हुआ। [रोह।

সমারম্ভ (-अ) सं—आरंभ, अनुष्ठान, समा-

সমারোহ (-अ) सं—धूमधाम।

সমার্থ (-अ), সমার্থক वि—एकही अर्थवाला।

সমালোচনা, (-চন) सं—दोष-गुणकी आलोचना। সমালোচক वि—समालोचना करनेवाला। সমালোচিত (-अ) वि जिसकी समालोचना की गयी है। সমালোচ্য (-अ) वि—समालोचनाके योग्य।

সমাস सं—अनेक पदोंका एकमें मिलन।

সমাসক্ত (-अ) वि—अधिक आसक्त, लवलीन। সমাসক্তি स—अधिक आसक्ति।

সমাসীন वि—आसीन बैठा हुआ।

সমাহার, সমাহরণ, সমাহৃতি स—संग्रह, संक्षेप, समूह। সমাহৃত (-अ) वि-संग्रह किया हुआ। [स्थापित, एकाग्र, मीमांसित।

সমাহিত (-अ) वि समाधि प्राप्त, गाड़ा हुआ,

সমিতি सं—परिषद् सभा।

সমিদ্ধ (-अ) वि जलता हुआ, उत्तेजित।

সমিধ, সমিৎ स—हवनकी लकड़ी, ईंधन, अग्नि।

সমীকরণ सं—समान या बराबर करना, एक संख्याके साथ दूसरी संख्या या संख्याओंको समानताका निर्देश।

সমীক্ষণ, সমীক্ষা स—अच्छी तरह दर्शन,

समालोचना; खोज। समीক্ষাকারী वि—फलाफल या पूर्वापर विचार कर काम करनेवाला।

সমীচীন वि—সংগত उचित, योग्य, यथार्थ।

সমীর, সমীরণ सं—वायु, हवा।

সমীহ (-अ) सं—सम्मान प्रदर्शन, पूज्य व्यक्तिके सामने संकोच।

সমীহা सं—इच्छा, चेष्टा।

সমুখ सं—সম্মুখ सम्मुख, सामना।

সমুচিত वि—ন্যায্য उचित, योग्य।

সমুচ্চয় सं—समूह संग्रह।

সমুচ্ছেদ सं—नाश, ध्वंस, बरबादी।

সমুত্থান सं—उदय, उत्पत्ति, जगना। সমুত্থিত (-अ) वि—उठा हुआ, जागा हुआ।

সমুৎসুক वि—बहुत उत्सुक।

সমুদয় सं—उदय, उत्थान। সমুদিত (-अ) वि—उदित, उठा हुआ।

সমুদয়, সমুদায় वि—समस्त, कुल, सब, सारा।

সমুদ্ভব सं—उत्पत्ति, आविर्भाव।

সমুদ্যত (-अ) वि—उद्यत, तैयार, उतारू।

সমুন্নত (-अ) वि—बहुत उन्नत।

সমুন্নতি सं—अधिक उन्नति।

সমূল, সমূলক वि—मूल सहित, कारण सहित।

সমৃদ্ধ (-अ) वि—बढ़ा हुआ, सम्पन्न, दौलतमद। সমৃদ্ধি सं—ऐश्वर्य, दौलत।

সমেত वि—সহিত साथ।

সম্পত্তি, সম্পদ सं—सपदा, ऐश्वर्य, दौलत।

সম্পন্ন (-अ) वि—पूरा किया हुआ, सिद्ध, दौलतमद; युक्त (শক্তি—)।

সম্পর্ক (-अ) स—संसर्ग, सम्बन्ध, नाता। সম্পর্কিত (-अ), সম্পর্কীয় (-अ) वि—सम्बन्धयुक्त, नातेका, रिश्तावाला। সম্পর্কী वि, सं—नातेदार।

সম্পাত सं—पतन, गिरना।

সম্পাদন, (-না) सं—निर्वाह, समापन, पूरा करना, संपादकका काम। সম্পাদিত (-अ) वि—पूरा किया हुआ, संपादकके द्वारा शोधा हुआ। সম্পাদ্য (-अ) वि—संपादित या पूरा करने योग्य।

সম্পুট सं—কৌটা, ঠোঙা डिब्बा।

সম্পৃক্ত (-अ) वि—संयुक्त, मिलित। [अभी।

সম্প্রতি ক্রি वि—ইদানীং, অধুনা इस समय,

সম্প্রদান सं—समर्पण, दान (কন্যা—); सप्रदान कारक। সম্প্রদাতা वि—दान करने वाला।

সম্প্রসারণ सं—अधिक विस्तार।

সম্প্রীতি सं—प्रेम, प्रणय; संतोष।

সম্বদ্ধ (-अ) वि—बंधा हुआ, जुड़ा हुआ।

সম্বন্ধ (-अ) सं—सम्पर्क, सम्बन्ध, संयोग, नाता, विवाहका प्रस्ताव (মেয়ের দুইটি—আসিয়াছে); सम्बन्ध कारक। সম্বন্ধী वि, स—सम्बन्ध-युक्त, रिश्तेदार; साला।

সম্বন্ধীয় (-अ) वि—सम्बन्धी, विषयक।

সম্বর सं—শম্বর साँवर मृग; पंजाबकी एक झील।

সম্বরণ=সংবরণ।

সম্বরা सं—ফোড়ন छौंक।

সম্বল सं—अवलबन, सफर-खर्च, धन।

সম্বলিত (-अ) वि—সংবলিত युक्त, सहित।

সম্বুদ্ধ (-अ) वि—ज्ञान-प्राप्त, चेतन।

সম্ভব सं—उत्पत्ति, जन्म, संभावना, हो सकनेके योग्य होना। —পর वि—होने योग्य।

সম্ভাবনা, (-বন) सं—होगा ऐसा अनुमान, संभावना। সম্ভাবনীয় (-अ), -সম্ভাব্য (-अ) वि—जो होगा ऐसा अनुमान होता है, होनहार। সম্ভাবিত (-अ) वि—जिसकी आशा की जाती है, संभव।

সম্ভার सं—রাশি ढेर, संग्रह।

सम्भाषण, सम्भाष सं—आलाप, कथावार्ता बातचीत; संबोधन, अभिभाषण। सम्भाषित (-अ) वि—जिससे बातचीत की गयी है।

सम्भूत (-अ) वि—जात उत्पन्न।

सम्भूय (-अ) वि—मिलित, मिलकर। —सम्भूयोत्थान सं—मिलित प्रचेष्टा। [उपभोग।

सम्भोग सं—सुखपूर्वक व्यवहार, संसर्ग,

सम्भ्रम सं—सम्मान, आदर गौरव। सम्भ्रान्त (-अ) वि—शरीफ, गौरव-युक्त। सम्भ्रमे क्रि वि—सम्मान प्रदर्शनके लिए उतावला होकर, आदरके साथ।

सम्मत (-अ) वि—सम्मत, अनुमोदित, राजी, सहमत। सम्मति सं—अभिमत, आज्ञा, इजाजत। —क्रमे क्रि वि—आज्ञासे।

सम्मान सं—समादर मान, प्रतिष्ठा, इज्जत। सम्माननां सं—सम्मान-प्रदर्शन, स्वागत। सम्मानित (-अ) वि—प्रतिष्ठित इज्जतदार।

सम्मार्जन सं—अच्छी तरह साफ करना सम्मार्जनी सं—र्झाटा झाड़ू।

सम्मित (-अ) वि—सदृश, अनुसार।

सम्मिलन सं—मिलाप, मेल, संयोग, भेंट, मुलाकात। सम्मिलित (-अ) वि—मिलित मिला हुआ। सम्मिलनी सं—सभा।

सम्मुख सं—सामना। वि-सामनेका आमनेसामनेका। सम्मुखे क्रि वि-सामने समक्ष। सम्मुखीन वि—सामने अग्रसर।

सम्मेलन सं—जमावड़ा, सभा एकमें मिलाना।

सम्मोह (-अ) सं—अधिक मोह। सम्मोहन सं—मुग्ध करना। वि—मोहित-करनेवाला। सम्मोहित (-अ) वि—अत्यंत मोहित।

सम्यक् क्रि वि—अच्छी तरह, उत्तम रूपसे।

सम्राज्ञी स्त्री—अनेक राज्योंकी अधीश्वरी, सम्राट की पत्नी। [सहकारे यत्नके साथ।

सयत्न (-अ) वि—चेष्टित। सयत्ने क्रि वि—यत्न

सर=शर।

सरः सं—सरोवर ताल, तालाब।

सरकार सं—प्रभु, मालिक, राज्य-संस्था, सरकार, गुमाश्ता, कारिंदा (विल—, बाजार—)। सरकारि सं—गुमाश्तेका काम।

सरकारी वि—राजकीय राज्यका, जनताका।

सरगरम वि—जोशीला, आवेशपूर्ण, सरगर्म, भरापूरा (आसर—)। [(सरजमिने तदारक)।

सरजमिन, (सरे-) सं—किसी घटनाका स्थान

सरञ्जाम सं—असबाब, सरअंजाम, सामग्री।

सरणी, शरणी, (-णि) सं—पथ, मार्ग, रीति, तरीका।

सरपोश सं—गिलास आदिका ढक्कन।

सरदराजि सं—मोड़लि व्यर्थका कर्तृत्व दिखाना, डींग।

सरबत सं—शरबत शरबत। [लाकर देना।

सरबराह (-अ) सं—योगान जुटा देना, जुहाना,

सरम सं—शरम शर्म, लज्जा।

सरल वि—सीधा, निष्कपट, भोलाभाला; सहज।

सरषे (शर्षे) सं—सरसों।

सरस वि—रसदार, रसीला।

सरसिज सं—पद्म कमल।

सरसी सं—सरोवर ताल, तालाब।

सरहद्द (-अ) सं—सीमाना सरहद।

सरा सं—शरा मिट्टीका कसोरा।

सरा (क्रि परि १)—सरकना, हिलना, निकलना, इस्तेमाल करना।

सराइ सं—पान्थशाला सराय।

सरान (-नो), सराना (क्रि परि १०)—हटाना, सरकाना, चुराना, गबन करना।

सरासरि वि—सरसरी, संक्षिप्त, जल्दीमें किया हुआ (—विचार)।

सरिक=शरिक।

सरिषा, सरषे सं—सरसों।

সরীসৃপ सं—रेंगनेवाला कीड़ा, छातीके बल चलनेवाला प्राणी।

সরু वि—महीन, बारीक, सूक्ष्म, पतला, क्षीण। —চাকলি सं—चावल उरद आदि पीस कर बनाई हुई रोटी।

সরূপ वि—समान, सदृश।

সরেঙ্গিন=সরঙ্গিন।

সরেস वि—उत्तम, अच्छा।

সরোজ सं—পদ্ম कमल।

সরোদ सं—सरोद, एक प्रकारका बीन।

সরোবর सं—পুষ্করিণী तालाब।

সরোরুহ (-अ) सं—পদ্ম कमल।

সরোষ वि—क्रोधित। সরোষে क्रि वि—क्रोधसे।

সর্গ (-अ) सं—सृष्टि, उत्पत्ति, प्रकृति; ग्रंथका अध्याय; त्याग।

সর্ত (-अ) सं—শর্ত शर्त। [सरदारका काम।

সর্দার सं—सरदार, नायक। সর্দারি वि—

সর্দি सं—কফরোগ जुकाम, सरदी, ठंढक, गीलापन। সর্দি-গরমি सं—तेज गर्मीके सहने के कारण मूर्च्छाका भाव, लू-लगना।

সর্প (-अ) सं—साँप, भुजंग। स्त्री—সর্পী, সর্পিণী। সর্পাঘাত सं—साँपका डसना।

সর্পিঃ सं—ঘৃত घी।

সর্পিল वि—टेढ़ा-मेढ़ा, पेंचदार।

সর্পী वि—गतिशील, चलनेवाला।

সর্ব (-अ) सर्व, वि—सब, कुल, समस्त। সর্বংসহ (-अ) वि—सब कुछ सहनेवाला। সর্বংসহা सं—पृथ्वी। —গ (-अ) वि—सर्वत्र जानेवाला। —জনীন वि—जनताके हितके लिए कृत (—দুর্গোৎসব)। —নাশ सं—सत्यानाश। —নাশী, (-নেশে) वि—सत्यानाश करनेवाला। स्त्री,—नाशिनी,—नाशी। —वादी वि—सब प्रकारके मतवाले (—বাদিসম্মত)। —ময় वि—सर्वात्मक, सबमें व्याप्त। सं—ईश्वर। —শঃ क्रि वि—सब विषयमें, सब प्रकारसे। —সম্মত (-अ) वि—सभीको सम्मति प्राप्त। —স্ব (-अ) सं—सब धन, सब कुछ। —স্বান্ত (-अ) सं—सब धन और सम्पत्तिका नाश। वि—जिसका सब कुछ नष्ट हो गया है।

সর্বরী सं—শর্বরী रात्रि, रात।

সর্বাঙ্গ (-अ) सं—सब अंग। সর্বাঙ্গীণ वि—सब अंगोंका (—কুশল)।

সর্বাণী स्त्री—দুর্গা दुर्गा। [कर्ता।

সর্বেসর্বা वि, सं—हरता-धरता, एकमात्र

সর্বোপরি क्रि वि—सबके ऊपर।

সর্ষপ सं—सरसों।

সলজ্জ (-अ) वि—लज्जित, शर्मिंदा, शरमीला।

সলা सं—सलाह।

সলাজ=সলজ্জ।

সলিতা, সলতে सं—बत्ती, पलीता।

সলিল सं—जल, पानी।

সশঙ্ক (-अ) वि—डरा हुआ, भयभीत।

সশব্দ (-अ) वि—शब्द-युक्त। সশব্দে क्रि वि—आवाजके साथ, शब्द करते हुए। [कर।

সশরীরে क्रि वि—शरीरके साथ, मूर्ति धारण

সশস্ত্র (-अ) वि—हथियारबंद।

সসজ্জ (-अ) वि—सज्जित;

সসত্ত্বা वि—गर्भवती, गाभिन।

সসম্ভ্রমে क्रि वि—सम्मान और उतावलीके साथ।

সসম্মানে क्रि वि—मान या आदरके साथ।

সসাগরা वि—समुद्रके साथ (—ধরা)।

সসেমিরা सं—संकटकी स्थिति, डाँवाडोल हालत।

সসৈন্য (-अ) वि—सेना सहित।

সস্তা (शस्ता) वि—সুলভ सस्ता।

সস্ত্রীক (शस्त्रीक) वि—पत्नीके साथ।

সস্নেহ (शस्नेह -अ) वि—स्नेह-युक्त।

সস্পৃহ (-অ) वि—लालसा-युक्त ।

সস্মিত (শস্মিত-অ) वि—मुस्कुराता हुआ, प्रफुल्ल ।

সহ (-অ) क्रि वि—सहित ।

-সহ वि—सहनेवाला (ভার—, দুঃসহ) ।

সহকর্মী वि, सं—एकसाथ काम करनेवाला, सहकारी ।

সহকার सं—आमका पेड़; सहयोग ।

সহগমন सं—साथ गमन, पतिके शवके साथ पत्नीका सती होना ।

সহজ वि—सहज, सहल, आसान, सरल । সহজে क्रि वि—आसानीसे, सहजमें, सरलतासे, मामूली कारणसे (সহজে ঘটে না) ।

সহজাত वि—जन्मके साथ उत्पन्न (কর্ণের—কুণ্ডল); एकसाथ उत्पन्न । —সংস্কার सं—जन्मके साथ उत्पन्न ज्ञान और चेष्टायें ।

সহজিয়া वि—प्राकृतिक । सं—वैष्णवोंकी साधनाकी एक रीति । [पत्नी ।

সহধর্মী वि—एक धर्मवाला । সহধর্মিণী स्त्री—

সহন सं—सहन, बरदाश्त । সহনীয় (-অ) वि—सहन करने योग्य ।

সহপাঠী वि, सं—एकसाथ पढ़नेवाला ।

সহবত सं—सोहबतसे प्राप्त शिक्षा, संसर्ग, सदाचार ।

সহবাস सं—एकसाथ रहना, संभोग ।

সহমরণ सं—पत्नीका मृत पतिके साथ सती होना । [करनेवाला ।

সহযাত্রী वि, सं—एकसाथ चलने या यात्रा

সহর=শহর ।

সহর্ষ वि—हर्षयुक्त, आनंदित ।

সহসা क्रि वि—হঠাৎ अचानक, एकाएक ।

সহস্রার सं—योग शास्त्रोक्त षट्चक्रोंमें सिरके अंदरका नीचेकी ओर मुंह किया हुआ सहस्र-दल कमल ।

সহা, সওয়া (क्रि परि २)—सहन करना, सहने योग्य होना (গা—) । वि—सहन करने योग्य ।

সহাধ্যায়ী सं—एकसाथ पढ़नेवाला ।

সহান (-নো), সহানো, সওয়ানো (क्रि परि १२) —सहन कराना ।

সহানুভূতি सं—সমবেদনা हमदर्दी ।

সহায় सं—सहकारी, मददगार, सहायक ।

সহাস্য (-অ) वि—हँसता हुआ (—বদন) ।

সহি सं—সই, স্বাক্ষর दस्तखत ।

-সহি -সই वि—समान, अनुरूप, तक, योग्य । মাপ—वि—नापके अनुरूप । বুক— वि—छातीतक ऊँचा । মানান—, वि—ठीक ।

সহিষ্ণু वि—सहनशील, क्षमावान ।

সহিস सं—সইস साईस ।

সহৃদয় वि—হৃদয়বান, उदार दिलदार ।

সহোদর सं—सगा भाई । সহোদরা स्त्री—सगी बहन । [सहन, बरदाश्त (—করা) ।

সহ্য (শহ্ঝ-অ) वि—सहने योग्य । सं—

সহ্যাদ্রি (শহ্ঝাদ্রি) सं—পশ্চিম ঘাট भारतके पश्चिम समुद्रतटकी पर्वतमाला ।

সাঁ, সাঁই সাঁই, সোঁ सं—वेग-सूचक शब्द, सन (সাঁ या সোঁ করে গুলিটা চলে গেল । সাঁই সাঁই या সোঁ সোঁ করে হাওয়া বইছে । গলা সাঁই সাঁই করে) ।

সাইকেল=बाइसिकेल ।

সাঁইত্রিশ वि, सं—सैंतीस, ३७ ।

সাঁওতাল सं—बिहारके दक्षिणपूर्वी प्रांतमें रहनेवाली एक आदिम जाति । সাঁওতালী वि—साँवताल जाति सम्बन्धी ।

সাংকর্য (-অ), সাঙ্কর্য (-অ) सं—दोगलापन ।

সাংকেতিক, সাঙ্কেতিক वि—इशारेका, संकेत सम्बन्धी ।

সাংখ্য (-অ) सं—कपिल-प्रणीत दर्शन-शास्त्र ।

সাংগ্রামিক वि—संग्राम सम्बन्धी।

সাংঘাতিক, (সাঙ্ঘা-) वि—মারাত্মক प्राणघातक, भयानक। [बाद करने योग्य।

সাংবাৎসরিক, সাংবৎসর वि—सालाना, एक वर्षके

সাংবাদিক वि—समाचार सम्बन्धी। सं—समाचार-पत्र-सेवी।

সাংসারিক वि—पारिवारिक परिवार सम्बन्धी (—অবস্থা), लौकिक; दुनियादार।

সাকল্য (-अ) स—समुदाय, समष्टि।

সাকাঙ্ক্ষ (शाकांक्ख-अ) वि—लालसायुक्त, लोभी।

সাকিন सं—निवास-स्थान, पता।

সাকী सं—शराब परोसनेवाला।

সাঁকো सं—পুল पुल सेतु।

সাক্ষর वि—अक्षरयुक्त, शिक्षित।

সাক্ষাৎ (शाक्खात्) वि—प्रत्यक्ष। क्रि वि—सामने, सम्मुखमें, समक्ष। सं—भेंट, मुलाकात। —কার सं—प्रत्यक्ष करना, मुलाकात करना। —সম্বন্ধ (-अ) सं—प्रत्यक्ष या निकटका सम्बन्ध।

সাক্ষি सं—गवाही।

সাক্ষী सं—गवाह। সাক্ষ্য (-अ) सं—गवाही, इजहार। সাক্ষী ভাঙান क्रि—गवाहको फोड़ लेना।

সাগু, সাবু सं—साबूदाना।

সাগ্নিক वि, सं—अग्निहोत्री।

সাঙ্কর্য্য, সাঙ্কেতিক=সাংকর্য্য, সাংকেতিক।

সাঙ্গ (-अ) वि—अंगसहित, पूर्णांग; समाप्त, पूरा। সাঙ্গোপাঙ্গ (-अ) वि—अंगों और उपांगों सहित, दलबल सहित।

সাঙ্গা, সাঙা सं—निम्न श्रेणीमें विधवाका विवाह, सगाई। [दोस्त।

সাঙ্গাত, সেঙ্গাত, সেঙাত स—संगी, साथी,

সাঙ্ঘাতিক=সাংঘাতিক।

সাচ্চা, সাঁচ্চা वि—सत्य, खरा, शुद्ध, सच्चा।

সাজ सं—সজ্জা, বেশ सजावटका सामान, पोशाक, जेवर (ডাকের—); उपकरण, सामान। —ঘর सं—नाटकके अभिनेताओं के सजनेका घर। সাজন্ত (-अ) वि—सज्जित, सुहावना।

সাজা सं—শাস্তি सजा।

সাজা (क्रि परि २)—सजना, सजधज करना, स्वांग करना, खाने या पीने योग्य बनाना (পান—, তামাক—)। वि—सज्जित।

সাঁজা=দখল। [भाव।

সাজাত্য (-अ) सं—समान जाति होनेका

সাজান (-नो), সাজানো (क्रि परि १०)—सजाना।

সাজি सं—ফুলের ডালা फूल ले जानेकी टोकरी।

সাজি, সাজিমাটি सं—सज्जी।

সাজো, সাজা वि—সদ্য, টাটকা ताजा (—দই)।

সাঁজোয়া सं—वर्म बकतर। —গাড়ি सं—बकतरबंद गाड़ी।

সাঁঝ, সাঁজ सं—संध्या, शाम। সাঁজাল सं—मच्छड़ भगानेके लिए पुवाल आदिका धुआँ।

সাট स—সড় साजिश।

সাট, সাঁট सं—इशारा, संकेत, संक्षेप।

সাটা (क्रि परि २)—সাঁটা सटाना, चिपकाना।

সাটিন सं—साटन, चिकना रेशमी कपड़ा।

সাড় सं—ज्ञान, चैतन्य, स्पर्श-ज्ञान।

সাড়ম্বর वि—आडंबरके साथ।

সাড়া सं—बुलाहट पर उत्तर या आवाज (—দেওয়া, —শব্দ); प्रतिक्रिया, शब्द, खलबली, शोरगुल (পাড়ায়—পড়া)।

সাঁড়াশি स—सँडसी।

সাড়ে वि—साढ़े आधेके साथ।

সাত वि, सं—सात, ७। —চল্লিশ वि, सं—सँतालीस, ४७। —নর,—নরী सं—सात

লড়্‌বালা হার। —পাঁচ स—नाना प्रकार, उधेड़बुन। —ষট্টি वि, सं—सरसठ, ६७।

সাতত্য स—अविच्छेद।

সাঁতলান (-नो), সাঁতলানো (क्रि परि १६)—तरकारी आदिको तेल या घी में थोड़ा भूनना, छौंकना।

সাতা सं—ताशका सत्ता।

সাঁতার सं—तैराई (—দেওয়া, —কাটা)।

সাঁতরান (-नो), সাঁতরানো (क्रि परि १६)—तैरना, पैरना।

সাতাত্তর वि, स—सतहत्तर, ७७।

সাতানব্বই वि, सं—सन्तानबे, ९७।

সাতান্ন (-अ) वि, सं—सन्तावन, ५७।

সাতাশ वि, सं—सत्ताइस, २७। সাতাশে सं—सत्ताइसवीं तारीख।

সাতাশি, (-শী) वि सं—सतासी, ८७।

সাতিশয় वि—अत्यंत, अधिक।

সাত্ত্বিক वि—सत्त्वगुणसे उत्पन्न, सतोगुणी, साधु।

সাথ सं—संग, साथ। সাথী सं—मित्र, दोस्त, साथ रहने या चलनेवाला। সাথে क्रि वि—संग, साथ, सहित।

সাদর वि—आदरके साथ।

সাদা वि—सफेद, शुक्ल, सादा; भोलाभाला। —সিধা, —সিদে वि—अनाड़म्बर जिसमें आडंबर न हो, भोलाभाला।

সাদি सं—শাদি शादी, विवाह।

সাদী सं—सवार।

সাধ सं—इच्छा, कामना, शौक; गर्भवती स्त्रीको किसी खास वस्तु खानेकी रुचि; उसे वैसो वस्तु खिलानेका उत्सव (—দেওয়া, —ভক্ষণ)। —মেটা क्रि—इच्छा पूरी होना, मजा चखना। সাধে क्रि वि—स्वेच्छासे।

সাধর্ম্য (-अ) सं—गुण योग्यता आदिकी समता, तुल्यता।

সাধা (क्रि परि ३)—साधना, सिद्धिके लिए अभ्यास करना; अनुरोध या विनती करना (নইবার চক্ষু—); विना कहे कुछ करना (সাধিলা বা সেধে খেতে আসা); करना (বাদ —, शत्रुता करना)। वि—अभ्यास द्वारा परिमार्जित (—গলা)। —সাধি सं—बारबार अनुरोध या विनती।

সাধারণ वि—मामूली, आम जनताका, सब, सब श्रेणियोंका (সাধারণের—সভা)। सं—जनता। —তন্ত্র (-अ) सं—गणतंत्र, प्रजातंत्र।

সাধিকা स्त्री—साधन करनेवाली।

সাধিষ্ঠান सं—(योगशास्त्रमें) शरीरके भीतरका दूसरा चक्र या पद्म।

সাধু वि—उत्तम, शिष्ट, मार्जित, धार्मिक। सं—साधु, संत, सज्जन, संन्यासी; सौदागर। —ভাষা सं—साहित्यकी भाषा।

সাধ্য (-अ) वि—सिद्ध करने योग्य, आसान, आराम होने या करने योग्य (—রোগ)। सं—सामर्थ्य, शक्ति (সাধ্যে কুলায় না)। —মত (-अ) क्रि वि—सामर्थ्यके अनुसार, यथाशक्ति। —সাধনা सं—अनुनय विनती, अनुरोध। সাধ্যাতীত (-अ) वि—शक्तिसे बाहरका।

সাধ্বী स्त्री—सती, पतिव्रता।

সানকি सं—चीनी मिट्टी आदिकी थाली।

সানা, ছানা (क्रि परि ३)—सानना।

সানাই सं—शहनाई।

সানু सं—पहाड़के ऊपरवाली चौरस भूमि, चोटी।

সানুনয় वि—अनुराध या विनतीके साथ।

সান্ত (-अ) वि—अंतयुक्त, सीमाबद्ध।

সান্তারা सं—কমলালেবু सतरा ।

সান্ত্রী सं—सतरी, पहरेदार ।

সান্ত্বনা, সান্ত্বন सं—ढाढ़स ।

সান্ধ্য वि—संध्या सम्बन्धी, शामका ।

সান্নিধ্য (-अ) सं—समीपता ।

সান্নিপাতিক वि—सन्निपातसे उत्पन्न ।

সাপ सं—साँप, भुजंग । সাপও মরে লাঠিও না ভাঙ্গে—साँपभी मरे लाठी भी न टूटे ।

সাপট सं—लपेट ; डींग ।

সাপটা वि—जिसमें ऊँच नीचका भेद न हो, जो मिले उसे पूरा (— খাওয়া) । [झापटान ।

সাপটান (-नो), সাপটানো (क्रि परि १६)—

সাপুড়িয়া, সাপুড়ে सं—मदारी ।

সাপেক্ষ (-अ) वि—अपेक्षायुक्त, जिससें दूसरे विषयकी अपेक्षा है ।

সাফ वि—साफ, स्वच्छ, स्पष्ट । সাফা वि—পরিষ্কার साफ । সাফাই सं—सफाई । [युक्त ।

সাবকাশ सं—अवकाश ; फुरसत । वि—अवकाश-

সাবলীল वि—পরিস্ফুট स्पष्ट, रूपवाला ।

সাবাড় वि—समाप्त, खतम । [लगाना ।

সাবান सं—साबुन । —মাখা वि—साबुन

সাবালক वि—প্রাপ্তবয়স্ক बालिग ।

সাবাস=শাবাশ ।

সাবুদ सं—सबूत, प्रमाण ।

সাবেক वि—पुराना, प्राचीन ।

সাব্যস্ত (-अ) वि—निर्द्धारित, तय ।

সামনাসামনি क्रि वि— মুখোমুখি आमने-सामने ।

সামনে क्रि वि—সম্মুখে सामने, आगे ।

সামলান (-नो), সামলানো (क्रि परि १६)—सँभालना, संयत करना, रोकना, रखना ; सँभलना, बचना ।

সামাজিক वि—समाज-सम्बन्धी, मिलनसार । सं—उत्सवादिमें भेंट । সামাজিকতা सं—सामाजिक व्यवहार ।

সামান্য (-अ) वि—साधारण, मामूली, तुच्छ ।

সামান্যতঃ क्रि वि—सामान्यतया, साधारणरूपसे । [सावधान करनेका शब्द ।

সামাল अ—सँभल जाओ ! सं—

সামিয়ানা =শামিয়ানা ।

সামিল =শামিল ।

সামীপ্য (-अ) सं—समीपता ।

সাম্পান सं—चीन देशकी नाव । [हामी ।

সায় सं—शेष, समाप्ति, खातमा , सम्मति,

সায়ক सं—वाण, तीर , तलवार ।

সায়ন্তন वि—संध्या समयका ।

সায়র स—सागर , तालाब ।

সায়া सं—लहंगा ।

সায়াহ্ন (-अ) सं—सध्याका समय ।

সাযুজ্য (-अ) सं—अभिन्नता, संयोग, ईश्वरके साथ मिलन या संयोग ।

সার सं—सार, असली भाग, तत्त्व, सारांश, संक्षेप, खाद, पास ; कतार, पंक्ति । वि—श्रेष्ठ, संक्षिप्त । —গর্ভ (-अ) वि—सार-गर्भित । —গ্রাহী वि—सार ग्रहण करनेवाला । —বান् वि—सारवाला, उत्तम । —বত্তা सं—सारयुक्तता । —ভূত (-अ) वि—साररूप, श्रेष्ठ । —লোহ (अ) सं—इस्पात फौलाद ।

সারক वि—रेचक, दस्तावर ।

সারঙ্গ—, (শা-) स—सारंगी ; जहाज चलानेवाला , मृग ; भ्रमर, मोर ; हाथी ।

সারঙ্গী सं—सारंगिया ।

সারণ स —অপসারণ हटाना, सरकाना ।

সারবন্দী, (সারি-) वि—कतारमें लगाया हुआ, श्रेणीबद्ध ।

সারমেয় (-अ) सं—কুকুর कुत्ता ।

সারল্য (-अ) सं—सरलता, भोलापन ।

সারস सं—सारस, हंस ।

সারা (क्रि परि २)—মেরামত করা मरम्मत

करना, सुधारना, नीरोग या स्वस्थ होना खतम करना, विपत्ति या दुर्गतिमें डालना (মনে তাকে সেরেছে; এইবার দফা সেরেছে)।

সারা वि—समस्त, पूरा, व्याकुल, बेचैन हैरान, विपन्न।

সারান (নো), সারানো (क्रि परि १०)—मरम्मत करना, सुधारना, नीरोग करना।

সারাল (-অ), সারালো वि—सारवाला।

সারি, সার स—श्रेणी कतार (—বন্দী, —গাঁথা, —বাঁধা, —দেওয়া)।

সারি सं—मल्लाहोंका एक गाना। [सुग्गी।

সারী, সারিকা सं—শালিক एक चिड़िया,

সারূপ্য (অ) स—समरूपता ईश्वरके समान रूपकी प्राप्ति। [वाला।

সারেঙ, সারেং, সারেঙ্গ स—जहाज चलाने

সার্থ (-অ) वि—सार्थक, अर्थवाला, मानीदार, साथी। —বাহ सं—एकसाथ चलनेवाले सौदागरोंका दल; वणिक। [साढ़े।

সার্দ্ধ, সার্ধ (-অ) वि—সাড়ে आधेके साथ,

সার্ব (-অ) वि—सबका। —কালিক वि सब समयका। —জনীন वि—सब लोगोंमें प्रधान (—নেতা)। —জাতিক वि—सब जातियोंका। —দেশিক वि—सब देशोंमें व्याप्त। —রাষ্ট্রিক वि—अंतर-राष्ट्रीय, सब राष्ट्रोंका।

সার্বত্রিক वि—सर्वत्र व्याप्त।

সার্বভৌম वि—विश्वव्यापी स—सम्राट, चक्रवर्ती; पडितोंकी एक उपाधि।

সার্ষপ वि—सरसोंका।

সাল=শাল।

সাল सं—साल, सन (बंगला सन विक्रमीय संवतसे ६५० साल कम है)। —তামামি सं—सालका अंत; वार्षिक विवरण।

সালংকার, সালঙ্কার वि—अलंकार-युक्त। स्त्री—সালঙ্কারা।

সালতি=শালতি।

সালমমিস্রি स—सालममिश्री। [सालसा

সালসা सं—खून साफ करनेकी एक दवा,

সালিক=শালিক।

সালিয়ানা वि—सालाना, वार्षिक।

সালিস सं—মধ্যস্থ पंच। সালিসি सं—पंचायत। সালিসী वि—पंचायत सम्बन्धी।

সালু सं—सालू, एक लाल कपड़ा।

সালোক্য (-অ) स—अपने इष्टदेवके लोकमें निवास, एक प्रकारकी मुक्ति।

সাশি, সার্শি सं—कांचका किवाड़।

সাশ্রয় सं—खर्चमें कमी।

সাশ্রু वि—आंसूभरा (—নয়নে)।

সাস্না सं—गायके गलेमें लटकता हुआ कंबलसा चमड़ा।

সাহচর্য (-অ) सं—संग, सहायता।

সাহজিক वि—स्वाभाविक।

সাহা सं—साहू, साव, बनियोंकी एक उपाधि।

সাহেব, সাহেব स—साहब। সাহেবি, সাহেবিয়ানা सं—अंग्रेजोंका-सा बर्ताव। সাহেবী वि—साहबका, अंग्रेजोंका-सा।

সিউলি=শিউলী।

সিংহদ্বার सं—महल आदिका प्रधान फाटक।

সিকতা सं—बालूका बालू, रेत।

সিকা, সিকি, সিকে सं—सूका, चवन्नी; छींका, सिकहर। সিকি वि—चौथाई (—অংশ)।

সিক্কা स—बादशाही सिक्का।

সিক্ত (-অ) वि—तर, गीला।

সিগারেট सं—सिगरेट।

সিজ सं—মনসা গাছ एक कंटीली झाड़ी।

সিজা, সেজা (क्रि परि ५)—सीझना।

সিঝান (-নো), সিঝানো, সিঝনো, সেঝানো (क्रि परि ११)—सिझाना।

সিঞ্চন सं—सींचना। সিঞ্চিত (-अ) वि—सींचा हुआ।

সিটকান (-नो), সিটকানো, সিটকনো (क्रि परि १७)—घृणासे नाक-भौं सिकोड़ना।

সিটি सं—शिस सीटी।

সিড়সিড় = সড়সড়।

সিঁড়ি सं—सीढ़ी, जीना, सोपान, बाँस आदिकी सीढ़ी, निसेनी।

সিঁথি, সিঁথা सं—সীমন্ত मांग, स्त्रियोंकी मांगका एक जेवर। —কাটা क्रि—मांग फैलाना।

সিঁদুর सं—सिंदूर।

সিঁধ सं—सेंध। —কাঠি सं—सेंध काटनेका एक औजार। সিঁধাল, সিঁধেল, वि—सेंधिया।

সিধা वि—সোজা सीधा। सं—आटा चावल दाल तरकारी नमक आदिका सूखा परोसा।

সিনেমা सं—চলচ্চিত্র बायस्कोप, सिनेमा।

সিন্দুক सं—बड़ा संदूक।

সিন্দূর सं—সিঁদুর सिंदूर।

সিপাহী, সেপাই सं—सिपाही, संतरी।

সিমেন্ট सं—सीमेंट, विलायती मिट्टी।

সিরকা, সির্কা सं—सिरका।

সিরসির सं—सिहरनेका भाव (গা—করা)।

সিরিশ स—सरेस। —কাগজ सं—बलुआ कागज।

সিল্ক सं—रेशम, रेशमी कपडा।

সিসৃক্ষা सं—सृष्टि करनेकी इच्छा। সিসৃক্ষু वि—सृष्टि करनेके इच्छुक।

সীতাভোগ सं—वर्धमानकी एक मिठाई।

সীন सं—नाटकका परदा या दृश्य। [सूई।

সীবন सं—সেলাই सिलाई। সীবনী सं—छूंच

সীমন্ত (-अ) सं—সিঁথি मांग। সীমন্তক सं—सिंदूर। সীমন্তিনী स्त्री—सौभाग्यवती, सधवा स्त्री, बहू। সীমন্তোন্নয়ন स—गर्भवती स्त्रीका एक संस्कार।

সীমানা सं—जमीनकी हद चौहद्दी।

সীল सं—मुहर, ठप्पा।

সীস, সীসক, সীসা, সীসে सं—सीसा धातु।

সীস सं—पेंसिलके भीतरका सीसा।

সুক্তা, সুক্ত, সুক্তনি सं—करेला आदि मिलाकर पकायी हुई बिना मिर्चकी एक तरकारी जो भोजनके आरंभमें खायी जाती है।

সুখতলা, (সুক-) सं—जूतेके भीतरका सुक-तल्ला।

সুখবর सं—शुभ समाचार।

সুগঠিত वि—सुडौल।

সুগত (-अ) सं—बुद्धदेव।

সুচারু वि—अत्यंत सुंदर।

সুচির (-अ) सं—सुदीर्घ समय।

সুচেতা वि—संतुष्ट, प्रसन्न ; सावधान।

সুজলা वि—अनेक जलवाली।

সুজি सं—सूजी, रवा।

সুঠাম सं—अच्छी डौल।

সুড়ঙ্গ (-अ) सं—सुरंग, सेंध।

সুড়সুড় = সড়সড়।

সুড়সুড়ি सं—कातुकुतु गुदगुदी ; सुरसुराहट।

সুড়ুক, সুড়ুৎ = সড়াক।

সুডৌল, সুডোল सं—সুগঠন अच्छी डौल।

সুতা, সুতো सं—डोरा, सूत, धागा।

সুতার वि—সুস্বাদু स्वादिष्ट।

সুদ स—सूद, व्याज। —খোর वि—सूदपर रुपया लगानेवाला।

সুঁদরি, সুন্দরী स—बंगालकी खाड़ीके पासवाले 'सुंदरवन' नामक जंगलमें उत्पन्न एक कीमती लकड़ी।

সুঁদি सं—কুমুদ कुमुदका फूल।

সুদ্ধ (-অ) क्रि-वि—समेत, सुद्धाँ; तक।

সুধা, সুধান = শুধা, শুধান।

সুন্নৎ सं—सुन्नत, खतना।

সুন্নী सं—मुसलमानोंका एक भेद जो चारों खलीफाओंको प्रधान मानता है।

সুপক্ক (-অ) वि—अच्छी तरह पका या पकाया हुआ (—পক্ব, —পক্ক)।

সুপচ वि—सहजमें पचनेवाला।

সুপরিপ্রেক্ষিত (-অ) वि—उत्तम रूपसे देखा या विचारा हुआ।

সুপারি, সুপুরি सं—गुवाक सुपारी।

সুপারিশ सं—सिफारिश।

সুপুরুষ सं—सुंदर पुरुष।

সুপ্ত (-অ) वि—सोया हुआ, निद्रित। সুপ্তি सं—निद्रा, नींद। সুপ্তোত্থিত (-অ) वि—नींदसे जगा हुआ।

সুপ্রভাত सं—शुभ प्रातःकाल, सुबहका सलाम।

সুফী सं—मुसलमानोंका एक भेद, सूफी।

সুবচনী स्त्री—एक देवी।

সুবর্ণ (-অ) सं—सोना, सुंदर वर्ण। —কার सं—সেকরা सोनार। —বণিক্ सं—সোনার বেনে एक धनी जाति। —সুযোগ सं—अच्छा मौका।

সুবলিত (-অ) वि—ललित अंगभंगि-युक्त।

সুবহ (-অ) वि—आसानीसे ढोने योग्य।

সুবা सं—सूबा, प्रांत। —দার सं—सूबेदार।

সুবাদ सं—दूरका नाता, गाँवका सम्बन्ध।

সুবিধা सं—सुभीता, मौका।

সুবোধ वि—भोला, अच्छी बुद्धिवाला, शांत और आज्ञाकारी।

সুবোধ্য (-অ) वि—सहजमें समझने योग्य।

সুভিক্ষ (-অ) सं—सुकाल, जब अन्न खूब हो या भिक्षा मिले।

সুমধুর वि—बहुत स्वादिष्ट या मीठा।

সুমধ্যমা स्त्री—सुंदर कमर वाली।

সুমার सं—शुमार।

সুমুখ, (-অ) वि—सुंदर मुखवाला। सं—सामना। সুমুখে क्रि वि—सामने।

সুয়া, সুয়ো वि—बहुत प्यारी (—রানী)।

সুযোগ सं—मौका, अच्छा अवसर।

সুরকি, সুর্কি सं—सुरखी, ईंटोंका चूर्ण।

সুরৎ सं—सूरत, चेहरा; उपाय।

সুরতি, সুর্তি सं—जरदा, सुरती, लाटरी।

সুরবাহার सं—सुर-बहार बाजा। [मौका

সুরাহা सं—सुराह, उत्तम मार्ग, अच्छा उपा[य]

সুরু सं—शुरु शुरु, आरंभ।

সুলুক, সুলুদ सं—सूत्र, पता, भेद।

সুরুয়া = শুরুয়া।

সুর্কি, সুর্তি = সুরকি, সুরতি।

সুর্মা सं—सुरमा।

সুলূক = সুলুক। [शाक

সুষনি, সুষুনি सं—जलमें पैदा होनेवाला ए[क]

সুষমা सं—सुंदरता, शोभा, लावण्य।

সুষুপ্ত (-অ) वि—गहरी नींदमें सोया हुआ। সুষুপ্তি सं—स्वप्न-रहित निद्रा, गहरी नींद।

সুসজ্জ (-অ), সুসজ্জিত (-অ) वि—अच्छ[ी] तरह सजाया हुआ।

সুসার सं—बहुतायत, सुभीता।

সুস্থ (-অ) वि—तंदुरुस्त, स्वस्थ।

সুস্বাদ सं—उत्तम स्वाद। সুস্বাদ, সুস্বাদু वि—स्वादिष्ट।

সূক্ত (-অ) सं—वेद-मंत्रोंका समूह।

সূক্ষ্ম (शुक्ख-अ) वि—সরু, মিহি সূক্ষ্ম, महीन बारीक; नुकीला, क्षीण, सकरा, तंग।

সূচ सं—सूँच सूई।

সূচন, সূচনা सं—विदित करना, इशारा। সূচনা सं—प्रस्तावना, भूमिका। সূচনীয় (-অ) वि—जताने योग्य।

সূচী, সূচি, সূচিকা सं—छुंच सूई ; विषयसूची।
সূচিকার্য (-अ) सं—सूईका काम, सिलाई।
সূচিজীবী सं—सिलाईसे जिसकी जीविका चलती है, दर्जी। সূচীভেদ্য (-अ) वि—बहुत घना (—अন্ধকার)। সূচ্যগ্র (-अ) सं—सूईकी नोक। वि—सूईकी नोकके समान, कणामात्र।
সূতিকা स्त्री—जच्चा। सं—प्रसूतको रोग।
সূতিকাগার, সূতিকাগৃহ सं—আঁতুড় घर सौरी।
সূত্র (-अ) सं—সুতা सूत, डोरा, धागा ; क्रम, सूत्र, धारा, संक्षिप्त वाक्य (ন্যায়—), नियम, विधान। —কার सं—सूत्र-रचयिता। —ধর सं—छुतार बढ़ई। —পাত सं—आरंभ, श्रीगणेश।
সূনৃত (-अ) सं—सत्य और प्रिय वाक्य।
সূপ सं—ঝোল रसा, पकायी हुई दाल। —কার सं—रसोइया।
সূর্য सं—सूरज, तपन, दिवाकर।
সৃজন सं—सृष्टि करनेकी क्रिया, निर्माण, उत्पादन। সৃজিত (-अ) वि—निर्मित, बनाया हुआ।
সে सर्व—वह। সেই सर्व—वह, वही।
সেঁউতি सं—नावके भीतरका जल उलीचकर फेंकनेका पात्र।
সেও सं—আপেল सेव।
সেওয়ায় क्रि वि—ব্যতীত सिवाय।
সেক सं—सेंक। —দেওয়া क्रि—सेकना।
সেকরা (सकरा) सं—স্বর্ণকার सोनार।
সেকা, সেঁকা (क्रि परि १)—सेंकना।
সেকাল सं—पुराना जमाना। সেকেলে वि—पुराने जमानेका।
সেকেণ্ড सं—मिनटका ६०वाँ भाग, सेकंड।
সেকো सं—শেঁকো सखिया।
সেখান सं—वह स्थान। —কার वि- वहाँका। সেখানে क्रि वि—वहाँ।
সেগুন सं—सागौनका पेड़।
সেঙ্গাত (सैङात्), সেঙাত=সাঙ্গাত।
সেচ, সেচন सं—सिंचाई, छिड़काव। [फेंकना।
সেচা (क्रि परि १)—सींचना, जल उलीचकर
সেজ (-अ), সেজো वि—तीसरा (—ছেলে, সেজদা)। [एक व्रत।
সেঁজুতি सं—शामका दीपक, लड़कियोंका
সেট सं—एक तरहकी वस्तुओंका समूह।
সেতখানা सं—পায়খানা पखाना।
সেঁতসেঁতে (शैंत्शेंते), স্যাঁতসেঁতে वि—सीला, तर (—ঘর)। [सीला होना।
সেঁতান (-नो), সেঁতানো (क्रि परि १०)—
সেতার सं—सितार बाजा।
সেতু सं—পুল पुल, बाँध।
সেথা, সেথায় क्रि वि—সেখানে वहाँ।
সেথো सं—साथी, सहयात्री।
সেন सं—एक उपाधि।
সেনানী सं—सेनापति।
সেপাই सं—सिपाही।
সেপ্টেম্বর सं—अंग्रेजी सितंबर मास।
সেবন सं—उपभोग (বায়ু—, রৌদ্র—); व्यवहार, भोजन, पान (ঔষধ—, গঞ্জিকা—); सेवा, पूजा। সেবিত (-अ) वि—जिसकी सेवा की गयी है। সেবনীয়, সেব্য (-अ) वि—सेवा या सेवन करनेके योग्य। সেবমান वि—जो सेवा कर रहा है। সেব্যমান वि—जिसकी सेवा की जा रही है।
সেবা सं—सेवा, परिचर्या, पूजा ; भोजन, भोग। —দাসী स्त्री—सन्यासी आदिकी रखेली।
সেবায়ত, (-য়েত, -ইৎ) सं—पुजारी, देवोत्तर

सम्पत्तिकी आमदनी भोग करनेका अधिकारी। [या पीनेवाला (গঞ্জিকা—)।

সেবী वि—भोग करनेवाला (ইন্দ্রিয়—); खाने

সেব্য (-अ)—সেবন देखो।

সেমই सं—सिवईं।

সেমিকোলন स — ; यह चिह्न।

সেয়াই सं—কালি, মসি स्याही।

সেয়ানা, সেয়ান वि—চালাক चतुर, सयाना।

সের सं—सेर, सोलह छटाँक। সেরা, সেরী वि—सेरकी तौलवाला (পাঁচসেরী বাটখারা)।

সেরা वि—श्रेष्ठ, सबसे उत्तम।

সেরূপ वि—সেইরূপ, সে প্রকার वैसा।

সেরেফ, স্রেফ क्रि वि—सिर्फ, केवल।

সেরেস্তা सं—आफिस, दफ्तर, सरिश्ता। —দার सं—सरिश्तेदार।

সেলাই सं—सिलाई। [नजराना।

সেলাম सं—सलाम। সেলামি सं—नजर

সৈকত सं—পুলিন रेतीला तट। [पद।

সৈনাপত্য (-अ) सं—सेनापतिका कार्य या

সৈন্ধব सं—सेंधा नमक।

সোঁ=সাঁ।

সোজা वि—सीधा, सरल, अकपट, सहज।

সোঁটা सं—सोंटा, डंडा।

সোডা सं—सोडा, एक खार।

সোৎকণ্ঠ (-अ) वि—बेचैन।

সোদর सं—सहोदर, सगा भाई।

সোঁদা वि—सूखी मिट्टीमें पानी पड़ने पर जैसी गंध निकलती है वैसी गन्धवाला।

সোনা स—सोना, सुवर्ण। वि—सुनहला (—মুগ, —বরণ)। —মুখী सं—एक पत्ती जो दस्तावर होती है। সোনালী सं—सुनहला।

সোপকরণ वि—उपकरण या सामग्री सहित।

সোপর্দ (अ) सं—विचारके लिए अदालतमें भेजना, सुपुर्द।

সোপাধি, (-ধিক) वि—उपाधि-युक्त, सगुण।

সোপান सं—सीढ़ी।

সোমত্ত (-अ) वि—जवान, समर्थ।

সোয়াদ सं—स्वाद।

সোয়াস্তি सं—স্বস্তি चैन, शांति।

সোরগোল सं—शोरगुल।

সোরা सं—एक क्षार, शोरा।

সোরাই सं—জলের কুঁজা सुराही।

সোলা सं—एक जलका पौधा जिसका तना सुखाने पर बहुत हलका हो जाता है और जिसे चीर चीर कर विवाहका मौर टोप आदि बनाया जाता है, खुखड़ी।

সোলে सं—सुलह। —নামা सं—सुलहनामा।

সোহাগ सं—আদর प्यार, दुलार। সোহাগিনী, সোহাগী स्त्री—আদরিণী लाड़ली।

সোহাগা स—सुहागा। [आसानी।

সৌকর্য (-अ) सं—सुगमता, सरलता,

সৌকুমার্য (अ) सं—सुकुमारता कोमलता।

সৌক্ষ্ম (शउक्ख-अ) स—सूक्ष्मता, बारीकी।

সৌখিন=শৌখিন।

সৌগত वि—বৌদ্ধ बौद्ध।

সৌগন্ধ (-अ) सं—सुगंध, खुशबू।

সৌচিক=সূচীজীবী।

সৌজন্য (-अ) सं—सज्जनता, भद्र व्यवहार।

সৌজাত্য (-अ) सं—जन्मकी श्रेष्ठता।

সৌদামিনী स—বিদ্যুৎ बिजली।

সৌধ (-अ) सं—প্রাসাদ इमारत, महल। —কিরীটিনী वि—इमारतोंके बुर्जोंवाली (नगरी)।

সৌন্দর্য (-अ) सं—सुंदरता, खूबसूरती।

সৌভাগ্য (-अ) सं—उत्तम भाग्य खुशकिस्मती। —ক্রমে क्रि वि—भाग्यसे।

সৌভ্রাত্র (-अ) सं—भाइयोंमें प्रेम। [शत्रुघ्न।

সৌমিত্র (-अ) सं—सुमित्राके पुत्र, लक्ष्मण या

সৌম্য (-अ) वि—शांत, देखनेमें सुंदर।
সৌর (-अ) वि—सूर्यका। —জগৎ सं—सूर्य और उसके ग्रह उपग्रह आदि।
সৌষ্ঠব सं—सुंदरता
সৌসাদৃশ্য (-अ) सं—पूर्ण समानता।
সৌহার্দ্য, (-র্দ), সৌহৃদ্য, সৌহৃদ सं—दोस्ती, मित्रता।
স্কন্দ (स्कन्द -अ) सं—कार्तिकेय।
স্কন্ধ (-अ) सं—কাঁধ कंधा ; पेड़का तना, ग्रंथका अध्याय, युद्ध। স্কন্ধাবার सं—सेना-निवास, छावनी, फौज।
স্কুল सं—स्कूल, मदरसा।
স্ক্রু, ইস্ক্রুপ सं—পেঁচ पेच।
স্খলন सं—पतन, गिरना, अस्पष्ट उच्चारण। স্খলিত (-अ) वि—पतित, गिरा हुआ ; अस्पष्ट उच्चारित।
স্টার (स्टार) सं—* ऐसा तारा-चिह्न।
স্টীমার सं—अग्निबोट।
স্ট্রীট सं—शहरके भीतरवाली चौड़ी सड़क।
স্তন (स्तन) सं—कुच, পয়োধর, माई स्तन, स्त्रियों और मादा पशुओंकी छाती जिसमें दूध रहता है। স্তনন্ধয় वि—दूध-मुँहा। স্তন্য (-अ) सं—स्तनका दूध। স্তন্যজীবী, স্তন্যপায়ী वि—दूध पीनेवाला।
স্তবক सं—गुच्छा, समूह।
স্তব্ধ (-अ) वि—जो जड़ या अचल हो गया है ; मूर्छित, बहरा।
স্তম্ব (-अ) सं—तृण आदिका गुच्छा।
স্তম্ভ (-अ) सं—থাম, খুঁটি, खंभा, पेड़का तना ; निश्चलता, रोक। স্তম্ভন सं—स्तब्ध करना, रुकावट, मंत्र आदि द्वारा स्तब्ध करना या रोकना। স্তম্ভিত (-अ) वि—आश्चर्य-चकित, स्तब्ध।
স্তর सं—থাক तह, परत।
স্তাবক वि—स्तुति करनेवाला।
স্তিমিত (-अ) वि—निश्चल, गीला।
স্তুত (-अ) वि—जिसकी स्तुति की गयी है, प्रशंसित। স্তুতি सं—স্তব स्तुति प्रशंसा। স্তুতিবাদ सं—प्रशंसा वाक्य। স্তুত্য (-अ) वि—स्तवाई प्रशंसा या स्तुतिके योग्य।
স্তূপ सं—राशि, ऊँचा टीला, बौद्धोंका स्मारक टीला। স্তূপাকার वि—टीलेके समान। স্তূপীকৃত (-अ) वि—ढेर किया हुआ।
স্তেন सं—তস্কর चोर। স্তেন, স্তেয় (-अ) सं—তস্করতা, চুরি चोरी। স্তেয়ী सं—चोर।
স্তোক सं—ढाढसकी बात, झूठी प्रशंसा।
স্তোতা वि—स्तुति या प्रशंसा करनेवाला।
স্তোত্র (-अ) सं—স্তব स्तुति।
স্তোভ सं—निरर्थक बात।
স্ত্রী स्त्री—नारी, औरत, पत्नी। —আচার सं—विवाहके समय स्त्रियोंके द्वारा परछन। —লোক स्त्री—नारी, औरत। —সুলভ वि—মেয়েলী स्त्रियोंका-सा, स्त्रियोंमें पाये जाने योग्य।
স্ত্রৈণ (-अ) वि—स्त्रीके वशीभूत।
-স্থ (-स्थ -अ) प्र—स्थित, विद्यमान (কণ্ঠস্থ)। [हुआ।
স্থগিত (स्थगित -अ) वि—स्थगित, रोका
স্থপতি सं—थवई, राज।
স্থবির वि—वृद्ध, बूढ़ा।
স্থল सं—स्थान, देश, भूमि, जमीन ; विषय, हालत (এরূপ স্থলে—ऐसी हालतमें), पात्र, आधार। —চর वि—जमीन पर रहने या विचरण करनेवाला। —পদ্ম (-अ) सं—एक फूल जो पद्म या जपासे बड़ा है। স্থলাভিষিক্ত (-अ) वि—स्थानापन्न, प्रतिनिधि, एवजी। স্থলী सं—स्थल, स्थान (বনস্থলী,

मध्यस्थी)। स्थनीय (-अ) वि—स्थानीय, जगहका। [वि—निश्चल, स्थिर।

स्थाणु सं—खूँटा, स्तंभ, शाखा-रहित वृक्ष।

स्थातव्य (-अ) वि—रहनेके योग्य।

स्थान सं—जायगा जगह, स्थान, भूमि, आवास स्थिति। स्थानान्तर सं—दूसरा स्थान। स्थानान्तरित (-अ) वि—दूसरे स्थानमें भेजा हुआ। स्थानीय (-अ) वि—स्थानिक, किसी स्थानका, स्थानापन्न, तुल्य, समान (पितृस्थानीय)।

स्थापक वि—स्थापन करनेवाला। [कला।

स्थापत्य (-अ) सं—राजगीरी भवन निर्माण

स्थापन (-ना) सं—रखना, अर्पण।

स्थापित (-अ) वि—स्थापित।

स्थावर वि—अचल (—सम्पत्ति, जायदाद)।

स्थायी वि—स्थितिशील टिकाऊ, स्थिर।

स्थायित्व, (-त्व) सं—स्थायी रहनेका भाव।

स्थाली सं—पाकपात्र रसोईका बरतन, हड़ी, बटलोई।

स्थित (-अ) वि—अवस्थित, स्थिर, वर्तमान, मौजूद। स्थिति सं—टिकाव, मौजूदगी, स्थिरता। स्थितिस्थापक वि—लचीला, जो सिकोड़ कर छोड़ देनेपर अपनी पूर्वस्थिति को प्राप्त हो जाता है।

स्थूल वि—मोटा, इंद्रियग्राह्य।

स्थैर्य (-अ) सं—स्थिरता, दृढ़ता।

स्थौल्य (-अ) सं—स्थूलता, मोटाई।

स्नात (-अ) वि—नहाया हुआ।

स्नान सं—नाओया नहाना। —यात्रा सं—ज्येष्ठ पूर्णिमाको जगन्नाथ देवका स्नान-उत्सव।

स्नानागार सं—नहानेका कमरा, गुसलखाना।

स्नानीय (-अ) वि—स्नानके उपयोगी। सं—स्नानकी सामग्री।

स्नायी वि—स्नान करनेवाला।

स्नायु सं—शरीरके भीतरकी नस। स्नायविक वि—स्नायु सम्बन्धी। [तलहा।

स्निग्ध (-अ) वि—कोमल, शीतल, चिकना,

स्नुषा स्त्री—पतोहू।

स्नेह (-अ) सं—भालबासा प्यार, प्रेम, कनिष्ठके ऊपर स्नेह (मातृ—, भ्रातृ—, —ताबन); तेल आदि (—द्रव्य)।

स्पन्द (-अ), स्पन्दन सं—क्रमिक गति और विराम, धीरे धीरे कम्पन (हृत्पिण्ड—)।

स्पन्दित (-अ) वि—कम्पित।

स्पर्धा सं—दूसरेको हराने या साहसका काम करनेकी इच्छा, होड़, घमंड, ढिठाई।

स्पर्धित (-अ) वि—स्पर्धा-युक्त। स्पर्धी वि—स्पर्धा करनेवाला।

स्पर्श (-अ) सं—छोंया, ठेकाठेकि छूना, त्वचाका अनुभव। —कातर वि—छोंयाछे संक्रामक, छुतहा। स्पर्शन सं—स्पर्श करना, छूना। स्पर्शमणि सं—परश पाथर पारस।

स्पर्शी वि—छूनेवाला।

स्पष्ट (-अ) वि—साफ दिखाई देने या समझमें आनेवाला, व्यक्त विशद, खुल्लमखुल्ला।

स्पिरिट सं—सुरासार स्प्रीट।

स्पृश्य वि—छूने योग्य।

स्पृष्ट (-अ) वि—छूआ हुआ।

स्प्रिङ, इस्प्रिङ सं—घड़ी आदिकी कमानी।

स्फटिक, (-टीक) सं—एक प्रकारका पारदर्शक पत्थर, बिल्लौर। [स्फीति सं—सूजन।

स्फीत (-अ) वि—फूला, फाँपा फूला हुआ।

स्फुट (-अ) वि—विकशित खिला हुआ, स्पष्ट; फटा। स्फुटन सं—खिलना, खोलना। स्फुटित

स्फुटनोन्मुख वि—खिलनेको उन्मुख।

(-अ) वि—खौला हुआ, विकसित।

स्फूर्ति सं—विकास, उमंग, ऐश, स्पंदन।

स्फोटक सं—फोड़ा।

স্ফোটন सं—बिकसना, विस्फोट।

স্মরণ (शरन सं—स्मरण, याद, चिंता, ध्यान। স্মরণাতীত (अ) वि—स्मृतिसे अतीत, बहुत पुराना। স্মরণীয় (-अ), স্মর্তব্য (-अ) वि—स्मरणके योग्य।

স্মারণ सं—याद दिलाना।

স্মার্ত (शार्त-अ) वि, सं—स्मृति या धर्म शास्त्रका जाननेवाला।

স্মিত (-अ) सं—धीमी हँसी, मुसकुराहट। वि—मुसकुराता हुआ; खिला हुआ।

স্যন্দ (-अ), স্যন্দন सं—क्षरण टपकना, चलना। স্যন্দন सं—रथ। স্যন্দী वि—टपकने वाला, चूनेवाला।

স্যমন্তক सं—श्रीकृष्णके हाथकी एक मणि।

স্যাতস্যাতে = সেঁতসেঁতে।

স্রক্ (स्रक) सं—फूलकी माला।

স্রস্ত (स्रस्त अ) वि—गिरा हुआ।

স্রুত (-अ) वि—क्षरित, চোয়ান चुआया हुआ।

স্রেফ क्रि वि—सिर्फ, केवल।

স্রোত, স্রোতঃ सं—प्रवाह, बहाव। স্রোতস্বতী, স্রোতস্বিনী, স্রোতোবহা स्त्री—बहाववाली नदी। [पत्थरकी पटिया।

স্লেট (स्लेट), সেলেট सं—लिखनेके लिए काले

স্ব वि—निज, स्वयं। सं—धन। স্ব স্ব वि—अपना-अपना, अलग-अलग।

স্বঃ सं—स्वर्ग।

স্বকীয় (-अ) वि—अपना, निजी।

স্বকৃত (-अ) वि—अपना किया हुआ। —ভঙ্গ (-अ) सं—कुलीनके वंशमें जिसने कुलकी मर्यादा तोड़ी है यानी जिसने वंशज या श्रोत्रियके घरमें कन्या ब्याही है।

স্বখাত (-अ) वि—अपना खोदा हुआ।

স্বচ্ছন্দ (-अ) वि—स्वाधीन, आजाद, चंगा, अपने आप उत्पन्न। सं—स्वेच्छा, स्वास्थ्य।

স্বনন सं—शब्द आवाज। স্বনিত (-अ) वि ध्वनित।

স্বনাম सं—अपना नाम। —খ্যাত (-अ),—ধন্য (अ) वि—अपनी कीर्तिके द्वारा प्रसिद्ध।

স্বপন, স্বপ্ন (-अ) सं—सपना, निद्रा। স্বপ্নাদেশ सं—सपनेमें पाया हुआ देवताका आदेश। স্বপ্নাদ্য (-अ) वि—सपनेमें पाया हुआ। স্বপ্নোত্থিত (-अ) वि—निद्रासे जगा हुआ।

স্বভাব सं—स्वरूप, मनकी हालत, वस्तुका धर्म, प्रकृति। —কুলীন सं—जिस कुलीनके वंशमें कुल-प्रथा न टूटी हो। —সিদ্ধ (-अ), —সুলভ वि—स्वाभाविक, सहज। [बयान।

স্বভাবোক্তি सं—किसी विषयका ठीक ठीक

স্বর্গঙ্গা, স্বর্গগঙ্গা स्त्री—मंदाकिनी, जो नदी मानस सरोवरसे निकलकर बदरीनारायण होते हुए हिमालय स्थित देवप्रयागमें गंगासे मिली है, अलकनंदा।

স্বর্গত (-अ) वि—स्वर्ग सिधारा हुआ।

স্বর্গতি सं—स्वर्गमें गति।

স্বর্ণ (-अ) सं—सोना, कांचन। —কার सं—सोनार। —প্রসূ वि—जहाँ सोना पैदा होता है, बहुत उपजाऊ। —সুযোগ सं—अच्छा मौका। —সিন্দূর सं—मकरध्वज।

স্বল্প (-अ) वि—बहुत थोड़ा।

স্বসা स्त्री—ভগিনী बहन।

স্বাগত सं—शुभागमन, कुशल।

স্বাচ্ছন্দ্য (-अ) सं—स्वास्थ्य, स्वच्छंदता।

স্বেদ सं—घर्म पसीना, भाप।

স্বৈর (-अ) सं—स्वेच्छाचार। वि—स्वेच्छाचारी, असंयत। স্বৈরিণী स्त्री—स्वेच्छाचार करनेवाली, छिनाल। [(—धन)।

স্বোপার্জিত (-अ) वि—अपना कमाया हुआ

———

হ

হইচই, হইহই स —हल्ला-गुल्ला, चिल्ल-पों।
হইতে, হ'তে विभ —থেকে से।
হইয়া, হ'য়ে क्रि—हो कर। क्रि वि—तरफ से, भीतर से (গয়া হ'য়ে কাশী যাব)।
হওয়া (क्रि परि ७)—होना, रहना, घटना, पैदा होना, बढ़ना, व्यतीत होना।
হক वि—सत्य, उचित (—কথা)। स—स्वत्व, हक, अधिकार।
হকিকৎ स —विवरण, हकीकत।
হকিম सं—हकीम।
হজম सं—परिपाक पाचन, हाजमा। হজমী वि—हजम करानेवाला, पाचक।
হজরৎ सं—প্রভু मालिक।
হট্ क्रि वि—झट, जल्दी, शीघ्र, बिना विचारे।
হটা (क्रि परि १)—पीछे हटना या सरकना, रुकना। [हटाना, रोकना, हराना।
হটান (-नो), হটানো (क्रि परि १०)—पीछे
হট্ট (-अ) सं—হাট हाट, बाजार। —গোল सं—गड़बड़ी, शोरगुल।
হঠ सं—जिद, ज्यादती। —কারী वि—उजड्ड, बिना विचारे काम करनेवाला।
হঠাৎ क्रि वि—एकाएक, अकस्मात्।
হড়কান (-नो), হড়কানো (क्रि परि १६)—পিছলান फिसलना।
হড়বড় क्रि वि—তাড়াতাড়ি जल्दी-जल्दी। হড়বড়ে वि—जल्दी मचानेवाला, जल्दबाज।
হড়হড় सं—लसलसाहट। হড়হড়ে वि—लसलसा।
হড়হড়, হিড়হিড় स —घसीटे जाने या लुढ़कने का भाव (—ক'রে টানা)।
হড়াৎ, হড়াস सं—फिसलनेका शब्द।
হণ্ডা सं—হাড়া हंडा।
হত (-अ) वि—वध किया हुआ, मृत, नष्ट। —ছাড়া=লক্ষ্মীছাড়া। —ভাগা, —ভাগ্য (अ) वि—अभागा, बदनसीब; एक गाली। स्त्री—হতভাগিনী, হতভাগী। —শ্রদ্ধ (-अ) वि—जिसकी श्रद्धा नष्ट हो गयी है। —শ্রদ্ধা सं—अवज्ञा, अनादर। —ভম্ব (-अ) वि—কিংকর্তব্যবিমূঢ় हकबकाया हुआ।
হতাদর वि—जिसका आदर या दुलार नष्ट हो गया है।
হতাশ वि—নিরাশ आशाहीन, नाउम्मेद।
হ'তে विभ—হইতে, থেকে से।
হতুকি स —হরিতকী हर्रें।
হত্তেল सं—হরিতাল हरताल।
হত্যা, হত্যে सं—हत्या, वध, कत्ल; मंदिरमें धरना देना। [खोज।
হদিস स —हदीस, मुसलमानोंका धर्म-शास्त्र;
হদ্দ (-अ) स —सीमा, हद। वि—ज्यादासे ज्यादा। বেহদ্দ वि—बेहद, सीमा-रहित। সরহদ্দ सं—सरहद, सीमा। হদ্দমুদ্দ (-अ) वि—বড়জোর बहुत हुआ तो ज्यादासे ज्यादा।
হনন स —हत्या, वध, कत्ल। হননীয় (-अ), হন্য (-अ) वि—हत्याके योग्य। [হটা)।
হনহন स —जल्दी चलनेका भाव (—ক'রে
হনু, হনূ सं— চোয়াল जबड़ा; हनुमान, लंगूर।
হন্তদন্ত (-अ) वि—घबराया हुआ।
হন্তব্য (-अ) वि—हत्या करने योग्य।। হন্তা वि, सं—हत्यारा। स्त्री—হন্ত্রী। হন্তারক वि, स —हत्यारा, अड़चन डालनेवाला।
হন্দর सं—लगभग १ मन १५ सेरकी अंग्रेजी तौल, हडर।
হন্য (-अ) वि—হনন देखो।
হন্যমান वि—जिसकी हत्या की जा रही है।
হন্যা, হন্যে वि—जो मारने काटने या डसनेके लिए दौड़ रहा है।

হপ্তা सं—हफ्ता, सप्ताह।

হবিষ্য (-अ) सं—घृत-युक्त अन्न, आमिष-रहित भात दाल तरकारी आदि ; वैसा अन्न भोजन करना (—করা)। হবিষ্যাশী वि—वैसा अन्न भोजन करनेवाला, मछली मांस आदि आमिष न खानेवाला।

হবু वि—होनेवाला, भावी (—জামাই)।

হবো-হবো, হব-হব (-अ) वि—अभी अभी होनेवाला (ভোর—)।

হম্বা सं—हाम्बा गाय बैलका शब्द।

হয় सं—अश्व, घोड़ा। क्रि—होता है।

হয়ত (-अ), হয়তো क्रि वि—शायद।

হয়রান वि—नाकाल तंग, हैरान, उत्पीड़ित। হয়রানি सं—परेशानी।

হ'য়ে क्रि—হইয়া देखो।

হর सं—शिव ; भाजक संख्या। वि—हरनेवाला, नाशक (পাপ—) ; हर, फी।

হরকৎ सं—अड़चन, बाधा।

হরকরা सं—हरकारा डाकिया।

হরজ सं—हानि, हर्ज।

হরণ सं—चोरी, लूटना, नाश, भाग करना।

হরতন सं—ताशका पान।

হরতাল सं—धर्मघट हड़ताल।

হরদম क्रि वि—हमेशा, सदा।

হরফ सं—अक्षर, हर्फ।

হরবোলা वि—हर तरहकी बोली बोलनेवाला।

হররা सं—हर्षको ध्वनि। [आनंदित, हर्षित।

হরষ सं—हर्ष, आनंद। হরষিত (-अ) वि—

হরা (क्रि परि १)—हरना, चुराना।

হরি सं—विष्णु, हरि, कृष्ण। वि—हरा। — চন্দন सं—पीला चंदन। —বাসর सं—एकादशी, उपवास। —বোল सं—हरिध्वनि। —লুট, (-লোট) सं—हरि-पूजाके बाद बतासे बिखेरना और लूटना। হরিহরাত্মা वि—हरि और हरके समान अभिन्न। হরিজন सं—अंत्यज।

হরিতাল सं—हरताल। [चतुर्थी।

হরিতালী, (-তালিকা) सं—भाद्र शुक्ला

হরিদ্রা सं—हलदी। হরিদ্রাভ (-अ) वि—হলদে पीला।

হরিষ सं—हर्ष, आनंद।

হরীতকী सं—হত্তুকি हर्रे।

হর্তা वि—हरनेवाला, नाशक। [महल।

হর্ম্য (-अ) सं—প্রাসাদ, অট্টালিকা इमारत,

হল্‌, হস্‌ सं—स्वर-रहित व्यंजनका सांकेतिक नाम। হলন্ত, হসন্ত (-अ) सं—शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो। वि—व्यंजनांत।

হল सं—লাঙ্গল हल, हर ; हाल, बड़ा कमरा।

হলকা सं—आगकी लौ, गरम हवाका प्रवाह।

হলদে वि—पीला।

হলফ सं—कसम, हलफ।

হলহল सं—ढीला होनेका लक्षण प्रकाश। হলহলে वि—ढीलाढाला।

হলায়ুধ सं—बलदेव।

হলাহল सं—कालकूट जहर।

হলী सं—हरवाहा, किसान।

হলুদ सं—হরিদ্রা हलदी। [हुआ।

হসন सं—हँसना। হসিত (-अ) वि—हँसता

হসন্ত (-अ)—হল देखो।

হস্ত (हस्त अ) सं—হাত हाथ ; भुजा, बाँह। —গত (-अ) वि—हाथमें आया हुआ, प्राप्त, हासिल। —লাঘব सं—हाथकी सफाई। —লিপি सं—हाथकी लिखावट। হস্তান্তর सं—दूसरेका अधिकार। হস্তান্তরিত (-अ) वि—दूसरेके अधिकारमें गत या दूसरेको प्रदत्त। হস্তার্পণ सं—हाथ डालना, हस्तक्षेप।

হস্তী सं—হাতি, हाथी, गज, मातंग। হস্তিপ

(-अ), हस्तिपक सं—माहुत फीलवान, महावत।

हस्तिमूर्ख (-अ) वि—अत्यंत मूर्ख।

हাঁ, হাঁ, হুঁ अ—स्वीकृतिसूचक शब्द, हाँ। हা सं—एक संबोधन (ওহে, ওগো); मुँह वाना (হা করা)। হা হা सं—रोकनेका शब्द (— কর কি)।

হাই सं—जृंभण जभाई।

হাইআমলা सं—दुलहेको दुलहिनके वशीभूत करनेके लिए पीसे हुए आँवले मेथी आदिका पिंड। [चिह्न (-)।

হাইফেন सं—दो शब्दोंके वीचका समास-सूचक

হাইল सं—হাল पतवार।

হাউই सं—हवाई एक आतशबाजी।

হাউমাউ, (হাঁউ-) सं—रोनेके साथ चिल्लाहट, कहानीके राक्षसकी गर्जना।

হাওদা सं—हौदा।

হাওয়া सं—বাতাস हवा; वातावरण।

হাওলা सं—জিম্মা हवाला।

হাওলাত सं—उधार, ऋण, मगनी। হাওলাতী वि—उधार या मंगनी लिया हुआ।

হাঁক सं—हाँक, पुकार, ललकार। হাঁকডাক, হাঁকুপাকু सं—घबराहटका लक्षण प्रकाश।

হাঁকা (क्रि परि ३)—हाँकना, बोली बोलना।

হাঁকান (-नो), হাঁকানো (क्रि परि १०)—भगाना, चलाना, हाँकना।

হাঁকাহাঁকি सं—बार बार हाँक।

হাকিম सं—हाकिम, शासक, विचारपति। হাকিম, হকিম स—हकीम, यूनानी चिकित्सक। হাকিমি, হকিমি सं—हकीमी। হাকিমী, হকিমী वि—हकीमका, यूनानी इलाज सम्बन्धी।

হাঘরে वि—घरबार-रहित, कंगाल।

হাঙর, হাঙ্গর सं— मगर, एक हिंसक बड़ी मछली।

হাঙ্গামা, হাঙ্গাম सं—দাঙ্গা दंगा, हंगामा, उपद्रव, फिसाद, झगड़ा।

হাঁচা (क्रि परि ३)—छींकना।

হাঁচি सं—छींक।

হাজত सं—हिरासत, हाजत।

হাজরি सं—उपस्थिति, मौजूदगी; यूरोप-निवासियोंका भोजन (ছোট—)।

হাজা (क्रि परि ३)—जलमें बहुत भींगनेसे बिगड़ जाना नष्ट होना या घाव हो जाना। सं—जलमें भींगनेके कारण फसलका नाश; हाथ-पैरका एक प्रकारका घाव।

হাজার वि, सं—हजार, सहस्र।

হাজির वि—हाजिर, उपस्थित।

হাট सं—हाट, हफ्तेमें एक या दो बार लगने-वाला बाजार (—বসা; —করা, हाटमें खरीद-फरोख्त करना, हल्ला मचाना)। — হদ (अ) सं—सारा विषय या भेद। হাটুরে वि, सं—हाटमें वेचनेवाला।

হাঁটকান (-नो), হাঁটকানো (क्रि परि १६)—उलट-पलट कर खोजना।

হাঁটা (क्रि परि ३)—पैदल चलना। হাঁটুনি सं—बहुत अधिक चलना। হাঁটাহাঁটি स—बार बार आना-जाना। [टेक कर बैठना।

হাঁটু स—জানু घुटना। — গাড়া क्रि—घुटने

হাড় स—हड्डी, अस्थि। —গোড় स—हड्डी-पसली। —হদ্দ (-अ) वि—আগাগোড়া आदिसे अंत तक। [एक बड़ा पक्षी।

হাড়গিলা, (-লে) स—खगेश, गीधकी जातिका

হাঁড়ি सं—हंडी, हंडिया।

হাড়িকাঠ, (হাড়-) सं—देवताके ठीक सामने की ओर जमीनमें गाड़ा हुआ बलिकाष्ठ जिसके ऊपरका अंश तीन चार इंच चीरा हुआ रहता है और जिसमें गर्दन फँसा कर बलिका पशु काटा जाता है।

হাঁড়িচাঁচা सं—खाकी रंगकी एक चिड़िया ।
হাড়ী सं—डोम, दुसाध ।
হাডুডু सं—কপাটি খেলা कबड्डी ।
হাড্ডী सं—হাড় हड्डी ।
হাত सं—हाथ, हस्त, बाँह, १८ इंचकी नाप ; अधिकार, अभ्यास ; दाँव । —কড়ি सं—हथकड़ी । — চলা क्रि—मारनेके लिए हाथ चलना ; किसी काममें दक्षता रहना । — চালান (-नो), (-নো) क्रि—हाथ चलाना, फुर्तीसे काम करना । —চুলকান (-नो), (-নো) क्रि—कुछ करनेके लिए उतावला होना । —হানি सं—हाथ हिलाकर इशारा । —টান सं—चोरीकी आदत ; कंजूसी । —তালি सं—কর-তালি ताली । — তোলা क्रि—मारनेके लिए हाथ उठाना । হাততোলা सं—किसीकी कृपासे प्राप्त धन या भोजन वस्त्र (পরের হাততোলায় থাকা) । —দেওয়া क्रि—छूना, हाथ देना, कोई काम शुरू करना । —দেখা क्रि—हस्त-रेखा या नब्ज देखना ।— ধরা वि—वशीभूत । —ভারী वि—कंजूस । —মাটি स—शौचसे आकर हाथमें मिट्टी मलना । —যশ सं—निपुणताकी ख्याति, नामवरी । —সাফাই स—हाथकी सफाई । হাতে কলমে क्रि वि—हाथसे परीक्षा करके । হাতে হাতে क्रि वि—সত্বর तत्काल, तुरंत । [टटोलना ।
হাতড়ান (-नो), হাতড়ানো (क्रि परि १६)—
হাতল सं—बेंट दस्ता, बेंट, मूठ ।
হাতা सं—कलछुल, बड़ा चमचा ; कमीज आदिका हाथ, अहाता । [हथियाना ।
হাতান (-नो), হাতানো (क्रि परि १०)—
হাতাহাতি सं—हाथापाई ।
হাতিয়ার सं—हथियार ।
হাতি, হাতী स —हाथी, मातंग ।
হাতী वि—एक हाथकी नापवाला (আট-হাতী ধুতি) ।
হাতুড়ী सं—हथौड़ी ।
হাতুড়ে वि, सं—नीम हकीम, ठग वैद्य ।
হাতেখড়ি सं—शिशुका प्राय ६ वर्षके वयसमें विद्यारंभ जब कि उसका हाथ पकड़ कर पत्थरकी थाली आदि पर खड़िया मिट्टीसे ककहरा लिखाया जाता है ; आरंभ ।
হাঁদা वि—मोटा, स्थूल, बेवकूफ ।
হানা सं—धावा आक्रमण ।
হানা (क्रि परि २)—फेंकना, मारना (শেল—, নয়নবাণ—) । —হানি सं—मारकाट ।
হাপর सं—सुनारका अग्निकुंड ; भाती, धौंकनी ।
হাপরান (-नो), হাপরানো (क्रि परि १६)—तरल वस्तु हथेलीसे शब्दके साथ पीना ।
হাঁপ, হাঁপান, হাঁপানি—হাঁফ देखो ।
হাপুস सं—হাপরাইবার শব্দ तरल वस्तु हथेलीसे पीनेका शब्द , आँसूभरा (—নয়নে কাঁদা) ।
হাফ वि—आधा (—হাতা, —টিকিট) ।
হাঁফ, হাঁপ सं—दम, हाँफा, साँस, दमा । হাঁপান (-नो), হাঁপানো (क्रि परि १०)—हाँफना । হাঁপানি सं—दमा । [नखरा ।
হাব सं—स्त्रियोंका हाव ।—ভাব सं—मटक,
হাবলা वि—बेवकूफ-सा ।
হাবশী सं—কাফ্রী, নিগ্রো हबशी । [सनकी ।
হাবা वि—गूंगा-बहरा, गूंगा, मूर्ख ; पागल,
হাবিলদার सं—हवलदार ।
হাবুডুবু सं—जलमें डूबना और उतराना ।
হাভাতে, হাবাতে वि—ভাতের কাঙাল कंगाल, अभागा ।
হাম सं— छोटी चेचक ।
হামড়ি, হুমড়ি सं—হামাগুড়ি बकैयाँ , উবুড় पट , लेनेके लिए उतावलीका भाव (—খেয়ে পড়া) ।

হামবড়া (हाम्बड़ा) वि—घमंडी, अपनी बड़ाई करनेवाला।
হামলা सं—हमला, धावा आक्रमण।
হামা, হামাগুড়ি सं—बकैयाँ, बच्चोंका घुटनेके बल चलना।
হামানদিস্তা सं—इमामदस्ता।
হামাম सं—हम्माम, गरम जलका स्नानागार।
হামেশা क्रि वि—हमेशा, सदा।
হাম্বা सं—हम्बा गाय-बैलका शब्द।
হায়ন सं—साल, वर्ष।
হায়রান=হয়রান।
হায়া सं—हया, लज्जा, शर्म।
হার सं—माला, हार; दर, भाव; भाग; पराजय, शिकस्त [संख्या।
হারক वि—हरनेवाला। सं—चोर, भाजक
হারমোনিয়ম सं—हर्मोनियम बाजा।
হারা वि—जिसका कुछ खो गया है (মা—, আত্ম—); जो खो गया है (—धन, —निधि)।
হারা (क्रि परि २)—हारना, शिकस्त खाना।
হারান (नो), হারানো (क्रि परि १०)—हराना, पराजित करना; हिराना, खो जाना, गँवाना, नष्ट होने देना। वि खोया हुआ।
হারাম सं—हराम, सूअर। —জাদ, (-জাদা) सं—हरामजादा, एक गाली। स्त्री—হারামজাদী।
হারাহারি क्रि वि —गड़पड़ताय औसतन।
হারি सं—हार, पराजय (—মানা)।
হারিকেন स —हरीकेन लालटेन।
হারী सं, वि—हरनेवाला, हार पहना हुआ। स्त्री —হারিণী।
হার্দিক वि—हृदयमें उत्पन्न, आंतरिक।
হার্য (-अ, वि—हरने या भाग करने योग्य।
হাল सं—হল, লাঙ্গল हर, हल; लोहेका बंद जो पहियेके चारों ओर घेरेपर चढ़ाया जाता है, पतवार; दशा, हालत, वर्तमान समय। वि -आधुनिक, चलता (—বাকী)। —খাতা सं—नये सालके हिसाबकी बही। —নাগাত क्रि वि—वर्तमान समय तक।
হালকা वि—हलका, लघु।
হালফিল क्रि वि—फिलहाल।
হালাক, হালাকান वि—हैरान परेशान।
হালাল सं—हलाल, जबह।
হালি वि— ताजा, टटका।
হালুইকর सं —ময়রা हलवाई।
হালুয়া सं—মোহনভোগ हलवा।
হাশিয়া सं—दुशाले आदिका किनारा।
হাস सं—হাস্য हँसी।
হাঁস सं—हंस, बतक
হাঁসকল (हाँश्कल्) सं—কব্জা कब्जा।
হাসপাতাল सं—अस्पताल।
হাঁসফাঁস सं—दम घुटनेका लक्षण प्रकाश (বেশী খেয়ে—করা)।
হাসা (क्रि परि २)—हँसना। [हँसाना।
হাসান (-नो), হাসানো (क्रि परि १०)—
হাঁসান (-नो), হাঁসানো (क्रि परि १०)—गहरा काटना।
হাসি सं—হাস্য हसी। —খুশি सं—हँसी-युक्त आनंद। হাসাহাসি सं—परस्पर आलोचना और हसी, हसी-मजाक।
হাসিল वि—प्राप्त, सम्पन्न; सिद्ध, हासिल। सं—सिद्धि, वसूल।
হাস্নোহানা सं—एक सुगंधी छोटा फूल, हँसनाहना।
হাঁসুলি, হেঁসো सं—हँसली।
হাস্য (-अ) सं—হাসি हँसी। হাস্যালাপ सं—हँसीके साथ वार्तालाप। হাস্যরোল सं—बहुतोंकी हाँसीका उच्च शब्द।
হাস্যোদ্দীপক वि—हँसी पैदा करनेवाला।

হাহা अ—हाय हाय। হাহাকার सं—हाय हाय शब्द, विलाप।
হাহা হিহি, হো হো सं—हँसीका शब्द, ठहाका।
হিং, হিঙ सं—हींग।
হিংসা, হিংসন सं—हत्या, कतल हिंसा, डाह। হিংসে सं—डाह। হিংসক वि—হিংস্র हिंसा करनेवाला। হিংসিত (-अ) वि—जिसको हिंसा की गयी है। হিংসালু वि—हिंसक। হিংসুক, হিংসুটে वि—डाह करनेवाला। হিংস্য (-अ) वि—हिंसा करने योग्य। হিংস্র (-अँ), হিংস্রক वि--खूँखार हिंसा करनेवाला।
হিকমৎ सं—कौशल, चतुराई।
হিক্কা सं—হেঁচকি हिचकी।
হিঙ্গু सं—হিং हींग।
হিঁচড়ান (नो), হিঁচড়ানো, হিঁচড়নো, হেঁচড়ানো (क्रि परि १७)—घसीटना।
হিজড়া, (-ড়ে) वि, सं—नपुंसक, हिजड़ा।
হিজরী सं—६२२ ई०से शुरू होनेवाला मुसलमानी संवत।
হিজল, হিজ্জল सं—एक वृक्ष जिसकी लकडी केवल जलानेके काममें इस्तेमाल होती है।
হিজিবিজি सं—घसीट लिखावट, टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें। [साग
হিঞ্চা, হেলেঞ্চা, হিঞ্চে सं—एक जलज तिक्त
হিড়হিড়— হড়হড় देखो। [(কাজের—)।
হিড়িক सं—ठेला धक्का, दबाव, धक्कम-धक्का
হিতৈষণা सं—हित करनेकी इच्छा।
হিন্দু, হিঁদু सं—हिंदू। হিন্দুয়ানি सं—हिंदूका आचार। হিন্দুস্থান सं—हिंदुस्तान, भारत। হিন্দুস্থানী वि—भारतीय, हिंदी-उर्दू-भाषा-भाषी। सं—हिंदी-उर्दू मिली हुई भाषा।
হিন্দোল, (-লা) सं—দোলা हिंडोला, झूला, पालना।

হিম सं—शीतऋतु, ठंढक, पाला। वि—ठंढा। —কর सं—चंद्रमा। —গিরি सं—हिमालय। —মণ্ডল सं—(भूगोलमें) उत्तरी या दक्षिणी ध्रुवके समीपका भूभाग जहाँ सूर्यका ताप अत्यंत अल्प है। —শিলা सं—करका ओला, पत्थर, बरफ। হিমানী सं—पाला, बरफ। [थकावट (— খাওয়া)।
হিমশিম (हिम्‌शिम्) सं—कठिन काम करनेकी
হিম্মৎ सं—साहस, हिम्मत।
হিয়া सं—हृदय, मन।
হিরণ্ময় (-रन्मय) वि—सोनेका, सुवर्णमय।
হিরাকস सं—कसीस।
হিলিমিলি वि—थाँकाबाँका टेढ़ामेढ़ा, लहरिया।
হিল্লা, হিল্লে सं—आश्रय, आसरा, उपाय, गति (—করা, —লাগান)।
হিল্লোল सं—तरंग, हिलोरा।
হিস্সা, (-সে) सं—हिस्सा, अंश।
হিসাব, হিসেব सं—हिसाब गिनती; विचार (—ক'রে কাজ করা)। হিসাবনবিস सं—हिसाब लिखनेवाला। হিসাবী, হিসেবী वि—विचारसे काम करनेवाला, हिसाब सम्बन्धी।
হিস্টিরিয়া सं—मिरगी रोग।
হিহি सं—हँसीका शब्द; जाड़ेसे काँपते हुएका शब्द। [हीन, क्षीण, रहित।
হীন वि—अधम, नीच, निंदित, दीन, मुफलिस,
হীরক, হীরা, হীরে सं एक रत्न, हीरा। হীরের টুকরো (ছেলে) वि—हीरेका टुकड़ासा (लड़का)। [गर्जना।
হুংকার, হুঙ্কার सं—किसीको डरानेके लिए
হুক सं—अंकुडी।
হুঁকা, হুঁকো सं—हुक्का। [हुकूमत।
হুকুম सं—हुक्म, आदेश। হুকুমৎ सं—प्रभुत्व,
হুঙ্কার = হুংকার।
হুজুক सं—सामयिक उत्साह या आंदोलन

का विषय, अफवाह। হুজুকে त्रि—হুজুকপ্রিয় आंदोलन-प्रिय।

হুজুর सं—हुजूर, प्रभु।

হুজ্জৎ सं—तकरार, हुज्जत।

হুট अ—হুট্, হঠাৎ ঝট, एकाएक।

হুটোপাটি स—उछल-कूद और शोरगुल।

হুড়কা, (-কো) स—अर्गल किवाड़ बंद करने का अर्गल; जो दुलहिन पतिके पास जानेमें डरती है।

হুড়মুড় सं—बडी बड़ी या बहुतसी चीजोंके एक साथ गिरनेका शब्द (—করে পড়া)।

হুড়হুড় स—तेजीसे जल आदिके गिरनेका शब्द; पेटकी गड़गड़ाहट।

হুড়া, হুড়ো स—काम करानेके लिए ताड़ना, धक्का। হুড়াহুড়ি, হুড়োহুড়ি सं—धकमधक्का।

হুড়ুম स—भूड़ि फरवी, फरुही।

হুণ্ডি सं—हुंडी।

হুত (-अ) वि—हवन किया हुआ।

হুতাশ स—निराशा, डर।

হুতোম, হুতুম सं—बड़ा उल्लू। [हद।

হুদ্দ, হুদ্দো सं—अधिकार या कार्यक्षेत्रकी सीमा,

হুনরী, হুনুরী वि—हुनरमंद।

হুপ सं—बंदरका शब्द।

হুবহু वि—हूबहू, ज्योंका त्यों, अक्षरशः।

হুমকি सं—हुंकार डरानेके लिए गर्जना।

হুমড়ি=হামড়ি।

হুরী स्त्री—हूर, अप्सरा।

হুল सं—डंक (—ফুটান)।

হুলস্থুল, হুলুস্থুলু सं—कोलाहल, चिल्लाहट, गुलगपाड़ा।

হুলা, (-লো) वि—मद्दा नर। सं—बिलाव।

হুলিয়া स—भगे हुए मुलजिमकी शक्ल-सूरतका विवरण, हुलिया।

হুলু स—উলু मांगलिक उत्सवमें स्त्रियोंके द्वारा जीभ हिलाकर एक प्रकारकी मुखध्वनि।

হুল্লোড় सं—हुल्लड़।

হুঁশ, (-স) स—होश, सावधानी, चेत।

হুশিয়ার, (হুঁ-) वि—होशियार, सावधान, सचेत, चतुर। হুশিয়ারি, (হুঁ-) स—होशियारी, सावधानी।

হুস सं—चिड़ियों आदिके भगाने या उड़ानेका शब्द। হুস-হুস सं—हुश हुश ऐसा शब्द (রেলগাড়ি—করে চলে)।

হুহু सं—हवा या आगके जलनेका शब्द; यातना सूचक शब्द (বুক—করা)। [कलेजा।

হৃৎ सं—हृदय, मन। —পিণ্ড (-अ) सं—

হৃত (-अ) वि—चुराया हुआ, लाया हुआ।

হৃদি सं—हृदय, मन। क्रि वि—हृदयमें।

হৃদ্য (-अ) वि—हृदयग्राही, मनोहर। হৃদ্যতা सं—सौहार्द मित्रता। [गिड़गिड़ाहट।

হেঁই, হেই स—विनती सूचक शब्द, गिड़-

হেঁচকা वि—अकस्मात् प्रयुक्त। —টান सं—झटका। হেঁচকা, হেঁচকানি सं—झटका, झकझोर।

হেঁচকি सं—হিক্কা हिचकी।

হেঁচড়ান (-নো), হেঁচড়ানো=হিঁচড়ান।

হেঁজিপেঁজি वि—नगण्य मामूली, तुच्छ।

হেঁট वि—नीचू अवनत, नीचा (মাথা—করা)।

হেড स—सिर (দেহেড)। वि—प्रधान (—পণ্ডিত)।

হেঁড়ে वि—हंडीसा।

হেতেব=হাতিয়ার।

হেথা क्रि वि—এখানে यहाँ।

হেদান (-নো), হেদানো, হেদনো (क्रि परि १०) प्रिय-विरहसे व्याकुल होना।

হেদে (হৈদে), হাদে अ—अजी, अरे।

হেন (হৈনো) वि—এমন ऐसा (—জিনিস, এহেন): इस, ऐसे (—কালে)।

হেনা सं— মেহেদি मेहंदी।
হেপাজৎ सं—রক্ষণাবেক্ষণ हिफाजत।
হেয় (-अ) वि—त्यज्य, निकृष्ट।
হেয়ালি, (হেঁ-) सं—प्रहेलिका, पहेली।
হেরফের सं—অদলবদল हेराफेरी।
হেরা (हैरा) (क्रि परि १)— দেখা देखना।
হেলন सं—अवहेलना, अवज्ञा ; झुकनेका भाव।
হেলা (हैला) सं—अवज्ञा, उपेक्षा, अनायास (হেলায়)।
হেলা (क्रि परि १)—ঝোঁকা झुकना।
হেলান (हैलान्) सं—टेक कर स्थिति (—দেওয়া)।
হেলান (हैलानो), হেলানো (क्रि परि १०) —झुकाना, नीचा करना, हिलाना। वि—झुका हुआ। [जोता जाता है (—গরু)।
হেলে स—एक विष-रहित साँप ; जो हलमें
হেলেঞ্চা = হিঞ্চা।
হেঁশেল सं—रसोई घर चौका।
হেঁসো सं—हँसली, एक टेढ़ी छुरी।
হেস্তনেস্ত (-अ) स—फैसला, निबटेरा।
হৈতুক (हइतुक) वि—হেতুবাদী युक्तिवादी।
হৈম (-अ) वि—सुवर्णमय, सोनेका।
হৈমন্ত (-अ), হৈমন্তিক वि—हेमंत कालका।
হোগলা सं—जलका एक पौधा जिससे छप्पर छाया जाता है या चटाई बनायी जाती है।
হোঁচট सं—ठोकर, चलते समय पैरके अंगूठेमें किसी कड़ी वस्तुके संघर्षसे लगनेवाली चोट।
হোটেল सं—होटल।
হোঁতকা वि—मोटा, सड़मुसड।
হোথা क्रि वि—ওখানে वहाँ।
হোঁদড় सं—लकड़बग्घा।
হোঁদল वि—तुंदिला।
হোমরাচোমরা वि—সম্ভ্রান্ত नामवर (आदमी)।
হোমিওপ্যাথি सं—होम्योपथी।
হোলি सं—দোল উৎসব होली।
হো হো सं—हँसीका शब्द।
হৌজ (हउज) सं—बड़ा चहबच्चा।
হৌস सं—सौदागरी दफ्तर ; वणिक संघ।
হ্যাঁ अ—হাঁ হাঁ।
হ্যাংলা वि—हीनताके साथ लालच जाहिर करने वाला।
হ্যাট (हैट) स—अंग्रेजी टोप।
হ্রস্ব (हस्स-अ) वि—छोटा, नाटा, अल्प, लघु।
হ্রাস सं—कमी, घटती, अल्पता, क्षय।
হ্রী सं—लज्जा, शर्म।
হ্রেষা सं—घोड़ेका शब्द, हिनहिनाहट।
হ্লাদ, হ্লাদন सं—आनंद, हर्ष। হ্লাদিত (-अ) वि—आनंदित, हर्षित। হ্লাদিনী वि—आनंद देनेवाली। स—बिजली।

परिशिष्ट

क्रियाके रूप

इस कोशमें क्रियाके আসা, করা, খাওয়া आदि मूल रूपही लिखे गये हैं जो संज्ञा मात्र है। भाषामें प्रचलित उनके विभिन्न रूप इस परिशिष्टमें लिखे जाते हैं। बंगलामें क्रियाके लिखित और कथित दो प्रकारके रूप होते हैं। लिखित रूपोंके सामने कोष्ठकके भीतर कथित रूप दिये गये हैं। जहाँ उच्चारणमें विशेषता है वहाँ केवल प्रथम क्रिया করা के विभिन्न रूपोंके सामने कोष्ठकके भीतर नागरी लिपिमें उच्चारण भी दिखाया गया है। दूसरी क्रियाओं के भी उन उन स्थानोंमें वैसा ही उच्चारण होगा।

दोनों वचनों, दोनों लिंगों तथा अकर्मक और सकर्मक में बंगला क्रियाएँ एकसी रहती हैं। केवल उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष कर्ताकी क्रियाएँ बदलती हैं। आदरार्थमें क्रियाके अन्तमें न लगाया जाता है और निरादरार्थमें ইস, ছিস্, লি, বি आदि तुच्छार्थक विभक्तियाँ लगायी जाती हैं।

केवल प्रथम क्रिया করা के हर एक रूपके सामने हिन्दीमें अर्थ दिया गया है। अन्य क्रियाओंके उन उन स्थानोंमें वैसा ही अर्थ जान लेना चाहिये। खोजनेकी सुगमताके लिए করা क्रियाके विभिन्न कालोंके नामके पहले कोष्ठकके भीतर बंगलाकी जो संख्या दी गयी है आगेकी क्रियाओंमें यथास्थान वैसी ही संख्या मिलेगी। उस संख्याके अनुसार काल मिला लेनेसे हर एक रूपका अर्थ जाना जा सकेगा*। स्थान बचानेके लिए आगेकी क्रियाओंमें कालके नाम तथा कर्ताके रूप नहीं दिये गये।

बंगलाकी क्रियायें २१ गणोंमें विभक्त कर दी गयी हैं। कोशमें जिस क्रियाके सामने कोष्ठकके भीतर क्रि परि लिखकर जो नगरीकी संख्या लिख दी गयी है इस परिशिष्टमें उसी संख्यामें लिखित क्रियाके रूपोंके समान उस क्रियाके रूप होंगे।

निषेधार्थक না लगनेसे कुछ क्रियाओंके रूपमें थोड़ा-बहुत परिवर्तन होता है। जैसे— করিয়াছে না या করিয়াছিল না=করে নাই, করেছে না या করেছিল না=করে নি; হই না=নই; হও না=নও; হয়েন না=নহেন; হন না=নন; হয় না=নয় आदि।

इसके अतिरिक्त किसी किसी क्रियाके मूल रूपमें जो कुछ परिवर्तन होता है वह यथास्थान दिखा दिया गया है।

---

* विशेष नियम इसी ग्रन्थकारकी 'सरल बंगला शिक्षा' पुस्तकमें देखें।

१—করা—करना (কর্ धातु)

(১) सामान्य वर्तमान

আমি বা আমরা করি	मैं करता हूँ या हम करते हैं।
তুই বা তোরা করিস	तू करता है या (तुच्छार्थक) तुमलोग करते हो।
তুমি বা তোমরা কর (करो)	तुम या तुमलोग करते हो।
সে বা তাহারা করে	वह करता है या वे करते हैं *।
আপনি বা আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করেন	आप या आपलोग, वह (आदरार्थमें) या वे करते हैं †

(২) तात्कालिक वर्तमान

আমি বা আমরা করিতেছি (করছি, কচ্ছি ‡) मैं कर रहा हूँ या हम कर रहे हैं।

তুই বা তোরা করিতেছিস (করছিস, কচ্ছিস) तू कर रहा है या तुमलोग कर रहे हो।

তুমি বা তোমরা করিতেছ (ক'রছ, কচ্ছ—कच्छो) —तुम या तुमलोग कर रहे हो।

সে বা তাহারা করিতেছে (করছে, কচ্ছে)—वह कर रहा है या वे कर रहे हैं।

আপনি, আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করিতেছেন (করছেন, কচ্ছেন)—कर रहे हैं।

(৩) आसन्न भूत

আমি বা আমরা করিয়াছি (করেছি)—मैंने या हमने किया है।

তুই বা তোরা করিয়াছিস (করেছিস)—तूने या तुमलोगोंने किया है §।

তুমি বা তোমরা করিয়াছ (করেছ—छो)—तुम (लोगों) ने किया है।

সে বা তাহারা করিয়াছে (করেছে)—उसने या उन्होंने किया है।

আপনি, আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করিয়াছেন (করেছেন)—आपने या उन्होंने किया है।

---

* বালক, নরেন্দ্র, মায়া, কুকুর, পক্ষী, এ, ইহা, ও, উহা, কে, যাহা, যা, তাহা, তা, বালকেরা, বালিকারা, যাহারা, তাহারা आदि सभी संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दोंके दोनों वचनों तथा दोनों लिंगोंमें সে की क्रिया लगती है।

† आदर अर्थमें সে के स्थानमें তিনি और তাহারা के स्थानमें তাঁহারা होता है। ऐसे ही दूसरे सर्वनाम शब्दोंमें भी ँ चन्द्रविन्दु आदरार्थक व्यक्तिके लिए ही प्रयुक्त होता है। পিতা, গুরুদেব, ঈশ্বর, ইনি, উনি, যিনি, ইঁহারা, এঁরা, উঁহারা, ওঁরা, যাঁহারা, যাঁরা, কাঁহারা, কাঁরা आदि सभी आदरार्थक संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दोंमें আপনি की क्रिया लगती है।

‡ কচ্ছি, দিচ্ছি आदिके स्थानमें কচ্চি, দিচ্চি आदि रूप भी होते हैं।

द्रष्टव्य—क्रियाके रूपके अन्तिम ক, ন, ম, স का उच्चारण हलन्त और ছ, ত, ব, ল का उच्चारण ओकारान्त है।

§ हिन्दीमें ने-युक्त कर्ताकी क्रियायें कर्मके अनुसार बदलती हैं। जैसे—काम किया है, बहुतसे काम किये हैं, बात की है, बातें की है, परन्तु बंगलामें नहीं बदलती।

(৪) सामान्य भूत

আমি বা আমরা করিলাম (করলাম, কল্লাম)—मैंने या हमने किया ।

তুই বা তোরা করিলি (করলি, কল্লি)—तूने या तुमलोगोंने किया ।

তুমি বা তোমরা করিলে (করলে, কল্লে)—तुम (लोगोंने) किया ।

সে বা তাহারা করিল (ক'রল, কল্ল—कल्लो)—उसने या उन्होंने किया ।

আপনি, আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করিলেন (কর্‌লেন, কল্লেন)—किया ।

(৫) तात्कालिक भूत

আমি বা আমরা করিতেছিলাম (করছিলাম, কচ্ছিলাম)—कर रहा था —कर रहे थे ।

তুই বা তোরা করিতেছিলি (করছিলি, কচ্ছিলি)—कर रहा था, —कर रहे थे ।

তুমি বা তোমরা করিতেছিলে (করছিলে, কচ্ছিলে)—कर रहा था,—कर रहे थे ।

সে বা তাহারা করিতেছিল (করছিল, কচ্ছিল—लो)—कर रहा था,—कर रहे थे ।

আপনি, আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করিতেছিলেন (করছিলেন, কচ্ছিলেন)—कर रहे थे ।

(৬) पूर्ण भूत

আমি বা আমরা করিয়াছিলাম (করেছিলাম *)—मैंने या हमने किया था ।

তুই বা তোরা করিয়াছিলি (করেছিলি)—किया था ।

তুমি বা তোমরা করিয়াছিলে (করেছিলে)—किया था ।

সে বা তাহারা করিয়াছিল (করেছিল—लो)—किया था ।

আপনি, আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করিয়াছিলেন (করেছিলেন)—किया था ।

(৭) हेतुहेतुमद् भूत

আমি বা আমরা করিতাম (করতাম, কত্তাম)—मैं करता या हम करते ।

তুই বা তোরা করিতিস (করতিস, কত্তিস)—करता या करते ।

তুমি বা তোমরা করিতে (করতে, কত্তে)—तुम या तुमलोग करते ।

সে বা তাহারা করিত (করত, কত্ত—कत्तो)—वह करता या वे करते ।

আপনি, আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করিতেন (করতেন, কত্তেন)—करते ।

(৮) भविष्यत

আমি বা আমরা করিব (করব—बो)—मैं करुंगा या हम करेंगे ।

তুই বা তোরা করিবি (করবি)—तू करेगा या तुमलोग करोगे ।

তুমি বা তোমরা করিবে (করবে)—तुम (लोग) करोगे ।

সে বা তাহারা করিবে (করবে)—वह करेगा या वे करेंगे ।

আপনি, আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করিবেন (করবেন)—करेंगे ।

---

* कुछ लोग -লাম के स्थानमें -লুম या -লেম, ऐसे ही -তাম के स्थान में- তুম या -তেম इस्तेमाल करते हैं। जैसे—করলুম, কল্লুম, করলেম, কল্লেম; করছিলুম, করছিলেম, কচ্ছিলেম; করতুম, কত্তুম, করতেম, কত্তেম आदि। -লেম, -তেম का प्रयोग आजकल कम हो रहा है।

(৯) वर्तमान अनुज्ञा

তুই বা তোরা কর্—तू कर या तुम लोग करो।

তুমি বা তোমরা কর (करो) – तुम (लोग) करो।

সে বা তাহারা করুক—वह करे या वे करें।

আপনি, আপনারা, তিনি বা তাঁহারা করুন—आप .. करें।

(১০) भविष्यत अनुज्ञा

তুই বা তোরা করিস—तू या तुम लोग करना।

তুমি বা তোমরা করিও বা করিয়ো (ক'রো)—तुम (लोग) करना।

আপনি, আপনারা করিবেন (ক'রবেন)—आप (लोग) कीजियेगा।

(১১) पूर्वकालिक क्रिया

করিতে (করতে, কত্তে)—करने, करनेके लिए, करना, करते (আমি কাজ করিতে যাইব, সে দেখা করিতে যায়, তুমি ভোজন করিতে যাইও, তাহারা স্নান করিতে চায়, আমি লেখাপড়া করিতে থাকিব)।

করিতে করিতে (করতে করতে, কত্তে কত্তে)—करते करते, करते हुए (সে কাজ করিতে করিতে গান করে)।

করিয়া (ক'রে) —करके (সে চীৎকার করিয়া পড়িতেছে)।

করিলে (ক'রলে, কল্লে)—करने से (দেখা করিলে দিতাম)।

করিবার ('করবার)—करनेका (এখন কাজ করিবার সময়)।

(১২) क्रियार्थक संज्ञा

করা—करना (গোলমাল করা ভাল নয়)।

কমা, কশা, গণা, মরা, হরা आदि क्रियाओंके रूप করা क्रियाके समान हैं। परंतु গনা क्रियाके अनुज्ञामें গন न होकर (তুই) গোন্, (তুমি) গোন (-ও) होता है और মরা क्रियाका র कथित भाषाके भूत कालमें प्रायः लुप्त हो जाता है ; जैसे—ম'ল, ম'লেন, ম'লে, মলি, ম'লাম आदि।

২—কহা—कहना (কহ্ धातु)

(১) কহি (ক'ই), কহিস (ক'স), কহ (কও), কহে (কয়), কহেন (কন)। (২) কহিতেছি (কইছি), কহিতেছিস (কইছিস), কহিতেছ (কইছ), কহিতেছে (কইছে), কহিতেছেন (কইছেন)। (৩) কহিয়াছি (কয়েছি), কহিয়াছিস (কয়েছিস), কহিয়াছ (কয়েছ), কহিয়াছে (কয়েছে), কহিয়াছেন (কয়েছেন)। (৪) কহিলাম (কইলাম), কহিলি (কইলি), কহিলে (কইলে), কহিল (কইল), কহিলেন (কইলেন)। (৫) কহিতেছিলাম (কইতেছিলাম, ক'চ্ছিলাম), কহিতেছিলি (কইতেছিলি, ক'চ্ছিলি), কহিতেছিলে (কইতেছিলে, ক'চ্ছিলে),

কহিতেছিল (কইতেছিল, ক'চ্ছিল), কহিতেছিলেন (কইতেছিলেন, ক'চ্ছিলেন)। (৬) কহিয়াছিলাম (কয়েছিলাম), কহিয়াছিলি (কয়েছিলি), কহিয়াছিলে (কয়েছিলে), কহিয়াছিল (কয়েছিল), কহিয়াছিলেন (কয়েছিলেন)। (৭) কহিতাম (কইতাম), কহিতিস (কইতিস), কহিতে (কইতে), কহিত (কইত), কহিতেন (কইতেন)। (৮) কহিব (কইব, কব), কহিবি (কইবি, কবি), কহিবে (কইবে, কবে), কহিবেন (কইবেন, কবেন)। (৯) ক, কহ (কও), কহুক (ক'ক), কহুন (ক'ন)। (১০) কহিস (ক'স), কহিও, কহিয়ো (ক'য়ো), কহিবেন (কইবেন, কবেন)। (১১) কহিতে (কইতে), কহিয়া (ক'য়ে), কহিলে (কইলে), কহিবার (কইবার, ক'বার)। (১২) কহা (কওয়া)।

দহা, নহা, বহা, সহা, সহা- इन क्रियाओंके रूप कहा के रूपोंके समान हैं।

ন+হ=নহ—নহি (নই—मैं नहीं हूँ), নহিস (ন'স—तू नहीं है), নহ (নও—तुम नहीं हो), নহেন (নন—आप नहीं हैं), নহিলে (নইলে—न हो तो)। इन रूपोंके अतिरिक्त নহা क्रियाके दूसर रूपो का प्रयोग नहीं होता।

দহা क्रियाके कथित रूपोंका प्रयोग नही है।

३—কাটা—काटना (কাট্ ধাতু)

(১) কাটি, কাটিস, কাট, কাটে, কাটেন। (২) কাটিতেছি (কাটছি), কাটিতেছিস (কাটছিস), কাটিতেছ (কাটছ), কাটিতেছে (কাটছে), কাটিতেছেন (কাটছেন)। (৩) কাটিয়াছি (কেটেছি), কাটিয়াছিস (কেটেছিস), কাটিয়াছ (কেটেছ), কাটিয়াছে (কেটেছে), কাটিয়াছেন (কেটেছেন)। (৪) কাটিলাম (কাটলাম), কাটিলি (কাটলি), কাটিলে (কাটলে), কাটিল (কাটলে—काटा, কাটল—कटा—अकमक), কাটিলেন (কাটলেন)। (৫) কাটিতেছিলাম (কাটছিলাম), কাটিতেছিলি (কাটছিলি), কাটিতেছিলে (কাটছিলে), কাটিতেছিল (কাটছিল), কাটিতেছিলেন (কাটছিলেন)। (৬) কাটিয়াছিলাম (কেটেছিলাম), কাটিয়াছিলি (কেটেছিলি), কাটিয়াছিলে (কেটেছিলে), কাটিয়াছিল (কেটেছিল), কাটিয়াছিলেন (কেটেছিলেন)। (৭) কাটিতাম (কাটতাম্), কাটিতিস্ (কাটতিস), কাটিতে (কাটতে), কাটিত (কাটত), কাটিতেন (কাটতেন)। (৮) কাটিব (কাটব), কাটিবি (কাটবি), কাটিবে (কাটবে), কাটিবেন (কাটবেন)। (৯) কাট্, কাট, কাটুক, কাটুন। (১০) কাটিস, কাটিও, কাটিয়ো (কেটো), কাটিবেন (কাটবেন)। (১১) কাটিতে (কাটতে), কাটিয়া (কেটে), কাটিলে (কাটলে), কাটিবার (কাটবার)। (১২) কাটা।

আঁকা, আনা, আসা, কাঁদা, চাটা, ছাঁটা, কাঁপা, বাছা, মাপা, বাঁধা, হাসা आदि क्रियाओंके रुप কাটা क्रियाके समान है।

আসা क्रियाके—আয় (तू आ), এস (तुम आओ), আসিলাম (এলাম—मैं आया), আসিলি (এলি—तू आया), আসিলে (এলে—तुम आये), আসিলেন (এলেন—आप आये), আসিল (এল—वह आया)—इतने रुपोंमें विशेषता है।

আছ (আছে) क्रियाके केवल—আছি, আছিস, আছ, আছে, আছেন, ছিল (पद्यमें আছিল), ছিলাম, ছিলি, ছিলে, ছিলেন—इतने ही रूप होते हैं।

৪—গাওয়া--গানা (গাহ্ ধাতু)

(১) গাহি (গাই), গাহিস (গাস), গাহ (গাও), গাহে (গায়), গাহেন (গান)। (২) গাহিতেছি (গাইছি), গাহিতেছিস (গাইছিস), গাহিতেছ (গাইছ), গাহিতেছে (গাইছে), গাহিতেছেন (গাইছেন)। (৩) গাহিয়াছি (গেয়েছি), গাহিয়াছিস (গেয়েছিস), গাহিয়াছ (গেয়েছ), গাহিয়াছে (গেয়েছে), গাহিয়াছেন (গেয়েছেন)। (৪) গাহিলাম (গাইলাম), গাহিলি (গাইলি), গাহিলে (গাইলে), গাহিল (গাইল), গাহিলেন (গাইলেন)। (৫) গাহিতেছিলাম (গাচ্ছিলাম, গাইতেছিলাম), গাহিতেছিলি (গাচ্ছিলি, গাইতেছিলি), গাহিতেছিলে (গাচ্ছিলে, গাইতেছিলে), গাহিতেছিল (গাচ্ছিল, গাইতেছিল), গাহিতেছিলেন (গাচ্ছিলেন, গাইতেছিলেন)। (৬) গাহিয়াছিলাম (গেয়েছিলাম), গাহিয়াছিলি (গেয়েছিলি), গাহিয়াছিলে (গেয়েছিলে), গাহিয়াছিল (গেয়েছিল), গাহিয়াছিলেন (গেয়েছিলেন)। (৭) গাহিতাম (গাইতাম), গাহিতিস (গাইতিস), গাহিতে (গাইতে), গাহিত (গাইত), গাহিতেন (গাইতেন)। (৮) গাহিব (গাইব), গাহিবি (গাইবি), গাহিবে (গাইবে), গাহিবেন (গাইবেন)। (৯) গা, গাও, গাক্, গান। (১০) গাহিস (গাস), গাহিও, গাহিয়ো (গেয়ো)। (১১) গাহিতে (গাইতে), গাহিয়া (গেয়ে), গাহিলে (গাইলে), গাহিবার (গাইবার)। (১২) গাওয়া (**গানা**)।

৫—লিখা (লেখা)—লিখনা (লিখ্ ধাতু)

(১) লিখি, লিখিস, লিখ (লেখ), লিখে (লেখে), লিখেন (লেখেন)। (২) লিখিতেছি (লিখছি), লিখিতেছিস (লিখছিস), লিখিতেছ (লিখছ), লিখিতেছে (লিখছে), লিখিতেছেন (লিখছেন)। (৩) লিখিয়াছি (লিখেছি), লিখিয়াছিস (লিখেছিস), লিখিয়াছ (লিখেছ), লিখিয়াছে (লিখেছে), লিখিয়াছেন (লিখেছেন)। (৪) লিখিলাম (লিখলাম), লিখিলি (লিখলি), লিখিলে (লিখলে), লিখিল (লিখল), লিখিলেন (লিখলেন)। (৫) লিখিতেছিলাম (লিখছিলাম), লিখিতেছিলি (লিখছিলি), লিখিতেছিলে (লিখছিলে), লিখিতেছিল (লিখছিল), লিখিতেছিলেন (লিখছিলেন)। (৬) লিখিয়াছিলাম (লিখেছিলাম), লিখিয়াছিলি (লিখেছিলি), লিখিয়াছিলে (লিখেছিলে), লিখিয়াছিল (লিখেছিল), লিখিয়াছিলেন (লিখেছিলেন)। (৭) লিখিতাম (লিখতাম), লিখিতিস (লিখতিস), লিখিতে (লিখতে), লিখিত (লিখত), লিখিতেন (লিখতেন)। (৮) লিখিব (লিখব), লিখিবি (লিখবি), লিখিবে (লিখবে), লিখিবেন (লিখবেন)। (৯) লিখ্ (লেখ্), লিখ (লেখ), লিখুক, লিখুন। (১০) লিখিস, লিখিও, লিখিয়ো (লিখো), লিখিবেন (লিখবেন)। (১১) লিখিতে (লিখতে), লিখিয়া (লিখে), লিখিলে (লিখলে), লিখিবার (লিখবার)। (১২) লিখা (লেখা)।

(৬) উঠা (ওঠা)—ওঠনা (উঠ্ ধাতু)

(১) উঠি, উঠিস, উঠ (ওঠ), উঠে (ওঠে), উঠেন (ওঠেন)। (২) উঠিতেছি (উঠছি), উঠিতেছিস (উঠছিস), উঠিতেছ (উঠছ), উঠিতেছে (উঠছে), উঠিতেছেন (উঠছেন)। (৩) উঠিয়াছি (উঠেছি), উঠিয়াছিস (উঠেছিস), উঠিয়াছ (উঠেছ), উঠিয়াছে (উঠেছে),

উঠিয়াছেন (উঠেছেন)। (৪) উঠিলাম (উঠলাম), উঠিলি (উঠলি), উঠিলে (উঠলে), উঠিল (উঠল), উঠিলেন (উঠলেন)। (৫) উঠিতেছিলাম (উঠছিলাম), উঠিতেছিলি (উঠছিলি), উঠিতেছিলে (উঠছিলে), উঠিতেছিল (উঠছিল), উঠিতেছিলেন (উঠছিলেন)। (৬) উঠিয়াছিলাম (উঠেছিলাম), উঠিয়াছিলি (উঠেছিলি), উঠিয়াছিলে (উঠেছিলে), উঠিয়াছিল (উঠেছিল), উঠিয়াছিলেন (উঠেছিলেন)। (৭) উঠিতাম (উঠতাম), উঠিতিস (উঠতিস), উঠিতে (উঠতে), উঠিত (উঠত), উঠিতেন (উঠতেন)। (৮) উঠিব (উঠব), উঠিবি (উঠবি), উঠিবে (উঠবে), উঠিবেন (উঠবেন)। (৯) ওঠ্, উঠ (ওঠো), উঠুক্, উঠুন। (১০) উঠিস, উঠিও, উঠিয়ো (উঠো), উঠিবেন (উঠবেন)। (১১) উঠিতে (উঠতে), উঠিয়া (উঠে), উঠিলে (উঠলে), উঠিবার (উঠবার, ওঠবার)। (১২) উঠা (ওঠা)।

৩—হওয়া—হোনা (হ ধাতু)

(১) হই, হইস (হো'স), হও, হয়, হয়েন, হন (হ'ন)। (২) হইতেছি (হচ্ছি), হইতেছিস (হচ্ছিস), হইতেছ (হচ্ছ), হইতেছে (হচ্ছে), হইতেছেন (হচ্ছেন)। (৩) হইয়াছি (হয়েছি), হইয়াছিস (হয়েছিস), হইয়াছ (হয়েছ), হইয়াছে (হয়েছে), হইয়াছেন (হয়েছেন)। (৪) হইলাম (হ'লাম), হইলি (হ'লি), হইলে (হ'লে), হইল (হ'ল), হইলেন (হ'লেন)। (৫) হইতেছিলাম (হচ্ছিলাম), হইতেছিলি (হচ্ছিলি), হইতিছিলে (হচ্ছিলে), হইতেছিল (হচ্ছিল), হইতেছিলেন (হচ্ছিলেন)। (৬) হইয়াছিলাম (হয়েছিলাম), হইয়াছিলি (হয়েছিলি), হইয়াছিলে (হয়েছিলে), হইয়াছিল (হয়েছিল), হইয়াছিলেন (হয়েছিলেন)। (৭) হইতাম (হ'তাম), হইতিস (হ'তিস), হইতে (হ'তে), হইত (হ'ত), হইতেন (হ'তেন)। (৮) হইব (হব), হইবি (হবি), হইবে (হবে), হইবেন (হবেন)। (৯) হ, হও, হউক (হ'ক), হউন (হ'ন)। (১০) হইস (হস), হইও, হইয়ো (হ'য়ো), হইবেন (হবেন)। (১১) হইতে (হ'তে), হইয়া (হ'য়ে), হইলে (হ'লে), হইবার (হবার, হওয়ার)। (১২) হওয়া।

৪—খাওয়া—খানা (খা ধাতু)

(১) খাই, খাস, খাও, খায়, খান। (২) খাইতেছি (খাচ্ছি), খাইতেছিস (খাচ্ছিস), খাইতেছ (খাচ্ছ), খাইতেছে (খাচ্ছে), খাইতেছেন (খাচ্ছেন)। (৩) খাইয়াছি (খেয়েছি), খাইয়াছিস (খেয়েছিস), খাইয়াছ (খেয়েছ), খাইয়াছে (খেয়েছে), খাইয়াছেন (খেয়েছেন)। (৪) খাইলাম (খেলাম), খাইলি (খেলি), খাইলে (খেলে), খাইল (খেল), খাইলেন (খেলেন)। (৫) খাইতে-ছিলাম (খাচ্ছিলাম), খাইতেছিলি (খাচ্ছিলি), খাইতেছিলে (খাচ্ছিলে), খাইতেছিল (খাচ্ছিল), খাইতেছিলেন (খাচ্ছিলেন)। (৬) খাইয়াছিলাম (খেয়েছিলাম), খাইয়াছিলি (খেয়েছিলি), খাইয়াছিলে (খেয়েছিলে), খাইয়াছিল (খেয়েছিল), খাইয়াছিলেন (খেয়েছিলেন)। (৭) খাইতাম (খেতাম), খাইতিস (খেতিস), খাইতে (খেতে), খাইত (খেত), খাইতেন (খেতেন)। (৮) খাইব (খাব), খাইবি (খাবি), খাইবে (খাবে), খাইবেন (খাবেন)। (৯) খা, খাও, খাক্, খান্। (১০) খাস, খাইও, খাইয়ো (খেয়ো), খাইবেন (খাবেন)। (১১) খাইতে (খেতে), খাইয়া (খেয়ে), খাইলে (খেলে), খাইবার (খাবার)। (১২) খাওয়া।

৯—যাওয়া—জানা (যা ধাতু)

(১) যাই, যাস, যাও, যায়, যান। (২) যাইতেছি (যাচ্ছি), যাইতেছিস (যাচ্ছিস), যাইতেছ (যাচ্ছ), যাইতেছে (যাচ্ছে), যাইতেছেন (যাচ্ছেন)। (৩) গিয়াছি (গেছি, গিয়েছি), গিয়াছিস (গেছিস, গিয়েছিস), গিয়াছ (গেছ গ্যাছ গিয়েছ), গিয়াছে (গেছে গ্যাছে, গিয়েছে), গিয়াছেন (গেছেন গ্যাছেন, গিয়েছেন)। (৪) যাইলাম, গেলাম (গেলাম গ্যালাম), যাইলি, গেলি (গেলি), যাইলে, গেলে (গেলে), যাইল, গেল (গেল—গ্যালো), যাইলেন, গেলেন (গেলেন—গ্যালেন)। (৫) যাইতেছিলাম (যাচ্ছিলাম), যাইতেছিলি (যাচ্ছিলি), যাইতেছিলে (যাচ্ছিলে), যাইতেছিল (যাচ্ছিল), যাইতেছিলেন (যাচ্ছিলেন)। (৬) গিয়াছিলাম (গিয়েছিলাম), গিয়াছিলি (গিয়েছিলি), গিয়াছিলে (গিয়েছিলে), গিয়াছিল (গিয়েছিল), গিয়াছিলেন (গিয়েছিলেন)। (৭) যাইতাম (যেতাম), যাইতিস (যেতিস), যাইতে (যেতে), যাইত (যেত), যাইতেন (যেতেন)। (৮) যাইব (যাব), যাইবি (যাবি), যাইবে (যাবে), যাইবেন (যাবেন)। (৯) যা, যাও, যাক্, যান। (১০) যাস, যাইও, যাইয়ো (যেয়ো), যাইবেন (যাবেন)। (১১) যাইতে (যেতে), যাইয়া, গিয়া (গিয়ে), যাইলে (গেলে—গ্যালে), যাইবার (যাবার)। (১২) যাওয়া।

১০—লাফান—কূদ্‌না (লাফা ধাতু)

(১) লাফাই, লাফাস, লাফাও, লাফায়, লাফান। (২) লাফাইতেছি (লাফাচ্ছি), লাফাইতেছিস (লাফাচ্ছিস), লাফাইতেছ (লাফাচ্ছ), লাফাইতেছে (লাফাচ্ছে), লাফাইতেছেন (লাফাচ্ছেন)। (৩) লাফাইয়াছি (লাফিয়েছি), লাফাইয়াছিস (লাফিয়েছিস), লাফাইয়াছ (লাফিয়েছ), লাফাইয়াছে (লাফিয়েছে), লাফাইয়াছেন (লাফিয়েছেন)। (৪) লাফাইলাম (লাফালাম), লাফাইলি (লাফালি), লাফাইলে (লাফালে), লাফাইল (লাফাল), লাফাইলেন (লাফালেন)। (৫) লাফাইতেছিলাম (লাফাচ্ছিলাম), লাফাইতেছিলি (লাফাচ্ছিলি), লাফাইতেছিলে (লাফাচ্ছিলে), লাফাইতেছিল (লাফাচ্ছিল), লাফাইতেছিলেন (লাফাচ্ছিলেন)। (৬) লাফাইয়াছিলাম (লাফিয়েছিলাম), লাফাইয়াছিলি (লাফিয়েছিলি), লাফাইয়াছিলে (লাফিয়েছিলে), লাফাইয়াছিল (লাফিয়েছিল), লাফাইয়াছিলেন (লাফিয়েছিলেন)। (৭) লাফাইতাম (লাফাতাম), লাফাইতিস (লাফাতিস), লাফাইতে (লাফাতে), লাফাইত (লাফাত), লাফাইতেন (লাফাতেন)। (৮) লাফাইব (লাফাব), লাফাইবি (লাফাবি), লাফাইবে (লাফাবে), লাফাইবেন (লাফাবেন)। (৯) লাফা, লাফাও, লাফাক্, লাফান। (১০) লাফাস, লাফাইও, লাফাইয়ো (লাফিও, লাফিয়ো), লাফাইবেন (লাফাবেন)। (১১) লাফাইতে (লাফাতে), লাফাইয়া (লাফিয়ে), লাফাইলে (লাফালে), লাফাইবার (লাফাবার)। (১২) লাফান (লাফানো)।

১১—ফিরান (ফেরান)—লৌটানা (ফিরা ধাতু)

(১) ফিরাই, ফিরুই, ফেরাই, ফিরাস, ফেরাস, ফিরাও, ফেরাও; ফিরায়, ফেরায়; ফিরান, ফেরান। (২) ফিরাইতেছি (ফিরচ্ছি, ফিরুচ্ছি, ফেরাচ্ছি), ফিরাইতেছিস (ফিরচ্ছিস, ফিরুচ্ছিস, ফেরাচ্ছিস), ফিরাইতেছ (ফিরচ্ছ, ফিরুচ্ছ, ফেরাচ্ছ), ফিরাইতেছে (ফিরচ্ছে, ফিরুচ্ছে, ফেরাচ্ছে), ফিরাইতেছেন (ফিরচ্ছেন, ফিরুচ্ছেন, ফেরাচ্ছেন)। (৩) ফিরাইয়াছি (ফিরিয়েছি), ফিরাইয়াছিস

(ফিরিয়েছিস), ফিরাইয়াছ (ফিরিয়েছ), ফিরাইয়াছে (ফিরিয়েছে), ফিরাইয়াছেন (ফিরিয়েছেন)। (৪) ফিরাইলাম (ফির্'লাম, ফিরলাম, ফেরালাম), ফিরাইলি (ফির্'লি, ফিরলি, ফেরালি), ফিরাইলে (ফিরলে, ফিরলে, ফেরালে), ফিরাইল (ফির্'ল, ফিরল, ফিরাল), ফিরাইলেন (ফিরলেন, ফিরলেন, ফেরালেন)। (৫) ফিরাইতেছিলাম (ফিরছিলাম, ফিরছিলাম, ফেরাচ্ছিলাম), ফিরাইতেছিলি (ফিরছিলি, ফিরছিলি, ফেরাচ্ছিলি), ফিরাইতেছিলে (ফিরছিলে, ফিরছিলে, ফেরাচ্ছিলে), ফিরাইতেছিল (ফিরছিল, ফিরছিল, ফেরাচ্ছিল), ফিরাইতেছিলেন (ফিরছিলেন, ফিরছিলেন, ফেরাচ্ছিলেন)। (৬) ফিরাইয়াছিলাম (ফিরিয়েছিলাম), ফিরাইয়াছিলি (ফিরিয়েছিলি), ফিরাইয়াছিলে (ফিরিয়েছিলে), ফিরাইয়াছিল (ফিরিয়েছিল), ফিরাইয়াছিলেন (ফিরিয়েছিলেন)। (৭) ফিরাইতাম (ফির্'তাম, ফিরতাম, ফেরাতাম), ফিরাইতিস (ফির্'তিস, ফিরতিস, ফেরাতিস), ফিরাইতে (ফির্'তে, ফিরতে, ফেরাতে), ফিরাইত (ফির্'ত, ফিরত, ফেরাত), ফিরাইতেন (ফির্'তেন, ফিরতেন, ফেরাতেন)। (৮) ফিরাইব (ফির্'ব, ফিরব, ফেরাব), ফিরাইবি (ফির্'বি, ফিরবি, ফেরাবি), ফিরাইবে (ফির্'বে, ফিরবে, ফেরাবে), ফিরাইবেন (ফির্'বেন, ফিরবেন, ফেরাবেন)। (৯) ফিরা (ফিরো,), ফিরাও (ফিরও, ফেরাও), ফিরাক (ফিরক, ফেরাক), ফিরান (ফিরন, ফেরান)। (১০) ফিরাস (ফিরস, ফেরাস), ফিরাইও, ফিরাইয়ো (ফিরিও, ফিরিয়ো), ফিরাইবে (ফির্'বে, ফেরাবে), ফিরাইবেন (ফির্'বেন, ফিরবেন, ফেরাবেন)। (১১) ফিরাইতে (ফির্'তে, ফিরতে, ফেরাতে), ফিরাইয়া (ফিরিয়ে), ফিরাইলে (ফির্'লে, ফিরলে, ফেরালে), ফিরাইবার (ফির্'বার, ফেরাবার)। (১২) ফিরান (ফিরনো, ফেরানো)।

১২—নাহান (নাওয়ান)—নহলানা। (নাওয়া ধাতু)।

(১) নাওয়াই, নাওয়াস, নাওয়াও, নাওয়ায়, নাওয়ান। (২) নাওয়াইতেছি (নাওয়াচ্ছি), নাওয়াইতেছিস (নাওয়াচ্ছিস), নাওয়াইতেছ (নাওয়াচ্ছ), নাওয়াইতেছে (নাওয়াচ্ছে), নাওয়াইতেছেন (নাওয়াচ্ছেন)। (৩) নাওয়াইয়াছি, (নাইয়েছি), নাওয়াইয়াছিস (নাইয়েছিস), নাওয়াইয়াছ (নাইয়েছ), নাওয়াইয়াছে (নাইয়েছে), নাওয়াইয়াছেন (নাইয়েছেন)। (৪) নাওয়াইলাম (নাওয়ালাম), নাওয়াইলি (নাওয়ালি), নাওয়াইলে (নাওয়ালে), নাওয়াইল (নাওয়াল), নাওয়াইলেন (নাওয়ালেন)। (৫) নাওয়াইতেছিলাম (নাওয়াচ্ছিলাম), নাওয়াইতেছিলি (নাওয়াচ্ছিলি), নাওয়াইতেছিলে (নাওয়াচ্ছিলে), নাওয়াইতেছিল (নাওয়াচ্ছিল), নাওয়াইতেছিলেন (নাওয়াচ্ছিলেন)। (৬) নাওয়াইয়াছিলাম (নাইয়েছিলাম), নাওয়াইয়াছিলি (নাইয়েছিলি), নাওয়াইয়াছিলে (নাইয়েছিলে), নাওয়াইয়াছিল (নাইয়েছিল), নাওয়াইয়াছিলেন (নাইয়েছিলেন)। (৭) নাওয়াইতাম (নাওয়াতাম), নাওয়াইতিস (নাওয়াতিস), নাওয়াইতে (নাওয়াতে), নাওয়াইত (নাওয়াত), নাওয়াইতেন (নাওয়াতেন)। (৮) নাওয়াইব (নাওয়াব), নাওয়াইবি (নাওয়াবি), নাওয়াইবে (নাওয়াবে), নাওয়াইবেন (নাওয়াবেন)। (৯) নাওয়া, নাওয়াও, নাওয়াক, নাওয়ান। (১০) নাওয়াস, নাওয়াইও, নাওয়াইয়ো (নাইও, নাইয়ো), নাওয়াইবেন (নাওয়াবেন)। (১১) নাওয়াইতে (নাওয়াতে), নাওয়াইয়া (নাইয়ে), নাওয়াইলে (নাওয়ালে), নাওয়াইবার (নাওয়াবার)। (১২) নাওয়ান (নাওয়ানো)।

১৩—ঘুরান (ঘোরানো)—ঘুমানা (ঘুরা ধাতু)

(১) ঘুরাই (ঘুরই, ঘরুই, ঘোরাই), ঘুরাস (ঘুরস, ঘোরাস), ঘুরাও (ঘুরও, ঘোরাও), ঘুরায় (ঘুরয়, ঘোরায়), ঘুরান (ঘুরন, ঘোরান)। (২) ঘুরাইতেছি (ঘুরছি, ঘুরুছি, ঘোরাচ্ছি), ঘুরাইতেছিস (ঘুরছিস, ঘুরুছিস, ঘোরাচ্ছিস), ঘুরাইতেছ (ঘুরছ, ঘুরুছ, ঘোরাচ্ছ), ঘুরাইতেছে (ঘুরছে, ঘুরুছে, ঘোরাচ্ছে), ঘুরাইতেছেন (ঘুরছেন, ঘুরুছেন, ঘোরাচ্ছেন)। (৩) ঘুরাইয়াছি (ঘুরিয়েছি), ঘুরাইয়াছিস (ঘুরিয়েছিস), ঘুরাইয়াছ (ঘুরিয়েছ), ঘুরাইয়াছে (ঘুরিয়েছে), ঘুরাইয়াছেন (ঘুরিয়েছেন)। (৪) ঘুরাইলাম (ঘুর'লাম, ঘুরুলাম, ঘোরালাম), ঘুরাইলি (ঘুর'লি, ঘুরুলি, ঘোরালি), ঘুরাইলে (ঘুর'লে, ঘুরুলে, ঘোরালে), ঘুরাইল (ঘুর'ল, ঘুরুল, ঘোরাল), ঘুরাইলেন (ঘুর'লেন, ঘুরুলেন, ঘোরালেন)। (৫) ঘুরাইতেছিলাম (ঘুরছিলাম, ঘুরুছিলাম, ঘোরাচ্ছিলাম), ঘুরাইতেছিলি (ঘুরছিলি, ঘুরুছিলি, ঘোরাচ্ছিলি), ঘুরাইতেছিলে (ঘুরছিলে, ঘুরুছিলে, ঘোরাচ্ছিলে), ঘুরাইতেছিল (ঘুরছিল, ঘুরুছিল, ঘোরাচ্ছিল), ঘুরাইতেছিলেন (ঘুরছিলেন, ঘুরুছিলেন, ঘোরাচ্ছিলেন)। (৬) ঘুরাইয়াছিলাম (ঘুরিয়েছিলাম), ঘুরাইয়াছিলি (ঘুরিয়েছিলি), ঘুরাইয়াছিলে (ঘুরিয়েছিলে), ঘুরাইয়াছিল (ঘুরিয়েছিল), ঘুরাইয়াছিলেন (ঘুরিয়েছিলেন)। (৭) ঘুরাইতাম (ঘুর'তাম ঘুরুতাম, ঘোরাতাম), ঘুরাইতিস (ঘুর'তিস, ঘুরুতিস, ঘোরাতিস), ঘুরাইতে (ঘুর'তে, ঘুরুতে, ঘোরাতে), ঘুরাইত (ঘুর'ত, ঘুরুত, ঘোরাত), ঘুরাইতেন (ঘুর'তেন, ঘুরুতেন, ঘোরাতেন)। (৮) ঘুরাইব (ঘুর'ব, ঘুরুব, ঘোরাব), ঘুরাইবি (ঘুর'বি, ঘুরুবি, ঘোরাবি), ঘুরাইবে (ঘুর'বে, ঘুরুবে, ঘোরাবে), ঘুরাইবেন (ঘুর'বেন, ঘুরুবেন, ঘোরাবেন)। (৯) ঘুরা (ঘুরো, ঘোরা), ঘুরাও (ঘুরও, ঘোরাও), ঘুরাক (ঘুরক, ঘোরাক), ঘুরান (ঘুরন, ঘোরান)। (১০) ঘুরাস্ (ঘুরস্, ঘোরাস্), ঘুরাইও, ঘুরাইয়ো (ঘুরিও, ঘুরিয়ো), ঘুরাইবেন (ঘুর'বেন, ঘুরুবেন, ঘোরাবেন)। (১১) ঘুরাইতে (ঘুর'তে, ঘুরুতে, ঘোরাতে), ঘুরাইয়া (ঘুরিয়ে), ঘুরাইলে (ঘুর'লে, ঘুরুলে, ঘোরালে), ঘুরাইবার (ঘুর'বার, ঘোরাবার)। (১২) ঘুরান (ঘুরনো, ঘোরানো)।

১৪—ধোয়ান (ধোয়ানো)—ধুলবানা (ধোয়া ধাতু)

(১) ধোয়াই, ধোয়াস, ধোয়াও, ধোয়ায়, ধোয়ান। (২) ধোয়াইতেছি (ধোয়াচ্ছি), ধোয়াইতেছিস (ধোয়াচ্ছিস), ধোয়াইতেছ (ধোয়াচ্ছ), ধোয়াইতেছে (ধোয়াচ্ছে), ধোয়াইতেছেন (ধোয়াচ্ছেন)। (৩) ধোয়াইয়াছি (ধুইয়েছি), ধোয়াইয়াছিস (ধুইয়েছিস), ধোয়াইয়াছ (ধুইয়েছ), ধোয়াইয়াছে (ধুইয়েছে), ধোয়াইয়াছেন (ধুইয়েছেন)। (৪) ধোয়াইলাম (ধোয়ালাম), ধোয়াইলি (ধোয়ালি), ধোয়াইলে (ধোয়ালে), ধোয়াইল (ধোয়াল), ধোয়াইলেন (ধোয়ালেন)। (৫) ধোয়াইতেছিলাম (ধোয়াচ্ছিলাম), ধোয়াইতেছিলি (ধোয়াচ্ছিলি), ধোয়াইতেছিলে (ধোয়াচ্ছিলে), ধোয়াইতেছিল (ধোয়াচ্ছিল), ধোয়াইতেছিলেন (ধোয়াচ্ছিলেন)। (৬) ধোয়াইয়াছিলাম (ধুইয়েছিলাম), ধোয়াইয়াছিলি (ধুইয়েছিলি), ধোয়াইয়াছিলে (ধুইয়েছিলে), ধোয়াইয়াছিল (ধুইয়েছিল), ধোয়াইয়াছিলেন (ধুইয়েছিলেন)। (৭) ধোয়াইতাম (ধোয়াতাম), ধোয়াইতিস (ধোয়াতিস), ধোয়াইতে (ধোয়াতে), ধোয়াইত (ধোয়াত), ধোয়াইতেন (ধোয়াতেন)।

(৮) ধোয়াইব (ধোয়াব), ধোয়াইবি (ধোয়াবি), ধোয়াইবে (ধোয়াবে), ধোয়াইবেন (ধোয়াবেন)। (৯) ধোয়া, ধোয়াও, ধোয়াক, ধোয়ান। (১০) ধোয়াস, ধোয়াইও, ধোয়াইয়ো (ধুইও, ধুইয়ো), ধোয়াইবেন (ধোয়াবেন)। (১১) ধোয়াইতে (ধোয়াতে), ধোয়াইয়া (ধুইয়ে), ধোয়াইলে (ধোয়ালে), ধোয়াইবার (ধোয়াবার)। (১২) ধোয়ান (ধোয়ানো)।

१५—দৌড়ান (দৌড়নো, দৌড়ানো)—दौड़ना, दौड़ाना (দৌড়া ধাতু)।

(১) দৌড়াই (দৌড়ই, দৌড়্ই), দৌড়াস (দৌড়স), দৌড়াও (দৌড়ও), দৌড়ায় (দৌড়য়), দৌড়ান (দৌড়ন)। (২) দৌড়াইতেছি (দৌড়চ্ছি, দৌড়্চ্ছি), দৌড়াইতেছিস (দৌড়চ্ছিস, দৌড়্চ্ছিস), দৌড়াইতেছ (দৌড়চ্ছ, দৌড়্চ্ছ) দৌড়াইতেছে (দৌড়চ্ছে, দৌড়্চ্ছে), দৌড়াইতেছেন (দৌড়চ্ছেন, দৌড়্চ্ছেন)। (৩) দৌড়াইয়াছি (দৌড়েছি, দৌড়িয়েছি), দৌড়াইয়াছিস (দৌড়েছিস, দৌড়িয়েছিস), দৌড়াইয়াছ (দৌড়েছ, দৌড়িয়েছ), দৌড়াইয়াছে (দৌড়েছে, দৌড়িয়েছে), দৌড়াইয়াছেন (দৌড়েছেন, দৌড়িয়েছেন)। (৪) দৌড়াইলাম (দৌড়লাম, দৌড়্লাম), দৌড়াইলি (দৌড়লি, দৌড়্লি), দৌড়াইলে (দৌড়লে, দৌড়্লে), দৌড়াইল (দৌড়ল, দৌড়্ল), দৌড়াইলেন (দৌড়লেন, দৌড়্লেন)। (৫) দৌড়াইতেছিলাম (দৌড়্চ্ছিলাম, দৌড়াচ্ছিলাম), দৌড়াইতেছিলি (দৌড়চ্ছিলি, দৌড়্চ্ছিলি), দৌড়াইতেছিলে (দৌড়চ্ছিলে, দৌড়্চ্ছিলে), দৌড়াইতেছিল (দৌড়চ্ছিল, দৌড়্চ্ছিল), দৌড়াইতেছিলেন (দৌড়চ্ছিলেন, দৌড়্চ্ছিলেন)। (৬) দৌড়াইয়াছিলাম (দৌড়েছিলাম, দৌড়িয়েছিলাম), দৌড়াইয়াছিলি (দৌড়েছিলি, দৌড়িয়েছিলি), দৌড়াইয়াছিলে (দৌড়েছিলে, দৌড়িয়েছিলে), দৌড়াইয়াছিল (দৌড়েছিল, দৌড়িয়েছিল), দৌড়াইয়াছিলেন (দৌড়েছিলেন, দৌড়িয়েছিলেন)। (৭) দৌড়াইতাম (দৌড়তাম, দৌড়্তাম), দৌড়াইতিস (দৌড়তিস, দৌড়্তিস), দৌড়াইতে (দৌড়তে, দৌড়্তে), দৌড়াইত (দৌড়ত, দৌড়্ত), দৌড়াইতেন (দৌড়তেন, দৌড়্তেন)। (৮) দৌড়াইব (দৌড়ব, দৌড়্ব), দৌড়াইবি (দৌড়বি, দৌড়্বি), দৌড়াইবে (দৌড়বে, দৌড়্বে), দৌড়াইবেন (দৌড়বেন, দৌড়্বেন)। (৯) দৌড়া (দৌড়ো), দৌড়াও (দৌড়ও), দৌড়াক (দৌড়ক, দৌড়্ক), দৌড়ান (দৌড়ন, দৌড়্ন)। (১০) দৌড়াস (দৌড়স), দৌড়াইও, দৌড়াইয়ো (দৌড়ো), দৌড়াইবে (দৌড়বে, দৌড়্বে), দৌড়াইবেন (দৌড়বেন, দৌড়্বেন)। (১১) দৌড়াইতে (দৌড়তে, দৌড়্তে), দৌড়াইয়া (দৌড়ে, দৌড়িয়ে), দৌড়াইলে (দৌড়লে, দৌড়্লে), দৌড়াইবার (দৌড়বার)। (১২) দৌড়ান (দৌড়নো)।

१६—চটকান (চটকানো)—मसलना, गूँधना (চটকা ধাতু)

(১) চটকাই,* চটকাস, চটকাও, চটকায়, চটকান। (২) চটকাইতেছি (চটকাচ্ছি), চটকাইতেছিস (চটকাচ্ছিস), চটকাইতেছ (চটকাচ্ছ), চটকাইতেছে (চটকাচ্ছে), চটকাইতেছেন

---

* क्रियाके चार अक्षरवाले रूपमें दूसरे अक्षरका अकार उच्चारित नहीं होता, जैसे—চট্কাই, ধম্কাই, উল্টাইয়াছিলাম।

(চটকাচ্ছেন)। (৩) চটকাইয়াছি (চটকেছি), চটকাইয়াছিস (চটকেছিস), চটকাইয়াছ (চটকেছ), চটকাইয়াছে (চটকেছে), চটকাইয়াছেন (চটকেছেন)। (৪) চটকাইলাম (চটকালাম), চটকাইলি (চটকালি), চটকাইলে (চটকালে), চটকাইল (চটকাল), চটকাইলেন (চটকালেন)। (৫) চটকাইতেছিলাম (চটকাচ্ছিলাম), চটকাইতেছিলি (চটকাচ্ছিলি), চটকাইতেছিলে (চটকাচ্ছিলে), চটকাইতেছিল (চটকাচ্ছিল), চটকাইতেছিলেন (চটকাচ্ছিলেন)। (৬) চটকাইয়াছিলাম (চটকেছিলাম), চটকাইয়াছিলি (চটকেছিলি), চটকাইয়াছিলে (চটকেছিলে), চটকাইয়াছিল (চটকেছিল), চটকাইয়াছিলেন (চটকেছিলেন)। (৭) চটকাইতাম (চটকাতাম), চটকাইতিস (চটকাতিস), চটকাইতে (চটকাতে), চটকাইত (চটকাত), চটকাইতেন (চটকাতেন)। (৮) চটকাইব (চটকাব), চটকাইবি (চটকাবি), চটকাইবে (চটকাবে), চটকাইবেন (চটকাবেন)। (৯) চটকা, চটকাও, চটকাক, চটকান। (১০) চটকাস, চটকাইও, চটকাইয়ো (চটকো), চটকাইবেন (চটকাবেন)। (১১) চটকাইতে (চটকাতে), চটকাইয়া (চটকে), চটকাইলে (চটকালে), চটকাইবার (চটকাবার)। (১২) চটকান (চটকানো)।

इसके अनुरूप আওটান, আওড়ান, আওরান, ঠাওরান **आदिके** (৩), (৬), (১০) **कालके कथित रूपमें** ও **के स्थानमें** উ **होता है ; जैसे**—আউটেছি, আউটেছিল, আউটো। খাওয়ান, লওয়ান **के उन्हीं कालोंके कथित रूपमें** ও **के स्थानमें** ই **होता है ; जैसे**—খাইয়েছে, খাইয়েছিলাম। দেওয়ান, নেওয়ান **के उन्हीं कालोंके कथित रूपमें** দেও, নেও **के स्थानमें** দিই, নিই **होता है ; जैसे**—দিইয়েছি, দিইয়েছিল, দিইয়ো।

१७—বিগড়ান (বিগড়নো, বিগড়ানো)—बिगड़ना, बिगाड़ना (বিগড়া धातु)

(১) বিগড়াই (বিগড়ই, বিগড়ুই), বিগড়াস (বিগড়স), বিগড়াও (বিগড়ও), বিগড়ায় (বিগড়য়), বিগড়ান (বিগড়ন)। (২) বিগড়াইতেছি (বিগড়চ্ছি, বিগড়ুচ্ছি), বিগড়াইতেছিস (বিগড়চ্ছিস, বিগড়ুচ্ছিস), বিগড়াইতেছ (বিগড়চ্ছ, বিগড়ুচ্ছ), বিগড়াইতেছে (বিগড়চ্ছে, বিগড়ুচ্ছে), বিগড়াতেছেন (বিগড়চ্ছেন, বিগড়ুচ্ছেন)। (৩) বিগড়াইয়াছি (বিগড়েছি), বিগড়াইয়াছিস (বিগড়েছিস), বিগড়াইয়াছ (বিগড়েছ), বিগড়াইয়াছে (বিগড়েছে), বিগড়াইয়াছেন (বিগড়েছেন)। (৪) বিগড়াইলাম (বিগড়লাম, বিগড়ুলাম), বিগড়াইলি (বিগড়লি, বিগড়ুলি), বিগড়াইলে (বিগড়লে, বিগড়ুলে), বিগড়াইল (বিগড়ল, বিগড়ুল), বিগড়াইলেন (বিগড়লেন, বিগড়ুলেন)। (৫) বিগড়াইতেছিলাম (বিগড়চ্ছিলাম, বিগড়ুচ্ছিলাম), বিগড়াইতেছিলি (বিগড়চ্ছিলি, বিগড়ুচ্ছিলি), বিগড়াইতেছিলে (বিগড়চ্ছিলে, বিগড়ুচ্ছিলে), বিগড়াইতেছিল (বিগড়চ্ছিল, বিগড়ুচ্ছিল), বিগড়াইতেছিলেন (বিগড়চ্ছিলেন, বিগড়ুচ্ছিলেন)। (৬) বিগড়াইয়াছিলাম (বিগড়েছিলাম), বিগড়াইয়াছিলি (বিগড়েছিলি), বিগড়াইয়াছিলে (বিগড়েছিলে), বিগড়াইয়াছিল (বিগড়েছিল), বিগড়াইয়াছিলেন (বিগড়েছিলেন)। (৭) বিগড়াইতাম (বিগড়তাম, বিগড়ুতাম),

বিগডাইতিস (বিগড়তিস, বিগড়ুতিস), বিগডাইতে (বিগডতে, বিগড়ুতে), বিগডাইত (বিগডত, বিগড়ুত), বিগডাইতেন (বিগডতেন, বিগড়ুতেন)। (৮) বিগড়াইব (বিগড়াব), বিগডাইবি (বিগডাবি), বিগড়াইবে (বিগডাবে), বিগডাইবেন (বিগড়াবেন)। (৯) বিগডা (বিগডো), বিগড়াও (বিগড'ও), বিগডাক (বিগডক), বিগডান (বিগডন)। (১০) বিগডাস (বিগডস), বিগডাইও, বিগডাইয়ো (বিগডো), বিগড়াবে (বিগডবে, বিগড়ুবে), বিগড়াইবেন (বিডবেন, বিগড়ুবেন)। (১১) বিগডাইতে (বিগডতে, বিগড্‌তে), বিগডাইয়া (বিগড়ে), বিগড়াইলে (বিগডলে, বিগড়ুলে), বিগড়াইবার (বিগড়বাব)। (১২) বিগড়ান (বিগড়নো, বিগডানো)।

ইসকে অনুরূপ শিউয়ান কে কেবল কথিত রূপ হী প্রচলিত হৈঁ।

১৪—উলটান (উলটনো, ওলটানো)—বলটনা (উলটা ধাতু)

(১) উলটাই (উলটই, উলটুই, ওলটাই), উলটাস (উলটস, ওলটাস), উলটাও (উলটও, ওলটাও), উলটায় (উলটয়, ওলটায়), উলটান (উলটন, ওলটান)। (২) উলটাইতেছি (উলটচ্ছি, উলটুচ্ছি, ওলটাচ্ছি), উলটাইতেছিস (উলটচ্ছিস, উলটুচ্ছিস, ওলটাচ্ছিস), উলটাইতেছ (উলটচ্ছ, উলটুচ্ছ, ওলটাচ্ছ), উলটাইতেছে (উলটচ্ছে, উলটুচ্ছে, ওলটাচ্ছে), উলটাইতেছেন (উলটচ্ছেন, উলটুচ্ছেন, ওলটাচ্ছেন)। (৩) উলটাইয়াছি (উলটেছি), উলটাইয়াছিস (উলটেছিস), উলটাইয়াছ (উলটেছ), উলটাইয়াছে (উলটেছে), উলটাইয়াছেন (উলটেছেন)। (৪) উলটাইলাম (উলটলাম, উলটুলাম, ওলটালাম), উলটাইলি (উলটলি, উলটুলি, ওলটালি), উলটাইলে (উলটলে, উলটুলে, ওলটালে), উলটাইল (উলটল, উলটুল, ওলটাল), উলটাইলেন (উলটলেন, উলটুলেন, ওলটালেন)। (৫) উলটাইতেছিলাম (উলটচ্ছিলাম, উলটুচ্ছিলাম, ওলটাচ্ছিলাম), উলটাইতেছিলি (উলটচ্ছিলি, উলটুচ্ছিলি, ওলটাচ্ছিলি), উলটাইতেছিলে (উলটাচ্ছিলে, উলটুচ্ছিলে, ওলটাচ্ছিলে), উলটাইতেছিল (উলটচ্ছিল, উলটুচ্ছিল, ওলটাচ্ছিল), উলটাইতেছিলেন (উলটাচ্ছিলেন, উলটুচ্ছিলেন, ওলটাচ্ছিলেন)। (৬) উলটাইয়াছিলাম (উলটেছিলাম), উলটাইয়াছিলি (উলটেছিলি), উলটাইয়াছিলে (উলটেছিলে), উলটাইয়াছিল (উলটেছিল), উলটাইয়াছিলেন (উলটেছিলেন)। (৭) উলটাইতাম (উলটতাম, উলটুতাম, ওলটাতাম), উলটাইতিস (উলটতিস, উলটুতিস, ওলটাতিস), উলটাইতে (উলটতে, উলটুতে, ওলটাতে), উলটাইত (উলটত, উলটুত, ওলটাত), উলটাইতেন (উলটতেন, উলটুতেন, ওলটাতেন)। (৮) উলটাইব (উলটব, উলটুব, ওলটাব), উলটাইবি (উলটবি, উলটুবি, ওলটাবি), উলটাইবে (উলটবে, উলটুবে, ওলটাবে), উলটাইবেন (উলটবেন, উলটুবেন, ওলটাবেন)। (৯) উলটা (উলটো), উলটাও (উলটও, ওলটাও), উলটাক (উলটক, ওলটাক), উলটান (উলটন, ওলটান)।

(১০) উলটাস (উলটস, ওলটাস), উলটাইও, উলটাইয়ো (উলটো), উলটাবে (উলটবে, উলটুবে, ওলটাবে), উলটাইবেন (উলটবেন, উলটুবেন, ওলটাবেন)। (১১) উলটাইতে (উলটতে, উলটুতে, ওলটাতে), উলটাইয়া (উলটে), উলটাইলে (উলটলে, উলটুলে, ওলটালে), উলটাইবার (উলটবার, ওলটাবার)। (১২) উলটান (উলটনো, ওলটানো)।

इसके अनुरूप উবরান, গুজরান, গুমসান, চুলকান, ডুকরান, ফুকরান क्रियाके केवल कथित प्रथम रूप ही प्रचलित हैं। जिन क्रियाओं के सकर्मक और अकर्मक दोनों प्रयोग होते हैं उनके सकर्मक प्रयोगमें प्रायः कथित अन्तिम रूप ही प्रचलित हैं, जैसे—গুগুক উলটয়—उलट जाता है, ভাজা মাছ ওলটাও—उलटो।

१६—দেওয়া (दँवा)—देना (द् धातु)

(১) দি, দিস, দেও (दँओ), দেয় (दँय), দেন (दँन)। (২) দেতেছি (দিচ্ছি), দিতেছিস (দিচ্ছিস), দিতেছ (দিচ্ছ), দিতেছে (দিচ্ছে), দিতেছেন (দিচ্ছেন)। (৩) দিয়াছি (দিয়েছি), দিয়াছিস (দিয়েছিস), দিয়াছ (দিয়েছ), দিয়াছে (দিযেছে), দিয়াছেন (দিয়েছেন)। (৪) দিলাম, দিলি, দিলে, দিল (দিলে), দিলেন। (৫) দিতেছিলাম (দিচ্ছিলাম), দিতেছিলি (দিচ্ছিলি), দিতেছিলে (দিচ্ছিলে), দিতেছিল (দিচ্ছিল), দিতেছিলেন (দিচ্ছিলেন)। (৬) দিয়াছিলাম (দিয়েছিলাম), দিয়াছিলি (দিয়েছিলি), দিয়াছিলে (দিয়েছিলে), দিয়াছিল (দিয়েছিল), দিয়াছিলেন (দিয়েছিলেন)। (৭) দিতাম, দিতিস, দিতে, দিত, দিতেন। (৮) দিব (দেব), দিবি, দিবে (দেবে), দিবেন (দেবেন)। (৯) দে, দাও, দিক, দিন। (১০) দিস, দিও, দিয়ো, দিবেন। (১১) দিতে, দিয়া (দিয়ে), দিলে, দিবার (দেবার)। (১২) দেওয়া।

२०—শোওয়া, শোয়া—लेटना, सोना (শু धातु)

(১) শুই, শুস, শোও, শোয়, শোন। (২) শুইতেছি (শুচ্ছি), শুইতেছিস (শুচ্ছিস), শুইতেছ (শুচ্ছ), শুইতেছে (শুচ্ছে), শুইতেছেন (শুচ্ছেন)। (৩) শুইয়াছি (শুয়েছি), শুইয়াছিস (শুয়েছিস), শুইয়াছ (শুয়েছ), শুইয়াছে (শুয়েছে), শুইয়াছেন (শুয়েছেন)। (৪) শুইলাম (শুলাম), শুইলি (শুলি), শুইলে (শুলে), শুইল (শুল), শুইলেন (শুলেন)। (৫) শুইতেছিলাম (শুচ্ছিলাম), শুইতেছিলি (শুচ্ছিলি), শুইতেছিলে (শুচ্ছিলে), শুইতেছিল (শুচ্ছিল), শুইতেছিলেন (শুচ্ছিলেন)। (৬) শুইয়াছিলাম (শুয়েছিলাম), শুইয়াছিলি (শুয়েছিলি), শুইয়াছিলে (শুয়েছিলে), শুইয়াছিল (শুয়েছিল), শুইয়াছিলেন (শুয়েছিলেন)। (৭) শুইতাম (শুতাম), শুইতিস (শুতিস), শুইতে (শুতে), শুইত (শুত), শুইতেন (শুতেন)। (৮) শুইব (শোব), শুইবি (শুবি), শুইবে (শোবে), শুইবেন (শোবেন)। (৯) শো, শোও, শুক, শুন। (১০) শুস, শুইও, শুইয়ো, শুইবেন। (১১) শুইতে (শুতে), শুইয়া (শুয়ে), শুইলে (শুলে), শুইবার (শোবার)। (১২) শোওয়া, শোয়া।

২১—কোঁকড়ান (কোঁকড়ানো)—সিকুড়না, সিকোড়না (কোঁকড়া ধাতু)

(১) কোঁকডাই, কোঁকডাস, কোঁকডাও, কোঁকডায়, কোঁকডান। (২) কোঁকডাইতেছি (কোঁকডাচ্ছি), কোঁকডাইতেছিস (কোঁকডাচ্ছিস), কোঁকডাইতেছ (কোঁকডাচ্ছ), কোঁকডাইতেছে (কোঁকডাচ্ছে), কোঁকডাইতেছেন (কোঁকড়াচ্ছেন)। (৩) কোঁকডাইয়াছি (কুঁকডেছি), কোঁকডাইয়াছিস (কুঁকডেছিস), কোঁকডাইয়াছ (কুঁকডেছ), কোঁকডাইয়াছে (কুঁকডেছে), কোঁকড়াইয়াছেন (কুঁকড়েছেন)। (৪) কোঁকডাইলাম (কোঁকডালাম), কোঁকডাইলি (কোঁকডালি), কোঁকডাইলে (কোঁকড়ালে), কোঁকডাইল (কোঁকড়াল), কোঁকডাইলেন (কোঁকডালেন)। (৫) কোঁকড়াইতেছিলাম (কোঁকডাচ্ছিলাম), কোঁকডাইতেছিলি (কোঁকডাচ্ছিলি), কোঁকডাইতেছিলে (কোঁকডাচ্ছিলে), কোঁকড়াইতেছিল (কোঁকডাচ্ছিল), কোঁকডাইতেছিলেন (কোঁকডাচ্ছিলেন)। (৬) কোঁকডাইয়াছিলাম (কুঁকডেছিলাম), কোঁকড়াইয়াছিলি (কুঁকড়েছিলি), কোঁকড়াইয়াছিলে (কুঁকড়েছিলে), কোঁকড়াইয়াছিল (কুঁকডেছিল), কোঁকডাইয়াছিলেন (কুঁকডেছিলেন)। (৭) কোঁকডাইতাম (কোঁকড়াতাম), কোঁকডাইতিস (কোঁকড়াতিস), কোঁকডাইতে (কোঁকডাতে), কোঁকডাইত (কোঁকডাত), কোঁকড়াইতেন (কোঁকডাতেন)। (৮) কোঁকডাইব (কোঁকড়াব), কোঁকডাইবি (কোঁকড়াবি), কোঁকডাইবে (কোঁকডাবে), কোঁকড়াইবেন (কোঁকড়াবেন)। (৯) কোঁকডা, কোঁকড়াও, কোঁকড়াক, কোঁকডান। (১০) কোঁকড়াস, কোঁকডাইও, কোঁকডাইয়ো (কুঁকডিও, কুঁকডিয়ো), কোঁকডাইবেন (কোঁকড়াবেন)। (১১) কোঁকডাইতে (কোঁকড়াতে), কোঁকডাইয়া (কুঁকডে), কোঁকড়াইলে (কোঁকডালে), কোঁকড়াইবার (কোঁকডাবার)। (১২) কোঁকডান (কোঁকড়ানো)।

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	१०	अनघ	अवैघ
३	१	२३	অংশ	অংস
६	२	१९	আডরা	আডার
१२	१	५	পরাম্বণ	—পরাবণ
१२	१	२९	खामिनी	स्वामिनी
१२	२	१७	अध्धात्म	अध्यात्म
१८	१	१४	रंगया	रंगाया
१९	२	२४	पदी	पेंदी
२१	१	१३	क	क
२१	२	१४	दरुपयोग	दुरुपयोग
२१	२	१५	स्वच	खर्च
२२	१	५	अपश्शारण	अपश्शार
२२	१	७	शं घातक	सं घातक
२२	१	१९	दुर्गां	दुर्गा
२२	१	३२	अजात	अज्ञात
२३	१	३३	प्राकृविक	प्राकृतिक
२३	२	२६	नि	वि
२४	१	१७	असन्वद्ध	असम्बद्ध
२४	२	३	गं	सं
२४	२	२९	मूर्तिमें · संसार	मूर्ति ...संसारमें
२५	२	१३	অভ্যাস	অধ্যাস
३२	२	२	অশ্ব	অশ্বূ
३४	१	१६	गृंध्र	गृध्र्
३५	२	२४	कद्द	कद्दू
३५	२	३४	बिच्छ	बिच्छू
४१	२	३	खन	खून
४१	२	१२	डबा	डूबा
४४	१	३४	चुम्वक	चुम्बक
४६	२	१८	ক্ষত্রিয়।	ক্ষত্রিয় एक जाति।
४८	२	११	कानन	कानून
५०	१	३४	वेड़	वेड़े
५२	१	३२	দোষ	দোষ
५२	२	१८	स्वातन्त्रा	स्वातन्त्र्य
५४	१	१८	खंचड़ा	खैंचड़ा
५५	२	२९	ड्डलाया	डुलाया
५६	२	२३	अत्रान्त	अभ्रान्त
५६	२	२४	त्रम	भ्रम
६१	२	३४	आय	आय
६३	१	२४	।	आलिम।
६३	२	२४	।	मछलीका छिलका, रेशा।
६५	१	२१	ब्रिश्राम	विश्राम
७२	१	३४	वि	क्रि वि
७२	२	३१	क	कं
७७	२	१०	जिह्वा	जिह्वा
७७	२	१९	क्रि	
७९	२	६	एबजमें	एवजमें
८१	१	२६	यहाँ	यहाँका या
८५	१	६	पेट	पेटू
८८	१	२२	কাঁ।	কাঁথা
८९	१	४	घृत	घृत
८९	१	२६	কবজী	কবজি
८९	२	३३	बाहु	बालू
९३	१	३३	खकसा	खेकसा
९४	२	१५	কাঠগড়া	কাটগড়া
९४	२	३४	जड़ा	जूड़ा

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९५	१	६	हुसुआ	हॅंसुआ
९५	१	१५	पिपड़ा	पिंपड़ा
९५	१	३४	काड़ा	काँड़ा
९५	२	१०	वारदात	वारदात
९६	१	२	—कादा खोँचा	कादाखोँचा
९६	१	१९	फटा	फूटा
९६	२	१८	छला	छैला
९६	२	२३	हवसी	हबशी
९६	२	३२	कावुलका	कावुलका
९८	१	३३	वावसाई	व्यवसाई
९९	१	१६	हसी	हॅंसी
१०१	१	११	कॅचकि	कुॅच्कि
१०१	१	२३	कू-	कूँ-
१०१	२	२६	कूठे	कूठे वि
१०१	२	३२	कूड़ा, कूड़ो	कूँड़ा, कूँड़ो
१०२	१	१६	कूइन	कूइनी
१०२	१	१७	पर	परका
१०३	२	४	जौवि	जौवी
१०३	२	२५	ढिवड़ी	ढिवरी
१०३	२	२६	कूपोकात	कूपोकात
१०५	१	२७	करानी	कैरानी
१०९	१	२९	ऋपनी	ऋपणी
१०९	२	२५	जौवि	जौवी
१११	१	४	थटा	थट्टा
११२	२	२४	खरा	खैड़रा
११३	२	६	थाड़	थाड़ू
११३	२	२०	थाना	थाना
११४	१	२३	खम्मा	खम्मा
११६	१	२७	खकानो	खॅकानो
११६	१	३४	खगारा, भाड़	खैड़रा, भाड़ू।
११६	२	५	खचामेचि	खैंचामेचि
११७	१	२१	खल	खेल

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११७	१	३०	खशारत	खैशारत
११९	१	५	सिर	गले
१२०	१	३	मूर्ख	मूर्ख
१२०	१	२८	स्त्री	स्त्री,
१२१	२	२०	गऋ	गग्र-
१२१	२	२५	जरूरत	जरूरत
१२२	१	१६	मुर्ख	मूर्ख
१२२	२	२७	गलद्घम	गलद्घर्म
१२२	२	३१	गरदनिया	गरदनियाँ
१२४	१	१५	गजेड़ी	गँजेड़ी
१२४	१	१८	पदा	पैदा
१२४	१	२५	आटवें	आठवें
१२४	२	२४	चठाना	बैठाना
१२४	२	२८	ढर	ढेर
१२५	१	११	कसलापन	कसैलापन
१२५	१	१६	गामूचा	गामूछा
१२५	२	२	ফোড়া,—	ফোড়া—,
१२५	२	५	छनवाना	छनवाना
१२५	२	२१	वृद्धा	वृद्धा
१२५	२	२९	वश्च (-चत	वर्श्च (-बत
१२६	२	१२	गुटली	गुठली
१२६	२	३१	छीपे	छिपे
१२७	२	३३	रखन	रखने
१२८	२	९	ढड़ची	ढड्ची
१२८	२	२३	पर	पैर
१२९	२	४	गड़ा	गैंड़ा
१२९	२	२३	वद	बैद
१३०	१	३०	श्लीपद	श्लीपद
१३३	२	४	— घेटू सं	सं—घेंटू
१३४	२	११	कोल्हू	कोल्हू
१३४	२	१८	फु सिया	फु सियाँ
१३५	२	१३	भवद	भवर
१३५	२	२२	घर्षित	घर्षित

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३६	२	२६	चाक	चौक
१३७	१	१०	चारा	चारों
१३८	२	३०	चौहत्तरवा	चौहत्तरवाँ
१३८	२	३४	-रस्त्र	-रस्त्र
१३९	१	२०	अथ	अर्थ
१४१	१	६	चमेड़	चमड़े
१४४	२	२२	চিড়ি	চিংড়ি
१४४	२	२६	हिनहिनाट्ट	हिनहिनाहट
१४९	१	१८	चुटया	चुटैया
१४९	१	३०	(०, ।०	(।०, ॥०
१५०	१	७	फट	फुट
१५०	२	३	चादह	चौदह
१५०	२	६	चाधरी	चौधरी
१५०	२	१६	कम	कर्म
१५१	१	१२	। टा	काटा
१५१	१	१८	फलाव	फैलाव
१५१	२	३२	छा, छा	छा, छां।
१५२	१	२	দূ ·· ফেল্প	দূর ফেলতে
१५२	१	१४	छनना	छानना
१५२	२	१०	ছাতাবে	ছাতারে
१५२	२	१३	सत्त सत्त	सत्त् सत्त्
१५२	२	१४	পড়য়া	পড়ুয়া
१५२	२	२२	पर	पर
१५३	१	६	पूणता	पूर्णता
१५३	१	१०	तबालब	लबालब
१५३	१	१९	बृक्ष	वृक्ष
१५३	१	२७	आदिके	आदिकी
१५३	१	३०	बिवाह	विवाह
१५४	२	२०	छंका	छँका
१५४	२	२४	भूनका	भूनकर
१५४	२	३१	पसिना	पसीना
१५५	२	३	ছোট	ছোটা
१५६	१	३	ছো	ছা-
१५६	१	११	(-ली)	(-लौ गो
१५६	१	१२	ब्यक्ति	व्यक्ति
१५६	२	३	निबासी	निवासी
१५६	२	१०	बिभिन्न	विभिन्न
१५६	२	२३	फसाव	फसाव
१५६	२	३२	मातृचिह	मातृचिह्न
१५७	२	१७	(-नी)	(-नौ)
१५७	२	१९	सं	वि
१५७	२	२१	विश्व-सार्व	विश्व—,सार्व—
१५८	१	७	दुआ	हुआ
१५८	२	३०	सं	वि—
१५८	२	३२	जमिग्र	जागिग्र
१५९	१	८	दुर्गा	दुर्गा
१५९	१	१४	घृद्ध	वृद्ध
१५९	१	२०	पैमाइस	पैमाइश
१५९	१	२४	आवश्यक	आवश्यकता
१५९	१	३१	चलमे	चलाने
१५९	२	२	नौग्र	नीग्र
१५९	२	१६	व्रृत्ति	वृत्ति
१५९	२	२३	डुब	डूब
१५९	२	३२	स्व भा	खंभा
१६०	१	२	वृथा नष्ठ	वृथा नष्ट
१६०	१	७	निक्षेप	निक्षिप्त
१६०	१	१०	नौग्र	नीग्र
१६०	१	११	ब्राशण	ब्राह्मण
१६०	१	३०	पती	पति
१६०	२	२५	जाङ्गल	जाङ्गाल
१६१	१	२१	दाँनेदार	दाँतेदार
१६१	१	२५	अपनि	अपनी
१६१	२	३३	वाटि	बाटि
१६२	२	१०	धोखेपाज	धोखेबाज
१६२	२	१८	জিগীষো	জিগীষা
१६२	२	२०	करनेकी	करनेके

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			[illegible]शुद्ध	शुद्ध
				का
			[illegible]ीत्	जित्
[illegible]	[illegible]	८	जवान	जवान
१६२	१	११	छोना—	—छोना
१६३	१	१२	नाम	जीभ साफ
१६२	१	१३	किया जाता	की जाती
१६३	२	६	अवत्था	अवस्था
१६४	१	११	जोड़ा	जोड़ी
१६४	१	१६	ञ्ठो	ञूठो
१६५	१	५	सुविघा	सुविधा
१६५	२	२	और	ओर
१६५	२	२७	वेद	वेद्
१६६	१	२४	ज्याब्रमा	ज्याब्रमो
१६६	१	३१	न्द्र घूम	न्द्र घूम
१६७	१	९	बखेढ़ा, विपत्ति	बखेड़ा, विपत्ति
१६७	१	२४	झनझनारट	झनझनाहट
१६७	२	२५	झलसानो	झल्शानो
१६८	२	७	टट्टर	टट्टर
१६९	१	१७	झा	का
१६९	१	२१	दुघ	दूघ
१६९	२	२८	कृष्णका झुला	कृष्णका झूला
१७०	१	२६	टक्	टक्
१७०	२	१२	अंग्रेजी	अंग्रेजी
१७१	१	२६	उड़ान	उड़ाना
१७१	२	२९	भी	भी कम
१७२	१	१०	ठीका	टीका
१७२	१	१६	बचना	बचाना
१७२	२	२९	पुछताछ	पूछताछ
१७२	२	३२	छोठा	छोटा
१७२	२	३३	टुटना	टूटना
१७३	१	६	पाटशाला	पाटशाला
१७३	१	१५	ढेकुआ	टेकुआ

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७३	२	७	गुणकार	गुणकारी
१७३	२	२५	ट्रम	ट्राम
१७३	२	३२	भाव	भाव
१७४	१	१	लुठेरा	लुटेरा
१७४	१	२	ठग	ठगा
१७४	१	२१	व्यक्ति, म्रा	व्यक्ति, म्रा
१७४	१	३३	टट्ठा	ठट्ठा
१७४	२	२८	चौंव	चौंध
१७४	२	३२	टीके, न्थी	ठीके, न्धी
१७५	१	६	में, चगना	से, चुगना
१७५	१	१५	ठ्ठ, लुला	ठ्ठ, लूला
१७५	१	३४	छूलाना	छुलाना
१७५	२	४	ठंगा	ठंगा
१७५	२	१३	वस्तु	वस्तु
१७५	२	१५	टकना	टेकना
१७५	२	२०	टक	टेक
१७६	१	२७	दववना	दववाना
१७७	२	२६	ডেব, ডেব্রা	ডেড়, ডেড়া
१७९	१	७	छोडा	— छोंड़ा
१७९	१	३१	ढगा	ढंगा
१७९	२	१	ढड़श	ढंड़श
१८०	२	२	सव	सर्व
१८१	२	३४	তপশ্বী	তপস্বী
१८२	१	२४	তানপূরা	তানপুরা
१८४	१	२	চাওয়	চাওয়া
१८४	२	२१	एकत्व	एकत्व
१८४	२	२९	তাণ্ডব	তাণ্ডব
१८६	१	३०	হু ল	হু ল
१८६	१	३३	তৃব	তৃষা
१८७	२	१९	तराजु	तराजू
१८८	१	३२	तंबुछ	तंबुछा
१८८	२	९	তেপায়	তেপায়া
१८८	२	२०	छमंड	घमंड

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८६	२	३४	तालना	तौलना
१६०	२	२१	थरथरानि	थरथरानि
१६०	२	२८	थला	थैला
१६१	१	१०	थाप्पड	थप्पड़
१६१	१	२०	थाल (२)	थाला
१६१	२	३	(-थ)	(-थू)
१६४	१	२६	दस्तावेज	दस्तावेज
१६४	२	२२	हुजा	हुआ
१६४	२	३१	डकती	डकैती
१६५	२	२१	खराती	खैराती
१६७	१	२२	तालब	तालाब
२००	२	३१	दवाल	दैवाल
२०१	१	६	दखा	दैखा
२०४	१	१५	घढ़ वेचनी	घड़, वेचैनी
२०४	१	१७	कमड	कमर
२०४	१	१८	चूड़ा	चूड़ा
२०६	१	३	। मा	नागा
२०७	२	१३	धनी	धूनी
२०७	२	२३	धुवीन	धुरीण
२०८	१	२१	घड़ानो	घड़ानो
२१०	१	५	ईंट	ऍट
२१०	१	६	स्तक	मस्तक
२१५	१	१८	आपना	अपना
२१५	१	२२	सुडाल	सुडौल
२२३	२	२६	—करे	—कले
२२५	२	३	ताला	तोला
२२६	२	१	डना	डंना
२२७	१	७	पदल	पैदल
२२७	२	१७	प दाहश	प दाइश
२२७	२	२८	गर	गैर
२२६	१	२४	करण	करण
२२६	२	३३	परव	परब
२३०	१	४	पजक	पर्जंक
२३१	२	१६	पाकड़ाना	पाकड़ानो
२३२	१	६	गाली	गोली
२३३	१	१७	पाश्चाव	पाश्चावि
२३३	२	१६	मुहक्ला	मुहल्ला
२३४	२	५	फला	फैला
२३४	२	२४	बिवाहित	विवाहित
२३४	२	२५	पाथय	पाथर
२३५	१	६	पावहान	पावदान
२३५	१	३१	चट्ठी	चट्टी
२३५	२	२१	पतरा	पैतरा
२३५	२	२७	घमंढ	घमंड
२३६	१	२	पारण (२)	पारणा
२३६	१	१६	पाश	पाश
२३६	२	२६	डना	डैना
२३६	१	४	नहर	नैहर
२३६	१	७	ठकन	ढक्न
२३६	२	२८	पीयुष	पीयूष
२४०	२	११	पूखव	पूखुव
२४१	१	८	पूवा	पूरा
२४१	२	१२	फल	फूल
२४२	२	१२	पच	पंच
२४२	२	१२, १६	प-	पं-
२४२	२	२६	वा।	हवा
२४४	१	३२	वधन	वर्धन
२४६	१	६	(-ज)	(-अ)
२५४	१	३	फांस	फ्रांस
२५४	१	११	भाग—	भाग—
२५५	१	३१	सोले जा	खुखड़ी जो
२५५	१	३४	फलाना	फैलाना
२५६	२	६	फजल फ	फजूल...फू
२५७	१	६	फू फंक	फूँ फूक
२५७	१	१०	फफी	फूफी
२५७	१	१४	फूवने	

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५७	२	२४	फकाशे	फैकाशे
२५६	२	२६	वक्...मुह	वक्...मुँह
२६०	१	१४	थली	थैली
२६१	१	२७, ३१	वधा	वँधा
२६१	२	१६	चड़ई	चड़ूई
२६२	२	१	थावड़	थावड़ा
२६२	२	४	बादा	बाँदा
२६२	२	१४, १६	क	कँ
२६२	२	२२	अधड़	अधेड़
२६५	१	२७	भरपर	भरपूर
२६६	१	८	वठका	वैठका
२६८	१	१६	बाछ	बाछा
२७०	२	१०	मजबर	मजबूर
२७१	२	३१	बाव्रत	बाव्रता
२७३	२	१४	हठा	हठ
२७४	२	२६	अशका	अंशके
२८१	१	२६	बजनी	बँजनी
२८१	२	२६	वतरह	वेतरह
२८३	१	३१	बशात ब	वैशात वे
२८३	२	१७	—दैकाल (२)	—विकाल
२८५	२	१६	चमड़	चमड़े
२९१	२	४	टिकाने	ठिकाने
२९२	१	३०	शौतान	शैतान
२९३	१	६	भजानो	भैजानो
२९४	१	१६	ञ्क	ञ्कू
२९८	१	२६	दर्गा	दुर्गा
३००	२	२३	पमाना	पैमाना
३००	२	३४	वइज्जती	वेइज्जती
३०१	२	३०	मारपच	मारपैच
३०३	२	२३	कद	कद
३०५	१	२०	मूथावत	मूथवित
३०५	१	२४	पर मुह	पर मुह
३०८	१	१७	मला	मेला

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३०८	२	१०	फल	फूल
३०६	१	१६	भसा	भैंसा
३०६	२	१७	मजि	मैंजि
३१२	१	१	शाशके (२)	शैशके
३१२	२	२१	भट	भेंट
३१६	२	७, १४	ढर	ढेर
३१७	१	७	रेहू	रोहू
३१७	२	१८	सिक्क पसे	सिक्के... पैसे
३१८	२	७	फट	फूट
३१८	२	१३	रेहू	रोहू
३२०	२	१	नाड़ू—नाड़ू	नाड़ू—नाड़
३२१	१	३४	छ	छू
३२१	२	१५	लडड़ा	लङड़ा
३२१	२	२६	लङट	लैङट
३२१	२	३२	लेज	लैज
३२१	२	३३	लजा	लैजा
३२२	१	२५	लह	लह
३२३	२	२६	सकड़े	सैकड़े
३२४	१	६	सतवार	सतावर
३२४	१	२१	मुदकी, मुद	मुर्देकी, मुर्दे
३२४	२	१	शतान	शैतान
३२४	२	११	पड़	पड़े
३२४	२	२८	साझका	साझेका
३२५	२	३१	हइछए	हइछए
३२६	१	१२	साख	साखू
३३१	१	२०	वेद	वेद
३३१	१	२२	पाँड़	साँड़
३३१	२	१७	भट	भेंट
३३२	१	२१	बचनी	वेचनी
३३३	१	८	कम	काम
३३३	२	३०	सत्त	सत्तू
३३४	२	१७	सठक	सटक
३३५	२	२८	हुया	हुआ

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३३६	२	१३	परवाला	पैरवाला
३३६	२	१६	उत्पन्त	उत्पन्न
३३९	२	६	ठोंडा	ठोंडा
३४०	१	४	मखूठ	मखूत
३४०	१	५	मखूम्र	मखूम्र
३४३	२	१९	वकतर	बकतर
३४५	१	१९	परिफ्ट	परिस्फूट
३४५	२	२	साधाणर-	साधारण
३४७	२	७	प सिल	पेंसिल
३४७	२	९	मिच	मिर्चें
३४७	२	३१	स्नदरि	सूंदरि
३४७	२	३४	स्नपि	सूंपि
३४९	१	२८	सकना	सेंकना
३४९	१	२९	सक्रा	शैक्रा
३५०	१	२५	वेचन	वेचैन
३५०	१	२८	वसी	वैसी
३५३	१	२३	लिऐ	लिए
३५६	१	७	जभाई	जंभाई
३५६	२	६	मौजदगी	मौजूदगी
३५६	२	२१	पदल	पैदल
३५९	२	६	आला	ओला

প্রকাশকের নিবেদন

আমাদের প্রতিষ্ঠান বয়স্ক শিক্ষা ব্যতীত আর অন্য কোন বিষয়ে পুস্তক প্রকাশ করে না। আমাদের দেশের প্রকাশকেরা সাধারণতঃ স্কুল পাঠ্য বা উপন্যাসাদি প্রকাশ করেন, কেননা তাঁহাদিগের লাভের দিকে দৃষ্টি না রাখিলে চলে না। আমাদের উদ্দেশ্য হইল জাতির সেবা। জাতির সেবা করিতে গেলে লাভ হওয়া ত দূরের কথা, সময় সময় ঘরের কড়ি কিছু বাহির হইয়া যায়। এটা আমাদের নেশা, নেশা নিজের ঝোঁকেই কাজ করে, লাভ লোকসান খতায় না। সেই নেশার বশেই আমরা এই বাংলা-হিন্দী কোশটি বহু চেষ্টায় প্রকাশ করিলাম।

গোপালদা এই বয়সেও রুগ্ন শরীরে অমানুষিক পরিশ্রম করিয়া এই পুস্তকখানি সম্পূর্ণ করায় জাতির বড় একটা সেবা করার সুযোগ পাইল আমাদের এই প্রতিষ্ঠান। তাঁহার এই অসাধারণ সেবায় মুগ্ধ হইয়া ভারতীয় সরকার বাহাদুর তাঁহার জন্য মাসিক শতাধিক টাকা পেন্সনের ব্যবস্থা করিয়াছেন। তিনি শতায়ু হইয়া জীবিত থাকুন আর জাতির সেবায় আরও কিছু লিখুন, ভগবানের নিকটে আমাদের ইহাই প্রার্থনা।

মেসার্স রঘুনাথ দত্ত এণ্ড সন্স আগাগোড়া কাগজ যোগান দিয়া যে সাহায্য করিয়াছেন তাহা অমূল্য। আমাদের মত অব্যবসায়ী ও নিঃসম্বল প্রতিষ্ঠানের পক্ষে এত ব্যয়বহুল কাজ সম্পন্ন করা সম্ভব হইত না, যদি না তাঁহারা সাহায্য করিতে আগাইয়া আসিতেন। তাঁহাদিগের নিকটে যখন আমরা এ প্রস্তাব উপস্থিত করি, তখনই তাঁহারা এ বিষয়ে উৎসাহ দিয়া বলেন, ভাবনা কি, কাজে নেমে পড়ুন, কাগজের অভাব হবে না। তাঁহাদিগের নিকটে আমরা চিরকৃতজ্ঞ।

পাইকপাড়া চলন্তিকা প্রেসের সুযোগ্য ম্যানেজার শ্রীনগেন্দ্র নাথ মান্না মহাশয়ের আমাদের এই কাজে অকৃত্রিম অনুরাগ না থাকিলে, এ পুস্তক ছাপা আমাদের পক্ষে অসম্ভব হইত। অনুজোপম ভারতী বুক ষ্টলের স্বত্বাধিকারী শ্রীমান হৃষীকেশ বারিক আমাদের এই জাতি সেবা মূলক কাজে নানাবিধ উপায়ে সাহায্য করিয়া আমাদের যে ঋণে বন্দী করিয়াছেন, তাহা কোন দিন শোধ হইবার নয়।

ইতি—

সম্পাদক

বেঙ্গল ম্যাস এডুকেশন সোসাইটি